इकाई–1

विविध श्रवण मूल्यांकनों का अवलोकन एवं आवश्यकता; बालक की आयु तथा क्रियात्मक क्षमताओं के अनुसार श्रवण परीक्षणों का चयन

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 श्रवण मूल्यांकन: अवधारणा एवं महत्त्व

1.3.1 श्रवण मूल्यांकन का अर्थ एवं विस्तार

1.3.2 श्रवण मूल्यांकन की आवश्यकता

1.3.3 प्रारम्भिक पहचान, निदान एवं पुनर्वास में श्रवण मूल्यांकन की भूमिका

1.4 श्रवण परीक्षणों का वर्गीकरण

1.4.1 व्यवहारिक एवं फिज़ियोलॉजिकल टेस्ट्: सिद्धान्त, प्रकार एवं उपयोगिता

1.4.2 आयु एवं बालक की क्रियात्मक क्षमताओं के अनुसार श्रवण परीक्षणों का चयन

1.5 सारांश

1.6पारिभाषिकशब्दावली

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

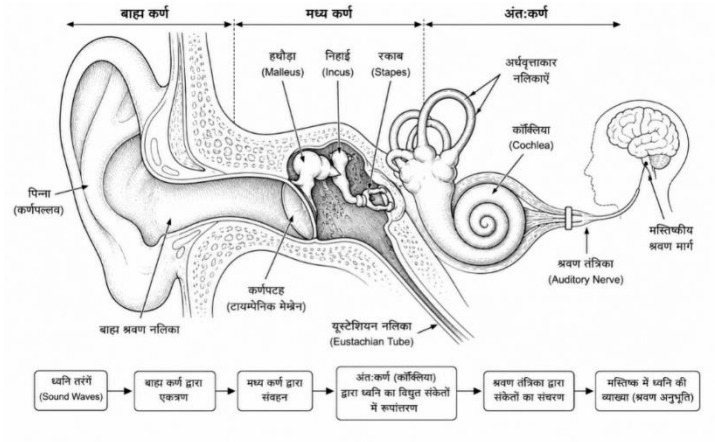
1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

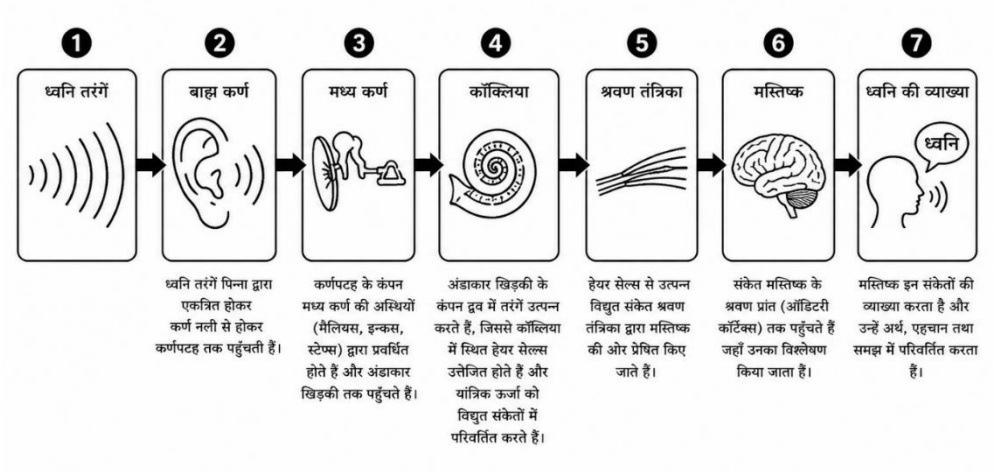
1.1 प्रस्तावना

श्रवण मानव जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण संवेदी क्षमताओं में से एक है। यह व्यक्ति को अपने परिवेश की ध्वनियों को ग्रहण करने, उनका अर्थ समझने तथा अन्य लोगों के साथ प्रभावी संप्रेषण स्थापित करने में सहायता प्रदान करता है। भाषा अधिगम, सामाजिक सहभागिता, भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि जैसे अनेक विकासात्मक क्षेत्र श्रवण अनुभवों पर आधारित होते हैं। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में प्राप्त श्रवण अनुभव भाषा एवं वाक् विकास की आधारशिला रखते हैं। यदि किसी बालक को पर्याप्त श्रवण इनपुट प्राप्त नहीं होता, तो उसके संप्रेषण कौशल, अधिगम क्षमता तथा सामाजिक समायोजन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।



चित्र1.1 मानव श्रवण तंत्र।

मानव श्रवण तंत्र एक जटिल जैविक एवं तंत्रिकीय प्रणाली है जिसमें बाह्य कर्ण, मध्य कर्ण, अंतःकर्ण, श्रवण तंत्रिका तथा केंद्रीय श्रवण मार्ग सम्मिलित होते हैं। ध्वनि तरंगें बाह्य कर्ण द्वारा एकत्रित होकर मध्य कर्ण के माध्यम से कॉक्लिया तक पहुँचती हैं। कॉक्लिया में स्थित रोम कोशिकाएँ ध्वनि ऊर्जा को तंत्रिकीय संकेतों में परिवर्तित करती हैं, जिन्हें मस्तिष्क अर्थपूर्ण ध्वनि एवं भाषा के रूप में व्याख्यायित करता है। इस जटिल प्रक्रिया के किसी भी स्तर पर उत्पन्न विकार श्रवण क्षमता को प्रभावित कर सकता है।



चित्र1.2 ध्वनि तरंग से मस्तिष्क तक श्रवण प्रक्रिया का फ्लोचार्ट।

आप परिचित हो चुके होंगे कि वर्तमान शैक्षिक एवं पुनर्वासात्मक व्यवस्थाओं में श्रवण क्षमता का सही आकलन अत्यधिक महत्त्व रखता है। केवल बाह्य व्यवहार अथवा दैनिक प्रतिक्रियाओं के आधार पर श्रवण स्थिति का सटीक निर्धारण संभव नहीं होता। कई बार बालक कुछ ध्वनियों पर प्रतिक्रिया देता हुआ दिखाई देता है, किंतु भाषा संबंधी महत्त्वपूर्ण ध्वनियों को पर्याप्त रूप से ग्रहण नहीं कर पाता। ऐसी परिस्थितियों में वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित श्रवण मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है।

श्रवण मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति की श्रवण संवेदनशीलता, श्रवण तंत्र की कार्यक्षमता तथा श्रवण क्षति की प्रकृति का निर्धारण किया जाता है। आधुनिक श्रव्यविज्ञान में व्यवहारिक तथा शरीरक्रियात्मक दोनों प्रकार के परीक्षणों का उपयोग किया जाता है, जिससे श्रवण तंत्र के विभिन्न घटकों का समग्र आकलन संभव हो सके। ओटोएकाउस्टिक एमिशन, ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स तथा ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स जैसे उन्नत परीक्षणों ने नवजात शिशुओं एवं छोटे बच्चों में भी विश्वसनीय मूल्यांकन को संभव बनाया है।

श्रवण मूल्यांकन का महत्त्व केवल निदान तक सीमित नहीं है। इसके निष्कर्ष श्रवण यंत्र चयन, कॉक्लियर इम्प्लांट मूल्यांकन, शैक्षिक योजना, संप्रेषण विधि के चयन तथा पुनर्वास कार्यक्रमों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार श्रवण मूल्यांकन प्रभावी हस्तक्षेप(इंटरवेंशन), बेहतर शैक्षिक उपलब्धि तथा उन्नत जीवन गुणवत्ता सुनिश्चित करने की दिशा में एक आधारभूत प्रक्रिया के रूप में कार्य करता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. श्रवण को मानव विकास की आधारभूत संवेदी क्षमता क्यों माना जाता है?
2. भाषा विकास में श्रवण की क्या भूमिका है?
3. श्रवण मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों होती है?
4. आधुनिक श्रवण मूल्यांकन में प्रयुक्त दो प्रमुख परीक्षणों के नाम लिखिए।
5. श्रवण मूल्यांकन शैक्षिक योजना में किस प्रकार सहायक होता है?

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

1. श्रवण मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।
2. श्रवण मूल्यांकन के उद्देश्यों एवं उपयोग क्षेत्रों का वर्णन कर सकेंगे।
3. श्रवण मूल्यांकन की आवश्यकता को स्पष्ट कर सकेंगे।
4. प्रारम्भिक पहचान एवं हस्तक्षेप में श्रवण मूल्यांकन की भूमिका समझ सकेंगे।
5. व्यवहारिक एवं शरीरक्रियात्मक परीक्षणों के बीच अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
6. विभिन्न आयु समूहों हेतु उपयुक्त श्रवण परीक्षणों की पहचान कर सकेंगे।
7. बालक की क्रियात्मक क्षमताओं के आधार पर परीक्षण चयन के सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
8. श्रवण परीक्षणों के वर्गीकरण का वर्णन कर सकेंगे।
9. शैक्षिक योजना एवं पुनर्वास में श्रवण मूल्यांकन के योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।
10. क्रॉस-चेक सिद्धांत के महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
11. श्रवण मूल्यांकन निष्कर्षों का उपयोग करते हुए उपयुक्त हस्तक्षेप संबंधी निर्णयों की व्याख्या कर सकेंगे।
12. श्रवण परीक्षण चयन में आयु, विकासात्मक स्तर तथा व्यवहारिक कारकों की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे।

1.3 श्रवण मूल्यांकन:अवधारणा एवं महत्त्व

श्रवण मूल्यांकन श्रव्यविज्ञान की एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति की श्रवण क्षमता, श्रवण तंत्र की कार्यक्षमता तथा श्रवण विकारों की प्रकृति का आकलन किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल श्रवण क्षति की उपस्थिति का निर्धारण करना नहीं है, बल्कि उसकी मात्रा, प्रकार, स्वरूप तथा दैनिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना भी है।

आधुनिक श्रव्यविज्ञान में श्रवण मूल्यांकन को निदान, उपचार योजना, पुनर्वास, प्रवर्धन चयन तथा शैक्षिक निर्णयों की आधारशिला माना जाता है। सटीक मूल्यांकन के बिना प्रभावी हस्तक्षेप संभव नहीं है। आप समझ चुके होंगे कि श्रवण स्थिति का सही निर्धारण ही उपयुक्त पुनर्वास एवं शैक्षिक सहायता की दिशा तय करता है।

श्रवण मूल्यांकन का महत्त्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि आधुनिक तकनीकों ने नवजात शिशुओं, छोटे बच्चों तथा बहु-दिव्यांगता वाले व्यक्तियों में भी विश्वसनीय परीक्षण संभव बना दिए हैं। इस प्रकार यह प्रक्रिया प्रारम्भिक पहचान, समयबद्ध हस्तक्षेप तथा बेहतर विकासात्मक परिणाम सुनिश्चित करने में केंद्रीय भूमिका निभाती है।

1.3.1 श्रवण मूल्यांकन का अर्थ एवं विस्तार

श्रवण मूल्यांकन से तात्पर्य ऐसी व्यापक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से व्यक्ति की श्रवण क्षमता तथा श्रवण तंत्र की क्रियाशीलता का वैज्ञानिक आकलन किया जाता है। यह प्रक्रिया केवल यह जानने तक सीमित नहीं है कि व्यक्ति सुन सकता है या नहीं, बल्कि यह भी निर्धारित करती है कि वह विभिन्न आवृत्तियों एवं तीव्रताओं की ध्वनियों को किस सीमा तक ग्रहण कर सकता है, वाक् को कितना समझ पाता है तथा श्रवण तंत्र का कौन-सा भाग प्रभावित है।

श्रवण मूल्यांकन को एकल परीक्षण के रूप में नहीं देखा जाता। यह अनेक परीक्षणों के समन्वित उपयोग पर आधारित एक व्यापक प्रणाली है। प्रत्येक परीक्षण श्रवण तंत्र के किसी विशिष्ट भाग अथवा कार्य के बारे में जानकारी प्रदान करता है। विभिन्न परीक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों का विश्लेषण करके अंतिम नैदानिक निर्णय लिया जाता है। यही कारण है कि आधुनिक श्रव्यविज्ञान में परीक्षण बैटरी दृष्टिकोण को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

श्रवण मूल्यांकन का विस्तार समय के साथ उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। प्रारम्भिक चरणों में इसका उपयोग मुख्यतः श्रवण क्षति की पहचान तक सीमित था, परंतु वर्तमान समय में यह नवजात श्रवण जाँच, विद्यालयी स्क्रीनिंग, नैदानिक मूल्यांकन, श्रवण यंत्र चयन, कॉक्लियर इम्प्लांट मूल्यांकन, पुनर्वास योजना तथा प्रगति निगरानी जैसे अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त होता है। अस्पतालों, पुनर्वास केन्द्रों, विद्यालयों, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों तथा शोध संस्थानों में इसका व्यापक उपयोग किया जाता है।

एक संपूर्ण श्रवण मूल्यांकन में सामान्यतः केस हिस्ट्री, ओटोस्कोपिक परीक्षण, व्यवहारिक परीक्षण, शरीरक्रियात्मक परीक्षण (फिज़ियोलॉजिकल टेस्ट्) तथा निष्कर्षों की व्याख्या सम्मिलित होती है। इन सभी चरणों का उद्देश्य व्यक्ति की श्रवण स्थिति का यथासंभव सटीक एवं विश्वसनीय आकलन करना होता है। आप देख सकते हैं कि किसी भी परीक्षण का निष्कर्ष अकेले पर्याप्त नहीं माना जाता, बल्कि विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी का समेकित विश्लेषण किया जाता है।

श्रवण मूल्यांकन का विस्तार केवल चिकित्सीय निदान तक सीमित नहीं है। इसके निष्कर्ष शैक्षिक योजना, संप्रेषण विधि चयन, व्यावसायिक परामर्श तथा सामाजिक पुनर्वास में भी उपयोगी सिद्ध होते हैं। इस प्रकार श्रवण मूल्यांकन एक

बहुआयामी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के समग्र विकास, अधिगम तथा जीवन गुणवत्ता को बेहतर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. श्रवण मूल्यांकन से क्या तात्पर्य है?
2. श्रवण मूल्यांकन को बहुआयामी प्रक्रिया क्यों कहा जाता है?
3. परीक्षण बैटरी दृष्टिकोण क्या है?
4. श्रवण मूल्यांकन के प्रमुख उपयोग क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।
5. एक संपूर्ण श्रवण मूल्यांकन के मुख्य घटक कौन-कौन से हैं?

1.3.2 श्रवण मूल्यांकन की आवश्यकता

श्रवण मूल्यांकन आधुनिक श्रव्यविज्ञान, विशेष शिक्षा तथा पुनर्वास सेवाओं का एक अनिवार्य घटक है। इसकी आवश्यकता केवल श्रवण क्षति की पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की संप्रेषण क्षमता, भाषा विकास, शैक्षिक प्रगति तथा सामाजिक सहभागिता को समझने का आधार भी प्रदान करता है। श्रवण संबंधी समस्याएँ कई बार प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देतीं, इसलिए वैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से उनका समय पर पता लगाना आवश्यक होता है।

श्रवण मूल्यांकन की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता श्रवण क्षति की प्रारम्भिक पहचान है। जीवन के आरम्भिक वर्षों को भाषा विकास का संवेदनशील काल माना जाता है। यदि इस अवधि में श्रवण दुर्बलता की पहचान नहीं हो पाती, तो बालक के वाक्, भाषा तथा संप्रेषण विकास में विलम्ब हो सकता है। इसलिए नवजात श्रवण जाँच कार्यक्रमों तथा बाल श्रव्यविज्ञान सेवाओं में श्रवण मूल्यांकन की केंद्रीय भूमिका होती है।

श्रवण मूल्यांकन निदानात्मक निर्णयों के लिए भी आवश्यक है। यह केवल श्रवण क्षति की उपस्थिति नहीं बताता, बल्कि उसके प्रकार, मात्रा तथा स्वरूप का भी निर्धारण करता है। इस जानकारी के आधार पर यह स्पष्ट किया जा सकता है कि समस्या बाह्य कर्ण, मध्य कर्ण, अंतःकर्ण अथवा श्रवण तंत्रिका से संबंधित है। सटीक निदान के बिना उपयुक्त उपचार अथवा पुनर्वास योजना तैयार करना कठिन होता है।

शैक्षिक योजना के निर्माण में भी श्रवण मूल्यांकन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। श्रवण दुर्बलता वाले बालकों को कक्षा शिक्षण, मौखिक निर्देशों, समूह चर्चाओं तथा भाषा-आधारित गतिविधियों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी शिक्षकों एवं विशेषज्ञों को उपयुक्त शैक्षिक अनुकूलन, संसाधन सेवाएँ तथा सहायक तकनीकों का चयन करने में सहायता प्रदान करती है।

प्रवर्धन उपकरणों के चयन एवं फिटिंग में भी श्रवण मूल्यांकन की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट तथा अन्य सहायक श्रवण उपकरण तभी प्रभावी सिद्ध होते हैं जब उनका चयन सटीक श्रवण निष्कर्षों के आधार पर किया जाए। मूल्यांकन के परिणाम उपकरण की प्रोग्रामिंग, लाभ के आकलन तथा अनुवर्ती निगरानी (फॉलो-अप) का आधार बनते हैं।

इसके अतिरिक्त, श्रवण मूल्यांकन परिवार परामर्श, प्रगति निगरानी तथा पुनर्मूल्यांकन में भी उपयोगी है। आप समझ गए होंगे कि प्रभावी हस्तक्षेप की शुरुआत सटीक मूल्यांकन से ही होती है। इसलिए श्रवण मूल्यांकन को श्रवण स्वास्थ्य सेवाओं की आधारभूत आवश्यकता माना जाता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. श्रवण मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों होती है?

2. प्रारम्भिक पहचान में श्रवण मूल्यांकन की क्या भूमिका है?
3. श्रवण मूल्यांकन निदानात्मक निर्णयों में कैसे सहायक होता है?
4. शैक्षिक योजना में श्रवण मूल्यांकन का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
5. प्रवर्धन उपकरणों के चयन में श्रवण मूल्यांकन क्यों आवश्यक है?

1.3.3 प्रारम्भिक पहचान, निदान एवं पुनर्वास में श्रवण मूल्यांकन की भूमिका

श्रवण मूल्यांकन प्रारम्भिक पहचान, निदान तथा पुनर्वास की संपूर्ण प्रक्रिया का आधार है। श्रवण दुर्बलता की समय पर पहचान न होने पर बालक के भाषा विकास, संप्रेषण कौशल, शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक सहभागिता पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए आधुनिक श्रव्यविज्ञान में प्रारम्भिक मूल्यांकन को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है।

प्रारम्भिक पहचान श्रवण मूल्यांकन का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता है। वर्तमान में सार्वभौमिक नवजात श्रवण जाँच कार्यक्रमों के माध्यम से जीवन के प्रारम्भिक दिनों में ही संभावित श्रवण समस्याओं की पहचान की जा सकती है। ओटोएकाउस्टिक एमिशन तथा ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स जैसे परीक्षण नवजात शिशुओं में भी विश्वसनीय परिणाम प्रदान करते हैं। प्रारम्भिक पहचान से हस्तक्षेप सेवाएँ शीघ्र प्रारम्भ की जा सकती हैं, जिससे भाषा एवं संप्रेषण विकास पर प्रतिकूल प्रभावों को कम किया जा सकता है।

निदान की दृष्टि से श्रवण मूल्यांकन श्रवण क्षति के प्रकार, मात्रा तथा कारणों के निर्धारण में सहायता करता है। विभिन्न व्यवहारिक एवं शरीरक्रियात्मक परीक्षणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाता है कि श्रवण तंत्र का कौन-सा भाग प्रभावित है तथा समस्या कितनी गंभीर है। निदानात्मक जानकारी चिकित्सा प्रबंधन, प्रवर्धन चयन तथा पुनर्वास योजना के लिए आधार प्रदान करती है।

पुनर्वास प्रक्रिया में श्रवण मूल्यांकन की भूमिका अत्यंत व्यापक है। श्रवण यंत्रों की आवश्यकता, कॉक्लियर इम्प्लांट की उपयुक्तता, संप्रेषण विधि का चयन तथा वाक्-भाषा हस्तक्षेप की योजना मूल्यांकन निष्कर्षों पर आधारित होती है। यदि श्रवण स्थिति का सही आकलन न किया जाए, तो पुनर्वास सेवाएँ अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाएँगी।

श्रवण मूल्यांकन पुनर्वास की प्रभावशीलता का आकलन करने में भी सहायता करता है। समय-समय पर किए जाने वाले पुनर्मूल्यांकन यह निर्धारित करते हैं कि प्रवर्धन उपकरण पर्याप्त लाभ प्रदान कर रहे हैं या नहीं तथा भाषा एवं संप्रेषण विकास अपेक्षित दिशा में प्रगति कर रहा है या नहीं। आवश्यक होने पर हस्तक्षेप कार्यक्रमों में संशोधन किया जा सकता है।

परिवार परामर्श में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मूल्यांकन से प्राप्त निष्कर्ष अभिभावकों को बालक की वास्तविक श्रवण स्थिति, उपलब्ध विकल्पों तथा संभावित विकासात्मक परिणामों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। आप परिचित हो चुके होंगे कि सूचित परिवार पुनर्वास प्रक्रिया में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

इस प्रकार श्रवण मूल्यांकन प्रारम्भिक पहचान, सटीक निदान, प्रभावी पुनर्वास तथा दीर्घकालिक निगरानी को जोड़ने वाली एक केंद्रीय प्रक्रिया है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. प्रारम्भिक पहचान में श्रवण मूल्यांकन का क्या योगदान है?
2. निदानात्मक प्रक्रिया में श्रवण मूल्यांकन कैसे सहायक होता है?
3. पुनर्वास योजना निर्माण में श्रवण मूल्यांकन की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
4. पुनर्मूल्यांकन क्यों आवश्यक है?

5. परिवार परामर्श में श्रवण मूल्यांकन का महत्त्व बताइए।

1.4 श्रवण परीक्षणों का वर्गीकरण

श्रवण मूल्यांकन एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें श्रवण तंत्र की संरचना एवं कार्यक्षमता के विभिन्न पहलुओं का आकलन किया जाता है। कोई भी एकल परीक्षण श्रवण स्थिति की संपूर्ण जानकारी प्रदान नहीं कर सकता, इसलिए श्रव्य विशेषज्ञ विभिन्न परीक्षणों के संयोजन का उपयोग करते हैं। इस दृष्टिकोण को परीक्षण बैटरी पद्धति कहा जाता है।

सामान्यतः श्रवण परीक्षणों को दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जाता है: बिहेवियरल ऑडियोलॉजिकल टेस्ट् तथा फिज़ियोलॉजिकल टेस्ट्। व्यवहारिक परीक्षणों में व्यक्ति की प्रत्यक्ष अथवा प्रेक्षणीय प्रतिक्रिया के आधार पर श्रवण क्षमता का आकलन किया जाता है। दूसरी ओर, शरीरक्रियात्मक परीक्षणों में श्रवण तंत्र की जैविक अथवा विद्युत-शारीरिक प्रतिक्रियाओं को मापा जाता है तथा इनमें व्यक्ति की सक्रिय सहभागिता आवश्यक नहीं होती।

व्यवहारिक परीक्षण वास्तविक श्रवण अनुभव तथा कार्यात्मक निष्पादन के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं, जबकि शरीरक्रियात्मक परीक्षण श्रवण तंत्र की वस्तुनिष्ठ कार्यप्रणाली का मूल्यांकन करते हैं। दोनों प्रकार के परीक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं तथा संयुक्त रूप से अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष प्रदान करते हैं।

आप आगे के खण्डों में इन दोनों वर्गों के अंतर्गत आने वाले प्रमुख परीक्षणों, उनकी प्रक्रियाओं, उपयोगिताओं तथा सीमाओं का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. परीक्षण बैटरी पद्धति से क्या तात्पर्य है?

2. श्रवण परीक्षणों के दो प्रमुख वर्ग कौन-कौन से हैं?

3. व्यवहारिक एवं शरीरक्रियात्मक परीक्षणों में मुख्य अंतर क्या है?

4. दोनों प्रकार के परीक्षणों का संयुक्त उपयोग क्यों आवश्यक है?

1.4.1 व्यवहारिक एवं फिज़ियोलॉजिकल टेस्ट्: सिद्धान्त, प्रकार एवं उपयोगिता

श्रवण मूल्यांकन की विश्वसनीयता इस बात पर निर्भर करती है कि श्रवण तंत्र के विभिन्न घटकों का आकलन कितनी व्यापकता एवं सटीकता के साथ किया गया है। चूँकि श्रवण एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें बाह्य कर्ण, मध्य कर्ण, अंतःकर्ण, श्रवण तंत्रिका तथा केंद्रीय श्रवण मार्ग सम्मिलित होते हैं, इसलिए किसी एक परीक्षण के आधार पर अंतिम निष्कर्ष निकालना उचित नहीं माना जाता। इसी कारण आधुनिक श्रव्यविज्ञान में व्यवहारिक तथा शरीरक्रियात्मक दोनों प्रकार के परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। ये परीक्षण संयुक्त रूप से श्रवण तंत्र की संरचना, कार्यप्रणाली तथा व्यक्ति की कार्यात्मक श्रवण क्षमता का समग्र चित्र प्रस्तुत करते हैं।

बिहेवियरल ऑडियोलॉजिकल टेस्ट् : सिद्धान्त एवं महत्त्व

बिहेवियरल ऑडियोलॉजिकल टेस्ट् ऐसे परीक्षण हैं जिनमें ध्वनि उद्दीपन के प्रति व्यक्ति की प्रत्यक्ष, प्रेक्षणीय अथवा स्वैच्छिक प्रतिक्रिया के आधार पर श्रवण क्षमता का आकलन किया जाता है। इन परीक्षणों का मूल सिद्धान्त यह है कि यदि व्यक्ति ध्वनि को सुनता है, तो वह किसी न किसी प्रकार की व्यवहारिक प्रतिक्रिया प्रदर्शित करेगा। यह प्रतिक्रिया चौंकने, सिर घुमाने, खेल क्रिया करने, हाथ उठाने अथवा मौखिक उत्तर देने के रूप में हो सकती है।

व्यवहारिक परीक्षणों का विशेष महत्त्व इसलिए है क्योंकि ये व्यक्ति की वास्तविक श्रवण क्षमता तथा दैनिक जीवन में ध्वनियों के उपयोग संबंधी

जानकारी प्रदान करते हैं। आप देखेंगे कि शैक्षिक एवं पुनर्वासात्मक निर्णयों में व्यवहारिक परीक्षणों से प्राप्त निष्कर्ष अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

बिहेवियरल ऑब्ज़र्वेशन ऑडियोमेट्री: (BOA)

BOA मुख्यतः नवजात शिशुओं तथा छह माह से कम विकासात्मक आयु वाले शिशुओं के लिए प्रयुक्त की जाती है। इस परीक्षण में ध्वनि उद्दीपन के प्रति शिशु की स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं का अवलोकन किया जाता है।

सामान्य प्रतिक्रियाओं में शामिल हैं:

- चौंकना
- पलक झपकाना
- आँखों का फैलना
- शरीर की गतिविधि में परिवर्तन
- चूसने के पैटर्न में परिवर्तन
- नींद से जागना

उपयोगिता

- प्रारम्भिक श्रवण जानकारी प्राप्त करने में सहायक।
- नवजात श्रवण मूल्यांकन में उपयोगी।
- अन्य परीक्षणों के निष्कर्षों के क्रॉस-चेक के रूप में प्रयुक्त।

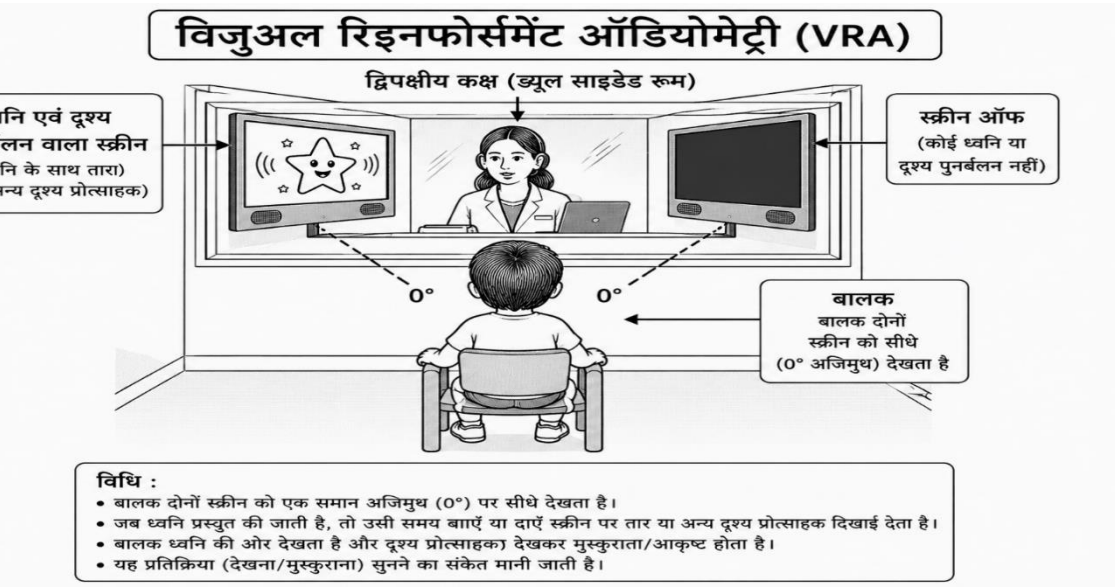
सीमाएँ

- प्रतिक्रियाएँ परिवर्तनशील होती हैं।
- आवृत्ति-विशिष्ट जानकारी प्राप्त नहीं होती।

- श्रवण सीमा का सटीक निर्धारण संभव नहीं।

विज़ुअल रिइनफोर्समेंट ऑडियोमेट्री(VRA)

VRA लगभग 6 से 24 माह की विकासात्मक आयु वाले बच्चों में उपयोग की जाती है। यह अनुबंधन के सिद्धान्त पर आधारित है। बालक को ध्वनि सुनने पर ध्वनि स्रोत की दिशा में देखने या सिर घुमाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। सही प्रतिक्रिया मिलने पर दृश्य पुनर्बलन प्रदान किया जाता है।



चित्र1.3 विज़ुअल रिइनफोर्समेंट ऑडियोमेट्री।

उपयोगिता

- कर्ण-विशिष्ट एवं आवृत्ति-विशिष्ट जानकारी प्राप्त होती है।
- छोटे बच्चों में विश्वसनीय व्यवहारिक निष्कर्ष उपलब्ध कराती है।

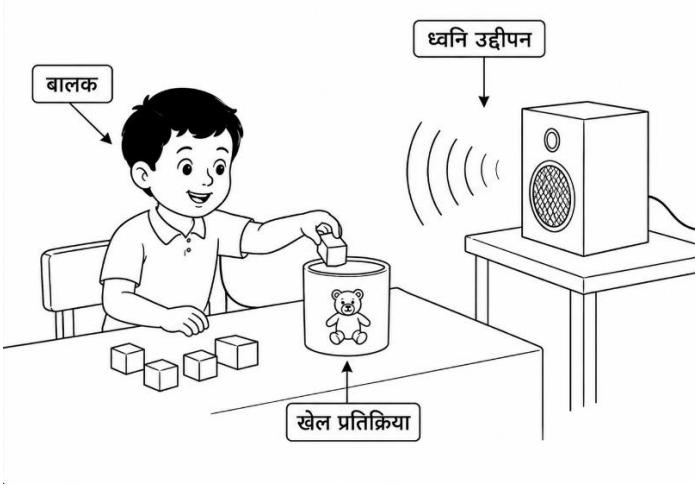
- हस्तक्षेप योजना निर्माण में सहायक होती है।

सीमाएँ

- पर्याप्त ध्यान एवं विकासात्मक परिपक्वता आवश्यक।
- गंभीर विकासात्मक विलम्ब वाले बच्चों में कठिनाई हो सकती है।

कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री(CPA)

CPA सामान्यतः 2 से 5 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए विकसित की गई है। इसमें श्रवण परीक्षण को खेल गतिविधि में परिवर्तित किया जाता है। बालक को ध्वनि सुनते ही कोई विशिष्ट क्रिया करने के लिए कहा जाता है, जैसे ब्लॉक डालना या खिलौना रखना।



चित्र1.4 कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री।

उपयोगिता

- पूर्व-विद्यालयी बच्चों में उच्च सहयोग प्राप्त होता है।
- विश्वसनीय श्रवण सीमाएँ उपलब्ध होती हैं।
- कर्ण-विशिष्ट परीक्षण संभव होता है।

सीमाएँ

- निर्देशों की समझ आवश्यक।
- ध्यान की कमी परिणामों को प्रभावित कर सकती है।

प्योर टोन ऑडियोमेट्री (PTA)

प्योर टोन ऑडियोमेट्री को श्रवण मूल्यांकन का स्वर्ण मानक माना जाता है। इसमें विभिन्न आवृत्तियों एवं तीव्रताओं के शुद्ध स्वर प्रस्तुत किए जाते हैं तथा व्यक्ति प्रत्येक ध्वनि सुनने पर प्रतिक्रिया देता है।

इसके दो प्रमुख घटक हैं:

1. एयर कंडक्शन ऑडियोमेट्री
2. बोन कंडक्शन ऑडियोमेट्री

वायु एवं अस्थि संचालन परिणामों की तुलना से श्रवण क्षति के प्रकार का निर्धारण किया जाता है।



चित्र1.5 प्योर टोन ऑडियोमेट्री।

उपयोगिता

- श्रवण क्षति की मात्रा का निर्धारण।
- श्रवण क्षति के प्रकार की पहचान।
- श्रवण यंत्र फिटिंग का आधार।

- प्रगति निगरानी में उपयोगी।

सीमाएँ

- सक्रिय सहभागिता आवश्यक।
- छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं।

स्पीच ऑडियोमेट्री

स्पीच ऑडियोमेट्री व्यक्ति की वाक् समझने की क्षमता का आकलन करती है। यह वास्तविक जीवन में संप्रेषण संबंधी क्षमताओं की जानकारी प्रदान करती है।

इसके प्रमुख घटक हैं:

- वाक् संसूचन सीमा
- वाक् पहचान सीमा
- शब्द पहचान स्कोर
- वाक् अभिज्ञान परीक्षण

उपयोगिता

- संप्रेषण क्षमता का मूल्यांकन।
- श्रवण यंत्र लाभ का आकलन।
- कॉक्लियर इम्प्लांट परिणामों की समीक्षा।
- पुनर्वास योजना निर्माण।

फिज़ियोलॉजिकल टेस्ट्: सिद्धान्त एवं महत्त्व

फिज़ियोलॉजिकल टेस्ट् ऐसे वस्तुनिष्ठ परीक्षण हैं जिनमें व्यक्ति की सक्रिय सहभागिता आवश्यक नहीं होती। इन परीक्षणों में ध्वनि उद्दीपन के प्रति उत्पन्न जैविक, यांत्रिक अथवा विद्युत-तंत्रिकीय प्रतिक्रियाओं को मापा जाता है। ये

परीक्षण विशेष रूप से नवजात शिशुओं, छोटे बच्चों, बहु-दिव्यांगता वाले व्यक्तियों तथा सीमित सहयोग वाले व्यक्तियों में अत्यंत उपयोगी होते हैं।



चित्र1.6 फिज़ियोलॉजिकल टेस्ट्।

इमिटेंस ऑडियोमेट्री

इमिटेंस ऑडियोमेट्री मध्य कर्ण की कार्यप्रणाली का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करती है। इसके दो प्रमुख घटक हैं:

टिम्पैनोमेट्री

यह कर्णपटह की गतिशीलता तथा मध्य कर्ण दबाव का आकलन करती है।

उपयोगिता

- ओटिटिस मीडिया की पहचान।
- मध्य कर्ण द्रव का पता लगाना।
- यूस्टेकियन ट्यूब की कार्यक्षमता का मूल्यांकन।
- व्यवहारिक निष्कर्षों का क्रॉस-चेक।

अकूस्टिक रिफ्लेक्स टेस्टिंग

यह तीव्र ध्वनि के प्रति स्टेपीडियस पेशी की अनैच्छिक प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करता है।

उपयोगिता

- मध्य कर्ण की संपूर्णता का आकलन।
- श्रवण तंत्रिका कार्यप्रणाली का मूल्यांकन।
- रेट्रोकॉक्लियर विकारों की पहचान।

ओटोएकाउस्टिक एमिशन (OAE)

OAE कॉक्लिया की बाह्य रोम कोशिकाओं की कार्यक्षमता का वस्तुनिष्ठ संकेत प्रदान करता है। यह परीक्षण त्वरित, अनाक्रामक तथा नवजात शिशुओं के लिए अत्यंत उपयोगी है।

इसके प्रमुख प्रकार हैं:

- ट्रांज़िएंट एवोक्ड OAE (TEOAE)
- डिस्टॉर्शन प्रोडक्ट OAE (DPOAE)

उपयोगिता

- नवजात श्रवण जाँच।
- कॉक्लियर कार्यप्रणाली का मूल्यांकन।
- ओटोटॉक्सिसिटी निगरानी।
- ध्वनि-जनित श्रवण क्षति की निगरानी।

ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स (ABR)

ABR श्रवण तंत्रिका एवं मस्तिष्क स्तंभ की विद्युत गतिविधि का मूल्यांकन करता है। यह बाल श्रव्यविज्ञान में अत्यंत महत्त्वपूर्ण परीक्षण माना जाता है।

उपयोगिता

- नवजात श्रवण मूल्यांकन।
- श्रवण सीमा का अनुमान।
- ऑडिटरी न्यूरोपैथी की पहचान।
- कॉक्लियर इम्प्लांट मूल्यांकन।

ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स (ASSR)

ASSR एक उन्नत विद्युत-शरीरक्रियात्मक (इलेक्ट्रो-फिज़ियोलॉजिकल) परीक्षण है जो आवृत्ति-विशिष्ट श्रवण सीमाओं का वस्तुनिष्ठ अनुमान प्रदान करता है।

उपयोगिता

- गंभीर एवं अत्यंत गंभीर श्रवण क्षति का मूल्यांकन।
- बाल श्रव्यविज्ञान।
- श्रवण यंत्र फिटिंग।
- कॉक्लियर इम्प्लांट योजना।

व्यवहारिक एवं शरीरक्रियात्मक परीक्षणों का समन्वित उपयोग

आधुनिक श्रव्यविज्ञान में किसी भी परीक्षण को अकेले पर्याप्त नहीं माना जाता। व्यवहारिक परीक्षण व्यक्ति की वास्तविक श्रवण क्षमता तथा कार्यात्मक निष्पादन की जानकारी प्रदान करते हैं, जबकि शरीरक्रियात्मक परीक्षण श्रवण तंत्र की

वस्तुनिष्ठ कार्यप्रणाली को दर्शाते हैं। दोनों प्रकार के परीक्षणों के संयुक्त उपयोग से अधिक सटीक निदान, बेहतर हस्तक्षेप योजना तथा प्रभावी पुनर्वास संभव होता है।

आपने देखा होगा कि क्रॉस-चेक सिद्धान्त आधुनिक श्रवण मूल्यांकन का आधार है। इसके अनुसार किसी भी निष्कर्ष की पुष्टि एकाधिक स्वतंत्र परीक्षणों द्वारा की जानी चाहिए। यही दृष्टिकोण श्रवण मूल्यांकन को अधिक विश्वसनीय, वैज्ञानिक तथा नैदानिक रूप से उपयोगी बनाता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. बिहेवियरल ऑडियोलॉजिकल टेस्ट्का मूल सिद्धान्त क्या है?
2. BOA और VRA में क्या अंतर है?
3. CPA किस आयु वर्ग के लिए उपयुक्त है?
4. प्योर टोन ऑडियोमेट्री को स्वर्ण मानक क्यों कहा जाता है?
5. स्पीच ऑडियोमेट्री का नैदानिक महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
6. इमिटेंस ऑडियोमेट्री के प्रमुख घटक कौन-कौन से हैं?
7. OAE और ABR में अंतर स्पष्ट कीजिए।
8. ASSR की प्रमुख उपयोगिताएँ लिखिए।
9. क्रॉस-चेक सिद्धान्त से क्या तात्पर्य है?
10. बिहेवियरल एवं फिज़ियोलॉजिकल टेस्ट् के संयुक्त उपयोग का महत्त्व बताइए।

1.4.2 आयु एवं बालक की क्रियात्मक क्षमताओं के अनुसार श्रवण परीक्षणों का चयन

श्रवण मूल्यांकन की सफलता केवल उपयुक्त परीक्षणों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि परीक्षण का चयन बालक की आयु, विकासात्मक स्तर तथा क्रियात्मक क्षमताओं के अनुरूप किया गया है या नहीं। आधुनिक बाल श्रव्यविज्ञान इस सिद्धान्त को स्वीकार करता है कि सभी बच्चों के लिए एक ही परीक्षण उपयुक्त नहीं हो सकता। प्रत्येक बालक की संज्ञानात्मक क्षमता, ध्यान अवधि, भाषा कौशल, व्यवहारिक नियंत्रण, गत्यात्मक योग्यता तथा संप्रेषण स्तर भिन्न होते हैं। इसलिए श्रव्य विशेषज्ञ को परीक्षण चयन करते समय बालक की व्यक्तिगत विशेषताओं का समग्र विश्लेषण करना आवश्यक होता है।

श्रवण परीक्षणों के चयन का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्राप्त परिणाम यथासंभव विश्वसनीय, वैध तथा नैदानिक रूप से उपयोगी हों। यदि बालक की क्षमताओं से असंगत परीक्षण का चयन किया जाता है, तो परिणाम त्रुटिपूर्ण हो सकते हैं और निदान, हस्तक्षेप तथा शैक्षिक योजना प्रभावित हो सकती है। इसलिए आयु तथा क्रियात्मक क्षमताओं पर आधारित परीक्षण चयन बाल श्रव्यविज्ञान की आधारभूत आवश्यकता है।

परीक्षण चयन के मूल सिद्धान्त

श्रवण परीक्षणों के चयन में कुछ सामान्य सिद्धान्तों का पालन किया जाता है।

1. कालानुक्रमिक आयु के साथ विकासात्मक आयु पर विचार किया जाए।
2. व्यवहारिक एवं शरीरक्रियात्मक परीक्षणों का संयुक्त उपयोग किया जाए।
3. क्रॉस-चेक सिद्धान्त का पालन किया जाए।

4. परीक्षण प्रक्रिया बालक-केंद्रित हो।
5. आवश्यकता अनुसार परीक्षण रणनीतियों में लचीलापन रखा जाए।
6. निष्कर्षों की पुष्टि एकाधिक स्रोतों से की जाए।

आप परिचित हो गए होंगे कि आधुनिक श्रवण मूल्यांकन किसी एक परीक्षण पर आधारित नहीं होता, बल्कि परीक्षणों की एक समन्वित श्रृंखला पर आधारित होता है।

जन्म से छह माह तक के शिशुओं में परीक्षण चयन

जीवन के प्रारम्भिक छह माह में शिशु स्वैच्छिक एवं विश्वसनीय व्यवहारिक प्रतिक्रियाएँ देने में सक्षम नहीं होता। इस अवस्था में श्रवण मूल्यांकन मुख्यतः वस्तुनिष्ठ परीक्षणों पर आधारित होता है।

इस आयु वर्ग में सामान्यतः निम्नलिखित परीक्षणों का उपयोग किया जाता है:

- ओटोएकाउस्टिक एमिशन (OAE)
- ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स (ABR)
- ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स (ASSR)
- हाई फ्रीक्वेंसी टिम्पैनोमेट्री
- अकूस्टिक रिफ्लेक्स टेस्टिंग
- बिहेवियरल ऑब्ज़र्वेशन ऑडियोमेट्री (BOA)

OAE कॉक्लिया की बाह्य रोम कोशिकाओं की कार्यक्षमता की जानकारी प्रदान करता है, जबकि ABR श्रवण तंत्रिका एवं मस्तिष्क स्तंभ मार्गों की कार्यप्रणाली का आकलन करता है। ASSR आवृत्ति-विशिष्ट श्रवण सीमाओं का वस्तुनिष्ठ

अनुमान उपलब्ध कराता है।BOA का उपयोग पूरक जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है, किन्तु इसे स्वतंत्र निदानात्मक परीक्षण नहीं माना जाता। इस आयु में प्राप्त अधिकांश निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ परीक्षणों पर आधारित होते हैं।

छह से चौबीस माह तक के बच्चों में परीक्षण चयन

इस अवस्था में बालक ध्वनियों की दिशा पहचानने, सिर घुमाने तथा दृश्य उद्दीपनों पर प्रतिक्रिया देने में सक्षम हो जाता है। इसलिए व्यवहारिक परीक्षणों को श्रवण मूल्यांकन में सम्मिलित किया जा सकता है।

इस आयु वर्ग में प्रमुख परीक्षण हैं:

तालिका 1.2: 6 से 24 माह आयु वर्ग हेतु परीक्षण चयन

परीक्षण	उद्देश्य
VRA	व्यवहारिक श्रवण सीमा का निर्धारण
OAE	कॉक्लियर कार्यक्षमता
टिम्पैनोमेट्री	मध्य कर्ण मूल्यांकन
ABR	आवश्यकता पड़ने पर सीमा निर्धारण
ASSR	आवृत्ति-विशिष्ट जानकारी

ध्वनि उद्दीपन

↓

सिर घुमाने की प्रतिक्रिया

↓

दृश्य पुनर्बलन

↓

VRA परिणाम

VRA इस आयु वर्ग का सर्वाधिक लोकप्रिय व्यवहारिक परीक्षण है। यह बालक की स्वाभाविक जिज्ञासा का उपयोग करके विश्वसनीय श्रवण सीमाएँ प्राप्त करने में सहायता करता है।

दो से पाँच वर्ष तक के बच्चों में परीक्षण चयन

पूर्व-विद्यालयी आयु के बच्चों में संज्ञानात्मक एवं भाषा विकास पर्याप्त रूप से बढ़ जाता है। बालक निर्देशों का पालन करने तथा खेल गतिविधियों में भाग लेने में सक्षम हो जाता है। इसलिए कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री इस आयु वर्ग में अत्यधिक प्रभावी मानी जाती है।

प्रमुख परीक्षण निम्नलिखित हैं:

- कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री (CPA)
- स्पीच ऑडियोमेट्री
- ओटोअकॉस्टिक एमिशन्स (ओएई)
- टिम्पैनोमेट्री

- अकूस्टिक रिफ्लेक्स
- आवश्यकता अनुसार ABR

CPA में श्रवण परीक्षण को खेल गतिविधि में परिवर्तित कर दिया जाता है। इससे बालक का सहयोग बढ़ता है तथा अधिक विश्वसनीय परिणाम प्राप्त होते हैं।

आपने देखा होगा कि इस आयु में व्यवहारिक परीक्षणों की उपयोगिता काफी बढ़ जाती है क्योंकि बालक ध्वनि एवं प्रतिक्रिया के बीच संबंध स्थापित कर सकता है।

पाँच वर्ष एवं उससे अधिक आयु के बच्चों में परीक्षण चयन

विद्यालयी आयु तक पहुँचने पर अधिकांश बच्चे पारंपरिक श्रवण परीक्षणों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगते हैं। इस अवस्था में प्योर टोन ऑडियोमेट्री प्रमुख परीक्षण बन जाती है।

सामान्यतः निम्नलिखित परीक्षण किए जाते हैं:

- एयर कंडक्शन ऑडियोमेट्री
- बोन कंडक्शन ऑडियोमेट्री
- स्पीच ऑडियोमेट्री
- टिम्पैनोमेट्री
- अकूस्टिक रिफ्लेक्स
- ओटोअकॉस्टिक एमिशन्स (ओएई)

तालिका 1.2 : आयु आधारित परीक्षण चयन

आयु वर्ग	प्रमुख परीक्षण
0-6 माह	OAE, ABR, ASSR, BOA
6-24 माह	VRA, OAE, ABR
2-5 वर्ष	CPA, स्पीच ऑडियोमेट्री
5 वर्ष से अधिक	PTA, स्पीच ऑडियोमेट्री
किशोर	PTA, वाक् परीक्षण, इमिटेंस

विद्यालयी आयु में प्राप्त परिणाम शैक्षिक योजना, श्रवण यंत्र फिटिंग तथा कक्षा अनुकूलन के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

किशोरावस्था में परीक्षण चयन

किशोर अधिकांश वयस्क परीक्षणों में भाग लेने में सक्षम होते हैं। इस अवस्था में ध्वनि प्रदूषण, मनोरंजन संबंधी ध्वनि जोखिम तथा व्यक्तिगत श्रवण व्यवहार पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

इस आयु वर्ग में निम्न परीक्षण उपयोगी होते हैं:

- प्योर टोन ऑडियोमेट्री
- स्पीच ऑडियोमेट्री
- इमिटेंस ऑडियोमेट्री
- ओटोअकॉस्टिक एमिशन्स (ओएई)
- हाई फ्रीक्वेंसी ऑडियोमेट्री

- स्पीच इन नॉइज़ टेस्टिंग

शोर में वाक् परीक्षण वास्तविक जीवन की श्रवण चुनौतियों के बारे में अतिरिक्त जानकारी प्रदान करते हैं।

क्रियात्मक क्षमताओं के अनुसार परीक्षण चयन

केवल आयु के आधार पर परीक्षण चयन पर्याप्त नहीं होता। समान आयु के बच्चों की क्रियात्मक क्षमताएँ भिन्न हो सकती हैं। इसलिए श्रव्य विशेषज्ञ को संज्ञानात्मक, भाषाई, गत्यात्मक एवं व्यवहारिक क्षमताओं का भी मूल्यांकन करना चाहिए।

संज्ञानात्मक क्षमता का प्रभाव

संज्ञानात्मक क्षमता यह निर्धारित करती है कि बालक निर्देशों को समझ सकता है या नहीं।

सामान्य संज्ञानात्मक क्षमता

ऐसे बच्चों में निम्न परीक्षण प्रभावी होते हैं:

- विजुअल रिइनफोर्समेंट ऑडियोमेट्री
- कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री
- प्योर टोन ऑडियोमेट्री
- स्पीच ऑडियोमेट्री

मध्यम संज्ञानात्मक सीमाएँ

इन बच्चों में संशोधित व्यवहारिक तकनीकों की आवश्यकता हो सकती है। परीक्षण अवधि कम रखी जाती है तथा अतिरिक्त पुनर्बलन दिया जाता है।

गंभीर संज्ञानात्मक दुर्बलता

ऐसी परिस्थितियों में वस्तुनिष्ठ परीक्षणों पर अधिक निर्भरता होती है:

- ओटोअकॉस्टिक एमिशन्स
- ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स
- ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स
- इमिटेंस टेस्टिंग

ध्यान अवधि का प्रभाव

ध्यान अवधि व्यवहारिक परीक्षणों की सफलता का महत्त्वपूर्ण निर्धारक है।

ध्यान संबंधी कठिनाइयाँ निम्न स्थितियों में सामान्य हो सकती हैं:

- ADHD
- ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार
- बौद्धिक दिव्यांगता
- विकासात्मक विलम्ब (डेवलपमेंटल डिले)

ऐसे मामलों में निम्न रणनीतियाँ उपयोगी होती हैं:

- छोटे परीक्षण सत्र
- बार-बार विश्राम
- सकारात्मक पुनर्बलन
- आकर्षक गतिविधियाँ

गत्यात्मक क्षमता का प्रभाव

कई व्यवहारिक परीक्षणों में शारीरिक प्रतिक्रिया आवश्यक होती है। यदि बालक में गत्यात्मक सीमाएँ हों, तो प्रतिक्रिया देने के वैकल्पिक तरीकों का उपयोग किया जाता है।

उदाहरण:

- आँखों की गति
- सिर हिलाना
- संकेत करना
- स्पर्श आधारित प्रतिक्रिया

गंभीर गत्यात्मक दुर्बलता की स्थिति में वस्तुनिष्ठ परीक्षण अधिक विश्वसनीय सिद्ध होते हैं।

भाषाएवं संप्रेषण क्षमता का प्रभाव

स्पीच ऑडियोमेट्री तथा अन्य मौखिक परीक्षणों की सफलता भाषा कौशल पर निर्भर करती है।

यदि भाषा समझ सीमित हो, तो निम्न विकल्प उपयोगी हो सकते हैं:

- चित्र आधारित सामग्री
- गैर-मौखिक निर्देश
- खेल आधारित प्रतिक्रिया
- वस्तुनिष्ठ परीक्षण

आप समझ गए होंगे कि कम वाक् अभिज्ञान स्कोर हमेशा श्रवण क्षति का संकेत नहीं देता। कभी-कभी भाषा कठिनाइयाँ भी परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं।

दृष्टि क्षमता का प्रभाव

कुछ व्यवहारिक परीक्षण दृश्य संकेतों पर आधारित होते हैं। उदाहरण के लिए VRA तथा CPA में दृश्य पुनर्बलन का उपयोग किया जाता है।

दृष्टि दुर्बलता वाले बच्चों में निम्न संशोधन किए जा सकते हैं:

- स्पर्श आधारित संकेत

- श्रव्य पुनर्बलन
- संशोधित खेल गतिविधियाँ
- वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अधिक उपयोग

बहु-दिव्यांगता वाले बच्चों में परीक्षण चयन

बहु-दिव्यांगता वाले बच्चों का मूल्यांकन अधिक जटिल होता है। इनमें निम्न चुनौतियाँ देखी जा सकती हैं:

- सीमित संप्रेषण
- ध्यान संबंधी कठिनाइयाँ
- गत्यात्मक प्रतिबन्ध
- संज्ञानात्मक विलम्ब
- व्यवहारिक समस्याएँ

ऐसी परिस्थितियों में परीक्षण चयन बहु-विषयक दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए।

चित्र 1.2 : क्रियात्मक क्षमता आधारित परीक्षण चयन मॉडल

क्रियात्मक मूल्यांकन

↓

संज्ञानात्मक क्षमता

↓

भाषा एवं व्यवहार

↓

गत्यात्मक एवं दृष्टि कौशल

↓

उपयुक्त परीक्षण चयन

↓

क्रॉस-चेक एवं निष्कर्ष

परीक्षण चयन की चरणबद्ध प्रक्रिया

1. केस हिस्ट्री का अध्ययन।
2. विकासात्मक स्तर का आकलन।
3. संज्ञानात्मक क्षमताओं की समीक्षा।
4. भाषा एवं संप्रेषण स्तर का मूल्यांकन।
5. ध्यान एवं व्यवहार का अवलोकन।

6. गत्यात्मक एवं दृष्टि क्षमताओं का परीक्षण।
7. उपयुक्त व्यवहारिक परीक्षणों का चयन।
8. आवश्यक वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का समावेशन।
9. क्रॉस-चेक सिद्धान्त का अनुप्रयोग।
10. अंतिमनिष्कर्षएवंसिफारिशें।

इस प्रकार आयु तथा क्रियात्मक क्षमताओं के अनुरूप परीक्षण चयन श्रवण मूल्यांकन की गुणवत्ता को बढ़ाता है। सही परीक्षण चयन से निदान अधिक विश्वसनीय होता है, हस्तक्षेप योजना अधिक प्रभावी बनती है तथा शैक्षिक एवं पुनर्वासात्मक निर्णयों की सटीकता में वृद्धि होती है। आधुनिक बाल श्रव्यविज्ञान इसी व्यक्ति-केंद्रित एवं प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण पर आधारित है।

1.5 सारांश

इस इकाई में श्रवण मूल्यांकन की अवधारणा, आवश्यकता तथा व्यावहारिक महत्त्व का विस्तृत अध्ययन किया गया। आपने जाना कि श्रवण केवल ध्वनियों को सुनने की क्षमता नहीं है, बल्कि भाषा विकास, संप्रेषण, अधिगम, सामाजिक सहभागिता तथा संज्ञानात्मक विकास की आधारशिला है। श्रवण क्षति की समय पर पहचान न होने पर बालक के भाषाई, शैक्षिक तथा सामाजिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

श्रवण मूल्यांकन एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से श्रवण संवेदनशीलता, श्रवण तंत्र की कार्यक्षमता तथा श्रवण क्षति की प्रकृति और मात्रा का निर्धारण किया जाता है। इसके अंतर्गत व्यवहारिक तथा शरीरक्रियात्मक दोनों प्रकार के परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। व्यवहारिक परीक्षणों में

BOA, VRA, CPA, प्योर टोन ऑडियोमेट्री तथा स्पीच ऑडियोमेट्री प्रमुख हैं, जबकि शरीरक्रियात्मक परीक्षणों में इमिटेंस ऑडियोमेट्री, OAE, ABR तथा ASSR विशेष महत्त्व रखते हैं।

आप परिचित हो गए होंगे कि किसी एक परीक्षण से संपूर्ण श्रवण स्थिति का निर्धारण संभव नहीं होता। इसलिए आधुनिक श्रव्यविज्ञान में परीक्षण बैटरी तथा क्रॉस-चेक सिद्धान्त का उपयोग किया जाता है। आयु, विकासात्मक स्तर, संज्ञानात्मक क्षमता, भाषा कौशल, ध्यान अवधि तथा अन्य क्रियात्मक क्षमताओं के अनुसार परीक्षणों का चयन किया जाता है। सही परीक्षण चयन विश्वसनीय निदान, प्रभावी हस्तक्षेप, उपयुक्त प्रवर्धन, शैक्षिक योजना तथा सफल पुनर्वास की आधारशिला प्रदान करता है। इस प्रकार श्रवण मूल्यांकन श्रवण स्वास्थ्य सेवाओं का केंद्रीय एवं अनिवार्य घटक है।

1.6 पारिभाषिकशब्दावली

शब्द	अर्थ
श्रव्यविज्ञान	श्रवण एवं संतुलन विकारों के अध्ययन, मूल्यांकन और प्रबंधन का विज्ञान
श्रवण मूल्यांकन	श्रवण क्षमता एवं श्रवण तंत्र की कार्यप्रणाली का व्यवस्थित आकलन
श्रवण सीमा	ध्वनि सुन पाने की न्यूनतम तीव्रता
ऑडियोग्राम	श्रवण सीमाओं का ग्राफीय निरूपण
व्यवहारिक परीक्षण	प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया पर आधारित श्रवण परीक्षण
शरीरक्रियात्मक परीक्षण	वस्तुनिष्ठ जैविक प्रतिक्रियाओं पर आधारित परीक्षण
BOA	व्यवहारिक अवलोकन ऑडियोमेट्री

VRA	दृश्य पुनर्बलन ऑडियोमेट्री
CPA	कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री
PTA	प्योर टोन ऑडियोमेट्री
स्पीच ऑडियोमेट्री	वाक् सुनने एवं समझने की क्षमता का मूल्यांकन
टिम्पैनोमेट्री	मध्य कर्ण की यांत्रिक कार्यप्रणाली का परीक्षण
ध्वनिक रिफ्लेक्स	तीव्र ध्वनि के प्रति स्टेपीडियस पेशी की प्रतिक्रिया
OAE	कॉक्लिया की बाह्य रोम कोशिकाओं द्वारा उत्पन्न ध्वनिक प्रतिक्रिया
ABR	श्रवण तंत्रिका एवं मस्तिष्क स्तंभ की विद्युत गतिविधि का परीक्षण
ASSR	आवृत्ति-विशिष्ट श्रवण सीमा का वस्तुनिष्ठ अनुमान
कॉक्लिया	अंतःकर्ण का श्रवण अंग
क्रॉस-चेक सिद्धान्त	निष्कर्षों की पुष्टि एकाधिक परीक्षणों से करना
प्रवर्धन	श्रव्यता बढ़ाने हेतु उपकरणों का उपयोग
कॉक्लियर इम्प्लांट	गंभीर श्रवण क्षति हेतु प्रत्यारोपित श्रवण उपकरण

1.7 अभ्यासप्रश्नोंकेउत्तर

भाग 1:

1. क्योंकि श्रवण भाषा, संप्रेषण एवं अधिगम का आधार है।
2. श्रवण भाषा अधिगम एवं विकास में सहायता करता है।
3. श्रवण क्षमता का वैज्ञानिक आकलन करने के लिए।
4. OAE एवं ABR।

5. यह उपयुक्त शैक्षिक सहायता एवं सेवाओं के चयन में सहायता करता है।

भाग 2:

1. श्रवण क्षमता एवं श्रवण तंत्र की कार्यप्रणाली का वैज्ञानिक आकलन।
2. क्योंकि इसमें अनेक परीक्षणों का समन्वित उपयोग किया जाता है।
3. विभिन्न परीक्षणों के संयुक्त उपयोग की पद्धति।
4. निदान, पुनर्वास, प्रवर्धन एवं शैक्षिक योजना।
5. केस हिस्ट्री, ओटोस्कोपी, व्यवहारिक एवं शरीरक्रियात्मक परीक्षण।

भाग 3:

1. श्रवण क्षति की पहचान एवं प्रबंधन के लिए।
2. यह श्रवण दुर्बलता का शीघ्र पता लगाने में सहायता करता है।
3. यह श्रवण क्षति के प्रकार एवं मात्रा का निर्धारण करता है।
4. यह शैक्षिक सहायता एवं अनुकूलन के चयन में सहायता करता है।
5. उचित प्रवर्धन उपकरण चयन एवं फिटिंग के लिए।

भाग 4:

1. यह शीघ्र हस्तक्षेप को संभव बनाता है।
2. यह श्रवण विकार की प्रकृति एवं गंभीरता निर्धारित करता है।
3. यह पुनर्वास योजना निर्माण का आधार प्रदान करता है।
4. प्रगति एवं हस्तक्षेप की प्रभावशीलता जानने के लिए।
5. यह अभिभावकों को उचित जानकारी एवं मार्गदर्शन प्रदान करता है।

भाग 5:

1. विभिन्न परीक्षणों के संयुक्त उपयोग की पद्धति।
2. व्यवहारिक एवं शरीरक्रियात्मक परीक्षण।
3. व्यवहारिक परीक्षण प्रतिक्रिया आधारित तथा शरीरक्रियात्मक परीक्षण वस्तुनिष्ठ होते हैं।
4. अधिक विश्वसनीय एवं सटीक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए।

भाग 6:

1. ध्वनि के प्रति व्यवहारिक प्रतिक्रिया का अवलोकन।
2. BOA में स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ देखी जाती हैं, जबकि VRA में दृश्य पुनर्बलन का उपयोग किया जाता है।
3. 2–5 वर्ष आयु वर्ग।
4. क्योंकि यह श्रवण सीमा का सटीक निर्धारण करती है।
5. यह वाक् समझने की क्षमता का मूल्यांकन करती है।
6. टिम्पैनोमेट्री एवं ध्वनिक रिफ्लेक्स परीक्षण।
7. OAE कॉक्लिया की कार्यप्रणाली मापता है जबकि ABR श्रवण तंत्रिका एवं मस्तिष्क स्तंभ की गतिविधि मापता है।
8. आवृत्ति-विशिष्ट श्रवण सीमा निर्धारण एवं बाल श्रव्यविज्ञान।
9. एकाधिक परीक्षणों द्वारा निष्कर्षों की पुष्टि करना।
10. यह अधिक विश्वसनीय निदान एवं प्रभावी पुनर्वास सुनिश्चित करता है।

1.8 सन्दर्भग्रन्थसूची

1. Katz, J. (2015). *Handbook of Clinical Audiology*. Wolters Kluwer.
2. Martin, F. N., & Clark, J. G. (2019). *Introduction to Audiology*. Pearson.
3. Madell, J. R., & Flexer, C. (2019). *Pediatric Audiology*. Thieme.
4. Stach, B. A. (2019). *Clinical Audiology: An Introduction*. Cengage Learning.
5. Joint Committee on Infant Hearing. (2019). *Position Statement: Principles and Guidelines for Early Hearing Detection and Intervention Programs*.

1.9 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

अध्येता के लिए निम्न अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हो सकती है:

- नवजात श्रवण जाँच कार्यक्रमों से संबंधित दिशानिर्देश।
- बाल श्रव्यविज्ञान एवं प्रारम्भिक हस्तक्षेप पर आधारित मानक पाठ्यपुस्तकें।
- श्रवण यंत्र एवं कॉक्लियर इम्प्लांट फिटिंग संबंधी नैदानिक मैनुअल।
- American Speech-Language-Hearing Association (ASHA) के व्यावसायिक संसाधन।
- Joint Committee on Infant Hearing (JCIH) की अनुशंसाएँ।

- विद्यालय आधारित श्रवण स्क्रीनिंग कार्यक्रमों की कार्यपुस्तिकाएँ।
- श्रवण मूल्यांकन में प्रयुक्त आधुनिक उपकरणों के संचालन मार्गदर्शक।
- बाल विकास एवं भाषा अर्जन से संबंधित संदर्भ सामग्री।

1.10 निबन्धात्मकप्रश्न

1. श्रवण मूल्यांकन की अवधारणा, उद्देश्य एवं महत्त्व की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।
2. व्यवहारिक एवं शरीरक्रियात्मक श्रवण परीक्षणों की तुलना करते हुए उनके नैदानिक उपयोगों का वर्णन कीजिए।
3. विभिन्न आयु समूहों के लिए उपयुक्त श्रवण परीक्षणों के चयन की चर्चा कीजिए।
4. श्रवण परीक्षण चयन में क्रियात्मक क्षमताओं की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
5. OAE, ABR तथा ASSR परीक्षणों के सिद्धान्त, प्रक्रिया एवं उपयोगिता का वर्णन कीजिए।
6. शैक्षिक योजना एवं पुनर्वास कार्यक्रमों में श्रवण मूल्यांकन के योगदान की विवेचना कीजिए।

इकाई–2

अतिरिक्त/सहवर्ती दिव्यांगताओं वाले बालकों के श्रवण मूल्यांकन का अवलोकन; एडेड निष्पादन (एडेड ऑडियोग्राम एवं वाक् अभिज्ञान(स्पीच रिकग्निशन) के आधार पर प्रबंधन की विधि/संप्रेषण माध्यम (श्रवणात्मक, वाक्-पठन अथवा हस्तचालित संप्रेषण) का चयन

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 अतिरिक्तदिव्यांगतावालेबाल

2.3.1 अवधारणाएवंविशेषताए

2.3.2 व्यापकताएवंकारण

2.3.3 शैक्षिक एवं संप्रेषणात्मक प्रभाव

2.4 बहु-दिव्यांगता वालेबालकों में श्रवण मूल्यांकन एवं एडेड निष्पादन

2.4.1 श्रवण मूल्यांकन प्रक्रियाएँ

2.4.2 एडेड निष्पादन एवं संप्रेषण विधि का चयन

2.5 सारांश

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

श्रवण मानव संप्रेषण की आधारभूत इंद्रियों में से एक है। यह केवल ध्वनियों को सुनने की क्षमता तक सीमित नहीं है, बल्कि वाक्, भाषा, संज्ञान, सामाजिक सहभागिता तथा शैक्षिक अधिगम के विकास में भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाल्यावस्था के प्रारंभिक वर्षों में प्राप्त श्रवण अनुभव भाषा अर्जन की नींव रखते हैं। जब कोई बालक अपने परिवेश की ध्वनियों, वाणी तथा सामाजिक संकेतों को प्रभावी रूप से ग्रहण कर पाता है, तब उसके संप्रेषण कौशल, सामाजिक व्यवहार तथा शैक्षिक उपलब्धियों का विकास अधिक व्यवस्थित ढंग से होता है।



चित्र 2.1 कक्षा में श्रवण यंत्र का उपयोग करता हुआ बालक।

श्रवण दुर्बलता की उपस्थिति इस प्राकृतिक विकास प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। यदि श्रवण क्षति का समय पर पता न लगाया जाए अथवा उचित हस्तक्षेप (Intervention) उपलब्ध न हो, तो वाक् एवं भाषा विकास में विलंब, शैक्षिक कठिनाइयाँ तथा सामाजिक सहभागिता में बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। परंतु व्यवहारिक एवं नैदानिक अनुभव यह दर्शाते हैं कि अनेक बालकों में श्रवण दुर्बलता अकेले उपस्थित नहीं होती, बल्कि इसके साथ एक अथवा अधिक अतिरिक्त दिव्यांगताएँ भी जुड़ी हो सकती हैं। ऐसी परिस्थितियों में मूल्यांकन, निदान, पुनर्वास तथा शैक्षिक योजना की प्रक्रिया और अधिक जटिल हो जाती है।

अतिरिक्त दिव्यांगताओं में बौद्धिक दिव्यांगता, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, सेरेब्रल पाल्सी, दृष्टि दुर्बलता, अधिगम दिव्यांगता, तंत्रिकीय विकार तथा श्रवण-दृष्टि दोनों दुर्बलता जैसी स्थितियाँ सम्मिलित हो सकती हैं। इन स्थितियों की उपस्थिति बालक की श्रवण प्रतिक्रिया, भाषा विकास, व्यवहारिक सहभागिता तथा सीखने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है। परिणामस्वरूप श्रवण मूल्यांकन की परंपरागत प्रक्रियाएँ अनेक बार पर्याप्त नहीं होतीं और मूल्यांकन में लचीलेपन, बहु-विषयक सहयोग तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की आवश्यकता बढ़ जाती है।

आप यह समझ चुके होंगे कि श्रवण दुर्बलता एवं अतिरिक्त दिव्यांगता का संयुक्त प्रभाव केवल सुनने की क्षमता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि बालक के संपूर्ण विकास को प्रभावित कर सकता है। इसी कारण ऐसे बालकों की आवश्यकताओं का मूल्यांकन करते समय केवल श्रवण सीमा निर्धारित करना पर्याप्त नहीं माना जाता। यह जानना भी आवश्यक है कि बालक उपलब्ध श्रवण सूचना का उपयोग किस सीमा तक कर पा रहा है तथा वह संप्रेषण के लिए कौनसी विधियों से सर्वाधिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

प्रवर्धन उपकरणों, विशेषकर श्रवण यंत्रों तथा कॉक्लियर इम्प्लांट के उपयोग के पश्चात एडेड निष्पादन का मूल्यांकन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। एडेड ऑडियोग्राम तथा वाक् अभिज्ञान परीक्षण बालक की वास्तविक श्रवण उपलब्धि का आकलन करने में सहायता करते हैं। इन परिणामों के आधार पर उपयुक्त संप्रेषण विधि का चयन किया जा सकता है, जिससे भाषा विकास, शैक्षिक प्रगति तथा सामाजिक सहभागिता को अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

इस इकाई में अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालकों की अवधारणा, उनकी विशेषताओं, श्रवण मूल्यांकन प्रक्रियाओं, एडेड निष्पादन की व्याख्या तथा उसके आधार पर संप्रेषण विधि के चयन का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, बहु-विषयक टीम दृष्टिकोण के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला गया है, जिससे आप इस क्षेत्र की समग्र समझ विकसित कर सकें।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

1. अतिरिक्त दिव्यांगता की अवधारणा तथा उसके प्रमुख आयामों की व्याख्या कर सकेंगे।
2. श्रवण दुर्बलता के साथ पाई जाने वाली विभिन्न अतिरिक्त दिव्यांगताओं की पहचान कर सकेंगे।
3. अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालकों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।
4. बहु-दिव्यांगता की व्यापकता तथा उससे संबंधित कारणों की चर्चा कर सकेंगे।

5. श्रवण दुर्बलता एवं अतिरिक्त दिव्यांगता के शैक्षिक प्रभावों को समझ सकेंगे।

6. विभिन्न प्रकार की अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बालकों हेतु उपयुक्त श्रवण मूल्यांकन प्रक्रियाओं की व्याख्या कर सकेंगे।

7. श्रवण मूल्यांकन के दौरान आने वाली व्यवहारिक, संज्ञानात्मक तथा संप्रेषण संबंधी चुनौतियों की पहचान कर सकेंगे।

8. एडेड निष्पादन, एडेड ऑडियोग्राम तथा वाक् अभिज्ञान परीक्षण के महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे।

9. विभिन्न संप्रेषण विधियों की तुलना कर सकेंगे तथा उनके उपयोग की परिस्थितियों को समझ सकेंगे।

10. एडेड निष्पादन के आधार पर उपयुक्त संप्रेषण विधि के चयन की प्रक्रिया का विश्लेषण कर सकेंगे।

11. बहु-विषयक टीम के विभिन्न सदस्यों की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे।

12. मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप संबंधी सूचनाओं का उपयोग शैक्षिक तथा पुनर्वास योजना में कर सकेंगे।

2.3 अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालक

श्रवण दुर्बलता वाले सभी बालकों की आवश्यकताएँ समान नहीं होतीं। अनेक बालकों में श्रवण क्षति के साथ ऐसी अतिरिक्त स्थितियाँ भी पाई जाती हैं जो उनके विकास, संप्रेषण, अधिगम तथा सामाजिक सहभागिता को प्रभावित करती हैं। जब श्रवण दुर्बलता के साथ एक अथवा अधिक अन्य दिव्यांगताएँ उपस्थित

होती हैं, तब बालक की आवश्यकताएँ अधिक जटिल हो जाती हैं और उसके मूल्यांकन तथा हस्तक्षेप के लिए विशेष योजना की आवश्यकता होती है।

अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालकों के संदर्भ में यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक बालक की क्षमताएँ, सीमाएँ तथा विकासात्मक आवश्यकताएँ भिन्न हो सकती हैं। कुछ बालकों में संज्ञानात्मक चुनौतियाँ प्रमुख हो सकती हैं, जबकि अन्य में गत्यात्मक, व्यवहारिक अथवा संवेदी कठिनाइयाँ अधिक दिखाई दे सकती हैं। इसलिए प्रभावी मूल्यांकन तथा हस्तक्षेप हेतु व्यक्तिगत दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

इस खण्ड में अतिरिक्त दिव्यांगता की अवधारणा, इसकी प्रमुख विशेषताओं, व्यापकता तथा शैक्षिक प्रभावों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इससे आप उन कारकों को समझ सकेंगे जो श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के समग्र विकास को प्रभावित करते हैं।

2.3.1 अवधारणा एवं विशेषताएँ

अतिरिक्त दिव्यांगता से आशय ऐसी स्थिति से है जिसमें किसी बालक में श्रवण दुर्बलता के साथ एक अथवा अधिक अन्य दिव्यांगताएँ भी उपस्थित हों। ये अतिरिक्त स्थितियाँ संज्ञानात्मक, शारीरिक, व्यवहारिक, सामाजिक, भाषाई अथवा संवेदी क्षेत्रों को प्रभावित कर सकती हैं। जब एक से अधिक दिव्यांगताएँ एक साथ उपस्थित होती हैं, तब उनके संयुक्त प्रभाव के कारण बालक की आवश्यकताएँ अधिक जटिल हो जाती हैं।

शैक्षिक एवं पुनर्वास संबंधी संदर्भों में बहु-दिव्यांगता शब्द का प्रयोग उन परिस्थितियों के लिए किया जाता है जिनमें दो अथवा अधिक दिव्यांग स्थितियाँ मिलकर ऐसी आवश्यकताएँ उत्पन्न करती हैं जिन्हें किसी एक दिव्यांगता के लिए विकसित कार्यक्रमों द्वारा पर्याप्त रूप से पूरा नहीं किया जा सकता। उदाहरण के

लिए, श्रवण दुर्बलता एवं बौद्धिक दिव्यांगता वाला बालक केवल श्रवण हस्तक्षेप से पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि उसकी संज्ञानात्मक आवश्यकताएँ भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण होती हैं।

श्रवण दुर्बलता के साथ प्रायः बौद्धिक दिव्यांगता, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, सेरेब्रल पाल्सी, दृष्टि दुर्बलता, अधिगम दिव्यांगता, तंत्रिकीय विकार तथा श्रवण-दृष्टि दोनों दुर्बलता जैसी स्थितियाँ देखी जाती हैं। इन स्थितियों की उपस्थिति भाषा विकास, सामाजिक संवाद तथा अधिगम प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकती है।

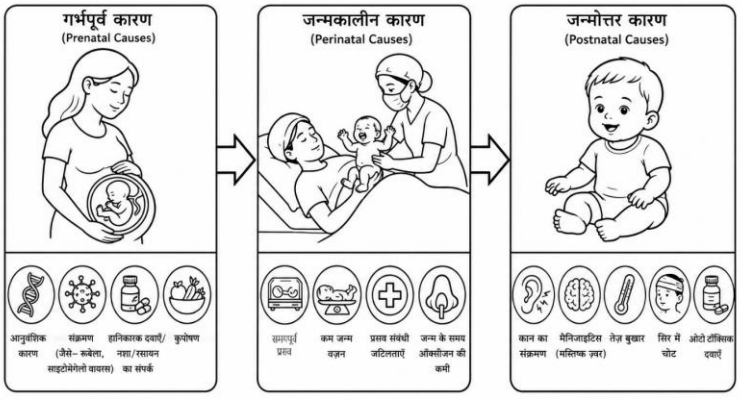
अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालकों में कई सामान्य विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। इनमें संप्रेषण विकास में विलंब, सीमित शब्दावली, वाक् बोधगम्यता में कमी, सामाजिक सहभागिता में कठिनाई, कम ध्यान अवधि, व्यवहारिक चुनौतियाँ तथा अधिगम संबंधी समस्याएँ शामिल हो सकती हैं। कुछ बालकों में गत्यात्मक सीमाएँ भी पाई जाती हैं, जिनके कारण वे सामान्य गतिविधियों में भाग लेने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी बालकों में समान विशेषताएँ नहीं होतीं। प्रत्येक बालक का विकासात्मक प्रोफाइल विशिष्ट होता है। इसलिए मूल्यांकन प्रक्रिया का उद्देश्य केवल कठिनाइयों की पहचान करना नहीं, बल्कि बालक की क्षमताओं, संभावनाओं तथा उपलब्ध संसाधनों का भी आकलन करना होना चाहिए। आप यह समझ चुके होंगे कि अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालकों के साथ कार्य करते समय वैयक्तिकृत दृष्टिकोण सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। यही दृष्टिकोण प्रभावी मूल्यांकन, उपयुक्त हस्तक्षेप तथा बेहतर शैक्षिक परिणामों का आधार बनता है।

2.3.2 व्यापकताएवंकारण

पिछले कुछ दशकों में नवजात चिकित्सा, बाल स्वास्थ्य सेवाओं तथा प्रारंभिक हस्तक्षेप कार्यक्रमों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इन प्रगतियों के परिणामस्वरूप जटिल चिकित्सीय एवं विकासात्मक स्थितियों वाले अनेक बालकों के जीवित रहने की संभावना बढ़ी है। इसके साथ ही श्रवण दुर्बलता वाले बालकों में अतिरिक्त दिव्यांगताओं की पहचान भी अधिक होने लगी है। वर्तमान शोध यह संकेत करते हैं कि स्थायी श्रवण क्षति वाले लगभग 30 से 40 प्रतिशत बालकों में किसी न किसी प्रकार की अतिरिक्त विकासात्मक, संज्ञानात्मक, गत्यात्मक, दृष्टि अथवा तंत्रिकीय स्थिति भी पाई जा सकती है।

अतिरिक्त दिव्यांगता की व्यापकता श्रवण क्षति की मात्रा, कारण तथा बालक के विकासात्मक इतिहास के अनुसार भिन्न हो सकती है। गंभीर एवं अत्यंत गंभीर श्रवण क्षति वाले बालकों में अतिरिक्त दिव्यांगताओं की संभावना अपेक्षाकृत अधिक देखी गई है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि कई जैविक तथा पर्यावरणीय जोखिम कारक एक साथ श्रवण तंत्र तथा अन्य विकासात्मक प्रणालियों को प्रभावित कर सकते हैं।



चित्र 2.2 श्रवण दुर्बलता के कारण।

अतिरिक्त दिव्यांगताओं के कारणों को सामान्यतः प्रसवपूर्व, प्रसवकालीन तथा प्रसवोत्तर कारकों में वर्गीकृत किया जाता है। प्रसवपूर्व कारकों में आनुवंशिक विकार, गुणसूत्रीय असामान्यताएँ, जन्मजात संक्रमण, मातृ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ तथा गर्भावस्था के दौरान हानिकारक पदार्थों का संपर्क शामिल हो सकता है। ये कारक भ्रूण के सामान्य विकास को प्रभावित कर श्रवण तथा अन्य कार्यात्मक प्रणालियों में विकार उत्पन्न कर सकते हैं।

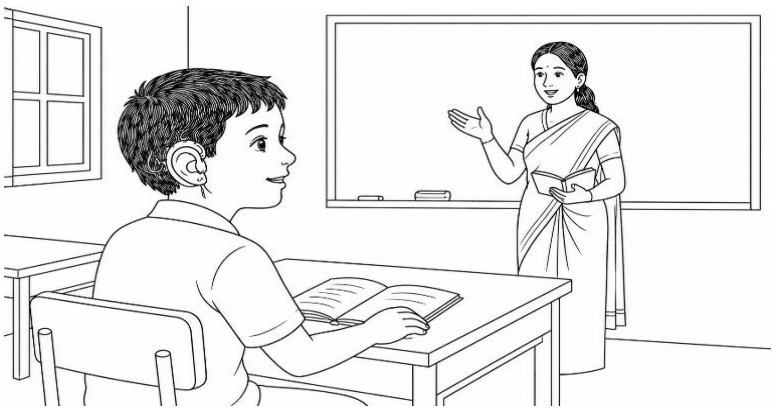
प्रसवकालीन कारकों में समय से पूर्व जन्म, कम जन्म-भार, जन्म के समय ऑक्सीजन की कमी, गंभीर पीलिया तथा प्रसव संबंधी जटिलताएँ सम्मिलित हैं। ऐसे कारक केंद्रीय तंत्रिका तंत्र तथा श्रवण तंत्र के विकास को प्रभावित कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप बहु-दिव्यांगता की संभावना बढ़ जाती है।प्रसवोत्तर कारकों में मेनिन्जाइटिस, मस्तिष्क संक्रमण, सिर की चोट, तंत्रिकीय विकार, कुछ औषधियों के दुष्प्रभाव तथा अन्य गंभीर चिकित्सीय स्थितियाँ शामिल हो सकती हैं। कई बार प्रारंभिक जीवन में उत्पन्न ये स्थितियाँ श्रवण क्षमता के साथ-साथ संज्ञानात्मक अथवा गत्यात्मक कार्यों को भी प्रभावित करती हैं।

आप यह समझ चुके होंगे कि अतिरिक्त दिव्यांगता किसी एक कारण का परिणाम नहीं होती, बल्कि अनेक जैविक एवं पर्यावरणीय कारकों की संयुक्त भूमिका से विकसित हो सकती है। इन कारणों की जानकारी विशेषज्ञों को जोखिम वाले बालकों की शीघ्र पहचान करने, उपयुक्त मूल्यांकन योजनाएँ बनाने तथा समय पर हस्तक्षेप सेवाएँ प्रदान करने में सहायता करती है।

2.3.3 शैक्षिक एवं संप्रेषणात्मक प्रभाव

श्रवण दुर्बलता के साथ अतिरिक्त दिव्यांगता की उपस्थिति बालक के शैक्षिक, भाषाई तथा सामाजिक विकास पर व्यापक प्रभाव डाल सकती है। ऐसे बालकों

की आवश्यकताएँ केवल श्रवण क्षति के प्रबंधन तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि उनके समग्र विकासात्मक प्रोफाइल को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक एवं पुनर्वास कार्यक्रमों की योजना बनानी पड़ती है। यही कारण है कि बहु-दिव्यांगता वाले बालकों के लिए वैयक्तिकृत शैक्षिक दृष्टिकोण को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।



चित्र 2.3कक्षा में श्रवण यंत्र का उपयोग करता हुआ बालक

संप्रेषण विकास पर इसका प्रभाव विशेष रूप से स्पष्ट दिखाई देता है। श्रवण दुर्बलता स्वयं भाषा अर्जन की प्रक्रिया को प्रभावित करती है, जबकि अतिरिक्त दिव्यांगता इस प्रभाव को और अधिक जटिल बना सकती है। कुछ बालकों में शब्दावली विकास धीमा हो सकता है, कुछ में भाषा बोध सीमित हो सकता है तथा कुछ बालक अपनी आवश्यकताओं और भावनाओं को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में कठिनाई अनुभव कर सकते हैं। सामाजिक संप्रेषण से संबंधित समस्याएँ भी अनेक बार देखी जाती हैं, विशेषकर तब जब श्रवण दुर्बलता के साथ ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर जैसी स्थिति उपस्थित हो।

शैक्षिक अधिगम भी अनेक स्तरों पर प्रभावित हो सकता है। श्रवण सूचना तक सीमित पहुँच के कारण कक्षा शिक्षण, मौखिक निर्देशों की समझ तथा समूह गतिविधियों में सहभागिता कठिन हो सकती है। यदि इसके साथ संज्ञानात्मक, दृष्टि अथवा गत्यात्मक चुनौतियाँ भी जुड़ी हों, तो अधिगम की प्रक्रिया और अधिक प्रभावित हो सकती है। परिणामस्वरूप ऐसे बालकों कोसंशोधित पाठ्यक्रम, अतिरिक्त शैक्षिक सहायता, सहायक तकनीकों तथा विशेष शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता हो सकती है।

सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। संप्रेषण संबंधी कठिनाइयाँ साथियों के साथ संवाद को सीमित कर सकती हैं तथा कई बार आत्मविश्वास एवं सामाजिक सहभागिता में कमी का कारण बन सकती हैं। इसलिए पुनर्वास कार्यक्रमों में सामाजिक कौशल विकास को भी महत्त्व दिया जाता है।



चित्र 2.4 विभिन्न अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बच्चों का समूह (श्रवण दुर्बलता + ASD, CP, दृष्टि दुर्बलता, बौद्धिक दिव्यांगता)। समावेशी चित्र।

इन परिस्थितियों में बहु-विषयक सहयोग अत्यंत आवश्यक हो जाता है। श्रव्य विशेषज्ञ, वाक्-भाषा रोगविज्ञानी, विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक तथा परिवार के

सदस्य मिलकर ऐसी योजनाएँ विकसित करते हैं जो बालक की वास्तविक आवश्यकताओं को संबोधित कर सकें। आप यह जान चुके होंगे कि प्रभावी संप्रेषण और सफल अधिगम के लिए केवल श्रवण क्षमता ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विकासात्मक संदर्भ को समझना भी आवश्यक है।

2.4 बहु-दिव्यांगतावालेबालकोंमेंश्रवणमूल्यांकनएवंएडेडनिष्पादन

बहु-दिव्यांगता वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन एक विशेषीकृत प्रक्रिया है, जिसमें श्रवण क्षमता के साथ-साथ बालक की संज्ञानात्मक, व्यवहारिक, गत्यात्मक तथा संप्रेषणात्मक विशेषताओं पर भी विचार किया जाता है। परंपरागत श्रवण मूल्यांकन प्रक्रियाएँ प्रत्येक बालक के लिए समान रूप से उपयुक्त नहीं होतीं, इसलिए मूल्यांकन को उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधित करना आवश्यक होता है।

ऐसे बालकों में सटीक श्रवण जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यवहारिक एवं वस्तुनिष्ठ दोनों प्रकार की प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रवर्धन उपकरणों के उपयोग के पश्चात एडेड निष्पादन का मूल्यांकन भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे यह ज्ञात होता है कि बालक उपलब्ध श्रवण सूचना का वास्तविक जीवन में कितना प्रभावी उपयोग कर पा रहा है।

इस खण्ड में विभिन्न अतिरिक्त दिव्यांगताओं वाले बालकों हेतु श्रवण मूल्यांकन प्रक्रियाओं, मूल्यांकन संबंधी चुनौतियों, एडेड निष्पादन की अवधारणा तथा संप्रेषण योजना में उसकी भूमिका का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

2.4.1 श्रवण मूल्यांकन प्रक्रियाएँ

बहु-दिव्यांगता वाले बालकों में श्रवण मूल्यांकन का उद्देश्य केवल श्रवण क्षति की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति का निर्धारण करना नहीं है, बल्कि बालक की वास्तविक श्रवण क्रियाशीलता, संप्रेषण क्षमता तथा पुनर्वास संबंधी आवश्यकताओं की पहचान करना भी है। सामान्य परिस्थितियों में प्रयुक्त श्रवण मूल्यांकन प्रक्रियाएँ अनेक बार अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालकों के लिए पर्याप्त नहीं होतीं, क्योंकि उनकी संज्ञानात्मक, व्यवहारिक, गत्यात्मक अथवा संवेदी विशेषताएँ परीक्षण में सहभागिता को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए श्रव्य विशेषज्ञों को लचीले तथा वैयक्तिकृत मूल्यांकन दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता होती है।

विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए व्यवहारिक (सब्जेक्टिव) तथा वस्तुनिष्ठ (ऑब्जेक्टिव) दोनों प्रकार की प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। व्यवहारिक प्रक्रियाएँ बालक की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया पर आधारित होती हैं, जबकि वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाएँ बालक की सक्रिय सहभागिता के बिना श्रवण तंत्र की कार्यक्षमता संबंधी सूचना प्रदान करती हैं। बहु-दिव्यांगता वाले बालकों में क्रॉस-चेक सिद्धांत का विशेष महत्त्व होता है, जिसके अनुसार किसी एक परीक्षण के परिणामों की पुष्टि अन्य परीक्षणों द्वारा की जानी चाहिए।

बौद्धिक दिव्यांगता वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन

बौद्धिक दिव्यांगता वाले बालकों में संज्ञानात्मक विकास सामान्य से धीमा हो सकता है। ऐसे बालकों को निर्देशों को समझने, कार्यों को याद रखने तथा अपेक्षित प्रतिक्रिया देने में कठिनाई हो सकती है। परिणामस्वरूप परंपरागत व्यवहारिक श्रवण परीक्षणों से विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करना कई बार चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

मूल्यांकन के दौरान सरल एवं स्पष्ट भाषा का उपयोग करना चाहिए। निर्देश छोटे वाक्यों में दिए जाने चाहिए तथा आवश्यकतानुसार उनका प्रदर्शन भी किया जाना चाहिए। कई बार एक ही कार्य को बार-बार समझाना पड़ सकता है। सकारात्मक पुनर्बलन (पॉज़िटिव रिइनफोर्समेंट) तथा खेल आधारित गतिविधियाँ बालक की सहभागिता बढ़ाने में सहायक होती हैं।

विज़ुअल रिइनफोर्समेंट ऑडियोमेट्री (VRA), कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री तथा मॉडिफाइड प्योर टोन ऑडियोमेट्री (MPTA) जैसी व्यवहारिक प्रक्रियाएँ उपयोगी हो सकती हैं। यदि व्यवहारिक प्रतिक्रियाएँ असंगत हों, तो ओटोअकॉस्टिक एमिशन, ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स, ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स तथा टिम्पैनोमेट्री जैसी वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। सटीक श्रवण जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है, क्योंकि श्रवण क्षति की उपस्थिति संप्रेषण विकास को और अधिक प्रभावित कर सकती है।

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर सामाजिक संप्रेषण, व्यवहार तथा संवेदी प्रसंस्करण को प्रभावित करने वाली तंत्रिका-विकासात्मक स्थिति है। अनेक बार ऐसे बालक अपने नाम पर प्रतिक्रिया नहीं देते, नेत्र संपर्क सीमित रखते हैं अथवा सामाजिक संकेतों की उपेक्षा करते हैं। ये व्यवहार श्रवण क्षति के समान प्रतीत हो सकते हैं, जिसके कारण प्रारंभिक पहचान में भ्रम उत्पन्न हो सकता है।

मूल्यांकन के दौरान संवेदी संवेदनशीलता एक प्रमुख चुनौती होती है। कुछ बालक इयरफोन पहनने, प्रोब लगाए जाने अथवा अपरिचित उपकरणों के संपर्क में आने से असहज हो सकते हैं। इसलिए परीक्षण से पूर्व बालक को वातावरण एवं उपकरणों से परिचित कराना उपयोगी रहता है। संरचित दिनचर्या, दृश्य

अनुसूचियाँ (विज़ुअल शेड्यूल्स) तथा अभिभावक की उपस्थिति भी सहयोग प्राप्त करने में सहायक हो सकती है।

व्यवहारिक प्रक्रियाओं में विज़ुअल रिइनफोर्समेंटऑडियोमेट्री, कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री तथा मॉडिफाइड ऑडियोमेट्री का उपयोग किया जा सकता है। साथ ही ओटोअकॉस्टिक एमिशन, ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स, ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स तथा टिम्पैनोमेट्री जैसी वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाएँ विश्वसनीय जानकारी प्रदान करती हैं। चूँकि श्रवण दुर्बलता और ऑटिज़्म एक साथ उपस्थित हो सकते हैं, इसलिए व्यापक मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक है।

सेरेब्रल पाल्सी वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन

सेरेब्रल पाल्सी गति, मुद्रा तथा गत्यात्मक नियंत्रण को प्रभावित करने वाले विकारों का समूह है। ऐसे बालकों में शारीरिक सीमाएँ व्यवहारिक श्रवण परीक्षणों को प्रभावित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, बालक ध्वनि सुनने के बावजूद हाथ उठाने, बटन दबाने अथवा खेल गतिविधि पूरी करने में सक्षम न हो।

मूल्यांकन के दौरान यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि गत्यात्मक सीमाओं को श्रवण कठिनाई के रूप में गलत न समझा जाए। वैकल्पिक प्रतिक्रिया विधियों का उपयोग विशेष रूप से उपयोगी होता है। इनमें आँखों की गति, सिर घुमाना, चेहरे के भाव अथवा स्विच आधारित प्रतिक्रियाएँ शामिल हो सकती हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण इस समूह में विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योंकि वे व्यवहारिक प्रतिक्रिया पर निर्भर नहीं होते। ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स, ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स, ओटोअकॉस्टिक एमिशन तथा टिम्पैनोमेट्री विश्वसनीय श्रवण

जानकारी प्रदान कर सकते हैं। व्यवहारिक एवं वस्तुनिष्ठ परिणामों की संयुक्त व्याख्या से अधिक सटीक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

दृष्टि दुर्बलता वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन

दृष्टि दुर्बलता बालक की दृश्य संकेतों तक पहुँच को प्रभावित करती है। श्रवण मूल्यांकन की अनेक व्यवहारिक प्रक्रियाएँ विज़ुअल रिइनफोर्समेंट अथवा दृश्य पुरस्कारों पर आधारित होती हैं। इसलिए गंभीर दृष्टि दुर्बलता वाले बालकों के लिए इन प्रक्रियाओं में संशोधन आवश्यक हो जाता है।

ऐसे बालकों में स्पर्श आधारित पुनर्बलन, शारीरिक मार्गदर्शन तथा श्रवण अनुबंधन तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। परीक्षण वातावरण को सरल तथा सुरक्षित रखा जाना चाहिए ताकि बालक सहज महसूस कर सके। श्रव्य विशेषज्ञ को निर्देश देते समय स्पर्श एवं मौखिक संकेतों का संतुलित उपयोग करना चाहिए।

ओटोअकॉस्टिक एमिशन, ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स, ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स तथा टिम्पैनोमेट्री जैसी प्रक्रियाएँ विशेष रूप से उपयोगी होती हैं, क्योंकि वे दृश्य प्रतिक्रिया पर निर्भर नहीं होतीं। इन प्रक्रियाओं के माध्यम से श्रवण क्षमता का विश्वसनीय आकलन किया जा सकता है।

श्रवण-दृष्टि दोनों दुर्बलता वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन

श्रवण-दृष्टि दोनों दुर्बलता एक जटिल स्थिति है जिसमें श्रवण तथा दृष्टि दोनों संवेदी प्रणालियाँ प्रभावित होती हैं। ऐसी स्थिति में बालक के लिएवातावरणीय जानकारी प्राप्त करना, भाषा सीखना तथा सामाजिक सहभागिता विकसित करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

परंपरागत व्यवहारिक श्रवण परीक्षण प्रायः पर्याप्त नहीं होते, क्योंकि उनमें दृश्य अथवा श्रवण पुनर्बलन का उपयोग किया जाता है। मूल्यांकन के दौरान स्पर्शीय

संकेत, वस्तु प्रतीक तथा वैकल्पिक संप्रेषण प्रणालियों का उपयोग किया जा सकता है। कई बार बालक की प्रतिक्रियाओं को समझने के लिए अभिभावकों अथवा देखभालकर्ताओं की सहायता भी आवश्यक होती है।

इस समूह में वस्तुनिष्ठ परीक्षण प्रमुख सूचना स्रोत बन जाते हैं। ओटोअकॉस्टिक एमिशन, ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स, ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स तथा टिम्पैनोमेट्री के माध्यम से श्रवण स्थिति का निर्धारण किया जाता है। बहु-विषयक सहयोग इस प्रक्रिया का अनिवार्य भाग होता है।

अधिगम दिव्यांगता वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन

अधिगम दिव्यांगता वाले बालकों की बुद्धि सामान्य सीमा में हो सकती है, परंतु उन्हें पढ़ने, लिखने, ध्यान बनाए रखने अथवा सूचना प्रसंस्करण में कठिनाई हो सकती है। ऐसे बालक अधिकांश व्यवहारिक श्रवण परीक्षणों में सफलतापूर्वक सहभागी हो सकते हैं, परंतु मूल्यांकन केवल श्रवण सीमा तक सीमित नहीं होना चाहिए।

वाक् अनुभूति परीक्षण, क्रियात्मक श्रवण मूल्यांकन तथा श्रवण प्रसंस्करण संबंधी आकलन उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकते हैं। इन परीक्षणोंसे यह समझने में सहायता मिलती है कि बालक की कठिनाइयाँ श्रवण तंत्र से संबंधित हैं अथवा अधिगम प्रक्रिया के अन्य पहलुओं से।

तंत्रिकीय स्थितियों वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन

कुछ बालकों में मस्तिष्क की चोट, मिर्गी, हाइड्रोसिफेलस, तंत्रिका-अपजनकारी विकार अथवा ऑडिटरी न्यूरोपैथी स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर जैसी स्थितियाँ उपस्थित हो सकती हैं। ये स्थितियाँ श्रवण प्रसंस्करण, ध्यान तथा वाक् समझ को प्रभावित कर सकती हैं।

ऐसे मामलों में ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स तथा ऑडिटरी स्टेडी स्टेट रिस्पॉन्स विशेष रूप से उपयोगी होते हैं, क्योंकि वे श्रवण मार्गों की कार्यक्षमता संबंधी जानकारी प्रदान करते हैं। वाक् अनुभूति परीक्षण तथा क्रियात्मक श्रवण मूल्यांकन भी आवश्यक हो सकते हैं। मूल्यांकन के निष्कर्षों को तंत्रिकीय एवं विकासात्मक जानकारी के साथ जोड़कर समझना चाहिए।

मूल्यांकन में आवश्यक संशोधन

बहु-दिव्यांगता वाले बालकों के श्रवण मूल्यांकन में अनेक बार परीक्षण प्रक्रियाओं में संशोधन करना पड़ता है। शांत वातावरण, कम विकर्षण, आरामदायक बैठने की व्यवस्था तथा लचीली समय-सारणी उपयोगी होती है। निर्देशों को सरल बनाना, बार-बार प्रदर्शन करना तथा पर्याप्त पुनर्बलन देना भी आवश्यक हो सकता है। कुछ बालकों के लिए एक लंबे सत्र की अपेक्षा कई छोटे सत्र अधिक प्रभावी रहते हैं।

आप यह समझ चुके होंगे कि बहु-दिव्यांगता वाले बालकों का श्रवण मूल्यांकन केवल परीक्षणों का समूह नहीं है, बल्कि एक वैयक्तिकृत प्रक्रिया है जिसमें बालक की समग्र विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है। सटीक मूल्यांकन ही प्रभावी पुनर्वास तथा उपयुक्त संप्रेषण योजना की आधारशिला प्रदान करता है।

2.4.2 एडेड निष्पादन एवं संप्रेषण विधि का चयन

श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के मूल्यांकन की प्रक्रिया केवल श्रवण क्षति की पहचान तक सीमित नहीं होती। आधुनिक श्रव्यविज्ञान में यह समान रूप से महत्त्वपूर्ण माना जाता है कि प्रवर्धन उपकरणों के उपयोग के पश्चात बालक उपलब्ध श्रवण सूचना का कितना प्रभावी उपयोग कर पा रहा है। इसी वास्तविक कार्यात्मक श्रवण क्षमता को एडेड निष्पादन कहा जाता है। एडेड निष्पादन का मूल्यांकन यह समझने में सहायता करता है कि श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट

अथवा अन्य सहायक श्रवण उपकरण बालक को कितना लाभ प्रदान कर रहे हैं तथा उसके लिए कौन-सी संप्रेषण विधि सर्वाधिक उपयुक्त हो सकती है।

बहु-दिव्यांगता वाले बालकों में एडेड निष्पादन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि केवल श्रवण सीमा के आधार पर उनकी संप्रेषण क्षमता का अनुमान लगाना संभव नहीं होता। समान श्रवण क्षति वाले दो बालक भाषा विकास, वाक् समझ, सामाजिक संप्रेषण तथा शैक्षिक उपलब्धि में एक-दूसरे से बहुत भिन्न हो सकते हैं। इसलिए संप्रेषण संबंधी निर्णयों के लिए कार्यात्मक श्रवण निष्पादन का आकलन आवश्यक माना जाता है।

एडेड निष्पादन की अवधारणा

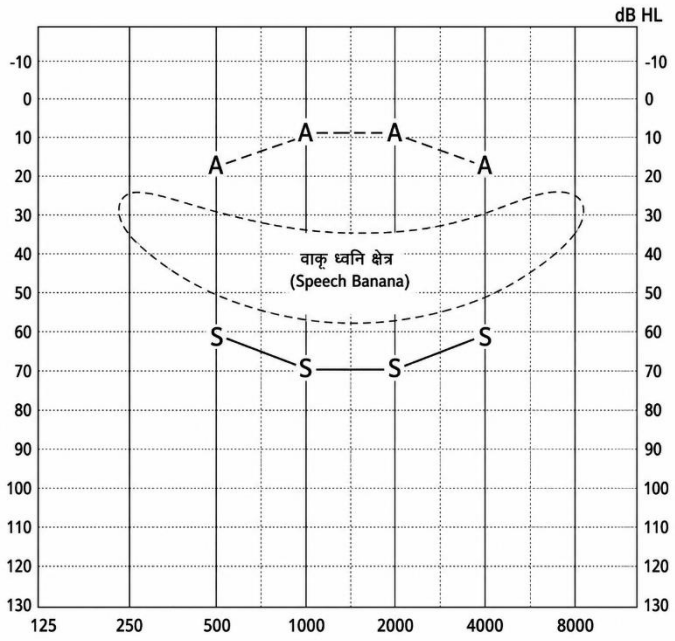
एडेड निष्पादन से आशय उस श्रवण क्षमता से है जो बालक प्रवर्धन उपकरणों का उपयोग करते समय प्रदर्शित करता है। यह केवल यह नहीं बताता कि बालक ध्वनि सुन पा रहा है या नहीं, बल्कि यह भी दर्शाता है कि वह ध्वनियों को पहचानने, वाक् को समझने तथा दैनिक जीवन में श्रवण सूचना का उपयोग करने में कितना सक्षम है।

प्रवर्धन उपकरणों का मुख्य उद्देश्य श्रव्यता में सुधार करना होता है। परंतु सभी बालकों को समान लाभ प्राप्त नहीं होता। कुछ बालक प्रवर्धन के पश्चात सामान्य वार्तालाप को आसानी से समझने लगते हैं, जबकि कुछ को अतिरिक्त दृश्य संकेतों, संरचित प्रशिक्षण अथवा वैकल्पिक संप्रेषण सहायता की आवश्यकता होती है। एडेड निष्पादन का मूल्यांकन इन अंतरों को समझने में सहायता करता है।

एडेड ऑडियोग्राम

एडेड ऑडियोग्राम प्रवर्धन उपकरणों का उपयोग करते समय प्राप्त श्रवण सीमाओं का ग्राफिक प्रदर्शन है। यह दर्शाता है कि श्रवण यंत्र अथवा कॉक्लियर इम्प्लांट के

उपयोग के बाद विभिन्न आवृत्तियों पर ध्वनियाँ सुनने की न्यूनतम सीमा क्या है। यह परीक्षण सामान्यतः साउंड फील्ड में किया जाता है, जहाँ ध्वनियाँ लाउडस्पीकर के माध्यम से प्रस्तुत की जाती हैं।



चित्र 2.5 एडेड ऑडियोग्राम ।

परीक्षण के दौरान बालक अपने निर्धारित प्रवर्धन उपकरण पहनता है। विभिन्न आवृत्तियों पर प्रस्तुत ध्वनियों के प्रति उसकी प्रतिक्रियाएँ दर्ज की जाती हैं तथा उन्हें ऑडियोग्राम पर अंकित किया जाता है। प्राप्त परिणामों की तुलना अनएडेड श्रवण सीमाओं से की जाती है, जिससे यह आकलन किया जा सकता है कि प्रवर्धन उपकरण के उपयोग से श्रव्य सूचना की उपलब्धता तथा वाक् ध्वनियों को सुनने की क्षमता में कितना सुधार हुआ है।एडेड ऑडियोग्राम का प्रमुख उद्देश्य वाक् ध्वनियों की श्रव्यता का आकलन करना है। यदि अधिकांश वाक् ध्वनियाँ

श्रवण सीमा के भीतर उपलब्ध हैं, तो भाषा विकास एवं मौखिक संप्रेषण की संभावनाएँ बेहतर मानी जाती हैं। इसके विपरीत यदि प्रवर्धन के बाद भी अनेक वाक् ध्वनियाँ श्रव्य नहीं हैं, तो अतिरिक्त हस्तक्षेप अथवा वैकल्पिक संप्रेषण रणनीतियों की आवश्यकता हो सकती है।

एडेड ऑडियोग्राम की व्याख्या

एडेड ऑडियोग्राम की व्याख्या करते समय श्रवण सीमाओं, वाक् स्पेक्ट्रम तथा कार्यात्मक आवश्यकताओं को साथ में देखा जाता है। सामान्यतः 20 से 30 डेसीबेल एचएल के बीच की एडेड सीमाएँ अच्छी श्रवण पहुँच का संकेत देती हैं। ऐसे बालकों को अधिकांश संवादात्मक वाक् ध्वनियाँ उपलब्ध हो सकती हैं तथा वे मौखिक भाषा आधारित कार्यक्रमों से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यदि एडेड सीमाएँ 30 से 45 डेसीबेल एचएल के बीच हों, तो वाक् ध्वनियाँ आंशिक पहुँच उपलब्ध हो सकती है। ऐसे बालकों को कक्षा में अतिरिक्त श्रवण सहायता, एफएम प्रणाली अथवा श्रवण प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है।

जब एडेड सीमाएँ 45 डेसीबेल एचएल से अधिक हों, तब वाक् ध्वनियों तक पहुँच सीमित हो सकती है। ऐसी परिस्थितियों में संप्रेषण योजना बनाते समय दृश्य सहायता, सांकेतिक भाषा अथवा बहु-माध्यम दृष्टिकोणों पर भी विचार करना आवश्यक हो सकता है।

वाक् अभिज्ञान परीक्षण

केवल ध्वनियों को सुन लेना प्रभावी संप्रेषण के लिए पर्याप्त नहीं है। यह भी आवश्यक है कि बालक वाक् ध्वनियों को पहचान सके तथा उनके अर्थ को समझ सके। इसी क्षमता का मूल्यांकन वाक् अभिज्ञान परीक्षणों द्वारा किया जाता है।

वाक् अभिज्ञान परीक्षण यह दर्शाते हैं कि बालक प्रवर्धन उपकरणों के माध्यम से प्रस्तुत शब्दों, वाक्यों अथवा अन्य भाषाई उद्दीपनों को कितनी सटीकता से पहचान और समझ सकता है। ये परीक्षण कार्यात्मक संप्रेषण क्षमता का महत्त्वपूर्ण संकेतक माने जाते हैं।

क्लोज्ड-सेट परीक्षणों में बालक को सीमित विकल्प प्रदान किए जाते हैं। उदाहरण के लिए उसे किसी शब्द के अनुरूप चित्र चुनना हो सकता है। यह विधि छोटे बालकों तथा भाषा विलंब वाले बालकों के लिए उपयुक्त होती है।

ओपन-सेट परीक्षणों में कोई विकल्प उपलब्ध नहीं कराया जाता। बालक को सुने गए शब्द अथवा वाक्य को दोहराना होता है। यह विधि अधिक उन्नत भाषा क्षमता वाले बालकों के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

कुछ परिस्थितियों में परिवेशीय शोरकी उपस्थिति में भी वाक् अभिज्ञान परीक्षण किए जाते हैं। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि वास्तविक कक्षा अथवा सामाजिक वातावरण में बालक की श्रवण क्षमता कितनी प्रभावी है।

एडेड निष्पादन और वाक् अभिज्ञान का संबंध

एडेड ऑडियोग्राम तथा वाक् अभिज्ञान परीक्षणों की संयुक्त व्याख्या सबसे अधिक उपयोगी मानी जाती है। यदि किसी बालक की एडेड श्रवण सीमाएँ अच्छी हैं तथा वाक् अभिज्ञान स्कोर भी उच्च हैं, तो यह मजबूत श्रवण पहुँच और प्रभावी मौखिक संप्रेषण क्षमता का संकेत देता है।

कई बार एडेड ऑडियोग्राम संतोषजनक होता है, परंतु वाक् अभिज्ञान स्कोर अपेक्षाकृत कम होते हैं। ऐसी स्थिति भाषा विकास में विलंब, श्रवण प्रसंस्करण कठिनाइयों अथवा संज्ञानात्मक कारकों की ओर संकेत कर सकती है। इसके विपरीत यदि दोनों परिणाम कमजोर हों, तो प्रवर्धन से सीमित लाभ प्राप्त

होनेकी संभावना रहती है और वैकल्पिक संप्रेषण रणनीतियों पर विचार आवश्यक हो सकता है।

संप्रेषण विधियों का चयन

संप्रेषण विधि का चयन श्रवण पुनर्वास की सबसे महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाओं में से एक है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बालक को भाषा तक अधिकतम पहुँच प्राप्त हो तथा वह प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित कर सके। वर्तमान समय में यह स्वीकार किया जाता है कि किसी एक संप्रेषण विधि को सभी बालकों के लिए उपयुक्त नहीं माना जा सकता।

संप्रेषण विधि का चयन करते समय एडेड निष्पादन, वाक् अभिज्ञान क्षमता, भाषा विकास, संज्ञानात्मक स्तर, अतिरिक्त दिव्यांगता, पारिवारिक सहभागिता तथा उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों पर विचार किया जाता है। आप यह समझ चुके होंगे कि प्रभावी संप्रेषण योजना सदैव बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर आधारित होनी चाहिए।

प्रमुख संप्रेषण विधियाँ

श्रवणात्मक-शाब्दिक दृष्टिकोण में श्रवण सूचना के अधिकतम उपयोग पर बल दिया जाता है। इसमें बालक को सुनने के माध्यम से भाषा विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा दृश्य संकेतों का उपयोग न्यूनतम रखा जाता है। यह दृष्टिकोण उन बालकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिनका एडेड निष्पादन तथा वाक् अभिज्ञान अच्छा हो।

श्रवणात्मक-मौखिक दृष्टिकोण में बची हुई श्रवण क्षमताके साथ दृश्य संकेतों और लिप रीडिंग का भी उपयोग किया जाता है। मध्यम स्तर की श्रवण पहुँच वाले अनेक बालक इस दृष्टिकोण से लाभान्वित हो सकते हैं।

समग्र संप्रेषण दृष्टिकोण में वाणी, संकेत, इशारे, लिप रीडिंग तथा अन्य उपलब्ध साधनों का संयुक्त उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य किसी एक माध्यम तक सीमित रहने के बजाय संप्रेषण की प्रभावशीलता को बढ़ाना होता है।

सांकेतिक भाषा दृश्य आधारित भाषा प्रणाली है। जब श्रवण पहुँच अत्यंत सीमित हो अथवा प्रवर्धन से पर्याप्त लाभ प्राप्त न हो रहा हो, तब यह भाषा विकास का प्रभावी माध्यम बन सकती है।



चित्र 2.6 प्रमुख संप्रेषण विधियाँ।

द्विभाषी-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण में सांकेतिक भाषा को प्रथम भाषा तथा लिखित अथवा मौखिक भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में विकसित किया जाता है। कुछ बालकों के लिए यह दृष्टिकोण भाषा तक पूर्ण पहुँच सुनिश्चित करने में सहायक हो सकता है।

अतिरिक्त दिव्यांगता एवं संप्रेषण निर्णय

अतिरिक्त दिव्यांगता संप्रेषण चयन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है। बौद्धिक दिव्यांगता वाले बालकों में क्रियात्मक संप्रेषण को प्राथमिकता दी जाती है। ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बालकों के लिए संरचित दृश्य सहायता तथा वैकल्पिक संप्रेषण प्रणालियाँ उपयोगी हो सकती हैं। सेरेब्रल पाल्सी वाले बालकों में गत्यात्मक सीमाओं को ध्यान में रखते हुए वर्धित एवं वैकल्पिक संप्रेषण प्रणालियों का उपयोग किया जा सकता है।

दृष्टि दुर्बलता वाले बालकों के लिए श्रवण आधारित रणनीतियाँ अधिक उपयोगी हो सकती हैं, जबकि श्रवण-दृष्टि दोनों दुर्बलता वाले बालकों में स्पर्शीय संप्रेषण, वस्तु प्रतीकों तथा विशिष्ट संवेदी विधियों की आवश्यकता हो सकती है।

अंततः संप्रेषण विधि का चयन एक सतत प्रक्रिया है। प्रारंभिक निर्णय के बाद भी बालक की प्रगति की नियमित निगरानी आवश्यक होती है। यदि अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे हों, तो संप्रेषण योजना में आवश्यक संशोधन किए जाने चाहिए। यही लचीला एवं बालक-केंद्रित दृष्टिकोण प्रभावी पुनर्वास तथा सफल भाषा विकास का आधार प्रदान करता है।

2.5 सारांश

इस इकाई में अतिरिक्त दिव्यांगता वाले श्रवण दुर्बल बालकों के मूल्यांकन, एडेड निष्पादन तथा संप्रेषण विधि चयन से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन किया गया। आपने जाना कि श्रवण दुर्बलता के साथ बौद्धिक दिव्यांगता, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, सेरेब्रल पाल्सी, दृष्टि दुर्बलता, अधिगम दिव्यांगता तथा अन्य तंत्रिकीय स्थितियाँ सह-अस्तित्व में हो सकती हैं। ऐसी परिस्थितियों में मूल्यांकन की प्रक्रिया अधिक जटिल हो जाती है और केवल पारंपरिक परीक्षण विधियाँ पर्याप्त नहीं रहतीं।

इकाई में बहु-दिव्यांगता वाले बालकों की अवधारणा, विशेषताएँ, व्यापकता तथा कारणों की चर्चा की गई। साथ ही यह स्पष्ट किया गया कि अतिरिक्त दिव्यांगता भाषा विकास, सामाजिक सहभागिता, शैक्षिक उपलब्धि तथा संप्रेषण क्षमता को किस प्रकार प्रभावित करती है। श्रवण मूल्यांकन के दौरान आने वाली व्यवहारिक, संज्ञानात्मक, संप्रेषणात्मक तथा गत्यात्मक चुनौतियों का भी विस्तार से वर्णन किया गया।

आप परिचित हो चुके होंगे कि ऐसे बालकों के मूल्यांकन में व्यवहारिक परीक्षणों के साथ-साथ OAE, ABR, ASSR तथा टिम्पैनोमेट्री जैसी वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाओं का विशेष महत्त्व है। एडेड ऑडियोग्राम तथा वाक् अभिज्ञान परीक्षणों के माध्यम से प्रवर्धन से प्राप्त वास्तविक लाभ का आकलन किया जाता है। यही जानकारी आगे चलकर उपयुक्त संप्रेषण विधि के चयन में सहायक बनती है।

इकाई में यह भी स्पष्ट किया गया कि संप्रेषण विधि का चयन केवल श्रवण सीमा के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। एडेड निष्पादन, भाषा विकास, अतिरिक्त दिव्यांगता, पारिवारिक सहभागिता तथा शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्णय लिया जाना चाहिए। अंततः बहु-विषयक टीम दृष्टिकोण को प्रभावी मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

अतिरिक्त दिव्यांगता : श्रवण दुर्बलता के साथ एक या अधिक अन्य दिव्यांगताओं की उपस्थिति।

बहु-दिव्यांगता : दो या अधिक दिव्यांग स्थितियों का सह-अस्तित्व, जिससे जटिल शैक्षिक आवश्यकताएँ उत्पन्न होती हैं।

एडेड निष्पादन : प्रवर्धन उपकरणों के उपयोग के दौरान प्राप्त कार्यात्मक श्रवण क्षमता।

एडेड ऑडियोग्राम : श्रवण यंत्र या अन्य प्रवर्धन उपकरणों के साथ प्राप्त श्रवण सीमाओं का आलेख।

स्पीचबनाना:ऑडियोग्रामपरवहक्षेत्रहैजहाँसामान्यवार्तालापमेंप्रयुक्तअधिकांशभाषणध्वनियाँस्थितहोतीहैं।

वाक् अभिज्ञान : बोली गई भाषा को पहचानने और समझने की क्षमता।

श्रवण पहुँच : व्यक्ति तक उपलब्ध श्रवण सूचना की मात्रा और गुणवत्ता।

श्रवणात्मक-शाब्दिक दृष्टिकोण : सुनने और मौखिक भाषा विकास पर आधारित संप्रेषण पद्धति।

श्रवणात्मक-मौखिक दृष्टिकोण : श्रवण संकेतों तथा दृश्य संकेतों के संयुक्त उपयोग पर आधारित पद्धति।

समग्र संप्रेषण : संप्रेषण के लिए अनेक माध्यमों का संयुक्त उपयोग।

सांकेतिक भाषा : दृश्य-स्थानिक संकेतों पर आधारित स्वतंत्र भाषा प्रणाली।

वाक् अनुभूति : वाक् ध्वनियों को संसूचित एवं अर्थपूर्ण रूप से समझने की क्षमता।

क्रॉस-चेक सिद्धांत : विभिन्न परीक्षणों द्वारा प्राप्त निष्कर्षों का पारस्परिक सत्यापन।

कॉक्लियर इम्प्लांट : गंभीर श्रवण क्षति वाले व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त विद्युत श्रवण उपकरण।

एफएम प्रणाली : शोरयुक्त वातावरण में सुनने की क्षमता बढ़ाने वाली सहायक तकनीक।

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. अतिरिक्त दिव्यांगता श्रवण दुर्बलता के साथ अन्य दिव्यांगताओं की उपस्थिति को दर्शाती है।
2. श्रवण दुर्बलता वाले लगभग 30 से 40 प्रतिशत बालकों में अतिरिक्त दिव्यांगता पाई जा सकती है।
3. बहु-दिव्यांगता शैक्षिक एवं संप्रेषणात्मक आवश्यकताओं को अधिक जटिल बनाती है।
4. श्रवण मूल्यांकन में व्यवहारिक, संज्ञानात्मक तथा गत्यात्मक चुनौतियाँ सामने आ सकती हैं।
5. OAE, ABR, ASSR तथा टिम्पैनोमेट्री प्रमुख वस्तुनिष्ठ परीक्षण हैं।
6. एडेड ऑडियोग्राम प्रवर्धन के साथ प्राप्त श्रवण सीमाओं को दर्शाता है।
7. वाक् अभिज्ञान परीक्षण वाक् समझने की क्षमता का आकलन करता है।
8. संप्रेषण विधि चयन में एडेड निष्पादन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
9. समग्र संप्रेषण अनेक माध्यमों का संयुक्त उपयोग करता है।
10. बहु-विषयक टीम समन्वित मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप सुनिश्चित करती है।

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

American Speech-Language-Hearing Association. (2015). *Audiologic Assessment of Hearing in Infants and Young Children*. ASHA.

Joint Committee on Infant Hearing. (2019). *Position Statement: Principles and Guidelines for Early Hearing Detection and Intervention Programs*.

Madell, J. R., & Flexer, C. (2019). *Pediatric Audiology: Diagnosis, Technology, and Management* (3rd ed.). Thieme.

Stach, B. A. (2019). *Clinical Audiology: An Introduction* (3rd ed.). Cengage.

2.9 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. श्रवण यंत्र एवं कॉक्लियर इम्प्लांट उपयोगकर्ता मार्गदर्शिकाएँ।
2. भारतीय सांकेतिक भाषा से संबंधित प्रशिक्षण सामग्री।
3. ASHA तथा JCIH द्वारा प्रकाशित दिशानिर्देश।
4. बाल श्रव्यविज्ञान एवं प्रारंभिक हस्तक्षेप संबंधी ऑनलाइन मॉड्यूल।
5. विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा से संबंधित राष्ट्रीय नीतिगत दस्तावेज।
6. श्रवण प्रशिक्षण तथा वाक् अभिज्ञान विकास हेतु डिजिटल संसाधन।
7. अभिभावक परामर्श पुस्तिकाएँ एवं घरेलू संप्रेषण गतिविधि पुस्तिकाएँ।
8. बहु-दिव्यांगता वाले बालकों के मूल्यांकन हेतु मानकीकृत परीक्षण मैनुअल।

2.10 निबन्धात्मकप्रश्न

1. अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालकों की अवधारणा, विशेषताओं एवं व्यापकता की चर्चा कीजिए।
2. बहु-दिव्यांगता वाले बालकों के श्रवण मूल्यांकन में आने वाली चुनौतियों का वर्णन कीजिए।
3. बौद्धिक दिव्यांगता एवं ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बालकों के श्रवण मूल्यांकन की व्याख्या कीजिए।
4. एडेड ऑडियोग्राम तथा वाक् अभिज्ञान परीक्षण के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।
5. एडेड निष्पादन के आधार पर संप्रेषण विधि चयन की प्रक्रिया समझाइए।
6. विभिन्न संप्रेषण विधियों की तुलना कीजिए।
7. अतिरिक्त दिव्यांगता संप्रेषण निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित करती है?
8. श्रवण दुर्बलता एवं अतिरिक्त दिव्यांगता वाले बालकों के प्रबंधन में बहु-विषयक टीम दृष्टिकोण की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

इकाई–3

एडेड निष्पादन (एडेड ऑडियोग्राम एवं वाक् अभिज्ञान) सहित अन्य कारकों के आधार पर शैक्षिक व्यवस्था (विशेष विद्यालय, आंशिक एकीकरण अथवा समावेशी शिक्षा) की सिफारिश

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताएँ

3.3.1 संप्रेषण, शैक्षणिक एवं सामाजिक आवश्यकताएँ

3.3.2 भावनात्मक, व्यावसायिक एवं विकासात्मक आवश्यकताएँ

3.3.3 शैक्षिक आवश्यकताओं का समग्र विश्लेषण

3.4 शैक्षिक व्यवस्था एवं निर्णय प्रक्रिया का परिचय

3.4.1 शैक्षिक व्यवस्था के विकल्प एवं नियुक्ति के सिद्धांत

3.4.2 एडेड निष्पादन, वाक् अभिज्ञान एवं अन्य कारकों के आधार पर शैक्षिक व्यवस्था की सिफारिश

3.5 सारांश

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.9 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

शिक्षा प्रत्येक बालक का मौलिक अधिकार है तथा उसके बौद्धिक, भाषाई, सामाजिक, भावनात्मक और व्यावसायिक विकास की आधारशिला मानी जाती है। किसी भी बालक की सीखने की क्षमता केवल उसकी बौद्धिक योग्यता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसे सूचना, संप्रेषण और सामाजिक सहभागिता तक कितनी प्रभावी पहुँच प्राप्त है। श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के संदर्भ में यह तथ्य और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है,

क्योंकि श्रवण क्षमता वाक्, भाषा, अधिगम तथा सामाजिक अंतःक्रिया के विकास से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। यदि बालक को उपयुक्त शैक्षिक वातावरण उपलब्ध न हो, तो उसकी शैक्षणिक उपलब्धि, आत्मविश्वास तथा सामाजिक सहभागिता प्रभावित हो सकती है।

आप पूर्ववर्ती इकाइयों में अध्ययन कर चुके हैं कि श्रवण दुर्बलता का प्रभाव केवल ध्वनियों को सुनने तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह भाषा अर्जन, वाक् विकास, सामाजिक संप्रेषण तथा शैक्षिक प्रगति को भी प्रभावित करता है। इसी कारण श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के लिए उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था का चयन पुनर्वास प्रक्रिया का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाग माना जाता है। शैक्षिक व्यवस्था से आशय उस शिक्षण परिवेश से है जिसमें बालक अपनी क्षमताओं, आवश्यकताओं और उपलब्ध सहायक सेवाओं के अनुरूप सर्वाधिक प्रभावी ढंग से सीख सके।



चित्र 2: श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की बहुआयामी शैक्षिक आवश्यकताएँ।

वर्तमान समय में शैक्षिक नियुक्ति का दृष्टिकोण काफी विकसित हो चुका है। पहले श्रवण दुर्बलता वाले अधिकांश बालकों को विशेष विद्यालयों में शिक्षित किया

जाता था, परन्तु नवजात श्रवण जाँच कार्यक्रमों, प्रारम्भिक हस्तक्षेप सेवाओं, डिजिटल श्रवण यंत्रों, कॉक्लियर इम्प्लांट, सहायक श्रवण तकनीकों तथा समावेशी शिक्षा नीतियों के विकास ने शैक्षिक विकल्पों का दायरा व्यापक बना दिया है। आज अनेक बालक सामान्य विद्यालयों में सफलतापूर्वक अध्ययन कर रहे हैं, जबकि कुछ बालकों के लिए विशेष विद्यालय, संसाधन कक्ष अथवा मिश्रित शैक्षिक मॉडल अधिक उपयुक्त सिद्ध हो सकते हैं।

यह समझना आवश्यक है कि शैक्षिक व्यवस्था का चयन केवल श्रवण क्षति की मात्रा के आधार पर नहीं किया जा सकता। समान श्रवण स्तर वाले दो बालकों की भाषा क्षमता, वाक् अभिज्ञान, संज्ञानात्मक क्रियाशीलता, सामाजिक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि में पर्याप्त अंतर हो सकता है। इसलिए निर्णय लेते समय एडेड निष्पादन, वाक् अभिज्ञान क्षमता, भाषा विकास, अतिरिक्त दिव्यांगताओं की उपस्थिति, परिवारिक सहयोग, उपलब्ध संसाधन तथा विद्यालयीय सुविधाओं का समग्र मूल्यांकन आवश्यक होता है।

इस इकाई में आप श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं, विभिन्न शैक्षिक व्यवस्थाओं, नियुक्ति के सिद्धांतों तथा एडेड निष्पादन और अन्य महत्त्वपूर्ण कारकों के आधार पर उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था की सिफारिश करने की प्रक्रिया का विस्तृत अध्ययन करेंगे। साथ ही, आप यह भी समझेंगे कि प्रमाण-आधारित निर्णय किस प्रकार बालक के दीर्घकालिक शैक्षिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक विकास को सुदृढ़ बना सकते हैं।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

1. श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की विविध शैक्षिक आवश्यकताओं की व्याख्या कर सकेंगे।
2. संप्रेषण, शैक्षणिक, सामाजिक तथा भावनात्मक आवश्यकताओं के शैक्षिक महत्त्व को समझ सकेंगे।
3. श्रवण दुर्बलता वाले बालकों हेतु उपलब्ध विभिन्न शैक्षिक व्यवस्था विकल्पों का वर्णन कर सकेंगे।
4. शैक्षिक नियुक्ति से संबंधित प्रमुख सिद्धांतों की चर्चा कर सकेंगे।
5. न्यूनतम प्रतिबंधात्मक परिवेश तथा वैयक्तिकृत शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।
6. शैक्षिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की पहचान कर सकेंगे।
7. एडेड ऑडियोग्राम की शैक्षिक योजना में भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे।
8. वाक् अभिज्ञान स्कोरों के आधार पर शैक्षिक सिफारिशें करने की क्षमता विकसित कर सकेंगे।
9. शैक्षिक नियुक्ति निर्णय-निर्माण प्रक्रिया का विश्लेषण कर सकेंगे।
10. श्रवण दुर्बलता एवं अतिरिक्त आवश्यकताओं वाले बालकों हेतु उपयुक्त शैक्षिक विकल्पों का चयन कर सकेंगे।
11. विभिन्न केस अध्ययनों के आधार पर शैक्षिक निर्णयों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
12. परिवार, विद्यालय तथा बहु-विषयक टीम की भूमिका को समझ सकेंगे।

13. समावेशी शिक्षा, संसाधन कक्ष तथा विशेष विद्यालयों के लाभ एवं सीमाओं की तुलना कर सकेंगे।

14. शैक्षिक योजना में सहायक तकनीकों एवं श्रवण उपकरणों के योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।

15. श्रवण दुर्बलता वाले बालकों हेतु भविष्य की शैक्षिक प्रवृत्तियों एवं उभरती तकनीकों की चर्चा कर सकेंगे।

3.3 श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताएँ

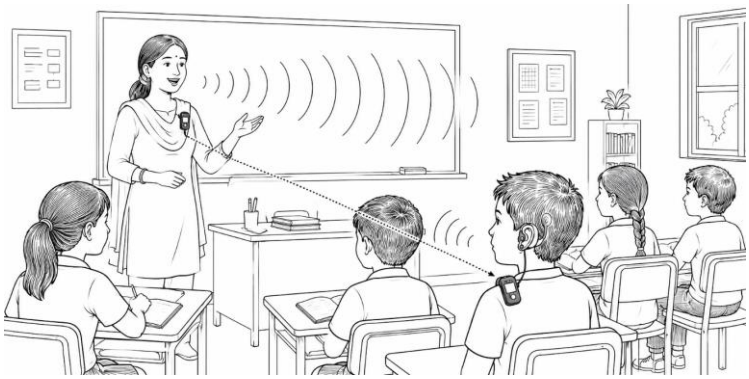
श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताएँ बहुआयामी होती हैं तथा प्रत्येक बालक में अलग-अलग रूप में दिखाई दे सकती हैं। इन आवश्यकताओं का निर्धारण केवल श्रवण क्षति की मात्रा से नहीं होता, बल्कि भाषा विकास, संप्रेषण कौशल, संज्ञानात्मक क्षमता, सामाजिक सहभागिता, अतिरिक्त दिव्यांगताओं तथा उपलब्ध शैक्षिक अवसरों से भी प्रभावित होता है। इसलिए प्रभावी शैक्षिक योजना के लिए बालक के समग्र विकासात्मक प्रोफाइल को समझना आवश्यक है।

ऐसे बालकों को प्रायः संप्रेषण तक बेहतर पहुँच, भाषा विकास के अवसर, उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ, सामाजिक सहभागिता के अवसर तथा आवश्यक सहायक सेवाओं की आवश्यकता होती है। कई बार उन्हें श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट, FM प्रणाली, संसाधन शिक्षक या वाक्-भाषा चिकित्सा जैसी अतिरिक्त सहायता भी प्रदान करनी पड़ती है। आप समझ सकते हैं कि शैक्षिक सफलता तभी संभव है जब बालक को उसकी वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप सहयोग प्राप्त हो।

इसी कारण शैक्षिक व्यवस्था का चयन करते समय संप्रेषण, शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा भविष्य की व्यावसायिक आवश्यकताओं पर समान रूप से विचार किया जाना चाहिए।

3.3.1 संप्रेषण, शैक्षणिक एवं सामाजिक आवश्यकताएँ

संप्रेषण किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया का मूल आधार है। विद्यालय में होने वाली अधिकांश गतिविधियाँ सुनने, समझने, प्रश्न पूछने, उत्तर देने, विचार व्यक्त करने तथा अन्य व्यक्तियों के साथ अंतःक्रिया करने पर आधारित होती हैं। श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के लिए इन प्रक्रियाओं में अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। यदि उन्हें पर्याप्त श्रवण पहुँच अथवा उपयुक्त संप्रेषण समर्थन प्राप्त न हो, तो कक्षा में प्रस्तुत की जाने वाली जानकारी का एक महत्त्वपूर्ण भाग उनसे छूट सकता है। परिणामस्वरूप भाषा विकास, अधिगम तथा सामाजिक सहभागिता प्रभावित हो सकती है।



चित्र 3.2: कक्षा में संप्रेषण पहुँच — FM प्रणाली द्वारा शिक्षक की वाणी तक सीधी पहुँच

संप्रेषण संबंधी आवश्यकताओं में सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता प्रभावी भाषा तक पहुँच की होती है। कुछ बालक बोली जाने वाली भाषा का उपयोग करते हैं,

जबकि कुछ सांकेतिक भाषा, समग्र संप्रेषण अथवा अन्य वैकल्पिक संप्रेषण प्रणालियों का प्रयोग कर सकते हैं। इसलिए शैक्षिक परिवेश ऐसा होना चाहिए जो बालक की प्रमुख संप्रेषण विधि का समर्थन करे। उदाहरण के लिए, बोली जाने वाली भाषा का उपयोग करने वाले बालकों को बेहतर ध्वनिकी, सहायक श्रवण तकनीक तथा स्पष्ट शिक्षण शैली की आवश्यकता हो सकती है, जबकि सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले बालकों को प्रशिक्षित दुभाषियों अथवा सांकेतिक भाषा जानने वाले शिक्षकों की आवश्यकता हो सकती है।

शैक्षणिक आवश्यकताएँ भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। अधिकांश कक्षा-आधारित अधिगम श्रवण सूचना पर आधारित होता है। शिक्षक के निर्देश, समूह चर्चा, मौखिक प्रस्तुतियाँ तथा सहपाठियों के साथ संवाद सीखने की प्रक्रिया के प्रमुख घटक होते हैं। श्रवण दुर्बलता के कारण बालकों को शब्दावली विकास, पठन-बोध, लेखन कौशल, व्याकरण, अवधारणा-निर्माण तथा गणितीय भाषा को समझने में कठिनाई हो सकती है। अतः अनेक बालकों को संशोधित शिक्षण विधियों, अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता, दृश्य सामग्री, नोट्स, कैप्शनयुक्त संसाधनों तथा संसाधन शिक्षक सेवाओं की आवश्यकता होती है। नियमित प्रगति मूल्यांकन यह सुनिश्चित करने में सहायता करता है कि शैक्षिक समर्थन प्रभावी बना रहे।

सामाजिक आवश्यकताएँ भी शैक्षिक योजना का अभिन्न भाग हैं। विद्यालय केवल ज्ञान अर्जन का स्थान नहीं है, बल्कि सामाजिक कौशल विकसित करने का भी महत्त्वपूर्ण मंच है। श्रवण दुर्बलता वाले बालकों को समूह चर्चाओं में भाग लेने, मित्रता विकसित करने, सामाजिक संकेतों को समझने तथा सहपाठियों के साथ सहज संवाद स्थापित करने में कठिनाई हो सकती है। यदि इन चुनौतियों को

संबोधित न किया जाए, तो सामाजिक अलगाव, आत्मविश्वास में कमी तथा विद्यालय से जुड़ाव की भावना में कमी उत्पन्न हो सकती है।

आप यह समझ चुके होंगे कि प्रभावी शिक्षा केवल पाठ्यक्रम की उपलब्धि तक सीमित नहीं है। संप्रेषण, शैक्षणिक सफलता और सामाजिक सहभागिता एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इसलिए श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के लिए ऐसा शैक्षिक वातावरण आवश्यक है जो इन तीनों क्षेत्रों में संतुलित विकास को प्रोत्साहित करे तथा उन्हें विद्यालय समुदाय का सक्रिय और आत्मविश्वासी सदस्य बनने में सहायता प्रदान करे।

3.3.2 भावनात्मक, व्यावसायिक एवं विकासात्मक आवश्यकताएँ

श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं को समझते समय केवल भाषा एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं होता। उनके भावनात्मक, व्यावसायिक तथा समग्र विकासात्मक पक्ष भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। यदि इन क्षेत्रों की आवश्यकताओं को उपयुक्त रूप से संबोधित न किया जाए, तो बालक की शैक्षणिक प्रगति, आत्मविश्वास तथा सामाजिक सहभागिता प्रभावित हो सकती है। इसलिए आधुनिक शैक्षिक योजना बालक के समग्र व्यक्तित्व विकास पर बल देती है।

भावनात्मक आवश्यकताओं के संदर्भ में यह देखा गया है कि श्रवण दुर्बलता वाले अनेक बालक संप्रेषण संबंधी बाधाओं के कारण निराशा, असुरक्षा अथवा सामाजिक अलगाव का अनुभव कर सकते हैं। जब बालक अपने सहपाठियों की बातचीत को पूरी तरह नहीं समझ पाता या कक्षा चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी नहीं कर पाता, तब उसके आत्मविश्वास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। कुछ बालकों में आत्म-सम्मान की कमी, चिंता अथवा विद्यालयीय गतिविधियों से दूरी जैसी समस्याएँ भी विकसित हो सकती हैं। इसलिए विद्यालयी वातावरण ऐसा

होना चाहिए जो स्वीकृति, सहयोग और सकारात्मक सहभागिता को प्रोत्साहित करे। संवेदनशील शिक्षक, सहयोगी सहपाठी तथा सहायक शैक्षिक नीतियाँ बालक के भावनात्मक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं।

विकासात्मक आवश्यकताओं का संबंध बालक के संज्ञानात्मक, भाषाई, सामाजिक और व्यवहारिक विकास से है। श्रवण दुर्बलता का प्रभाव प्रारम्भिक भाषा अर्जन से लेकर जटिल अवधारणाओं के विकास तक देखा जा सकता है। यदि समय पर हस्तक्षेप उपलब्ध न हो, तो भाषा विकास में विलंब आगे चलकर शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक संप्रेषण को प्रभावित कर सकता है। इस कारण शैक्षिक कार्यक्रमों में भाषा उद्दीपन, संप्रेषण प्रशिक्षण, सामाजिक कौशल विकास तथा आयु-अनुरूप अधिगम अनुभवों को शामिल करना आवश्यक है। आप समझ सकते हैं कि विकासात्मक आवश्यकताओं की अनदेखी करने से केवल वर्तमान अधिगम ही नहीं, बल्कि भविष्य की शैक्षिक प्रगति भी प्रभावित हो सकती है।

व्यावसायिक आवश्यकताएँ विशेष रूप से बड़े बालकों और किशोरों के लिए महत्त्वपूर्ण होती हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षणिक सफलता प्राप्त करना नहीं, बल्कि बालक को भविष्य के स्वतंत्र जीवन और रोजगार के लिए तैयार करना भी है। श्रवण दुर्बलता वाले विद्यार्थियों को कैरियर जागरूकता, तकनीकी कौशल, कार्यस्थल संप्रेषण, समस्या-समाधान क्षमता तथा आत्मनिर्भरता से संबंधित अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। संक्रमण योजना, व्यावसायिक मार्गदर्शन तथा कौशल-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम इस दिशा में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

इस प्रकार भावनात्मक, विकासात्मक और व्यावसायिक आवश्यकताएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। प्रभावी शैक्षिक व्यवस्था वही मानी जाती है जो बालक के वर्तमान अधिगम के साथ-साथ उसके भविष्य के सामाजिक, व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन की तैयारी भी सुनिश्चित करे।

3.3.3 शैक्षिक आवश्यकताओं का समग्र विश्लेषण

श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं का विश्लेषण करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कोई भी एकल कारक उनकी शैक्षिक सफलता को निर्धारित नहीं करता। संप्रेषण, भाषा, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक सहभागिता, भावनात्मक समायोजन तथा व्यावसायिक तैयारी सभी एक-दूसरे से परस्पर संबंधित घटक हैं। इसलिए शैक्षिक योजना सदैव समग्र दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए।

सबसे पहले संप्रेषण की भूमिका पर विचार करना आवश्यक है। प्रभावी संप्रेषण के बिना अधिगम की प्रक्रिया बाधित हो सकती है। यदि बालक शिक्षक के निर्देशों, कक्षा चर्चाओं अथवा सहपाठियों की बातचीत को पर्याप्त रूप से नहीं समझ पाता, तो उसका शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है। इसी प्रकार भाषा विकास में होने वाली कठिनाइयाँ पठन, लेखन, अवधारणा निर्माण तथा समस्या-समाधान जैसे शैक्षणिक क्षेत्रों को भी प्रभावित करती हैं। इसलिए संप्रेषण और शैक्षणिक आवश्यकताओं को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता।

सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएँ भी शैक्षिक सफलता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती हैं। जिन बालकों को विद्यालय में सकारात्मक सामाजिक अनुभव प्राप्त होते हैं, वे सामान्यतः अधिक आत्मविश्वासी, प्रेरित तथा सक्रिय शिक्षार्थी बनते हैं। इसके विपरीत, सामाजिक अलगाव या संप्रेषण संबंधी बाधाएँ शैक्षणिक सहभागिता को कम कर सकती हैं। इस कारण विद्यालयी वातावरण को समावेशी, सहयोगात्मक और प्रोत्साहनकारी बनाया जाना चाहिए।

विकासात्मक आवश्यकताओं का मूल्यांकन भी आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक बालक की सीखने की गति, भाषा क्षमता तथा संज्ञानात्मक प्रोफाइल भिन्न हो सकती है।

कुछ बालकों को केवल सीमित शैक्षणिक सहायता की आवश्यकता होती है, जबकि अन्य को गहन भाषा हस्तक्षेप, संसाधन शिक्षक सेवाएँ अथवा विशेष शैक्षिक समर्थन की आवश्यकता पड़ सकती है। यदि अतिरिक्त दिव्यांगताएँ भी उपस्थित हों, तो योजना और अधिक वैयक्तिकृत होनी चाहिए।

परिवार की भूमिका भी इस विश्लेषण का महत्त्वपूर्ण भाग है। परिवार संप्रेषण के अवसर प्रदान करता है, प्रवर्धन उपकरणों के उपयोग को प्रोत्साहित करता है तथा शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहयोग देता है। इसलिए परिवारिक सहभागिता को शैक्षिक योजना का अभिन्न अंग माना जाता है।

आप इस चर्चा से परिचित हो चुके होंगे कि श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं को केवल श्रवण क्षति के आधार पर नहीं समझा जा सकता। प्रभावी शैक्षिक व्यवस्था वही होगी जो संप्रेषण, भाषा, शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक, विकासात्मक तथा परिवारिक कारकों का एकीकृत मूल्यांकन करके तैयार की जाए। यही समग्र दृष्टिकोण आगे शैक्षिक व्यवस्था के चयन और नियुक्ति संबंधी निर्णयों की आधारशिला बनता है।

3.4 शैक्षिक व्यवस्था एवं निर्णय प्रक्रिया का परिचय

श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के लिए उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था का चयन एक महत्त्वपूर्ण तथा उत्तरदायित्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य केवल बालक को किसी विद्यालय में प्रवेश दिलाना नहीं, बल्कि ऐसा शैक्षिक परिवेश उपलब्ध कराना है जो उसकी संप्रेषण, शैक्षणिक, सामाजिक तथा भावनात्मक आवश्यकताओं को प्रभावी रूप से पूरा कर सके। प्रत्येक बालक की क्षमताएँ, सीमाएँ, सीखने की शैली तथा सहायता आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं, इसलिए शैक्षिक व्यवस्था का चयन सदैव वैयक्तिकृत होना चाहिए।

निर्णय प्रक्रिया व्यापक मूल्यांकन पर आधारित होती है, जिसमें श्रवण स्थिति, एडेड निष्पादन, वाक् अभिज्ञान, भाषा विकास, शैक्षणिक उपलब्धि, संज्ञानात्मक क्षमता, अतिरिक्त दिव्यांगताओं की उपस्थिति तथा परिवारिक अपेक्षाओं का विश्लेषण किया जाता है। इन सभी सूचनाओं को एकीकृत करके यह निर्धारित किया जाता है कि कौन-सी शैक्षिक व्यवस्था बालक की वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होगी।

आगे के खण्डों में आप विभिन्न शैक्षिक व्यवस्था विकल्पों, नियुक्ति के सिद्धांतों तथा एडेड निष्पादन एवं अन्य कारकों के आधार पर शैक्षिक सिफारिशें करने की प्रक्रिया का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

3.4.1 शैक्षिक व्यवस्था के विकल्प एवं नियुक्ति के सिद्धांत

श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शिक्षा के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों के दौरान उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। प्रारम्भिक श्रवण पहचान, डिजिटल श्रवण तकनीकों, कॉक्लियर इम्प्लांट, वाक्-भाषा हस्तक्षेप तथा समावेशी शिक्षा नीतियों के विकास ने ऐसे बालकों के लिए उपलब्ध शैक्षिक विकल्पों का विस्तार किया है। वर्तमान समय में यह स्वीकार किया जाता है कि सभी बालकों के लिए एक ही प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था उपयुक्त नहीं हो सकती। प्रत्येक बालक की श्रवण क्षमता, भाषा विकास, संप्रेषण शैली, संज्ञानात्मक स्तर, सामाजिक आवश्यकताएँ तथा उपलब्ध संसाधन भिन्न होते हैं। इसलिए शैक्षिक व्यवस्था का चयन सदैव वैयक्तिकृत, प्रमाण-आधारित तथा लचीला होना चाहिए।

शैक्षिक व्यवस्था के विकल्प

श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के लिए विभिन्न प्रकार की शैक्षिक व्यवस्थाएँ उपलब्ध हैं। इनका उद्देश्य बालक को उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप सर्वोत्तम अधिगम अवसर प्रदान करना है।

1. विशेष विद्यालय

विशेष विद्यालय ऐसे संस्थान होते हैं जो विशेष रूप से श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित किए जाते हैं। इन विद्यालयों में प्रशिक्षित विशेष शिक्षक, श्रव्य विशेषज्ञ, वाक्-भाषा रोगविज्ञानी तथा अन्य सहायता पेशेवर उपलब्ध होते हैं। यहाँ शिक्षण प्रक्रिया में संप्रेषण सुगमता, भाषा विकास तथा वैयक्तिकृत सहायता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विशेष विद्यालयों का एक प्रमुख लाभ यह है कि वहाँ का संपूर्ण वातावरण श्रवण दुर्बलता वाले विद्यार्थियों के अनुकूल होता है। छोटी कक्षाएँ, विशिष्ट शिक्षण सामग्री तथा समान आवश्यकताओं वाले सहपाठियों की उपस्थिति अधिगम को सुगम बना सकती है। दूसरी ओर, कुछ स्थितियों में ऐसे विद्यालय सामान्य रूप से विकसित होने वाले सहपाठियों के साथ सामाजिक अंतःक्रिया के अवसरों को सीमित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, कई क्षेत्रों में ऐसे विद्यालयों तक पहुँच भौगोलिक अथवा आर्थिक कारणों से चुनौतीपूर्ण हो सकती है।

2. संसाधन कक्ष मॉडल

संसाधन कक्ष मॉडल में बालक नियमित विद्यालय में अध्ययन करता है, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त शैक्षिक सहायता प्राप्त करने के लिए संसाधन कक्ष का उपयोग करता है। संसाधन शिक्षक भाषा विकास, शैक्षणिक कठिनाइयों, अध्ययन कौशल तथा संप्रेषण रणनीतियों में सहायता प्रदान करते हैं।

यह मॉडल सामान्य शिक्षा और विशिष्ट सहायता के बीच संतुलन स्थापित करता है। बालक अधिकांश समय सामान्य कक्षा में बिताता है तथा आवश्यकता अनुसार व्यक्तिगत सहायता प्राप्त करता है। यह व्यवस्था उन विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकती है जिनकी श्रवण पहुँच अपेक्षाकृत अच्छी है, परन्तु उन्हें कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता है।

3. आंशिक एकीकरण

आंशिक एकीकरण मॉडल में बालक दिन का एक भाग सामान्य कक्षा में तथा शेष भाग विशिष्ट शैक्षिक सेवाओं वाले परिवेश में व्यतीत करता है। यह व्यवस्था उन बालकों के लिए उपयोगी हो सकती है जिन्हें कुछ विषयों या गतिविधियों में अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होती है, जबकि अन्य क्षेत्रों में वे सामान्य कक्षा में सफलतापूर्वक सहभागिता कर सकते हैं।

इस मॉडल का प्रमुख लाभ यह है कि यह विशेष सहायता और सामाजिक समावेशन दोनों के अवसर प्रदान करता है। साथ ही यह पूर्ण समावेशन की दिशा में क्रमिक संक्रमण का माध्यम भी बन सकता है।

4. समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा वर्तमान समय की सबसे अधिक प्रोत्साहित की जाने वाली शैक्षिक व्यवस्थाओं में से एक है। इसमें श्रवण दुर्बलता वाले बालक सामान्य रूप से विकसित होने वाले सहपाठियों के साथ नियमित विद्यालयों में अध्ययन करते हैं। आवश्यकतानुसार उन्हें संसाधन शिक्षक, वाक्-भाषा सेवाएँ, सहायक तकनीक, FM प्रणाली, दुभाषिया सेवाएँ अथवा अन्य समर्थन प्रदान किया जाता है।

समावेशी शिक्षा का आधार यह विश्वास है कि सभी बालकों को समान अवसर प्राप्त होने चाहिए तथा विविधता को विद्यालयी जीवन का स्वाभाविक भाग माना जाना चाहिए। इस व्यवस्था के माध्यम से सामाजिक सहभागिता, भाषा संपर्क, आत्मविश्वास तथा सामुदायिक एकीकरण को बढ़ावा मिलता है। तथापि इसकी सफलता उपयुक्त सहायता सेवाओं, प्रशिक्षित शिक्षकों, अनुकूल कक्षा ध्वनिकी तथा प्रभावी निगरानी पर निर्भर करती है।

5. गृह-आधारित शिक्षा

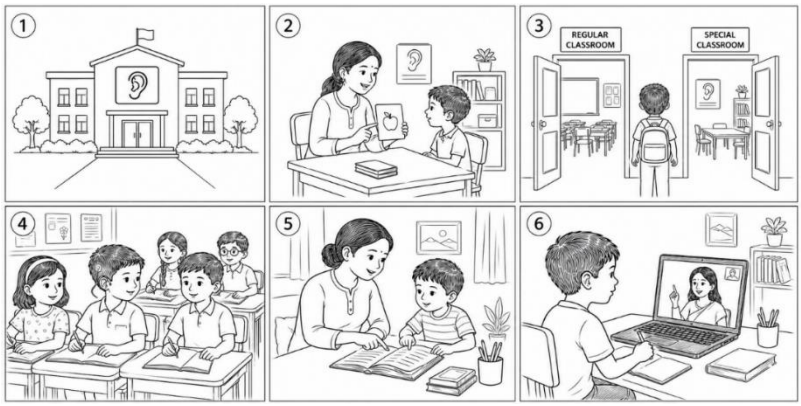
कुछ परिस्थितियों में गृह-आधारित शिक्षा उपयुक्त विकल्प हो सकती है। यह व्यवस्था विशेष रूप से गंभीर बहु-दिव्यांगता वाले बालकों, अत्यधिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों वाले विद्यार्थियों अथवा दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के लिए उपयोगी हो सकती है।

इस मॉडल में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षण गतिविधियाँ घर पर आयोजित की जाती हैं तथा पेशेवर समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यद्यपि यह व्यवस्था वैयक्तिकृत निर्देश प्रदान करती है, परन्तु सामाजिक सहभागिता के अवसर अपेक्षाकृत सीमित हो सकते हैं।

6. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने दूरस्थ शिक्षा को एक व्यवहार्य विकल्प बना दिया है। ऑनलाइन शिक्षण मंच, वर्चुअल कक्षाएँ, डिजिटल सामग्री तथा टेली-शिक्षा सेवाएँ ऐसे विद्यार्थियों तक शिक्षा पहुँचाने में सहायता करती हैं जो नियमित विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सकत

दूरस्थ शिक्षा विशेष रूप से ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले बालकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। यद्यपि यह लचीलापन प्रदान करती है, फिर भी इसके प्रभावी उपयोग के लिए तकनीकी संसाधन, इंटरनेट सुविधा तथा परिवारिक सहयोग आवश्यक होते हैं।



चित्र 3.4: शैक्षिक व्यवस्था के छह प्रमुख विकल्प

शैक्षिक नियुक्ति के सिद्धांत

उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था का चयन कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। ये सिद्धांत यह सुनिश्चित करते हैं कि निर्णय बालक के सर्वोत्तम हित में लिए जाएँ।

न्यूनतम प्रतिबंधात्मक परिवेश

न्यूनतम प्रतिबंधात्मक परिवेश का सिद्धांत यह सुझाव देता है कि बालक को अधिकतम संभव सीमा तक सामान्य सहपाठियों के साथ शिक्षित किया जाना चाहिए। इसका उद्देश्य सामाजिक सहभागिता एवं समावेशन को बढ़ावा देना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक बालक को अनिवार्य रूप से पूर्ण समावेशी कक्षा में रखा जाए, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि आवश्यक सहायता के साथ वह जितना संभव हो उतना कम प्रतिबंधात्मक वातावरण प्राप्त करे।

वैयक्तिकृत शिक्षा

प्रत्येक बालक की आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। इसलिए शैक्षिक योजना भी वैयक्तिकृत होनी चाहिए। वैयक्तिकृत शिक्षा योजना (Individualized Education Plan (IEP)) के माध्यम से बालक की वर्तमान क्षमताओं, लक्ष्यों, सहायता सेवाओं तथा प्रगति निगरानी की रूपरेखा निर्धारित की जाती है। आप जान चुके होंगे कि सफल शैक्षिक योजना वही होती है जो बालक की वास्तविक आवश्यकताओं पर आधारित हो।

क्रियात्मक संप्रेषण

शैक्षिक व्यवस्था का चयन करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि बालक प्रभावी ढंग से संप्रेषण कर सके। यदि बालक शिक्षक के निर्देश समझने, प्रश्न पूछने, विचार व्यक्त करने तथा सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने में सक्षम नहीं है, तो उसकी शैक्षिक प्रगति प्रभावित हो सकती है। इसलिए किसी भी शैक्षिक व्यवस्था की उपयुक्तता का मूल्यांकन करते समय क्रियात्मक संप्रेषण को प्रमुख मानदंड माना जाना चाहिए।

परिवार-केंद्रित योजना

परिवार बालक के विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार होता है। अभिभावक बालक की क्षमताओं, व्यवहार, संप्रेषण शैली तथा दैनिक आवश्यकताओं के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं। इसलिए शैक्षिक नियुक्ति से संबंधित निर्णयों में परिवार की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है। सहयोगात्मक निर्णय-निर्माण दीर्घकालिक सफलता की संभावना को बढ़ाता है।

प्रमाण-आधारित निर्णय

शैक्षिक सिफारिशें धारणाओं या सामान्य मान्यताओं के आधार पर नहीं, बल्कि मूल्यांकन निष्कर्षों पर आधारित होनी चाहिए। श्रवण स्थिति, एडेड निष्पादन,

वाक् अभिज्ञान, भाषा विकास, शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक क्रियाशीलता जैसी सूचनाएँ निर्णय प्रक्रिया का आधार बनती हैं। प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त तथा उत्तरदायी शैक्षिक योजना सुनिश्चित करता है।

इस प्रकार शैक्षिक व्यवस्था के विभिन्न विकल्प तथा नियुक्ति के सिद्धांत मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक श्रवण दुर्बलता वाला बालक अपनी क्षमताओं के अनुरूप सर्वोत्तम शैक्षिक अवसर प्राप्त कर सके। यही सिद्धांत आगे शैक्षिक सिफारिशों एवं निर्णय-निर्माण प्रक्रिया की आधारशिला बनते हैं।

3.4.2 एडेड निष्पादन, वाक् अभिज्ञान एवं अन्य कारकों के आधार पर शैक्षिक व्यवस्था की सिफारिश

श्रवण दुर्बलता वाले बालकों के लिए उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था का चयन पुनर्वास एवं शिक्षा योजना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाग है। किसी भी शैक्षिक व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि बालक को संप्रेषण, भाषा, अधिगम, सामाजिक सहभागिता तथा व्यक्तिगत विकास के पर्याप्त अवसर प्राप्त हों। पूर्व में शैक्षिक नियुक्ति प्रायः श्रवण क्षति की मात्रा के आधार पर निर्धारित की जाती थी, परन्तु वर्तमान दृष्टिकोण कहीं अधिक व्यापक और वैज्ञानिक है। आज यह स्वीकार किया जाता है कि समान श्रवण क्षति वाले दो बालकों की शैक्षिक आवश्यकताएँ पूरी तरह भिन्न हो सकती हैं। इसलिए शैक्षिक व्यवस्था की सिफारिश करते समय एडेड निष्पादन, वाक् अभिज्ञान, भाषा विकास, संज्ञानात्मक क्षमता, अतिरिक्त दिव्यांगता, परिवारिक समर्थन तथा उपलब्ध सेवाओं जैसे अनेक कारकों पर विचार करना आवश्यक होता है।

आप परिचित हो चुके होंगे कि श्रवण सीमा केवल यह बताती है कि बालक कितनी ध्वनि सुन सकता है, जबकि वास्तविक शैक्षिक सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह उपलब्ध श्रवण सूचना को कितनी प्रभावी ढंग से समझता

और उपयोग करता है। इसी कारण एडेड निष्पादन एवं वाक् अभिज्ञान को आधुनिक शैक्षिक निर्णय-निर्माण का आधार माना जाता है।



चित्र 6: अनएडेड बनाम एडेड श्रवण पहुँच प्रवर्धन का प्रभाव

एडेड निष्पादन का महत्त्व

एडेड निष्पादन से आशय उस कार्यात्मक श्रवण क्षमता से है जो बालक श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट अथवा अन्य प्रवर्धन उपकरणों का उपयोग करते समय प्रदर्शित करता है। यह केवल श्रवण क्षमता का माप नहीं है, बल्कि वास्तविक जीवन में श्रवण सूचना तक पहुँच की गुणवत्ता का संकेतक भी है।

यदि किसी बालक की अनएडेड श्रवण सीमाएँ गंभीर श्रेणी में हैं, परन्तु उचित प्रवर्धन के बाद वह अधिकांश वाक् ध्वनियों तक पहुँच प्राप्त कर रहा है, तो उसकी शैक्षिक आवश्यकताएँ उन बालकों से भिन्न होंगी जिन्हें समान श्रवण क्षति होने के बावजूद सीमित श्रवण लाभ प्राप्त हो रहा है। इसलिए शैक्षिक सिफारिशें सदैव एडेड निष्पादन पर आधारित होनी चाहिए।

एडेड निष्पादन यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि:

- बालक कक्षा में शिक्षक की वाणी कितनी स्पष्टता से सुन सकता है।
- क्या सामान्य बातचीत की ध्वनियाँ पर्याप्त रूप से श्रव्य हैं।
- क्या अतिरिक्त श्रवण तकनीक की आवश्यकता है।
- क्या मौखिक भाषा आधारित शिक्षण व्यवहार्य है।
- क्या वैकल्पिक संप्रेषण सहायता आवश्यक होगी।

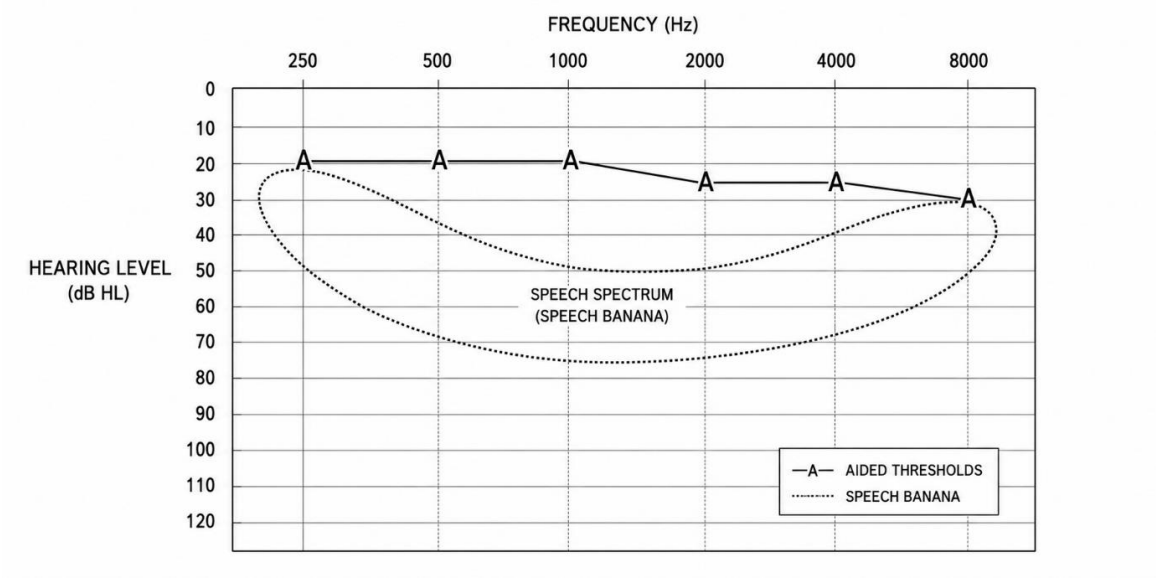
एडेड ऑडियोग्राम और शैक्षिक योजना

एडेड ऑडियोग्राम शैक्षिक निर्णयों में विशेष भूमिका निभाता है क्योंकि यह प्रवर्धन के साथ प्राप्त वास्तविक श्रवण पहुँच को प्रदर्शित करता है। इसका विश्लेषण करते समय केवल औसत श्रवण सीमा पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं होता। विभिन्न आवृत्तियों पर उपलब्ध श्रव्यता भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण होती है।

यदि एडेड सीमाएँ लगभग 20 से 30 dB HL के बीच हैं, तो अधिकांश वाक् ध्वनियाँ श्रव्य होती हैं। ऐसे बालकों को सामान्यतः समावेशी शिक्षा, श्रवणात्मक-शाब्दिक कार्यक्रम तथा मुख्यधारा कक्षा से लाभ मिल सकता है।

यदि एडेड सीमाएँ लगभग 30 से 45 dB HL के बीच हैं, तो बालक अधिकांश वाक् ध्वनियाँ सुन सकता है, परन्तु मंद ध्वनियों तथा शोरपूर्ण परिस्थितियों में कठिनाई अनुभव कर सकता है। ऐसी स्थिति में FM प्रणाली, संसाधन कक्ष सहायता तथा नियमित वाक्-भाषा हस्तक्षेप उपयोगी हो सकते हैं।

यदि एडेड सीमाएँ 45 dB HL से अधिक बनी रहती हैं, तो वाक् सूचना का पर्याप्त भाग बालक तक नहीं पहुँच पाता। ऐसे मामलों में समग्र संप्रेषण, सांकेतिक सहायता, विशेष शैक्षिक सेवाएँ अथवा प्रवर्धन रणनीति के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता हो सकती है।



चित्र 3.: एडेड ऑडियोग्राम एवं वाक् स्पेक्ट्रम (स्पीच बनाना)

वाक् अभिज्ञान का महत्त्व

एडेड ऑडियोग्राम यह बताता है कि बालक क्या सुन सकता है, जबकि वाक् अभिज्ञान यह बताता है कि बालक क्या समझ सकता है। शिक्षा की दृष्टि से यह अंतर अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

कक्षा में सफलता केवल ध्वनि की उपस्थिति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि बोली गई सूचना की समझ पर निर्भर करती है। शिक्षक के निर्देशों का अनुसरण करना, प्रश्नों का उत्तर देना, चर्चाओं में भाग लेना तथा नई अवधारणाओं को सीखना सभी वाक् समझ पर आधारित प्रक्रियाएँ हैं।

इसी कारण वाक् अभिज्ञान परीक्षण शैक्षिक व्यवस्था की सिफारिश में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

उच्च वाक् अभिज्ञान स्कोर

जब वाक् अभिज्ञान स्कोर 80 से 100 प्रतिशत के बीच होता है, तो यह दर्शाता है कि बालक अधिकांश बोली जाने वाली भाषा को प्रभावी रूप से समझ सकता है।

ऐसे बालकों में सामान्यतः निम्न विशेषताएँ देखी जाती हैं:

- बेहतर कक्षा सहभागिता
- अधिक प्रभावी भाषा विकास
- मजबूत पठन कौशल
- उच्च शैक्षणिक उपलब्धि
- बेहतर सामाजिक अंतःक्रिया

इन परिस्थितियों में समावेशी शिक्षा, श्रवणात्मक-शाब्दिक दृष्टिकोण तथा मुख्यधारा शिक्षण व्यवस्था उपयुक्त हो सकती है।

मध्यम वाक् अभिज्ञान स्कोर

यदि वाक् अभिज्ञान स्कोर 50 से 79 प्रतिशत के बीच है, तो बालक को बोली जाने वाली भाषा की आंशिक समझ प्राप्त होती है।

ऐसे विद्यार्थियों को निम्न प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो सकती है:

- FM प्रणाली
- संसाधन कक्ष सेवाएँ
- वाक्-भाषा चिकित्सा
- दृश्य सहायता
- लिप रीडिंग सहयोग
- शिक्षक द्वारा संशोधित प्रस्तुति

इन परिस्थितियों में समावेशी शिक्षा और अतिरिक्त सहायता सेवाओं का संयोजन प्रायः प्रभावी सिद्ध होता है।

निम्न वाक् अभिज्ञान स्कोर

जब वाक् अभिज्ञान 50 प्रतिशत से कम होता है, तब बालक केवल श्रवण सूचना के आधार पर पर्याप्त भाषा एवं शैक्षणिक लाभ प्राप्त नहीं कर पाता।

ऐसे मामलों में निम्न विकल्पों पर विचार किया जा सकता है:

- समग्र संप्रेषण
- सांकेतिक भाषा
- द्विभाषी-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण
- विशेष विद्यालय
- वैकल्पिक एवं वर्धित संप्रेषण प्रणाली

इस स्थिति में प्राथमिक लक्ष्य भाषा तक पूर्ण पहुँच सुनिश्चित करना होता है।

शोर में वाक् अभिज्ञान का प्रभाव

विद्यालयी वातावरण प्रायः शांत नहीं होता। कक्षा में सहपाठियों की बातचीत, पंखों की ध्वनि, गलियारों का शोर तथा अन्य वातावरणीय ध्वनियाँ श्रवण कार्य को प्रभावित कर सकती हैं।

कई बालक शांत वातावरण में उत्कृष्ट निष्पादन प्रदर्शित करते हैं, परन्तु शोर की उपस्थिति में उनका वाक् अभिज्ञान काफी कम हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में निम्न उपाय उपयोगी हो सकते हैं:

- FM प्रणाली
- रिमोट माइक्रोफोन तकनीक
- ध्वनिक संशोधन
- वरीयता बैठक व्यवस्था
- छोटे समूह शिक्षण

इसलिए शोर में वाक् अनुभूति का मूल्यांकन शैक्षिक सिफारिशों के लिए अत्यंत उपयोगी सूचना प्रदान करता है।

भाषा विकास की भूमिका

शैक्षिक व्यवस्था का चयन करते समय भाषा विकास का मूल्यांकन अनिवार्य है। कुछ बालक उत्कृष्ट एडेड निष्पादन और उच्च वाक् अभिज्ञान के बावजूद भाषा विलंब प्रदर्शित कर सकते हैं। दूसरी ओर कुछ बालक अपेक्षाकृत सीमित श्रवण पहुँच के बावजूद पर्याप्त भाषा कौशल विकसित कर लेते हैं।

यदि भाषा आयु-अनुरूप है, तो समावेशी शिक्षा की संभावना अधिक होती है। यदि भाषा विकास में उल्लेखनीय विलंब है, तो अतिरिक्त वाक्-भाषा सेवाओं, संसाधन सहायता अथवा विशिष्ट कार्यक्रमों की आवश्यकता हो सकती है।

संज्ञानात्मक क्षमता का प्रभाव

संज्ञानात्मक क्षमता अधिगम की गति, समस्या-समाधान, ध्यान तथा शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

उच्च संज्ञानात्मक क्षमता वाले बालक श्रवण सीमाओं की कुछ हद तक क्षतिपूर्ति कर सकते हैं। इसके विपरीत, संज्ञानात्मक सीमाएँ शैक्षिक योजना को अधिक संरचित एवं सहयोगात्मक बनाने की आवश्यकता उत्पन्न कर सकती हैं।

इसलिए नियुक्ति निर्णय केवल श्रवण परिणामों के आधार पर नहीं, बल्कि संज्ञानात्मक प्रोफाइल को ध्यान में रखकर किए जाने चाहिए।

अतिरिक्त दिव्यांगता की भूमिका

बहुत से बालकों में श्रवण दुर्बलता के साथ अन्य स्थितियाँ भी उपस्थित होती हैं, जैसे:

- बौद्धिक दिव्यांगता
- ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर
- सेरेब्रल पाल्सी
- दृष्टि दुर्बलता
- अधिगम दिव्यांगता

इन स्थितियों की उपस्थिति शैक्षिक आवश्यकताओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है। उदाहरणार्थ, उत्कृष्ट एडेड निष्पादन वाला ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर से प्रभावित बालक भी सामाजिक संप्रेषण में कठिनाई अनुभव कर सकता है। इसी प्रकार सेरेब्रल पाल्सी वाले बालक को शारीरिक पहुँच एवं सहायक तकनीक की आवश्यकता हो सकती है।

परिवारिक एवं पर्यावरणीय कारक

परिवार शैक्षिक सफलता का एक प्रमुख निर्धारक है। नियमित प्रवर्धन उपयोग, गृह-आधारित भाषा उद्दीपन, विद्यालय के साथ सहयोग तथा पुनर्वास कार्यक्रमों में सहभागिता बालक की प्रगति को प्रभावित करते हैं।

इसके अतिरिक्त निम्न कारकों पर भी विचार किया जाना चाहिए:

- विद्यालय की उपलब्धता
- प्रशिक्षित कार्मिक
- सहायक तकनीक
- परिवहन सुविधा
- आर्थिक संसाधन
- ग्रामीण अथवा शहरी परिवेश

आप समझ चुके होंगे कि किसी शैक्षिक व्यवस्था की उपयुक्तता केवल उसकी सैद्धांतिक गुणवत्ता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह बालक और परिवार की वास्तविक परिस्थितियों में कितनी व्यवहार्य है।

शैक्षिक सिफारिश हेतु समग्र दृष्टिकोण

सर्वोत्तम शैक्षिक व्यवस्था निर्धारित करने के लिए निम्न क्रम उपयोगी माना जाता है:

व्यापक मूल्यांकन → एडेड ऑडियोग्राम → वाक् अभिज्ञान → भाषा मूल्यांकन → संज्ञानात्मक मूल्यांकन → अतिरिक्त दिव्यांगता का विश्लेषण → परिवारिक परामर्श → शैक्षिक व्यवस्था की सिफारिश → निरंतर निगरानी

अंततः कोई भी शैक्षिक व्यवस्था स्थायी नहीं होती। बालक की श्रवण क्षमता, भाषा विकास, शैक्षणिक उपलब्धि तथा जीवन परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ सिफारिशों का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक होता है। इसी कारण आधुनिक शैक्षिक योजना को एक सतत और गतिशील प्रक्रिया माना जाता है, जिसका अंतिम उद्देश्य प्रत्येक बालक को उसकी अधिकतम शैक्षिक, सामाजिक और संप्रेषणात्मक क्षमता तक पहुँचाना है।

3.5 सारांश

इस इकाई में श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं तथा उनके लिए उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था के चयन की प्रक्रिया का विस्तृत अध्ययन किया गया। आपने जाना कि शैक्षिक योजना केवल श्रवण क्षति की मात्रा पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि संप्रेषण, भाषा, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक सहभागिता, भावनात्मक विकास तथा व्यावसायिक तैयारी जैसे अनेक आयामों को ध्यान में रखकर तैयार की जानी चाहिए।

इकाई में श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की संप्रेषणात्मक, शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा विकासात्मक आवश्यकताओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

इसके साथ ही विशेष विद्यालय, संसाधन कक्ष, आंशिक एकीकरण, समावेशी शिक्षा, गृह-आधारित शिक्षा तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा जैसे विभिन्न शैक्षिक विकल्पों की विशेषताओं एवं सीमाओं की चर्चा की गई।

आप परिचित हो गए होंगे कि शैक्षिक नियुक्ति के निर्णय न्यूनतम प्रतिबंधात्मक परिवेश, वैयक्तिकृत शिक्षा, क्रियात्मक संप्रेषण तथा परिवार-केंद्रित योजना जैसे सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होने चाहिए। शैक्षिक व्यवस्था की सिफारिश करते समय एडेड निष्पादन, वाक् अभिज्ञान, भाषा विकास, संज्ञानात्मक क्षमता, अतिरिक्त दिव्यांगता, परिवारिक सहयोग तथा उपलब्ध सेवाओं का समग्र मूल्यांकन आवश्यक है।

इकाई में यह भी स्पष्ट किया गया कि एडेड ऑडियोग्राम बालक की श्रवण पहुँच की जानकारी प्रदान करता है, जबकि वाक् अभिज्ञान परीक्षण वास्तविक जीवन में भाषा समझने की क्षमता का संकेत देता है। इन दोनों निष्कर्षों का संयुक्त विश्लेषण शैक्षिक निर्णयों को अधिक सटीक बनाता है। अंततः शैक्षिक नियुक्ति एक गतिशील प्रक्रिया है जिसकी समय-समय पर समीक्षा तथा संशोधन आवश्यक होते हैं ताकि बालक की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप सर्वोत्तम शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराए जा सकें।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

शब्द	अर्थ
शैक्षिक व्यवस्था	बालक की आवश्यकताओं के अनुसार चयनित शैक्षिक परिवेश
शैक्षिक नियुक्ति	उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था के चयन की प्रक्रिया

शब्द	अर्थ
समावेशी शिक्षा	सामान्य विद्यालय में आवश्यक सहायता सहित शिक्षा
विशेष विद्यालय	दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु विशेष रूप से स्थापित विद्यालय
संसाधन कक्ष	अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता प्रदान करने वाला विशेष कक्ष
आंशिक एकीकरण	नियमित एवं विशेष शिक्षा का संयुक्त मॉडल
न्यूनतम प्रतिबंधात्मक परिवेश	अधिकतम सहभागिता प्रदान करने वाला उपयुक्त परिवेश
वैयक्तिकृत शिक्षा योजना (IEP)	बालक की आवश्यकताओं पर आधारित शैक्षिक योजना
एडेड ऑडियोग्राम	प्रवर्धन उपकरण के साथ प्राप्त श्रवण मापन
एडेड निष्पादन	प्रवर्धन के उपयोग के बाद की कार्यात्मक श्रवण क्षमता
वाक् अभिज्ञान	बोली गई भाषा को पहचानने और समझने की क्षमता
श्रवण पहुँच	श्रवण सूचना तक वास्तविक पहुँच

शब्द	अर्थ
प्रवर्धन	ध्वनि को बढ़ाने की प्रक्रिया
श्रवण यंत्र	श्रव्यता बढ़ाने वाला इलेक्ट्रॉनिक उपकरण
कॉक्लियर इम्प्लांट	आंतरिक कान को विद्युत उद्दीपन देने वाला उपकरण
FM प्रणाली	शोर में वाक् समझ बढ़ाने वाली तकनीक
क्रियात्मक संप्रेषण	दैनिक जीवन में प्रयुक्त प्रभावी संप्रेषण
टेली-शिक्षा	दूरसंचार तकनीक द्वारा शिक्षा प्रदान करना
सार्वभौमिक अधिगम अभिकल्पना	सभी शिक्षार्थियों के लिए सुलभ शिक्षण रूपरेखा
बहु-विषयक टीम	विभिन्न विशेषज्ञों का सहयोगात्मक समूह

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की प्रमुख आवश्यकताओं में संप्रेषण, शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यावसायिक आवश्यकताएँ शामिल हैं।
2. शैक्षिक व्यवस्था का चयन बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है।

3. समावेशी शिक्षा सामान्य विद्यालय में आवश्यक सहायता सहित शिक्षा प्रदान करती है।
4. विशेष विद्यालय विशिष्ट सेवाएँ एवं विशेषज्ञ सहायता उपलब्ध कराते हैं।
5. एडेड ऑडियोग्राम प्रवर्धन के बाद प्राप्त श्रवण पहुँच को प्रदर्शित करता है।
6. वाक् अभिज्ञान परीक्षण भाषा समझने की क्षमता का आकलन करता है।
7. उच्च वाक् अभिज्ञान स्कोर सामान्यतः बेहतर शैक्षिक सहभागिता का संकेत देते हैं।
8. शैक्षिक नियुक्ति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में भाषा विकास, एडेड निष्पादन, संज्ञानात्मक क्षमता तथा परिवारिक सहयोग शामिल हैं।
9. बहु-विषयक टीम सटीक एवं प्रमाण-आधारित निर्णय लेने में सहायता करती है।
10. शैक्षिक नियुक्ति की नियमित समीक्षा बालक की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक है।

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Flexer, C. (2019). *The Impact of Hearing Loss on Listening, Learning, and Literacy*. Plural Publishing.
2. Madell, J. R., & Flexer, C. (2019). *Pediatric Audiology*. Thieme.

3. Stach, B. A. (2019). *Clinical Audiology*. Cengage Learning.

4. UNESCO (2020). *Inclusion and Education Report*.

3.9 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

अध्येताओं को इस इकाई के गहन अध्ययन हेतु श्रव्यविज्ञान, वाक् एवं भाषा विकास, समावेशी शिक्षा तथा विशेष शिक्षा से संबंधित नवीन पुस्तकों, शोध लेखों एवं व्यावसायिक दिशानिर्देशों का अध्ययन करना चाहिए। डिजिटल संसाधनों में ASHA, UNESCO, WHO तथा Rehabilitation Council of India द्वारा प्रकाशित सामग्री उपयोगी है। श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट, FM प्रणाली तथा समावेशी कक्षा प्रबंधन से संबंधित वीडियो एवं वेबिनार भी सहायक सिद्ध हो सकते हैं। आपने अनुभव किया होगा कि सिद्धान्तों के साथ वास्तविक केस अध्ययनों का अध्ययन शैक्षिक निर्णय-निर्माण की समझ को और अधिक सुदृढ़ बनाता है।

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।
2. विभिन्न शैक्षिक व्यवस्था विकल्पों की तुलना करते हुए उनके लाभ एवं सीमाएँ स्पष्ट कीजिए।
3. शैक्षिक नियुक्ति के प्रमुख सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।
4. एडेड निष्पादन एवं वाक् अभिज्ञान की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

5. शैक्षिक व्यवस्था की सिफारिश को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा कीजिए।

6. समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु आवश्यक शर्तों का वर्णन कीजिए।

7. श्रवण दुर्बलता वाले बालकों की शिक्षा में भविष्य की तकनीकी प्रवृत्तियों की समीक्षा कीजिए।

इकाई 4

वाक् ध्वनिकी का परिचय तथा ध्वनिक संकेतों के आधार पर वाक् ध्वनियों का वर्गीकरण

4.1 उद्देश्य

4.2 वाक् ध्वनिकी: अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व

4.3 वाक्यंत्र एवं वाक् उत्पादन की प्रक्रिया

4.3.1 स्रोत–परिशोधक सिद्धांत (Source–Filter Theory)

4.3.2 अनुनाद (Resonance)

4.4 वाक् ध्वनि के भौतिक गुण (Acoustic Properties of Speech)

4.4.1 आवृत्ति (Frequency)

4.4.2 तीव्रता (Intensity)

4.4.3 अवधि (Duration)

4.4.4 मूल आवृत्ति (Fundamental Frequency: F0)

4.4.5 स्पेक्ट्रोग्राम एवं ध्वनिक विश्लेषण

4.5 ध्वनिक संकेत (Acoustic Cues): अवधारणा, प्रकार एवं वाक् प्रत्यक्षण में भूमिका

4.5.1 ध्वनिक संकेतों की अवधारणा

4.5.2 प्रमुख एवं गौण ध्वनिक संकेत

4.5.3 प्रमुख ध्वनिक संकेत

4.5.4 गौण ध्वनिक संकेत

4.5.5 ध्वनिक संकेतों की अतिरेकता (Redundancy of Acoustic Cues)

4.6 ध्वनिक संकेतों के आधार पर वाक् ध्वनियों का वर्गीकरण

4.7 वाक् प्रत्यक्षण (Speech Perception), ध्वनिक संकेत भारण (Acoustic Cue Weighting) तथा बच्चों में ध्वनिक संकेतों का अधिगम

4.7.1 वाक् प्रत्यक्षण: अर्थ एवं अवधारणा

4.7.2 वाक् प्रत्यक्षण की विशेषताएँ

4.8 सामान्य बच्चों में वाक् एवं भाषा विकास

4.9 सामान्य एवं श्रवण बाधित बच्चों में वाक् एवं भाषा विकास का तुलनात्मक अध्ययन

4.10 सारांश

वाक् ध्वनिकी का परिचय तथा ध्वनिक संकेतों के आधार पर वाक् ध्वनियों का वर्गीकरण; सामान्य एवं श्रवण बाधित बच्चों में वाक् एवं भाषा विकास का तुलनात्मक अध्ययन

4.0 प्रस्तावना

मानव भाषा एक अद्वितीय संप्रेषण प्रणाली है जो ध्वनियों के माध्यम से विचारों, भावनाओं तथा अनुभवों के आदान-प्रदान को संभव बनाती है। भाषा के मौखिक स्वरूप को वाक् कहा जाता है। वाक् ध्वनियाँ केवल भाषाई इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि वे विशिष्ट भौतिक, जैविक एवं ध्वनिक गुणों से युक्त होती हैं। वाक् ध्वनिकी का अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि वाक् ध्वनियाँ कैसे उत्पन्न होती हैं, उनका संचरण किस प्रकार होता है तथा श्रोता उन्हें कैसे ग्रहण करता है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि श्रवण बाधिता सीधे वाक् एवं भाषा विकास को प्रभावित करती है।

4.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी वाक् ध्वनिकी की अवधारणा, क्षेत्र तथा महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे। वे वाक् उत्पादन की शारीरिक एवं भौतिक प्रक्रियाओं का वर्णन कर सकेंगे तथा वाक् ध्वनि के प्रमुख भौतिक गुणों जैसे आवृत्ति, तीव्रता, अवधि एवं अनुनाद की व्याख्या कर सकेंगे।

4.2 वाक् ध्वनिकी: अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व

ध्वनिकी भौतिक विज्ञान की वह शाखा है जिसमें ध्वनि की उत्पत्ति, संचरण एवं ग्रहण का अध्ययन किया जाता है। जब यह अध्ययन मानव वाक् ध्वनियों पर केंद्रित होता है, तब इसे वाक् ध्वनिकी कहा जाता है। वाक् ध्वनिकी

भाषाविज्ञान, श्रवण विज्ञान, वाक् विज्ञान तथा विशेष शिक्षा का आधारभूत क्षेत्र है। इसके माध्यम से वाक् ध्वनियों के भौतिक गुणों, स्पेक्ट्रल संरचना तथा वाक् प्रत्यक्षण को समझा जा सकता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

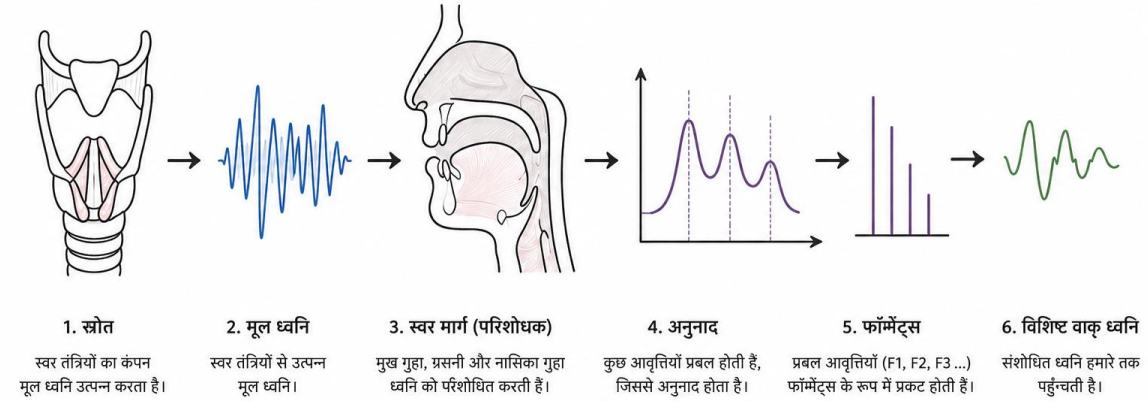
- वाक् ध्वनिकी (Speech Acoustics) का अध्ययन केवल भाषाविज्ञान तक सीमित है। (सही या गलत)
- रिक्त स्थान भरिए: ध्वनि की उत्पत्ति, संचरण एवं ग्रहण के अध्ययन को _____ कहा जाता है।
- विशेष शिक्षा में वाक् ध्वनिकी का एक प्रमुख महत्व लिखिए।

4.3 वाक्यंत्र एवं वाक् उत्पादन की प्रक्रिया

मानव वाक् उत्पादन एक जटिल जैव-यांत्रिक प्रक्रिया है। फेफड़ों से निकलने वाली वायु ऊर्जा स्रोत का कार्य करती है। यह वायु स्वरयंत्र में स्थित स्वर तंत्रियों से होकर गुजरती है। स्वर तंत्रियों के कंपन से घोष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, जबकि बिना कंपन के अघोष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। इसके पश्चात् मुखगुहा, नासिका गुहा तथा अन्य उच्चारण अवयव ध्वनि को संशोधित कर विभिन्न स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों का निर्माण करते हैं।

वाक् उत्पादन में सक्रिय (Active) तथा निष्क्रिय (Passive) उच्चारण अवयव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीभ, निचला ओष्ठ तथा कोमल तालु सक्रिय अवयव हैं, जबकि ऊपरी दाँत, कठोर तालु तथा दंतमूल क्षेत्र –निष्क्रिय अवयव माने जाते हैं। विभिन्न अवयवों की पारस्परिक क्रिया से विविध वाक् ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं।

आरेख 4.1 : वाक् उत्पादन की प्रक्रिया



4.3.1 स्रोत–परिशोधक सिद्धांत (Source–Filter Theory)

फैंट (Fant) के अनुसार आधुनिक वाक् ध्वनिकी का एक प्रमुख सिद्धांत स्रोत–परिशोधक सिद्धांत है। इसके अनुसार वाक् उत्पादन दो प्रमुख घटकों पर आधारित है—स्रोत (Source) तथा परिशोधक (Filter)। स्वर तंत्रियों का कंपन मूल ध्वनि या स्रोत उत्पन्न करता है। इसके बाद यह ध्वनि स्वर मार्ग (Vocal Tract) से होकर गुजरती है जहाँ मुखगुहा, ग्रसनी तथा नासिका गुहा ध्वनि को संशोधित करती हैं।

आरेख 4.2 : स्रोत–परिशोधक सिद्धांत

स्रोत (स्वर तंत्रियाँ) → मूल ध्वनि → स्वर मार्ग → अनुनाद → फॉर्मेंट्स → विशिष्ट वाक् ध्वनि

यही प्रक्रिया विभिन्न स्वरों एवं व्यंजनों की विशिष्ट ध्वनिक संरचना का आधार बनती है।

4.3.2 अनुनाद (Resonance)

जब ध्वनि मुखगुहा, नासिका गुहा अथवा ग्रसनी से होकर गुजरती है तब कुछ आवृत्तियाँ अधिक प्रबल हो जाती हैं। इस प्रक्रिया को अनुनाद कहा जाता है। अनुनाद के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति की आवाज़ का गुणात्मक स्वरूप भिन्न होता है। स्वर ध्वनियों के निर्माण में अनुनाद की केंद्रीय भूमिका होती है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- वाक् उत्पादन के लिए प्रमुख ऊर्जा स्रोत का चयन कीजिए: (क) जीभ (ख) फेफड़े (ग) दाँत (घ) नासिका।
- स्वर तंत्रियों (Vocal Folds) के कंपन से घोष ध्वनियाँ (Voiced Sounds) उत्पन्न होती हैं। (सही या गलत)
- किसी एक सक्रिय उच्चारण अवयव (Active Articulator) का नाम लिखिए।

4.4 वाक् ध्वनि के भौतिक गुण (Acoustic Properties of Speech)

वाक् ध्वनियाँ मूलतः ध्वनि तरंगें हैं। इन तरंगों का विश्लेषण कुछ प्रमुख भौतिक गुणों के आधार पर किया जाता है। इनमें आवृत्ति, तीव्रता, अवधि, मूल आवृत्ति तथा अनुनाद प्रमुख हैं।

4.4.1 आवृत्ति (Frequency)

एक सेकंड में होने वाले कंपन की संख्या को आवृत्ति कहा जाता है। इसे हर्ट्ज़ (Hz) में मापा जाता है। अधिक आवृत्ति वाली ध्वनियाँ तीखी तथा कम आवृत्ति वाली ध्वनियाँ गंभीर प्रतीत होती हैं।

उदाहरण के लिए /स/ और /श/ जैसी घर्षी ध्वनियाँ उच्च आवृत्ति क्षेत्र में ऊर्जा प्रदर्शित करती हैं।

4.4.2 तीव्रता (Intensity)

ध्वनि की शक्ति या प्रबलता को तीव्रता कहा जाता है। इसे डेसीबल (dB) में मापा जाता है। सामान्य वार्तालाप लगभग 50–60 dB के आसपास होता है। तीव्रता में परिवर्तन भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा बलाघात को प्रभावित कर सकता है।

4.4.3 अवधि (Duration)

किसी ध्वनि के उच्चारण में लगने वाले समय को अवधि कहा जाता है। अवधि मिलीसेकंड में मापी जाती है। स्वर ध्वनियाँ सामान्यतः व्यंजनों की तुलना में अधिक अवधि वाली होती हैं। कई भाषाओं में अवधि अर्थभेदक भूमिका भी निभाती है।

4.4.4 मूल आवृत्ति (Fundamental Frequency: F0)

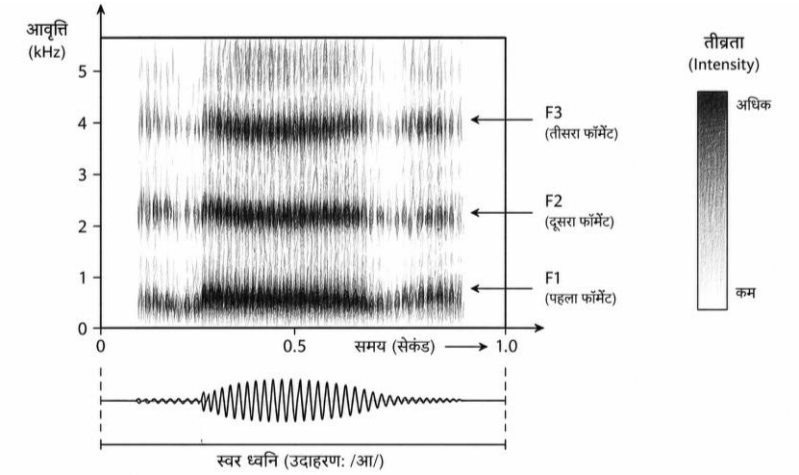
स्वर तंत्रियों के कंपन से उत्पन्न होने वाली न्यूनतम आवृत्ति को मूल आवृत्ति या F0 कहा जाता है। यही पिच (Pitch) का आधार है। प्रश्नवाचक वाक्य, आश्चर्य तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति में F0 के परिवर्तन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4.4.5 स्पेक्ट्रोग्राम एवं ध्वनिक विश्लेषण

केंट एवं रीड (Kent & Read) के अनुसार स्पेक्ट्रोग्राम ध्वनि का दृश्य निरूपण है जिसमें समय, आवृत्ति एवं तीव्रता को एक साथ प्रदर्शित किया जाता है। वाक्-भाषा रोग विशेषज्ञ एवं श्रवण वैज्ञानिक इसका उपयोग वाक् विश्लेषण तथा अनुसंधान में करते हैं। ध्वनिक विश्लेषण के प्रमुख

उपकरणों में स्पेक्ट्रोग्राफ, ऑसिलोग्राफ तथा आधुनिक कंप्यूटर आधारित विश्लेषण सॉफ्टवेयर सम्मिलित हैं।

आरेख 4.3: स्पेक्ट्रोग्राम



स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- तीव्रता (Intensity) को डेसीबल (dB) में मापा जाता है। (सही या गलत)
- रिक्त स्थान भरिए: मूल आवृत्ति (Fundamental Frequency) को _____ भी कहा जाता है।
- Frequency तथा Intensity में कोई एक अंतर लिखिए।

4.5 ध्वनिक संकेत (Acoustic Cues): अवधारणा, प्रकार एवं वाक् प्रत्यक्षण में भूमिका

पिछले भागों में आपने वाक् उत्पादन की प्रक्रिया, वाक्यंत्र तथा वाक् ध्वनियों के भौतिक गुणों का अध्ययन किया। अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि है—

जब कोई व्यक्ति बोलता है, तब श्रोता यह कैसे पहचानता है कि कौन-सी ध्वनि बोली गई है? उदाहरण के लिए, श्रोता /प/ और /ब/ में अंतर कैसे करता है? वह /इ/ और /ऊ/ को अलग-अलग कैसे पहचानता है? इसी प्रश्न का उत्तर ध्वनिक संकेतों (Acoustic Cues) की अवधारणा में निहित है।

वास्तव में वाक् ध्वनियाँ अनेक प्रकार की ध्वनिक सूचनाएँ अपने भीतर समाहित करती हैं। श्रोता इन सूचनाओं का विश्लेषण करके ध्वनियों को पहचानता है। इन सूचनाओं को ध्वनिक संकेत कहा जाता है। आधुनिक वाक् प्रत्यक्षण (Speech Perception) के सिद्धांतों के अनुसार वाक् ध्वनियों की पहचान किसी एक संकेत के आधार पर नहीं होती, बल्कि अनेक संकेत मिलकर ध्वनि की पहचान सुनिश्चित करते हैं। इनमें कुछ संकेत अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं जबकि कुछ संकेत सहायक भूमिका निभाते हैं।

इस प्रकार ध्वनिक संकेत वाक् प्रत्यक्षण और भाषा अधिगम के आधारभूत घटक हैं। किसी बच्चे का वाक् विकास केवल ध्वनि उत्पादन का विकास नहीं है, बल्कि यह उन ध्वनिक संकेतों को पहचानने, उनका विश्लेषण करने तथा उन्हें अर्थपूर्ण भाषाई इकाइयों से जोड़ने की प्रक्रिया भी है।

4.5.1 ध्वनिक संकेतों की अवधारणा

> ध्वनिक संकेत (Acoustic Cue) वह श्रव्य विशेषता है जिसके आधार पर श्रोता किसी वाक् ध्वनि की पहचान करता है। दूसरे शब्दों में, वाक् ध्वनि के भीतर उपस्थित वह ध्वनिक गुण जो ध्वनि को दूसरी ध्वनि से पृथक करता है, ध्वनिक संकेत कहलाता है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति "पल" और "बल" शब्द बोलता है, तो दोनों शब्दों के बीच केवल प्रथम ध्वनि का अंतर है। फिर भी श्रोता उन्हें आसानी से अलग-अलग पहचान लेता है। इसका कारण यह है कि दोनों ध्वनियों में उपस्थित ध्वनिक संकेत अलग होते हैं।

ध्वनिक संकेतों का अध्ययन वाक् ध्वनिकी, भाषाविज्ञान, श्रवण विज्ञान तथा वाक्-भाषा रोग विज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। विशेष रूप से श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में इन संकेतों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यदि कोई संकेत पर्याप्त रूप से उपलब्ध न हो, तो संबंधित ध्वनि का अधिगम प्रभावित हो सकता है।

आरेख 4.4 : ध्वनिक संकेतों की भूमिका

उच्चारण अंगों की गति

↓

ध्वनिक संकेतों का निर्माण

↓

श्रवण प्रणाली द्वारा ग्रहण

↓

मस्तिष्क में विश्लेषण

↓

वाक् ध्वनि की पहचान

4.5.2 प्रमुख एवं गौण ध्वनिक संकेत

सभी ध्वनिक संकेत समान महत्व नहीं रखते। कुछ संकेत ध्वनि पहचान में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, जबकि कुछ संकेत केवल सहायक भूमिका निभाते हैं।

इस आधार पर ध्वनिक संकेतों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—

(क) प्रमुख ध्वनिक संकेत (Major Acoustic Cues)

ये वे संकेत हैं जिनके बिना ध्वनि की पहचान कठिन हो जाती है। किसी विशेष ध्वनि वर्ग की पहचान मुख्यतः इन्हीं संकेतों पर निर्भर करती है।

उदाहरण के लिए:

- स्वर ध्वनियों के लिए फॉर्मेंट्स
- घोष-अघोष विभेदन के लिए VOT
- घर्षी ध्वनियों के लिए स्पेक्ट्रल ऊर्जा वितरण

(ख) गौण ध्वनिक संकेत (Minor Acoustic Cues)

ये संकेत प्रमुख संकेतों का समर्थन करते हैं तथा ध्वनि पहचान को अधिक सटीक बनाते हैं।

उदाहरण:

- अवधि (Duration)
- तीव्रता (Intensity)

- मूल आवृत्ति (F0)
- स्वर अवधि (Vowel Duration)

वास्तविक जीवन में श्रोता दोनों प्रकार के संकेतों का संयुक्त रूप से उपयोग करता है।

4.5.3 प्रमुख ध्वनिक संकेत (Major Acoustic Cues)

(क) फॉर्मेंट (Formant)

लेडेफोगेड एवं जॉनसन के अनुसार स्वर ध्वनियों की पहचान में फॉर्मेंट्स की केंद्रीय भूमिका होती है। जब स्वर तंत्रियों द्वारा उत्पन्न ध्वनि मुखगुहा एवं ग्रसनी से होकर गुजरती है, तब कुछ विशिष्ट आवृत्तियाँ अधिक प्रबल हो जाती हैं। इन ऊर्जा-प्रधान आवृत्ति क्षेत्रों को फॉर्मेंट कहा जाता है।

प्रत्येक स्वर ध्वनि का अपना विशिष्ट फॉर्मेंट पैटर्न होता है। यही कारण है कि हम "अ", "इ", "उ", "ए" तथा "ओ" जैसी ध्वनियों को अलग-अलग पहचान पाते हैं।

फॉर्मेंट्स को सामान्यतः F1, F2, F3 आदि के रूप में व्यक्त किया जाता है।

(ख) प्रथम फॉर्मेंट (First Formant: F1)

F1 मुख्यतः जिह्वा की ऊँचाई (Tongue Height) से संबंधित होता है।

जब जिह्वा ऊपर की ओर स्थित होती है, तब F1 का मान अपेक्षाकृत कम होता है। इसके विपरीत, जिह्वा नीचे की ओर होने पर F1 का मान बढ़ जाता है।

उदाहरण के लिए:

- "ई" में F1 अपेक्षाकृत कम होता है।
- "आ" में F1 अपेक्षाकृत अधिक होता है।

इस प्रकार F1 स्वर की ऊर्ध्वाधर स्थिति का संकेत प्रदान करता है।

(ग) द्वितीय फॉर्मेंट (Second Formant: F2)

F2 मुख्यतः जिह्वा की अग्रता अथवा पश्चता (Frontness–Backness) को दर्शाता है। जब जिह्वा मुखगुहा के अग्र भाग की ओर होती है, तब F2 का मान अधिक होता है। जब जिह्वा पीछे की ओर होती है, तब F2 का मान कम हो जाता है।

उदाहरण:

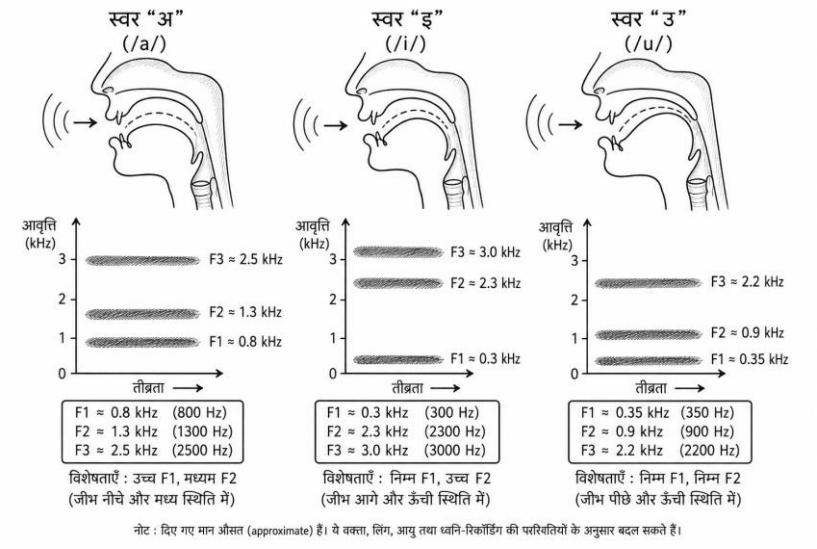
- "इ" जैसे अग्र स्वर में F2 अधिक होता है।
- "ऊ" जैसे पश्च स्वर में F2 कम होता है।

अतः F2 स्वर वर्गीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण संकेत है।

(घ) तृतीय फॉर्मेंट (Third Formant: F3)

F3 स्वर गुणवत्ता तथा कुछ विशिष्ट व्यंजन ध्वनियों की पहचान में सहायक भूमिका निभाता है। विशेष रूप से अंग्रेज़ी जैसी भाषाओं में /r/ ध्वनि की पहचान में F3 का महत्व पाया गया है। यद्यपि हिंदी में इसकी भूमिका अपेक्षाकृत सीमित है, फिर भी ध्वनिक विश्लेषण में F3 का अध्ययन महत्वपूर्ण माना जाता है।

आरेख 4.5: फॉर्मेंट



(ङ) वॉइस ऑनसेट टाइम (Voice Onset Time: VOT)

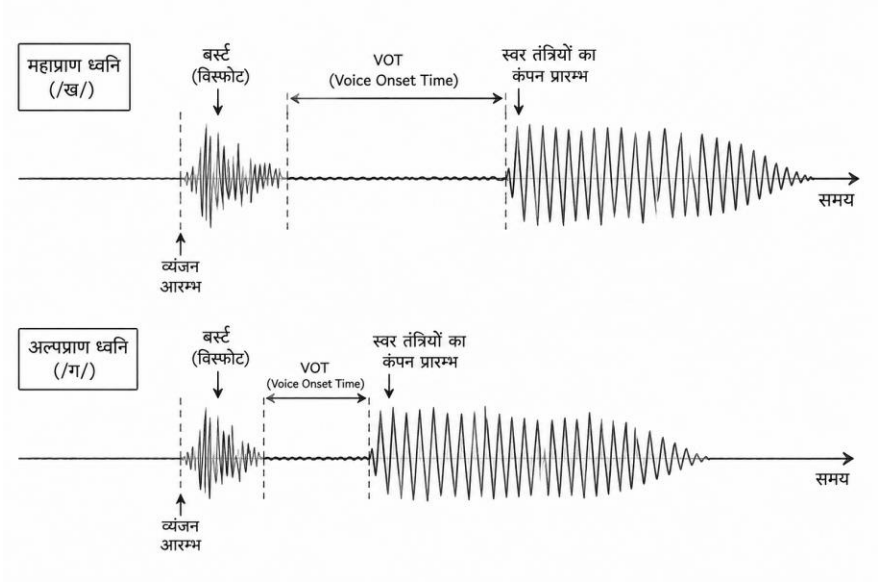
वॉइस ऑनसेट टाइम किसी अवरोधी व्यंजन के उच्चारण और स्वर तंत्रियों के कंपन प्रारंभ होने के बीच के समयांतराल को दर्शाता है। लिस्कर एवं अब्रामसन (Lisker & Abramson) के अनुसार VOT घोष एवं अघोष ध्वनियों के विभेदन का प्रमुख ध्वनिक संकेत है।

उदाहरण:

अघोष	घोष
प	ब
त	द
क	ग

यद्यपि इन ध्वनियों का उच्चारण स्थान समान हो सकता है, किंतु VOT के अंतर के कारण श्रोता उन्हें अलग-अलग पहचानता है।

आरेख 4.6: वॉइस ऑनसेट टाइम एवं बर्स्ट



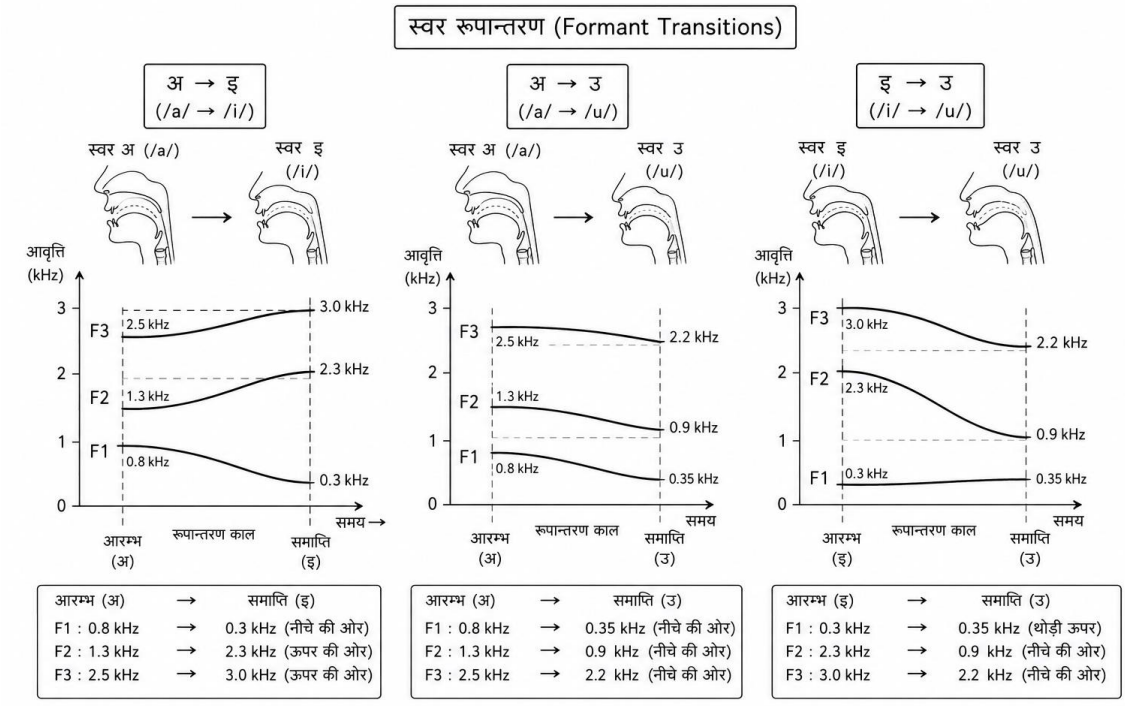
(च) फॉर्मेंट परिवर्तन (Formant Transition)

जब किसी व्यंजन के बाद स्वर आता है, तब फॉर्मेंट्स स्थिर नहीं रहते बल्कि परिवर्तनशील होते हैं। इन परिवर्तनों को फॉर्मेंट परिवर्तन कहा जाता है।

उदाहरण: बा , दा , गा

इन तीनों शब्दांशों में स्वर समान है, किंतु प्रारंभिक फॉर्मेंट परिवर्तन अलग होते हैं। श्रोता इन्हीं संक्रमणों के आधार पर व्यंजन के उच्चारण स्थान का अनुमान लगाता है।

आरेख 4.7: फॉर्मेंट परिवर्तन



नोट : ऊर्ध्वाधर अक्ष आवृत्ति (kHz) को दर्शाता है और क्षैतिज अक्ष समय को। ठोस रेखाएँ स्वर रूपान्तरण के दौरान F1, F2, F3 के गतिपथ (trajectory) को दिखाती हैं।

(छ) स्पेक्ट्रल ऊर्जा वितरण (Spectral Energy Distribution)

किसी ध्वनि की ऊर्जा विभिन्न आवृत्तियों में किस प्रकार वितरित है, इसे स्पेक्ट्रल ऊर्जा वितरण कहा जाता है।

यह विशेष रूप से घर्षी ध्वनियों (Fricatives) की पहचान में महत्वपूर्ण है।

उदाहरण: /स/ , /श/ , /फ/

इन ध्वनियों की ऊर्जा विभिन्न आवृत्ति क्षेत्रों में केंद्रित होती है। यही अंतर उनके विभेदन का आधार बनता है।

उच्च आवृत्ति श्रवण हानि वाले बच्चों को इन ध्वनियों के ग्रहण में कठिनाई हो सकती है क्योंकि इनके प्रमुख संकेत उच्च आवृत्ति क्षेत्र में स्थित होते हैं।

(ज) बर्स्ट (Burst)

अवरोधी व्यंजनों के उच्चारण में जब अवरुद्ध वायु अचानक मुक्त होती है, तब एक अल्पकालिक ऊर्जा विस्फोट उत्पन्न होता है। इसे बर्स्ट कहा जाता है।

बर्स्ट ध्वनि की प्रकृति एवं उच्चारण स्थान के बारे में महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करता है।

(झ) नासिक अनुनाद संकेत (Nasal Murmur)

नासिक्य ध्वनियों जैसे /म/, /न/ और /ङ/ में ध्वनि का एक भाग नासिका गुहा से होकर गुजरता है। इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाला विशिष्ट

निम्न आवृत्ति ऊर्जा पैटर्न नासिक अनुनाद संकेत कहलाता है। यही संकेत नासिक्य ध्वनियों को अन्य ध्वनियों से पृथक करता है।

4.5.4 गौण ध्वनिक संकेत (Minor Acoustic Cues)

यद्यपि प्रमुख संकेत ध्वनि पहचान में मुख्य भूमिका निभाते हैं, तथापि अनेक परिस्थितियों में गौण संकेत भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अवधि (Duration)

किसी ध्वनि के उच्चारण में लगने वाला समय उसकी अवधि कहलाता है। कुछ भाषाओं में अवधि अर्थभेदक भूमिका निभाती है, जबकि अन्य भाषाओं में यह ध्वनि पहचान को अधिक सटीक बनाती है।

तीव्रता (Intensity)

ध्वनि की शक्ति को तीव्रता कहा जाता है। तीव्रता विशेष रूप से बलाघात (Stress) तथा प्रोसोडी (Prosody) की पहचान में सहायक होती है।

मूल आवृत्ति (Fundamental Frequency: F0)

F0 ध्वनि की पिच का निर्धारण करती है। प्रश्न, आश्चर्य, क्रोध तथा प्रसन्नता जैसी भावनात्मक अवस्थाओं की अभिव्यक्ति में F0 का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

स्वर अवधि (Vowel Duration)

स्वर की लंबाई भी ध्वनि पहचान में सहायक संकेत का कार्य कर सकती है। कुछ स्थितियों में घोष एवं अघोष ध्वनियों के विभेदन में स्वर अवधि का उपयोग किया जाता है।

4.5.5 ध्वनिक संकेतों की अतिरेकता (Redundancy of Acoustic Cues)

स्टीवेन्स (2000) के अनुसार वाक् ध्वनि पहचान की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अधिकांश ध्वनियाँ केवल एक संकेत पर निर्भर नहीं करतीं। किसी ध्वनि के बारे में सूचना अनेक संकेतों द्वारा प्रदान की जाती है।

उदाहरण के लिए /ब/ ध्वनि की पहचान में: VOT, F0 , स्वर अवधि , बर्स्ट -सभी कुछ न कुछ योगदान देते हैं। इसी कारण यदि कोई एक संकेत अनुपस्थित भी हो, तो कई बार श्रोता ध्वनि को पहचान सकता है। इस विशेषता को ध्वनिक अतिरेकता (Acoustic Redundancy) कहा जाता है। यह विशेषता मानव संप्रेषण को अधिक प्रामाणिक बनाती है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- ध्वनिक संकेत (Acoustic Cues) वाक् ध्वनियों की पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। (सही या गलत)
- स्वर ध्वनियों की पहचान में सबसे महत्वपूर्ण संकेत का चयन कीजिए: (क) Formant (ख) Burst (ग) Duration (घ) Intensity।

- Voice Onset Time (VOT) का उपयोग किस प्रकार के ध्वनि विभेदन में किया जाता है?

4.6 ध्वनिक संकेतों के आधार पर वाक् ध्वनियों का वर्गीकरण

ध्वनिक संकेतों का अध्ययन केवल सैद्धांतिक महत्व का विषय नहीं है। इनके आधार पर वाक् ध्वनियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण भी किया जाता है। प्रत्येक ध्वनि वर्ग का अपना विशिष्ट ध्वनिक हस्ताक्षर (Acoustic Signature) होता है।

सारणी 4.1 : वाक् ध्वनि वर्ग एवं उनके प्रमुख ध्वनिक संकेत

वाक् ध्वनि वर्ग	प्रमुख ध्वनिक संकेत
स्वर	F1, F2
घोष-अघोष व्यंजन	VOT
घर्षी ध्वनियाँ	स्पेक्ट्रल ऊर्जा वितरण
अवरोधी ध्वनियाँ	बर्स्ट एवं संक्रमण
नासिक्य ध्वनियाँ	नासिक अनुनाद संकेत
बलाघात	F0, अवधि, तीव्रता

स्वर ध्वनियाँ

स्वर ध्वनियों की पहचान मुख्यतः फॉर्मेंट संरचना पर आधारित होती है। प्रत्येक स्वर का अपना विशिष्ट F1 तथा F2 पैटर्न होता है। इसलिए स्वर वर्गीकरण में फॉर्मेंट्स की भूमिका केंद्रीय होती है।

अवरोधी ध्वनियाँ

अवरोधी ध्वनियों की पहचान मुख्यतः VOT, बर्स्ट तथा फॉर्मेंट परिवर्तन के आधार पर की जाती है।

घर्षी ध्वनियाँ

इन ध्वनियों का वर्गीकरण स्पेक्ट्रल ऊर्जा वितरण के आधार पर किया जाता है।

नासिक्य ध्वनियाँ

इनकी पहचान नासिक अनुनाद संकेतों तथा विशिष्ट स्पेक्ट्रल पैटर्न के आधार पर होती है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- घर्षी ध्वनियों (Fricatives) का वर्गीकरण मुख्यतः Spectral Energy Distribution पर आधारित होता है। (सही या गलत)
- रिक्त स्थान भरिए: स्वर ध्वनियों के वर्गीकरण में _____ तथा _____ प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- Nasal Sounds की पहचान के लिए प्रयुक्त एक प्रमुख ध्वनिक संकेत लिखिए।

4.7 वाक् प्रत्यक्षण (Speech Perception), ध्वनिक संकेत भारण (Acoustic Cue Weighting) तथा बच्चों में ध्वनिक संकेतों का अधिगम

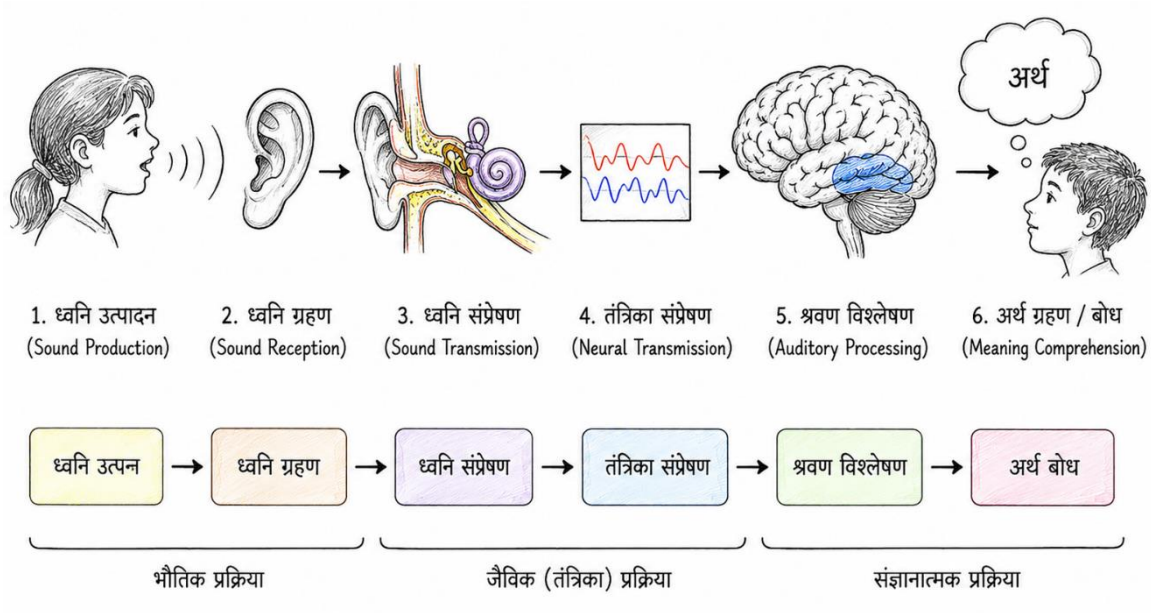
पिछले भागों में आपने यह अध्ययन किया कि वाक् ध्वनियाँ विभिन्न ध्वनिक संकेतों से निर्मित होती हैं तथा इन संकेतों के आधार पर वाक् ध्वनियों का वर्गीकरण किया जा सकता है। अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि श्रोता इन ध्वनिक संकेतों का उपयोग कैसे करता है? कोई व्यक्ति हजारों प्रकार की ध्वनियों में से भाषण ध्वनियों को कैसे पहचान लेता है? एक छोटा बच्चा अपनी मातृभाषा की ध्वनियों को सुनकर उन्हें सीखता कैसे है? इन प्रश्नों के उत्तर वाक् प्रत्यक्षण (Speech Perception) तथा ध्वनिक संकेत भारण (Acoustic Cue Weighting) की अवधारणाओं में निहित हैं।

लिबरमैन एवं सहकर्मियों के अनुसार वाक् प्रत्यक्षण की एक महत्वपूर्ण विशेषता श्रेणीगत प्रत्यक्षण है। यदि कोई व्यक्ति ध्वनियों को सही प्रकार ग्रहण एवं व्याख्यायित नहीं कर पाता, तो भाषा अधिगम और प्रभावी संप्रेषण संभव नहीं हो सकता। इसलिए वाक् प्रत्यक्षण का अध्ययन भाषाविज्ञान, श्रवण विज्ञान, मनोभाषाविज्ञान, वाक्-भाषा रोग विज्ञान तथा विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

4.7.1 वाक् प्रत्यक्षण (Speech Perception): अर्थ एवं अवधारणा

वाक् प्रत्यक्षण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से श्रोता वाक् ध्वनियों को सुनता, उनका विश्लेषण करता तथा उन्हें अर्थपूर्ण भाषाई इकाइयों में परिवर्तित करता है।

जब कोई व्यक्ति "कमल" शब्द बोलता है, तब श्रोता केवल ध्वनि तरंगें नहीं सुनता। उसका श्रवण तंत्र इन ध्वनियों का विश्लेषण करता है, मस्तिष्क उनमें उपस्थित ध्वनिक संकेतों की पहचान करता है और अंततः श्रोता उस शब्द का अर्थ समझता है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया वाक् प्रत्यक्षण कहलाती है। वाक् प्रत्यक्षण एक सक्रिय (Active) प्रक्रिया है। इसमें श्रोता केवल ध्वनि ग्रहण नहीं करता बल्कि प्राप्त ध्वनिक सूचना का विश्लेषण, तुलना तथा व्याख्या भी करता है। इसी कारण श्रोता शोरयुक्त वातावरण में भी परिचित व्यक्तियों की आवाज़ों की पहचान कर सकता है।



आरेख 4.8 : वाक् प्रत्यक्षण की प्रक्रिया

4.7.2 वाक् प्रत्यक्षण की विशेषताएँ

वाक् प्रत्यक्षण अन्य प्रकार की ध्वनि पहचान से कई दृष्टियों से भिन्न है।

सबसे पहले, वाक् ध्वनियाँ अत्यंत परिवर्तनशील होती हैं। एक ही शब्द को विभिन्न व्यक्ति अलग-अलग ढंग से बोल सकते हैं। आयु, लिंग, क्षेत्रीय उच्चारण तथा भावनात्मक स्थिति के कारण ध्वनि की गुणवत्ता में परिवर्तन हो सकता है। इसके बावजूद श्रोता शब्द की पहचान कर लेता है। दूसरे, वाक् प्रत्यक्षण अत्यंत तीव्र प्रक्रिया है। सामान्य वार्तालाप में व्यक्ति प्रति सेकंड अनेक ध्वनियाँ सुनता और समझता है। मस्तिष्क इन ध्वनियों का विश्लेषण अत्यंत कम समय में कर लेता है। तीसरे, वाक् प्रत्यक्षण भाषा-विशिष्ट होता है। प्रत्येक भाषा कुछ विशिष्ट ध्वनिक संकेतों पर अधिक निर्भर करती है। इसलिए एक भाषा का वक्ता दूसरी भाषा की कुछ ध्वनियों को पहचानने में कठिनाई अनुभव कर सकता है।

4.7.3 वाक् प्रत्यक्षण में ध्वनिक संकेतों की भूमिका

वाक् प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में ध्वनिक संकेतों की मुख्य भूमिका होती है। जब कोई ध्वनि कान तक पहुँचती है, तब श्रोता उसके भीतर उपस्थित संकेतों का विश्लेषण करता है।

उदाहरण के लिए, यदि श्रोता /प/ और /ब/ ध्वनियों के बीच अंतर स्थापित करता है, तो वह मुख्यतः VOT (Voice Onset Time) का उपयोग कर रहा होता है। इसी प्रकार यदि वह /इ/ और /ऊ/ में अंतर करता है, तो वह मुख्यतः फॉर्मेंट्स का उपयोग कर रहा होता है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि श्रोता प्रत्येक संकेत का समान रूप से उपयोग नहीं करता। कुछ संकेत अधिक महत्वपूर्ण होते हैं और कुछ कम। यही तथ्य ध्वनिक संकेत भारण की अवधारणा का आधार बनता है।

4.7.4 ध्वनिक संकेत भारण (Acoustic Cue Weighting)

होल्ट एवं लोट्टो (Holt & Lotto) के अनुसार ध्वनिक संकेत भारण से आशय उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से श्रोता विभिन्न ध्वनिक संकेतों को अलग-अलग महत्व प्रदान करता है। सभी संकेत समान रूप से उपयोगी नहीं होते। कुछ संकेत ध्वनि पहचान के लिए अधिक विश्वसनीय होते हैं जबकि कुछ संकेत अपेक्षाकृत कम विश्वसनीय होते हैं। मस्तिष्क धीरे-धीरे यह सीखता है कि किस संकेत पर कितना भरोसा करना है। उदाहरण के लिए, घोष एवं अघोष ध्वनियों के विभेदन में VOT सबसे महत्वपूर्ण संकेत माना जाता है। इसलिए श्रोता इस संकेत को अधिक महत्व देता है। इसके विपरीत अवधि (Duration) एक सहायक संकेत हो सकती है, इसलिए उसका भार अपेक्षाकृत कम होता है। इस प्रकार ध्वनिक संकेत भारण एक प्रकार की मानसिक प्राथमिकता प्रणाली है जो वाक् प्रत्यक्षण को अधिक कुशल बनाती है।

आरेख 4.9 : ध्वनिक संकेत भारण

अनेक ध्वनिक संकेत
(F1, F2, VOT, F0, अवधि)
↓
मस्तिष्क द्वारा मूल्यांकन
↓
महत्व के अनुसार भार निर्धारण
↓
ध्वनि की पहचान

4.7.5 बच्चों में ध्वनिक संकेत भारण का विकास

कुहल (Kuhl, 2004) के अनुसार ध्वनिक संकेत भारण जन्मजात रूप से पूर्ण विकसित नहीं होता। यह अनुभव एवं भाषाई संपर्क के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित होता है। नवजात शिशु जीवन के प्रारंभिक महीनों में विश्व की लगभग सभी भाषाओं की अनेक ध्वनियों के बीच अंतर कर सकते हैं। यह क्षमता मानव विकास की एक महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है। किंतु जैसे-जैसे बच्चा अपनी मातृभाषा को सुनता है, उसका मस्तिष्क उन ध्वनियों पर अधिक ध्यान देने लगता है जो उसकी भाषा में महत्वपूर्ण हैं। इसे ध्वनिक ट्यूनिंग (Acoustic Tuning) कहा जाता है। लगभग पहले वर्ष के अंत तक बच्चा अपनी मातृभाषा की ध्वनियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है और अन्य भाषाओं की कुछ ध्वनियों के प्रति उसकी संवेदनशीलता कम हो सकती है।

4.7.6 श्रेणीगत प्रत्यक्षण (Categorical Perception)

वाक् प्रत्यक्षण की एक महत्वपूर्ण विशेषता श्रेणीगत प्रत्यक्षण (Categorical Perception) है। यदि VOT को धीरे-धीरे परिवर्तित किया जाए, तो ध्वनि में भौतिक परिवर्तन निरंतर होता है। किंतु श्रोता उसे निरंतर परिवर्तन के रूप में नहीं सुनता। वह किसी बिंदु पर अचानक ध्वनि को दूसरी श्रेणी में वर्गीकृत कर देता है।

उदाहरण के लिए: प ---------- ब

भौतिक रूप से परिवर्तन धीरे-धीरे हो सकता है, लेकिन श्रोता उसे या तो /प/ या /ब/ के रूप में पहचानता है। इसी प्रक्रिया को श्रेणीगत प्रत्यक्षण कहा जाता है।

यह भाषा अधिगम का आधार है क्योंकि बच्चे इसी प्रकार विभिन्न ध्वनियों को अलग-अलग श्रेणियों में वर्गीकृत करना सीखते हैं।

4.7.7 ध्वनिक संकेतों का अधिगम और वाक् विकास

भाषा सीखने की प्रक्रिया में बच्चा केवल शब्द याद नहीं करता। वह ध्वनिक संकेतों और भाषाई इकाइयों के बीच संबंध स्थापित करना भी सीखता है। प्रारंभिक अवस्था में बच्चा अपेक्षाकृत व्यापक संकेतों पर निर्भर रहता है। जैसे-जैसे उसका अनुभव बढ़ता है, वह अधिक सूक्ष्म संकेतों का उपयोग करने लगता है।

उदाहरण के लिए:

प्रारंभिक अवस्था में बच्चा ध्वनि की तीव्रता या अवधि पर अधिक निर्भर हो सकता है। बाद में वह फॉर्मेंट तथा VOT जैसे अधिक विशिष्ट ध्वनिक संकेतों का उपयोग करने लगता है। विद्यालयी आयु तक पहुँचते-पहुँचते अधिकांश बच्चे अपनी मातृभाषा के प्रमुख ध्वनिक संकेतों का प्रभावी उपयोग करने लगते हैं। इस प्रकार वाक् विकास को ध्वनिक संकेतों के अधिगम की प्रक्रिया के रूप में भी समझा जा सकता है।

4.7.8 बहुसंवेदी वाक् प्रत्यक्षण (Multisensory Speech Perception)

यद्यपि श्रवण वाक् प्रत्यक्षण का मुख्य माध्यम है, तथापि यह केवल श्रवण पर निर्भर नहीं करता। बच्चे बोलते समय वक्ता के चेहरे, होठों तथा मुख की गतियों को भी देखते हैं। दृश्य संकेत (Visual Cues) वाक् प्रत्यक्षण में सहायक भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति शोरयुक्त वातावरण में बोल रहा हो, तो श्रोता उसके होठों की गति देखकर शब्दों को बेहतर समझ सकता है।

श्रवण बाधित बच्चों में यह दृश्य सूचना विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। इसी सिद्धांत के आधार पर वाक् पठन (Speech Reading) तथा ओष्ठ पठन (Lip Reading) का प्रशिक्षण दिया जाता है।

4.7.9 श्रवण बाधिता एवं ध्वनिक संकेत भारण

श्रवण बाधिता ध्वनिक संकेतों की उपलब्धता को प्रभावित कर सकती है। यदि बच्चा कुछ विशिष्ट संकेतों को स्पष्ट रूप से नहीं सुन पाता, तो वह उन संकेतों पर आधारित ध्वनि विभेदन में कठिनाई अनुभव कर सकता है। उदाहरण के लिए, उच्च आवृत्ति श्रवण हानि वाले बच्चों को घर्षीध्वनियों के स्पेक्ट्रल संकेत पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं होते। परिणामस्वरूप /स/, /श/ तथा /फ/ जैसी ध्वनियों की पहचान प्रभावित हो सकती है। कुछ अनुसंधानों से यह भी ज्ञात हुआ है कि श्रवण बाधित बच्चे कभी-कभी प्रमुख संकेतों की अपेक्षा गौण संकेतों पर अधिक निर्भर होने लगते हैं। इससे ध्वनि पहचान की सटीकता कम हो सकती है। इसी कारण प्रारंभिक श्रवण पहचान, श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट तथा श्रवण-वाचिक प्रशिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

4.7.10 विशेष शिक्षा के लिए निहितार्थ

ध्वनिक संकेत भारण एवं वाक् प्रत्यक्षण की समझ विशेष शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी है। इस ज्ञान के आधार पर शिक्षक:

- ध्वनि त्रुटियों के कारणों को बेहतर समझ सकते हैं।
- श्रवण बाधित बच्चों की कठिनाइयों का विश्लेषण कर सकते हैं।
- श्रवण प्रशिक्षण गतिविधियाँ विकसित कर सकते हैं।
- वाक् एवं भाषा हस्तक्षेप कार्यक्रमों की योजना बना सकते हैं।

- श्रवण यंत्र एवं कॉक्लियर इम्प्लांट उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को बेहतर समझ सकते हैं।

इस प्रकार ध्वनिक संकेतों का अध्ययन केवल सैद्धांतिक विषय नहीं है, बल्कि यह विशेष शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

4.7.11 कक्षा-कक्ष एवं विशेष शिक्षा में अनुप्रयोग

ध्वनिक संकेतों तथा वाक् प्रत्यक्षण की समझ विशेष शिक्षा के शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी है। लिबरमैन एवं सहकर्मियों (1967) तथा केंट एवं रीड (2002) के अनुसार वाक् प्रत्यक्षण ध्वनिक संकेतों के विश्लेषण तथा वर्गीकरण की एक सक्रिय प्रक्रिया है। इस ज्ञान के आधार पर शिक्षक बच्चों द्वारा की जाने वाली ध्वनि त्रुटियों का विश्लेषण कर सकते हैं तथा यह समझ सकते हैं कि कौन-सी त्रुटियाँ श्रवण संबंधी कठिनाइयों के कारण उत्पन्न हो रही हैं।

उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा /स/, /श/ तथा /फ/ जैसी उच्च आवृत्ति ध्वनियों को बार-बार गलत पहचानता है, तो यह उच्च आवृत्ति श्रवण कठिनाई का संकेत हो सकता है। नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014) के अनुसार श्रवण बाधिता की प्रकृति एवं मात्रा ध्वनिक संकेतों की उपलब्धता को प्रभावित कर सकती है, जिसके परिणामस्वरूप वाक् एवं भाषा अधिगम प्रभावित हो सकता है।

इसी प्रकार ध्वनिक संकेतों का ज्ञान शिक्षक को श्रवण प्रशिक्षण, वाक् प्रशिक्षण तथा भाषा हस्तक्षेप कार्यक्रमों की योजना बनाने में सहायता प्रदान करता है। लिंग (2002) के अनुसार श्रवण बाधित बच्चों के लिए श्रवण-वाचिक प्रशिक्षण,

दृश्य संकेतों का उपयोग तथा बहुसंवेदी शिक्षण रणनीतियाँ वाक् एवं भाषा विकास को प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध होती हैं। इस प्रकार ध्वनिक संकेतों का अध्ययन विशेष शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- ध्वनिक संकेत भारण (Acoustic Cue Weighting) में सभी संकेतों को समान महत्व दिया जाता है। (सही या गलत)
- Speech Perception से क्या अभिप्राय है?
- बच्चों में Acoustic Cue Weighting का विकास भाषा अधिगम के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

4.8 सामान्य बच्चों में वाक् एवं भाषा विकास

कारंथ (2003), लिंग (2002) तथा नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014) के अनुसार वाक् एवं भाषा विकास जैविक, श्रवणीय तथा सामाजिक कारकों की परस्पर क्रिया का परिणाम है। सामान्य परिस्थितियों में एक बच्चा जन्म से लेकर विद्यालयी अवस्था तक वाक् एवं भाषा का विकास क्रमिक रूप से करता है। वाक् एवं भाषा विकास एक सतत प्रक्रिया है जिसमें जैविक परिपक्वता, श्रवण अनुभव, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक अंतःक्रिया तथा भाषाई वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4.8.1 वाक् एवं भाषा विकास का आधार

नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014) के अनुसार जन्म के समय से उपलब्ध श्रवण अनुभव

भाषा अधिगम की आधारशिला का कार्य करता है। जन्म के समय उसकी श्रवण प्रणाली कार्यशील होती है तथा वह विभिन्न ध्वनियों के प्रति प्रतिक्रिया देने लगता है। शुरूआत के कुछ महीनों में बच्चा अपने परिवेश की ध्वनियों को सुनता है, उनमें अंतर करना सीखता है तथा धीरे-धीरे उन्हीं ध्वनियों का अनुकरण करने का प्रयास करता है।

4.8.2 श्रवण अनुभव एवं वाक् विकास

लिंग (2002) ने श्रवण अनुभव को वाक् एवं भाषा विकास की केंद्रीय पूर्वापेक्षा माना है। बच्चा अपने माता-पिता, परिवार के सदस्यों तथा आसपास के लोगों को सुनकर भाषा सीखता है। जब बच्चा किसी ध्वनि को बार-बार सुनता है, तब उसका मस्तिष्क उस ध्वनि के ध्वनिक संकेतों को पहचानना सीखता है।

4.8.3 प्रारंभिक वाक् विकास के चरण

ओलर (2000) के अनुसार प्रारंभिक वाक् विकास प्रतिबिंबात्मक स्वर-उत्पादन, कूइंग तथा बैब्लिंग जैसे क्रमिक चरणों से होकर विकसित होता है।

(क) प्रतिबिंबात्मक स्वर-उत्पादन (Reflexive Vocalization)
जन्म से लगभग दो माह की आयु तक बच्चे की अधिकांश ध्वनियाँ जैविक आवश्यकताओं से संबंधित होती हैं।

(ख) कूइंग (Cooing)

लगभग दो से चार माह की आयु के बीच बच्चा मधुर स्वर-जैसी ध्वनियाँ उत्पन्न करने लगता है।

(ग) बैब्लिंग (Babbling)

चार से दस माह की आयु के बीच बच्चा 'बा- बा', 'मा-मा', 'दा-दा' जैसी ध्वनियाँ उत्पन्न करने लगता है।

4.8.4 ध्वनिक संकेतों का अधिगम और बैब्लिंग

बैब्लिंग केवल ध्वनि उत्पन्न करने का अभ्यास नहीं है। यह एक महत्वपूर्ण श्रवण-अभिप्रत्याय प्रक्रिया भी है। बच्चा अपनी ध्वनियों को सुनता है और वातावरण में सुनी गई ध्वनियों से उनकी तुलना करता है। ओलर (2000) तथा लिंग (2002) के अनुसार बैब्लिंग श्रवण-अभिप्रत्याय आधारित अधिगम की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

4.8.5 प्रथम शब्दों का विकास

लगभग एक वर्ष की आयु के आसपास अधिकांश बच्चे अपने प्रथम अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं। हॉफ (2009) के अनुसार यह अवस्था ध्वनि और अर्थ के मध्य स्थायी संबंध स्थापित होने का संकेत देती है। यह वह अवस्था है जब बच्चा ध्वनिक संकेतों को अर्थ से जोड़ना प्रारंभ करता है।

4.8.6 शब्दावली विकास

प्रथम शब्दों के विकास के बाद शब्दावली में तीव्र वृद्धि होने लगती है। इसे शब्दावली विस्फोट (Vocabulary Explosion) कहा जाता है। हॉफ (2009) के अनुसार द्वितीय वर्ष के दौरान शब्दावली में तीव्र वृद्धि भाषा विकास की एक प्रमुख विशेषता है।

4.8.7 ध्वन्यात्मक विकास

भाषा सीखते समय बच्चा सभी ध्वनियों का सही उच्चारण एक साथ नहीं सीखता। स्वर ध्वनियाँ और ओष्ठ्य ध्वनियाँ सामान्यतः पहले विकसित होती हैं जबकि घर्षी ध्वनियाँ बाद में विकसित होती हैं। कारंथ (2003) तथा लिंग (2002) के

अनुसार ध्वन्यात्मक विकास सरल ध्वनियों से जटिल ध्वनियों की ओर प्रगति करता है।

4.8.8 व्याकरणिक विकास

दो वर्ष की आयु के आसपास बच्चा दो-शब्दीय वाक्य बनाना प्रारंभ करता है। इसके बाद वाक्यों की लंबाई एवं जटिलता धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। हॉफ (2009) के अनुसार इस अवधि में वाक्य संरचना तथा व्याकरणिक नियमों का तीव्र विकास होता है।

4.8.9 प्रोसोडिक विकास

बच्चा धीरे-धीरे भाषा की लय, बलाघात, स्वराघात तथा पिच परिवर्तन का उपयोग करना सीखता है। लिंग (2002) ने प्रोसोडिक विशेषताओं को प्रभावी मौखिक संप्रेषण का महत्वपूर्ण घटक माना है।

4.8.10 वाक् एवं भाषा विकास का एकीकृत मॉडल

वाक् एवं भाषा विकास एक क्रमिक एवं परस्पर संबंधित प्रक्रिया है। इसकी शुरुआत श्रवण अनुभव से होती है, जिसके माध्यम से बच्चा ध्वनिक संकेतों को ग्रहण एवं विभेदित करना सीखता है। इसके परिणामस्वरूप वाक् प्रत्यक्षण, शब्द अधिगम, ध्वन्यात्मक विकास तथा व्याकरणिक विकास होता है, जो अंततः प्रभावी संप्रेषण क्षमता के विकास में सहायक बनते हैं।

आरेख 4.10: वाक् एवं भाषा विकास का एकीकृत मॉडल

श्रवण अनुभव → ध्वनिक संकेतों का ग्रहण → ध्वनि विभेदन → वाक् प्रत्यक्षण → शब्द अधिगम → ध्वन्यात्मक विकास → व्याकरणिक विकास → प्रभावी संप्रेषण

4.8.11 प्रारम्भिक पहचान एवं हस्तक्षेप का महत्व

सामान्य वाक् एवं भाषा विकास के लिए पर्याप्त श्रवण अनुभव आवश्यक है। लिंग (2002) तथा नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014) के अनुसार जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में प्राप्त श्रवण अनुभव वाक् एवं भाषा विकास की आधारशिला का कार्य करता है। यदि जन्मजात अथवा प्रारम्भिक श्रवण बाधिता की पहचान समय पर नहीं हो पाती, तो वाक् एवं भाषा विकास प्रभावित हो सकता है।

वर्तमान में नवजात श्रवण जांच (Newborn Hearing Screening) कार्यक्रमों के माध्यम से श्रवण बाधिता की शीघ्र पहचान पर विशेष बल दिया जा रहा है। संयुक्त समिति ऑन इन्फेंट हियरिंग (Joint Committee on Infant Hearing, 2019) के अनुसार श्रवण बाधिता की पहचान तथा हस्तक्षेप जितना शीघ्र किया जाए, भाषा विकास के परिणाम उतने ही बेहतर होते हैं।

प्रारम्भिक पहचान के पश्चात् श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट, श्रवण-वाचिक प्रशिक्षण तथा भाषा हस्तक्षेप सेवाओं की सहायता से बच्चे के वाक् एवं भाषा विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है। नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014) तथा

एएसएचए (ASHA) के अनुसार प्रारम्भिक हस्तक्षेप प्राप्त करने वाले बच्चों में संप्रेषण, भाषा तथा शैक्षणिक विकास की संभावनाएँ अधिक होती हैं। इसलिए श्रवण बाधिता की शीघ्र पहचान एवं समयबद्ध हस्तक्षेप अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- जन्म से उपलब्ध श्रवण अनुभव (Auditory Experience) भाषा अधिगम की आधारशिला का कार्य करता है। (सही या गलत)
- रिक्त स्थान भरिए: वाक् एवं भाषा विकास जैविक परिपक्वता, श्रवण अनुभव, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक अंतःक्रिया तथा _____ से प्रभावित होता है।
- सामान्य बच्चों में वाक् एवं भाषा विकास के किसी एक प्रमुख चरण अथवा विशेषता का उल्लेख कीजिए।

4.9 सामान्य एवं श्रवण बाधित बच्चों में वाक् एवं भाषा विकास का तुलनात्मक अध्ययन

नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014), लिंग (2002) तथा कारंथ (2003) के अनुसार सामान्य एवं श्रवण बाधित बच्चों के वाक् एवं भाषा विकास में निम्नलिखित अंतर देखे जा सकते हैं। श्रवण अनुभव वाक् एवं भाषा विकास की आधारशिला है। सामान्य श्रवण वाले बच्चे अपने परिवेश में उपलब्ध ध्वनियों को सुनकर भाषा

सीखते हैं, जबकि श्रवण बाधित बच्चों को ध्वनिक संकेतों की सीमित उपलब्धता के कारण वाक् एवं भाषा विकास में विभिन्न स्तरों पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। यद्यपि प्रत्येक श्रवण बाधित बच्चे का विकास उसकी श्रवण हानि की मात्रा, पहचान की आयु तथा प्राप्त हस्तक्षेप पर निर्भर करता है, फिर भी सामान्य एवं श्रवण बाधित बच्चों के विकास में कुछ महत्वपूर्ण अंतर देखे जाते हैं।

सारणी 4.2: सामान्य एवं श्रवण बाधित बच्चों में वाक् एवं भाषा विकास की तुलना

विकास का क्षेत्र	**सामान्य बच्चे**	**श्रवण बाधित बच्चे**
श्रवण अनुभव	पर्याप्त एवं सतत	सीमित अथवा विकृत
बैब्लिंग (Babbling)	सामान्य रूप से विकसित	विलंबित अथवा सीमित
प्रथम शब्द	लगभग 12 माह के आसपास	प्रायः विलंबित
शब्दावली विकास	तीव्र वृद्धि	अपेक्षाकृत धीमा
ध्वन्यात्मक विकास	क्रमिक एवं स्वाभाविक	अनेक ध्वनि त्रुटियाँ संभव
व्याकरणिक विकास	आयु के अनुरूप	विलंबित हो सकता है

प्रोसोडी	सामान्य	पिच, लय एवं बलाघात प्रभावित हो सकते हैं
संप्रेषण कौशल	सामान्य विकास	अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है

4.10 सारांश

इस इकाई में वाक् ध्वनिकी, ध्वनिक संकेत, वाक् प्रत्यक्षण तथा सामान्य एवं श्रवण बाधित बच्चों में वाक् एवं भाषा विकास का अध्ययन किया गया। वाक् ध्वनियों के भौतिक गुणों, स्रोत–परिशोधक सिद्धांत, फॉर्मेंट्स, VOT, स्पेक्ट्रल ऊर्जा वितरण तथा अन्य ध्वनिक संकेतों की भूमिका को समझाया गया। आगे यह स्पष्ट किया गया कि बच्चे ध्वनिक संकेतों को पहचानना सीखते हैं और यही प्रक्रिया वाक् एवं भाषा विकास का आधार बनती है। श्रवण बाधिता की स्थिति में ध्वनिक संकेतों की सीमित उपलब्धता के कारण वाक् एवं भाषा विकास प्रभावित हो सकता है, किंतु प्रारंभिक हस्तक्षेप के माध्यम से इन प्रभावों को कम किया जा सकता है।

4.11 प्रमुख शब्दावली (Glossary)

शब्द	अर्थ
वाक् ध्वनिकी	वाक् ध्वनियों के भौतिक गुणों का वैज्ञानिक अध्ययन
ध्वनिक संकेत	वाक् ध्वनि की पहचान में सहायक श्रव्य विशेषता
फॉर्मेंट	स्वर ध्वनियों में ऊर्जा की प्रमुख आवृत्ति पट्टी
F1	प्रथम फॉर्मेंट; जिह्वा की ऊँचाई से संबंधित

F2	द्वितीय फॉर्मेंट; जिह्वा की अग्रता-पश्चता से संबंधित
F3	तृतीय फॉर्मेंट; स्वर गुणवत्ता से संबंधित
मूल आवृत्ति (F0)	स्वर तंत्रियों द्वारा उत्पन्न न्यूनतम आवृत्ति
आवृत्ति	प्रति सेकंड कंपन की संख्या
तीव्रता	ध्वनि की शक्ति
अवधि	ध्वनि के उच्चारण में लगने वाला समय
अनुनाद	ध्वनि ऊर्जा का विशिष्ट आवृत्तियों पर प्रबल होना
VOT	व्यंजन उच्चारण एवं ध्वनन प्रारंभ होने के बीच का समय
फॉर्मेंट परिवर्तन	फॉर्मेंट्स में होने वाला गतिशील परिवर्तन
स्पेक्ट्रोग्राम	ध्वनि का दृश्य निरूपण
बर्स्ट	अवरोधी ध्वनियों में वायु मुक्त होने पर उत्पन्न ऊर्जा
नासिक अनुनाद संकेत	नासिक्य ध्वनियों की विशिष्ट ध्वनिक विशेषता
वाक् प्रत्यक्षण	वाक् ध्वनियों को सुनकर समझने की प्रक्रिया
ध्वनिक संकेत भारण	विभिन्न संकेतों को अलग-अलग महत्व देने की प्रक्रिया
श्रेणीगत प्रत्यक्षण	ध्वनियों को अलग-अलग वर्गों में पहचानने की क्षमता
बैब्लिंग	शैशवावस्था में व्यंजन-स्वर ध्वनियों का पुनरावृत्त उत्पादन
प्रोसोडी	भाषा की लय, पिच और बलाघात से संबंधित विशेषताएँ

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. वाक् ध्वनिकी से आप क्या समझते हैं?
2. स्रोत–परिशोधक सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।
3. फॉर्मेंट क्या हैं?
4. VOT की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
5. वाक् प्रत्यक्षण क्या है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. वाक् उत्पादन की प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
2. ध्वनिक संकेतों के आधार पर वाक् ध्वनियों का वर्गीकरण कीजिए।
3. सामान्य एवं श्रवण बाधित बच्चों के वाक् एवं भाषा विकास का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।
4. ध्वनिक संकेत भारण की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Fant, G. (1960): Acoustic Theory of Speech Production.
- Liberman, A.M., Cooper, F.S., Shankweiler, D.P., & Studdert-Kennedy, M. (1967): Perception of the Speech Code.
- Stevens, K.N. (2000): Acoustic Phonetics.
- Oller, D.K. (2000): The Emergence of the Speech Capacity.
- Kent, R.D. & Read, C. (2002): The Acoustic Analysis of Speech.
- Ling, D. (2002): Speech and the Hearing-Impaired Child.
- Karanth, P. (2003): Language Development and Disorders in Children.
- Hoff, E. (2009): Language Development.
- Johnson, K. (2012): Acoustic and Auditory Phonetics.
- Northern, J.L. & Downs, M.P. (2014): Hearing in Children.
- Ladefoged, P. & Johnson, K. (2015): A Course in Phonetics.
- Joint Committee on Infant Hearing (2019): Year 2019 Position Statement.

- Lisker, L. & Abramson, A.S. (1964): A Cross-Language Study of Voicing in Initial Stops.

हिंदी संदर्भ

- तिवारी, भोलानाथ (विभिन्न संस्करण): *भाषा विज्ञान*, किताब महल, इलाहाबाद।
- दास, एल. (विभिन्न संस्करण): *भाषा विज्ञान के सामान्य सिद्धांत*, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
- धल, जी.बी. (विभिन्न संस्करण): *ध्वनिविज्ञान*, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली।

वेब आधारित स्रोत

- American Speech-Language-Hearing Association (ASHA): Resources on Speech Development, Speech Perception and Hearing Loss.
- Joint Committee on Infant Hearing (2019). Year 2019 Position Statement: Principles and Guidelines for Early Hearing Detection and Intervention Programs.

- American Speech-Language-Hearing Association (ASHA). Early Hearing Detection and Intervention (EHDI) Resources.

संस्थागत प्रकाशन

- All India Institute of Speech and Hearing (AIISH), Mysuru: Educational and Clinical Resources on Speech, Language and Hearing.
- Ali Yavar Jung National Institute of Speech and Hearing Disabilities (AYJNISHD), Mumbai: Educational Resources and Training Materials.
- Indian Speech and Hearing Association (ISHA): Professional Resources on Speech, Language and Hearing Sciences.

इकाई 5

ऑडियोग्राम तथा श्रवण हानि की मात्रा का ध्वन्यात्मक त्रुटियों पर प्रभाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 श्रवण, वाक् एवं ध्वन्यात्मक विकास का पारस्परिक संबंध

5.3.1 श्रवण प्रतिपुष्टि की भूमिका

5.3.2 ध्वन्यात्मक विकास की प्रक्रिया

5.3.3 श्रवण हानि का ध्वन्यात्मक विकास पर प्रभाव

5.4 ध्वन्यात्मक एवं उच्चारणात्मक त्रुटियों की संकल्पना

5.4.1 उच्चारणात्मक त्रुटियाँ

5.4.2 ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

5.4.3 श्रवण बाधित बच्चों में त्रुटियों को प्रभावित करने वाले कारक

5.5 ऑडियोग्रा :संकल्पना, संरचना एवं नैदानिक महत्व

5.5.1ऑडियोग्राम की संकल्पना

5.5.2 ऑडियोग्राम के प्रमुख घटक

5.5.3 ऑडियोग्राम में प्रयुक्त सामान्य प्रतीक

5.5.4 वाक् ध्वनियाँ एवं ऑडियोग्राम

5.5.5 वाक् स्पेक्ट्रम (Speech Spectrum) एवं ऑडियोग्राम

5.5.6 वाक् एवं भाषा मूल्यांकन में ऑडियोग्राम का महत्व

5.6 ऑडियोग्राम विन्यास एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

5.6.1 समतल (Flat) ऑडियोग्राम

5.6.2 क्रमिक ढाल वाला (Gradually Sloping) ऑडियोग्राम

5.6.3 तीव्र ढाल वाला (Steeply Sloping) ऑडियोग्राम

5.7 श्रवण हानि की मात्रा एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

5.8 ऑडियोग्राम, श्रवण हानि एवं वाक्-भाषा हस्तक्षेप के निहितार्थ

5.9 सारांश

5.10 प्रमुख शब्दावली (Glossary)

5.11 अभ्यास प्रश्न

5.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची

5.1 प्रस्तावना

मानव संचार की प्रक्रिया में श्रवण एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बालक जन्म के पश्चात् अपने परिवेश में उपस्थित वाक् ध्वनियों को सुनकर भाषा एवं वाक् का अधिग्रहण करता है। लिंग (2002) तथा नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014) के अनुसार श्रवण अनुभव सामान्य वाक् एवं भाषा विकास की आधारशिला है तथा वाक् ध्वनियों तक पर्याप्त पहुँच प्रभावी संप्रेषण के लिए आवश्यक है। श्रवण के माध्यम से प्राप्त होने वाली सूचनाएँ न केवल भाषा सीखने में सहायक होती हैं, बल्कि वाक् उत्पादन की शुद्धता एवं स्पष्टता बनाए रखने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। जब किसी व्यक्ति को श्रवण हानि होती है, तब वाक् ध्वनियों तक उसकी पहुँच प्रभावित हो जाती है। परिणामस्वरूप ध्वनियों के ग्रहण, भेद तथा उत्पादन में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

श्रवण हानि से प्रभावित बच्चों में प्रायः ध्वन्यात्मक विकास सामान्य बच्चों की अपेक्षा भिन्न पाया जाता है। ऐसे बच्चों में कुछ ध्वनियाँ सही प्रकार से विकसित नहीं हो पातीं, कुछ ध्वनियों का प्रतिस्थापन हो जाता है तथा कुछ ध्वनियाँ वाक् से लुप्त हो जाती हैं। इन त्रुटियों की प्रकृति एवं गंभीरता केवल श्रवण हानि की मात्रा पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि श्रवण हानि विभिन्न आवृत्तियों पर किस प्रकार वितरित है। इस वितरण को ऑडियोग्राम द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

ऑडियोग्राम किसी व्यक्ति की श्रवण क्षमता का ग्राफीय निरूपण है। इसके माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि कौन-सी आवृत्तियाँ व्यक्ति को सुनाई दे रही हैं तथा कौन-सी आवृत्तियाँ उसकी श्रवण सीमा से बाहर हैं। चूँकि विभिन्न वाक् ध्वनियाँ विभिन्न आवृत्तियों में स्थित होती हैं, इसलिए ऑडियोग्राम का विन्यास सीधे-सीधे वाक् एवं भाषा विकास को प्रभावित करता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी बालक का ऑडियोग्राम समतल (Flat Configuration) है, तो उसे सभी आवृत्तियों में लगभग समान स्तर की श्रवण हानि होगी। दूसरी ओर यदि ऑडियोग्राम क्रमिक ढाल वाला (Gradually Sloping Configuration) अथवा तीव्र ढाल वाला (Steeply Sloping Configuration) है, तो उच्च आवृत्ति वाली ध्वनियाँ अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित होंगी। फलस्वरूप /स/, /श/, /फ/, /थ/ जैसी ध्वनियों के उत्पादन में त्रुटियाँ देखने को मिल सकती हैं।

इस इकाई में आप श्रवण हानि एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियों के संबंध को समझेंगे। साथ ही यह भी जानेंगे कि ऑडियोग्राम के विभिन्न विन्यास तथा श्रवण हानि की विभिन्न मात्राएँ किस प्रकार वाक् ध्वनियों के अधिग्रहण एवं उत्पादन को प्रभावित करती हैं। यह ज्ञान विशेष शिक्षकों, वाक्-भाषा रोग विशेषज्ञों तथा श्रवण विशेषज्ञों के लिए अत्यंत उपयोगी है क्योंकि इसके आधार पर प्रभावी मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप कार्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

•श्रवण एवं वाक् विकास के मध्य संबंध का वर्णन कर सकेंगे।
•ध्वन्यात्मक त्रुटियों की संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे।
•ऑडियोग्राम की संरचना एवं उसके नैदानिक महत्व को समझ सकेंगे।
• समतल (Flat), क्रमिक ढाल वाले (Gradually Sloping) तथा तीव्र ढाल वाले (Steeply Sloping) ऑडियोग्रामों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
• विभिन्न ऑडियोग्राम विन्यासों से उत्पन्न होने वाली ध्वन्यात्मक त्रुटियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

• श्रवण हानि की विभिन्न मात्राओं एवं उनसे संबंधित ध्वन्यात्मक विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।
• मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप की योजना बनाते समय ऑडियोग्राम संबंधी सूचनाओं का उपयोग कर सकेंगे।

5.3 श्रवण, वाक् एवं ध्वन्यात्मक विकास का पारस्परिक संबंध

मानव वाक् विकास एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें श्रवण, संज्ञान, भाषा तथा मोटर नियंत्रण की संयुक्त भूमिका होती है। लिंग (2002) तथा मेडेल एवं फ्लेक्सर (2013) के अनुसार श्रवण प्रतिपुष्टि एवं वाक् ध्वनियों तक पर्याप्त पहुँच वाक् अधिगम और भाषा विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सामान्य विकास

की स्थिति में बालक अपने परिवेश से प्राप्त वाक् ध्वनियों को सुनता है, उनका विश्लेषण करता है तथा धीरे-धीरे उन्हें अपने वाक् उत्पादन में प्रयोग करना सीखता है। इस प्रक्रिया में श्रवण प्रतिपुष्टि (Auditory Feedback) का विशेष महत्व है।

जब कोई व्यक्ति बोलता है, तो वह अपनी स्वयं की आवाज़ भी सुनता है। अपनी आवाज़ को सुनकर वह उच्चारण, तीव्रता, स्वराघात तथा ध्वनि की गुणवत्ता में आवश्यक संशोधन करता है। इस प्रक्रिया को श्रवण प्रतिपुष्टि कहा जाता है। यदि श्रवण प्रतिपुष्टि उपलब्ध न हो अथवा सीमित हो जाए, तो वाक् उत्पादन में विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ उत्पन्न होने लगती हैं।

5.3.1 श्रवण प्रतिपुष्टि की भूमिका

ली (1950) तथा फेयरबैंक्स (1955) के अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि श्रवण प्रतिपुष्टि वाक् उत्पादन के नियंत्रण एवं त्रुटियों के स्वतः संशोधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। श्रवण प्रतिपुष्टि निम्नलिखित कार्यों में सहायता करती है:

- ध्वनियों के सही उच्चारण का अधिग्रहण।
- स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों का विभेदन।
- वाक् की तीव्रता का नियंत्रण।
- वाक् की गति का नियमन।
- अनुनाद (Resonance) का नियंत्रण।
- उच्चारण त्रुटियों का स्वतः संशोधन।

श्रवण बाधित बच्चों में यह प्रतिपुष्टि आंशिक अथवा पूर्ण रूप से बाधित हो सकती है। परिणामस्वरूप वे अनेक वाक् ध्वनियों को सही प्रकार से ग्रहण नहीं कर पाते तथा उनके उत्पादन में त्रुटियाँ विकसित हो जाती हैं।

5.3.2 ध्वन्यात्मक विकास की प्रक्रिया

ध्वन्यात्मक विकास जन्म के तुरंत बाद प्रारंभ हो जाता है। प्रारंभिक महीनों में बालक कूइंग तथा बैब्लिंग करता है। ओलर (2000) तथा ओवेन्स (2020) के अनुसार कूइंग और बैब्लिंग सामान्य वाक् विकास के महत्वपूर्ण प्रारम्भिक चरण हैं, जो आगे चलकर अर्थपूर्ण भाषा के विकास का आधार बनते हैं। धीरे-धीरे वह अपने परिवेश में सुनाई देने वाली ध्वनियों की नकल करने लगता है। सामान्यतः पाँच से छह वर्ष की आयु तक अधिकांश वाक् ध्वनियाँविकसित हो जाती हैं।

ध्वन्यात्मक विकास के दौरान बालक ध्वनियों के बारे में नियम विकसित करता है। उदाहरणार्थ, प्रारंभिक अवस्था में वह जटिल व्यंजन समूहों को सरल बना सकता है। जैसे— “स्कूल” → “कूल”

यह सामान्य विकासात्मक प्रक्रिया है। किंतु यदि श्रवण हानि के कारण ध्वनियों तक पर्याप्त पहुँच न हो, तो ये त्रुटियाँ लंबे समय तक बनी रह सकती हैं अथवा नए प्रकार की त्रुटियाँ विकसित हो सकती हैं।

5.3.3 श्रवण हानि का ध्वन्यात्मक विकास पर प्रभाव

श्रवण हानि के कारण बालक को वाक् ध्वनियों का पूर्ण श्रवण अनुभव प्राप्त नहीं हो पाता। लिंग (2002) तथा नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014) के अनुसार श्रवण हानि के कारण वाक् ध्वनियों तक सीमित पहुँच ध्वन्यात्मक विकास को प्रभावित कर सकती है। फलस्वरूप वह अनेक ध्वनियों का सही विभेदन, भंडारण एवं उत्पादन नहीं कर पाता। श्रवण हानि का प्रभाव केवल वाक् की स्पष्टता पर ही नहीं पड़ता, बल्कि सम्पूर्ण ध्वन्यात्मक विकास पर भी पड़ता है। यह प्रभाव श्रवण हानि की मात्रा, श्रवण हानि के प्रकार, पहचान की आयु तथा उपलब्ध हस्तक्षेप पर निर्भर करता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- श्रवण प्रतिपुष्टि (Auditory Feedback) वाक् एवं भाषा विकास के लिए आवश्यक है। (सही या गलत)
- रिक्त स्थान भरिए: प्रारम्भिक वाक् विकास में Cooing एवं _____ महत्वपूर्ण चरण हैं।
- श्रवण हानि (Hearing Loss) ध्वन्यात्मक विकास को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है?

5.4 ध्वन्यात्मक एवं उच्चारणात्मक त्रुटियों की संकल्पना

बर्नथल, बैंकसन एवं फ्लिप्सेन (2017) तथा बोवेन (2015) के अनुसार उच्चारणात्मक त्रुटियाँ और ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ कारण, स्वरूप एवं उपचार की

दृष्टि से भिन्न होती हैं। वाक् उत्पादन में पाई जाने वाली त्रुटियों को सामान्यतः दो प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है उच्चारणात्मक त्रुटियाँ (Articulatory Errors) तथा ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ (Phonological Errors) यद्यपि दोनों प्रकार की त्रुटियाँ सुनने में समान प्रतीत हो सकती हैं, तथापि इनके कारण एवं स्वरूप भिन्न होते हैं।

5.4.1 उच्चारणात्मक त्रुटियाँ (Articulatory Errors)

उच्चारणात्मक त्रुटियाँ तब उत्पन्न होती हैं जब वक्ता किसी ध्वनि का उत्पादन सही स्थान (Place of Articulation), सही प्रकार (Manner of Articulation) अथवा सही अंगों के समन्वय से नहीं कर पाता।

उदाहरणार्थ, यदि बालक /स/ ध्वनि का उत्पादन करते समय जीभ को उचित स्थिति में न रख सके और /थ/ जैसी ध्वनि उत्पन्न करे, तो यह उच्चारणात्मक त्रुटि कहलाएगी। सामान्यतः श्रवण हानि वाले बच्चों में निम्नलिखित प्रकार की वाक् एवं ध्वन्यात्मक कठिनाइयाँ देखी जा सकती हैं:

(क) ध्वनि लोप (Omission)

जब बालक किसी शब्द में उपस्थित ध्वनि का उत्पादन नहीं करता, तब इसे ध्वनि लोप कहा जाता है। यह विशेष रूप से उन ध्वनियों में देखा जाता है जिन्हें बालक पर्याप्त रूप से सुन नहीं पाता।

उदाहरण:

- "स्कूल" → "कूल"
- "पुस्तक" → "पुतक"
- "हाथ" → "हा"

ऐसी त्रुटियाँ विशेषकर उच्च आवृत्ति व्यंजनों के साथ अधिक देखने को मिलती हैं।

(ख) ध्वनि प्रतिस्थापन (Substitution)

कई बार बालक लक्ष्य ध्वनि के स्थान पर दूसरी ध्वनि का प्रयोग करता है। इसका कारण यह हो सकता है कि दोनों ध्वनियों का श्रवण विभेदन उसके लिए कठिन हो।

उदाहरण:

- "साबुन" → "ताबुन"
- "शेर" → "सेर"
- "कलम" → "तलम"

यदि बालक /स/ और /त/ अथवा /श/ और /स/ के मध्य अंतर को स्पष्ट रूप से नहीं सुन पाता, तो इस प्रकार की त्रुटियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

(ग) ध्वनि विरूपण (Distortion)

कभी-कभी ध्वनि का उत्पादन लक्ष्य ध्वनि के निकट तो होता है, परंतु वह पूर्णतः शुद्ध नहीं होता। इसे ध्वनि विरूपण कहा जाता है।

उदाहरण:

- /स/ ध्वनि का अस्पष्ट अथवा सीटी जैसी ध्वनि के साथ उत्पादन।
- /र/ ध्वनि का कंपन रहित उत्पादन।
- घर्षी ध्वनियों में अत्यधिक वायु प्रवाह।

ऐसी त्रुटियाँ श्रवण प्रतिपुष्टि की कमी के कारण उत्पन्न हो सकती हैं।

(घ) व्यंजन समूहों का सरलीकरण

दो या अधिक व्यंजनों वाले समूहों का उत्पादन श्रवण हानि वाले बच्चों के लिए अपेक्षाकृत कठिन हो सकता है। परिणामस्वरूप वे व्यंजन समूह को सरल बना देते हैं।

उदाहरण:

- "स्कूल" → "कूल"
- "स्टेशन" → "टेशन"
- "प्रकाश" → "पकास"

(ङ) उच्च आवृत्ति ध्वनियों का अनुचित उत्पादन

उच्च आवृत्ति ध्वनियाँ जैसे /स/, /श/, /ष/, /फ/, /थ/ तथा /छ/ अपेक्षाकृत कम तीव्रता वाली होती हैं और प्रायः उच्च आवृत्ति क्षेत्र में स्थित होती हैं। यदि बालक को उच्च आवृत्तियों में श्रवण हानि है, तो इन ध्वनियों का अधिग्रहण प्रभावित हो सकता है।

उदाहरण:

- "सड़क" → "तड़क"
- "शाम" → "साम"
- "फूल" → "पूल"

(च) नासिक्यकरण संबंधी समस्याएँ

श्रवण प्रतिपुष्टि के अभाव में बालक मौखिक एवं नासिक्य अनुनाद के मध्य उचित संतुलन स्थापित नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप वाक् में अनावश्यक नासिक्य गुण उत्पन्न हो सकते हैं।

उदाहरण:

- "बात" का उच्चारण "मात" जैसा सुनाई देना।
- स्वर ध्वनियों में अत्यधिक नासिक्य अनुनाद का होना।

(छ) अस्पष्ट वाक् (Reduced Speech Intelligibility)

जब उपर्युक्त अनेक त्रुटियाँ एक साथ उपस्थित होती हैं, तब वाक् की स्पष्टता कम हो जाती है तथा श्रोता के लिए संदेश को समझना कठिन हो जाता है।

उदाहरण:

लक्ष्य वाक्य:

"मुझे स्कूल जाना है।"

बालक का उत्पादन:

"मुझे कूल नाना है।"

इस प्रकार श्रोता को वाक्य का अर्थ संदर्भ के आधार पर अनुमानित करना पड़ता है।

आप आगे के अनुभागों में अध्ययन करेंगे कि इन त्रुटियों की प्रकृति एवं गंभीरता किस प्रकार ऑडियोग्राम के विन्यास तथा श्रवण हानि की मात्रा के अनुसार परिवर्तित होती है।

5.4.2 ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ (Phonological Errors)

ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ ध्वनि उत्पादन की समस्या नहीं होतीं, बल्कि भाषा की ध्वनि व्यवस्था (Sound System) के संगठन से संबंधित होती हैं।

बालक ध्वनियों के प्रयोग के नियमों को पूर्णतः नहीं सीख पाता और परिणामस्वरूप कुछ व्यवस्थित त्रुटियाँ करता है।

उदाहरण:

यदि बालक सभी घर्षी ध्वनियों (/स/, /श/, /फ/) को बंद ध्वनियों (/त/, /द/, /प/) से बदल देता है, तो यह केवल एक ध्वनि की समस्या नहीं है, बल्कि ध्वन्यात्मक नियम की समस्या है।

श्रवण हानि में सामान्य ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

(क) व्यंजन समूहों का सरलीकरण (Cluster Simplification)

दो या अधिक व्यंजनों वाले समूह को सरल बना देना।

उदाहरण:

लक्ष्य शब्द	**बालक का उत्पादन**
स्कूल	कूल
स्टेशन	टेशन
पुस्तक	पुतक

(ख) उच्च आवृत्ति ध्वनियों का अनुचित उत्पादन

उच्च आवृत्ति वाली ध्वनियाँ जैसे:

/स/, /श/, /ष/, /फ/, /थ/, /छ/

श्रवण हानि वाले बच्चों को पर्याप्त रूप से सुनाई नहीं देतीं।

उदाहरण:

लक्ष्य शब्द बालक का उत्पादन

साबुन ताबुन

शेर सेर

फूल पूल

(ग) अंतिम व्यंजन लोप (Final Consonant Deletion)

शब्द के अंत में आने वाले व्यंजन को हटा देना।

उदाहरण:

लक्ष्य शब्द बालक का उत्पादन

हाथ हा

लक्ष्य शब्द बालक का उत्पादन

दूध दू

रात रा

(घ) अग्रसरण (Fronting)

पीछे की ओर उत्पादित ध्वनियों को आगे की ओर उत्पादित ध्वनियों से बदल देना।

उदाहरण:

लक्ष्य शब्द बालक का उत्पादन

कलम तलम

गाना दाना

(ङ) नासिक्यकरण संबंधी समस्याएँ

श्रवण प्रतिपुष्टि की कमी के कारण मौखिक एवं नासिक्य अनुनाद का संतुलन प्रभावित हो सकता है।

उदाहरण:

- "बात" का उच्चारण "मात" जैसा सुनाई देना।
- स्वर ध्वनियों में अत्यधिक नासिक्य गुण उत्पन्न होना।
- अनुनासिकता का अनुचित प्रयोग।

(च) अस्पष्ट वाक् (Reduced Speech Intelligibility)

जब अनेक ध्वन्यात्मक एवं उच्चारणात्मक त्रुटियाँ एक साथ उपस्थित हों, तो श्रोता के लिए वाक् को समझना कठिन हो जाता है।

उदाहरण:

लक्ष्य वाक्य:

"मुझे स्कूल जाना है।"

बालक का उत्पादन:

"मुझे कूल नाना है।"

इस प्रकार वाक्य का अर्थ अनुमान से समझना पड़ता है।

महत्वपूर्ण अंतर: उच्चारणात्मक एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

उच्चारणात्मक त्रुटि	ध्वन्यात्मक त्रुटि
ध्वनि उत्पादन की समस्या	ध्वनि प्रणाली के संगठन की समस्या
एक या कुछ ध्वनियाँ प्रभावित	ध्वनियों के पूरे वर्ग प्रभावित हो सकते हैं
मोटर नियंत्रण से संबंधित	वाक् नियमों से संबंधित

उदाहरण: /स/ का गलत उत्पादन	सभी घर्षी ध्वनियों को बंद ध्वनियों से बदलना
उपचार में ध्वनि उत्पादन प्रशिक्षण प्रमुख	उपचार में ध्वन्यात्मक पैटर्न संशोधन प्रमुख

5.4.3 श्रवण बाधित बच्चों में त्रुटियों को प्रभावित करने वाले कारक

श्रवण बाधित बच्चों में वाक् त्रुटियों की प्रकृति एवं गंभीरता निम्नलिखित कारकों पर निर्भर कर सकती है:

- श्रवण हानि की मात्रा (Degree of Hearing Loss)
- श्रवण हानि का विन्यास (Configuration)
- श्रवण हानि की पहचान की आयु
- श्रवण यंत्र अथवा कॉक्लियर इम्प्लांट का उपयोग
- प्राप्त वाक् एवं भाषा प्रशिक्षण
- पारिवारिक एवं शैक्षिक वातावरण

इन्हीं कारकों में से दो अत्यंत महत्वपूर्ण कारक—ऑडियोग्राम का विन्यास तथा श्रवण हानि की मात्रा—इस इकाई के आगामी अनुभागों का मुख्य विषय हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ (Phonological Errors) भाषा की ध्वनि व्यवस्था से संबंधित होती हैं। (सही या गलत)

- रिक्त स्थान भरिए: ध्वनि उत्पादन से संबंधित त्रुटि को _____ कहा जाता है।
- उच्चारणात्मक त्रुटि (Articulatory Error) तथा ध्वन्यात्मक त्रुटि (Phonological Error) में एक अंतर लिखिए।

5.5 ऑडियोग्राम: संकल्पना, संरचना एवं नैदानिक महत्व

पिछले अनुभाग में आपने अध्ययन किया कि श्रवण बाधित बच्चों में विभिन्न प्रकार की उच्चारणात्मक एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ पाई जा सकती हैं। आपने यह भी जाना कि इन त्रुटियों की प्रकृति अनेक कारकों पर निर्भर करती है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है व्यक्ति का ऑडियोग्राम। ऑडियोग्राम न केवल श्रवण हानि की मात्रा के बारे में जानकारी प्रदान करता है, बल्कि यह भी बताता है कि कौन-सी आवृत्तियाँ व्यक्ति सुन सकता है तथा कौन-सी आवृत्तियाँ उसके लिए उपलब्ध नहीं हैं। यही कारण है कि वाक् एवं भाषा विकास के मूल्यांकन में ऑडियोग्राम का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

5.5.1 ऑडियोग्राम की संकल्पना

ऑडियोग्राम व्यक्ति की श्रवण क्षमता का एक ग्राफीय निरूपण (Graphical Representation) है। यह विभिन्न आवृत्तियों (Frequencies) पर व्यक्ति की श्रवण सीमा (Hearing Threshold) को प्रदर्शित करता है। दूसरे शब्दों में, ऑडियोग्राम यह दर्शाता है कि किसी व्यक्ति को किसी विशिष्ट आवृत्ति की ध्वनि सुनने के लिए न्यूनतम कितनी तीव्रता (Intensity) की आवश्यकता होती है।

श्रवण मूल्यांकन के दौरान प्राप्त परिणामों को एक विशेष ग्राफ पर अंकित किया जाता है, जिसे ऑडियोग्राम कहा जाता है। इस ग्राफ की सहायता से श्रवण

विशेषज्ञ यह निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति की श्रवण क्षमता सामान्य है अथवा उसमें किसी प्रकार की श्रवण हानि विद्यमान है।

आप यह समझ चुके होंगे कि सभी वाक् ध्वनियाँसमान नहीं होतीं। कुछ ध्वनियाँ निम्न आवृत्ति (Low Frequency) क्षेत्र में स्थित होती हैं, जबकि कुछ ध्वनियाँ उच्च आवृत्ति (High Frequency) क्षेत्र में। इसलिए ऑडियोग्राम का अध्ययन वाक् एवं भाषा विकास को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

5.5.2 ऑडियोग्राम के प्रमुख घटक

ऑडियोग्राम को समझने के लिए इसके प्रमुख घटकों को जानना आवश्यक है।

(क) आवृत्ति (Frequency)

आवृत्ति से तात्पर्य किसी ध्वनि तरंग के एक सेकंड में होने वाले कंपन (Vibrations) की संख्या से है। इसे हर्ट्ज (Hertz; Hz) में मापा जाता है।

ऑडियोग्राम के क्षैतिज अक्ष (Horizontal Axis) पर सामान्यतः निम्नलिखित आवृत्तियाँ अंकित रहती हैं: 250 Hz, 500 Hz, 1000 Hz, 2000 Hz, 4000 Hz तथा 8000 Hz

सामान्यतः:

- 250 Hz से 500 Hz = निम्न आवृत्तियाँ (Low Frequencies)
- 1000 Hz से 2000 Hz = मध्य आवृत्तियाँ (Mid Frequencies)
- 4000 Hz से 8000 Hz = उच्च आवृत्तियाँ (High Frequencies)

(ख) तीव्रता (Intensity)

तीव्रता से तात्पर्य ध्वनि की ऊँचाई अथवा शक्ति से है। इसे डेसिबल (Decibel; dB HL) में मापा जाता है। ऑडियोग्राम के ऊर्ध्वाधर अक्ष (Vertical Axis) पर तीव्रता अंकित रहती है।

सामान्यतः:

- 0 dB HL के निकट स्थित श्रवण सीमा बेहतर श्रवण क्षमता को दर्शाती है।
- जैसे-जैसे श्रवण सीमा नीचे की ओर जाती है, श्रवण हानि की मात्रा बढ़ती जाती है।

(ग) श्रवण सीमा (Hearing Threshold)

किसी व्यक्ति द्वारा किसी विशिष्ट आवृत्ति पर सुनी जा सकने वाली न्यूनतम ध्वनि तीव्रता को श्रवण सीमा कहा जाता है।

उदाहरणार्थ, यदि कोई बालक 2000 Hz की ध्वनि को 50 dB HL पर सुन पाता है, तो उस आवृत्ति पर उसकी श्रवण सीमा 50 dB HL मानी जाएगी।

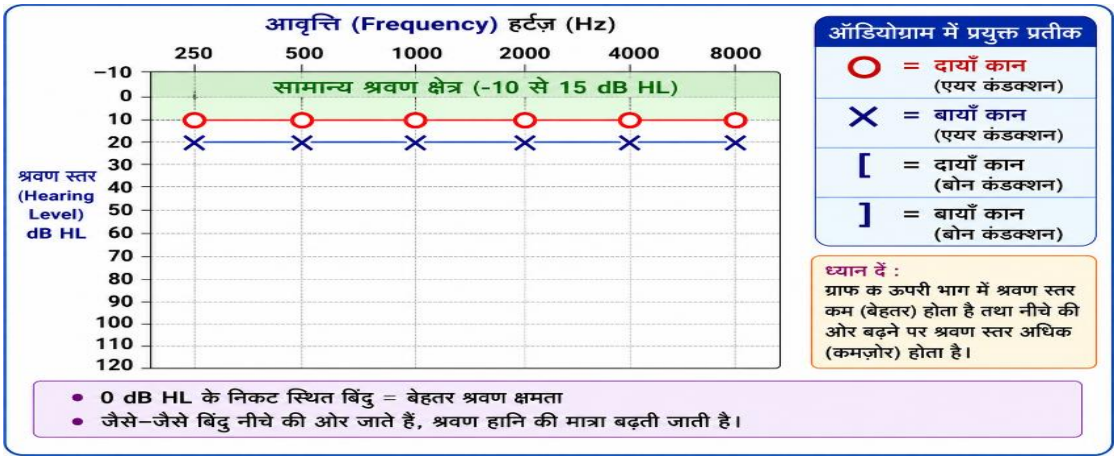
5.5.3 ऑडियोग्राम में प्रयुक्त सामान्य प्रतीक

श्रवण परीक्षण के दौरान प्राप्त परिणामों को विभिन्न प्रतीकों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

सामान्यतः:

प्रतीक	अर्थ
O	दायाँ कान (Right Ear Air Conduction)
X	बायाँ कान (Left Ear Air Conduction)
< अथवा [	दायाँ कान बोन कंडक्शन
> अथवा]	बायाँ कान बोन कंडक्शन

इन प्रतीकों की सहायता से दोनों कानों की श्रवण क्षमता का तुलनात्मक



अध्ययन किया जा सकता है।

चित्र 5.1: ऑडियोग्राम में प्रयुक्त सामान्य प्रतीक

5.5.4 वाक् ध्वनियाँएवं ऑडियोग्राम

विभिन्न वाक् ध्वनियाँ विभिन्न आवृत्तियों तथा तीव्रताओं में स्थित होती हैं। यही कारण है कि श्रवण हानि की प्रकृति के अनुसार विभिन्न ध्वनियाँ अलग-अलग

मात्रा में प्रभावित हो सकती हैं। लिंग (2002) तथा बूथरॉयड (1982) के अनुसार स्वर एवं व्यंजन ध्वनियाँ विभिन्न आवृत्ति क्षेत्रों में वितरित होती हैं, जिसके कारण श्रवण हानि का प्रभाव ध्वनि-विशिष्ट हो सकता है।

सामान्यतः स्वर (Vowels) अपेक्षाकृत निम्न आवृत्ति क्षेत्र में अधिक ऊर्जा रखते हैं, जबकि अनेक व्यंजन विशेषकर घर्षी ध्वनियाँ (Fricatives) उच्च आवृत्ति क्षेत्र में स्थित होती हैं।

उदाहरण:

ध्वनि	प्रमुख आवृत्ति क्षेत्र
/आ/, /ऊ/, /ओ/	निम्न आवृत्ति
/ई/, /ए/	मध्य आवृत्ति
/स/, /श/, /फ/, /थ/	उच्च आवृत्ति

इस कारण यदि किसी बालक को उच्च आवृत्तियों में श्रवण हानि है, तो उसे स्वर अपेक्षाकृत सुनाई दे सकते हैं, किंतु /स/, /श/, /फ/ जैसी ध्वनियों को पहचानने एवं उत्पादित करने में कठिनाई हो सकती है।

उदाहरण:

"साबुन" शब्द में उपस्थित /स/ ध्वनि सुनाई न देने पर बालक "ताबुन" अथवा "आबुन" जैसा उत्पादन कर सकता है। इसी प्रकार "शाम" शब्द "साम" अथवा

"आम" जैसा सुनाई या उत्पादित हो सकता है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी विशेष ध्वनि की उपलब्धता केवल उसकी आवृत्ति पर ही नहीं, बल्कि उसकी तीव्रता, अवधि तथा सहवर्ती ध्वनिक संकेतों पर भी निर्भर करती है।

5.5.5 वाक् स्पेक्ट्रम (Speech Spectrum) एवं ऑडियोग्राम

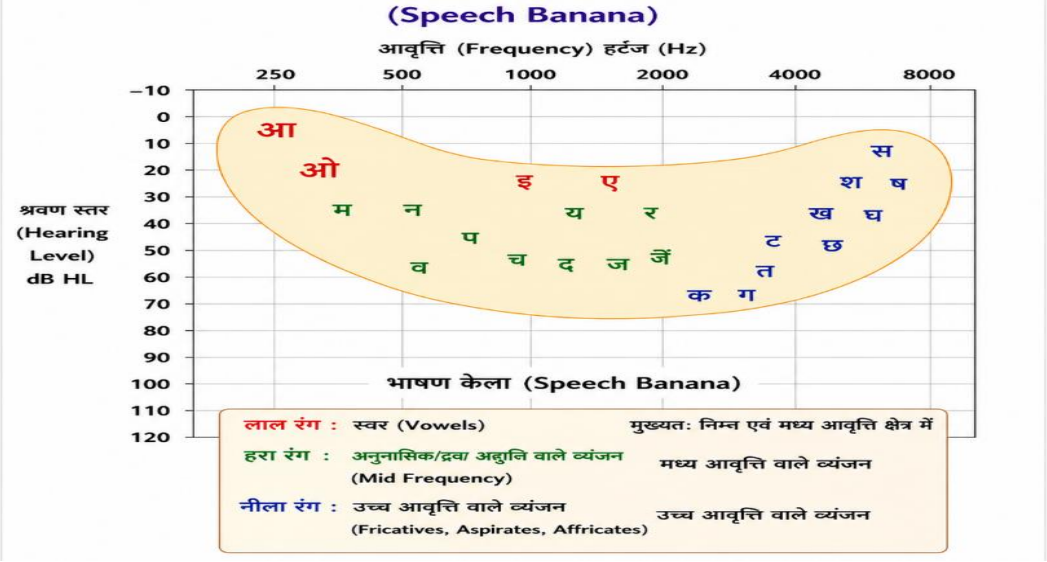
मानव वाक् की अधिकांश महत्वपूर्ण सूचनाएँ लगभग 250 Hz से 8000 Hz के मध्य स्थित होती हैं। इस क्षेत्र को वाक् स्पेक्ट्रम (Speech Spectrum) कहा जाता है। एरबर (1982) के अनुसार मानव वाक् की अधिकांश महत्वपूर्ण सूचनाएँ लगभग 250 हट्ज़ से 8000 हट्ज़ के मध्य स्थित होती हैं। स्वरों में अधिक तीव्रता होती है तथा वे अपेक्षाकृत निम्न आवृत्ति क्षेत्र में पाए जाते हैं। दूसरी ओर अनेक व्यंजन कम तीव्रता वाले होते हैं और उच्च आवृत्ति क्षेत्र में स्थित रहते हैं।

फलस्वरूप कई श्रवण बाधित बच्चे बोलने वाले की उपस्थिति का आभास तो प्राप्त कर लेते हैं, किंतु शब्दों को सही प्रकार से पहचान नहीं पाते।

उदाहरण के लिए यदि कोई बालक स्वर ध्वनियाँ सुन पा रहा है किंतु /स/, /श/, /फ/ तथा /थ/ जैसी ध्वनियाँ नहीं सुन पा रहा है, तो उसके लिए निम्नलिखित शब्दों का विभेदन कठिन हो सकता है:

- साल – ताल
- शाम – साम
- फूल – पूल

• साथ – सातइस प्रकार वाक् की स्पष्ट समझ प्रभावित हो सकती है।



चित्र 5.2: ऑडियोग्राम पर वाक् ध्वनियों का वितरण (Speech Banana)

5.5.6 वाक् एवं भाषा मूल्यांकन में ऑडियोग्राम का महत्व

ऑडियोग्राम केवल श्रवण हानि की पहचान का उपकरण नहीं है, बल्कि यह वाक् एवं भाषा विशेषज्ञों के लिए भी अत्यंत उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।

ऑडियोग्राम की सहायता से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जा सकते हैं:

- कौन-सी वाक् ध्वनियाँबालक के लिए उपलब्ध हैं?
- कौन-सी ध्वनियाँ पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं?
- किन ध्वनियों के उत्पादन में त्रुटियों की संभावना अधिक है?
- किन ध्वनियों को उपचार कार्यक्रम में प्राथमिकता दी जानी चाहिए?

• श्रवण यंत्र अथवा कॉक्लियर इम्प्लांट से कितना लाभ अपेक्षित है?

इस प्रकार ऑडियोग्राम वाक्, भाषा एवं श्रवण पुनर्वास कार्यक्रम की योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- ऑडियोग्राम (Audiogram) श्रवण क्षमता का ग्राफीय निरूपण है। (सही या गलत)
- रिक्त स्थान भरिए: किसी विशिष्ट आवृत्ति पर सुनी जा सकने वाली न्यूनतम ध्वनि तीव्रता को _____ कहा जाता है।
- वाक् एवं भाषा मूल्यांकन में Audiogram के दो उपयोग लिखिए।

5.6 ऑडियोग्राम विन्यास एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

नॉर्दर्न एवं डाउन्स (2014) तथा मेडेल एवं फ्लेक्सर (2013) के अनुसार ऑडियोग्राम का विन्यास वाक् ध्वनियों की उपलब्धता तथा संभावित संप्रेषण कठिनाइयों का महत्वपूर्ण संकेतक है। पिछले अनुभाग में आपने ऑडियोग्राम की संकल्पना, उसके घटकों तथा वाक् एवं भाषा मूल्यांकन में उसके महत्व का अध्ययन किया। आपने यह भी जाना कि विभिन्न वाक् ध्वनियाँ ऑडियोग्राम के विभिन्न आवृत्ति क्षेत्रों में स्थित होती हैं। अतः यदि किसी बालक की श्रवण हानि सभी आवृत्तियों में समान न होकर कुछ विशिष्ट आवृत्तियों में अधिक हो, तो उसका प्रभाव भी विभिन्न वाक् ध्वनियों पर भिन्न-भिन्न रूप से पड़ सकता है।

यही कारण है कि केवल श्रवण हानि की मात्रा को जानना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि यह जानना भी आवश्यक होता है कि श्रवण हानि विभिन्न आवृत्तियों में किस प्रकार वितरित है। श्रवण हानि के इसी वितरण प्रतिरूप को ऑडियोग्राम विन्यास (Audiogram Configuration) कहा जाता है।

ऑडियोग्राम विन्यास से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कौन-सी वाक् ध्वनियाँश्रवण बाधित बालक के लिए उपलब्ध होंगी तथा किन ध्वनियों के अधिग्रहण एवं उत्पादन में कठिनाइयाँ उत्पन्न होने की संभावना अधिक होगी। इस प्रकार ऑडियोग्राम विन्यास का अध्ययन ध्वन्यात्मक त्रुटियों को समझने एवं प्रभावी हस्तक्षेप योजना तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

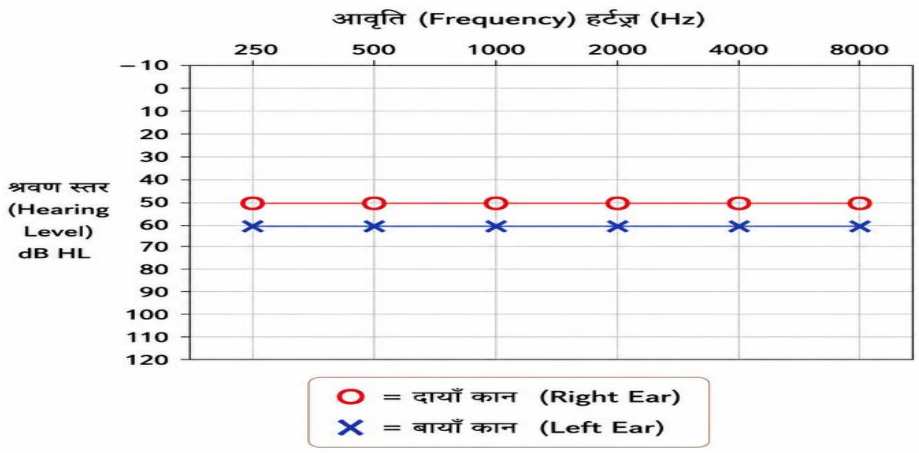
सामान्यतः श्रवण बाधित बच्चों में निम्नलिखित तीन प्रमुख प्रकार के ऑडियोग्राम विन्यास देखने को मिलते हैं:

- समतल ऑडियोग्राम (Flat Audiogram)
- क्रमिक ढाल वाला ऑडियोग्राम (Gradually Sloping Audiogram)
- तीव्र ढाल वाला ऑडियोग्राम (Steeply Sloping Audiogram)

अब हम इन तीनों विन्यासों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

5.6.1 समतल ऑडियोग्राम (Flat Audiogram)

समतल ऑडियोग्राम वह विन्यास है जिसमें निम्न, मध्य तथा उच्च सभी आवृत्तियों में श्रवण हानि लगभग समान स्तर पर पाई जाती है। ऑडियोग्राम में विभिन्न आवृत्तियों पर प्राप्त श्रवण सीमाएँ एक लगभग सीधी क्षैतिज रेखा का निर्माण करती हैं।



चित्र 5.3: समतल ऑडियोग्राम (Flat Audiogram)

समतल ऑडियोग्राम वाले श्रवण बाधित बच्चों को वाक् ध्वनियों के संपूर्ण स्पेक्ट्रम तक सीमित पहुँच प्राप्त होती है। चूँकि निम्न एवं उच्च दोनों प्रकार की आवृत्तियाँ प्रभावित होती हैं, इसलिए स्वर तथा व्यंजन दोनों के अधिग्रहण में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

समतल ऑडियोग्राम से संबंधित संभावित ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

- विभिन्न ध्वनियों का लोप (Omission)
- ध्वनियों का प्रतिस्थापन (Substitution)
- अस्पष्ट वाक् (Reduced Speech Intelligibility)
- स्वर एवं व्यंजन दोनों के उत्पादन में त्रुटियाँ

• व्यंजन समूहों का सरलीकरण

उदाहरण:

लक्ष्य शब्द	संभावित उत्पादन
स्कूल	कूल
साबुन	ताबुन
प्रकाश	पकास

इस प्रकार के बालकों में वाक् की समग्र स्पष्टता प्रभावित हो सकती है क्योंकि श्रवण सूचना का ह्रास वाक् स्पेक्ट्रम के अधिकांश भाग को प्रभावित करता है।

5.6.2 क्रमिक ढाल वाला ऑडियोग्राम (Gradually Sloping Audiogram)

क्रमिक ढाल वाले ऑडियोग्राम में निम्न आवृत्तियों की अपेक्षा उच्च आवृत्तियों में श्रवण हानि धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। इस प्रकार के ऑडियोग्राम में बालक को निम्न एवं मध्य आवृत्ति वाली ध्वनियाँ अपेक्षाकृत बेहतर सुनाई देती हैं, जबकि उच्च आवृत्ति वा



ली ध्वनियाँ सीमित रूप से उपलब्ध होती हैं।

चि

त्र 5.4 : क्रमिक ढाल वाला ऑडियोग्राम (Gradually Sloping Audiogram)

चूँकि स्वर ध्वनियों की अधिकांश ऊर्जा निम्न एवं मध्य आवृत्तियों में स्थित होती है, इसलिए ऐसे बालक सामान्यतः स्वर ध्वनियों को अपेक्षाकृत बेहतर ग्रहण कर पाते हैं। इसके विपरीत उच्च आवृत्ति वाले व्यंजनों के अधिग्रहण में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है।

अधिक प्रभावित होने वाली ध्वनियाँ

/s/, /ʃ/, /f/, /θ/, /tʃ/ जैसी उच्च आवृत्ति ध्वनियाँ

संभावित ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

- उच्च आवृत्ति व्यंजनों का लोप

- घर्षी ध्वनियों का प्रतिस्थापन
- व्यंजनों के मध्य सूक्ष्म भेदों को पहचानने में कठिनाई
- शब्दों के अंतिम व्यंजनों का लोप

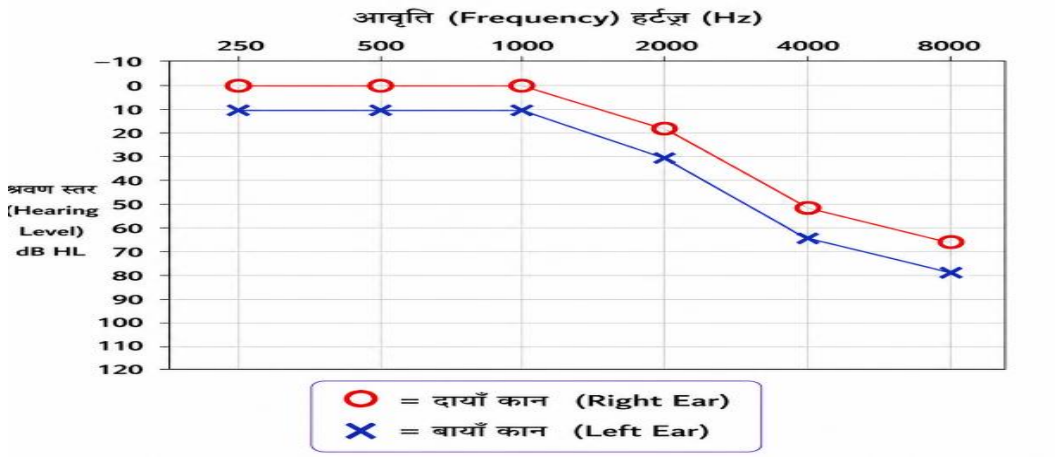
उदाहरण:

लक्ष्य शब्द	संभावित उत्पादन
सड़क	तड़क
शाम	साम
फूल	पूल
हाथ	हा

इस प्रकार के बच्चों में वाक् अपेक्षाकृत स्पष्ट हो सकता है, किंतु उच्च आवृत्ति ध्वनियों से संबंधित त्रुटियाँ लगातार दिखाई दे सकती हैं।

5.6.3 तीव्र ढाल वाला ऑडियोग्राम (Steeply Sloping Audiogram)

तीव्र ढाल वाले ऑडियोग्राम में निम्न एवं मध्य आवृत्तियों में श्रवण क्षमता अपेक्षाकृत बेहतर बनी रहती है, जबकि उच्च आवृत्तियों में अचानक और तीव्र गिरावट दिखाई देती है। यह श्रवण हानि का एक महत्वपूर्ण विन्यास है क्योंकि अनेक वाक् ध्वनियाँविशेषकर घर्षी एवं महाप्राण व्यंजन उच्च आवृत्ति क्षेत्र में स्थित होते हैं।



त्र 5.5: तीव्र ढाल वाला ऑडियोग्राम (Steeply Sloping Audiogram)

ऐसे बालक सामान्य वार्तालाप की उपस्थिति का अनुभव तो कर सकते हैं, किंतु अनेक महत्वपूर्ण व्यंजनों को स्पष्ट रूप से नहीं सुन पाते। परिणामस्वरूप शब्दों के मध्य सूक्ष्म ध्वन्यात्मक भेदों को पहचानना कठिन हो जाता है।

अधिक प्रभावित होने वाली ध्वनियाँ

/s/, /ʃ/, /f/, /θ/, /tʃ/, /ʂ/ आदि

संभावित ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

- उच्च आवृत्ति घर्षी ध्वनियों का लोप
- ध्वनि प्रतिस्थापन
- शब्दों के अंतिम व्यंजनों का लोप
- ध्वनि विभेदन में कठिनाई
- वाक् की स्पष्टता में कमी

उदाहरण:

लक्ष्य शब्द	संभावित उत्पादन
शेर	सेर
साबुन	ताबुन
फूल	पूल
साथ	सात

इस प्रकार के बच्चों में स्वर उत्पादन अपेक्षाकृत बेहतर हो सकता है, किंतु उच्च आवृत्ति व्यंजनों के कारण वाक् की स्पष्टता प्रभावित होती है।

सारणी 5.1 : विभिन्न ऑडियोग्राम विन्यासों एवं संभावित ध्वन्यात्मक त्रुटियों का तुलनात्मक विवरण

ऑडियोग्राम विन्यास	सर्वाधिक प्रभावित आवृत्तियाँ	संभावित ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ
समतल	सभी आवृत्तियाँ	स्वर एवं व्यंजन दोनों में त्रुटियाँ, ध्वनि लोप, प्रतिस्थापन
क्रमिक ढाल वाला	उच्च आवृत्तियाँ अपेक्षाकृत अधिक	घर्षी ध्वनियों का लोप, अंतिम व्यंजन लोप
तीव्र ढाल वाला	उच्च आवृत्तियाँ अत्यधिक	/स/, /श/, /फ/ जैसी

प्रभावित	ध्वनियों का प्रतिस्थापन एवं लोप

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि ध्वन्यात्मक त्रुटियों की प्रकृति केवल श्रवण हानि की मात्रा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि ऑडियोग्राम विन्यास भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः वाक् एवं भाषा मूल्यांकन करते समय ऑडियोग्राम के विन्यास का विश्लेषण करना आवश्यक है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- क्रमिक ढाल वाला ऑडियोग्राम (Gradually Sloping Audiogram) मुख्यतः उच्च आवृत्ति ध्वनियों को प्रभावित करता है। (सही या गलत)
- निम्नलिखित में से कौन-सी ध्वनि उच्च आवृत्ति श्रवण हानि में अधिक प्रभावित होने की संभावना है? (क) /स/ (ख) /आ/ (ग) /ओ/ (घ) /ऊ/।
- Flat Audiogram तथा Steeply Sloping Audiogram के ध्वन्यात्मक प्रभावों में कोई एक अंतर लिखिए।

5.7 श्रवण हानि की मात्रा एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ

ऑडियोग्राम का विन्यास यह बताता है कि कौन-सी आवृत्तियाँ प्रभावित हैं, जबकि श्रवण हानि की मात्रा (Degree of Hearing Loss) यह बताती है कि

श्रवण हानि कितनी गंभीर है। श्रवण हानि की मात्रा का सीधा प्रभाव वाक् ध्वनियों की उपलब्धता तथा ध्वन्यात्मक विकास पर पड़ता है।

सामान्यतः जैसे-जैसे श्रवण हानि की मात्रा बढ़ती है, वाक् ध्वनियों तक पहुँच कम होती जाती है तथा ध्वन्यात्मक त्रुटियों की संख्या एवं गंभीरता बढ़ने लगती है। हालाँकि यह प्रभाव ऑडियोग्राम विन्यास, हस्तक्षेप की उपलब्धता तथा श्रवण उपकरणों के उपयोग से भी प्रभावित हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO, 2021) तथा अमेरिकन स्पीच-लैंग्वेज-हियरिंग एसोसिएशन (ASHA) के अनुसार श्रवण हानि की मात्रा बढ़ने पर वाक् ध्वनियों तक पहुँच एवं संचार क्षमता प्रभावित हो सकती है।

सारणी 5.2 : श्रवण हानि की मात्रा एवं संभावित ध्वन्यात्मक प्रभा

श्रवण हानि की मात्रा	संभावित ध्वन्यात्मक प्रभाव
हल्की (Mild Hearing Loss)	उच्च आवृत्ति ध्वनियों के विभेदन में कठिनाई, सीमित ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ
मध्यम (Moderate Hearing Loss)	ध्वनि प्रतिस्थापन, व्यंजन समूहों का सरलीकरण, कुछ ध्वनियों का लोप
मध्यम से गंभीर (Moderately Severe Hearing Loss)	अनेक व्यंजनों के उत्पादन में कठिनाई, वाक् स्पष्टता में कमी
गंभीर (Severe Hearing	व्यापक ध्वनि लोप, प्रतिस्थापन तथा अस्पष्ट वाक्

Loss)	
अति गंभीर (Profound Hearing Loss)	अत्यधिक सीमित ध्वनि भंडार, गंभीर वाक् एवं ध्वन्यात्मक कठिनाइयाँ

श्रवण हानि की मात्रा बढ़ने पर विशेष रूप से उच्च आवृत्ति वाली ध्वनियाँ जैसे /स/, /श/, /फ/ तथा /थ/ अधिक प्रभावित होती हैं। परिणामस्वरूप इन ध्वनियों का लोप, प्रतिस्थापन अथवा विरूपण देखने को मिल सकता है।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि समान श्रवण हानि की मात्रा वाले सभी बच्चों में समान प्रकार की ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ नहीं पाई जातीं। त्रुटियों की प्रकृति ऑडियोग्राम विन्यास, प्रारम्भिक पहचान, श्रवण यंत्रों के उपयोग तथा उपलब्ध हस्तक्षेप पर भी निर्भर करती है।

अतः ध्वन्यात्मक त्रुटियों का विश्लेषण करते समय श्रवण हानि की मात्रा तथा ऑडियोग्राम विन्यास दोनों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- श्रवण हानि की मात्रा (Degree of Hearing Loss) बढ़ने पर ध्वन्यात्मक त्रुटियों की संख्या एवं गंभीरता बढ़ सकती है। (सही या गलत)
- रिक्त स्थान भरिए: अत्यधिक श्रवण हानि की स्थिति में वाक् ध्वनियों तक _____ कम होती जाती है।

- हल्की (Mild Hearing Loss) एवं अति गंभीर (Profound Hearing Loss) श्रवण हानि के ध्वन्यात्मक प्रभावों में कोई एक अंतर लिखिए।

5.8 शैक्षिक एवं चिकित्सकीय निहितार्थ

इस इकाई में आपने अध्ययन किया कि श्रवण हानि की मात्रा तथा ऑडियोग्राम का विन्यास श्रवण बाधित बच्चों के वाक् एवं ध्वन्यात्मक विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। यह ज्ञान केवल सैद्धांतिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि विशेष शिक्षा, वाक् एवं भाषा हस्तक्षेप तथा पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाने में भी अत्यंत उपयोगी है।

श्रवण बाधित बच्चों में पाई जाने वाली ध्वन्यात्मक त्रुटियाँ प्रायः इस बात पर निर्भर करती हैं कि बालक को वाक् ध्वनियों तक कितनी पहुँच प्राप्त है। यदि किसी बालक को उच्च आवृत्ति वाली ध्वनियाँ पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं, तो उसके द्वारा /स/, /श/, /फ/ अथवा /थ/ जैसी ध्वनियों के उत्पादन में त्रुटियाँ दिखाई दे सकती हैं। इसी प्रकार यदि श्रवण हानि सभी आवृत्तियों को प्रभावित करती है, तो वाक् एवं भाषा विकास पर अधिक व्यापक प्रभाव पड़ सकता है।

विशेष शिक्षक के लिए यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक श्रवण बाधित बालक की आवश्यकताएँ समान नहीं होतीं। दो बच्चों में श्रवण हानि की मात्रा समान हो सकती है, किंतु उनके ऑडियोग्राम विन्यास भिन्न होने के कारण उनकी वाक् एवं भाषा संबंधी कठिनाइयाँ भी भिन्न हो सकती हैं। अतः शैक्षिक योजना बनाते समय व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है।

प्रारम्भिक पहचान एवं हस्तक्षेप का महत्व

जॉइंट कमिटी ऑन इन्फैंट हियरिंग (2019) के अनुसार श्रवण हानि की शीघ्र पहचान एवं समय पर हस्तक्षेप बच्चों के भाषा विकास के बेहतर परिणामों से संबंधित है। जितनी शीघ्र श्रवण हानि की पहचान होगी तथा उपयुक्त सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी, उतनी ही बेहतर भाषा एवं संचार उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

श्रवण यंत्र एवं सहायक तकनीकों की भूमिका

मेडेल एवं फ्लेक्सर (2013) के अनुसार उपयुक्त श्रवण यंत्र एवं अन्य सहायक तकनीकें वाक् ध्वनियों तक पहुँच में सुधार कर सकती हैं। उपयुक्त श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट तथा अन्य सहायक श्रवण उपकरण वाक् ध्वनियों तक पहुँच को बेहतर बनाने में सहायता करते हैं। इन उपकरणों के प्रभावी उपयोग से बच्चों को अधिक वाक् अनुभव प्राप्त होते हैं, जिससे वाक् एवं भाषा विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

वाक् एवं भाषा प्रशिक्षण का महत्व

श्रवण बाधित बच्चों में केवल श्रवण उपकरण उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं होता। वाक् ध्वनियों की पहचान, विभेदन तथा उत्पादन के लिए व्यवस्थित वाक् एवं भाषा प्रशिक्षण भी आवश्यक होता है। विशेष शिक्षक, वाक्-भाषा रोग विशेषज्ञ तथा परिवार के सदस्य मिलकर इस प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

परिवार एवं विद्यालय की भूमिका

मोएलर (2000) के अनुसार प्रारम्भिक हस्तक्षेप कार्यक्रमों में परिवार की सक्रिय भागीदारी बच्चों के भाषा एवं संप्रेषण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। परिवार एवं विद्यालय दोनों ही भाषा विकास के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। समृद्ध वाक् वातावरण, नियमित संवाद, उपयुक्त शैक्षिक सहायता तथा सकारात्मक प्रोत्साहन बच्चों के संचार कौशल के विकास में सहायक होते हैं। इसलिए पुनर्वास प्रक्रिया में परिवार की सक्रिय भागीदारी आवश्यक मानी जाती है।

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में महत्व

समावेशी शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था में विशेष शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की श्रवण आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के साथ कार्य करना पड़ता है। ऑडियोग्राम तथा उससे संबंधित वाक् एवं ध्वन्यात्मक प्रभावों की समझ शिक्षकों को उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ अपनाने में सहायता प्रदान करती है। इससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी एवं बालक-केंद्रित बनती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि श्रवण हानि की मात्रा एवं ऑडियोग्राम विन्यास की जानकारी श्रवण बाधित बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने तथा प्रभावी हस्तक्षेप कार्यक्रमों की योजना बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- ऑडियोग्राम (Audiogram) तथा श्रवण हानि की मात्रा की जानकारी प्रभावी पुनर्वास (Rehabilitation) योजना बनाने में सहायक होती है। (सही या गलत)
- निम्नलिखित में से श्रवण बाधित बच्चों के पुनर्वास का एक प्रमुख घटक चुनिए:

  (क) प्रारम्भिक पहचान (Early Identification)

  (ख) श्रवण उपकरण (Hearing Devices)

  (ग) वाक्-भाषा हस्तक्षेप (Speech-Language Intervention)

  (घ) उपर्युक्त सभी

- समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) में ऑडियोग्राम की जानकारी विशेष शिक्षक के लिए क्यों महत्वपूर्ण है? संक्षेप में लिखिए।

5.9 सारांश

इस इकाई में आपने श्रवण हानि एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियों के मध्य संबंध का अध्ययन किया। प्रारम्भ में श्रवण, वाक् एवं ध्वन्यात्मक विकास के पारस्परिक संबंध को समझाया गया तथा श्रवण प्रतिपुष्टि की भूमिका पर चर्चा की गई। इसके पश्चात् उच्चारणात्मक त्रुटियों एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियों की संकल्पना तथा उनके प्रमुख प्रकारों का वर्णन किया गया।

इकाई में ऑडियोग्राम की संकल्पना, उसके प्रमुख घटकों तथा वाक् एवं भाषा मूल्यांकन में उसके महत्व को स्पष्ट किया गया। साथ ही यह भी समझाया गया कि विभिन्न वाक् ध्वनियाँ विभिन्न आवृत्तियों में स्थित होती हैं तथा ऑडियोग्राम का विन्यास ध्वनियों की उपलब्धता को प्रभावित करता है।

समतल (Flat), क्रमिक ढाल वाले (Gradually Sloping) तथा तीव्र ढाल वाले (Steeply Sloping) ऑडियोग्राम विन्यासों का वर्णन करते हुए उनके संभावित ध्वन्यात्मक प्रभावों की चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त श्रवण हानि की विभिन्न मात्राओं तथा उनसे संबंधित ध्वन्यात्मक कठिनाइयों को भी प्रस्तुत किया गया।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया कि श्रवण हानि की मात्रा तथा ऑडियोग्राम विन्यास दोनों मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि श्रवण बाधित बच्चे वाक् ध्वनियों को किस सीमा तक ग्रहण एवं उत्पादित कर पाएँगे। इसलिए प्रभावी शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाने के लिए ऑडियोग्राम की उचित व्याख्या आवश्यक है।

5.10 पारिभाषिक शब्दावली

शब्द	अर्थ
ऑडियोग्राम	श्रवण क्षमता का ग्राफीय निरूपण

श्रवण सीमा (Hearing Threshold) किसी ध्वनि को सुनने के लिए आवश्यक न्यूनतम

	तीव्रता
आवृत्ति (Frequency)	एक सेकंड में होने वाले कंपन की संख्या
तीव्रता (Intensity)	ध्वनि की ऊँचाई अथवा शक्ति
ध्वन्यात्मक त्रुटि (Phonological Error)	ध्वनि व्यवस्था के संगठन से संबंधित त्रुटि
उच्चारणात्मक त्रुटि (Articulatory Error)	ध्वनि उत्पादन से संबंधित त्रुटि
ध्वनि लोप (Omission)	शब्द में उपस्थित ध्वनि का उत्पादन न करना
ध्वनि प्रतिस्थापन (Substitution)	एक ध्वनि के स्थान पर दूसरी ध्वनि का प्रयोग
ध्वनि विरूपण (Distortion)	ध्वनि का अपूर्ण अथवा विकृत उत्पादन
श्रवण प्रतिपुष्टि (Auditory Feedback)	अपनी ही वाणी को सुनकर उसमें संशोधन करने की प्रक्रिया
समतल ऑडियोग्राम (Flat Audiogram)	सभी आवृत्तियों में लगभग समान श्रवण हानि दर्शाने वाला ऑडियोग्राम
क्रमिक ढाल वाला ऑडियोग्राम (Gradually Sloping Audiogram)	उच्च आवृत्तियों की ओर धीरे-धीरे बढ़ती श्रवण हानि दर्शाने वाला ऑडियोग्राम

तीव्र ढाल वाला ऑडियोग्राम (Steeply Sloping Audiogram)	उच्च आवृत्तियों में तीव्र श्रवण हानि दर्शाने वाला ऑडियोग्राम
वाक् स्पेक्ट्रम (Speech Spectrum)	वाक् ध्वनियों द्वारा आवृत्त आवृत्ति एवं तीव्रता का क्षेत्र
वाक् बोधगम्यता (Speech Intelligibility)	श्रोता द्वारा वाक् को समझने की क्षमता

5.11 अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रवण प्रतिपुष्टि (Auditory Feedback) से आप क्या समझते हैं?
2. उच्चारणात्मक त्रुटियों एवं ध्वन्यात्मक त्रुटियों में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. ध्वनि लोप (Omission), ध्वनि प्रतिस्थापन (Substitution) तथा ध्वनि विरूपण (Distortion) को संक्षेप में समझाइए।
4. ऑडियोग्राम क्या है? इसके प्रमुख घटकों का उल्लेख कीजिए।
5. समतल ऑडियोग्राम (Flat Audiogram) से आप क्या समझते हैं?
6. क्रमिक ढाल वाले (Gradually Sloping) एवं तीव्र ढाल वाले (Steeply Sloping) ऑडियोग्रामों में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. श्रवण हानि की मात्रा (Degree of Hearing Loss) का वाक् विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है?

8. श्रवण बाधित बच्चों में उच्च आवृत्ति ध्वनियाँ अधिक प्रभावित क्यों होती हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. श्रवण, वाक् एवं ध्वन्यात्मक विकास के मध्य संबंध की व्याख्या कीजिए।
2. श्रवण बाधित बच्चों में पाई जाने वाली प्रमुख ध्वन्यात्मक एवं उच्चारणात्मक त्रुटियों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
3. ऑडियोग्राम की संकल्पना तथा वाक् एवं भाषा मूल्यांकन में उसके महत्व का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
4. समतल (Flat), क्रमिक ढाल वाले (Gradually Sloping) तथा तीव्र ढाल वाले (Steeply Sloping) ऑडियोग्राम विन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।
5. ऑडियोग्राम विन्यास एवं श्रवण हानि की मात्रा का श्रवण बाधित बच्चों के वाक् एवं ध्वन्यात्मक विकास पर प्रभाव स्पष्ट कीजिए।
6. श्रवण बाधित बच्चों के पुनर्वास में प्रारम्भिक पहचान, श्रवण उपकरणों तथा वाक्-भाषा हस्तक्षेप की भूमिका का विवेचन कीजिए।

5.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची

(क) हिन्दी ग्रंथ

- दास, एल. (विभिन्न संस्करण). भाषा विज्ञान के सामान्य सिद्धांत. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

- तिवारी, भोलानाथ (विभिन्न संस्करण). भाषा विज्ञान. किताब महल, इलाहाबाद।

(ख) अंग्रेज़ी ग्रंथ एवं शोध स्रोत

- Bernthal, J. E., Bankson, N. W., & Flipsen, P. (2017). Articulation and Phonological Disorders: Speech Sound Disorders in Children (8th ed.). Pearson.
- Boothroyd, A. (1982). Hearing Impairment in Young Children. Prentice-Hall.
- Bowen, C. (2015). Children's Speech Sound Disorders (2nd ed.). Wiley-Blackwell.
- Erber, N. P. (1982). Auditory Training. Alexander Graham Bell Association.
- Joint Committee on Infant Hearing. (2019). Year 2019 Position Statement: Principles and Guidelines for Early Hearing Detection and Intervention Programs.
- Karanth, P. (2003). Language Development and Disorders in Children. All India Institute of Speech and Hearing (AIISH), Mysuru.
- Katz, J. (Ed.). (2015). Handbook of Clinical Audiology (7th ed.). Wolters Kluwer.

- Ling, D. (2002). Speech and the Hearing-Impaired Child: Theory and Practice. Alexander Graham Bell Association.
- Madell, J. R., & Flexer, C. (2013). Pediatric Audiology: Diagnosis, Technology, and Management. Thieme.
- Moeller, M. P. (2000). Early intervention and language development in children who are deaf and hard of hearing. Pediatrics, 106(3), E43.
- Northern, J. L., & Downs, M. P. (2014). Hearing in Children (6th ed.). Plural Publishing.
- Oller, D. K. (2000). The Emergence of the Speech Capacity. Lawrence Erlbaum Associates.
- Owens, R. E. (2020). Language Development: An Introduction (10th ed.). Pearson.
- World Health Organization. (2021). World Report on Hearing. Geneva: WHO.

(ग) वेब आधारित एवं संस्थागत स्रोत

- American Speech-Language-Hearing Association (ASHA). Practice Portal and Professional Resources. https://www.asha.org
- All India Institute of Speech and Hearing (AIISH), Mysuru. https://www.aiishmysore.in

- Ali Yavar Jung National Institute of Speech and Hearing Disabilities (AYJNISHD). https://www.ayjnihh.nic.in
- Indian Speech and Hearing Association (ISHA). https://ishaindia.org.in

इकाई 6

वाक्-भाषा शिक्षण के लिए उपयुक्त रणनीतियां, सामग्री और उपकरणों का चयन

Selection of Appropriate Strategies, Material and Equipment for Teaching Speech.

6.1 भूमिका

6.2 उद्देश्

6.3 अर्थ एवं संकल्पना

6.4 परिभाषा

6.5 भारत में श्रवण बधिर बालकों की स्थिति

6.6 चयन के मुख्य सिद्धांत

6.7 चयन का वैज्ञानिक आधार

6.7.1 श्रवणात्मक प्रोफ़ाइल

6.7.2 वाक् प्रोफ़ाइल

6.7.3 भाषा स्तर

6.7.4 संज्ञानात्मक स्तर

6.7.5 संचार माध्यम

6.7.6 सीखने की शैली

6.8 भाषा शिक्षण की उपयुक्त रणनीतियाँ

6.9 शिक्षण सामग्री

6.10 तकनीकी उपकरण

6.11 वाक् शिक्षण की मुख्य पद्धतियाँ

6.12 क्षेत्रीय भाषा आधारित वाक् मूल्यांकन परीक्षणों के उपयोग की आवश्यकता

6.13 विशेष शिक्षक की भूमिका

6.14 प्रभावी शिक्षण के लिए अतिरिक्त सुझाव

6.15 सामान्य गलतियाँ जिनसे बचना चाहिए

6.16 वर्तमान रुझान और अनुसंधान

6.17 निष्कर्ष

6.18 तकनीकी शब्दों की व्याख्या

6.19 सारांश

6.20 संदर्भ ग्रंथ सूची6.21 निबंधात्मक प्रश्न

6.1भूमिका

कक्षा में प्रत्येक बालक शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं संवेदी रूप से एक-दूसरे से भिन्न होता है। अलग-अलग योग्यताओं के कारण बच्चों के सीखने की गति और तरीका भी भिन्न होता है। इसी व्यक्तिगत भिन्नता के कारण श्रवण बाधित बालकों को भाषा एवं वाक् सिखाना शिक्षक, स्पीच थेरेपिस्ट एवं अभिभावकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी 'समानता एवं समावेशन' पर बल देती है, जिसके अंतर्गत दिव्यांग बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण भाषा अधिगम के अवसर प्रदान करना अनिवार्य है। इसलिए बालकों में वाक् एवं भाषा का विकास तथा उसका मूल्यांकन करने हेतु विशेष युक्तियों, सामग्री एवं उपकरणों का चुनाव अनिवार्य हो जाता है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि कोई एक रणनीति सभी बालकों पर लागू नहीं होती, बल्कि बालक की व्यक्तिगत आवश्यकता के अनुसार रणनीति को बदलना पड़ता है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए वाक् शिक्षण एक संवेदनशील प्रक्रिया है जिसमें श्रव्य-Audio, दृश्य-Visual और संवेदी-Sensory माध्यमों का समन्वित उपयोग आवश्यक है। इन बच्चों के भाषा विकास में प्रारंभिक पहचान एवं शीघ्र हस्तक्षेप निर्णायक भूमिका निभाता है। क्योंकि शोध बताते हैं कि 6 माह की आयु से पूर्व हस्तक्षेप से भाषा विकास सामान्य बालकों के समकक्ष हो सकता है। साथ ही शिक्षक अक्सर विद्यार्थी के प्रदर्शन को लेकर वाक् चिकित्सक से संपर्क करते हैं और माता-पिता भी आवश्यकता मूल्यांकन प्रक्रिया के अभिन्न अंग होते हैं।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

भाषाई आवश्यकताओं के आकलन और भाषा लक्ष्यों को समझ सकेंगे:

दिव्यांग बच्चों (जैसे- बौद्धिक अक्षमता, डिस्लेक्सिया, श्रवण बाधित, ऑटिज्म) में भाषा विकास की विशिष्ट चुनौतियों की पहचान करना।बच्चों की वैयक्तिक शिक्षा योजना (IEP - Individualized Education Plan) के आधार पर भाषा लक्ष्यों का निर्धारण करना।

उपयुक्त रणनीतियों का चयन (Selection of Strategies) कर सकेंगे:

बहु-संवेदी शिक्षण (Multisensory Teaching) विधियों का चयन करना, जहाँ दृष्टि, ध्वनि और स्पर्श का उपयोग करके भाषाई अवधारणाओं को सुदृढ़ किया जा सके।

शिक्षण सामग्री का चयन (Selection of Materials) कर सकेंगे:

बच्चों के स्तर, रुचि और अक्षमता के अनुरूप उपयुक्त और सुलभ शिक्षण सामग्री (TLM) का चयन करना।

सहायक उपकरणों (Assistive Tools) का चयन और उपयोग कर सकेंगे:

भाषा सीखने के लिए सहायक तकनीक (Assistive Technology) जैसे स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर, टॉकर्स (AAC devices), और श्रवण यंत्र (hearing aids) का चयन व उपयोग सिखाना।

समावेशी कक्षा वातावरण का निर्माण कर सकेंगे:

ऐसी शिक्षण शैलियों का चयन करना जो समावेशी शिक्षा में सभी बच्चों (सामान्य और विशेष) को समान रूप से भाषा सीखने का अवसर प्रदान करें।

सहकर्मी शिक्षण (Peer Tutoring) और समूह गतिविधियों को बढ़ावा देना।

प्रभावी मूल्यांकन के तकनीकें विकसित कर सकेंगे :

भाषा विकास को मापने के लिए वैकल्पिक और लचीले मूल्यांकन उपकरण (Alternative Assessment) विकसित करना, जैसे पोर्टफोलियो, चेकलिस्ट और अवलोकन। इस कंटेंट का उद्देश्य शिक्षक को केवल "क्या पढ़ाना है" से आगे बढ़ाकर "कैसे और किसके लिए" उपयुक्त सामग्री का चयन करना सिखाना है।

6.3 अर्थ एवं संकल्पना / Meaning & Concept

भाषा शिक्षण के लिए उपयुक्त रणनीतियों, सामग्री एवं उपकरणों का चयन एक व्यवस्थित निर्णय प्रक्रिया है। इसमें शिक्षक बालक के IEP लक्ष्यों, ऑडियोग्राम, वाक् बोध स्कोर, Ling 6-Sound Test परिणाम, एवं सीखने की शैली का विश्लेषण करके ऐसी विधियों एवं साधनों का चुनाव करता है जो:

अवशिष्ट श्रवण का अधिकतम उपयोग करें — Amplification + Auditory Training

बहु-संवेदी निवेश प्रदान करें— VAKT Approach

दैनिक संप्रेषण में स्थानांतरण सुनिश्चित करें — Functional Communication

बालक की प्रेरणा एवं सक्रिय सहभागिता बढ़ाएं — Play-way, AAC

6.4- परिभाषा /Definition

Dr. Daniel Ling Famous Audiologist और Speech Pathologist थे. इन्होंने Ling Six Sound Test और Auditory Verbal Approach को popular किया. HI बच्चों के लिए वाक् शिक्षण के पितामह माने जाते हैं. इनकी परिभाषा निम्न प्रकार है।

Daniel Ling (2002): "The selection of speech teaching strategies for hearing impaired children must be based on ongoing diagnostic teaching that matches the child's perceptual abilities with appropriate sensory input".

RCI, D.Ed. Spl. Ed. (HI) Manual: "उपयुक्त रणनीति एवं सामग्री वह है जो बालक के प्रवेश व्यवहार, IEP लक्ष्यों एवं संसाधनों की उपलब्धता के अनुरूप हो तथा अवशिष्ट श्रवण, दृश्य एवं स्पर्श माध्यमों का समन्वित उपयोग करे".

Boothroyd (1993) "Equipment selection must ensure optimal audibility of speech spectrum 250-6000 Hz at conversational levels in classroom".

6.5 भारत में श्रवण बधिर बालकों की स्थिति

श्रवण बाधिता जन्म से अथवा अर्जित कारणों से उत्पन्न संवेदी विकलांगता है जो बालक के भाषा एवं वाक् विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

2011 की जनगणना में कुल दिव्यांग जनसंख्या का 19% श्रवण बाधित हैं। एवं जन्म दर की स्थिति में प्रति 1000 नवजात शिशुओं में 1.5 से 6 बच्चे जन्मजात श्रवण दोष के साथ पैदा होते हैं। भारत में हर साल 27,000 के लगभग बच्चे बहरेपन के साथ जन्म लेते हैं।इसी प्रकार ग्रामीण-शहरी अंतर में ग्रामीण क्षेत्रों में बहरेपन की दर 7.4% है जबकि शहरी क्षेत्रों में 4.6% है।

वाक् पर प्रभाव, सुनने की समस्या वाले बच्चों को स्पष्ट एवं निरंतर श्रवण फीडबैक प्राप्त नहीं होता, जिसका असर ध्वनि-इकाई-Phoneme अधिग्रहण, लय, स्वराघात और वाक् स्पष्टता पर पड़ता है।

Dr. Daniel Ling का कथन "HI child is primarily an auditory child who must be taught to use his residual hearing maximally".

वाक् /भाषा का समाधान केवल मौखिक विधि से संभव नहीं. इसमें दृश्य, श्रव्य, स्पर्श एवं गतिज माध्यमों का समन्वित उपयोग अनिवार्य है.

महत्वपूर्ण तथ्य ये है कि 6 माह की आयु से पहले हस्तक्षेप शुरू होने पर HI बालक की भाषा सामान्य बालक के समकक्ष विकसित हो सकती है।

6.6 चयन के मुख्य सिद्धांत / Key Principles of Selection

रणनीतियाँ, सामग्री और उपकरण चुनते समय इन 9 बातों का ध्यान रखें:

1. व्यक्तिगत ज़रूरतें आयु, समस्या का प्रकार एवं गंभीरता, मानसिक स्तर, संवेदी क्षमताएँ।

2. IEP लक्ष्य Individualized Education Program में तय की गई ध्वनियाँ, शब्दावली, प्रवाह या व्यावहारिक भाषा कौशल।

3.ऑडियोलॉजिकल प्रोफ़ाइल, बिना सहायता/सहायता के ऑडियोग्राम, वाक् बोध स्कोर-WRS, PB-K सूचियाँ।

4. वाक् प्रोफ़ाइल Speech Intelligibility Rating, Ling 6-Sound Test, ध्वन्यात्मक सूची.

5. भाषा का स्तर*: भाषा आयु < 3 वर्ष हो तो वाक् से पहले भाषा पर ध्यान दें।

6. संचार का माध्यम मौखिक, सांकेतिक, द्विभाषी-द्विसंस्कृतिक।

7. शैक्षिक परिवेश समावेशी विद्यालय vs विशेष विद्यालय vs संसाधन कक्ष।

8. सीखने का तरीका: देखकर-Visual, सुनकर- Auditory,छूकर-Tactile या शारीरिक गतिविधियों के ज़रिए।

9. व्यावहारिकता सामग्री ऐसी हो जो बालक के दैनिक जीवन में संचार को बढ़ावा दे, रटने पर ज़ोर न दे।

3.7 चयन का वैज्ञानिक आधार / Scientific Basis for Selection

हम कोई भी तरीका, सामान या मशीन ऐसे ही नहीं चुन लेते हैं बल्कि पहले उसको जांचते है परखते हैं।उसी तरह बच्चे का परीक्षण करके वैज्ञानिक तरीके से तय करते हैं कि उसके लिए क्या सबसे अच्छा चयन क्या रहेगा।

6.7.1 श्रवणात्मक प्रोफ़ाइल

Unaided/Aided Audiogram, Speech Banana, WRS, Ling 6-Sound इसका मतलब बच्चे को बिना मशीन और मशीन के साथ कितना सुनाई देता है, इसकी जाँच करते हैं Ling 6-Sound यानी /अ, ऊ, ई, श, स, म/ सुनाकर देखते हैं कि कौन सी आवाज़ें पकड़ पा रहा है।

अगर मशीन लगाकर 1000 से 4000 Hz की आवाज़ें 35 dB से बेहतर सुन रहा है, तो Auditory-Verbal Therapy चुनेंगे. यानी सिर्फ सुनकर बोलना सिखाएँगे, होंठ देखने की जरूरत नहीं है।

6.7.2 वाक् प्रोफ़ाइल

PIC, Speech Intelligibility Rating, Phonetic Inventory: इसमें ये जांच करते हैं कि

बच्चा कौन-कौन सी आवाज़ें साफ बोल पाता है और उसकी बात कितनी समझ आती है। अगर बच्चा सिर्फ स्वर /अ, आ, इ/ ही साफ बोल पा रहा है, व्यंजन नहीं, तो Visual-Phonetics भी जोड़ देंगे। यानी होंठ-जीभ की Position दिखाकर सिखायेंगे।

6.7.3 भाषा स्तर

REELS, LPT Hindi भाषा आयु < 3 वर्ष हो तो पहले भाषा विकास पर ध्यान दे। इसमें ये पता करते है कि बच्चे की भाषा कितने साल के बच्चे जितनी है। अगर भाषा का स्तर 3 साल से कम है, तो पहले भाषा विकास पर काम करेंगे। यानी "यह क्या है?", "कहाँ है?" जैसे प्रश्न-उत्तर सिखायेंगे। वाक्-स्पष्टता को बाद में देखते हैं।

6.7.4 संज्ञानात्मक स्तर

इसमें बच्चे की समझ, सोचने-समझने की क्षमता कितनी है यह देखते हैं। यदि बच्चे को हल्की बौद्धिक अक्षमता-Mild ID है, तो Concrete material + Activity based तरीका अपनाते हैं। बच्चे को वास्तविक वस्तु के माध्यम से तथा खेल खेल में सिखायेंगे।

6.7.5 संचार माध्यम

इसमें बच्चे के माता-पिता से बातचीत करते हैं । जानकारी प्राप्त करते हैं कि घर पर बच्चा कैसे बात करता है? इशारे से, बोलकर, या दोनों से? इसी से तय करते हैं कि ऑरल Oral (सिर्फ बोलकर), अथवा संपूर्ण संचार Total Communication (बोलना+इशारा) या Sign Bilingual (सांकेतिक भाषा) से पढ़ाना है।

6.7.6 सीखने की शैली

अवलोकन चेकलिस्ट Visual learner हेतु Cued Speech, Tactile हेतु Tadoma बच्चे का निरीक्षण करके उससे संबंधित चेकलिस्ट भरते हैं कि बच्चा देखकर जल्दी सीखता है या छूकर या सुनकर? अगर बच्चा देखकर सीखने वाला-Visual Learner है तो Cued Speech प्रयोग करते हैं। अगर छूकर सीखने वाला-Tactile है तो Tadoma Method लगायेंगे।

6.8 भाषा शिक्षण की उपयुक्त रणनीतियाँ - Appropriate Teaching Strategies

A. श्रवण-आधारित रणनीतियाँ

1. Ling's Model श्रवण-आधारित रणनीतियाँ Ling's Model यदि बच्चे को मशीन से ठीक-ठाक सुनाई देता है तब निम्न रणनीतियां अपनाते हैं।.

सुनने की ट्रेनिंग. इसके चार सोपान हैं।

Detection - आवाज़ है या नहीं? ताली बजाएँ तो पता चले।

Discrimination -दो आवाज़ों में फर्क पता करना. /पा/ vs /बा/

Identification- पहचानना. /स/ सुनकर बताना कि ये "साँप" वाली आवाज़ है।

Comprehension- सुनकर समझना. "दरवाजा बंद करो" सुनकर काम करना।

Ling 6-Sound /अ, ऊ, ई, श, स, म् / रोज सुनाना, क्योंकि ये पूरी बोलने की Range Cover करते हैं।

2. Acoustic Highlighting

बालक को ध्वनि सिखाने में जो लक्षित ध्वनि को उभार कर बोलना जैसे /स/ सिखाना है तो "sss-सूरज" बोलेंगे. 'स' को लंबा खींचकर बोला जाएगा।

3. Auditory Sandwich

सुनो-देखो-सुनो इसमें पहले बालक के समक्ष बिना होंठों को दिखाए (Lip-reading) म बोलना, यदि बालक न समझे तो होंठ दिखाकर म बोलें उसके बाद फिर से बिना होंठ हिलाए म बोलें।

4. Auditory-Verbal Therapy

Parent coaching, सुनने पर ज़ोर.

इसमें माता-पिता को कोचिंग करते हैं कि बालक को घर पर सिर्फ सुनकर सिखाने पर जोर देना है। होंठ पढ़ना, इशारा करना मना होता है।

B. दृश्य-स्पर्श संबंधी रणनीतियाँ-

1. Cued Speech

Dr. Cornett द्वारा विकसित. 8 हैंडशेप्स+ 4 स्थान पर हाथ रख कर बोलते हैं। पोजीशन से होंठों पर न दिखने वाली ध्वनियाँ /k, g, h अथवा क, ख, ग/ स्पष्ट हो जाती हैं।

2. Speech Reading with Visual Phonics

इसमें हाथ के संकेत से ध्वनि की विशेषता बताते है कि आवाज कैसे बनी जैसे /प/ के लिए होंठ बंद करके फूंक मारने का संकेत करना।

3. Tadoma Method

इसमें बच्चे के हाथ को उसके गले, जबड़े, नाक पर रखवा कर बोलने पर हुए गले के कंपन, नाक से वायु-प्रवाह महसूस करना. ये प्रोफाउंड बधिर बच्चों के लिए है।

4. VAKT Approach Visual-Using, Auditory -सुनना, Kinesthetic-गति, Tactile-छूना का समन्वित उपयोग.

इस विधि में बच्चे की एक साथ चार तरीकों से वाक् सिखाया जाता है।

V - Visual - बच्चे को चित्र के साथ होंठ को भी दिखाते हैं।

A - Auditory - सुनना।

K - Kinesthetic - जीभ एवं होंठ की गतिविधि।

T - Tactile - बच्चे से गले पे कंपन्न छूना।

उदाहरण के लिए यदि बच्चे को ब सिखाना है तो ब का चित्र दिखाओ , ब का उच्चारण करो, होंठ बंद करवाओ तथा गले पर कंपन महसूस करो। ये सब एक साथ करना है।

C. मौखिक-पेशीय रणनीतियाँ -

1.Van Riper's Phonetic Placement

दर्पण के सामने बच्चे को बैठा कर Tongue Depressor चम्मच से जीभ को /त/ के स्थान पर लगवाया जाए।

2. Motor-Kinesthetic: Prompt Method इसमें बच्चे के चेहरे पर स्पर्श करके बताते है कि होंठ और जबड़ा कैसे हिलाना है। इसमें स्पीच थैरेपिस्ट बच्चे को उंगली से दिशा दिखाता है।

3. Traditional Articulation Therapy

इसमें इसका क्रम स्थाई होता है जैसे-

Isolation- सिर्फ /क/ बोलो, syllable -/का, की,कु ,

Word- /कमल/, sentence = /कमल खिल गया,

Conversation = बातचीत में प्रयोग।

D. संज्ञानात्मक-भाषाई रणनीतियाँ-

1. Language Experience Approach - LEA:

इसमें बालक के अनुभव को शिक्षक ब्लैक बोर्ड पर लिख कर बच्चे से पढ़वाएं। जैसे - बच्चा बोले आज मैं बाजार गया। तो उसके कहे वाक्य को लिखें, फिर बच्चे से पढ़वाएं कि "आज हम बगीचे गए"।

2. KWL Chart: Know-Want-Learned-

पूर्व ज्ञान सक्रिय करना.

इसमें बच्चे से तीन खाने बनवाए जाते हैं।

K- know-u- से क्या पता?

W- what-क्या जानना चाहते हो?

L-Learned- क्या सीखा? इससे बच्चे का दिमाग सक्रिय होता है।

3. Think-Pair-Share

मौखिक अभिव्यक्ति + सामाजिक कौशल.

इसमें पहले बच्चा विचार करता है फिर अपने सहपाठी से बात करता है उसके बाद कक्षा में बताता है।इससे बच्चे की बोलने में झिझक निकल जाती है।

4. Graphic Organizer

इसमें Semantic Map, Story Web sadi से बच्चे का शब्दकोश को बढ़ाया जाता है। जैसे केला बीच में लिखो, और चारों तरफ रंग, स्वाद, मौसम लिखो तथा एक पेड़ बनाओ।इस तरह से बच्चे के शब्दकोष में शब्दों की मात्रा बढ़ जाती है।

E. कक्षा प्रबंधन रणनीतियाँ

कक्षा प्रबंधन की रणनीतियाँ कक्षा में रोजाना प्रयोग करनी चाहिए। रोज़ाना जिससे बच्चा सुन और समझ सके।

1. Preferential Seating: जिस कान से बच्चा बेहतर सुनता हो उस कान को शिक्षक की ओर करके शिक्षक से 3-6 फीट दूरी पर आगे की तरफ बैठाना चाहिए ।

2. Speaker Visibility: कक्षा ने पढ़ते समय शिक्षक का चेहरा रोशनी में हो ताकि बचा उसके होंठों की गतियां देख सकें।। शिक्षक की क्लीन शेव रहना चाहिए।

3. Noise Control: कालीन, पर्दे, दरवाजा बंद. लक्ष्य SNR +15 dB.

कक्षा में कालीन, पर्दे लगे हों एवं दरवाजा बंद रखना चाहिए जिससे बाहर की आवाज अंदर न आने पाए। आवाज़ और शोर का अनुपात *SNR +15 dB* होना चाहिए. यानी शिक्षक की आवाज़ शोर से 15 गुना तेज होनी चाहिए ।

4. Captioning: सभी वीडियो में सबटाइटल, PPT में मुख्य बिंदु लिखित.

बच्चे को जो भी वीडियो दिखाओ उसमें सबटाइटल होने चाहिए। PPT में मुख्य बातें लिखी होनी चाहिए।

5. Buddy System: इसमें बधिर बच्चे को सुनने वाला एक साथी की जरूरत होती है जो उसे नोट्स की कार्बन कॉपी दे सके।

6.9 शिक्षण सामग्री / Teaching Learning Material - TLM

क्षेत्र **सामग्री** **HI हेतु अनुकूलन**

ध्वनि शिक्षण Sound-Lotto, Minimal Pair Cards /प-फ/, दर्पण चित्र बड़े, उच्च Contrast, लेबल Hindi + English

शब्दावली Real Objects, Flannel Board, Experience Charts वस्तु + चित्र + शब्द + संकेत एक साथ

वाक्य संरचना Sentence Strips, Color Coded Cards संज्ञा-पीला, क्रिया-लाल

वाक् स्पष्टता Speech Mirror, Vowel Chart, Sagittal Section Model 3D मॉडल से जीभ की स्थिति।

AAC PECS Book, Communication Board, ISL Chart भारतीय संदर्भ के चित्र — रोटी, कुर्ता।

अन्य सामग्री:

1. **दृश्य सहायक:** फ्लैशकार्ड, उच्चारण कार्ड, मुख के मॉडल।

2. **श्रवण सामग्री**: रिकॉर्ड किए गए न्यूनतम जोड़े /bat-pat/, तुकबंदी वाली CDs.

3. **स्पर्श-गतिज सामग्री**: /प, ब/ ध्वनियों के लिए पंख, कंपन महसूस करने के लिए Voicing Bottles.

4. **कम लागत वाली स्थानीय सामग्री**: हिंदी/क्षेत्रीय भाषा में फ्लैशकार्ड, सांस्कृतिक चित्र पुस्तकें.

निर्माण के सिद्धांत: 1. टिकाऊ 2. सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक 3. बहु-संवेदी 4. Low-cost 5. त्रुटि-रहित।

6.10 तकनीकी उपकरण / Assistive Technology & इक्विपमेंट

उपकरण **विशिष्टता** **CWHI हेतु उपयोग**

Hearing Aid BTE Wide Dynamic Range Compression 250-6000 Hz प्रवर्धन, Daily Listening Check

Cochlear Implant Speech Processor + Electrode Array MAP updated, FM compatible

FM System Roger Pen, Remote Microphone शिक्षक की आवाज़ सीधे HA/CI में, SNR +20 dB सुधार

Sound Field System 4 स्पीकर कक्षा में Mild-Moderate HI, UDL लाभ सभी को

Speech Trainer Vagmi, SPERTS, Dr. Speech पिच, तीव्रता, नासिकता का दृश्य फीडबैक

Software PRAAT, Speech Viewer, Balabolka Hindi TTS Spectrogram विश्लेषण, स्व-मूल्यांकन

Vibrotactile Aid Tactaid Profound HI + No benefit from HA/CI

Captioning Tools Live Caption Chrome, Google Meet CC वास्तविक समय पाठ सहायता

Loop Induction Resource Room में स्थापित T-coil मोड पर HA उपयोग

अन्य उपकरण:

1. **शीशा**: उच्चारण को खुद से जाँचने के लिए।

2. **ऑडियो रिकॉर्डर:** रिकॉर्डिंग दोबारा सुनने के लिए।

3. **स्पीच ऐप्स:** Articulation Station, Splingo, Otsimo.

4. **AAC उपकरण:** Proloquo2Go, Touch Chat वाले टैबलेट।

6.11 वाक् शिक्षण की मुख्य पद्धतियाँ

1. Auditory Global Approach: कैल्वर्ट और सिल्वरमैन-1975. सुनने पर ज़ोर, Visual/Tactile का कम प्रयोग. घर-स्कूल दोनों में।

2. Auditory Oral Approach: शीघ्र पहचान पर ज़ोर. Lip Reading + Amplification + Contextual Cues.

3. Aural-Oral Approach: बालक के सामने खड़े होकर बोलना, सरल शब्द, Body Language, शब्द दोहराना।

4. Auditory Verbal Approach - AVT: Parent Oriented. शेष श्रवण क्षमता का अधिकतम उपयोग. चार स्तर: Detection, Discrimination, Identification, Comprehension.

5. Multi-Sensory Syllable Unit Approach: Severe-Profound HI हेतु. Auditory + Visual + Tactile. लिखित रूप का प्रयोग।

6. Ling का तरीका-1976:

सिद्धांत 1: HI बालक को उसी क्रम में सीखना चाहिए जिस क्रम में सामान्य बालक बोलता है।

सिद्धांत 2: सामान्य वार्तालाप में बोलने के अवयव — होंठ, दाँत, तालू, जीभ, गला का कार्य बताना।

क्रम: Phonetic स्तर पर स्वर फिर व्यंजन, फिर Phonological स्तर।

6.12 क्षेत्रीय भाषा आधारित वाक् मूल्यांकन परीक्षणों के उपयोग की आवश्यकता

वाक् और भाषा के मूल्यांकन में श्रवण बाधित बालकों का व्यक्तिगत इतिहास तथा नैदानिक इतिहास बहुत महत्वपूर्ण होता है। बालक के वाक् से संबंधित मूल्यांकन से पहले यह देखना आवश्यक है कि उसके बोलने में सहायक अंगों जैसे होंठ, जीभ, दाँत, तालू की बनावट कैसी है, उसे बातचीत करने में कहाँ कठिनाई आती है, उसकी पुरानी चिकित्सीय रिपोर्ट क्या कहती है, तथा शिक्षक, सहपाठी, मित्र और परिवार के सदस्यों से उसके बोलने संबंधी व्यवहार की जानकारी लेना जरूरी है। इन्हीं सब सूचनाओं के आधार पर विशेषज्ञ यह तय करते हैं कि बालक को वाक् संबंधी कौन-सी विशिष्ट समस्या है।

अमेरिकन स्पीच-लैंग्वेज-हीयरिंग एसोसिएशन यानी ASHA के 2004 के दिशा-निर्देशों के अनुसार वाक्-भाषा विकृति विज्ञान के व्यापक मूल्यांकन में कई घटक होते हैं। इसमें सबसे पहले बालक का वैयक्तिक इतिहास लिया जाता है जिसमें उसकी चिकित्सीय स्थिति, शिक्षा में उपलब्धियाँ, समग्र व्यवहार, परिवार की आर्थिक स्थिति के साथ-साथ उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि भी देखी जाती है। इसके अलावा माता-पिता और परिवार के सदस्यों के साथ साक्षात्कार करके बालक की सुनने, देखने, गति करने और समझने की क्षमता की समीक्षा की जाती है। बालक के वाक् व्यवहार, भाषा संबंधी कठिनाइयों का निरीक्षण मानकीकृत तथा गैर-मानकीकृत मापदंडों से किया जाता है. इसके बाद बालक की क्षमता के अनुसार प्रभावी हस्तक्षेप रणनीतियों एवं उपयुक्त सामग्री की पहचान की जाती है। मूल्यांकन के लिए ऐसे मानकीकृत परीक्षण चुने जाते हैं

जो बालक की भाषा और संस्कृति के अनुकूल हों। जिन श्रवण बाधित बालकों को बोलने, भाषा प्रयोग तथा संज्ञानात्मक संचार में समस्या है, उनके लिए उचित हस्तक्षेप सुनिश्चित करना तथा निरंतर निगरानी एवं अनुवर्तन सेवाएँ देना आवश्यक है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में जहाँ 121 भाषाएँ 10,000 से अधिक लोग बोलते हैं, वहाँ श्रवण बाधित बालक उसी भाषा में सोचता और समझता है जो उसके घर में बोली जाती है। समस्या यह है कि हमारे पास वाक् मूल्यांकन के लिए हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं में परीक्षण बहुत कम हैं। अधिकांश परीक्षण जैसे गोल्डमैन-फ्रिस्टो टेस्ट अंग्रेजी भाषा के लिए बने हैं। जब हम हिंदी भाषी या भोजपुरी, गढ़वाली बोलने वाले बच्चे का मूल्यांकन अंग्रेजी शब्द "Cat, Ball, Fish" से करते हैं, तो परिणाम सही नहीं आते. इसका कारण है कि हर भाषा की अपनी अलग ध्वनियाँ होती हैं। जैसे मराठी में /ळ/ ध्वनि है जो हिंदी-अंग्रेजी में नहीं है। यदि परीक्षण में बालक की भाषा की ध्वनियाँ ही न हों तो निदान अधूरा रहेगा। दूसरा कारण सांस्कृतिक पक्षपात है. अंग्रेजी परीक्षणों में "Zebra, Zipper" जैसे चित्र होते हैं जिन्हें गाँव का बच्चा कभी देखता ही नहीं। बच्चा चित्र न पहचान पाने के कारण चुप रह जाता है और हम उसे वाक् दोष मान लेते हैं, जबकि गलती परीक्षण की है। ऐसे गलत मूल्यांकन से गलत चिकित्सा योजना बनती है और बालक का बहुमूल्य प्रारंभिक समय नष्ट हो जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और RPwD Act,2016 में भी कहा गया है कि शिक्षण और मूल्यांकन जहाँ तक संभव हो मातृभाषा में होना चाहिए। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 भी हर दिव्यांग बच्चे को अपनी भाषा में शिक्षा और संचार का अधिकार देता है। भारतीय पुनर्वास परिषद भी मानती है कि वाक्-भाषा विकृति विज्ञानी का कर्तव्य है कि वह रोगी की सबसे दक्ष भाषा में मूल्यांकन करे।

इसलिए यह जरूरी है कि हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में मानकीकृत वाक् मूल्यांकन परीक्षण विकसित किए जाएँ। जब परीक्षण बालक की अपनी भाषा में होगा तो परिणाम वास्तविक और शुद्ध होंगे। इससे हस्तक्षेप की योजना भी सटीक बनेगी और बालक को शीघ्र लाभ मिलेगा। सार यह है कि बच्चे को बदलने

से पहले अपना परीक्षण बदलना होगा. बच्चे की भाषा में मूल्यांकन करें, अपनी भाषा उस पर न थोपें।

6.13 विशेष शिक्षक की भूमिका / Role of Special Educator

1. Diagnostician: निरंतर मूल्यांकन करके रणनीति बदलना — Dynamic Assessment.

2. Collaborator: Audiologist, SLP, Parents के साथ अंतःविषयक टीम।

3. Adapter: NCERT पाठ्यपुस्तकों को HI अनुकूल बनाना — Captioned, Simplified.

4. Trainer: सामान्य शिक्षक को "HI Friendly Classroom" पर प्रशिक्षण।

5. Data Manager: Single Subject Research Design से प्रभावकारिता सिद्ध करना.

6. Advocate: ALIMCO, ADIP योजना से उपकरण दिलवाना।

6.14 प्रभावी शिक्षण के लिए अतिरिक्त सुझाव

1. कक्षा व्यवस्था: रोशनी अच्छी हो. शिक्षक बच्चे के सामने खड़े होकर बात करें, बोर्ड की तरफ पीठ करके नहीं।

2. पूर्व शिक्षण शब्दावली: नए पाठ के शब्द पहले से स्पष्ट करें।

3. लिखित निर्देश: मौखिक के साथ श्यामपट्ट पर लिखकर निर्देश दें।

4. गतिविधि-आधारित शिक्षण: कहानी सुनाना, अभिनय, करके सीखना।

5. सकारात्मक सुदृढ़ीकरण: धैर्यपूर्वक व्यवहार, Praise का उपयोग।

6. प्रस्तुतीकरण: Paralanguage के पहलू, उत्साह, जिज्ञासा शामिल करें।

6.15 सामान्य गलतियाँ जिनसे बचना चाहिए

1. सभी बच्चों के लिए एक ही सामग्री का इस्तेमाल करना।

2. बिना व्यावहारिक अभ्यास के सिर्फ वर्कशीट पर निर्भर रहना।

3. बच्चे के स्तर से बहुत मुश्किल उपकरण चुनना.

4. बच्चे की पसंद को नज़रअंदाज़ करना प्रेरणा जरूरी है।

6.16 वर्तमान रुझान और अनुसंधान

1. NEP 2020: सभी B.Ed Spl. Ed. में AT अनिवार्य.

2. DIKSHA Portal: ISL वीडियो, Captioned content.

3. AI Apps: "AVA" real-time captioning, "SpeakSee" Hindi.

4. Tele-Practice: C-NES द्वारा पूर्वोत्तर में Speech Tele-therapy.

5. ISL Inclusion: Class 6-12 में ISL वैकल्पिक विषय — 2021.

6.17 निष्कर्ष / Conclusion

श्रवण बाधित बालकों हेतु भाषा शिक्षण "Child-First, Technology-Next" सिद्धांत पर आधारित है. कोई भी एक रणनीति सर्वश्रेष्ठ नहीं है। "Appropriate" का अर्थ है — बालक की श्रवण, भाषा, संज्ञानात्मक प्रोफ़ाइल से मेल खाना + IEP लक्ष्यों को प्राप्त करना + कक्षा में व्यावहारिक होना। Vagmi से लेकर FM system तक, Cued Speech से लेकर AAC तक — चयन का आधार Data, Not Preference होना चाहिए. जब सही रणनीति, सही सामग्री एवं सही उपकरण का त्रिकोण बनता है, तभी CWHI "सुनकर बोलना" सीखता है और समावेशी समाज का सक्रिय सदस्य बनता है।

भाषण सिखाने का असरदार तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि सही समय पर, सही बच्चे के लिए, सही उपकरण चुना जाए। एक लचीला, बच्चे पर केंद्रित तरीका और लगातार मूल्यांकन, बच्चे की प्रगति को पक्का करता है।

6.18 तकनीकी शब्दों की व्याख्या

AVT = Auditory-Verbal Therapy (श्रवण-मौखिक चिकित्सा)

3. VAKT = Visual-Auditory-Kinesthetic-Tactile*

(बहु-संवेदी दृष्टिकोण)

1. V = Visual* = देखकर = चित्र, मुख मॉडल, होंठ देखना

2. A = Auditory* = सुनकर = FM System, शिक्षक की आवाज़

3. K = Kinesthetic* = गति से = जीभ-होंठ की movement महसूस करना

4. T = Tactile* = छूकर = गले का कंपन, हवा का फूंक महसूस करना

ऑडियोमीटर: समय-समय पर सुनने की सीमा (threshold level) की जाँच के लिए।

Speech Trainer: SPERT, Vagmi जैसी मशीनें — आवाज़ के मापदंडों का दृश्य फीडबैक प्रदान करती हैं।

स्पेक्ट्रोग्राफ/सॉफ्टवेयर PRAAT, Wave Surfer

6.19 सारांश

श्रवण बाधित बालकों के लिए वाक्-भाषा शिक्षण हेतु रणनीतियों, सामग्री एवं उपकरणों का चयन बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए। प्रत्येक बालक शारीरिक, बौद्धिक एवं संवेदी रूप से भिन्न होता है, इसलिए "एक ही रणनीति सभी पर लागू नहीं होती". चयन के मुख्य सिद्धांतों में IEP लक्ष्य, ऑडियोलॉजिकल प्रोफ़ाइल, वाक् प्रोफ़ाइल, भाषा स्तर, संज्ञानात्मक स्तर, संचार माध्यम एवं सीखने की शैली को आधार बनाया जाता है। वैज्ञानिक आधार पर श्रवणात्मक प्रोफ़ाइल हेतु Ling 6-Sound Test, वाक् प्रोफ़ाइल हेतु Speech Intelligibility Rating, भाषा स्तर हेतु REELS जैसे परीक्षणों से तय होता है कि Auditory-Verbal Therapy, Visual-Phonetics या Total Communication में से क्या चुना जाए।

शिक्षण की प्रमुख रणनीतियाँ 5 प्रकार की हैं: 1. श्रवण-आधारित - Auditory Training, Acoustic Highlighting, Auditory Sandwich, 2. दृश्य-स्पर्श - Cued Speech, Tadoma, VAKT, 3. मौखिक-पेशीय - Van Riper’s Phonetic Placement, Prompt Method, 4. संज्ञानात्मक-भाषाई - LEA, KWL Chart, 5. कक्षा प्रबंधन - Preferential Seating, Noise Control, Captioning. सामग्री में Sound-Lotto, दर्पण, Real Objects, AAC

उपकरण तथा उपकरणों में Hearing Aid, Cochlear Implant, FM System, Speech Trainer, PRAAT Software का उपयोग होता है।

भारत में जनगणना 2011 के अनुसार कुल दिव्यांगों में 19% श्रवण बाधित हैं। समस्या यह है कि अधिकांश मूल्यांकन परीक्षण अंग्रेजी में हैं, जबकि बालक हिंदी या क्षेत्रीय भाषा में सोचता है। NEP 2020 एवं RPwD Act 2016 के अनुसार मूल्यांकन मातृभाषा में होना चाहिए.ल। विशेष शिक्षक की भूमिका Diagnostician, Collaborator, Adapter एवं Advocate की है. निष्कर्ष यह है कि सही रणनीति + सही सामग्री + सही उपकरण का त्रिकोण ही श्रवण बाधित बालक को "सुनकर बोलना" सिखाता है। चयन का आधार "Data, Not Preference" होना चाहिए.ल।

6.20 संदर्भ ग्रंथ सूची / References*

लिंग, डी. (2002). _Speech and the hearing-impaired child: Theory and practice_ (2nd ed.). Alexander Graham Bell Association.

शर्मा, एम., एवं गुप्ता, ए. (2018). _श्रवण बाधित बालकों को वाक् शिक्षण_. कनिष्क पब्लिशर्स।

भारतीय पुनर्वास परिषद्.(2015). _डी.एड. विशेष शिक्षा (श्रवण बाधिता) पाठ्यक्रम_. मॉड्यूल 3, इकाई 2: वाक् शिक्षण हेतु रणनीतियाँ. नई दिल्ली: आर.सी.आई. रणनीति, सामग्री एवं उपकरण चयन के आधिकारिक दिशा-निर्देश।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2019). _प्राथमिक विद्यालय में श्रवण बाधित बच्चों को शामिल करना ।

राव, वी., एवं रेड्डी, जी. एल. (2016). _Education of children with hearing impairment_. हैदराबाद: नीलकमल पब्लिकेशन्स.

पांडेय, आर. एस. (2020). _श्रवण बाधिता: शिक्षण एवं पुनर्वास_ [Hearing impairment: Teaching and rehabilitation]. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). _राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020_. नई दिल्ली: भारत सरकार.ल।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय. (2016). _दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016_. भारत का राजपत्र.ल।

बूथरॉयड, ए. (1993). Speech perception, sensorineural hearing loss, and hearing aids. In _Acoustical factors affecting hearing aid performance_ (pp. 63–78). Allyn & Bacon.

गोपाल, के., एवं मेहरा, एस. (2020). Effectiveness of FM system in inclusive classroom in India. _Disability, CBR & Inclusive Development, 31_(2), 45–62.

6.21 निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.श्रवण बाधित बालकों हेतु वाक्-भाषा शिक्षण के लिए रणनीति, सामग्री एवं उपकरण चयन के मुख्य सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या कीजिए। IEP लक्ष्यों एवं ऑडियोलॉजिकल प्रोफ़ाइल की भूमिका को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2. "कोई एक रणनीति सभी श्रवण बाधित बालकों पर लागू नहीं होती" — इस कथन के आलोक में चयन के वैज्ञानिक आधार की विवेचना कीजिए।

श्रवणात्मक प्रोफ़ाइल, वाक् प्रोफ़ाइल एवं संज्ञानात्मक स्तर के आधार पर उपयुक्त रणनीति चयन की प्रक्रिया समझाइए।

प्रश्न 3.श्रवण बाधित बालकों के लिए Ling's Model पर आधारित श्रवण-आधारित रणनीतियों का वर्णन कीजिए। Auditory Training, Acoustic Highlighting, Auditory Sandwich एवं Auditory-Verbal Therapy को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4. भारत में श्रवण बाधित बालकों की वर्तमान स्थिति एवं क्षेत्रीय भाषा आधारित वाक् मूल्यांकन परीक्षणों की आवश्यकता पर निबंध लिखिए। NEP 2020 तथा RPwD Act 2016 के संदर्भ में मातृभाषा में मूल्यांकन के महत्व पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 5.श्रवण बाधित बालकों के वाक्-भाषा शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले सहायक उपकरणों एवं तकनीकी उपकरणों का वर्गीकरण कीजिए। Hearing Aid, Cochlear Implant, FM System, Speech Trainer एवं AAC Devices की विशेषताएँ तथा कक्षा में उपयोगिता विस्तार से बताइए. विशेष शिक्षक की भूमिका भी स्पष्ट कीजिए।

इकाई 7

विभिन्न आयु समूहों के श्रवण बाधित व्यक्तियों में मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल्यांकनरू चुनौतियाँ एवं चिंताएँ (मानकीकृत बनाम शिक्षक-निर्मित उपकरणय मानदण्डों का निर्धारणय ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक भाषा का मापनय मापन योग्य संकेतकों की पहचान

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 भाषा मूल्यांकन का वैचारिक एवं शैक्षिक आधार

7.3.1 भारतीय सांकेतिक भाषा की परिभाषा एवं विशेषताएँ

7.3.2 श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा विकास के प्रमुख शैक्षिक उपागम एवं उनका भाषा मूल्यांकन

7.3.3 भाषा मूल्यांकन पर विभिन्न शैक्षिक उपागमों का प्रभाव

7.3.4 सांस्कृतिक, भाषाई एवं अधिकार-आधारित दृष्टिकोण

7.4 विभिन्न आयु समूहों में भाषा विकास एवं मूल्यांकन

7.4.1 भाषा मूल्यांकन का विकासात्मक एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या आधारित दृष्टिकोण

7.4.2 प्रारम्भिक बाल्यावस्था (जन्मदृ3 वर्ष)

7.4.3 आधारभूत अवस्था (3दृ8 वर्ष)

7.4.4 तैयारी अवस्था (8-11 वर्ष)

7.4.5 मध्य अवस्था (11-14 वर्ष)

7.4.6 माध्यमिक अवस्था (14दृ18 वर्ष)

7.4.7 उच्च शिक्षा, वयस्क अवस्था एवं जीवनपर्यन्त भाषा मूल्यांकन

7.5 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल्यांकन

7.5.1 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा (समानताएँ एवं भिन्नताएँ)

7.5.2 भाषा मूल्यांकन के प्रमुख आयाम

7.5.3 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन की चरणबद्ध प्रक्रिया

7.5.4 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन के उपकरण, तकनीकें एवं समकालीन दृष्टिकोण

7.5.5 भाषा मूल्यांकन में विश्वसनीयता, वैधता, निष्पक्षता एवं नैतिक विचार

7.5.6 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकनरू सर्वोत्तम प्रथाएँ, सामान्य त्रुटियाँ, भारतीय चुनौतियाँ एवं भविष्य की दिशाएँ

7.6 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन में चुनौतियाँ एवं चिंताएँ

7.6.1 भाषा मूल्यांकन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

7.6.2 मौखिक भाषा मूल्यांकन की विशिष्ट चुनौतियाँ

7.6.3 भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) मूल्यांकन की विशिष्ट चुनौतियाँ

7.6.4 द्विभाषिक (भारतीय सांकेतिक भाषादृमौखिकध्लिखित भाषा) मूल्यांकन की चुनौतियाँ एवं समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्य

7.7 अध्याय सारांश

7.8 मुख्य शब्द

7.9 यूनिट के अंत में होने वाली Ûतिविधियाँरू

7-10 यूनिट के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

7-11 अधिन्यास ध् क्रियाकलाप

7-12 चर्चा के बिंदु और स्पष्टीकर.ा

7-13 सुझा पठन और संदर्भ

7.1 प्रस्तावना

भाषा मनुष्य के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक तथा शैक्षणिक विकास का आधार है। भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सीखने, समस्या-समाधान, निर्णय लेने, सामाजिक सहभागिता तथा सांस्कृतिक पहचान के निर्माण की भी प्रमुख आधारशिला है। किसी भी व्यक्ति के लिए भाषा का विकास उसके अनुभवों, सामाजिक वातावरण, संप्रेषण के अवसरों तथा उपलब्ध भाषाई इनपुट पर निर्भर करता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में भाषा विकास की प्रक्रिया सामान्य श्रवण वाले बच्चों की तुलना में अधिक जटिल होती है, क्योंकि श्रवण क्षमता में कमी सीधे-सीधे भाषाई अनुभवों की उपलब्धता को प्रभावित करती है। परिणामस्वरूप, यदि प्रारम्भिक अवस्था में उपयुक्त हस्तक्षेप, प्रभावी संप्रेषण प्रणाली तथा भाषा-अनुकूल वातावरण उपलब्ध न हो,

तो भाषा विकास, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक सहभागिता और जीवन की गुणवत्ता पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है।

पिछले कुछ दशकों में श्रवण बाधित व्यक्तियों की भाषा शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। पहले जहाँ मुख्यत मौखिकवाद पर बल दिया जाता था, वहीं बाद में सम्पूर्ण संप्रेषण तथा वर्तमान समय में भारतीय सांकेतिक भाषादृलिखितध्मौखिक भाषा आधारित द्विभाषिक शिक्षा को अधिक वैज्ञानिक एवं शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण माना जाने लगा है। इन विभिन्न शैक्षिक उपागमों ने केवल शिक्षण पद्धतियों को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि भाषा मूल्यांकन के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं, उपकरणों तथा परिणामों की व्याख्या को भी परिवर्तित किया है। आज यह स्वीकार किया जाता है कि प्रत्येक श्रवण बाधित व्यक्ति की भाषाई आवश्यकताएँ, संप्रेषण शैली, सांस्कृतिक पहचान तथा शैक्षणिक पृष्ठभूमि भिन्न हो सकती हैय इसलिए ष्एक ही प्रकार का मूल्यांकन सभी के लिए उपयुक्त हैष् जैसी धारणा वैज्ञानिक दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है। भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य केवल यह जानना नहीं है कि शिक्षार्थी कितने शब्द पहचानता है अथवा कितने वाक्य बोल या संकेतित कर सकता है। आधुनिक भाषा मूल्यांकन एक समग्र प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाता है कि व्यक्ति भाषा को किस प्रकार ग्रहण, संसाधित, अभिव्यक्त तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में उपयोग करता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में यह मूल्यांकन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उन्हें मौखिक भाषा, भारतीय सांकेतिक भाषा, लिखित भाषा अथवा इनका मिश्रित उपयोग करने का अवसर प्राप्त हो सकता है। इसलिए मूल्यांकन प्रणाली को व्यक्ति की वास्तविक संप्रेषण क्षमता का समुचित आकलन करना चाहिए, न कि केवल किसी एक भाषा माध्यम में उसकी सीमाओं को मापना चाहिए।

वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में भारतीय सांकेतिक भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ती मान्यता प्राप्त हुई है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (2016), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) तथा भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, एवं राष्ट्रीय मुक्त बिद्यालई शिक्षा संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों ने भारतीय सांकेतिक भाषा को शिक्षा, प्रशिक्षण तथा संप्रेषण के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में स्थापित किया है। इसके परिणामस्वरूप भाषा मूल्यांकन की अवधारणा भी केवल मौखिक भाषा तक सीमित नहीं रही, बल्कि अब ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक भारतीय सांकेतिक भाषा, द्विभाषिक दक्षता, कार्यात्मक संप्रेषण तथा सामाजिक सहभागिता को भी समान महत्व दिया जा रहा है। यह परिवर्तन विशेष शिक्षा के विद्यार्थियों तथा भावी विशेष शिक्षकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्हें ऐसे मूल्यांकन उपकरणों एवं प्रक्रियाओं का चयन करना होगा जो भाषाई विविधता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा समावेशी शिक्षा के सिद्धान्तों के अनुरूप हों।

श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा मूल्यांकन एक जीवनपर्यन्त प्रक्रिया है। शैशवावस्था में इसका उद्देश्य भाषा विकास के जोखिमों की पहचान एवं प्रारम्भिक हस्तक्षेप की योजना बनाना होता है। विद्यालयी अवस्था में मूल्यांकन का केन्द्र भाषा अधिगम, साक्षरता, शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक संप्रेषण होता है। किशोर एवं युवा अवस्था में यह व्यावसायिक संचार, उच्च शिक्षा तथा स्वतंत्र जीवन के लिए आवश्यक भाषाई दक्षताओं का आकलन करता है, जबकि वयस्क एवं वृद्धावस्था में कार्यात्मक संप्रेषण, सामाजिक सहभागिता तथा जीवन की गुणवत्ता के संदर्भ में भाषा दक्षता का मूल्यांकन महत्वपूर्ण हो जाता है। इसलिए विभिन्न आयु समूहों के लिए भाषा मूल्यांकन के उद्देश्य, संकेतक, उपकरण तथा मानदण्ड भी अलग-अलग हो सकते हैं।

इस संदर्भ में मूल्यांकन केवल क्या सीखा गया तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सीखने के लिए मूल्यांकन तथा सीखते समय मूल्यांकन जैसे समकालीन दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। आधुनिक विशेष शिक्षा में मूल्यांकन को शिक्षण का अभिन्न अंग माना जाता है, जो न केवल शिक्षार्थी की वर्तमान उपलब्धियों का आकलन करता है, बल्कि उसकी संभावनाओं, सीखने की शैली, सहायता की आवश्यकता तथा भविष्य की शैक्षणिक योजना के निर्माण में भी सहायक होता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि वर्तमान समय में भाषा मूल्यांकन केवल मानकीकृत परीक्षणों तक सीमित नहीं है। अब प्राकृतिक भाषा नमूनों, पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन, गतिशील मूल्यांकन, पोर्टफोलियो मूल्यांकन, वीडियो विश्लेषण, डिजिटल मूल्यांकन तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा विश्लेषण जैसी नवीन पद्धतियाँ भी विकसित हो रही हैं। विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में वीडियो-आधारित रिकॉर्डिंग, रूब्रिक, प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन तथा बहु-विषयक मूल्यांकन दृष्टिकोण की उपयोगिता निरंतर बढ़ रही है। इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत इकाई विभिन्न आयु समूहों के श्रवण बाधित व्यक्तियों में मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन की वैज्ञानिक अवधारणाओं, विभिन्न शैक्षिक उपागमों, मूल्यांकन प्रक्रियाओं, उपकरणों, मानकीकरण, मापन योग्य संकेतकों, समकालीन प्रवृत्तियों, प्रमुख चुनौतियों तथा उनके व्यावहारिक समाधानों का क्रमबद्ध अध्ययन प्रस्तुत करती ळें

7ण्2 उद्देश्य ;व्इरमबजपअमेद्ध

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त शिक्षार्थी सक्षम होंगेरू

व श्रवण बाधित व्यक्तियों में मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन की अवधारणा एवं आवश्यकता को स्पष्ट कर सकेंगे।

व विभिन्न आयु समूहों के अनुसार भाषा मूल्यांकन की विशेषताओं एवं आवश्यकताओं का वर्णन कर सकेंगे।

व मौखिक भाषा तथा भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन के प्रमुख आयामों का विश्लेषण कर सकेंगे।ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक भाषा के मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझा सकेंगे।

व भाषा मूल्यांकन की चरणबद्ध प्रक्रिया का वर्णन एवं उसका शैक्षिक उपयोग स्पष्ट कर सकेंगे।

व भाषा मूल्यांकन में प्रयुक्त औपचारिक एवं अनौपचारिक उपकरणों तथा समकालीन मूल्यांकन विधियों का विवेचन कर सकेंगे।

व भाषा नमूना विश्लेषण, गतिशील मूल्यांकन, पोर्टफोलियो तथा पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन की उपयोगिता का विश्लेषण कर सकेंगे।

व भाषा मूल्यांकन में विश्वसनीयता, वैधता, निष्पक्षता एवं नैतिक सिद्धान्तों के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।

व मौखिक भाषा मूल्यांकन में आने वाली प्रमुख चुनौतियों एवं उनके समाधान का विश्लेषण कर सकेंगे।

व भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन की विशिष्ट चुनौतियों, जैसे क्षेत्रीय विविधता, व्याकरण, गैर-हस्तचालित संकेतकों एवं मानकीकरण के अभाव का विवेचन कर सकेंगे।

व द्विभाषिक (प्ैस्दृमौखिकध्लिखित भाषा) मूल्यांकन की अवधारणा, आवश्यकता एवं व्यावहारिक चुनौतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

व श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए भाषा मूल्यांकन में परिवार, विद्यालय एवं बहुविषयक दल की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे।

व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखादृआधारभूत अवस्था (छब्थ्-थ्ै 2022), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखादृविशेष शिक्षा (छब्थ्ैम् 2023) तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, (2016) के आलोक में समावेशी एवं अधिकार-आधारित भाषा मूल्यांकन की व्याख्या कर सकेंगे।

व वास्तविक शैक्षिक परिस्थितियों में भाषा मूल्यांकन के निष्कर्षों का उपयोग कर प्रभावी शिक्षण, पुनर्वास एवं समावेशी शैक्षिक निर्णय लेने में सक्षम होंगे।

7ण्3 भाषा मूल्यांकन का वैचारिक एवं शैक्षिक आधार

ष्किसी भी मूल्यांकन प्रणाली की गुणवत्ता उसके उपकरणों से पहले उसके दार्शनिक आधार पर निर्भर करती है।ष्

7.3.1 भारतीय सांकेतिक भाषा की परिभाषा एवं विशेषताएँरू भाषा मूल्यांकन विशेष शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं में से एक है। यह केवल किसी शिक्षार्थी के भाषा ज्ञान का परीक्षण नहीं है, बल्कि उसकी संचार क्षमता, भाषा प्रसंस्करण, सामाजिक सहभागिता तथा कार्यात्मक भाषा उपयोग का व्यवस्थित अध्ययन भी है। विशेष रूप से श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में भाषा मूल्यांकन का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि उनके लिए भाषा अर्जन का मार्ग, गति एवं माध्यम सामान्य श्रवण वाले व्यक्तियों से भिन्न हो सकता है। पारंपरिक रूप से भाषा मूल्यांकन को शब्दावली, व्याकरण एवं उच्चारण तक सीमित माना जाता था। किंतु आधुनिक भाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान, समाजभाषाविज्ञान तथा विशेष शिक्षा के विकास के साथ यह स्पष्ट हुआ कि

भाषा केवल शब्दों का संग्रह नहीं है। भाषा विचारों, अनुभवों, भावनाओं तथा सामाजिक संबंधों को व्यक्त करने की एक जटिल संज्ञानात्मक एवं सामाजिक प्रणाली है। अतः भाषा का मूल्यांकन भी बहुआयामी होना चाहिए।

भाषा मूल्यांकन की अवधारणारू भाषा मूल्यांकन एक सतत, व्यवस्थित तथा उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति की भाषा को समझने, भाषा का उत्पादन करने, भाषा का उपयोग करने तथा विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षणिक परिस्थितियों में प्रभावी संप्रेषण करने की क्षमता का आकलन किया जाता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए यह प्रक्रिया केवल मौखिक भाषा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उनकी संप्रेषण प्रणाली के अनुसार भारतीय सांकेतिक भाषा, लिखित भाषा, दृश्य संकेतों, हाव-भाव तथा बहु-माध्यमीय संचार को भी सम्मिलित करती है।

आधुनिक दृष्टिकोणरू वर्तमान समय में भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य केवल यह पता लगाना नहीं है कि ष्शिक्षार्थी क्या नहीं कर सकता?ष् बल्कि यह समझना भी है कि (क) वह किन परिस्थितियों में बेहतर संप्रेषण करता हैय (ख) उसकी प्रमुख भाषाई शक्तियाँ क्या हैंय (ग) उसे किस प्रकार के सहारे की आवश्यकता हैय (घ) कौन-सा शैक्षिक उपागम उसके लिए अधिक प्रभावी होगाय (ङ) उसकी भाषा क्षमता को और कैसे विकसित किया जा सकता है। इसी कारण आधुनिक मूल्यांकन को ैजतमदहजी-इंेमक ।ेेमेेउमदज तथा त्पहीजे-इंेमक ।ेेमेेउमदज की दिशा में विकसित किया जा रहा है।

भाषा मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य भाषा मूल्यांकन की प्रमुख विशेषताएँ

- भाषा विकास के स्तर की पहचान करना।
- भाषा संबंधी कठिनाइयों का शीघ्र पता लगाना।

- उपयुक्त शिक्षण एवं हस्तक्षेप योजना तैयार करना।
- प्म्च् के लिए आधार प्रदान करना।
- ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक भाषा का पृथक एवं संयुक्त मूल्यांकन करना।
- मौखिक भाषा, भारतीय सांकेतिक भाषा तथा द्विभाषिक दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कार्यात्मक संप्रेषण क्षमता का मूल्यांकन करना।
- शैक्षणिक प्रगति एवं सामाजिक सहभागिता का आकलन करना। • उद्देश्यपरक (च्नतचवेमनिस) होता है।
- सतत (ब्वदजपदनवने) होता है।
- विकासात्मक (क्मअमसवचउमदजंस) होता है।
- सांस्कृतिक रूप से निष्पक्ष (ब्नसजनतंससल थ्पत) होता है।
- भाषाई विविधता का सम्मान करता है।
- बहु-स्रोत (डनसजपे-वनतबम) जानकारी पर आधारित होता है।
- व्यक्ति-केंद्रित (च्मतेवद-बमदजतमक) होता है।
- शिक्षण एवं हस्तक्षेप से जुड़ा होता है।

अभ्यासरू

विचार कीजिएरू यदि किसी श्रवण बाधित शिक्षार्थी की भारतीय सांकेतिक भाषा अत्यंत विकसित है, किंतु उसकी मौखिक भाषा सीमित है, तो क्या केवल

मौखिक भाषा परीक्षण के आधार पर उसकी भाषा क्षमता का सही मूल्यांकन किया जा सकता है?

हाँ ध् ना

7.3.2 श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा विकास के प्रमुख शैक्षिक उपागम एवं उनका भाषा मूल्यांकनरू भाषा का विकास किसी भी बालक के समग्र व्यक्तित्व निर्माण का आधार है, किन्तु श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में भाषा अर्जन की प्रक्रिया अपेक्षाकृत अधिक जटिल होती है। श्रवण क्षमता में कमी के कारण भाषा का प्राकृतिक श्रवण-अनुभव सीमित हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप भाषा सीखने का माध्यम, गति तथा स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न हो सकता है। इसी कारण पिछले लगभग डेढ़ सौ वर्षों में श्रवण बाधित व्यक्तियों की शिक्षा के लिए अनेक शैक्षिक उपागम विकसित हुए हैं। इन उपागमों का मुख्य उद्देश्य भाषा विकास को प्रोत्साहित करना था, किन्तु प्रत्येक उपागम भाषा, संप्रेषण तथा अधिगम को अलग दृष्टिकोण से देखता है। श्रवण बाधित शिक्षा के इतिहास में संचार के विभिन्न उपागम समय-समय पर विकसित हुए हैं। प्रत्येक उपागम भाषा के स्वरूप, अधिगम प्रक्रिया तथा मूल्यांकन की दृष्टि से भिन्न दर्शन प्रस्तुत करता है। प्रारम्भ में मौखिकवाद (व्तंसपेउ) प्रमुख रहा, जिसके बाद सम्पूर्ण संप्रेषण (ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद) की अवधारणा विकसित हुई। बाद में भाषावैज्ञानिक शोध एवं क्मं िसमुदाय के अधिकारों के आधार पर शैक्षिक द्विभाषिकता (म्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ) तथा द्विभाषिकदृद्विसांस्कृतिक (ठपसपदहनंसदृठपबनसजनतंसरू ठपदृठप) दृष्टिकोण को व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई। इन सभी उपागमों ने भाषा मूल्यांकन की अवधारणा एवं प्रक्रियाओं को भी प्रभावित किया।

(क) मौखिकवाद (व्तंसपेउ)रू मौखिकवाद श्रवण बाधित शिक्षा का सबसे पुराना औपचारिक शैक्षिक उपागम माना जाता है। सैमुअल हेनिके (ैंउनमस भ्मपदपबाम) को मौखिकवाद का जनक (थ्ंजीमत व ि्व्तंसपेउ) माना जाता है। उन्होंने 1778 में जर्मनी के लीपजिग (स्मपत्रपह) में श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए प्रथम राज्य-समर्थित सार्वजनिक विद्यालय (थ्पतेज ैजंजमै-नचचवतजमक च्नइसपब ैबीववस वित क्मं ि ैजनकमदजे) की स्थापना की। यही संस्थान आगे चलकर ळमतउंद व्तंस डमजीवक का आधार बना तथा श्रवण बाधित शिक्षा के प्रथम औपचारिक मौखिक विद्यालय के रूप में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त हुई। मौखिकवाद वह शैक्षिक दर्शन है जिसमें श्रवण बाधित व्यक्तियों को मुख्यतः श्रवण अवशेष (त्मेपकनंस भ्मंतपदह), वाणी (ैचममबी), श्रवण प्रशिक्षण (।नकपजवतल ज्तंपदपदह) तथा ओष्ठ-पठन (ैचममबी त्मंकपदहध्स्पच त्मंकपदह) के माध्यम से भाषा सिखाने पर बल दिया जाता है। इस दृष्टिकोण का मूल विश्वास है कि यदि बालक को प्रारम्भिक अवस्था में श्रवण प्रशिक्षण, वाणी प्रशिक्षण, उपयुक्त श्रवण यंत्र (भ्मंतपदह ।पक), अथवा ब्वबीसमंत प्उचसंदज जैसी तकनीकी सहायता प्राप्त हो जाए, तो वह समाज में प्रयुक्त मौखिक भाषा का प्रभावी उपयोग कर सकता है। इस दर्शन का मूल सिद्धान्त ष्ैचममबी जीतवनही ैचममबीष् (वाणी के माध्यम से वाणी का विकास) था।

इस उपागम में भारतीय सांकेतिक भाषा अथवा अन्य संकेत प्रणालियों का प्रयोग सामान्यतः सीमित अथवा निषेधात्मक माना गया, क्योंकि उस समय यह विश्वास था कि संकेत भाषा मौखिक भाषा के विकास में बाधा उत्पन्न कर सकती है। आधुनिक शोध इस धारणा का पूर्ण समर्थन नहीं करते, फिर भी श्रवण बाधित शिक्षा के इतिहास में व्तंसपेउ का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रमुख विशेषताएँरू

1 श्रवण एवं वाणी विकास पर विशेष बल 2 अवशिष्ट श्रवण का अधिकतम उपयोग 3 भ्मंतपदह ।पक एवं ब्वबीसमंत प्उचसंदज का प्रयोग

4 ैचममबी त्मंकपदह का प्रशिक्षण 5 सांकेतिक भाषा का सीमित उपयोग 6 मुख्य उद्देश्य समाज की मौखिक भाषा में दक्षता विकसित करना

भाषा मूल्यांकन पर प्रभावरू

यदि शिक्षण व्तंसपेउ पर आधारित हो, तो भाषा मूल्यांकन मुख्यतः निम्न पक्षों पर केन्द्रित होता है-

1 श्रवण भेद (।नकपजवतल क्पेबतपउपदंजपवद) 2 ध्वनि पहचान (ैवनदक क्मजमबजपवद एवं प्कमदजपपिबंजपवद) 3 श्रवण बोध (।नकपजवतल ब्वउचतमीमदेपवद)

4 वाणी उत्पादन (ैचममबी च्तवकनबजपवद) 5 उच्चारण की स्पष्टता (ैचममबी प्दजमससपहपइपसपजल) 6 मौखिक शब्दावली

7 व्याकरण 8 ओष्ठ-पठन क्षमता

इस प्रकार के मूल्यांकन में सफलता का प्रमुख मानदण्ड यह माना जाता है कि शिक्षार्थी मौखिक भाषा को किस सीमा तक समझ एवं प्रयोग कर सकता है।

मौखिकवाद की सीमाएँरू यद्यपि यह उपागम उन बच्चों के लिए प्रभावी सिद्ध हुआ है जिन्हें प्रारम्भिक अवस्था में श्रवण तकनीक एवं हस्तक्षेप प्राप्त हुआ, किन्तु सभी श्रवण बाधित बच्चों के लिए समान रूप से उपयुक्त नहीं पाया गया।

मुख्य सीमाएँ-

1 गंभीर एवं अतिगंभीर श्रवण हानि वाले बच्चों में सीमित प्रभावशीलता।

2 गंभीर एवं अतिगंभीर श्रवण हानि वाले बच्चों में सीमित प्रभावशीलता।3 सांकेतिक भाषा एवं क्मं िसंस्कृति की उपेक्षा।

4 श्रवण तकनीक की उपलब्धता पर अत्यधिक निर्भरता। 5 संचार की अपेक्षा वाणी पर अधिक बल।

(ख) सम्पूर्ण संप्रेषण (ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद)रू 1960 के दशक के उत्तरार्ध में यह अनुभव किया गया कि केवल एक संप्रेषण माध्यम सभी श्रवण बाधित बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। इसी पृष्ठभूमि में 1967 में रॉय होलकॉम्ब (त्वल भ्वसबवउइ) द्वारा ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद (ज्ब्) की अवधारणा प्रस्तुत एवं लोकप्रिय बनाई गई। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सम्पूर्ण सम्प्रेषण कोई शिक्षण विधि नहीं, बल्कि एक शैक्षिक दर्शन है। इसका मूल सिद्धान्त ष्ॅंीजमअमत ॅवतो ठमेज वित जीम ब्ीपसकष् है, अर्थात् जिस माध्यम से बालक सर्वाधिक प्रभावी ढंग से सीख सकता है, उसी का उपयोग किया जाना चाहिए। इस उपागम में मौखिक भाषा, श्रवण प्रशिक्षण, संकेत, प्राकृतिक हाव-भाव, उँगली वर्णमाला (थ्पदहमत ैचमससपदह), ओष्ठ-पठन,

लिखित भाषा, दृश्य सामग्री तथा अन्य सहायक संप्रेषण माध्यमों का समन्वित उपयोग किया जाता है।

भाषा मूल्यांकन पर प्रभावरू सम्पूर्ण सम्प्रेषण ने भाषा मूल्यांकन की अवधारणा को व्यापक बनाया। अब मूल्यांकन केवल मौखिक भाषा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह देखा जाने लगा कि शिक्षार्थी (क) विभिन्न संप्रेषण माध्यमों का कितना प्रभावी उपयोग करता हैय (ख) किस परिस्थिति में कौन-सा माध्यम अधिक उपयुक्त हैय (ग) मौखिक एवं सांकेतिक दोनों माध्यमों से संदेश को समझ एवं व्यक्त कर सकता है या नहींय (घ) कार्यात्मक संप्रेषण (थ्नदबजपवदंस ब्वउउनदपबंजपवद) कितना प्रभावी हैय और (ङ) सामाजिक सहभागिता में भाषा का उपयोग किस प्रकार करता है।

सम्पूर्ण सम्प्रेषण आधारित मूल्यांकन-

1 बहु-स्रोत (डनसजप-उवकंस) होता है। 2 कार्यात्मक संप्रेषण पर केन्द्रित होता है। 3 शिक्षार्थी-केंद्रित होता है।

4 प्राकृतिक परिस्थितियों में भाषा का अवलोकन करता है। 5 विद्यालय एवं परिवार दोनों से जानकारी एकत्र करता है।

सीमाएँरू इस उपागम की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि विभिन्न संप्रेषण माध्यमों के संयुक्त प्रयोग के कारण मूल्यांकन के लिए समान मानदण्ड (न्दपवितउ ैजंदकंतके) विकसित करना कठिन हो जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि

मूल्यांकनकर्ता विभिन्न संप्रेषण माध्यमों में प्रशिक्षित न हो, तो निष्कर्षों की विश्वसनीयता प्रभावित हो सकती है।

(ग) शैक्षिक द्विभाषिकता (म्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ)रू 1970द्1980 के दशक में सांकेतिक भाषा भाषाविज्ञान (ैपहद स्ंदहनंहम स्पदहनपेजपबे), क्मं िशिक्षा एवं क्मं िसमुदाय के अधिकार आन्दोलन के आधार पर ठपसपदहनंसदृठपबनसजनतंस (ठपदृठप) डवकमस विकसित हुआ। यह भी किसी एक व्यक्ति द्वारा निर्मित मॉडल नहीं है। वर्तमान समय में विश्व के अनेक देशों में शैक्षिक द्विभाषिकता अथवा द्विभाषिकदृद्विसांस्कृतिक मॉडल (बाई-बाई) उपागम को वैज्ञानिक एवं अधिकार-आधारित दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। इस उपागम का आधार यह है कि सांकेतिक भाषा श्रवण बाधित व्यक्ति की प्रथम प्राकृतिक भाषा (स्1) हो सकती है, जबकि लिखित अथवा मौखिक भाषा दूसरी भाषा (स्2) के रूप में विकसित की जाती है। भारतीय संदर्भ में इसका अर्थ है कि भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) को भाषा अधिगम, संज्ञानात्मक विकास एवं अवधारणात्मक समझ का आधार माना जाए तथा साथ ही हिन्दी, अंग्रेजी अथवा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को द्वितीय भाषा के रूप में व्यवस्थित ढंग से सिखाया जाए। यह दृष्टिकोण केवल भाषाई दक्षता पर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान (क्मं िब्नसजनतम), भाषाई अधिकार (स्पदहनपेजपब त्पहीजे) तथा समावेशी शिक्षा के सिद्धान्तों पर भी आधारित है।

भाषा मूल्यांकन पर प्रभाव

शैक्षिक द्विभाषिकता ने भाषा मूल्यांकन के स्वरूप में सबसे व्यापक परिवर्तन किया है। इस दृष्टिकोण में मूल्यांकन का उद्देश्य किसी एक भाषा में दक्षता मापना नहीं, बल्कि दोनों भाषाओं में उपलब्ध क्षमता को समझना है।

अतः मूल्यांकन निम्न आयामों को सम्मिलित करता है-

1 भारतीय सांकेतिक भाषा की ग्रहणशील क्षमता। 2 भारतीय सांकेतिक भाषा की अभिव्यक्तात्मक क्षमता। 3 लिखित भाषा का बोध।

4 लिखित अभिव्यक्ति। 5 दोनों भाषाओं के मध्य अंतरण। 6 शैक्षणिक भाषा दक्षता।

7 कार्यात्मक संप्रेषण। 8 सामाजिक सहभागिता। 9 भाषा चयन की उपयुक्तता।

विशेषताएँरू द्विभाषिक मूल्यांकन भाषा की बजाय (क) भाषाई क्षमता पर बल देता हैय (ख) संप्रेषण की वास्तविक परिस्थितियों का मूल्यांकन करता हैय (ग) भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करता हैय (घ) प्ैस् तथा लिखितध्मौखिक भाषा दोनों को समान महत्व देता हैय और (ङ) व्यक्ति की शक्तियों (ैजतमदहजीे) पर आधारित हस्तक्षेप योजना विकसित करने में सहायता करता है।

सीमाएरू यद्यपि शैक्षिक द्विभाषिकता (स्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ) एवं ठपदृठप उपागम अत्यंत प्रभावी माने जाते हैं, फिर भी इनके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ हैं। प्रशिक्षित प्ैस् शिक्षकों एवं विशेषज्ञों की कमी, मानकीकृत द्विभाषिक मूल्यांकन उपकरणों का अभाव, विभिन्न क्षेत्रों में प्ैस् एवं स्थानीय भाषाओं की विविधता, द्विभाषिक शिक्षण सामग्री एवं दुभाषियों की सीमित उपलब्धता तथा पर्याप्त नीतिगत एवं संस्थागत समर्थन का अभाव इनके प्रभावी क्रियान्वयन में प्रमुख बाधाएँ हैं।

भारतीय परिप्रेक्ष्यरू राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र (प्ैस्त्ज्ब्) तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 ने भारतीय सांकेतिक भाषा को शिक्षा एवं संप्रेषण के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में स्वीकार करने की दिशा में उल्लेखनीय पहल की है। परिणामस्वरूप, भाषा मूल्यांकन में भी अब प्ैस् को केवल सहायक माध्यम नहीं, बल्कि स्वतंत्र भाषाई प्रणाली के रूप में मान्यता देने की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है।

स्व-जाँच (ब्ीमबा ल्वनत च्तवहतमेेदृ1)

रिक्त स्थान भरिएकृ

1ण् ैंउनमस भ्मपदपबाम को ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ का जनक माना जाता है।

2ण् ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद की अवधारणा ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ ने लोकप्रिय बनाई।

3ण् म्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ में सांकेतिक भाषा को ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ भाषा माना जाता है।

4ण् ठपदृठप मॉडल में लिखितध्मौखिक भाषा ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ भाषा होती है।

5ण् ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद एक शिक्षण विधि नहीं, बल्कि एक ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ है।

चिंतन प्रश्नरू यदि दो समान आयु के श्रवण बाधित शिक्षार्थियों में से एक व्तंसपेउ आधारित विद्यालय में तथा दूसरा प्ैस् आधारित द्विभाषिक विद्यालय में

अध्ययन करता है, तो क्या दोनों के लिए एक ही भाषा मूल्यांकन उपकरण उपयुक्त होगा? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क प्रस्तुत कीजिए।

7.3.3 भाषा मूल्यांकन पर विभिन्न शैक्षिक उपागमों का प्रभाव

श्रवण बाधित व्यक्तियों की शिक्षा के क्षेत्र में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जा चुका है कि शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन प्रणाली परस्पर पूरक प्रक्रियाएँ हैं। जिस शैक्षिक दर्शन के आधार पर भाषा का शिक्षण किया जाता है, उसी के अनुरूप भाषा मूल्यांकन के उद्देश्य, उपकरण, संकेतक तथा परिणामों की व्याख्या भी निर्धारित होती है। यदि शिक्षण और मूल्यांकन के बीच यह सामंजस्य नहीं होगा, तो मूल्यांकन शिक्षार्थी की वास्तविक भाषाई क्षमता का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाएगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी विद्यालय में शिक्षा भारतीय सांकेतिक भाषा के माध्यम से प्रदान की जाती है, जबकि मूल्यांकन केवल मौखिक भाषा के आधार पर किया जाता है, तो प्राप्त परिणाम शिक्षार्थी की वास्तविक भाषाई दक्षता को प्रतिबिम्बित नहीं करेंगे। इसी प्रकार, यदि शिक्षण पर आधारित है, लेकिन मूल्यांकन केवल मानकीकृत मौखिक परीक्षणों द्वारा किया जाए, तो शिक्षार्थी की बहु-माध्यमीय संप्रेषण क्षमता की उपेक्षा हो सकती है। अतः भाषा मूल्यांकन का प्रथम सिद्धान्त यह है कि मूल्यांकन उस भाषा एवं संप्रेषण प्रणाली के अनुरूप होना चाहिए जिसके माध्यम से शिक्षार्थी सीखता और संवाद करता है।

शिक्षण-दर्शन और मूल्यांकन का अन्तर्सम्बन्धरू भाषा मूल्यांकन को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि प्रत्येक शैक्षिक उपागम भाषा के बारे में अलग-अलग मान्यताओं पर आधारित होता है। यही मान्यताएँ मूल्यांकन के स्वरूप को निर्धारित करती हैं। व्तंसपेउ में भाषा का अर्थ मुख्यतः मौखिक एवं श्रवण आधारित संचार से लिया जाता है। इसलिए मूल्यांकन का केन्द्र वाणी, श्रवण

बोध, उच्चारण तथा मौखिक व्याकरण होता है। ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद में भाषा को संप्रेषण का माध्यम माना जाता है। इसलिए मूल्यांकन का केन्द्र यह होता है कि शिक्षार्थी उपलब्ध संप्रेषण माध्यमों का कितनी प्रभावशीलता से उपयोग करता है। म्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ भाषा को संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकार के रूप में स्वीकार करता है। इसलिए मूल्यांकन केवल भाषा के रूप (थ्वतउ) पर नहीं, बल्कि भाषा की दक्षता (ब्वउचमजमदबम), कार्यात्मक उपयोग (च्मतवितउंदबम) तथा दो भाषाओं के मध्य अन्तरण (ज्तंदेमित) पर केन्द्रित होता है।

मूल्यांकन के उद्देश्य में परिवर्तनरू प्रारम्भिक वर्षों में भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि श्रवण बाधित बालक सामान्य श्रवण वाले बच्चों की तरह बोल सकता है या नहीं। इस कारण अधिकांश परीक्षण क्मपिबपज डवकमस पर आधारित थे। इनमें शिक्षार्थी की सीमाओं को अधिक महत्व दिया जाता था। वर्तमान समय में यह दृष्टिकोण बदल चुका है। अब भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य केवल कठिनाइयों की पहचान करना नहीं, बल्कि यह समझना भी है कि शिक्षार्थी (क) किस भाषा में बेहतर सीखता हैय (ख) कौन-सा संप्रेषण माध्यम उसके लिए सर्वाधिक प्रभावी हैय (ग) उसकी वर्तमान भाषाई शक्तियाँ क्या हैय (घ) किन क्षेत्रों में सहयोग (ैनचचवतज) की आवश्यकता हैय और (ङ) किस प्रकार की शिक्षण रणनीति उसके लिए उपयुक्त होगी। इस परिवर्तन ने मूल्यांकन को क्मपिबपज-इंेमक ।ेेमेेउमदज से ैजतमदहजी-इंेमक ।ेेमेेउमदज की दिशा में अग्रसर किया है।

मूल्यांकन संकेतकों (।ेेमेेउमदज प्दकपबंजवते) में परिवर्तनरू विभिन्न शैक्षिक उपागमों के विकास के साथ भाषा मूल्यांकन के संकेतकों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है।

संकेतकों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है।

प्रारम्भिक मूल्यांकन मुख्यतः निम्न संकेतकों तक सीमित था- किन्तु आधुनिक भाषा मूल्यांकन में इन संकेतकों के अतिरिक्त निम्न आयामों को भी सम्मिलित किया जाता है-

व ध्वनि पहचान

व शब्द उच्चारण

व मौखिक शब्दावली

व वाक्य निर्माण व ग्रहणशील भाषा

व अभिव्यक्तात्मक भाषा

व कार्यात्मक संप्रेषण

व सामाजिक संचार

व प्राग्मैटिक भाषा

व कथन (छंततंजपअम ैव्यापससे)

व भाषा प्रसंस्करण

व द्विभाषिक दक्षता

व सांकेतिक भाषा व्याकरण

व दृश्य-स्थानिक भाषा संगठन

व भाषा का शैक्षणिक उपयोग

अर्थात् आधुनिक मूल्यांकन केवल ष्क्या बोल सकता है?ष् का उत्तर नहीं खोजता, बल्कि ष्भाषा का उपयोग किस प्रकार करता है?ष् इसका भी विश्लेषण करता है।

मूल्यांकन उपकरणों में परिवर्तनरू शिक्षण उपागमों के परिवर्तन के साथ-साथ मूल्यांकन उपकरण भी विकसित हुए हैं। पहले अधिकांश परीक्षण कागज-पेंसिल (च्ंचमत-च्मदबपस ज्मेजे) अथवा मौखिक परीक्षणों तक सीमित थे। वर्तमान समय में भाषा मूल्यांकन बहुआयामी हो चुका है,

जिसमें निम्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है-

1 मानकीकृत भाषा परीक्षण 2 शिक्षक-निर्मित परीक्षण 3 वीडियो आधारित मूल्यांकन

4 अवलोकन (व्इेमतअंजपवद) 5 भाषा नमूना विश्लेषण (स्ंदहनंहम ैं◌ंउचसम ।दंसलेपे) 6 संचार चेकलिस्ट

7 प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन 8 पोर्टफोलियो 9 गतिशील मूल्यांकन

10 पाठ्यक्रम आधारित मूल्यांकन 11 डिजिटल मूल्यांकन

विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में वीडियो रिकॉर्डिंग एवं प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन की उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गई है, क्योंकि सांकेतिक भाषा की दृश्य-स्थानिक प्रकृति को लिखित परीक्षणों द्वारा पूर्णतः अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

परिणामों की व्याख्या (प्दजमतचतमजंजपवद व ि।◌ेे◌ेमे◌ेउमदज त्मेनसजे)रू मूल्यांकन का उद्देश्य केवल अंक देना नहीं है, बल्कि उन अंकों की सार्थक व्याख्या

करना भी है। यदि कोई शिक्षार्थी मौखिक भाषा परीक्षण में कम अंक प्राप्त करता है, तो इसका अर्थ यह नहीं कि उसकी भाषा क्षमता कम है। सम्भव है कि उसकी भारतीय सांकेतिक भाषा अत्यंत विकसित हो। इसलिए आधुनिक मूल्यांकन में परिणामों की व्याख्या करते समय निम्न बातों पर विचार किया जाता हैय

1 शिक्षार्थी का संप्रेषण माध्यम 2 भाषाई अनावरण (स्ंदहनंहम म्गचवेनतम) 3 आयु

4 प्रथम भाषा (स्1) 5 द्वितीय भाषा (स्2) 6 विद्यालयी पृष्ठभूमि

7 श्रवण तकनीक का उपयोग 8 पारिवारिक संप्रेषण वातावरण 9 सांस्कृतिक पहचान

इसी कारण वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली एकल स्कोर के स्थान पर भाषाई प्रोफाइल तैयार करने पर अधिक बल देती है।

हस्तक्षेप योजनारू आधुनिक विशेष शिक्षा में मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य शिक्षण निर्णय (प्देजतनबजपवदंस क्मबपेपवद डंापदह) है। यदि मूल्यांकन यह दर्शाता है कि शिक्षार्थी (क) ग्रहणशील भाषा में सक्षम है लेकिन अभिव्यक्ति में कठिनाई है, (ख) प्ैस् में दक्ष है लेकिन लिखित भाषा सीमित है, (ग) सामाजिक संचार अच्छा है लेकिन शैक्षणिक भाषा कमजोर है तो प्रत्येक स्थिति के लिए हस्तक्षेप योजना अलग होगी। अर्थात् मूल्यांकन का वास्तविक महत्व तभी है जब उसके परिणाम शिक्षण एवं पुनर्वास कार्यक्रम को दिशा प्रदान करें।

7.3.4 सांस्कृतिक, भाषाई एवं अधिकार-आधारित दृष्टिकोणरू भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की पहचान (प्कमदजपजल), संस्कृति (ब्नसजनतम), सामाजिक सहभागिता (ैवबपंस च्ंतजपबपचंजपवद),

ज्ञानार्जन (स्मंतदपदह) तथा समुदाय से जुड़ाव (ब्वउउनदपजल ठमसवदहपदहे) का आधार भी है। प्रत्येक भाषा अपने साथ एक विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक अनुभव तथा जीवन-दृष्टि को वहन करती है। इसलिए किसी व्यक्ति की भाषा का मूल्यांकन केवल उसकी भाषाई दक्षता का मापन नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि को समझने की प्रक्रिया भी है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में यह विचार और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि अनेक शोधों ने स्पष्ट किया है कि क्मं िब्वउउनदपजल केवल चिकित्सकीय दृष्टि से ष्श्रवण हानि वाले व्यक्तियोंष् का समूह नहीं है, बल्कि उसकी अपनी भाषा (प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम), सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक मूल्य तथा संप्रेषण परम्पराएँ हैं। अतः यदि भाषा मूल्यांकन केवल मौखिक भाषा को मानक मानकर किया जाए, तो यह अनेक शिक्षार्थियों की वास्तविक भाषाई क्षमता तथा सांस्कृतिक पहचान को उचित रूप से प्रतिबिम्बित नहीं कर पाएगा। इसी कारण आधुनिक विशेष शिक्षा में भाषा मूल्यांकन को सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी, भाषाई रूप से समावेशी तथा अधिकार-आधारित प्रक्रिया के रूप में विकसित किया जा रहा है।

भाषाई विविधता और भाषा मूल्यांकनरू भारत विश्व के सबसे अधिक बहुभाषिक देशों में से एक है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ एवं बोलियाँ प्रचलित हैं। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों का भाषाई परिवेश भी अत्यंत विविध होता है। कुछ बच्चे घर में हिन्दी का प्रयोग करते हैं, कुछ क्षेत्रीय भाषाओं का, जबकि अनेक परिवारों में भारतीय सांकेतिक भाषा का नियमित प्रयोग नहीं होता। कई बार बच्चे विद्यालय में पहली बार व्यवस्थित रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा से परिचित होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक शिक्षार्थी की भाषाई यात्रा (स्ंदहनंहम श्रवनतदमल) अलग होती है। यदि सभी शिक्षार्थियों का मूल्यांकन एक ही भाषा अथवा एक ही मानकीकृत परीक्षण द्वारा किया जाए, तो परिणाम निष्पक्ष नहीं होंगे। इसलिए

आधुनिक भाषा मूल्यांकन निम्नलिखित प्रश्नों पर विशेष ध्यान देता है कि (क) शिक्षार्थी की प्रथम भाषा (थ्पतेज स्ंदहनंहम) कौन-सी है?ए(ख) घर में किस भाषा या संप्रेषण प्रणाली का प्रयोग होता है?ए (ग) क्या शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा से प्रारम्भिक अवस्था में परिचित हुआ था?, (घ) क्या विद्यालय की शिक्षण भाषा घर की भाषा से भिन्न है?, (ङ) क्या शिक्षार्थी द्विभाषिक अथवा बहुभाषिक वातावरण में विकसित हुआ है? इन प्रश्नों के उत्तर मूल्यांकन की योजना बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सांस्कृतिक उत्तरदायी (ब्नसजनतंससल त्मेचवदेपअम) मूल्यांकनरू सांस्कृतिक उत्तरदायी मूल्यांकन का अर्थ है कि मूल्यांकन की सम्पूर्ण प्रक्रिया शिक्षार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का सम्मान करे। यदि मूल्यांकनकर्ता क्मं िब्वउउनदपजल की भाषा, संप्रेषण शैली तथा सांस्कृतिक व्यवहार से परिचित नहीं है, तो वह अनेक व्यवहारों की गलत व्याख्या कर सकता है। उदाहरण के लिए-

यदि मूल्यांकनकर्ता इन विशेषताओं को नहीं समझता, तो वह भाषा त्रुटि और संप्रेषण शैली (के बीच अंतर नहीं कर पाएगा।

भाषाई अधिकार (स्पदहनपेजपब त्पहीजे) और मूल्यांकनरू वर्तमान समय में भाषा को केवल सीखने का माध्यम नहीं, बल्कि मानव अधिकार के रूप में भी स्वीकार किया गया है। भाषाई अधिकार का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्राकृतिक भाषा में सीखने, संवाद करने तथा मूल्यांकन प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में इसका तात्पर्य है कि-

- भारतीय सांकेतिक भाषा को स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता मिले।
- मूल्यांकन केवल मौखिक भाषा तक सीमित न हो।
- शिक्षार्थी की प्रथम भाषा का सम्मान किया जाए।

- मूल्यांकन के परिणाम भाषा माध्यम के कारण पक्षपाती न हों।
- भाषा चयन के आधार पर किसी शिक्षार्थी के साथ भेदभाव न किया जाए।

अधिकार-आधारित (त्पहीजे-इंेमक) भाषा मूल्यांकनरू अधिकार-आधारित मूल्यांकन का मूल सिद्धान्त है.ष्।ेेमेेउमदज ेीवनसक ंकंचज जव जीम समंतदमत, दवज जीम समंतदमत जव जीम ंेेमेेउमदज.ष् अर्थात् मूल्यांकन प्रणाली को शिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप लचीला बनाया जाना चाहिए।

इस दृष्टिकोण में निम्न सिद्धान्तों का पालन किया जाता है-

1 समान अवसर (म्ुनंस व्चचवतजनदपजल) 2 उचित अनुकूलन (त्मंेवदंइसम ।बबवउउवकंजपवद) 3 भाषाई न्याय (स्पदहनपेजपब म्ुनपजल)

4 समावेशन (प्दबसनेपवद) 5 गरिमा (क्पहदपजल) 6 सहभागिता (चंतजपबपचंजपवद)

7 व्यक्ति-केंद्रित निर्णय (च्मतेवद-बमदजतमक क्मबपेपवद डंापदह)

यह दृष्टिकोण विशेष रूप से त्च्ूक् ।बज, 2016 तथा न्छ ब्वदअमदजपवद वद जीम त्पहीजे व िच्मतेवदे ूपजी क्पेंइपसपजपमे (न्छब्त्च्क्) की भावना के अनुरूप है।

भारतीय सांकेतिक भाषा और सांस्कृतिक पहचानरू आधुनिक शोध यह स्पष्ट करते हैं कि भारतीय सांकेतिक भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि क्मं िब्वउउनदपजल की सांस्कृतिक पहचान का भी आधार है। अतः यदि

मूल्यांकन केवल मौखिक भाषा पर आधारित होगा, तो वह शिक्षार्थी की संपूर्ण भाषाई क्षमता को प्रदर्शित नहीं करेगा।

इसी कारण वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली में निम्न पक्षों को भी सम्मिलित किया जा रहा है-

1 प्ैस् व्याकरण 2 प्ैस् शब्दावली 3 छंततंजपअम ैंापससे

4 टपेनंस स्ंदहनंहम च्तवबमेंपदह) 5 थ्नदबजपवदंस ब्वउउनदपबंजपवद 6 च्तंहउंजपब ैंापससे

7 ।बंकमउपब ैपहद स्ंदहनंहम

समावेशी शिक्षा और भाषा मूल्यांकनरू राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) समावेशी शिक्षा पर विशेष बल देती है। समावेशी विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के श्रवण बाधित शिक्षार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं-

समावेशी शिक्षा और भाषा मूल्यांकनरू राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) समावेशी शिक्षा पर विशेष बल देती है। समावेशी विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के श्रवण बाधित शिक्षार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं.

श्रवण यन्त्र उपयोगकर्ता कोक्लियर इम्प्लांट उपयोगकर्ता सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ता सम्पूर्ण सम्प्रेषण उपयोगकर्ता बहुभाषिक शिक्षार्थी

ऐसी स्थिति में एक ही प्रकार का भाषा परीक्षण सभी पर लागू करना न तो वैज्ञानिक है और न ही न्यायसंगत। इसलिए समावेशी विद्यालयों में भाषा मूल्यांकन निम्न जैसा होना चाहिए।

वर्तमान समय में विश्वभर में भाषा मूल्यांकन निम्न सिद्धान्तों की ओर अग्रसर हैरू

क्मपिबपज डवकमस ैजतमदहजी डवकमस

डमकपबंस डवकमस ैवबपंस - त्पहीजे.इंेमक डवकमस

ैपदहसम स्ंदहनंहम ठपसपदहनंस ।ेेमेेउमदज

ज्मंबीमत.बमदजतमक स्मंतदमत.बमदजतमक ।ेेमेेउमदज

ैजंदकंतक ज्मेजपदह क्लदंउपब ।ेेमेेउमदज

ैबवतम.इंेमक च्तवपिसम.इंेमक ।ेेमेेउमदज

यह परिवर्तन विशेष शिक्षा को अधिक वैज्ञानिक, समावेशी तथा न्यायपूर्ण बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

<u>स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न.2</u>

1ण् सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी भाषा मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?

2ण् भाषाई अधिकार (स्पदहनपेजपब त्पहीजे) का भाषा मूल्यांकन में क्या महत्व है?

3ण् अधिकार-आधारित मूल्यांकन के तीन प्रमुख सिद्धान्त लिखिए।

4ण् भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में सांस्कृतिक संवेदनशीलता क्यों आवश्यक है?

7.4 विभिन्न आयु समूहों में भाषा विकास एवं मूल्यांकन

भाषा विकास एक सतत (ब्वदजपदनवने), क्रमिक (ैमुनमदजपंस) एवं गतिशील (क्लदंउपब) प्रक्रिया है, जो जन्म से प्रारम्भ होकर सम्पूर्ण जीवनकाल तक चलती रहती है। सामान्य परिस्थितियों में बालक अपने परिवेश से प्राप्त भाषाई अनुभवों, सामाजिक अन्तःक्रियाओं तथा संप्रेषण अवसरों के माध्यम से भाषा अर्जित करता है। किंतु श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में यह प्रक्रिया अनेक जैविक (ठपवसवहपबंस), मनोवैज्ञानिक (च्ेलबीवसवहपबंस), सामाजिक (ैवबपंस), तकनीकी (ज्मबीदवसवहपबंस) तथा शैक्षिक (म्कनबंजपवदंस) कारकों से प्रभावित होती है। श्रवण हानि की मात्रा, पहचान की आयु, प्रारम्भिक हस्तक्षेप, परिवार का संप्रेषण वातावरण, श्रवण सहायक उपकरणों की उपलब्धता तथा भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) या मौखिक भाषा के संपर्क जैसे कारक भाषा विकास की गति एवं गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इसी कारण श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा मूल्यांकन को किसी एक समय की परीक्षा न मानकर जीवनपर्यन्त (स्पमिचंद) प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। प्रत्येक आयु अवस्था में भाषा की अपेक्षाएँ बदलती हैंय परिणामस्वरूप मूल्यांकन के उद्देश्य, संकेतक, उपकरण एवं व्याख्या भी परिवर्तित होती है। उदाहरण के लिए, एक नवजात शिशु के मूल्यांकन का उद्देश्य भाषा ज्ञान का परीक्षण करना नहीं होता, बल्कि यह पहचानना होता है कि क्या वह ध्वनियों, दृश्य संकेतों अथवा सामाजिक उत्तेजनाओं के प्रति प्रतिक्रिया दे रहा है। इसके विपरीत, विद्यालयी अवस्था में भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य शैक्षणिक भाषा (।बंकमउपब स्ंदहनंहम), साक्षरता (स्पजमतंबल), कथन कौशल (छंततंजपअम ैंापससे) तथा सामाजिक संप्रेषण का विश्लेषण करना होता है। इसी प्रकार, वयस्क अवस्था में कार्यात्मक संप्रेषण (थ्नदबजपवदंस ब्वउउनदपबंजपवद), व्यावसायिक भाषा (टवबंजपवदंस ब्वउउनदपबंजपवद) तथा स्वतंत्र जीवन (प्दकमचमदकमदज स्पअपदह) के लिए

आवश्यक भाषा कौशलों का मूल्यांकन अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। अतः भाषा मूल्यांकन का मूल सिद्धान्त यह है कि ष्प्रत्येक आयु अवस्था की विकासात्मक अपेक्षाओं (क्मअमसवचउमदजंस म्चमबजंजपवदे) के अनुरूप मूल्यांकन किया जाए।ष्

7.4.1 भाषा मूल्यांकन का विकासात्मक एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या आधारित दृष्टिकोणरू भाषा विकास एक निरंतर (ब्वदजपदनवने) प्रक्रिया है, जबकि शिक्षा चरणबद्ध (ैजंहम-ूपेम) रूप से संगठित होती है। अतः श्रवण बाधित शिक्षार्थियों का भाषा मूल्यांकन केवल आयु के आधार पर नहीं, बल्कि विकासात्मक उपलब्धियों तथा छम्च् 2020 द्वारा प्रस्तावित शैक्षिक चरणों के अनुरूप किया जाना चाहिए। छम्च् 2020 ने शिक्षा व्यवस्था को 5़3़3़4 संरचना में पुनर्गठित किया है, जो बालक के संज्ञानात्मक, भाषाई एवं सामाजिक विकास के क्रम को ध्यान में रखती है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए यह ढाँचा और भी अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि प्रत्येक चरण में भाषा अधिगम, संप्रेषण तथा सीखने की आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। इसलिए भाषा मूल्यांकन भी प्रत्येक शैक्षिक चरण के विकासात्मक उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए। हालाँकि, श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में भाषा विकास की वास्तविक शुरुआत जन्म से ही हो जाती है। इसलिए इस इकाई में छम्च् 2020 के ढाँचे के साथ-साथ जन्म से तीन वर्ष की प्रारम्भिक हस्तक्षेप अवस्था को भी सम्मिलित किया गया है।

चित्र 7.1 श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा मूल्यांकन का विकासात्मक ढाँचारू

विकासात्मक अवस्था आयु छम्च् 2020 चरण भाषा मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य

प्रारम्भिक हस्तक्षेप जन्मद्3 वर्ष च्तम-थ्वनदकंजपवदंस प्रारम्भिक पहचान, संप्रेषण की नींव, परिवार मार्गदर्शन

आधारभूत अवस्था 3द्8 वर्ष थ्वनदकंजपवदंस ैजंहम भाषा, खेल, पूर्व-साक्षरता, प्ैस्ध्मौखिक भाषा की आधारशिला

प्रारम्भिक तैयारी अवस्था 8द्11 वर्ष च्तमचंतंजवतल ैजंहम शैक्षणिक भाषा, शब्दावली, द्विभाषिक विकास

मध्य अवस्था 11द्14 वर्ष डपककसम ैजंहम अवधारणात्मक भाषा, आलोचनात्मक सोच, प्राग्मैटिक भाषा

माध्यमिक अवस्था 14द्18 वर्ष ैमबवदकंतल ैजंहमउच्च स्तरीय भाषा, व्यावसायिक एवं कार्यात्मक संचार

उच्च शिक्षा एवं वयस्क18 वर्ष से आगे स्पमिसवदह स्मंतदपदह स्वतंत्र जीवन, रोजगार, सामाजिक सहभागिता

7.4.2 प्रारम्भिक बाल्यावस्था (जन्मद्3 वर्ष) (म्ंतसल ब्ीपसकीववकरू ठपतजी जव ज्ीतमम ल्मंते)रू जीवन के प्रथम तीन वर्ष भाषा विकास की दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील (ैमदेपजपअम च्मतपवक) माने जाते हैं। तंत्रिका विज्ञान (छमनतवेबपमदबम) एवं मनोभाषाविज्ञान (च्ेलबीवसपदहनपेजपबे) के शोधों से यह सिद्ध हुआ है कि इस अवधि में मस्तिष्क भाषा अधिगम के प्रति अत्यधिक ग्रहणशील होता है। यदि इस अवस्था में बच्चे को समृद्ध भाषाई अनुभव प्राप्त होते हैं, तो भाषा विकास अपेक्षाकृत सहज एवं तीव्र गति से होता है। इसके विपरीत, यदि भाषा इनपुट में विलम्ब (स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवद) होता है, तो उसका प्रभाव संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक संप्रेषण, साक्षरता तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर दीर्घकालिक रूप से दिखाई देता है। श्रवण बाधित बच्चों में यह अवस्था विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रारम्भिक पहचान (म्ंतसल

प्कमदजपपिबंजपवद) एवं प्रारम्भिक हस्तक्षेप (म्ंतसल प्दजमतअमदजपवद) भविष्य के भाषा विकास का आधार निर्धारित करते हैं। वर्तमान शोध यह संकेत देते हैं कि यदि श्रवण हानि की पहचान जीवन के प्रथम छह महीनों के भीतर हो जाए तथा उपयुक्त हस्तक्षेप प्रारम्भ कर दिया जाए, तो भाषा विकास के परिणाम अपेक्षाकृत बेहतर होते हैं।

इस अवस्था में भाषा विकास की प्रमुख विशेषताएँरू इस आयु में भाषा का विकास शब्द सीखने से पहले संप्रेषण की आधारभूत क्षमताओं के विकास से प्रारम्भ होता है। इनमें प्रमुख हैं-

ध्वनि अथवा दृश्य उत्तेजना के प्रति प्रतिक्रिया संयुक्त ध्यान नेत्र सम्पर्क (म्लम ब्वदजंबज)

सामाजिक मुस्कान एवं अनुकरण वस्तुओं एवं व्यक्तियों की पहचान संकेतों एवं हाव-भाव का प्रयोग

प्रारम्भिक संप्रेषण अभिप्राय प्रारम्भिक ग्रहणशील शब्दावली प्रारम्भिक अभिव्यक्तात्मक संप्रेषण

यदि बालक भारतीय सांकेतिक भाषा के वातावरण में विकसित हो रहा है, तो इसी अवधि में प्रारम्भिक संकेत (म्ंतसल ैपहदे), चेहरे की अभिव्यक्ति तथा दृश्य-आधारित संप्रेषण विकसित होने लगता है। अनेक शोध यह दर्शाते हैं कि क्मं िंचंतमदजे के बच्चों में प्रारम्भिक प्ैस् विकास सामान्य श्रवण वाले बच्चों के मौखिक भाषा विकास के समान विकासात्मक क्रम का अनुसरण करता है।

इस अवस्था में भाषा मूल्यांकन के उद्देश्यरू प्रारम्भिक बाल्यावस्था में भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य किसी प्रकार की परीक्षा लेना नहीं है। इसका प्रमुख उद्देश्य भाषा विकास की वर्तमान स्थिति को समझना तथा जोखिम वाले बच्चों की शीघ्र पहचान करना है।

इस अवस्था में मूल्यांकन का लक्ष्य होता है-

1 भाषा विकास के प्रारम्भिक संकेतों की पहचान 2 संप्रेषण शैली का विश्लेषण 3 परिवार एवं बालक के मध्य अन्तःक्रिया का अवलोकन

4 ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक संप्रेषण का प्रारम्भिक स्तर 5 हस्तक्षेप की आवश्यकता का निर्धारण 6 वैयक्तिक परिवार सेवा योजना अथवा प्रारम्भिक हस्तक्षेप योजना के लिए आधार तैयार करना

मूल्यांकन के प्रमुख संकेतकरू इस आयु समूह में निम्न संकेतकों का अवलोकन किया जाता हैकृ

ग्रहणशील संकेतक अभिव्यक्तात्मक संकेतक सामाजिक संप्रेषण संकेतक

1 दृश्य अथवा श्रवण उत्तेजना की ओर ध्यान देना 1 रोना, मुस्कराना, ध्वनि अथवा संकेत द्वारा आवश्यकता व्यक्त करना 1 बारी-बारी से संप्रेषण

2 परिचित व्यक्तियों की पहचान 2 नेत्र सम्पर्क स्थापित करना 2 अनुकरण

3 सरल निर्देशों को समझना 3 संयुक्त ध्यान प्रारम्भ करना 3 साझा ध्यान

4 संकेत अथवा इशारे का अर्थ समझना4 संकेतों या हाव-भाव का प्रयोग 4 सामाजिक सहभागिता

5 वस्तुओं एवं चित्रों की पहचान 5 प्रारम्भिक शब्द अथवा प्रारम्भिक संकेतों का उपयोग5 संप्रेषण प्रारम्भ करने की क्षमता

मूल्यांकन की प्रमुख विधियाँरू इस अवस्था में औपचारिक परीक्षणों की अपेक्षा प्राकृतिक अवलोकन (छंजनतंसपेजपब व्इेमतअंजपवद) अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

अतः निम्न विधियाँ अधिक उपयोगी हैं-

1 माता-पिता साक्षात्कार 2 वीडियो विश्लेषण 3 विकासात्मक चेकलिस्ट

4 भाषा नमूना। 5 दिनचर्या आधारित मूल्यांकन6 परिवार-केंद्रित मूल्यांकन।

यदि बालक भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है, तो मूल्यांकनकर्ता को प्ैस् के प्रारम्भिक संकेतों, चेहरे की अभिव्यक्तियों तथा दृश्य संप्रेषण व्यवहारों का भी व्यवस्थित अवलोकन करना चाहिए। मूल्यांकन के आधार पर शैक्षिक निर्णयरू इस आयु में मूल्यांकन का उद्देश्य निदान से अधिक हस्तक्षेप योजना होता है। यदि मूल्यांकन से यह ज्ञात होता है कि (प) भाषा सम्पर्क में विलम्ब है, (पप) संयुक्त ध्यान विकसित नहीं हो रहा, (पपप) संप्रेषण प्रारम्भ नहीं हो रहा, एवं (पअ) परिवार प्रभावी संप्रेषण माध्यम का प्रयोग नहीं कर रहा तो तत्काल प्रारम्भिक हस्तक्षेप कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाना चाहिए।इस अवस्था में समय पर हस्तक्षेप भविष्य के भाषा विकास, संज्ञानात्मक वृद्धि तथा विद्यालयी सफलता की मजबूत नींव रखता है।

चित्र 7.1 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में भाषा मूल्यांकन की प्रक्रिया

7.4.3 आधारभूत अवस्था

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार तीन से आठ वर्ष की आयु को आधारभूत अवस्था (थ्वनदकंजपवदंस ैजंहम) कहा गया है। इसमें तीन वर्ष का पूर्व-प्राथमिक (आंगनवाड़ी, प्री-स्कूल, बालवाटिका आदि) तथा कक्षा 1 एवं 2 सम्मिलित हैं। इस अवस्था का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में भाषा, संप्रेषण, सामाजिक सहभागिता, खेल-आधारित अधिगम, जिज्ञासा, सृजनात्मकता तथा आधारभूत साक्षरता का विकास करना है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए यह अवस्था और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसी अवधि में भाषा की मजबूत नींव तैयार होती है। यदि इस समय समृद्ध भाषाई वातावरण, उपयुक्त संप्रेषण माध्यम तथा प्रारम्भिक शैक्षिक सहयोग उपलब्ध हो, तो आगे की शैक्षणिक उपलब्धियों की संभावना उल्लेखनीय रूप से बढ़ जाती है। भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य इस अवस्था में केवल यह जानना नहीं होता कि बच्चा कितने शब्द जानता है, बल्कि यह समझना भी होता है कि वह भाषा को कैसे समझता है, उसका उपयोग कैसे करता है तथा सीखने के लिए भाषा का प्रयोग किस सीमा तक कर पाता है।

7.4.3.1 विकासात्मक विशेषताएँ (क्मअमसवचउमदजंस ब्ीपंतंबजमतपेजपबे)रू तीन से आठ वर्ष की आयु में भाषा विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है। इस अवधि में बच्चे संप्रेषण के प्रारम्भिक स्तर से आगे बढ़कर व्यवस्थित भाषा का उपयोग करने लगते हैं। श्रवण बाधित बच्चों में यह विकास प्रयुक्त संप्रेषण माध्यम, प्रारम्भिक हस्तक्षेप तथा पारिवारिक सहयोग पर निर्भर करता है। इस अवस्था में सामान्यतः निम्न विकासात्मक परिवर्तन देखे जाते हैं-

- शब्दावली में निरन्तर वृद्धि।
- दो या अधिक शब्दों वाले वाक्यों से जटिल वाक्य संरचनाओं की ओर प्रगति।
- प्रश्न पूछने तथा उत्तर देने की क्षमता का विकास।
- दैनिक अनुभवों का वर्णन करना।
- कहानी सुनना एवं सरल कथाएँ कहना।
- प्रतीकात्मक खेल (ैलउइवसपब च्सलं) में भाषा का प्रयोग।
- सामाजिक अन्तःक्रिया में भाषा का उपयोग।
- प्रारम्भिक साक्षरता (म्उमतहमदज स्पजमतंबल) का विकास।
- चित्रों, संकेतों तथा लिखित प्रतीकों के बीच सम्बन्ध स्थापित करना।

यदि बच्चा भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है, तो इस अवस्था में प्ैस् की शब्दावली, संकेतों की संरचना, चेहरे की व्याकरणिक अभिव्यक्तियाँ तथा दृश्य-स्थानिक संगठन (टपेनंसै-चंजपंस व्तहंदप्रंजपवद) में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

7.4.3.2 भाषा एवं संप्रेषण विकासरू छम्च् 2020 तथा छब्थ्-थ्ै 2022 के अनुसार इस अवस्था में भाषा विकास को केवल मौखिक भाषा तक सीमित नहीं माना गया है। भाषा का उद्देश्य बच्चे को सोचने, समझने, प्रश्न करने, कल्पना करने तथा सामाजिक रूप से जुड़ने में सक्षम बनाना है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए भाषा विकास निम्न माध्यमों से हो सकता है-

इस अवस्था में विशेष रूप से निम्न कौशल विकसित किए जाते हैं-

ग्रहणशील भाषा	अभिव्यक्तात्मक भाषा	प्राग्मैटिक कौशल
1 सरल निर्देशों को समझना	1 अनुभवों का वर्णन करना	1 वार्तालाप आरम्भ करना
2 परिचित एवं अपरिचित शब्दों का अर्थ ग्रहण करना	2 प्रश्न पूछना	2 अपनी बारी की प्रतीक्षा करना
3 चित्रों एवं संकेतों की पहचान करना	3 भावनाएँ व्यक्त करना	3 नेत्र सम्पर्क बनाए रखना
4 कहानी का आशय समझना	4 सरल घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन करना	4 सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार भाषा का प्रयोग करना
5 दैनिक गतिविधियों से जुड़े संदेशों को समझना	5 संकेतों अथवा शब्दों के माध्यम से विचार व्यक्त करना	5 समूह गतिविधियों में भाग लेना

7.4.3.3 आधारभूत साक्षरता (थ्वनदकंजपवदंस स्पजमतंबल) और भाषा मूल्यांकनरू छब्थ्-थ्ै में आधारभूत साक्षरता को भाषा विकास का अभिन्न भाग माना गया है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए साक्षरता केवल पढ़ना-लिखना नहीं, बल्कि भाषा को समझने और उसके अर्थ का निर्माण करने की प्रक्रिया है। इस अवस्था में मूल्यांकन निम्न क्षेत्रों पर केन्द्रित होना चाहिए-

- चित्र एवं शब्द का सम्बन्ध।

- संकेत एवं लिखित शब्द का सम्बन्ध।
- प्रारम्भिक शब्द पहचान।
- साझा पठन (ैीपंतमक त्मंकपदह) में सहभागिता।
- कहानी सुनने एवं पुनःकथन (त्मजमससपदह) की क्षमता।
- चित्रों के आधार पर घटनाओं का क्रम बताना।
- प्रारम्भिक लेखन (म्उमतहमदज ॅतपजपदह)।

यदि बच्चा प्ैस् का प्रयोग करता है, तो मूल्यांकनकर्ता को यह भी देखना चाहिए कि क्या बच्चा संकेत भाषा के माध्यम से कहानी को समझकर उसे लिखित अथवा दृश्य रूप में व्यक्त कर सकता है।

7.4.3.4 भाषा मूल्यांकन के प्रमुख संकेतक एवं उपकरणरू इस अवस्था में मूल्यांकन को सतत, समग्र तथा खेल-आधारित होना चाहिए।

ग्रहणशील भाषा संकेतक अभिव्यक्तात्मक भाषा संकेतक सामाजिक संप्रेषण संकेतक प्रारम्भिक साक्षरता संकेतक

1 शब्दों एवं संकेतों की समझ। 1 शब्दावली का उपयोग। 1 समूह गतिविधियों में भागीदारी 1 पुस्तक के प्रति रुचि

2 निर्देशों का पालन। 2 वाक्य निर्माण। 2 साथियों के साथ संवाद। 2 चित्रों की व्याख्या

3 चित्रों का अर्थ समझना। 3 संकेतों की स्पष्टता। 3 खेल में भाषा का प्रयोग। 3 प्रतीकों की पहचान

4 कहानी की मुख्य बात पहचानना। 4 घटनाओं का वर्णन। 4 सहयोगात्मक अधिगम। 4 कहानी पुनःकथन

5 वर्गीकरण एवं मिलान करना। 5 अनुभव साझा करना। 5 भावनाओं की अभिव्यक्ति। में भाग लेना 5 लिखित सामग्री के प्रति जागरूकता

इस अवस्था में प्रयुक्त प्रमुख मूल्यांकन विधियाँरू

1 प्राकृतिक अवलोकन 2 खेल-आधारित मूल्यांकन 3 पोर्टफोलियो 4 भाषा नमूना विश्लेषण

5 शिक्षक अभिलेख 6 अभिभावक रिपोर्ट 7 प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन 8 वीडियो विश्लेषण

7.4.3.5 छम्च् 2020 के अनुरूप मूल्यांकन की विशेषताएँरू छम्च् 2020 में मूल्यांकन को सीखने का अभिन्न अंग माना गया है। इसलिए इस अवस्था में भाषा मूल्यांकन (क) भयमुक्तय (ख) खेल एवं गतिविधियों पर आधारितय (ग) सीखने की प्रगति को मापना वालाय (घ) तुलना के बजाय व्यक्तिगत प्रगति पर केन्द्रितय (ङ) परिवार की सहभागिता सुनिश्चित करने वालाय (च) बहुभाषिक एवं बहु-माध्यमीय संप्रेषण को स्वीकार करने वालाय (छ) भारतीय सांकेतिक भाषा को उपयुक्त स्थान देना वाला तथा समावेशी कक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

7.4.3.6 शिक्षक एवं परिवार की भूमिकारू इस अवस्था में भाषा मूल्यांकन केवल विशेष शिक्षक का कार्य नहीं है। इसमें परिवार, पूर्व-प्राथमिक शिक्षक, वाणी एवं भाषा विशेषज्ञ, ऑडियोलॉजिस्ट तथा विशेष शिक्षक सभी की संयुक्त भूमिका होती है।

चित्र 7ण्2 थ्वनदकंजपवदंस ैजंहम में भाषा मूल्यांकन की प्रक्रिया

चिंतन कीजिए

यदि एक श्रवण बाधित बालक भारतीय सांकेतिक भाषा में कहानी को उत्कृष्ट रूप से समझ और प्रस्तुत कर सकता है, किन्तु लिखित हिन्दी में अपेक्षाकृत कमजोर है, तो क्या उसे भाषा में कमजोर माना जाना चाहिए? अपने उत्तर को द्विभाषिक शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धान्तों के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

7.4.4 तैयारी अवस्था (च्तमचंतंजवतल ैजंहम 8दृ11 वर्ष)रू

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार तैयारी अवस्था (च्तमचंतंजवतल ैजंहम) में कक्षा 3 से 5 तक के शिक्षार्थी सम्मिलित हैं। इस चरण में शिक्षा का स्वरूप पूर्ववर्ती खेल-आधारित अधिगम से आगे बढ़कर अनुभवात्मक, गतिविधि-आधारित, खोजपरक तथा संवादात्मक बन जाता है। यही वह अवस्था है जहाँ बालक ष्भाषा सीखनेष् से आगे बढ़कर ष्भाषा के माध्यम से विज्ञान, गणित, पर्यावरण अध्ययन तथा अन्य विषयों को सीखनाष् प्रारम्भ करता है।

श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए यह अवस्था अत्यंत संवेदनशील होती है क्योंकि यदि इस समय तक भाषा की आधारभूत नींव पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुई है, तो विषयगत अधिगम भी प्रभावित होने लगता है। इसलिए इस चरण में भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य केवल भाषाई त्रुटियों की पहचान करना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षार्थी पाठ्यचर्या को समझने, विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने तथा शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम है।

7.4.4.1 विकासात्मक विशेषताएँरू इस अवस्था में भाषा विकास में गुणात्मक परिवर्तन दिखाई देता है। अब भाषा केवल दैनिक संप्रेषण तक सीमित नहीं रहती, बल्कि ज्ञान के निर्माण का प्रमुख माध्यम बन जाती है। इस अवधि में सामान्यतः निम्नलिखित परिवर्तन देखे जाते हैं-

1 शब्दावली में तीव्र विस्तार, विशेषकर विषयगत शब्दों का विकास। 2 जटिल वाक्य संरचनाओं का प्रयोग। 3 कारणदृपरिणाम सम्बन्धों को भाषा द्वारा व्यक्त करना।

4 घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन। 5 कहानी, संवाद तथा विवरणात्मक लेखन का विकास। 6 समूह चर्चा एवं सहयोगात्मक अधिगम में सक्रिय सहभागिता।

7 पढ़कर समझने तथा पढ़े हुए का विश्लेषण करने की क्षमता। 8 प्रारम्भिक आलोचनात्मक चिंतन का विकास।

यदि शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है, तो इस अवस्था में प्ैस् के माध्यम से अवधारणाओं की व्याख्या, विषयगत संकेतों का उपयोग तथा जटिल कथन संरचनाओं का विकास भी अपेक्षित होता है।

7.4.4.2 भाषा एवं संप्रेषण विकासरू तैयारी अवस्था में भाषा विकास का उद्देश्य केवल संप्रेषण नहीं, बल्कि अधिगम है। शिक्षार्थी अब भाषा का उपयोग (क) नई अवधारणाओं को समझने (ख) प्रश्न पूछनेय (ग) समस्या का समाधान करनेय (घ) तर्क प्रस्तुत करनेय (ङ) अनुभवों की तुलना करनेय तथा (च) सहयोगात्मक अधिगम में भाग लेने के लिए करता है। इस अवस्था में निम्न भाषाई कौशलों पर विशेष ध्यान दिया जाता है-

ग्रहणशील भाषा अभिव्यक्तात्मक भाषा सामाजिक संप्रेषण

1 विषयगत शब्दावली को समझना। 1 अनुभवों एवं विचारों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना। 1 समूह चर्चा में भाग लेना।

2 बहु-चरणीय निर्देशों का पालन करना। 2 घटनाओं का वर्णन करना। 2 दूसरों के विचारों पर प्रतिक्रिया देना।

3 कहानी एवं पाठ का आशय ग्रहण करना। 3 विषयगत शब्दों का उचित प्रयोग करना। 3 उपयुक्त भाषा शैली का चयन करना।

4 चित्र, तालिका एवं दृश्य सामग्रियों की व्याख्या करना। 4 प्रश्नों के विस्तृत उत्तर देना। 4 सामाजिक एवं शैक्षणिक परिस्थितियों के अनुसार भाषा का उपयोग करना।

5 विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का अर्थ समझना। 5 मौखिक, लिखित अथवा सांकेतिक भाषा के माध्यम से स्पष्टीकरण देना। 5

7.4.4.3 शैक्षणिक भाषा का मूल्यांकनरू इस अवस्था में का विकास भाषा मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य बन जाता है। शैक्षणिक भाषा से आशय ऐसी भाषा से है जिसका उपयोग विद्यालयी विषयों को सीखने, समझने तथा प्रस्तुत करने में किया जाता है। इसका मूल्यांकन निम्न आधारों पर किया जा सकता है-

1 विषयगत शब्दावली 2 अवधारणात्मक समझ3 परिभाषाएँ देना

4 तुलना एवं वर्गीकरण करना 5 कारण एवं परिणाम स्पष्ट करना 6 निष्कर्ष निकालना

7 चित्रों, मानचित्रों एवं तालिकाओं की व्याख्या करना 8 विज्ञान एवं गणित की भाषा का उपयोग करना

यदि बच्चा भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करता है, तो यह देखा जाना चाहिए कि वह विषयगत अवधारणाओं को प्ैस् में किस स्पष्टता एवं शुद्धता से व्यक्त कर सकता है।

7.4.4.4 पठन, लेखन एवं द्विभाषिक मूल्यांकनरू राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषिकता तथा आधारभूत साक्षरता से आगे बढ़कर सार्थक पठन एवं लेखन पर बल देती है। इस अवस्था में मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र निम्न हैं-

पठन		लेखन	
1	पठन प्रवाह (त्मंकपदह थ्सनमदबल)	1	वाक्य निर्माण
2	पठन-बोध (त्मंकपदह ब्वउचतमीमदेपवद)	2	अनुच्छेद लेखन
3	मुख्य विचार की पहचान	3	घटनाओं का वर्णन
4	अनुमान लगाना	4	विचारों की तार्किक प्रस्तुति
5	निष्कर्ष निकालना	5	व्याकरणिक शुद्धता
6	संदर्भ से अर्थ समझना	7	शब्दावली का प्रयोग

द्विभाषिक मूल्यांकन (लिखित भाषा)रू यदि शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा एवं लिखित भाषा दोनों का उपयोग करता है, तो मूल्यांकन में (क) प्ैस् से लिखित भाषा में अर्थान्तरणय (ख) लिखित पाठ को प्ैस् में समझानाय (ग) दोनों भाषाओं में समान अवधारणा व्यक्त करनाय (घ) भाषा परिवर्तन की उपयुक्तता एवं भाषा अन्तरण का समावेश आवश्यक है। इस प्रकार का मूल्यांकन शिक्षार्थी की वास्तविक द्विभाषिक क्षमता को समझने में सहायता करता है।

7.4.4.5 भाषा मूल्यांकन के प्रमुख संकेतक एवं उपकरणरू इस अवस्था में मूल्यांकन बहुआयामी होना चाहिए।

ग्रहणशील भाषा अभिव्यक्तात्मक भाषा प्राग्मैटिक भाषा शैक्षणिक भाषा

1 निर्देशों की समझ 1 मौखिकध्सांकेतिक प्रस्तुति 1 सहयोगात्मक अधिगम 1 विज्ञान एवं गणित की भाषा

2 पठन-बोध 2 अनुच्छेद लेखन 2 समूह चर्चा 2 विषयगत शब्दावली

3 विषयगत शब्दावली 3 कहानी सुनाना 3 प्रश्न पूछना 3 परियोजना प्रस्तुति

4 अवधारणात्मक समझ4 समस्या समाधान की व्याख्या4 तर्क प्रस्तुत करना 4 दृश्य सामग्री की व्याख्या

प्रमुख मूल्यांकन उपकरणरू इस अवस्था में निम्न उपकरण प्रभावी माने जाते हैं-

1 पाठ्यचर्या-आधारित मूल्यांकन 2 प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन 3 परियोजना कार्य

4 पोर्टफोलियो एवं रूब्रिक 5 भाषा नमूना विश्लेषण 6 सहपाठी मूल्यांकन

7 मौखिक अथवा प्ैस् प्रस्तुति 8 शिक्षक अवलोकन 9 स्व-मूल्यांकन

7.4.4.6 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप मूल्यांकन की विशेषताएँरू तैयारी अवस्था में भाषा मूल्यांकन-

- दक्षता-आधारित होना चाहिए।
- केवल स्मृति पर आधारित न होकर समझ एवं अनुप्रयोग को मापना चाहिए।
- गतिविधि एवं परियोजना-आधारित होना चाहिए।
- बहुभाषिक संप्रेषण को स्वीकार करना चाहिए।
- भारतीय सांकेतिक भाषा सहित विभिन्न संप्रेषण माध्यमों का सम्मान करना चाहिए।
- सीखने के लिए मूल्यांकन को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- नियमित प्रतिपुष्टि प्रदान करनी चाहिए।

7.4.4.7 शैक्षिक एवं हस्तक्षेप संबंधी निहिताथरू

यदि मूल्यांकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षार्थी

(क) विषयगत शब्दावली को समझने में कठिनाई अनुभव कर रहा है,

(ख) लिखित भाषा में विचारों को व्यवस्थित नहीं कर पा रहा,

(ग) प्ैस् एवं लिखित भाषा के मध्य अर्थान्तरण में कठिनाई है, तथा

(घ) समूह चर्चा में सीमित सहभागिता कर रहा है, तो शिक्षक को

(क) दृश्य एवं बहु-माध्यमीय शिक्षण सामग्री का उपयोग करनाय (ख) प्ैस् तथा लिखित भाषा के मध्य सेतु विकसित करनाय (ग) विषयगत शब्दावली का

पूर्व-अध्यापन करनाय (घ) सहयोगात्मक अधिगम तथा भाषा-समृद्ध गतिविधियों को बढ़ावा देना एवं (ङ) व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (प्म्च्) के अनुसार भाषा हस्तक्षेप को संशोधित करना चाहिए।

चित्र 7.3 च्तमचंतंजवतल ैजंहम में भाषा मूल्यांकन की प्रक्रिया

चिंतन कीजिए

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 दक्षता-आधारित मूल्यांकन पर बल देती है। यदि कोई श्रवण बाधित शिक्षार्थी विज्ञान की अवधारणाओं को भारतीय सांकेतिक भाषा में स्पष्ट रूप से समझा सकता है, लेकिन लिखित उत्तर संक्षिप्त देता है, तो उसके अधिगम का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाना चाहिए? अपने उत्तर को द्विभाषिक मूल्यांकन तथा समावेशी शिक्षा के सिद्धान्तों के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

7.4.5 मध्य अवस्था

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार मध्य अवस्था में कक्षा 6 से 8 तक के शिक्षार्थी सम्मिलित हैं। इस अवस्था में बालक की संज्ञानात्मक, भाषाई एवं सामाजिक क्षमताओं में उल्लेखनीय परिपक्वता आती है। अब शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यों का अधिगम नहीं रहता, बल्कि अवधारणाओं की गहन समझ, विश्लेषण, तर्क, समस्या समाधान तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना होता है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए यह अवस्था विशेष महत्त्व रखती है क्योंकि अब उन्हें विभिन्न विषयों में प्रयुक्त शैक्षणिक भाषा, अमूर्त अवधारणाओं, तकनीकी शब्दावली तथा बहुस्तरीय संप्रेषण स्थितियों का सामना करना पड़ता है। यदि इस स्तर पर भाषा पर्याप्त विकसित नहीं होती, तो विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान एवं अन्य विषयों में अधिगम प्रभावित हो सकता है। अतः इस अवस्था में भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य केवल भाषाई शुद्धता का परीक्षण करना

नहीं, बल्कि यह समझना है कि शिक्षार्थी भाषा का उपयोग सोचने, तर्क करने, विश्लेषण करने, सहयोगात्मक अधिगम में भाग लेने तथा जटिल अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिए किस सीमा तक कर सकता है।

7.4.5.1 विकासात्मक विशेषताएँ

इस अवस्था में भाषा विकास अधिक परिपक्व एवं उद्देश्यपूर्ण हो जाता है। शिक्षार्थी अब केवल अनुभवों का वर्णन नहीं करता, बल्कि उनके कारण, परिणाम तथा वैकल्पिक समाधान पर भी विचार करने लगता है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों में इस अवधि के दौरान सामान्यत (क) विषय-विशिष्ट शब्दावली का विस्तारय (ख) जटिल एवं संयुक्त वाक्यों का प्रयोगय (ग) अमूर्त अवधारणाओं को समझने एवं व्यक्त करने की क्षमताय (घ) तर्कपूर्ण एवं विश्लेषणात्मक भाषा का विकासय (ङ) बहु-अनुच्छेदीय पठन एवं लेखनय (च) विभिन्न स्रोतों से सूचना का विश्लेषणय (छ) समूह चर्चा एवं सहयोगात्मक अधिगम में सक्रिय सहभागिताय (ज) डिजिटल एवं दृश्य माध्यमों द्वारा संप्रेषण आदि परिवर्तन अपेक्षित होते हैं। यदि शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करता है, तो उससे अपेक्षा की जाती है कि वह विषयगत अवधारणाओं, प्रक्रियाओं एवं तर्कों को प्ैस् की व्याकरणिक संरचना का उचित उपयोग करते हुए स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर सके।

7.4.5.2 भाषा एवं संप्रेषण विकास

मध्य अवस्था में भाषा विकास का केन्द्र ज्ञान के निर्माण एवं विचारों के आदान-प्रदान पर होता है। इस अवस्था में शिक्षार्थी भाषा का उपयोग अवधारणाओं की व्याख्या करने, विभिन्न विचारों की तुलना करने, प्रमाण प्रस्तुत करने, समस्या समाधान की रणनीति समझाने, समूह परियोजनाओं में भाग लेने एवं आत्म-अभिव्यक्ति एवं आत्म-चिंतन करने के लिए करता है।

ग्रहणशील भाषा अभिव्यक्तात्मक भाषा प्राग्मैटिक भाषा

1 विषयगत पाठों को समझना 1 तर्कपूर्ण उत्तर देना 1 औपचारिक एवं अनौपचारिक भाषा का उचित चयन करता है या नहीं।

2 व्याख्यान, वीडियो अथवा प्ैस् प्रस्तुति का आशय ग्रहण करना 2 किसी विषय पर अपने विचार व्यक्त करना 2 समूह चर्चा में अपनी भूमिका निभाता है

3 बहु-स्तरीय निर्देशों का पालन करना 3 घटनाओं का विश्लेषण करना 3 दूसरों के विचारों को समझकर प्रतिक्रिया देता है

4 कारणदृपरिणाम सम्बन्धों को समझना 4 उदाहरण देकर अवधारणाओं को स्पष्ट करना 4 प्रश्न पूछता एवं स्पष्टीकरण प्राप्त करता है

5 अमूर्त शब्दावली एवं रूपकों का अर्थ समझना 5 विषयगत शब्दावली का सटीक उपयोग 5 विवाद अथवा मतभेद की स्थिति में उपयुक्त भाषा का प्रयोग करता है

7.4.5.3 आलोचनात्मक चिंतन एवं भाषा मूल्यांकन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार इस अवस्था में आलोचनात्मक चिंतन का विकास एक प्रमुख शैक्षिक उद्देश्य है। अतः भाषा मूल्यांकन में केवल स्मृति-आधारित प्रश्नों के स्थान पर ऐसे कार्य सम्मिलित किए जाने चाहिए जो शिक्षार्थी की विश्लेषणात्मक क्षमता का आकलन करें। उदाहरण के लिए, शिक्षार्थी से केवल किसी अवधारणा की परिभाषा पूछने के बजाय उससे यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह (क) किसी समस्या का विश्लेषण करेय (ख) दो अवधारणाओं की तुलना करेय (ग) किसी घटना के कारण एवं परिणाम बताएय (घ) वैकल्पिक समाधान

सुझाएय और (ङ) अपने उत्तर के समर्थन में तर्क प्रस्तुत करे। यदि शिक्षार्थी प्ैस् का उपयोग करता है, तो उसे इन कार्यों को भारतीय सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करने का अवसर भी दिया जाना चाहिए।

7.4.5.4 विषय-विशिष्ट भाषारू इस अवस्था में प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्ट भाषा होती है। इसलिए भाषा मूल्यांकन केवल सामान्य शब्दावली तक सीमित नहीं रह सकता। उदाहरणार्थ- (प) विज्ञान में वैज्ञानिक शब्दावली एवं प्रक्रियाओं की भाषाय (पप) गणित में प्रतीकों, संबंधों एवं तर्क की भाषाय (पपप) सामाजिक विज्ञान में कारणदृपरिणाम, समय, स्थान एवं ऐतिहासिक घटनाओं की भाषाय (पअ) भाषा विषयों में साहित्यिक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति। मूल्यांकनकर्ता को यह देखना चाहिए कि शिक्षार्थी विषयगत भाषा का उपयोग कितनी सटीकता एवं अर्थपूर्ण ढंग से करता है।

7.4.5.5 भारतीय सांकेतिक भाषा एवं द्विभाषिक मूल्यांकनरू यदि शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा एवं लिखित भाषा दोनों का उपयोग करता है, तो मूल्यांकन में (प) प्ैस् में विषयगत अवधारणाओं की व्याख्याय (पप) लिखित पाठ का प्ैस् में रूपान्तरणय (पपप) प्ैस् प्रस्तुति का लिखित सार तैयार करनाय (पअ) दोनों भाषाओं में समान अवधारणा व्यक्त करनाय (अ) भाषा अन्तरण की गुणवत्ताय और (अप) द्विभाषिक संज्ञानात्मक रणनीतियों का उपयोग आदि पक्षों को सम्मिलित किया जाना चाहिए । इस प्रकार का मूल्यांकन शिक्षार्थी की वास्तविक द्विभाषिक क्षमता का अधिक समग्र चित्र प्रस्तुत करता है।

7.4.5.6 भाषा मूल्यांकन के प्रमुख संकेतक एवं उपकरण

ग्रहणशील भाषा अभिव्यक्तात्मक भाषा प्राग्मैटिक भाषा संज्ञानात्मक-भाषाई कौशल

1 शैक्षणिक पठन-बोध 1 विश्लेषणात्मक लेखन 1 समूह चर्चा 1 वर्गीकरण

2 बहु-स्रोत सूचना की समझ 2 तर्कपूर्ण प्रस्तुति 2 सहयोगात्मक अधिगम 2 विश्लेषण एवं संश्लेषण

3 विषयगत शब्दावली 3 परियोजना रिपोर्ट 3 वाद-विवाद 3 समस्या समाधान

4 अमूर्त अवधारणाओं की समझ 4 प्ैस् अथवा मौखिक प्रस्तुतीकरण 4 भूमिका-अभिनय 4 निर्णय लेना

प्रमुख मूल्यांकन उपकरणरू

1 दक्षता-आधारित मूल्यांकन 2 दक्षता-आधारित मूल्यांकन 3 प्रस्तुतीकरण

4 परियोजना एवं अन्वेषण कार्य 5 पोर्टफोलियो 6 विश्लेषणात्मक रूब्रिक

7 भाषा नमूना विश्लेषण 8 सहपाठी एवं स्व-मूल्यांकन 9 डिजिटल मूल्यांकन एवं ई-पोर्टफोलियो

चिंतन कीजिए

मध्य अवस्था में यदि कोई श्रवण बाधित शिक्षार्थी विज्ञान की किसी अवधारणा को भारतीय सांकेतिक भाषा में तार्किक एवं सटीक रूप से समझा सकता है, लेकिन वही अवधारणा लिखित भाषा में संक्षेप में व्यक्त करता है, तो उसकी वास्तविक शैक्षणिक भाषा दक्षता का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाना चाहिए?

7.4.6 माध्यमिक अवस्था (ैमबवदकंतल ैजंहम 14द्18 वर्ष)रू

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार माध्यमिक अवस्था में कक्षा 9 से 12 तक के शिक्षार्थी सम्मिलित हैं। इस चरण में शिक्षार्थी उच्च स्तरीय अधिगम, विषय-विशेषीकरण, व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, अनुसंधान कौशल तथा जीवन एवं करियर की तैयारी की दिशा में अग्रसर होता है। इस अवस्था में भाषा का स्वरूप केवल संप्रेषण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह ज्ञान के विश्लेषण, आलोचनात्मक चिंतन, निर्णय-निर्माण, नेतृत्व, नवाचार तथा सामाजिक सहभागिता का प्रमुख माध्यम बन जाता है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए यह चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी अवधि में उन्हें उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा रोजगार के लिए आवश्यक भाषाई दक्षताओं का विकास करना होता है। यदि इस अवस्था में भाषा मूल्यांकन केवल व्याकरण अथवा शब्दावली तक सीमित रहे, तो वह शिक्षार्थी की वास्तविक शैक्षणिक एवं व्यावसायिक तैयारी का आकलन नहीं कर सकेगा। इसलिए इस स्तर पर भाषा मूल्यांकन को कार्यात्मक, दक्षता-आधारित, द्विभाषिक तथा भविष्य-उन्मुख होना चाहिए।

7.4.6.1 विकासात्मक विशेषताएँरू किशोरावस्था के उत्तरार्ध में भाषा अधिक परिष्कृत, उद्देश्यपूर्ण एवं विश्लेषणात्मक हो जाती है। शिक्षार्थी अब केवल जानकारी प्राप्त करने वाला नहीं रहता, बल्कि ज्ञान का आलोचनात्मक उपभोक्ता तथा सृजनकर्ता बनता है। इस अवस्था में सामान्यतः (क) अमूर्त एवं जटिल अवधारणाओं को समझने की क्षमताय (ख) बहु-स्रोत सूचनाओं का विश्लेषण एवं समन्वयय (ग) तर्कपूर्ण एवं प्रमाण-आधारित अभिव्यक्तिय (घ) औपचारिक एवं व्यावसायिक संप्रेषण शैली का विकासय (ङ) शोध, परियोजना एवं प्रस्तुतीकरण कौशलय (च) डिजिटल एवं मल्टीमीडिया संप्रेषण की दक्षता, और आत्म-अभिव्यक्ति, आत्म-चिंतन तथा आत्म-अधिवक्ता (ैमसा-।कअवबंबल) का विकास

आदि निम्न विशेषताएँ विकसित होती हैं । यदि शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करता है, तो उससे अपेक्षा की जाती है कि वह अकादमिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक संदर्भों में प्ैस् का प्रभावी एवं परिपक्व उपयोग कर सके।

7.4.6.2 भाषा एवं संप्रेषण विकासरू इस अवस्था में भाषा का प्रमुख उद्देश्य स्वतंत्र अधिगम तथा वास्तविक जीवन में प्रभावी संप्रेषण है। शिक्षार्थी भाषा का उपयोग (प) शोध एवं परियोजना कार्य प्रस्तुत करने, (पप) विचार-विमर्श एवं वाद-विवाद में भाग लेने, (पपप) व्यावसायिक परिस्थितियों में संवाद स्थापित करने, (पअ) डिजिटल मंचों पर संप्रेषण करने, तथा (अ) नेतृत्व एवं सहयोगात्मक कार्यों में सहभागिता के लिए करता है।

ग्रहणशील भाषा	अभिव्यक्तात्मक भाषा	प्राग्मैटिक भाषा
1 जटिल पाठों का पठन-बोध	1 निबंध एवं विश्लेषणात्मक लेखन	1 साक्षात्कार
2 शोध लेख, रिपोर्ट एवं डिजिटल सामग्री की समझ	2 शोध प्रतिवेदन	2 समूह चर्चा
3 व्याख्यान, वेबिनार अथवा प्ैस् व्याख्या का विश्लेषण	3 परियोजना प्रस्तुति	3 औपचारिक संवाद
4 आलोचनात्मक पठन	4 वाद-विवाद एवं संगोष्ठी में सहभागिता	4 नेतृत्व एवं समन्वय

5 विभिन्न दृष्टिकोणों की तुलना एवं व्याख्या 5 भारतीय सांकेतिक भाषा अथवा मौखिक भाषा में औपचारिक प्रस्तुतीकरण 5 सामाजिक एवं व्यावसायिक शिष्टाचार

7.4.6.3 कार्यात्मक एवं व्यावसायिक भाषारू राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को विशेष महत्त्व देती है। अतः भाषा मूल्यांकन में यह देखा जाना चाहिए कि शिक्षार्थी वास्तविक जीवन एवं कार्यस्थल पर प्रभावी संप्रेषण कर सकता है या नहीं। इसका मूल्यांकन (प) कार्यस्थल पर निर्देशों को समझकर, (पप) सहकर्मियों के साथ संवाद स्थापित कर (पपप) ग्राहक अथवा सेवा-प्रदाता से संप्रेषणकर , (पअ) औपचारिक आवेदन एवं ई-मेल लिखकर, (अ) बैठक अथवा प्रस्तुति में भाग लेकर एवं (अप) समस्या की रिपोर्ट करना एवं समाधान सुझाकर किया जा सकता है। यदि शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करता है, तो यह भी देखा जाना चाहिए कि वह दुभाषिए की सहायता से अथवा प्रत्यक्ष के माध्यम से व्यावसायिक संप्रेषण किस प्रकार करता है।

7.4.6.4 भाषा मूल्यांकन एवं 21वीं सदी के कौशलरू माध्यमिक अवस्था में भाषा मूल्यांकन को केवल पारम्परिक परीक्षणों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इसे 21वीं सदी के कौशल (21ेज ब्मदजनतल ैंापससे) के साथ जोड़ना आवश्यक है। इन कौशलों में प्रमुख हैं-

1 आलोचनात्मक चिंतन 2 रचनात्मकता 3 सहयोग

4 संप्रेषण 5 डिजिटल साक्षरता 6 सूचना साक्षरता

7 समस्या समाधान 8 नवाचार

भाषा मूल्यांकन को इन कौशलों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में देखा जाना चाहिए।

7.4.6.5 भारतीय सांकेतिक भाषा एवं द्विभाषिक दक्षतारू इस अवस्था में द्विभाषिक मूल्यांकन का उद्देश्य केवल भाषा परिवर्तन (ज्तंदेसंजपवद) नहीं, बल्कि दोनों भाषाओं का उद्देश्यपूर्ण एवं परिस्थिति-संगत उपयोग है। मूल्यांकन में (प) अकादमिक विषयों की प्ैस् प्रस्तुति, (पप) प्ैस् से लिखित रिपोर्ट तैयार करना।, (पपप) लिखित सामग्री का प्ैस् में विश्लेषण, (पअ) व्यावसायिक शब्दावली का प्रयोग, (अ) औपचारिक एवं अनौपचारिक संप्रेषण में भाषा चयन, और (अप) दुभाषिए के साथ प्रभावी संप्रेषण आदि बिन्दुओं का समावेश किया जा सकता है ।

7.4.6.6 भाषा मूल्यांकन के प्रमुख संकेतक एवं उपकरण

शैक्षणिक भाषा कार्यात्मक भाषा द्विभाषिक दक्षता 21वीं सदी के कौशल

विषय-विशिष्ट शब्दावली

व्यावसायिक संप्रेषण

सांकेतिक एवं लिखित ध् मौखिक भाषा के मध्य अन्तरण

सहयोग

2 आलोचनात्मक पठन 2 औपचारिक संवाद 2 बहु-माध्यमीय संप्रेषण2 नेतृत्व

3 विश्लेषणात्मक लेखन 3 प्रस्तुतीकरण कौशल 3 व्याख्या 3 डिजिटल संप्रेषण

4 शोध कौशल 4 समस्या समाधान 4 प्रस्तुतीकरण 4 नवाचार

प्रमुख मूल्यांकन उपकरण

- परियोजना-आधारित मूल्यांकन
- शोध प्रतिवेदन
- प्रस्तुतीकरण एवं सेमिनार
- ई-पोर्टफोलियो
- प्रदर्शन मूल्यांकन
- दक्षता-आधारित रूब्रिक
- केस अध्ययन
- समस्या-आधारित कार्य
- स्व-मूल्यांकन एवं सहपाठी मूल्यांकन

7.4.6.7 शैक्षिक एवं हस्तक्षेप संबंधी निहिताथ

यदि मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि शिक्षार्थी औपचारिक संप्रेषण में कठिनाई अनुभव करता है, व्यावसायिक शब्दावली का सीमित उपयोग करता है, शोध एवं प्रस्तुतीकरण कौशल में सहयोग चाहता है, प्ैस् एवं लिखित भाषा के मध्य अकादमिक अन्तरण में कठिनाई अनुभव करता है, तो शिक्षक एवं पुनर्वास दल को विषय-विशिष्ट भाषा प्रशिक्षण प्रदान करना, व्यावसायिक संप्रेषण गतिविधियों का आयोजन करना, प्रस्तुतीकरण एवं शोध लेखन का अभ्यास कराना, प्ैस् एवं लिखित भाषा के मध्य उन्नत द्विभाषिक रणनीतियाँ विकसित

करना एवं करियर एवं उच्च शिक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप भाषा हस्तक्षेप की योजना बनानी चाहिए।

चिंतन कीजिए

एक श्रवण बाधित विद्यार्थी विज्ञान विषय में उत्कृष्ट ज्ञान रखता है तथा भारतीय सांकेतिक भाषा के माध्यम से जटिल अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से समझा सकता है, किन्तु औपचारिक लिखित रिपोर्ट तैयार करने में कठिनाई अनुभव करता है। ऐसी स्थिति में भाषा मूल्यांकन किस प्रकार किया जाना चाहिए ताकि उसकी वास्तविक शैक्षणिक क्षमता, द्विभाषिक दक्षता तथा उच्च शिक्षा एवं रोजगार की तैयारी का समुचित आकलन हो सके?

7.4.7 उच्च शिक्षा, वयस्क अवस्था एवं जीवनपर्यन्त भाषा मूल्यांकन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 शिक्षा को केवल विद्यालय तक सीमित प्रक्रिया नहीं मानती, बल्कि इसे जीवनपर्यन्त अधिगम (स्पमिसवदह स्मंतदपदह) की सतत प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करती है। इसी प्रकार, श्रवण बाधित व्यक्तियों के भाषा विकास को भी किसी निश्चित आयु तक सीमित नहीं माना जा सकता। विद्यालयी शिक्षा पूर्ण होने के बाद भी व्यक्ति उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, रोजगार, सामाजिक सहभागिता, डिजिटल संप्रेषण तथा स्वतंत्र जीवन के लिए निरन्तर नई भाषाई एवं संप्रेषणात्मक दक्षताएँ अर्जित करता रहता है। अतः इस अवस्था में भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य केवल भाषाई उपलब्धियों का मापन नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्ति उच्च शिक्षा, कार्यस्थल, समाज तथा डिजिटल परिवेश में प्रभावी, आत्मविश्वासपूर्ण एवं स्वतंत्र रूप से संवाद स्थापित कर सके। इस दृष्टिकोण में भाषा मूल्यांकन व्यक्ति की कार्यात्मक दक्षता, व्यावसायिक तैयारी तथा जीवन की गुणवत्ता से सीधे जुड़ जाता है।

7.4.7.1 उच्च शिक्षा में भाषा मूल्यांकन

उच्च शिक्षा में प्रवेश के साथ भाषा की प्रकृति अधिक विशिष्ट एवं अकादमिक हो जाती है। शिक्षार्थी को विभिन्न विषयों की तकनीकी शब्दावली, अनुसंधान लेखन, सेमिनार प्रस्तुतीकरण तथा आलोचनात्मक पठन जैसे कार्य करने होते हैं। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए भाषा मूल्यांकन

(क) व्याख्यान की समझ पर,

(ख) भारतीय सांकेतिक भाषा अथवा दुभाषिए के माध्यम से अधिगम की क्षमता,
(ग) शोध लेख एवं संदर्भ सामग्री का पठन-बोध,

(घ) अकादमिक लेखन,

(ङ) शोध प्रस्ताव तैयार करने,

(च) प्रस्तुतीकरण एवं संगोष्ठी में सहभागिता,

(छ) संदर्भों का उचित उपयोग करने तथा

(ज) डिजिटल शिक्षण मंचों का प्रभावी उपयोग पर केन्द्रित होना चाहिए। यदि विद्यार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है, तो मूल्यांकन में यह भी देखा जाना चाहिए कि वह जटिल शैक्षणिक अवधारणाओं को प्ैस् में कितनी स्पष्टता एवं सटीकता से व्यक्त कर सकता है।

7.4.7.2 रोजगार एवं व्यावसायिक संप्रेषण

रोजगार केवल तकनीकी दक्षताओं पर आधारित नहीं होताय प्रभावी संप्रेषण भी इसकी मूल आवश्यकता है। इसलिए भाषा मूल्यांकन में कार्यस्थल की वास्तविक

परिस्थितियों को सम्मिलित करना आवश्यक है। इस स्तर पर निम्न क्षमताओं का मूल्यांकन किया जा सकता है-

1 कार्य निर्देशों को समझना।

2 सहकर्मियों के साथ संवाद।

3 ग्राहक सेवा संप्रेषण।

4 औपचारिक बैठक में सहभागिता।

5 प्रस्तुतीकरण देना।

6 समस्या की रिपोर्ट करना।

7 ई-मेल, नोटिस एवं आधिकारिक पत्राचार।

8 टीम आधारित कार्य में भाषा का उपयोग।

यदि कार्यस्थल पर भारतीय सांकेतिक भाषा दुभाषिए (प्दजमतचतमजमत) की सुविधा उपलब्ध हो, तो यह भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि व्यक्ति दुभाषिए के माध्यम से प्रभावी संप्रेषण स्थापित कर पा रहा है या नहीं।

7.4.7.3 स्वतंत्र जीवन एवं कार्यात्मक भाषा

जीवनपर्यन्त भाषा मूल्यांकन का एक प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति की स्वतंत्र जीवन जीने की क्षमता का आकलन करना है। इसमें स्वास्थ्य सेवाओं से संवाद, बैंकिंग एवं वित्तीय लेन-देन, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, सरकारी सेवाओं तक पहुँच, डिजिटल भुगतान एवं ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग, आपातकालीन

परिस्थितियों में सहायता प्राप्त करना, एवं परिवार एवं समुदाय के साथ प्रभावी संप्रेषण जैसे कार्यात्मक भाषाई कौशल सम्मिलित हैं। यह मूल्यांकन वास्तविक जीवन की परिस्थितियों पर आधारित होना चाहिए, क्योंकि यही कौशल व्यक्ति की आत्मनिर्भरता को निर्धारित करते हैं।

7.4.7.4 डिजिटल संप्रेषण एवं भाषा मूल्यांकन

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने श्रवण बाधित व्यक्तियों के संप्रेषण के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन किया है। वर्तमान समय में भाषा मूल्यांकन में वीडियो आधारित संप्रेषण, भारतीय सांकेतिक भाषा के माध्यम से ऑनलाइन संवाद, कैप्शनयुक्त सामग्री का उपयोग, ई-मेल एवं मैसेजिंग, ऑनलाइन शिक्षण मंचों का उपयोग, वीडियो प्रस्तुतीकरण, एवं डिजिटल सहयोग को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। इस प्रकार भाषा मूल्यांकन केवल पारम्परिक कक्षा तक सीमित न रहकर डिजिटल परिवेश को भी सम्मिलित करता है।

7.4.7.5 आत्म-अधिवक्ता (ैमसप्-।कअवबंबल) एवं सामाजिक सहभागिता

यस्क जीवन में व्यक्ति को अपने अधिकारों, आवश्यकताओं एवं निर्णयों को स्वयं व्यक्त करने की आवश्यकता होती है। इसलिए भाषा मूल्यांकन में आत्म-अधिवक्ता भी एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। इसका मूल्यांकन अपनी आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर, उचित सुविधाओं (त्मंेवदंइसम ।बबवउउवकंजपवद) की मांग कर, अधिकारों एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त कर, सामाजिक एवं सामुदायिक कार्यक्रमों में सहभागिता कर, और नेतृत्व एवं निर्णय-निर्माण जैसे संकेतकों के आधार पर किया जा सकता है ।

7.4.7.6 जीवनपर्यन्त भाषा मूल्यांकन का समग्र मॉडल

आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार भाषा मूल्यांकन एक सतत चक्र है, जो व्यक्ति की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार विकसित होता रहता है। इस मॉडल में निम्न चरण सम्मिलित हैं-

- भाषा एवं संप्रेषण का प्रारम्भिक आकलन।
- शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान।
- व्यक्तिगत भाषा हस्तक्षेप योजना।
- सतत प्रगति मूल्यांकन।
- विद्यालय से उच्च शिक्षा अथवा रोजगार की संक्रमण योजना
- कार्यात्मक एवं व्यावसायिक भाषा मूल्यांकन।
- जीवनपर्यन्त पुनर्मूल्यांकन एवं कौशल उन्नयन।

7.4.7.7 शैक्षिक एवं पुनर्वास संबंधी निहितार्थ

जीवन पर्यन्त भाषा मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग उच्च शिक्षा में आवश्यक शैक्षणिक सहायता प्रदान करने, व्यावसायिक प्रशिक्षण की योजना बनाने, रोजगारोन्मुख भाषा कौशल विकसित करने, स्वतंत्र जीवन

कौशलों को सुदृढ़ करने, सामुदायिक सहभागिता बढ़ाने, तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए किया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया में विशेष शिक्षक, वाणी एवं भाषा विशेषज्ञ, ऑडियोलॉजिस्ट, भारतीय सांकेतिक भाषा दुभाषिया, व्यावसायिक पुनर्वास विशेषज्ञ, परिवार तथा समुदाय की समन्वित भूमिका होती है।

चित्र 7.5 जीवनपर्यन्त भाषा मूल्यांकन मॉडल

समेकित सार (प्दजमहतंजपवद व ि्छम्च् 2020 ंदक स्ंदहनंहम ।ेेमेेउमदज)रू छम्च् 2020 के 5़3़3़4 ढाँचे के अनुरूप श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा मूल्यांकन को निम्न सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए-

शैक्षिक चरण जन्मद्3 वर्ष थ्वनदकंजपवदंस (3द्8 वर्ष) च्तमचंतंजवतल (8द्11 वर्ष) डपककसम (11द्14 वर्ष) ैमबवदकंतल (14द्18 वर्ष) वयस्क एवं जीवनपर्यन्त

भाषा मूल्यांकन का प्रमुख फोकस प्रारम्भिक पहचान, संप्रेषण एवं परिवार-केंद्रित हस्तक्षेप खेल-आधारित भाषा विकास, प्रारम्भिक साक्षरता, प्ैस्द्धमौखिक भाषा शैक्षणिक भाषा, पठन-बोध, लेखन एवं द्विभाषिक दक्षता आलोचनात्मक चिंतन, विषयगत भाषा एवं विश्लेषणात्मक संप्रेषण उच्च स्तरीय शैक्षणिक भाषा, करियर तैयारी एवं कार्यात्मक संप्रेषण उच्च शिक्षा, रोजगार, स्वतंत्र जीवन एवं सामाजिक सहभागिता

चिंतन कीजिए

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 शिक्षा को जीवनपर्यन्त प्रक्रिया मानती है। इस दृष्टिकोण से स्पष्ट कीजिए कि श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए भाषा मूल्यांकन को विद्यालयी शिक्षा तक सीमित रखना क्यों पर्याप्त नहीं है? अपने उत्तर में उच्च शिक्षा, रोजगार, डिजिटल समावेशन, आत्म-अधिवक्ता तथा स्वतंत्र जीवन के संदर्भ में विवेचना कीजिए।

7.5 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल्यांकन

भाषा मूल्यांकन श्रवण बाधित व्यक्तियों की शैक्षिक योजना, संप्रेषणीय आवश्यकताओं तथा पुनर्वास सेवाओं के निर्धारण का आधार है। परम्परागत रूप से श्रवण बाधित व्यक्तियों के भाषा मूल्यांकन का केन्द्र मुख्यतः मौखिक भाषा (व्तंस स्ंदहनंहम) रहा है, क्योंकि शिक्षा की मुख्यधारा लंबे समय तक श्रवण एवं वाक्-आधारित दृष्टिकोण (व्तंसपेउ) से प्रभावित रही। परिणामस्वरूप अधिकांश परीक्षणों का विकास भी मौखिक भाषा की शब्दावली, उच्चारण, व्याकरण तथा श्रवण-बोध को ध्यान में रखकर किया गया। किन्तु पिछले तीन दशकों में भाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान, विशेष शिक्षा तथा क्मं ि ैजनकपमे के क्षेत्र में हुए शोधों ने यह स्पष्ट किया है कि भारतीय सांकेतिक भाषा (प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहमकृप्ैस्) एक पूर्ण विकसित प्राकृतिक भाषा है, जिसकी अपनी स्वतंत्र ध्वन्यात्मक (च्ीवदवसवहपबंस), रूपात्मक (डवतचीवसवहपबंस), वाक्यात्मक (ैलदजंबजपब), अर्थगत (ैमउंदजपब) तथा प्राग्मैटिक (च्तंहउंजपब) संरचना है। इसलिए श्रवण बाधित व्यक्तियों की वास्तविक भाषाई क्षमता का आकलन केवल मौखिक भाषा के माध्यम से नहीं किया जा सकता। आज का दृष्टिकोण यह स्वीकार करता है कि भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य किसी एक भाषा की श्रेष्ठता सिद्ध करना नहीं, बल्कि शिक्षार्थी की संपूर्ण भाषाई एवं संप्रेषणीय क्षमता को समझना है। इसलिए यदि कोई शिक्षार्थी मौखिक भाषा का प्रयोग करता है, तो उसका मूल्यांकन मौखिक भाषा के अनुरूप होना चाहिएय यदि वह भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है, तो मूल्यांकन प्ैस् की भाषिक संरचना के अनुरूप होना चाहिएय और यदि वह द्विभाषिक (प्ैस् एवं लिखितध्मौखिक भाषा) है, तो मूल्यांकन दोनों भाषाओं में उसकी दक्षता को समग्र रूप से प्रतिबिम्बित करना चाहिए। इसी कारण आधुनिक भाषा मूल्यांकन को स्ंदहनंहम - दमनजतंस नहीं, बल्कि स्ंदहनंहम - तमेचवदेपअम माना जाता है। अर्थात्

मूल्यांकन प्रणाली को शिक्षार्थी की भाषाई पहचान, संप्रेषण शैली तथा शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप लचीला बनाया जाना चाहिए।

7.5.1 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा (समानताएँ एवं भिन्नताएँ)

भाषा के स्वरूप में मौखिक भाषा और भारतीय सांकेतिक भाषा भिन्न माध्यमों का उपयोग करती हैं, किन्तु दोनों का मूल उद्देश्य समान हैकृविचारों, भावनाओं तथा ज्ञान का प्रभावी संप्रेषण। इसलिए मूल्यांकन करते समय केवल माध्यम (ैचममबी बनाम ैपहद) को नहीं, बल्कि भाषा की संरचना एवं कार्य (ैजतनबजनतम ंदक थ्नदबजपवद) को समझना आवश्यक है।

तालिका 7.5 रू मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा का तुलनात्मक विश्लेषण

आधार मौखिक भाषा भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) मूल्यांकन पर प्रभाव

माध्यम श्रवणदृवाक् दृश्यदृहस्त संकेत परीक्षण की प्रस्तुति बदलती है

ग्रहण सुनना देखना ।नकपजवतल बनाम टपेनंस ।ेेमेेउमदज

अभिव्यक्ति बोलनासंकेत करना ैचममबी बनाम ैपहद च्तवकनबजपवद

व्याकरण शब्द क्रम एवं ध्वनि संकेत, स्थान, गति, चेहरे की अभिव्यक्ति अलग मूल्यांकन मानदण्ड आवश्यक

प्राग्मैटिक्स सामाजिक भाषा उपयोग दृश्य संपर्क, संकेत प्रवाह, चेहरे की अभिव्यक्ति संदर्भ-आधारित मूल्यांकन

साक्षरता पढ़नादृलिखना प्ैस् से लिखित भाषा का सम्बन्ध
द्विभाषिक मूल्यांकन आवश्यक

यह तुलना स्पष्ट करती है कि मौखिक भाषा एवं प्ैस् का मूल्यांकन समान परीक्षणों द्वारा नहीं किया जा सकता। प्रत्येक भाषा की संरचना के अनुरूप मूल्यांकन मानदण्ड विकसित किए जाने चाहिए।

7.5.2 भाषा मूल्यांकन के प्रमुख आयाम

आधुनिक भाषा मूल्यांकन भाषा को एक बहुआयामी प्रणाली के रूप में देखता है। चाहे शिक्षार्थी मौखिक भाषा का उपयोग करे अथवा भारतीय सांकेतिक भाषा का, निम्न प्रमुख आयामों का मूल्यांकन आवश्यक है-

(1) ग्रहणशील भाषा

ग्रहणशील भाषा से आशय भाषा को समझने की क्षमता से है। मौखिक भाषा में यह श्रवण अथवा ओष्ठ-पठन के माध्यम से विकसित होती है, जबकि भारतीय सांकेतिक भाषा में यह दृश्य संकेतों, हाथों की आकृतियों, स्थान, गति तथा चेहरे की व्याकरणिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से विकसित होती है। ग्रहणशील भाषा के मूल्यांकन में शब्द अथवा संकेत पहचान, निर्देशों की समझ, कथन एवं वार्तालाप का बोध, चित्रों एवं घटनाओं की व्याख्या, संदर्भ के अनुसार अर्थ ग्रहण करना आदि बातों पर ध्यान दिया जाता है ।

(2) अभिव्यक्तात्मक भाषा

अभिव्यक्तात्मक भाषा से आशय विचारों, अनुभवों तथा भावनाओं को उपयुक्त भाषा के माध्यम से व्यक्त करने की क्षमता से है। मौखिक भाषा में शब्दावली, वाक्य निर्माण, व्याकरण, वाणी की स्पष्टता एवं प्रवाह का मूल्यांकन किया जाता

है जबकि भारतीय सांकेतिक भाषा में संकेतों की शुद्धता, हाथ की आकृति, संकेत का स्थान, गति, हथेली की दिशा, चेहरे की अभिव्यक्ति, भौंहें, सिर की गति आदि का मूल्यांकन किया जाता है । यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि चेहरे की अभिव्यक्तियाँ केवल भावनात्मक संकेत नहीं, बल्कि प्ैस् व्याकरण का अभिन्न अंग हैं। इसलिए उनका मूल्यांकन अनिवार्य है।

(3) अर्थगत विकास

अर्थगत विकास का सम्बन्ध शब्दों अथवा संकेतों के अर्थ, अवधारणाओं तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों से है। मूल्यांकन करते समय शब्दध्संकेत भण्डार, अवधारणात्मक समझ, पर्यायवाची एवं विलोम अर्थ, वर्गीकरण, श्रेणीकरण, बहुअर्थी शब्दों अथवा संकेतों की समझ, प्रसंगानुसार अर्थ ग्रहण करना आदि को देखा जाता है। द्विभाषिक शिक्षार्थियों में यह भी देखा जाना चाहिए कि क्या समान अवधारणा दोनों भाषाओं में समान रूप से व्यक्त की जा सकती है।

(4) रूपात्मक एवं वाक्यात्मक विकास

भाषा का व्याकरण संप्रेषण की स्पष्टता का आधार है। इसलिए मूल्यांकन में यह देखना आवश्यक है कि शिक्षार्थी भाषा के नियमों का किस सीमा तक उचित उपयोग करता है। मौखिक भाषा में शब्द रूप, काल, वचन, लिंग, कारक, वाक्य संरचना तथा सांकेतिक भाषा में संकेत क्रम, स्थानिक व्याकरण (ैचंजपंस ळतंउउंत), वर्गीकारक, समय एवं स्थान का संकेतात्मक संगठन, एवं चेहरे की अभिव्यक्ति, भौंहें, सिर की गति का व्यवस्थित मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

(5) प्राग्मैटिक भाषा

प्राग्मैटिक भाषा से आशय भाषा के सामाजिक एवं संदर्भानुकूल उपयोग से है। यह केवल क्या कहा गया पर नहीं, बल्कि किस परिस्थिति में, किस उद्देश्य से,

किस व्यक्ति से और किस प्रकार कहा गयाकृइन सभी पहलुओं से सम्बन्धित है। श्रवण बाधित व्यक्तियों में प्राग्मैटिक दक्षता का विकास पारिवारिक संप्रेषण, विद्यालयी अनुभव, साथियों के साथ अन्तःक्रिया तथा भाषा-अनुभवों पर निर्भर करता है। भारतीय सांकेतिक भाषा में प्राग्मैटिक दक्षता का महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि इसमें नेत्र सम्पर्क (म्लम ळं्रम), चेहरे की अभिव्यक्ति (थ्ंबपंस म्गचतमेेपवदे), शरीर की मुद्रा (ठवकल च्वेजनतम) तथा संकेतों का प्रवाह (ैपहदपदह थ्सवू) संप्रेषण का अभिन्न भाग हैं। प्राग्मैटिक मूल्यांकन के प्रमुख संकेतक

(क) वार्तालाप आरम्भ एवं समाप्त करने की क्षमताय

(ख)उपयुक्त अभिवादन एवं सामाजिक शिष्टाचारय

(ग) प्रश्न पूछना एवं उत्तर देनाय

(घ) विषय को बनाए रखना तथा आवश्यकतानुसार बदलनाय

(ङ) वार्तालाप में अपनी बारी (ज्नतद-जंापदह) का पालनय

(च) श्रोताध्दर्शक के अनुसार भाषा में परिवर्तनय

(छ) भावनाओं एवं सामाजिक संकेतों की उचित अभिव्यक्तिय एवं

(ज) औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में भाषा का उपयुक्त प्रयोग हो सकते हैं। इनका मूल्यांकन प्राकृतिक परिस्थितियों में अवलोकन, समूह गतिविधियाँ, भूमिका-अभिनय, वीडियो विश्लेषण, वार्तालाप नमूना एवं शिक्षक एवं अभिभावक रेटिंग स्केल जैसी विधियों से किया जा सकता है।

(6) कथन एवं संवाद कौशल

कथन (छंततंजपअम) भाषा विकास का उच्च स्तर माना जाता है क्योंकि इसमें शब्दावली, व्याकरण, स्मृति, संगठन तथा प्राग्मैटिक कौशल सभी सम्मिलित होते हैं। संवाद कौशल (क्पेबवनतेम ैंापससे) यह दर्शाते हैं कि व्यक्ति किसी विचार, अनुभव या घटना को किस प्रकार क्रमबद्ध एवं अर्थपूर्ण रूप से प्रस्तुत करता है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों में कथन कौशल का मूल्यांकन यह समझने में सहायता करता है कि वे केवल संकेत या शब्द जानते हैं अथवा उनका उपयोग करके संगठित विचार भी प्रस्तुत कर सकते हैं। मौखिक 'कथन एवं संवाद कौशल'मूल्यांकन के प्रमुख संकेतक

(क) कहानी का आरम्भ, मध्य एवं समापनय

(ख) घटनाओं का कालानुक्रमिक क्रमय

(ग) पात्रों एवं घटनाओं का स्पष्ट परिचयय

(घ) कारणदृपरिणाम सम्बन्धों की व्याख्याय

(ङ) उचित संयोजकों का प्रयोगय

(च) मुख्य विचार एवं सहायक विवरण प्रस्तुत करना एवं

(छ) श्रोता के अनुरूप कथन शैली अपनाना आदि होते हैं वही भारतीय सांकेतिक भाषा में

(क) ैपहदपदह ैचंबम का प्रभावी उपयोगय

(ख) पात्र परिवर्तन

(ग) स्थानिक संदर्भ

(घ) चेहरे की व्याकरणिक अभिव्यक्तियाँय एवं

(ङ) संकेतों की निरंतरता एवं प्रवाह आदि विशेष संकेतक होते हैं। इनका मूल्यांकन

(क) चित्र देखकर कहानी सुनानाय

(ख) वीडियो देखकर घटनाओं का वर्णनय

(ग) अधूरी कहानी को पूरा करनाय

(घ) व्यक्तिगत अनुभव साझा करना

(ङ) किसी प्रक्रिया (जैसे पौधा लगाना) का क्रमबद्ध वर्णन आधी गतिविधियाँ से किया जा सकता है।

(7) कार्यात्मक संप्रेषणरू भाषा का वास्तविक उद्देश्य दैनिक जीवन में प्रभावी संप्रेषण करना है। इसलिए केवल औपचारिक भाषाई परीक्षण पर्याप्त नहीं होते। यह भी आवश्यक है कि यह देखा जाए कि व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में भाषा का उपयोग किस प्रकार करता है। कार्यात्मक भाषा के प्रमुख क्षेत्र जैसे घर में संवाद, विद्यालय अथवा कार्यस्थल पर संप्रेषण, सार्वजनिक स्थानों पर जानकारी प्राप्त करना, सहायता माँगना, निर्देशों को समझना, समस्या की सूचना देना, स्वास्थ्य सेवाओं से संवाद, डिजिटल माध्यमों द्वारा संप्रेषण आदि होते हैं। इनका मूल्यांकन (क) वास्तविक जीवन आधारित भूमिका-अभिनयय

(ख) दैनिक कार्यों का अनुकरणय

(ग) सामुदायिक भ्रमण के दौरान अवलोकनय

(घ) कार्यात्मक चेकलिस्टय एवं

(ङ) परिस्थिति-आधारित प्रश्न के माध्यम से किया जा सकता है।

(8) द्विभाषिक दक्षतारू वर्तमान समय में अनेक श्रवण बाधित शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा तथा लिखित अथवा मौखिक भाषा दोनों का उपयोग करते हैं। अतः मूल्यांकन का उद्देश्य यह नहीं होना चाहिए कि कौन-सी भाषा बेहतर है, बल्कि यह समझना चाहिए कि दोनों भाषाएँ मिलकर अधिगम एवं संप्रेषण में किस प्रकार योगदान देती हैं। द्विभाषिक मूल्यांकन में

(क) दोनों भाषाओं में शब्दावलीय

(ख) अवधारणाओं की समान समझय

(ग) दोनों भाषाओं में कथन क्षमताय

(घ) भाषा परिवर्तनय

(ङ) भाषा अन्तरणय एवं

(च) अनुवाद एवं अर्थान्तरण जैसे पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।

विशेष ध्यानरू यदि शिक्षार्थी किसी अवधारणा को भारतीय सांकेतिक भाषा में उत्कृष्ट रूप से व्यक्त करता है, परन्तु लिखित भाषा में सीमित प्रदर्शन करता है, तो यह आवश्यक नहीं कि उसकी अवधारणात्मक समझ कम हो। ऐसी स्थिति में मूल्यांकन को उसकी द्विभाषिक क्षमता के आधार पर व्याख्यायित किया जाना चाहिए।

(9) शैक्षणिक भाषारू विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा में सफलता के लिए शैक्षणिक भाषा का विकास अत्यन्त आवश्यक है। यह सामान्य वार्तालाप की भाषा से अधिक संरचित, औपचारिक एवं विषय-विशिष्ट होती है। शैक्षणिक भाषा के प्रमुख घटक-

(क) विषय-विशिष्ट शब्दावलीय

(ख) परिभाषाएँ देनाय

(ग) तुलना एवं वर्गीकरणय

(घ) कारणदृपरिणाम की व्याख्याय

(ङ) विश्लेषण एवं निष्कर्षय

(च) वैज्ञानिक एवं गणितीय भाषाय एवं

(छ) परियोजना एवं शोध लेखन को ध्यान में रखना होता है।

इन घटकों का मूल्यांकन पाठ का सार लिखना अथवा प्ैस् में प्रस्तुत करना, अवधारणा मानचित्र (ब्वदबमचज डंच) तैयार करना, परियोजना प्रस्तुतीकरण, केस अध्ययन का विश्लेषण, विषय-विशिष्ट समस्या समाधान आदि गतिविधियाँ के माध्यम से किया जा सकता है।

(10) डिजिटल एवं बहु-माध्यमीय संप्रेषणरू डिजिटल युग में भाषा का स्वरूप केवल मौखिक अथवा सांकेतिक संप्रेषण तक सीमित नहीं रहा। वीडियो, ऑनलाइन शिक्षण, सोशल मीडिया, कैप्शन, इन्फोग्राफिक्स तथा बहु-माध्यमीय (डनसजपउवकंस) संसाधन भाषा अधिगम एवं संप्रेषण के महत्वपूर्ण माध्यम बन चुके हैं। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए यह क्षेत्र विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि दृश्य माध्यम उनके अधिगम को अधिक प्रभावी बनाते हैं। डिजिटल एवं बहु-माध्यमीय संप्रेषण का मूल्यांकन करते समय

(क) वीडियो आधारित संप्रेषणय

(ख) ऑनलाइन प्ैस् प्रस्तुतीकरणय

(ग) कैप्शनयुक्त सामग्री का उपयोगय

(घ) डिजिटल संदेशों को समझना एवं तैयार करनाय

(ङ) मल्टीमीडिया प्रस्तुतीकरणय

(च) ऑनलाइन सहयोगात्मक गतिविधियों में सहभागिताय एवं

(छ) दृश्य एवं पाठ्य सामग्री का समन्वित उपयोग जैसे प्रमुख संकेतक को ध्यान में रखा जाता है। इनका मूल्यांकन ई-पोर्टफोलियो, वीडियो रिकॉर्डिंग विश्लेषण, डिजिटल परियोजनाएँ , ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण एवं स्क्रीन-आधारित प्रदर्शन कार्य के माध्यम से किया जा सकता है।

चित्र 7.6 भाषा मूल्यांकन के प्रमुख आयाम

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. भाषा मूल्यांकन के प्रमुख आयामों का वर्णन कीजिए तथा स्पष्ट कीजिए कि भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में प्राग्मैटिक एवं कथन कौशल का विशेष महत्व क्यों है।

2ण्िद्वभाषिक मूल्यांकन केवल दो भाषाओं का परीक्षण नहीं, बल्कि दो भाषाओं के माध्यम से सीखने की क्षमता का मूल्यांकन है।ष् इस कथन की व्याख्या कीजिए।

7.5.3 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन की चरणबद्ध प्रक्रिया

भाषा मूल्यांकन केवल किसी परीक्षण का प्रशासन नहीं है, बल्कि यह एक व्यवस्थित, बहु-स्रोत, बहु-पद्धति तथा निर्णय-आधारित प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य शिक्षार्थी की भाषाई क्षमता, संप्रेषण शैली, शैक्षणिक आवश्यकताओं तथा हस्तक्षेप की दिशा को समझना है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में यह प्रक्रिया

और अधिक संवेदनशील हो जाती है क्योंकि भाषा विकास अनेक कारकों से प्रभावित होता है, जैसेकृश्रवण क्षमता, श्रवण यंत्र या कॉक्लियर इम्प्लांट का उपयोग, भाषा के सम्पर्क की आयु, पारिवारिक भाषा, भारतीय सांकेतिक भाषा का अनुभव, विद्यालयी वातावरण, तथा अतिरिक्त दिव्यांगता की उपस्थिति। इसलिए किसी एक परीक्षण के आधार पर निर्णय लेना उचित नहीं है। मूल्यांकन को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के समन्वित विश्लेषण पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1

रेफरल एवं मूल्यांकन की आवश्यकता की पहचानरू भाषा मूल्यांकन सामान्यतः किसी विशिष्ट उद्देश्य के साथ प्रारम्भ किया जाता है। यह आवश्यकता - अभिभावक द्वारा भाषा विकास की चिंता व्यक्त करना, शिक्षक द्वारा कक्षा में संप्रेषण संबंधी कठिनाइयों का अवलोकन, नियमित शैक्षणिक मूल्यांकन में अपेक्षित प्रगति न होना, प्रारम्भिक हस्तक्षेप कार्यक्रम में प्रवेश, विद्यालय में प्रवेश या कक्षा परिवर्तन, प्म्च् की समीक्षा, श्रवण यंत्र या कॉक्लियर इम्प्लांट के बाद प्रगति का मूल्यांकन, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण अथवा रोजगार की तैयारी जैसे विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न हो सकती है। इस चरण में मूल्यांकनकर्ता को स्पष्ट करना चाहिए कि मूल्यांकन का उद्देश्य स्क्रीनिंग, निदान , शैक्षिक योजना , प्रगति मूल्यांकन अथवा प्रमाणन में से कौन-सा है।

चरण 2

पृष्ठभूमि सूचना संग्रहरू भाषा मूल्यांकन की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षार्थी के बारे में प्रारम्भिक जानकारी कितनी व्यापक एवं विश्वसनीय है। अतः औपचारिक परीक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व विस्तृत पृष्ठभूमि जानकारी एकत्रित करना आवश्यक है। संग्रहित की जाने वाली प्रमुख सूचनाओं में

(क) व्यक्तिगत विवरण (आयु, लिंग, कक्षा, विद्यालय का प्रकार, शिक्षण माध्यम)

(ख) चिकित्सीय एवं श्रवण संबंधी जानकारी (श्रवण हानि का प्रकार, श्रवण हानि की तीव्रता, पहचान की आयु, श्रवण यंत्रध्कॉक्लियर इम्प्लांट का उपयोग, श्रवण पुनर्वास का इतिहास)

(ग) भाषाई पृष्ठभूमि (घर में प्रयुक्त भाषाध्भाषाएँ, भारतीय सांकेतिक भाषा का सम्पर्क, मौखिक भाषा का उपयोग, द्विभाषिक वातावरण, भाषा सीखने की आयु)य

(घ) शैक्षणिक जानकारी (विद्यालयी उपलब्धि, पूर्व मूल्यांकन रिपोर्ट, प्म्च्, शिक्षक की टिप्पणियाँ, विशेष सहायता सेवाएँ)य (ङ) सामाजिक एवं पारिवारिक जानकारी (परिवार की सहभागिता, संप्रेषण का प्रमुख माध्यम, सामाजिक अन्तःक्रियाएँ, भाषा-अनुकूल वातावरण) आदि हो सकती है।

चरण 3

मूल्यांकन की योजनारू पृष्ठभूमि जानकारी के आधार पर मूल्यांकनकर्ता को यह निर्णय लेना चाहिए कि-

- किन भाषाओं का मूल्यांकन किया जाएगा?
- कौन-से कौशलों का मूल्यांकन आवश्यक है?
- कौन-से उपकरण उपयुक्त होंगे?
- क्या भारतीय सांकेतिक भाषा दुभाषिए की आवश्यकता है?
- क्या मूल्यांकन एक सत्र में होगा या अनेक सत्रों में?

- क्या औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार के उपकरणों का उपयोग किया जाएगा?

मूल्यांकन की योजना शिक्षार्थी की आयु, भाषाई अनुभव, शैक्षणिक स्तर तथा संप्रेषण शैली के अनुरूप होनी चाहिए।

चरण 4

मूल्यांकन परिवेश की तैयारीरू भाषा मूल्यांकन के परिणामों की विश्वसनीयता वातावरण से भी प्रभावित होती है। विशेषकर भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में दृश्य परिस्थितियों का अत्यधिक महत्व होता है। उपयुक्त वातावरण की विशेषताएँ जैसे पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, शांत एवं व्यवधान-मुक्त कक्ष, मूल्यांकनकर्ता एवं शिक्षार्थी के बीच स्पष्ट दृश्य संपर्क, बैठने की उपयुक्त व्यवस्था, वीडियो रिकॉर्डिंग की सुविधा, तथा आवश्यक दृश्य सामग्री एवं परीक्षण उपकरण उपलब्ध होना आदि। यदि शिक्षार्थी श्रवण यंत्र या कॉक्लियर इम्प्लांट का उपयोग करता है, तो मूल्यांकन से पूर्व यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उपकरण सही प्रकार से कार्य कर रहे हैं।

चरण 5

बहु-पद्धति भाषा मूल्यांकनरू आधुनिक भाषा मूल्यांकन किसी एक परीक्षण पर आधारित नहीं होता। इसके लिए अनेक विधियों का समन्वित उपयोग किया जाता ळें

(क) औपचारिक परीक्षणरू इनका उपयोग मानकीकृत परिस्थितियों में किया जाता है। उदाहरण- भाषा परीक्षण, शब्दावली परीक्षण, व्याकरण परीक्षण, पठन-बोध परीक्षण एवं लिखित भाषा परीक्षण।

(ख) अनौपचारिक मूल्यांकनरू ये शिक्षार्थी की वास्तविक भाषा क्षमता को समझने में सहायता करते हैं। उदाहरण-भाषा नमूना, कक्षा अवलोकन, वार्तालाप विश्लेषण, कहानी सुनाना, चित्र वर्णन, परियोजना कार्य, पोर्टफोलियो।

(ग) भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल्यांकनरू यदि शिक्षार्थी प्ैस् का उपयोग करता है, तो निम्न पहलुओं का पृथक मूल्यांकन आवश्यक है। जैसे- ैपहद टवबंइनसंतलए भ्ंदकेींचमए डवअमउमदजए स्वबंजपवदए व्तपमदजंजपवदए छवद-उंदनंस डंतामतेए ैचंजपंस ळतंउउंतए ब्संेेपपिमतेए छंततंजपअम ैापससेए च्तंहउंजपब ब्वउचमजमदबम आदि।

चरण 6

प्राकृतिक परिस्थितियों में अवलोकनरू परीक्षण कक्ष में प्राप्त प्रदर्शन हमेशा वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व नहीं करता। इसलिए शिक्षार्थी का विभिन्न परिस्थितियों में अवलोकन आवश्यक है। अवलोकन कक्षा शिक्षण, समूह गतिविधियाँ, खेल, भोजनावकाश, परिवार के साथ अन्तःक्रिया, ऑनलाइन शिक्षण, सामुदायिक गतिविधियाँ जैसी परिस्थितियों में किया जा सकता है। इससे भाषा के कार्यात्मक एवं प्राग्मैटिक उपयोग का अधिक वास्तविक चित्र प्राप्त होता है।

चरण 7

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्यारू भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य केवल अंक प्रदान करना नहीं है, बल्कि प्राप्त परिणामों की अर्थपूर्ण व्याख्या करना है। विश्लेषण करते समय निम्न प्रश्नों पर विचार किया जाना चाहिएकृ

- शिक्षार्थी की प्रमुख भाषाई शक्तियाँ क्या हैं?

- किन क्षेत्रों में कठिनाई है?
- क्या कठिनाई भाषा तक सीमित है अथवा संज्ञानात्मक अथवा शैक्षणिक कारक भी जुड़े हैं?
- क्या दोनों भाषाओं (प्ैस् एवं मौखिकध्लिखित) में समान प्रदर्शन है?
- क्या प्रयुक्त परीक्षण भाषाई एवं सांस्कृतिक दृष्टि से उपयुक्त था?
- क्या परिणाम वास्तविक जीवन के प्रदर्शन से मेल खाते हैं?

चरण 8

प्रतिपुष्टि एवं रिपोर्ट लेखनरू रिपोर्ट केवल परीक्षण परिणामों का विवरण नहीं होनी चाहिए। यह भविष्य की शैक्षणिक योजना का आधार होती है। एक प्रभावी रिपोर्ट में मूल्यांकन का उद्देश्य, प्रयुक्त उपकरण, परीक्षण की परिस्थितियाँ, प्रमुख निष्कर्ष, शिक्षार्थी की शक्तियाँ, सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्र, द्विभाषिक प्रोफाइल, शैक्षिक अनुशंसाएँ, प्म्च् हेतु सुझाव एवं पुनर्मूल्यांकन की समय-सीमा आदि बिन्दु सम्मिलित होने चाहिए। रिपोर्ट की भाषा स्पष्ट, वस्तुनिष्ठ एवं सकारात्मक होनी चाहिए।

चरण 9

हस्तक्षेप योजना एवं अनुवर्ती मूल्यांकनरू भाषा मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य हस्तक्षेप (प्दजमतअमदजपवद) की योजना बनाना है। इस चरण में व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (प्म्च्) तयारी, भाषा लक्ष्य निर्धारण, परिवार एवं शिक्षक को सुझाव, आवश्यक सहायक तकनीक की अनुशंसा, निर्धारित अवधि के बाद पुनर्मूल्यांकन कर प्रगति की समीक्षा की जाती है। इस प्रकार भाषा मूल्यांकन एक

सतत चक्रीय प्रक्रिया (ब्वदजपदनवने ब्लबसपबंस च्तवबमेे) बन जाता है, जिसमें प्रत्येक पुनर्मूल्यांकन अगली शैक्षणिक योजना का आधार बनता है।

चित्र 7.7 रू मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन की चरणबद्ध प्रक्रिया

स्व-जाँच

रिक्त स्थान भरिएकृ

1. भाषा मूल्यांकन की प्रक्रिया का प्रथम चरण ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ है।

2. केवल एक परीक्षण के आधार पर भाषा का निर्णय लेना ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ माना जाता है।

3. भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ एवं ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ का विश्लेषण विशेष रूप से आवश्यक है।

4. भाषा मूल्यांकन रिपोर्ट का प्रमुख उद्देश्य केवल अंक देना नहीं, बल्कि ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ तैयार करना है।

7.5.4 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन के उपकरण, तकनीकें एवं समकालीन दृष्टिकोण

भाषा मूल्यांकन की गुणवत्ता केवल मूल्यांकनकर्ता के कौशल पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह कौन-से उपकरण, कौन-सी तकनीकें तथा किस मूल्यांकन दृष्टिकोण का चयन करता है। कोई भी एक परीक्षण

किसी श्रवण बाधित शिक्षार्थी की सम्पूर्ण भाषाई क्षमता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। अतः आधुनिक भाषा मूल्यांकन बहु-स्रोत, बहु-पद्धति तथा बहुआयामी दृष्टिकोण को अपनाने की अनुशंसा करता है। विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल्यांकन करते समय पारम्परिक मौखिक भाषा परीक्षण पर्याप्त नहीं होते। इसी प्रकार, केवल संकेतों की संख्या या शब्दावली का आकलन भी किसी व्यक्ति की वास्तविक भाषाई दक्षता को नहीं दर्शाता। इसलिए मूल्यांकन में औपचारिक परीक्षणों, अनौपचारिक तकनीकों, प्रामाणिक मूल्यांकन तथा गतिशील मूल्यांकन का संतुलित समावेश आवश्यक है।

7.5.4.1 भाषा मूल्यांकन उपकरणों का वर्गीकरण

भाषा मूल्यांकन के उपकरणों को उनके उद्देश्य एवं उपयोग के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

(क) मानकीकृत उपकरण

मानकीकृत परीक्षण वे होते हैं जिनकी प्रशासन प्रक्रिया, अंकन प्रणाली तथा व्याख्या पूर्वनिर्धारित होती है। इनका निर्माण वैज्ञानिक प्रक्रियाओं - जैसे विश्वसनीयता, वैधता, मानकीकरण तथा मानक प्रतिमानों के आधार पर किया जाता है। इनका उपयोग मुख्यतः भाषाई स्तर निर्धारित करने, आयु अथवा कक्षा के अनुसार तुलना करने, प्रगति मापने, तथा शोध कार्यों में किया जाता है।

(ख) गैर-मानकीकृत उपकरण

ये उपकरण मूल्यांकनकर्ता द्वारा शिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुसार लचीले रूप से उपयोग किए जाते हैं। इनमें शिक्षक द्वारा निर्मित परीक्षण, चेकलिस्ट,

रेटिंग स्केल, अवलोकन प्रपत्र, प्रश्नोत्तर, कार्यपत्रक, परियोजना कार्य, मौखिक अथवा प्ैस् प्रस्तुति आदि सम्मिलित हैं । इनका उद्देश्य शिक्षार्थी के वास्तविक प्रदर्शन को समझना होता है।

7.5.4.2 भाषा नमूना विश्लेषण

आधुनिक भाषा मूल्यांकन में को अत्यन्त प्रभावी तकनीक माना जाता है। इसमें शिक्षार्थी द्वारा स्वाभाविक परिस्थिति में प्रयुक्त भाषा का विश्लेषण किया जाता है। भाषा नमूना मुक्त वार्तालाप, चित्र वर्णन, कहानी सुनाना, समूह चर्चा, खेल आधारित गतिविधियाँ, वीडियो प्रतिक्रिया, एवं भारतीय सांकेतिक भाषा में मुक्त संवाद आदि माध्यमों से प्राप्त किया जा सकता है। इसके विश्लेषण के प्रमुख आयाम जैसे शब्दावली की विविधता, औसत वाक्य लंबाई, व्याकरणिक शुद्धता, कथन संगठन, संवाद प्रवाह, प्राग्मैटिक दक्षता को शामिल किया जा सकता है। प्ैस् में भ्ंदकींचमए स्वबंजपवदए डवअमउमदजए छवद - उंदनंस डंतामते तथा ैचंजपंस ळतंउउंत का उपयोग किया जाता है।

7.5.4.3 अवलोकन

अवलोकन एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षार्थी की भाषा का मूल्यांकन उसके प्राकृतिक वातावरण में किया जाता है। अवलोकन के प्रमुख क्षेत्र जैसे कक्षा सहभागिता, समूह गतिविधियाँ।, साथियों से संवाद, शिक्षक के निर्देशों की समझ, परिवार के साथ संप्रेषण, भारतीय सांकेतिक भाषा का स्वाभाविक उपयोग को ध्यान में रखा जा सकता है।

7.5.4.4 पोर्टफोलियो मूल्यांकन

पोर्टफोलियो शिक्षार्थी के कार्यों का व्यवस्थित संग्रह है, जो समय के साथ उसकी प्रगति को प्रदर्शित करता है। पोर्टफोलियो में सम्मिलित सामग्री (लेखन कार्य, परियोजनाएँ, चित्र आधारित गतिविधियाँ, वीडियो रिकॉर्डिंग, प्ैस् प्रस्तुतीकरण, शिक्षक टिप्पणियाँ, स्व-मूल्यांकन, एवं अभिभावक की टिप्पणियाँ शामिल किये जाते हैं।

7.5.4.5 पाठ्यचर्या-आधारित मूल्यांकन

पाठ्यचर्या-आधारित मूल्यांकन का उद्देश्य यह जानना है कि शिक्षार्थी वर्तमान पाठ्यक्रम की अपेक्षित भाषाई एवं शैक्षणिक दक्षताओं को किस सीमा तक प्राप्त कर रहा है। इसमें मूल्यांकन सीधे कक्षा-अधिगम से जुड़ा होता है। इसकी मुख्य विशेषताएँ जैसे पाठ्यपुस्तक आधारित गतिविधियाँ, दैनिक कक्षा प्रदर्शन, गृहकार्य, परियोजनाएँ, मौखिक अथवा प्ैस् प्रस्तुतीकरण एवं विषय-विशिष्ट भाषा का उपयोग हैं।

7.5.4.6 गतिशील मूल्यांकन

गतिशील मूल्यांकन आधुनिक विशेष शिक्षा का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। इसमें केवल वर्तमान प्रदर्शन का मूल्यांकन नहीं किया जाता, बल्कि यह भी देखा जाता है कि उचित सहयोग मिलने पर शिक्षार्थी कितना सीख सकता है। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से उन श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी है जिनके भाषा-अनुभव सीमित रहे हैं।

गतिशील मूल्यांकन की प्रक्रियारू

7.5.4.7 रूब्रिक (त्रइतपबे) आधारित मूल्यांकन

रूब्रिक एक पूर्वनिर्धारित मानदण्ड-आधारित मूल्यांकन उपकरण है, जिसके माध्यम से विभिन्न भाषाई कौशलों का व्यवस्थित आकलन किया जाता है।

रूब्रिक में सम्मिलित संकेतकरू

1 भाषा की स्पष्टता

2 व्याकरण

3 कथनसंगठन

4 शब्दावली

5 प्ैस् व्याकरण

6 प्रस्तुतीकरण कौशल

7 प्राग्मैटिक उपयोग

रूब्रिक विशेष रूप से परियोजनाओं, प्रस्तुतियों तथा प्ैस् प्रदर्शन मूल्यांकन में अत्यन्त उपयोगी है।

7.5.4.8 डिजिटल एवं ।प्-सहायित भाषा मूल्यांकन

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने भाषा मूल्यांकन के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। वर्तमान समय में वीडियो-आधारित मूल्यांकन, ई-पोर्टफोलियो तथा ऑनलाइन प्रदर्शन कार्यों का उपयोग बढ़ रहा है। उभरती हुई ।प्-सहायित प्रणालियाँ निम्न क्षेत्रों में सहयोग प्रदान कर सकती हैं-

1 भाषा नमूना विश्लेषण

2 भाषण प्रतिलेखन

3 कथन संगठन

4 वीडियो संग्रह एवं विश्लेषण

5 प्रगति ट्रैकिंग

6 डिजिटल रूब्रिक

7 व्यक्तिगत प्रतिपुष्टि

हालाँकि, भारतीय सांकेतिक भाषा के संदर्भ में ।प् का उपयोग अभी विकासशील अवस्था में है। इसलिए अंतिम निर्णय सदैव प्रशिक्षित विशेषज्ञ द्वारा ही किया जाना चाहिए।

<u>तालिका 7.6</u>

भाषा मूल्यांकन उपकरणों की तुलनात्मक उपयोगिता			
उपकरण	प्रमुख उद्देश्य	विशेष लाभ	सीमाएँ
मानकीकृत परीक्षण	तुलनात्मक मूल्यांकन	विश्वसनीय एवं वस्तुनिष्ठ	प्ैस् के लिए सीमित उपलब्धता
भाषा नमूना	वास्तविक भाषा व्यवहार	कार्यात्मक मूल्यांकन	विश्लेषण में समय अधिक
अवलोकन	प्राकृतिक संप्रेषण	प्राग्मैटिक कौशल का आकलन	पर्यवेक्षक पक्षपात संभव
पोर्टफोलियो	प्रगति का दस्तावेजीकरण	सतत मूल्यांकन	व्यवस्थित रख-रखाव आवश्यक

पाठ्यक्रम आधारित पाठ्यक्रम आधारित प्रगति शिक्षण से प्रत्यक्ष सम्बन्ध तुलनात्मक मानक सीमित

गतिशील मूल्यांकन सीखने की क्षमता हस्तक्षेप योजना में उपयोगी समय एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता

रूब्रिक प्रदर्शन मूल्यांकन स्पष्ट मानदण्ड गुणवत्तापूर्ण निर्माण आवश्यक

डिजिटलध्।प् आधारित निरंतर निगरानी त्वरित विश्लेषण एवं अभिलेखीकरण तकनीकी संसाधनों पर निर्भरता

चित्र 7.9 रू आधुनिक भाषा मूल्यांकन का समेकित मॉडल

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1.मानकीकृत एवं गैर-मानकीकृत भाषा मूल्यांकन उपकरणों में अंतर स्पष्ट कीजिए तथा श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के संदर्भ में दोनों की उपयोगिता की विवेचना कीजिए।

2.ष्क्लदंउपब ।ेेमेेउमदज केवल वर्तमान उपलब्धि नहीं, बल्कि सीखने की सम्भावना का मूल्यांकन करता है।ष् इस कथन की उपयुक्त उदाहरणों सहित व्याख्या कीजिए।

3.भाषा नमूना विश्लेषण, पोर्टफोलियो तथा पाठ्यचर्या-आधारित मूल्यांकन को भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में विशेष रूप से उपयोगी क्यों माना जाता है?

7.5.5 भाषा मूल्यांकन में विश्वसनीयता, वैधता, निष्पक्षता एवं नैतिक विचार

भाषा मूल्यांकन केवल परीक्षणों के प्रशासन एवं अंकन तक सीमित प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह वैज्ञानिक, उत्तरदायी एवं नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया है। यदि मूल्यांकन उपकरण विश्वसनीय नहीं हैं, परीक्षण वैध नहीं है अथवा मूल्यांकन पक्षपातपूर्ण है, तो उसके आधार पर लिए गए शैक्षणिक एवं पुनर्वास संबंधी निर्णय भी त्रुटिपूर्ण हो सकते हैं। इसलिए आधुनिक भाषा मूल्यांकन में परीक्षण की गुणवत्ता को उतना ही महत्व दिया जाता है जितना उसके परिणामों को। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में यह आवश्यकता और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि भाषा, संस्कृति, संप्रेषण माध्यम तथा शैक्षिक अवसरों की विविधता मूल्यांकन को प्रभावित कर सकती है। उदाहरण के लिए, यदि भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले शिक्षार्थी का मूल्यांकन केवल मौखिक भाषा के आधार पर किया जाए, तो यह उसकी वास्तविक भाषाई क्षमता का प्रतिनिधित्व नहीं करेगा। इसलिए मूल्यांकन प्रक्रिया को वैज्ञानिक होने के साथ-साथ भाषाई एवं सांस्कृतिक रूप से भी उत्तरदायी होना चाहिए।

7.5.5.1 विश्वसनीयता

विश्वसनीयता से आशय किसी परीक्षण द्वारा प्राप्त परिणामों की स्थिरता, संगति तथा विश्वसनीय पुनरावृत्ति से है। यदि किसी शिक्षार्थी का समान परिस्थितियों में बार-बार मूल्यांकन करने पर लगभग समान परिणाम प्राप्त हों, तो वह परीक्षण विश्वसनीय माना जाता है। विश्वसनीयता मूल्यांकन परिणामों पर विश्वास स्थापित करती है तथा हस्तक्षेप योजनाओं को अधिक सटीक और प्रभावी बनाने में सहायता करती है। इसके माध्यम से शिक्षार्थी की प्रगति का सही आकलन संभव होता है, विभिन्न मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा किए गए निष्कर्षों में समानता बनी रहती है तथा शोध एवं नीति-निर्माण के लिए उपयोगी और भरोसेमंद आँकड़े प्राप्त होते हैं।

विश्वसनीयता के प्रमुख प्रकार

(क) पुनः परीक्षण विश्वसनीयता (ज्मेजदृत्मजमेज त्मसपंइपसपजल)रू यदि एक ही परीक्षण समान परिस्थितियों में दो अलग-अलग समय पर कराया जाए और समान परिणाम प्राप्त हों, तो परीक्षण की पुनः परीक्षण विश्वसनीयता अच्छी मानी जाती है।

(ख) समकक्ष रूप विश्वसनीयता (च्तंससमसध्म्ुनपअंसमदज थ्वतउे त्मसपंइपसपजल)रू जब किसी परीक्षण के दो समकक्ष रूपों (म्ुनपअंसमदज थ्वतउे) से लगभग समान परिणाम प्राप्त होते हैं।

(ग) आंतरिक संगति (प्दजमतदंस ब्वदेपेजमदबल)रू यह परीक्षण के विभिन्न प्रश्नों के बीच पारस्परिक संगति को दर्शाती है। यदि सभी प्रश्न एक ही भाषाई कौशल का उचित मापन कर रहे हों, तो आंतरिक संगति उच्च होती है।मूल्यांकनकर्ता-अंतर विश्वसनीयता (प्दजमत-तंजमत त्मसपंइपसपजल)रू भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि दो प्रशिक्षित मूल्यांकनकर्ता एक ही प्ैस् प्रदर्शन को देखकर समान निष्कर्ष निकालते हैं, तो परीक्षण की विश्वसनीयता अधिक मानी जाती है।

7.5.5.2 वैधता

वैधता से आशय इस बात से है कि परीक्षण वास्तव में उसी कौशल का मापन कर रहा है जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है। यदि किसी परीक्षण का उद्देश्य प्ैस् व्याकरण का मूल्यांकन करना है, किन्तु वह केवल संकेतों की संख्या गिनता है, तो ऐसा परीक्षण वैध नहीं माना जाएगा।

वैधता के प्रमुख प्रकार

प्रत्यक्ष वैधता (थ्ंबम टंसपकपजल) विषयवस्तु वैधता (ब्वदजमदज टंसपकपजल) निर्माण वैधता (ब्वदेजतनबज टंसपकपजल) मानदण्ड वैधता (ब्तपजमतपवद-तमसंजमक टंसपकपजल)

परीक्षण देखने में अपने निर्धारित उद्देश्य के अनुरूप प्रतीत होता है। परीक्षण में भाषा के सभी आवश्यक घटकों (शब्दावली, व्याकरण, ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक भाषा आदि) का उचित प्रतिनिधित्व होता है। परीक्षण वास्तव में उसी भाषाई कौशल या निर्माण का मापन करता है जिसके लिए उसे बनाया गया है। परीक्षण के परिणाम अन्य मानकीकृत परीक्षणों या वास्तविक प्रदर्शन से मेल खाते हैं।

7.5.5.3 निष्पक्षता

का अर्थ है कि मूल्यांकन प्रक्रिया किसी भी शिक्षार्थी के साथ उसकी भाषा, संस्कृति, संप्रेषण शैली अथवा दिव्यांगता के आधार पर भेदभाव न करे। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में निष्पक्ष मूल्यांकन के लिए उपयुक्त भाषा में परीक्षण, आवश्यक दृश्य सामग्रियों की उपलब्धता, भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) का सम्मान, पर्याप्त समय, उपयुक्त संप्रेषण माध्यम, प्रशिक्षित मूल्यांकनकर्ता तथा सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त परीक्षण सामग्री सुनिश्चित करना आवश्यक है। यदि कोई शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा में दक्ष है, तो केवल मौखिक भाषा के आधार पर उसकी क्षमता का आकलन करना निष्पक्ष मूल्यांकन नहीं माना जाएगा।

7.5.5.4 भाषाई एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलता

भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि बधिर समुदाय की भाषाई एवं सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार भी है। इसलिए

भाषा मूल्यांकन के दौरान भाषाई तथा सांस्कृतिक विविधताओं का सम्मान करना आवश्यक है। मूल्यांकनकर्ता को शिक्षार्थी की प्रथम भाषा, परिवार की भाषाई पृष्ठभूमि, क्षेत्रीय सांकेतिक विविधताओं, भारतीय सांकेतिक भाषा की व्याकरणिक संरचना तथा बधिर संस्कृति (क्मं िन्नसजनतम) के प्रति संवेदनशील और सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए। साथ ही, शिक्षार्थी के भाषा-अनुभव (स्ंदहनंहम म्गचवेनतम) और भाषा-अधिगम के अवसरों को ध्यान में रखते हुए ही मूल्यांकन परिणामों की उचित व्याख्या करनी चाहिए।

7.5.5.5 नैतिक सिद्धान्त

भाषा मूल्यांकन केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि नैतिक उत्तरदायित्व भी है। मूल्यांकनकर्ता को निम्न नैतिक सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए-

गोपनीयता सूचित सहमति सम्मान एवं गरिमा व्यावसायिक दक्षता (उत्तरदायी रिपोर्टिंग

मूल्यांकन की जानकारी केवल अधिकृत व्यक्तियों तक सीमित रखी जाए। मूल्यांकन से पूर्व उद्देश्य एवं प्रक्रिया की जानकारी देकर सहमति प्राप्त की जाए। प्रत्येक शिक्षार्थी के साथ सम्मानपूर्ण एवं संवेदनशील व्यवहार किया जाए। मूल्यांकन केवल प्रशिक्षित एवं योग्य विशेषज्ञ द्वारा किया जाए। रिपोर्ट साक्ष्य-आधारित हो तथा शिक्षार्थी की शक्तियों एवं आवश्यकताओं दोनों को दर्शाए।

7.5.5.6 गुणवत्ता आश्वासन गुणवत्ता वाले भाषा मूल्यांकन के लिए निम्न उपाय आवश्यक हैं-

- मानकीकृत प्रक्रियाओं का पालन।

- मूल्यांकनकर्ताओं का नियमित प्रशिक्षण।
- परीक्षण सामग्री का समय-समय पर अद्यतन।
- द्विभाषिक एवं सांस्कृतिक समीक्षा।
- गुणवत्ता नियंत्रण (फनंसपजल ब्वदजतवस)।
- सहकर्मी समीक्षा (च्ममत त्मअपमू)।
- परिणामों का सतत विश्लेषण।

विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा के लिए नए मानकीकृत उपकरणों का विकास तथा उनका मनोमितीय परीक्षण भविष्य की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

चित्र 7.10 रू गुणवत्तापूर्ण भाषा मूल्यांकन के उपकरण

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. विश्वसनीयता एवं वैधता में अंतर स्पष्ट कीजिए तथा भाषा मूल्यांकन में दोनों के महत्व की विवेचना कीजिए।

2. भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में प्दजमत-तंजमत त्मसपंइपसपजल का विशेष महत्व क्यों है? उपयुक्त उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

3. श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के भाषा मूल्यांकन में भाषाई एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलता को सुनिश्चित करने के लिए किन सिद्धान्तों का पालन किया जाना चाहिए?

7.5.6 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकनरू सर्वोत्तम प्रथाएँ, सामान्य त्रुटियाँ, भारतीय चुनौतियाँ एवं भविष्य की दिशाएँ

मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल्यांकन एक जटिल, बहुआयामी एवं संदर्भ-आधारित प्रक्रिया है। यह केवल भाषाई कौशलों का परीक्षण नहीं, बल्कि शिक्षार्थी की संप्रेषण क्षमता, अधिगम शैली, सांस्कृतिक पहचान तथा भविष्य की शैक्षणिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं को समझने का माध्यम है। भारत जैसे बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश में, जहाँ श्रवण बाधित शिक्षार्थियों की भाषाई पृष्ठभूमि, विद्यालयी अवसर, पारिवारिक भाषा तथा भारतीय सांकेतिक भाषा के सम्पर्क में पर्याप्त विविधता है, वहाँ मूल्यांकन को एकरूप दृष्टिकोण से नहीं किया जा सकता। प्रत्येक शिक्षार्थी की भाषाई यात्रा भिन्न होती है, इसलिए मूल्यांकन भी व्यक्तिकेन्द्रित, लचीला तथा बहु-स्रोत आधारित होना चाहिए।

7.5.6.1 भाषा मूल्यांकन की सर्वोत्तम प्रथाएँरू उच्च गुणवत्ता वाले भाषा मूल्यांकन के लिए निम्न सिद्धान्तों का पालन किया जाना चाहिए

(क) बहुआयामी मूल्यांकन अपनानारू भाषा मूल्यांकन में केवल एक परीक्षण के आधार पर निर्णय नहीं लिया जाना चाहिए। अधिक सटीक एवं समग्र आकलन के लिए मानकीकृत परीक्षण, भाषा नमूना, कक्षा अवलोकन, पोर्टफोलियो, शिक्षक रिपोर्ट, अभिभावक साक्षात्कार तथा भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) प्रदर्शन जैसे विभिन्न स्रोतों का समन्वित उपयोग किया जाना चाहिए।

(ख) भाषा-अनुकूल मूल्यांकनरू मूल्यांकन उसी भाषा अथवा संप्रेषण माध्यम में किया जाना चाहिए जिसमें शिक्षार्थी सर्वाधिक दक्ष हो। उदाहरणतः प्ैस् उपयोगकर्ताओं के लिए प्ैस्-आधारित मूल्यांकन, मौखिक भाषा उपयोगकर्ताओं के लिए मौखिक भाषा-आधारित मूल्यांकन तथा द्विभाषिक शिक्षार्थियों के लिए दोनों भाषाओं का पृथक एवं समेकित मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

(ग) कार्यात्मक भाषा पर बलरू भाषा मूल्यांकन केवल शब्दावली और व्याकरण तक सीमित नहीं होना चाहिए। इसमें वास्तविक जीवन के संप्रेषण, विद्यालयी सहभागिता, सामाजिक अन्तःक्रिया, डिजिटल संचार तथा व्यावसायिक संप्रेषण जैसे कार्यात्मक भाषा कौशलों का भी आकलन किया जाना आवश्यक है।

(घ) सतत एवं व्यापक मूल्यांकनरू भाषा मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसे प्रारम्भिक पहचान, हस्तक्षेप के दौरान, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (प्म्च्) की समीक्षा, कक्षा या विद्यालय परिवर्तन तथा उच्च शिक्षा अथवा रोजगार से पूर्व विभिन्न चरणों में नियमित रूप से दोहराया जाना चाहिए।

(ङ) परिवार एवं बहुविषयक दल की सहभागितारू प्रभावी भाषा मूल्यांकन के लिए बहुविषयक सहयोग आवश्यक है। इस प्रक्रिया में विशेष शिक्षक, वाणी एवं भाषा विशेषज्ञ, ऑडियोलॉजिस्ट, भारतीय सांकेतिक भाषा विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक, अभिभावक तथा स्वयं शिक्षार्थी की सक्रिय सहभागिता मूल्यांकन को अधिक व्यापक, विश्वसनीय और उपयोगी बनाती है।

7.5.6.2 भाषा मूल्यांकन में सामान्य त्रुटियाँ

(ब्वउउवद च्पजंिससे)रू व्यवहार में अनेक ऐसी त्रुटियाँ देखने को मिलती हैं जो मूल्यांकन की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं।

प्रमुख त्रुटियाँरू

1 केवल मौखिक भाषा के आधार पर निर्णय लेना

2 भारतीय सांकेतिक भाषा को केवल संकेतों का समूह मानना

3 भाषा एवं बुद्धि को एक समान मान लेना।

4 केवल मानकीकृत परीक्षणों पर निर्भर रहना

5 परिवार की भाषा पृष्ठभूमि की उपेक्षा करना एवं सांस्कृतिक विविधताओं की अनदेखी करना

6 एक ही दिन के प्रदर्शन के आधार पर निष्कर्ष निकालना।

7 हस्तक्षेप योजना से मूल्यांकन को न जोड़ना।

8 रिपोर्ट में केवल कमियों का उल्लेख करना।

9 प्रगति के पुनर्मूल्यांकन की व्यवस्था न करना।

7.5.6.3 भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रमुख चुनौतियाँरू भारत में भाषा मूल्यांकन के समक्ष अनेक व्यावहारिक एवं संरचनात्मक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

- भारतीय सांकेतिक भाषा के मानकीकृत परीक्षणों का अभावरू अधिकांश उपलब्ध परीक्षण मौखिक भाषा पर आधारित हैं। प्ैस् के लिए व्यापक रूप से स्वीकृत मानकीकृत मूल्यांकन उपकरणों की संख्या अभी सीमित है।

- प्रशिक्षित विशेषज्ञों की कमीरू देश के अनेक क्षेत्रों में ऐसे विशेषज्ञों की संख्या सीमित है जो भारतीय सांकेतिक भाषा, भाषा मूल्यांकन, विशेष शिक्षा तीनों क्षेत्रों में पर्याप्त दक्षता रखते हों।

- भाषाई विविधतारू भारत में अनेक बोली-भाषाएँ, क्षेत्रीय सांकेतिक विविधताएँ, विभिन्न शैक्षणिक माध्यम मूल्यांकन को जटिल बनाते हैं।

- संसाधनों की असमान उपलब्धतारू ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में परीक्षण सामग्री, प्रशिक्षित विशेषज्ञ, डिजिटल संसाधन, तथा पुनर्वास सेवाएँ समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं।

· जागरूकता का अभावरू अनेक परिवारों एवं विद्यालयों में अभी भी भाषा मूल्यांकन को केवल परीक्षा अथवा प्रमाणपत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया माना जाता है, जबकि इसका वास्तविक उद्देश्य शैक्षणिक योजना एवं हस्तक्षेप का विकास है।

7.5.6.4 भविष्य की दिशाएँ आधुनिक शोध एवं तकनीकी विकास भाषा मूल्यांकन के क्षेत्र में अनेक नई संभावनाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

1 भारतीय सांकेतिक भाषा के मानकीकृत मूल्यांकन उपकरणों का विकास

2 द्विभाषिक (प्ैस्दृलिखितध्मौखिक भाषा) मूल्यांकन मॉडल का विस्तार

3 डिजिटल एवं वीडियो-आधारित मूल्यांकन प्रणालियों का विकास

4 कृत्रिम बुद्धिमत्ता (।प्) आधारित विश्लेषणात्मक उपकरणों का उत्तरदायी उपयोग

5 राष्ट्रीय स्तर पर भाषा मूल्यांकन दिशा-निर्देशों का विकास एवं समुदाय एवं परिवार की अधिक सहभागिता

6 बहुविषयक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार

7 विद्यालय से रोजगार तक संक्रमण (ज्तंदेपजपवद ।ेेमेेउमदज) को भाषा मूल्यांकन से जोड़ना

8 सांस्कृतिक एवं भाषाई उत्तरदायी मूल्यांकन ढाँचे विकसित करना

9 भारतीय संदर्भ में अधिक शोध एवं मनोमितीय अध्ययन करना

7.5.6.5 समेकित मॉडल आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार श्रवण बाधित व्यक्तियों का भाषा मूल्यांकन निम्न पाँच सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए

भाषा-केंद्रित शिक्षार्थी-केंद्रित साक्ष्य-आधारित हस्तक्षेप-उन्मुख अधिकार-आधारित

भाषा की वास्तविक संरचना एवं प्रयोग का मूल्यांकन। व्यक्ति की भाषाई पृष्ठभूमि, अनुभव एवं आवश्यकताओं का सम्मान। निर्णय अनेक स्रोतों से प्राप्त प्रमाणों पर आधारित हों। मूल्यांकन का प्रत्येक निष्कर्ष शिक्षण एवं पुनर्वास योजना से जुड़ा हो। प्रत्येक शिक्षार्थी को उसकी पसंदीदा भाषा एवं संप्रेषण माध्यम में निष्पक्ष मूल्यांकन प्राप्त हो।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा मूल्यांकन की तीन सर्वोत्तम प्रथाएँ लिखिए।
2. भाषा मूल्यांकन में निष्पक्षता का क्या महत्व है?
3. कार्यात्मक भाषा मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?
4. भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में कौन-सी दो प्रमुख चुनौतियाँ हैं?

7.6 मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन में चुनौतियाँ एवं चिंताएँ

भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य शिक्षार्थी की भाषाई क्षमता का सटीक, निष्पक्ष एवं उपयोगी आकलन करना है, किन्तु व्यवहार में यह कार्य अनेक कारणों से चुनौतीपूर्ण हो जाता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में ये चुनौतियाँ और भी जटिल हैं क्योंकि भाषा विकास केवल श्रवण क्षमता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि प्रारम्भिक भाषा-अनुभव, पारिवारिक संप्रेषण, विद्यालयी वातावरण, भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) के सम्पर्क, सहायक प्रौद्योगिकी, सामाजिक दृष्टिकोण तथा उपलब्ध शैक्षणिक संसाधनों से भी प्रभावित होता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहाँ विभिन्न राज्यों में अलग-अलग भाषाएँ, बोलियाँ तथा सांकेतिक भाषा की क्षेत्रीय विविधताएँ प्रचलित हैं, वहाँ एक समान मूल्यांकन प्रणाली विकसित करना कठिन है। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षित विशेषज्ञों की कमी, मानकीकृत उपकरणों का अभाव, द्विभाषिक शिक्षण की सीमित उपलब्धता तथा तकनीकी संसाधनों में असमानता जैसी समस्याएँ भी भाषा मूल्यांकन की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि इनके बिना मूल्यांकन के परिणाम शिक्षार्थी की वास्तविक क्षमता के बजाय उसकी परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब बन सकते हैं। अतः आधुनिक दृष्टिकोण केवल परीक्षण परिणामों पर नहीं, बल्कि मूल्यांकन की संपूर्ण प्रक्रिया की गुणवत्ता पर बल देता है।

7.6.1 भाषा मूल्यांकन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

भाषा मूल्यांकन अनेक परस्पर सम्बद्ध कारकों से प्रभावित होता है। इन कारकों को समझे बिना किसी भी परीक्षण के परिणामों की सही व्याख्या संभव नहीं है।

1) श्रवण हानि की प्रकृति एवं तीव्रता

भाषा विकास पर श्रवण हानि के प्रकार, तीव्रता तथा पहचान की आयु का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जन्मजात, पूर्व-भाषिक (च्तम-सपदहनंस) तथा पश्च-भाषिक (च्वेज-सपदहनंस) श्रवण हानि वाले व्यक्तियों की भाषा आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। इसी प्रकार हल्की, मध्यम, गंभीर एवं गहन श्रवण हानि वाले शिक्षार्थियों में भाषा विकास की गति एवं स्वरूप भी अलग हो सकते हैं। अतः मूल्यांकन करते समय केवल भाषा प्रदर्शन नहीं, बल्कि श्रवण प्रोफाइल को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

2) प्रारम्भिक भाषा सम्पर्क

शोध यह दर्शाते हैं कि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में समृद्ध एवं सुलभ भाषा-अनुभव भाषा विकास की आधारशिला रखते हैं। यदि किसी श्रवण बाधित बच्चे को प्रारम्भ से ही भारतीय सांकेतिक भाषा, प्रभावी मौखिक भाषा या दोनों का पर्याप्त सम्पर्क मिलता है, तो उसकी भाषाई एवं संज्ञानात्मक प्रगति बेहतर होने की संभावना रहती है। इसके विपरीत, भाषा-अभाव (स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवद) की स्थिति में शिक्षार्थी की भाषाई उपलब्धियाँ उसकी वास्तविक सीखने की क्षमता का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं। इसलिए मूल्यांकन करते समय भाषा-अनुभव के इतिहास का विश्लेषण आवश्यक है।

3) पारिवारिक संप्रेषण वातावरण

परिवार भाषा विकास का प्रथम एवं सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम होता है। यदि परिवार और बच्चा समान संप्रेषण माध्यम का प्रभावी रूप से उपयोग करते हैं, तो बच्चे को भाषा सीखने एवं प्रयोग करने के निरंतर अवसर प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत, परिवार और बच्चे के बीच प्रभावी संप्रेषण का अभाव भाषा विकास के साथ-साथ सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को भी प्रभावित कर सकता है। इसलिए भाषा मूल्यांकन के दौरान परिवार में प्रयुक्त प्रमुख भाषा,

भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) का ज्ञान, माता-पिता की सहभागिता, घर में संवाद की गुणवत्ता तथा भाषा-समृद्ध वातावरण की उपलब्धता जैसे पहलुओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया जाना चाहिए।

4) शैक्षणिक वातावरण एवं शिक्षण पद्धति

भाषा मूल्यांकन के परिणाम शिक्षार्थी को प्राप्त शैक्षणिक वातावरण एवं अपनाई गई शिक्षण पद्धति से प्रभावित होते हैं। मौखिकता, सम्पूर्ण सम्प्रेषण, द्विभाषिकदृद्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण, समावेशी कक्षाएँ तथा विशेष विद्यालयकृइन सभी में भाषा सीखने और उपयोग करने के अवसर भिन्न-भिन्न होते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षार्थियों के भाषा-अनुभव और भाषा-विकास में अंतर पाया जा सकता है। इसलिए भाषा मूल्यांकन के परिणामों की व्याख्या करते समय शिक्षार्थी की शैक्षणिक पृष्ठभूमि एवं शिक्षण पद्धति को ध्यान में रखना आवश्यक है।

5) सहायक प्रौद्योगिकी

आधुनिक श्रवण पुनर्वास में सहायक प्रौद्योगिकी का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। श्रवण यंत्र (भ्मंतपदह ।पक), कॉक्लियर इम्प्लांट (ब्वबीसमंत प्उचसंदज), थ्ड प्रणाली, कैप्शनिंग, स्पीच-टू-टेक्स्ट अनुप्रयोग, वीडियो रिले सेवाएँ तथा डिजिटल शिक्षण मंच जैसी तकनीकें श्रवण बाधित व्यक्तियों के भाषा एवं संप्रेषण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन संसाधनों की उपलब्धता तथा उनके प्रभावी उपयोग का भाषा प्रदर्शन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए भाषा मूल्यांकन के दौरान यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए कि मूल्यांकन किस प्रकार की सहायक तकनीकी सुविधाओं के साथ किया गया था।

6) अतिरिक्त दिव्यांगता कुछ श्रवण बाधित शिक्षार्थियों में दृष्टि, बौद्धिक विकास, ऑटिज्म, अधिगम अक्षमता, मोटर कठिनाइयाँ या अन्य स्थितियाँ भी हो सकती हैं। ऐसी परिस्थितियों में भाषा प्रदर्शन केवल श्रवण हानि का परिणाम नहीं होता।

चिंतन कीजिए

दो श्रवण बाधित शिक्षार्थियों की श्रवण हानि समान स्तर की है, किन्तु पहले शिक्षार्थी को जन्म से भारतीय सांकेतिक भाषा का समृद्ध वातावरण मिला, जबकि दूसरे को भाषा का नियमित सम्पर्क देर से मिला। यदि दोनों का एक ही भाषा परीक्षण से मूल्यांकन किया जाए, तो क्या उनके परिणामों की समान व्याख्या की जा सकती है? अपने उत्तर में प्रारम्भिक भाषा सम्पर्क, भाषा-अभाव तथा निष्पक्ष मूल्यांकन के सिद्धान्तों का विश्लेषण कीजिए।

7.6.2 मौखिक भाषा मूल्यांकन की विशिष्ट चुनौतियाँ

मौखिक भाषा का मूल्यांकन श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है क्योंकि उनकी भाषा उपलब्धियाँ केवल भाषाई क्षमता पर निर्भर नहीं करतीं, बल्कि श्रवण अनुभव, श्रवण सहायक उपकरण, प्रारम्भिक हस्तक्षेप, पारिवारिक वातावरण, शिक्षण पद्धति तथा संप्रेषण माध्यम जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती हैं। इसलिए यदि मूल्यांकनकर्ता इन कारकों की उपेक्षा करता है, तो परीक्षण के परिणाम शिक्षार्थी की वास्तविक भाषा क्षमता का सही प्रतिनिधित्व नहीं कर पाएँगे। आधुनिक दृष्टिकोण यह मानता है कि मौखिक भाषा का मूल्यांकन केवल ष्बच्चा कितना बोल सकता है?ष् तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह भी देखना आवश्यक है कि वह कितना समझता है, विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का उपयोग कैसे करता है, तथा उपलब्ध श्रवण संसाधनों का कितना प्रभावी उपयोग करता है।

7.6.2.1 श्रवण अनुभव में विविधता

समान स्तर की श्रवण हानि वाले दो शिक्षार्थियों की मौखिक भाषा क्षमता समान हो, यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि उनके श्रवण अनुभवों में महत्वपूर्ण अंतर हो सकता है। श्रवण हानि की पहचान की आयु, श्रवण यंत्र या कॉक्लियर इम्प्लांट के उपयोग का समय, नियमित श्रवण प्रशिक्षण, प्रारम्भिक भाषा हस्तक्षेप तथा परिवार का सहयोग जैसे कारक भाषा विकास को प्रभावित करते हैं। इन कारणों से भाषा विकास की गति एवं गुणवत्ता में पर्याप्त भिन्नता देखी जाती है। परिणामस्वरूप, समान परीक्षण में शिक्षार्थियों का प्रदर्शन अलग-अलग हो सकता है, मानक अंकों की व्याख्या कठिन हो सकती है तथा मूल्यांकनकर्ता को भाषा क्षमता और भाषा-अनुभव के बीच अंतर को ध्यान में रखकर परिणामों की व्याख्या करनी चाहिए।

7.6.2.2 श्रवण अवशेष का प्रभाव

अनेक श्रवण बाधित व्यक्तियों में कुछ मात्रा में श्रवण अवशेष उपलब्ध रहता है। श्रवण यंत्र (भ्मंतपदह ।पक) अथवा कॉक्लियर इम्प्लांट (ब्वबीसमंत प्उचसंदज) के माध्यम से इसका प्रभावी उपयोग मौखिक भाषा अधिगम और संप्रेषण कौशल के विकास में सहायक हो सकता है। इसलिए भाषा मूल्यांकन के दौरान यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि शिक्षार्थी उपकरण पहनकर मूल्यांकन दे रहा है या नहीं, उपकरण सही प्रकार से कार्य कर रहा है या नहीं, परीक्षण शांत वातावरण में संचालित किया जा रहा है या नहीं तथा पृष्ठभूमि शोर का स्तर कितना है। इन कारकों की उपेक्षा करने पर मूल्यांकन के परिणाम शिक्षार्थी की वास्तविक भाषाई क्षमता को सही रूप से प्रतिबिंबित नहीं कर पाएंगे।

7.6.2.3 वाक्-बोध एवं भाषा-बोध में अंतर

वाक्-बोध और भाषा-बोध दो भिन्न लेकिन परस्पर संबंधित क्षमताएँ हैं। कई बार कोई शिक्षार्थी ध्वनियों या शब्दों की पहचान तो कर लेता है, परंतु उनके अर्थ को समझने में कठिनाई अनुभव करता है। इसके विपरीत, कुछ शिक्षार्थी सीमित श्रवण संकेतों के बावजूद प्रसंग और पूर्व अनुभवों के आधार पर संदेश का अर्थ समझ लेते हैं। इसलिए भाषा मूल्यांकन के दौरान वाक्-बोध (ध्वनि एवं शब्द पहचान) तथा भाषा-बोध (अर्थ ग्रहण एवं भाषा समझ) का पृथक-पृथक आकलन करना आवश्यक है। यदि इन दोनों क्षमताओं को एक समान मान लिया जाए, तो शिक्षार्थी की वास्तविक भाषाई क्षमता के संबंध में गलत निष्कर्ष निकल सकते हैं।

7.6.2.4 उच्चारण (ैचममबी च्तवकनबजपवद) पर अत्यधिक बलरू व्यवहार में अनेक बार मौखिक भाषा मूल्यांकन केवल उच्चारण की स्पष्टता पर केन्द्रित हो जाता है, जबकि स्पष्ट उच्चारण होना ही अच्छी भाषा क्षमता का प्रमाण नहीं है। प्रभावी भाषा मूल्यांकन में शब्दावली, व्याकरण, वाक्य संरचना, अर्थ ग्रहण, संवाद कौशल, कथन क्षमता तथा सामाजिक भाषा प्रयोग जैसे सभी घटकों का संतुलित आकलन किया जाना आवश्यक है। इसलिए भाषा को केवल वाक् तक सीमित न मानते हुए उसके सभी भाषाई एवं संप्रेषणात्मक पक्षों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

7.6.2.5 ओष्ठ-पठन (ैचममबी त्मंकपदहध्स्पच त्मंकपदह) पर निर्भरता

कुछ श्रवण बाधित शिक्षार्थी ओष्ठ-पठन के माध्यम से मौखिक संदेशों को समझते हैं। इसलिए भाषा मूल्यांकन के दौरान इस तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक है, अन्यथा परिणामों की व्याख्या भ्रामक हो सकती है। उदाहरण के लिए, यदि परीक्षण के समय मूल्यांकनकर्ता का चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा हो, तो शिक्षार्थी ओष्ठ-पठन के आधार पर सही उत्तर दे सकता है। वहीं, यदि चेहरा आंशिक रूप से ढका हो या पर्याप्त प्रकाश उपलब्ध न हो, तो उसका प्रदर्शन

प्रभावित हो सकता है। अतः मूल्यांकन रिपोर्ट में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए कि क्या ओष्ठ-पठन की अनुमति थी, क्या दृश्य संकेत उपलब्ध थे तथा क्या मूल्यांकन केवल श्रवण संकेतों के आधार पर किया गया था।

7.6.2.6 भाषाई विविधता

भारत में अधिकांश श्रवण बाधित बच्चे बहुभाषी वातावरण में बड़े होते हैं, जहाँ घर, विद्यालय और समुदाय में भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रयोग किया जाता है तथा साथ ही भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) का भी उपयोग होता है। ऐसी स्थिति में केवल एक भाषा के आधार पर किया गया मूल्यांकन शिक्षार्थी की वास्तविक भाषाई क्षमता का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं कर सकता। इसलिए भाषा मूल्यांकन करते समय मूल्यांकनकर्ता को शिक्षार्थी की प्रथम भाषा, द्वितीय भाषा, विद्यालयी भाषा तथा भारतीय सांकेतिक भाषा के बीच के संबंधों को समझना चाहिए, ताकि उसकी भाषाई दक्षताओं का अधिक सटीक और समग्र आकलन किया जा सके।

7.6.2.7 मानकीकृत मौखिक भाषा परीक्षणों की सीमाएँ

भारत में उपलब्ध अधिकांश मानकीकृत मौखिक भाषा परीक्षण सामान्य श्रवण वाले बच्चों को ध्यान में रखकर विकसित किए गए हैं। इसलिए ये परीक्षण श्रवण बाधित शिक्षार्थियों की भाषाई क्षमताओं का पूर्ण एवं सटीक आकलन करने में हमेशा सक्षम नहीं होते। इनकी प्रमुख सीमाओं में श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए उपयुक्त मानकों (छवतउे) का अभाव, सांस्कृतिक विविधता का सीमित प्रतिनिधित्व, द्विभाषिक शिक्षार्थियों के लिए अनुपयुक्तता, कार्यात्मक संप्रेषण कौशल का सीमित आकलन तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का अभाव शामिल हैं। अतः ऐसे परीक्षणों के परिणामों की व्याख्या करते समय विशेष सावधानी बरतना आवश्यक है।

7.6.2.8 मूल्यांकनकर्ता सम्बन्धी चुनौतियाँ

मौखिक भाषा मूल्यांकन की गुणवत्ता काफी हद तक मूल्यांकनकर्ता की दक्षता और विशेषज्ञता पर निर्भर करती है। यदि मूल्यांकनकर्ता श्रवण पुनर्वास, भाषा विकास की प्रक्रिया, द्विभाषिक शिक्षा तथा भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) के महत्व से पर्याप्त रूप से परिचित नहीं है, तो उसके मूल्यांकन एवं निर्णय पक्षपातपूर्ण या त्रुटिपूर्ण हो सकते हैं। इसलिए भाषा मूल्यांकन की विश्वसनीयता और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए मूल्यांकनकर्ताओं का निरंतर व्यावसायिक विकास एवं नियमित प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है।

7.6.2.9 समय एवं परिस्थितिजन्य कारक

भाषा प्रदर्शन अनेक परिस्थितियों से प्रभावित हो सकता है, जैसे थकान, तनाव, अपरिचित वातावरण, परीक्षण का समय, प्रेरणा का स्तर, स्वास्थ्य स्थिति तथा शिक्षार्थी की भावनात्मक अवस्था। ये सभी कारक मूल्यांकन के परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए केवल एक ही मूल्यांकन सत्र के आधार पर अंतिम निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होता, बल्कि आवश्यकतानुसार बहु-स्रोत एवं बहु-अवसर मूल्यांकन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

अभ्यास गतिविधिरू

केस विश्लेषण

एक 9 वर्षीय श्रवण बाधित छात्र कॉक्लियर इम्प्लांट का उपयोग करता है। वह कक्षा में मौखिक निर्देशों का अधिकांश भाग समझ लेता है, किन्तु कहानी सुनाने, जटिल वाक्यों के प्रयोग तथा सामाजिक वार्तालाप में कठिनाई अनुभव करता है।

निम्न प्रश्नों पर विचार कीजिएकृ

1.इस छात्र की मौखिक भाषा के कौन-कौन से आयामों का विस्तृत मूल्यांकन आवश्यक होगा?

2.केवल उच्चारण परीक्षण इस छात्र की वास्तविक भाषा क्षमता को क्यों नहीं दर्शाएगा?

3.इस स्थिति में कौन-सी बहु-पद्धति मूल्यांकन तकनीकें सर्वाधिक उपयुक्त होंगी?

7.6.3 भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) मूल्यांकन की विशिष्ट चुनौतियाँ

भारतीय सांकेतिक भाषा एक स्वतंत्र, प्राकृतिक एवं पूर्ण विकसित भाषा है, जिसकी अपनी ध्वन्यात्मक, रूपात्मक, वाक्यविन्यास, अर्थगत तथा प्राग्मैटिक संरचनाएँ हैं। यह केवल हाथों की गतिविधियों का समूह नहीं है, बल्कि दृश्य-स्थानिक माध्यम पर आधारित एक जटिल भाषिक प्रणाली है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में भारतीय सांकेतिक भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर अधिक मान्यता प्राप्त हुई है, फिर भी इसके मूल्यांकन के क्षेत्र में अनेक व्यावहारिक एवं शैक्षणिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। अधिकांश उपलब्ध भाषा परीक्षण मौखिक भाषाओं के लिए विकसित किए गए हैं और वे प्ैस् की विशिष्ट भाषिक संरचना को पर्याप्त रूप से नहीं मापते। परिणामस्वरूप, अनेक बार शिक्षार्थियों की वास्तविक भाषाई क्षमता का सही आकलन नहीं हो पाता। इसलिए भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में भाषा-विज्ञान, बधिर संस्कृति, द्विभाषिक शिक्षा तथा आधुनिक मूल्यांकन सिद्धान्तों का समन्वित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

7.6.3.1 मानकीकृत मूल्यांकन उपकरणों का अभाव

भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन की सबसे बड़ी चुनौती उपयुक्त एवं व्यापक रूप से मान्य मानकीकृत परीक्षणों की सीमित उपलब्धता है। वर्तमान में अधिकांश मूल्यांकन निम्न आधारों पर किए जाते हैं-

1 शिक्षक द्वारा विकसित परीक्षण

2 अनौपचारिक अवलोकन

3 वीडियो आधारित प्रदर्शन

4 भाषा नमूना विश्लेषण

5 चेकलिस्ट

6 रूब्रिक

यद्यपि ये तकनीकें उपयोगी हैं, किन्तु राष्ट्रीय स्तर पर तुलनात्मक परिणाम प्रदान करने में इनकी सीमाएँ हैं।

प्रमुख प्रभाव संभावित समाधान

- विभिन्न संस्थानों में अलग-अलग मूल्यांकन मानदण्ड।
- परिणामों की तुलना में कठिनाई।
- शोध अध्ययनों में असंगति।
- प्म्च् निर्माण में विविधता।
- प्रगति मापन में कठिनाई।
- राष्ट्रीय स्तर पर प्ैस् मूल्यांकन उपकरणों का विकास।
- विभिन्न आयु समूहों के लिए मानक प्रतिमानों का निर्माण।
- मनोमितीय परीक्षण एवं सुनिश्चित करना।
- नियमित पुनरीक्षण एवं अद्यतन।

7.6.3.2 क्षेत्रीय सांकेतिक विविधताएँरू

भारतीय सांकेतिक भाषा में क्षेत्रीय सांकेतिक विविधताएँ एक महत्वपूर्ण वास्तविकता हैं। भारत एक विशाल एवं भाषाई रूप से अत्यंत विविध देश है, इसलिए विभिन्न राज्यों, समुदायों और संस्थानों में संकेतों के प्रयोग में कुछ भिन्नताएँ स्वाभाविक रूप से देखने को मिलती हैं। उदाहरण के लिए, किसी वस्तु, व्यक्ति या क्रिया के लिए प्रयुक्त संकेत एक क्षेत्र में अलग तथा दूसरे क्षेत्र में भिन्न हो सकता है। कई बार स्थानीय बधिर समुदायों द्वारा विकसित संकेत व्यापक रूप से प्रचलित हो जाते हैं, जबकि कुछ विद्यालयों में शिक्षण के उद्देश्य से अलग संकेतों का उपयोग किया जाता है। इस कारण विद्यालय आधारित संकेतों और सामुदायिक संकेतों में भी अंतर पाया जा सकता है। यदि मूल्यांकनकर्ता इन क्षेत्रीय विविधताओं से परिचित नहीं है, तो वह विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत सही और अर्थपूर्ण संकेत को भी त्रुटिपूर्ण मान सकता है, जिससे मूल्यांकन की वैधता और निष्पक्षता प्रभावित हो सकती है। अतः मूल्यांकन के दौरान क्षेत्रीय विविधताओं का सम्मान करना, संकेत के स्वरूप की अपेक्षा उसके अर्थ को प्राथमिकता देना, शिक्षार्थी के स्थानीय भाषा एवं सांकेतिक अनुभव का उचित दस्तावेजीकरण करना तथा आवश्यकता होने पर एक से अधिक स्वीकार्य संकेतों को मान्यता देना आवश्यक है। इससे मूल्यांकन अधिक समावेशी, सटीक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील बनता है।

7.6.3.3 प्ैस् व्याकरण का मूल्यांकनरू भारतीय सांकेतिक भाषा का व्याकरण मौखिक भाषाओं से भिन्न है। इसलिए मौखिक भाषा के व्याकरणिक मानदण्ड पर लागू नहीं किए जा सकते। मूल्यांकन के दौरान निम्न भाषिक घटकों का विश्लेषण आवश्यक है-

यदि मूल्यांकन केवल संकेतों की संख्या तक सीमित हो जाए, तो भाषा की वास्तविक संरचना का आकलन संभव नहीं होगा।

7.6.3.4 गैर-हस्तचालित संकेतकों (छवद-उंदनंस डंतामते) की उपेक्षारू भारतीय सांकेतिक भाषा में चेहरे के भाव, नेत्र सम्पर्क, भौंहों की स्थिति, सिर की गति तथा शरीर की मुद्रा व्याकरणिक एवं अर्थगत दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसे-प्रश्नवाचक वाक्य, निषेध, आश्चर्य, बलाघात, भावात्मक अभिव्यक्ति आदि इन सभी में छवद - उंदनंस डंतामते की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि मूल्यांकनकर्ता केवल हाथों की गतिविधियों पर ध्यान देता है, तो भाषा का अधूरा मूल्यांकन होगा।

7.6.3.5 प्रशिक्षित प्ैस् मूल्यांकनकर्ताओं की कमी

भारतीय संदर्भ में ऐसे विशेषज्ञों की संख्या अभी भी सीमित है जो भारतीय सांकेतिक भाषा में दक्ष हों, भाषा-विज्ञान का ज्ञान रखते हों, मनोमितीय मूल्यांकन सिद्धान्तों से परिचित हों, तथा विशेष शिक्षा एवं बधिर शिक्षा दोनों का अनुभव रखते हों। इस कमी के कारण कई बार परीक्षण का गलत प्रशासन, त्रुटिपूर्ण अंकन, तथा पक्षपातपूर्ण व्याख्या देखने को मिलती है। इसके लिए कुछ आवश्यक पहल जैसे विश्वविद्यालय स्तर पर विशेष प्रशिक्षण, सतत व्यावसायिक विकास (ब्च्क्) कार्यक्रम, प्ैस् विशेषज्ञों एवं विशेष शिक्षकों का संयुक्त प्रशिक्षण, एवं प्रमाणन आधारित प्रशिक्षण मॉडल किये जा सकते हैं।

7.6.3.6 द्विभाषिक मूल्यांकन की जटिलताएँ

श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के भाषा मूल्यांकन में द्विभाषिक मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण किन्तु जटिल प्रक्रिया है। अनेक शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा के साथ-साथ लिखित अथवा मौखिक भाषा का भी उपयोग करते हैं, जिससे उनकी

भाषायी क्षमताओं का सही आकलन चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ऐसे में मूल्यांकनकर्ता को यह समझना आवश्यक होता है कि शिक्षार्थी की प्रथम भाषा (स्1) कौन-सी है, विद्यालयी अधिगम किस भाषा के माध्यम से हो रहा है, तथा दोनों भाषाओं में उसकी दक्षता का स्तर क्या है। साथ ही यह भी जांचना आवश्यक है कि यदि कोई कठिनाई दिखाई दे रही है, तो वह दोनों भाषाओं में समान रूप से उपस्थित है या केवल किसी एक भाषा तक सीमित है। कई बार भाषा सीखने के स्वाभाविक अंतर को गलती से भाषा-विकार समझ लिया जाता है, जिससे अनुचित निष्कर्ष निकल सकते हैं। इसलिए द्विभाषिक मूल्यांकन का उद्देश्य दोनों भाषाओं की तुलना करके किसी एक को श्रेष्ठ सिद्ध करना नहीं, बल्कि यह समझना होना चाहिए कि दोनों भाषाएँ शिक्षार्थी के संप्रेषण, अधिगम और सामाजिक सहभागिता में किस प्रकार पूरक भूमिका निभाती हैं। इससे शिक्षार्थी की वास्तविक भाषायी क्षमता का अधिक सटीक एवं समग्र आकलन संभव हो पाता है।

7.6.3.7 वीडियो आधारित मूल्यांकन की चुनौतियाँ

प्ैस् मूल्यांकन में वीडियो रिकॉर्डिंग अत्यंत उपयोगी है, किन्तु इसके साथ कुछ व्यावहारिक समस्याएँ भी जुड़ी होती हैं।

चुनौतियाँ सुझाव

- कैमरे का गलत कोण।
- अपर्याप्त प्रकाश।
- हाथों का दृश्य क्षेत्र से बाहर जाना।
- कम वीडियो गुणवत्ता।

- फ्रेम दर (थ्तंउम त्ंजम) की कमी।
- गोपनीयता एवं सहमति से जुड़े मुद्दे।
- उच्च गुणवत्ता वाले कैमरे का उपयोग।
- सामने से रिकॉर्डिंग।
- पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था।
- पूरे शरीर एवं हाथों का स्पष्ट दृश्य।
- वीडियो संग्रहण हेतु सुरक्षित डिजिटल प्रणाली।

7.6.3.8 डिजिटल एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (।प्) से जुड़ी चुनौतियाँरू वर्तमान समय में डिजिटल मूल्यांकन तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ भाषा मूल्यांकन के क्षेत्र में तेजी से विकसित हो रही हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में भी ।प् आधारित वीडियो विश्लेषण, स्वचालित संकेत पहचान तथा डेटा-आधारित मूल्यांकन प्रणालियों का उपयोग बढ़ रहा है। तथापि, प्ैस् के संदर्भ में इन तकनीकों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। सबसे बड़ी समस्या पर्याप्त एवं विविधतापूर्ण प्रशिक्षण डेटा (ज्तंपदपदह क्ंजं) की कमी है, जिसके कारण ।प् मॉडल सभी संकेतों को सटीक रूप से पहचान नहीं पाते। भारत में क्षेत्रीय एवं सांस्कृतिक विविधताओं के कारण संकेतों के विभिन्न रूप प्रचलित हैं, जिन्हें पहचानना ।प् प्रणालियों के लिए कठिन होता है। इसके अतिरिक्त, चेहरे के भाव, नेत्र संपर्क तथा शरीर की मुद्राओं जैसे समुचित विश्लेषण अभी भी तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण है। वीडियो रिकॉर्डिंग एवं डिजिटल डेटा संग्रहण से संबंधित गोपनीयता और डेटा सुरक्षा के प्रश्न भी महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, एल्गोरिद्मिक पक्षपात के कारण कुछ समूहों या संकेत शैलियों के प्रति मूल्यांकन में असमानता

उत्पन्न हो सकती है। इसलिए वर्तमान परिस्थितियों में ।प् को मानव विशेषज्ञों के स्थान पर अंतिम निर्णयकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं सहायक बनाने वाले उपकरण के रूप में उपयोग करना अधिक उपयुक्त माना जाता है।

चिंतन गतिविधि

परिस्थिति विश्लेषण

एक 14 वर्षीय छात्र भारतीय सांकेतिक भाषा में धाराप्रवाह संवाद करता है, किन्तु लिखित हिन्दी में उसका प्रदर्शन औसत से कम है। विद्यालय ने केवल लिखित भाषा परीक्षण के आधार पर उसे ष्भाषाई रूप से कमजोरष् घोषित कर दिया है।

निम्न प्रश्नों पर विचार कीजिएकृ

1.क्या यह निष्कर्ष उचित है? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

2.इस छात्र के लिए द्विभाषिक भाषा मूल्यांकन की रूपरेखा तैयार कीजिए।

3.यदि आप मूल्यांकनकर्ता हों, तो कौन-कौन से प्ैस्-विशिष्ट भाषिक घटकों का मूल्यांकन करेंगे?

4.इस स्थिति में निष्पक्ष एवं अधिकार-आधारित मूल्यांकन के कौन-से सिद्धान्त लागू होंगे?

7.6.4 द्विभाषिक (भारतीय सांकेतिक भाषादृमौखिकध्लिखित भाषा) मूल्यांकन

की चुनौतियाँ एवं समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्यरू विगत दो दशकों में बधिर शिक्षा के क्षेत्र में यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि अनेक श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा तथा लिखित अथवा मौखिक भाषा

दोनों का ज्ञान आवश्यक है। भारतीय सांकेतिक भाषा उन्हें स्वाभाविक एवं सुलभ संप्रेषण का माध्यम प्रदान करती है, जबकि लिखित एवं मौखिक भाषाएँ औपचारिक शिक्षा, उच्च अध्ययन, रोजगार तथा व्यापक सामाजिक सहभागिता के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसलिए आधुनिक भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य किसी एक भाषा को दूसरी से श्रेष्ठ सिद्ध करना नहीं, बल्कि दोनों भाषाओं में शिक्षार्थी की दक्षताओं का संतुलित एवं समग्र आकलन करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्च् 2020), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (छब्थ्-थ्ै 2022 एवं छब्थ्ैम् 2023) तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (त्च्ूक् ।बज, 2016) सभी यह संकेत देते हैं कि मूल्यांकन शिक्षार्थी की भाषाई विविधता, व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं समान अवसर के सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए।

7.6.4.1 द्विभाषिक मूल्यांकन की अवधारणा

द्विभाषिक भाषा मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी की भारतीय सांकेतिक भाषा तथा लिखित अथवा मौखिक भाषा दोनों का स्वतंत्र एवं समेकित रूप से मूल्यांकन किया जाता है। यह दृष्टिकोण इस तथ्य को स्वीकार करता है कि दोनों भाषाओं की संरचना, अधिगम प्रक्रिया, उपयोगिता तथा सामाजिक-शैक्षणिक भूमिका एक-दूसरे से भिन्न हो सकती है। भारतीय सांकेतिक भाषा एक दृश्य-हावभाव आधारित प्राकृतिक भाषा है, जबकि लिखित अथवा मौखिक भाषा श्रव्य एवं लिखित प्रतीकों पर आधारित होती है। इसलिए किसी एक भाषा में उच्च दक्षता या सीमित दक्षता का अर्थ दूसरी भाषा की क्षमता का प्रत्यक्ष संकेत नहीं माना जा सकता। द्विभाषिक मूल्यांकन का उद्देश्य दोनों भाषाओं की तुलना करना नहीं, बल्कि यह समझना है कि शिक्षार्थी अपनी संप्रेषणीय, शैक्षणिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन दोनों भाषाओं का किस प्रकार पूरक (ब्वउचसमउमदजंतल) रूप से उपयोग करता है। इस प्रकार का मूल्यांकन

शिक्षार्थी की वास्तविक भाषायी क्षमता, द्विभाषिक विकास तथा शैक्षिक आवश्यकताओं को अधिक सटीक रूप से पहचानने में सहायता प्रदान करता है।

7.6.4.2 द्विभाषिक मूल्यांकन की प्रमुख चुनौतियाँ

1.प्रथम भाषा (स्1) एवं द्वितीय भाषा (स्2) की पहचानरू सभी श्रवण बाधित शिक्षार्थियों की भाषा-पृष्ठभूमि समान नहीं होती। कुछ की प्रथम भाषा प्ैस्, कुछ की मौखिक भाषा होती है, जबकि कुछ द्विभाषिक वातावरण में विकसित होते हैं। यदि स्1 की सही पहचान न की जाए, तो मूल्यांकन के निष्कर्ष भ्रामक हो सकते हैं।

2.भाषा-अंतर एवं भाषा-विकार में भ्रमरू द्विभाषिक शिक्षार्थियों में दूसरी भाषा की सीमित दक्षता को कभी-कभी भाषा-विकार समझ लिया जाता है। उदाहरणतः कोई शिक्षार्थी प्ैस् में दक्ष लेकिन लिखित हिन्दी में कमजोर हो सकता है। यह आवश्यक नहीं कि उसे भाषा-विकार होय यह भाषा-अनुभव या अधिगम का अंतर भी हो सकता है।

3.उपयुक्त मूल्यांकन उपकरणों की कमीरू वर्तमान में ऐसे समेकित उपकरण सीमित हैं जो प्ैस्, लिखित एवं मौखिक भाषा तथा उनके पारस्परिक संबंधों का एक साथ मूल्यांकन कर सकें। इसलिए मूल्यांकनकर्ता को विभिन्न उपकरणों और तकनीकों का संयोजन करना पड़ता है।

4.परिणामों की व्याख्या की जटिलतारू यदि कोई शिक्षार्थी प्ैस् में उत्कृष्ट, लिखित भाषा में मध्यम तथा मौखिक भाषा में सीमित प्रदर्शन करता है, तो उसकी भाषाई प्रोफाइल की व्याख्या सावधानीपूर्वक करनी होती है। केवल औसत अंक के आधार पर निष्कर्ष निकालना पर्याप्त नहीं होता।

7.6.5.3 समकालीन भारतीय नीतिगत परिप्रेक्ष्य

1.राष्ट्रीय शिक्षा नीति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समावेशी, बहुभाषिक एवं शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा पर बल देती है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए यह दक्षता-आधारित, सतत एवं विकासात्मक मूल्यांकन, भारतीय सांकेतिक भाषा के उपयोग तथा समान अवसरों को प्रोत्साहित करती है। इसके अनुसार भाषा मूल्यांकन केवल परीक्षा न होकर सीखने और विकास को सहयोग देने वाली प्रक्रिया होना चाहिए।

2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखादृआधारभूत अवस्था प्रारम्भिक भाषा अनुभवों के महत्व को रेखांकित करती है। इसके अनुसार भाषा मूल्यांकन खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित, अवलोकन-आधारित एवं विकासात्मक होना चाहिए। श्रवण बाधित बच्चों के लिए यह उनकी संप्रेषण क्षमता के स्वाभाविक विकास को समझने का माध्यम बनता है।

3. विशेष शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (छब्थ्ैम् 2023) व्यक्तिगत आवश्यकताओं, सार्वभौमिक अधिगम अभिकल्प (न्क्स्), बहु-माध्यमीय संप्रेषण तथा समावेशी मूल्यांकन पर बल देती है। इसके अनुसार भाषा मूल्यांकन लचीला, सुलभ, बाधारहित एवं शिक्षार्थी की क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए।

4. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 दिव्यांग व्यक्तियों को समान अवसर, गरिमा एवं भेदभाव-रहित सेवाओं का अधिकार प्रदान करता है। भाषा मूल्यांकन के संदर्भ में यह उपयुक्त संप्रेषण माध्यम, आवश्यक समायोजन, सुलभ सामग्री, निष्पक्ष अवसर तथा अधिकार-आधारित निर्णय सुनिश्चित करने पर बल देता है।

7.6.4.4 समावेशी भाषा मूल्यांकन के लिए व्यावहारिक दिशानिर्देश

समावेशी भाषा मूल्यांकन को प्रभावी, निष्पक्ष तथा शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने के लिए इसे तीन चरणोंकृपूर्व, दौरान एवं पश्चातकृमें व्यवस्थित रूप से विभाजित करना आवश्यक है। यह विशेष रूप से द्विभाषिक शिक्षार्थियों, जैसे भारतीय सांकेतिक भाषा तथा लिखितध्मौखिक भाषा का उपयोग करने वाले श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1.पूर्व मूल्यांकन प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षार्थी की विस्तृत भाषा प्रोफाइल तैयार की जानी चाहिए। इसमें उसकी प्रथम भाषा (स्1), द्वितीय भाषा (स्2), भाषा-अनुभव तथा संप्रेषण की प्राथमिक विधि का निर्धारण शामिल होता है। इसके साथ ही परिवार, शिक्षक तथा अन्य संबंधित व्यक्तियों से जानकारी एकत्र कर शिक्षार्थी की भाषाई पृष्ठभूमि को गहराई से समझना आवश्यक है। इस चरण में मूल्यांकन के उद्देश्यों, उपयुक्त उपकरणों तथा सहायक संसाधनों की भी योजना बनाई जाती है।

2.दौरान मूल्यांकन के समय भारतीय सांकेतिक भाषा तथा लिखित ध्मौखिक भाषा दोनों का पृथक-पृथक मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक भाषा में शिक्षार्थी की वास्तविक दक्षता का आकलन हो सके। इसके लिए अवलोकन, साक्षात्कार, प्रदर्शन-आधारित कार्य, भाषा नमूना विश्लेषण तथा मानकीकृत अथवा अनौपचारिक परीक्षणों जैसी बहु-पद्धति तकनीकों का उपयोग किया जाता है। दृश्य सामग्री, चित्र, वीडियो, सहायक तकनीक तथा अन्य संप्रेषण साधनों का प्रयोग मूल्यांकन को अधिक विश्वसनीय बनाता है। साथ ही शिक्षार्थी को पर्याप्त समय देना तथा आवश्यकता अनुसार मूल्यांकन को एकाधिक सत्रों में आयोजित करना भी आवश्यक है।

3.पश्चात मूल्यांकन पूर्ण होने के पश्चात दोनों भाषाओं में शिक्षार्थी की शक्तियों, सीमाओं तथा विकासात्मक आवश्यकताओं का पृथक विश्लेषण किया जाना

चाहिए। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर व्यक्तिगत शिक्षण योजना (प्म्च्) में द्विभाषिक एवं कार्यात्मक भाषा लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। साथ ही परिवार को भाषा-अनुकूल एवं समृद्ध संप्रेषण वातावरण विकसित करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। नियमित अंतराल पर प्रगति की समीक्षा कर आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप योजनाओं में संशोधन किया जाता है। इस प्रकार पूर्व, दौरान एवं पश्चात चरणों में किया गया समावेशी भाषा मूल्यांकन शिक्षार्थी की वास्तविक भाषा क्षमता को समझने तथा उसके समग्र शैक्षिक विकास को प्रभावी रूप से प्रोत्साहित करने में सहायक होता है।

7.7 सारांश

इस इकाई में विभिन्न आयु समूहों के श्रवण बाधित व्यक्तियों में मौखिक भाषा तथा भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन की अवधारणा, प्रक्रिया, उपकरण, चुनौतियों तथा समकालीन दृष्टिकोणों का विस्तृत अध्ययन किया गया। यह स्पष्ट किया गया कि भाषा मूल्यांकन केवल भाषाई त्रुटियों की पहचान करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि शिक्षार्थी की संप्रेषण क्षमता, भाषा-अधिगम, शैक्षणिक आवश्यकताओं तथा सामाजिक सहभागिता को समझने का एक वैज्ञानिक एवं विकासात्मक माध्यम है। इकाई के प्रारम्भ में यह स्पष्ट किया गया कि श्रवण बाधित व्यक्तियों का भाषा विकास एकरूप नहीं होता, बल्कि यह श्रवण हानि की प्रकृति एवं तीव्रता, प्रारम्भिक भाषा-अनुभव, पारिवारिक संप्रेषण वातावरण, शैक्षणिक अवसर, सहायक प्रौद्योगिकी तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। इसलिए भाषा मूल्यांकन सदैव शिक्षार्थी की व्यक्तिगत पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। आयु-आधारित मूल्यांकन की चर्चा में जन्म से लेकर वयस्क अवस्था तक भाषा विकास के विभिन्न चरणों का

विश्लेषण किया गया। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में भाषा सम्पर्क, विद्यालयी स्तर पर शैक्षणिक भाषा, किशोरावस्था में जटिल भाषिक संरचनाएँ तथा उच्च शिक्षा एवं रोजगार के संदर्भ में कार्यात्मक संप्रेषण के महत्व को रेखांकित किया गया। यह भी स्पष्ट किया गया कि भाषा मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है, जो जीवन के विभिन्न चरणों में बदलती आवश्यकताओं के अनुसार संशोधित होती रहती है। इकाई में मौखिक भाषा तथा भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन के प्रमुख आयामोंकृग्रहणशील भाषा, अभिव्यक्तात्मक भाषा, शब्दावली, व्याकरण, प्राग्मैटिक कौशल, कथन क्षमता, कार्यात्मक संप्रेषण तथा द्विभाषिक दक्षताकृका विस्तृत वर्णन किया गया। यह भी स्पष्ट किया गया कि भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल्यांकन केवल संकेतों की संख्या पर आधारित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसकी व्याकरणिक संरचना, स्थानिक व्याकरण, वर्गीकारक, गैर-हस्तचालित संकेतकों तथा सामाजिक प्रयोग का भी समुचित मूल्यांकन आवश्यक है। मूल्यांकन की चरणबद्ध प्रक्रिया में रेफरल, पृष्ठभूमि जानकारी, भाषा प्रोफाइल, मूल्यांकन योजना, औपचारिक एवं अनौपचारिक मूल्यांकन, प्राकृतिक अवलोकन, परिणामों की व्याख्या, प्रतिपुष्टि, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना तथा अनुवर्ती मूल्यांकन को एक सतत एवं चक्रीय प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस प्रक्रिया में बहुविषयक सहयोग तथा परिवार की सक्रिय सहभागिता के महत्व पर भी बल दिया गया।

इकाई में भाषा मूल्यांकन के विभिन्न उपकरणों एवं तकनीकों जैसे मानकीकृत परीक्षण, भाषा नमूना विश्लेषण, अवलोकन, पोर्टफोलियो, पाठ्यचर्या-आधारित मूल्यांकन, गतिशील मूल्यांकन, रूब्रिक तथा डिजिटल एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (।प्) आधारित मूल्यांकन की उपयोगिता एवं सीमाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया। यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि किसी एक उपकरण के आधार पर भाषा क्षमता का निर्णय करना उचित नहीं है, बल्कि बहु-पद्धति एवं बहु-स्रोत

मूल्यांकन अधिक विश्वसनीय एवं वैध परिणाम प्रदान करता है। इकाई में यह भी स्पष्ट किया गया कि किसी भी भाषा मूल्यांकन की गुणवत्ता उसकी विश्वसनीयता, वैधता, निष्पक्षता, भाषाई एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा नैतिकता पर निर्भर करती है। विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में प्रशिक्षित मूल्यांकनकर्ताओं, उपयुक्त भाषा माध्यम, सांस्कृतिक विविधता के सम्मान तथा गोपनीयता एवं सूचित सहमति जैसे नैतिक सिद्धान्तों का पालन अत्यंत आवश्यक है।

मौखिक भाषा मूल्यांकन की चुनौतियों में श्रवण अनुभव की विविधता, श्रवण अवशेष, वाक्-बोध एवं भाषा-बोध का अंतर, उच्चारण पर अत्यधिक बल, ओष्ठ-पठन, बहुभाषिकता, मानकीकृत परीक्षणों की सीमाएँ तथा मूल्यांकनकर्ता की दक्षता जैसे प्रमुख मुद्दों का विश्लेषण किया गया। इसी प्रकार भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन की चुनौतियों में मानकीकृत उपकरणों का अभाव, क्षेत्रीय विविधताएँ, व्याकरणिक संरचना का मूल्यांकन, गैर-हस्तचालित संकेतकों की उपेक्षा, प्रशिक्षित विशेषज्ञों की कमी, द्विभाषिक मूल्यांकन की जटिलताएँ तथा डिजिटल एवं ।प् आधारित प्रणालियों की वर्तमान सीमाओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

इकाई में द्विभाषिक (प्ैस्दृमौखिकध्लिखित भाषा) मूल्यांकन को आधुनिक बधिर शिक्षा का आधार माना गया। यह स्पष्ट किया गया कि भारतीय सांकेतिक भाषा तथा लिखित अथवा मौखिक भाषा दोनों की अपनी-अपनी भूमिका है और मूल्यांकन का उद्देश्य इन दोनों भाषाओं की तुलना करना नहीं, बल्कि उनकी पूरक भूमिका को समझना है। द्विभाषिक मूल्यांकन के माध्यम से शिक्षार्थी की वास्तविक भाषाई क्षमता, शैक्षणिक आवश्यकताओं तथा हस्तक्षेप योजना को अधिक प्रभावी ढंग से विकसित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखादृआधारभूत अवस्था, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखादृविशेष शिक्षा तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम के संदर्भ में यह प्रतिपादित किया गया कि भाषा मूल्यांकन को समावेशी, सुलभ, दक्षता-आधारित, विकासात्मक तथा अधिकार-आधारित बनाया जाना चाहिए। मूल्यांकन को केवल परीक्षा अथवा प्रमाणन का माध्यम न मानकर सीखने में सहायता, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना निर्माण तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार का आधार माना जाना चाहिए। अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया कि श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए प्रभावी भाषा मूल्यांकन वही है जो वैज्ञानिक, बहुभाषिक, बहु-स्रोत आधारित, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील, तकनीकी रूप से अद्यतन तथा शिक्षार्थी-केंद्रित हो। ऐसा मूल्यांकन न केवल भाषा दक्षता का सही चित्र प्रस्तुत करता है, बल्कि समावेशी शिक्षा, आत्मनिर्भरता, उच्च शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक सहभागिता की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

7.8 मुख्य शब्द

अंग्रेज़ी शब्द हिन्दी शब्द संक्षिप्त अर्थ

।ेेमेेउमदज मूल्यांकन शिक्षार्थी की क्षमता, उपलब्धि एवं आवश्यकताओं का व्यवस्थित आकलन

स्ंदहनंहम ।ेेमेेउमदज भाषा मूल्यांकन भाषा के ग्रहणशील, अभिव्यक्तात्मक एवं कार्यात्मक पक्षों का मूल्यांकन

व्तंस स्ंदहनंहम मौखिक भाषा श्रवण एवं वाक् के माध्यम से प्रयुक्त भाषा

प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम ;प्ैस्द्ध भारतीय सांकेतिक भाषा भारत में प्रयुक्त प्राकृतिक दृश्य-स्थानिक सांकेतिक भाषा

त्मबमचजपअम स्ंदहनंहम ग्रहणशील भाषा भाषा को समझने एवं उसका अर्थ ग्रहण करने की क्षमता

म्गचतमेेपअम स्ंदहनंहम अभिव्यक्तात्मक भाषा विचारों एवं भावनाओं को भाषा के माध्यम से व्यक्त करने की क्षमता

टवबंइनसंतल शब्दावली किसी व्यक्ति द्वारा ज्ञात एवं प्रयुक्त शब्दों अथवा संकेतों का भंडार

डवतचीवसवहल रूपविज्ञान शब्दों की आंतरिक संरचना एवं निर्माण का अध्ययन

ैलदजंग वाक्यविन्यास शब्दों को व्यवस्थित कर अर्थपूर्ण वाक्य बनाने के नियम

ैमउंदजपबे अर्थविज्ञान शब्दों एवं वाक्यों के अर्थ का अध्ययन

च्तंहउंजपबे व्यवहारिक भाषा प्रयोग सामाजिक परिस्थितियों में भाषा के उपयुक्त उपयोग की क्षमता

छंततंजपअम ैंापससे कथन कौशल घटनाओं या अनुभवों को क्रमबद्ध एवं अर्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता

थ्नदबजपवदंस ब्वउउनदपबंजपवद कार्यात्मक संप्रेषण दैनिक जीवन की आवश्यकताओं के लिए भाषा का प्रभावी उपयोग

ठपसपदहनंस ।ेेमेेउमदज द्विभाषिक मूल्यांकन दो भाषाओं में भाषाई दक्षताओं का मूल्यांकन

स्ंदहनंहम ैव्ंउचसम भाषा नमूना स्वाभाविक परिस्थिति में प्रयुक्त भाषा का संकलन

स्ंदहनंहम ैव्ंउचसम ।दंसलेपे भाषा नमूना विश्लेषण भाषा नमूने का संरचनात्मक एवं कार्यात्मक विश्लेषण

क्लदंउपब ।वेवेमेवेउमदज गतिशील मूल्यांकन सहायता प्रदान कर सीखने की क्षमता का मूल्यांकन

ब्नततपबनसनउ.ठंवेमक ।वेवेमेवेउमदज पाठ्यचर्या-आधारित मूल्यांकन पाठ्यक्रम आधारित सीखने का मूल्यांकन

च्वतजविसपव ।वेवेमेवेउमदज पोर्टफोलियो मूल्यांकन समय के साथ शिक्षार्थी के कार्यों एवं प्रगति का संग्रह एवं मूल्यांकन

व्इेमतअंजपवद अवलोकन प्राकृतिक परिस्थितियों में व्यवहार एवं भाषा का निरीक्षण

ब्ीमबासपेज जाँच सूची पूर्वनिर्धारित संकेतकों पर आधारित मूल्यांकन सूची

त्ंजपदह ैबंसम निर्धारण मापनी विभिन्न स्तरों पर प्रदर्शन का अंकन

ल्इतपब रूब्रिक पूर्व निर्धारित मानदण्डों के आधार पर प्रदर्शन मूल्यांकन का उपकरण

त्मसपंइपसपजल विश्वसनीयता परिणामों की स्थिरता एवं पुनरावृत्ति की क्षमता

टंसपकपजल वैधता परीक्षण द्वारा सही कौशल का मापन

थ्ंपतदमेव निष्पक्षता बिना पक्षपात के समान अवसर प्रदान करने वाला मूल्यांकन

।नजीमदजपब । प्रामाणिक मूल्यांकन वास्तविक जीवन की परिस्थितियों पर आधारित मूल्यांकन

थ्वतउंजपअम ।ेेमेेउमदजनिर्माणात्मक मूल्यांकन सीखने की प्रक्रिया के दौरान किया जाने वाला मूल्यांकन

ैनउउंजपअम ।ेेमेेउमदज संकलनात्मक मूल्यांकन शिक्षण के अंत में उपलब्धि का मूल्यांकन

ब्तपजमतपवद.तममितमदबमक ।ेेमेेउमदज मानदण्ड-संदर्भित मूल्यांकन पूर्व निर्धारित मानदण्डों के आधार पर मूल्यांकन

छवतउ.तममितमदबमक ।ेेमेेउमदज मानक.संदर्भित मूल्यांकन अन्य व्यक्तियों के प्रदर्शन की तुलना पर आधारित मूल्यांकन

ब्वउउनदपबंजपवद च्तवपिसम संप्रेषण प्रोफ़ाइल शिक्षार्थी की संप्रेषण विशेषताओं का समग्र विवरण

स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवद भाषाई अभावप्रारम्भिक अवस्था में पर्याप्त भाषा सम्पर्क का अभाव

म्ंतसल प्दजमतअमदजपवद प्रारम्भिक हस्तक्षेप प्रारम्भिक आयु में प्रदान की जाने वाली विशेष सेवाएँ

प्दकपअपकनंसप्रमक म्कनबंजपवद च्तवहतंउउम ;प्म्च्द्ध व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाशिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यक्तिगत शिक्षण योजना

डनसजपकपेबपचसपदंतल ज्मंउ बहुविषयक दल विभिन्न विशेषज्ञों का संयुक्त समूह

क्मं िब्नसजनतम बधिर संस्कृति बधिर समुदाय की सांस्कृतिक पहचान एवं जीवन शैली

भ्ंदकेींचम हस्त.आकृति संकेत बनाते समय हाथ का आकार

स्वबंजपवद संकेत स्थान शरीर अथवा स्थान जहाँ संकेत बनाया जाता है

डवअमउमदज गति संकेत की दिशा एवं गति

व्तपमदजंजपवद अभिमुखता हथेली एवं हाथ की दिशा

छवद.उंदनंस डंतामते गैर.हस्तचालित संकेतक चेहरे के भावए सिरए आँखों एवं शरीर की गतिविधियाँ

ैचंजपंस ळतंउउंत स्थानिक व्याकरण स्थान एवं दिशा पर आधारित व्याकरणिक संरचना

ब्संेेपपिमत वर्गीकारक वस्तुओं एवं क्रियाओं को दृश्य रूप से प्रदर्शित करने वाले विशेष संकेत

त्वसम ैीपजि भूमिका परिवर्तन विभिन्न पात्रों का अभिनय करते हुए संकेत करना

।ेेपेजपअम ज्मबीदवसवहल सहायक प्रौद्योगिकी संप्रेषण एवं अधिगम में सहायता देने वाली तकनीक

भ्मंतपदह ।पक श्रवण यंत्र ध्वनि को प्रवर्धित करने वाला उपकरण

ब्वबीसमंत प्उचसंदज कॉक्लियर इम्प्लांट गंभीर श्रवण हानि के लिए प्रत्यारोपित इलेक्ट्रॉनिक उपकरण

ैचममबी त्मंकपदह ओष्ठ.पठन होंठों एवं चेहरे की गतिविधियों को देखकर भाषा समझना

न्दपअमतेंस क्मेपहद वित स्मंतदपदह सार्वभौमिक अधिगम अभिकल्प सभी शिक्षार्थियों के लिए लचीला शिक्षण एवं मूल्यांकन ढाँचा

त्मंेवदंइसम ।बबवउउवकंजपवद युक्तिसंगत समायोजनदिव्यांग शिक्षार्थियों हेतु आवश्यक उपयुक्त संशोधन एवं सुविधाएँ

।बबमेेपइपसपजल सुलभता सेवाओं एवं संसाधनों तक समान पहुँच

ब्वउचमजमदबल.ठंेमक ।ेेमेेउमदज दक्षता.आधारित मूल्यांकन ज्ञान के साथ कौशल एवं अनुप्रयोग का मूल्यांकन

ब्वदजपदनवने ।ेेमेेउमदज सतत मूल्यांकन नियमित एवं निरंतर होने वाला मूल्यांकन

म्अपकमदबम.ठंेमक च्तंबजपबम साक्ष्य.आधारित व्यवहार शोध एवं प्रमाणों पर आधारित निर्णय प्रक्रिया

7.9 यूनिट के अंत में होने वाली गतिविधियाँ

1-शब्दावली का विस्तार करें

शब्दावली को उनके सही विस्तारित रूप के साथ विस्तारित करें-

शब्दावली विस्तारित रूप

छम्च्

छब्थ्ैम्

न्क्स्

।ैभ्।

2- गतिविधियाँ रू

(क) समूह चर्चा (ळतवनच क्पेबनेेपवद)रू

समावेशी शिक्षा में भाषा मूल्यांकन की वर्तमान चुनौतियाँ एवं समाधान क्या हैं?

(ख) वीडियो विश्लेषण (टपकमव ।दंसलेपे)रू

5द्10 मिनट का प्ैस् वीडियो देखकर भ्ंदकेींचम, डवअमउमदजए स्वबंजपवद, व्तपमदजंजपवद एवं छवद - उंदनंस डंतामते का विश्लेषण कीजिए।

(ग) मूल्यांकन उपकरण निर्माण

3-8 वर्ष के श्रवण बाधित बच्चों के लिए द्विभाषिक (प्ैस्दृहिन्दी) भाषा मूल्यांकन चेकलिस्ट विकसित कीजिए।

7.10 यूनिट के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न ध् अपनी प्रगति की जाँच करेरू

1. बहु विकल्पीय प्रश्न (डब्फे)रू

ं मौखिकता (व्तंसपेउ) के जनक किसे माना जाता है?

क त्वल भ्वसबवउइ ग ज्ीवउंे ळंससंनकमज

ख ैंउनमस भ्मपदपबाम घ स्ंनतमदज ब्समतब

इ सम्पूर्ण सम्प्रेषण को किसने लोकप्रिय बनायाघ्

क त्वल भ्वसबवउइ ग ठमसस

ख ैं उनमस भ्मपदपबाम घ ैजवावम

ब भाषा मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य है

क त्रुटि खोज ग दंड

ख प्रतियोगिता घ क्षमता एवं आवश्यकताओं की पहचान

क प्ैस् के मूल्यांकन में वीडियो-आधारित परीक्षण का प्रमुख लाभ क्या है?

क हिन्दी ग अंग्रेजी

ख सांकेतिक भाषा घ मौखिक भाषा

म प्ैस् मूल्यांकन में क्षेत्रीय विविधता किस प्रकार की चुनौती है?

क गणितीय ग भाषाई

ख आर्थिकघ चिकित्सीय

िनिम्न में से कौन अभिव्यक्तात्मक भाषा का उदाहरण है?

क बोलनाग पढ़ना

ख सुनना घ समझना

ह भाषा नमूना विश्लेषण मुख्यतः किसका मूल्यांकन करता है?

क प्फ ग स्वाभाविक भाषा प्रयोग

ख दृष्टि घ व्यक्तित्व

2 रिक्त स्थान की पूर्ति ;थ्पसस पद जीम ठसंदोद्धरू

1 ग्रहणशील भाषा का संबंध भाषा ऋऋऋऋऋऋऋऋ से है। (समझने)

2 चेहरे के भाव प्ैस् में ऋऋऋऋऋऋऋऋ डंतामते कहलाते हैं। (छवद-उंदनंस)

3 छम्च् ऋऋऋऋऋऋऋऋ में लागू की गई। (2020)

4 त्व्ूक् ।बज ऋऋऋऋऋऋऋऋ में पारित हुआ। (2016)

5 भ्ंदकेींचम प्ैस् का एक ऋऋऋऋऋऋऋऋ घटक है। (भाषिक)

6 द्विभाषिक मूल्यांकन में कम से कम ऋऋऋऋऋऋ भाषाओं का मूल्यांकन किया जाता है। (दो)

7 कार्यात्मक संप्रेषण का संबंध ऋऋऋऋऋऋऋऋ जीवन से है। (दैनिक)

8 भाषा मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य प्रभावी ऋऋऋऋऋऋऋऋ योजना बनाना है। (हस्तक्षेप)

3ण् जोड़ी मिलान ;डंजबी जीम थ्वससवूपदहद्धरू

। व्तंसपेउ क त्वल भ्वसबवउइ

ठ ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद ख क्मं िब्नसजनतम

ब् म्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ ग ैं◌ंउनमस भ्मपदपबाम

क् ठपदृठप डवकमस घ स्1 एव स्2 का प्रयोग

उत्तर ।. ग,ए ठ. कए ब्. घ क्.ख

1. व्तंसपेउ में सांकेतिक भाषा को मुख्य माध्यम माना जाता है। (असत्य)

2. ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद एक शैक्षिक दर्शन है। (सत्य)

3. ठपदृठप मॉडल क्मं िब्नसजनतम को महत्व देता है। (सत्य)

4. म्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ में केवल एक भाषा का उपयोग किया जाता है। (असत्य)

5. सांकेतिक भाषा एक प्राकृतिक भाषा है। (सत्य)

6. भाषा नमूना विश्लेषण स्वाभाविक भाषा का अध्ययन करता है। (सत्य)

7. ब्वबीसमंत प्उचसंदज एक श्रवण सहायक तकनीक है। (सत्य)

8. पोर्टफोलियो मूल्यांकन केवल अंतिम परीक्षा पर आधारित होता है। (असत्य)

9. सांकेतिक भाषा में ैचंजपंस ळतंउउंत का कोई महत्व नहीं है। (असत्य)

10. द्विभाषिक मूल्यांकन केवल एक भाषा पर आधारित होता है। (असत्य)

11. छम्च् 2020 समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। (सत्य)

12. त्च्ूक् ।बज 2016 अधिकार-आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। (सत्य)

13. सांकेतिक भाषा में भ्ंदकींचम एक महत्वपूर्ण घटक है। (सत्य)

14. भाषा मूल्यांकन में परिवार की कोई भूमिका नहीं होती। (असत्य)

15. रचनात्मक मूल्यांकन सीखने के दौरान किया जाता है। (सत्य)

अ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (स्वदह ।दूमत फनमेजपवदे)

1ण् विभिन्न आयु समूहों के श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा विकास एवं भाषा मूल्यांकन की आवश्यकताओं का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

2ण् मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) मूल्यांकन के प्रमुख आयामों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।

3ण् ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक भाषा मूल्यांकन की प्रक्रिया, उपकरण एवं शैक्षिक उपयोगिता का विस्तार से वर्णन कीजिए।

4ण् भाषा मूल्यांकन में मानकीकृत एवं शिक्षक-निर्मित उपकरणों की उपयोगिता एवं सीमाओं की विवेचना कीजिए।

5ण् भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन में भाषावैज्ञानिक घटकों एवं गैर-हस्तचालित संकेतकों के महत्व का विश्लेषण कीजिए।

6ण् द्विभाषिक (प्ैस्दृमौखिकध्लिखित भाषा) मूल्यांकन की अवधारणा, चुनौतियों एवं शैक्षिक निहितार्थों की व्याख्या कीजिए।

7ण् भाषा मूल्यांकन में पोर्टफोलियो, गतिशील मूल्यांकन एवं भाषा नमूना विश्लेषण की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

8ण् छम्च् 2020ए छब्थ्-थ्ै 2022 एवं छब्थ्ैम् 2023 के आलोक में समावेशी भाषा मूल्यांकन की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

1ण् भाषा मूल्यांकन क्या है?

2ण् ग्रहणशील भाषा से क्या अभिप्राय है?

3ण् अभिव्यक्तात्मक भाषा क्या है?

4ण् भारतीय सांकेतिक भाषा के प्रमुख घटक कौन-कौन से हैं?

5ण् भाषा नमूना विश्लेषण क्या है?

6ण् गतिशील मूल्यांकन की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

7ण् पोर्टफोलियो का महत्व लिखिए।

8ण् नॉन मैन्युअल मारकर क्या हैं?

9ण् क्रियात्मक सम्प्रेषण का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

10ण् द्विभाषिक मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों है?

उत्तरमालारू

1. बहु विकल्पीय प्रश्नरू

ं. उत्तररू (ख) ैंउनमस भ्मपदपबाम

इ. उत्तररू (क) त्वल भ्वसबवउइ

ब. उत्तररू (घ) क्षमता एवं आवश्यकताओं की पहचान

क. उत्तररू (ख) सांकेतिक भाषा

म. उत्तररू (ग) भाषाई

.ि उत्तररू (क) बोलना

ह. उत्तररू (ग) स्वाभाविक भाषा प्रयोग

2. रिक्त स्थान की पूर्तिरू

ं. उत्तररू समझने

इ. उत्तररू छवद - उंदनंस

ब. उत्तररू 2020

म. उत्तररू भाषिक

.ि उत्तररू दो

ह. उत्तररू दैनिक

ी. उत्तररू हस्तक्षेप

7ण्11 अधिन्यास ध् क्रियाकलापरू

1ण् किसी विद्यालय में प्रयुक्त भाषा मूल्यांकन प्रणाली का अध्ययन कर उसकी शक्तियाँ एवं सीमाएँ लिखिए।

2ण् 8दृ12 वर्ष के श्रवण बाधित बच्चों के लिए द्विभाषिक (प्ैस्दृहिन्दी) भाषा मूल्यांकन चेकलिस्ट विकसित कीजिए।

3ण् किसी काल्पनिक श्रवण बाधित शिक्षार्थी के लिए भाषा मूल्यांकन आधारित प्म्च् तैयार कीजिए।

7ण्12 चर्चा के बिंदु और स्पष्टीकर.ारू

(क) क्या भारतीय सांकेतिक भाषा प्रत्येक श्रवण बाधित शिक्षार्थी के लिए आवश्यक है?

……
……
……

(ख) क्या मौखिक भाषा मूल्यांकन अकेले पर्याप्त है?

……
……
……

(ग) द्विभाषिक शिक्षा श्रवण बाधित विद्यार्थियों को किस प्रकार लाभ पहुँचाती है?

……
……
……

7ण्13 सुझा, Û, पठन और संदर्भरू

1ण् भारतीय पुनर्वास परिषद (त्ब्प्). विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण सामग्री एवं दिशा-निर्देश।

2ण् प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ब्मदजतम ;प्ैस्त्ज्ब्द्धण् प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम क्पबजपवदंतल ;स्ंजमेज म्कपजपवदद्धण्

3ण् प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ब्मदजतम ;प्ैस्त्ज्ब्द्धण् ज्मंबीपदह स्मंतदपदह डंजमतपंसे पद प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहमण्

4ण् डपदपेजतल व ि्म्कनबंजपवदण् छंजपवदंस म्कनबंजपवद च्वसपबल ;छम्च्द्धए 2020ण्

5ण् छंजपवदंस ब्वनदबपस व ि्म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ;छब्म्त्ज्द्धण् छंजपवदंस ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित थ्वनदकंजपवदंस ैजंहम ;छब्थ्.थ्ैद्धए 2022ण्

6ण् छंजपवदंस ब्वनदबपस व ि्म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ;छब्म्त्ज्द्धण् छंजपवदंस ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित ैचमबपंस म्कनबंजपवद ;छब्थ्ैम्द्धए 2023ण्

7ण् ळवअमतदउमदज व ि्प्दकपंण् त्पहीजे व ि्च्मतेवदे ूपजी क्पेंइपसपजपमे ।बजए 2016ण्

8ण् त्मींइपसपजंजपवद ब्वनदबपस व ि्प्दकपं ;त्ब्प्द्धण् डण्म्कण् ैचमबपंस म्कनबंजपवद ;भ्मंतपदह प्उचंपतउमदजद्ध ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवताण्

9ण् ।उमतपबंद ैचममबी.स्ंदहनंहम.भ्मंतपदह ।ेेवबपंजपवद ;।ैभ्।द्धण् च्तंबजपबम च्वतजंसरू ैचवामद स्ंदहनंहम क्पेवतकमतेण्

10ण् ।उमतपबंद म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ।ेेवबपंजपवद ;।म्त्।द्धए ।उमतपबंद च्ेलबीवसवहपबंस ।ेेवबपंजपवद ;।च्।द्धए - छंजपवदंस

ब्वनदबपस वद डमंेनतमउमदज पद म्कनबंजपवद ;छब्डम्द्धण् ैजंदकंतके वित म्कनबंजपवदंस ंदक च्ेलबीवसवहपबंस ज्मेजपदहण्

11ण् भ्विि्ए म्ण् स्ंदहनंहम क्मअमसवचउमदजण्

12ण् व्ूमदेए त्ण् म्ण् स्ंदहनंहम क्मअमसवचउमदजरू ।द प्दजतवकनबजपवदण्

13ण् च्ंनसए च्ण् टण्ए - ॅंीपजमसंूए ळण् भ्मंतपदह ंदक क्मंदिमेेरू ।द प्दजतवकनबजपवद वित भ्मंसजी ंदक म्कनबंजपवद च्तवमिेपवदंसेण्

14ण् ैबीपबाए ठण्ए डंतेबींताए डण्ए - ैचमदबमतए च्ण् ;म्केण्द्धण् ।कअंदबमे पद जीम ैपहद स्ंदहनंहम क्मअमसवचउमदज व ि्क्मं ि्ब्ीपसकतमदण्

15ण् ैचमदबमतए च्ण् म्ण्ए - डंतेबींताए डण् म्अपकमदबम.ठंेमक च्तंबजपबम पद म्कनबंजपदह क्मं ि्ंदक भ्ंतक.व.ि्भ्मंतपदह ैजनकमदजेण्

16ण् टलहवजोलए स्ण् ैण् डपदक पद ैवबपमजलण्

17ण् ब्रउउपदेए श्रण् स्ंदहनंहमए च्वूमत ंदक च्मकंहवहलण्

18ण् न्छम्ैब्ण् ळसवइंस म्कनबंजपवद डवदपजवतपदह त्मचवतजे ;प्दबसनेपअम म्कनबंजपवदद्धण्

19ण् ।उमतपबंद म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ।ेेवबपंजपवदए ।उमतपबंद च्ेलबीवसवहपबंस ।ेेवबपंजपवदए - छंजपवदंस ब्वनदबपस वद डमंेनतमउमदज पद म्कनबंजपवदण् ;2014द्धण् ैजंदकंतके वित मकनबंजपवदंस ंदक चेलबीवसवहपबंस जमेजपदहण् ।उमतपबंद म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ।ेेवबपंजपवदण्

20ण् ।उमतपबंद ैचममबी.स्ंदहनंहम.भ्मंतपदह ।ेेवबपंजपवदण् ;दण्कण्द्धण् च्तंबजपबम च्वतजंसरू ैचवामद स्ंदहनंहम क्पेवतकमतेण्

21ण् ब्रउउपदेए श्रण् ;2000द्धण् स्ंदहनंहमए चवूमत ंदक चमकंहवहलरू ठपसपदहनंस बीपसकतमद पद जीम बतवेेपितमण् डनसजपसपदहनंस डंजजमतेण्

22ण् ळवअमतदउमदज व िप्दकपंण् ;2016द्धण् ज्ीम त्पहीजे व िच्मतेवदे ूपजी क्पेंइपसपजपमे ।बजए 2016ण् डपदपेजतल व िस्ंू ंदक श्रनेजपबमण्

23ण् भ्विए म्ण् ;2018द्धण् स्ंदहनंहम कमअमसवचउमदज ;6जी मकण्द्धण् ब्मदहंहम स्मंतदपदहण्

24ण् प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ब्मदजतमण् ;स्ंजमेज मकण्द्धण् प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम क्पबजपवदंतलण् क्मचंतजउमदज व िम्उचवूमतउमदज व िच्मतेवदे ूपजी क्पेंइपसपजपमेण्

25ण् डपदपेजतल व िम्कनबंजपवदण् ;2020द्धण् छंजपवदंस म्कनबंजपवद च्वसपबल 2020ण् ळवअमतदउमदज व िप्दकपंण्

26ण् छंजपवदंस ब्वनदबपस व िम्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदहण् ;2022द्धण् छंजपवदंस ब्रततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित थ्वनदकंजपवदंस ैजंहमण् छब्म्त्ज्ण्

27ण् छंजपवदंस ब्वनदबपस व िम्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदहण् ;2023द्धण् छंजपवदंस ब्रततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित ैचमबपंस म्कनबंजपवदण् छब्म्त्ज्ण्

28ण् व्ूमदेए त्ण् म्ण् ;2020द्धण् स्ंदहनंहम कमअमसवचउमदजरू ।द पदजतवकनबजपवद ;10जी मकण्द्धण् च्मंतेवदण्

29ण् च्ंनसए च्ण् टण्ए - ॅंीपजमसंूए ळण् ;2011द्धण् भ्मंतपदह ंदक कमंदिमेेरू ।द पदजतवकनबजपवद वित ीमंसजी ंदक मकनबंजपवद चतवमिेपवदंसेण् श्रवदमे - ठंतजसमजजण्

30ण् त्मींइपसपजंजपवद ब्वनदबपस व ि्पदकपंण् ;स्ंजमेज मकण्द्धण् डण्म्कण् ैचमबपंस म्कनबंजपवद ;भ्मंतपदह प्उचंपतउमदजद्ध ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवताण् त्ब्प्ण्

31ण् ैबीपबाए ठण्ए डंतेबींताए डण्ए - ैचमदबमतए च्ण् म्ण् ;म्केण्द्धण् ;2006द्धण् ।कअंदबमे पद जीम ेपहद संदहनंहम कमअमसवचउमदज व िकमं ि्बीपसकतमदण् व्गवितक न्दपअमतेपजल च्तमेेण्

32ण् ैचमदबमतए च्ण् म्ण्ए - डंतेबींताए डण् ;2010द्धण् म्अपकमदबम.इंेमक चतंबजपबम पद मकनबंजपदह कमं ि्ंदक ीं्तक.व.ि्ीमंतपदह ेजनकमदजेण् व्गवितक न्दपअमतेपजल च्तमेेण्

33ण् न्छम्ैब्व्ण् ;2020द्धण् ळसवइंस मकनबंजपवद उवदपजवतपदह तमचवतजरू प्दबसनेपवद ंदक मकनबंजपवद दृ ।सस उमंदे ंससण् न्छम्ैब्व्ण्

34ण् टलहवजोलए स्ण् ैण् ;1978द्धण् डपदक पद ेवबपमजलरू ज्ीम कमअमसवचउमदज व ि्ीपहीमत चेलबीवसवहपबंस चतवबमेेमेण् भ्ंतअंतक न्दपअमतेपजल च्तमेेण्

इकाई 8

पीडब्ल्यूएचआई में भाषा अभाव के संकेतों की पहचान और इसके सामाजिक, भावनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक पक्षों पर पड़ने वाले प्रभाव

8.1 प्रस्तावना (Introduction)

8.2 उद्देश्य (Objectives)

8.3 भाषा अभाव की अवधारणा (Concept of Language Deprivation)

8.4 न्यूरोबायोलॉजिकल आधार (Neurobiological Basis)

8.5 श्रवण अभाव बनाम भाषा अभाव (Auditory Deprivation vs Language Deprivation)

8.6 संकेतों की पहचान (Identification of Signs)

8.6.1 भाषाई संकेत (Linguistic Signs)

8.6.2 संज्ञानात्मक संकेत (Cognitive Signs)

8.6.3 व्यावहारिक संकेत (Behavioral Signs)

8.7 सामाजिक पक्ष पर प्रभाव (Impact on Social Aspect)

8.7.1 पारिवारिक अलगाव (Family Isolation)

8.7.2 साथियों और विद्यालय में बहिष्कार (Peer Rejection and School Exclusion)

8.7.3 शोषण और नागरिक अधिकारों से वंचित (Exploitation and Denial of Rights)

8.8 भावनात्मक पक्ष पर प्रभाव (Impact on Emotional Aspect)

8.8.1 भावनात्मक नियमन की विफलता (Emotional Dysregulation)

8.8.2 सुरक्षित लगाव का टूटना (Disrupted Secure Attachment)

8.8.3 सहानुभूति का अभाव (Lack of Empathy)

8.9 मनोवैज्ञानिक पक्ष पर प्रभाव (Impact on Psychological Aspect)

8.9.1 हीन भावना और कम आत्म सम्मान (Low Self Esteem)

8.9.2 चिंता अवसाद और आघात (Anxiety Depression and Trauma)

8.9.3 सोच की विकृति और गलत निदान (Distorted Thinking and Misdi agnosis)

8.10 रोकथाम और हस्तक्षेप (Prevention and Intervention)

8.10.1 सार्वभौमिक नवजात श्रवण जांच (Universal Newborn Hearing Screening UNHS)

8.10.2 सिद्धांत भाषा पहले तकनीक बाद में (Language First Technolog y Later)

8.10.3 बायोमॉडल बाइलिंग्वलिज्म का कार्यान्वयन (Implementation of Bi modal Bilingualism)

8.10.4 परिवार का सशक्तिकरण और परामर्श (Family Empowerment an d Counseling)

8.10.5 बधिर अनुकूल मानसिक स्वास्थ्य और बहुविषयक दल (Deaf Friendl y Mental Health and Multidisciplinary Team)

अपनी उन्नति जानिए (Check your Progress)

8.11 सारांश (Summary)

8.12 तकनीकी शब्दों की व्याख्या (Glossary of Technical Terms)

8.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answers of Practice Questions)

8.14 संदर्भ (References)

8.15 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Question)

8.1 प्रस्तावना

मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धि भाषा है। भाषा के माध्यम से ही हम अप ने विचारों को संजोते हैं, दूसरों से संबंध बनाते हैं और ज्ञान की विरासत को आगे बढ़ाते हैं। एक सामान्य बच्चा जन्म लेते ही ध्वनियों के सागर में डूब जाता है। माँ की लोरी, पिता की बातचीत, बाजार का शोर, टीवी की आवाज, ये सभी उसके लिए भाषा का भोजन बन जाते हैं। वह बिना किसी प्रयास के शब्द सीखता है औ र धीरे धीरे वाक्य बनाना शुरू कर देता है।

परंतु जब एक बच्चा श्रवणबाधिता के साथ जन्म लेता है तो यह सागर उसके लि ए सूख जाता है। यदि परिवार और समाज उसे वैकल्पिक भाषा अर्थात सांकेतिक भाषा नहीं देते हैं तो बच्चा भाषाई रेगिस्तान में अकेला रह जाता है। इस स्थिति को भाषा अभाव कहा जाता है। जब यह अभाव बचपन के संवेदनशील वर्षों में ब ना रहता है तो यह भाषा अभाव सिंड्रोम बन जाता है।

पीडब्ल्यूएचआई के संदर्भ में यह समस्या सबसे अधिक गंभीर है। क्योंकि समाज प्रायः बधिरता को केवल सुनने की कमी मानता है, जबकि वास्तविक क्षति भाषा की कमी से होती है। यह इकाई इसी अंतर को समझाने और भाषा अभाव के संके तों की पहचान करने पर केंद्रित है। हम यह भी देखेंगे कि यह अभाव किसी व्यक्ति के सामाजिक जीवन, भावनात्मक संतुलन और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को कैसे ग हराई से प्रभावित करता है।

एक विशेष शिक्षक के रूप में हमारा कार्य केवल अक्षर सिखाना नहीं है। हमारा कार्य एक ऐसे बच्चे को उसकी भाषा देना है जिससे वह सोच सके, महसूस कर स के और दुनिया का हिस्सा बन सके।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप निम्न क्षमताएं अर्जित करेंगे।

पहला आप भाषा अभाव और भाषा अभाव सिंड्रोम की अवधारणा को अपने श ब्दों में स्पष्ट कर सकेंगे।

दूसरा आप श्रवण अभाव और भाषा अभाव के बीच सूक्ष्म अंतर को उदाहरण स हित समझा सकेंगे।

तीसरा आप पीडब्ल्यूएचआई में भाषा अभाव के भाषाई, संज्ञानात्मक और व्यव हारिक संकेतों की नैदानिक पहचान कर सकेंगे।

चौथा आप भाषा अभाव के सामाजिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों का गहन विश्लेषण कर सकेंगे।

पाँचवा आप प्रारंभिक हस्तक्षेप, बायोमॉडल बाइलिंग्वलिज्म और पारिवारिक स शक्तिकरण जैसी रोकथाम रणनीतियों को तैयार कर सकेंगे।

छठा आप गलत निदान को रोककर पीडब्ल्यूएचआई के लिए सही शैक्षणिक और मानसिक स्वास्थ्य योजना बना सकेंगे।

8.3 भाषा अभाव की अवधारणा Concept of Language D eprivation

भाषा अभाव का सीधा अर्थ है किसी भी प्राकृतिक भाषा का न मिलना। प्राकृतिक भाषा वह भाषा है जिसे बच्चा अपने आसपास के वातावरण से सहज रूप से ग्रह ण कर लेता है। यह मौखिक भाषा हो सकती है या सांकेतिक भाषा हो सकती है। दोनों ही समान रूप से प्राकृतिक हैं।

भाषा अभाव को तीन भागों में बांटा जा सकता है। पूर्ण भाषा अभाव में बच्चे को न तो कोई ध्वनि आधारित भाषा मिलती है और न ही कोई संकेत आधारित भा षा। आंशिक भाषा अभाव मेपरिवार केवल घरेलू इशारे उपयोग करता है। ये इशारे अनियमित होते हैं, इनका कोई व्याकरण नहीं होता और ये अमूर्त विचार व्यक्त नहीं कर पाते। विलंबित भाषा अभाव में बच्चा पाँच वर्ष की आयु के बाद प हली बार किसी संरचित भाषा के संपर्क में आता है। भाषा अभाव सिंड्रोम एक सं चयी स्थिति है। जब मस्तिष्क को लंबे समय तक भाषा का इनपुट नहीं मिलता तो उसके सोचने, तर्क करने, स्मरण करने और भावनाओं को समझने के तंत्र कम जोर हो जाते हैं। यह स्थिति जन्मजात बौद्धिक अक्षमता से भिन्न है। यहाँ मस्ति ष्क स्वस्थ होता है परंतु उसे प्रशिक्षण नहीं मिला होता।

8.4 न्यूरोबायोलॉजिकल आधार

विज्ञान बताता है कि मानव मस्तिष्क में भाषा सीखने की एक जैविक घड़ी होती है। इसे क्रिटिकल पीरियड हाइपोथीसिस कहते हैं। यह अवधि जन्म से लगभग पाँ च वर्ष तक सबसे सक्रिय होती है। इस दौरान मस्तिष्क की न्यूरोप्लास्टिसिटी उच्च

तम स्तर पर होती है। न्यूरॉन्स नए संबंध बनाते हैं और भाषा के नियमों को स्था यी नेटवर्क में बदल देते हैं।

यदि इस अवधि में भाषा इनपुट अनुपस्थित रहता है तो मस्तिष्क का भाषा क्षेत्र विकसित नहीं हो पाता। ब्रोका क्षेत्र जो बोलने के लिए उत्तरदायी है और वर्निक क्षेत्र जो समझने के लिए उत्तरदायी है, दोनों कमजोर रह जाते हैं। मस्तिष्क एक कुशल प्रबंधक की तरह काम करता है। वह उन मार्गों को हटा देता है जिनका उप योग नहीं हो रहा। इसलिए बिना भाषा के मस्तिष्क उस स्थान को अन्य कार्यों में लगा देता है।

यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मस्तिष्क को ध्वनि की आवश्यकता नहीं है, उसे पैटर्न और संरचना की आवश्यकता है। इसलिए जो बच्चा जन्म से भारतीय सां केतिक भाषा देखता है उसका भाषा क्षेत्र उतना ही सक्रिय होता है जितना एक सु नने वाले बच्चे का। परंतु जो बच्चा न ध्वनि पाता है न संकेत, उसका मस्तिष्क आ त्म चर्चा और अमूर्त तर्क के लिए आधार ही नहीं बना पाता।

8.5 श्रवण अभाव बनाम भाषा अभाव Auditory Deprivation Vs Language Deprivation

इन दोनों को समझना अनिवार्य है अन्यथा हम गलत हस्तक्षेप करते हैं।

श्रवण अभाव का अर्थ है कान और श्रवण तंत्रिका का काम न करना। इसका परि णाम है ध्वनि का न सुनाई देना। भाषा अभाव का अर्थ है मस्तिष्क को विचारों और संवाद के लिए कोई भी सुलभ माध्यम न मिलना।

उदाहरण के लिए मान लीजिए दो बच्चे हैं। दोनों जन्म से बहरे हैं। पहले बच्चे के माता पिता ने छह महीने की आयु से सांकेतिक भाषा सीखना शुरू कर दिया और घर में लगातार संकेतों से बात की। दूसरा बच्चा उसी परिवार में है परिवार ने सोचा कि बड़ा होकर कॉक्लियर इम्प्लांट लगेगा तब बोलना सीख जाएगा। इसलिए पाँच वर्ष तक उससे केवलइशारों से काम चलाया गया। पहला बच्चा पाँच वर्ष की आयु तक सांकेतिक भाषा में धाराप्रवाह होगा उसकी सोचने की क्षमता सामान्य होगी और वह लिखित हिंदी अंग्रेजी भी आसानी से सीख लेगा। दूसरा बच्चा पाँच वर्ष का होने पर भी एक दो शब्द के टूटे संकेतों का उपयोग करेगा उसे काल और सर्वनाम समझ नहीं आएंगे और उसे सीखने में भारी कठिनाई होगी।

यही अंतर है। पहला बच्चा श्रवण अभाव से ग्रस्त था पर भाषा अभाव से नहीं। दूसरा बच्चा दोनों से ग्रस्त था। इसलिए हमारा लक्ष्य केवल सुनाना नहीं है बल्कि भाषा देना है।

8.6 संकेतों की पहचान Identification of Signs

एक कुशल शिक्षक बच्चे को देखकर बता सकता है कि उसे भाषा मिली है या नहीं। ये संकेत तीन स्तरों पर दिखते हैं।

8.6.1 भाषाई संकेत Linguistic Signs

सबसे पहले भाषा प्रवाहहीनता दिखती है। बच्चा एक दो शब्द के टुकड़े में बात करता है। व्याकरण छिन्न भिन्न रहता है। कर्ता कर्म क्रिया का क्रम टूटा हुआ होता है। शब्दावली केवल ठोस वस्तुओं तक सीमित रहती है। मेज, कुर्सी, खाना, पानी तो होंगे पर न्याय, स्वतंत्रता, अपेक्षा जैसे अमूर्त शब्द नहीं होंगे। काल और सर्वनाम

में स्थायी भ्रम रहता है। मैं, तू, वह, उसने, मुझे में अंतर स्पष्ट नहीं होता। प्रश्न पूछ ना और उत्तर देना दोनों कठिन होता है।

8.6.2 संज्ञानात्मक संकेत Cognitive Signs

सबसे बड़ा घाटा आकस्मिक अधिगम का अभाव है। सामान्य बच्चा आसपास की बातचीत से दुनिया का ज्ञान लेता है। भाषा वंचित बच्चा इस ज्ञान से कट जाता है । कार्यकारी कार्यप्रणाली कमजोर होती है। योजना बनाना, निर्णय लेना और आवेग रोकना कठिन होता है। इसका कारण आत्म चर्चा का अभाव है। हम सब मन में खुद से बात करके समस्या सुलझाते हैं। भाषा न होने पर यह संवाद नहीं बनता। अनुक्रमिक स्मृति भी कमजोर होती है। पहले क्या हुआ, फिर क्या हुआ, यह क्रम याद रखना कठिन होता है।

8.6.3 व्यावहारिक संकेत Behavioral signs

जब बच्चा अपनी बात कह नहीं पाता तो हताशा आक्रोश के रूप में निकलती है। इसे एक्टिंग आउट कहा जाता है। सामान फेंकना, चीखना, खुद को चोट पहुंचाना इसके रूप हैं। इसे अक्सर मानसिक रोग समझ लिया जाता है। सामाजिक नियमों की अनभिज्ञता रहती है। बारी का इंतजार, साझा करना, व्यक्तिगत सीमा समझना कठिन होता है। परिणामस्वरूप साथी इन्हें बाहर कर देते हैं और ये और अधिक अकेले हो जाते हैं। संवाद से बचने की प्रवृत्ति विकसित होती है।

8.7 सामाजिक पक्ष पर प्रभाव Impact on Social Aspect

भाषा समाज का गोंद है। जब गोंद नहीं होता तो रिश्ते बिखर जाते हैं।

8.7.1 पारिवारिक अलगाव Family Isolation

डिनर टेबल सिंड्रोम इसका सबसे दर्दनाक रूप है। आंकड़े बताते हैं कि नब्बे प्रतिश त से अधिक बधिर बच्चे सुनने वाले परिवार में पैदा होते हैं।

उदाहरण के लिए मान लीजिए। घर में शाम को सब बात कर रहे हैं। हंस रहे हैं। बधिर बच्चा बीच में बैठा है पर उसे कुछ समझ नहीं आ रहा। जब वह पूछता है तो जवाब मिलता है कुछ नहीं। धीरे धीरे बच्चा पूछना बंद कर देता है और परिवा र से भावनात्मक रूप से कट जाता है।

8.7.2 साथियों और विद्यालय में बहिष्कार Peer Rejection and School Exclusion

विद्यालय में बच्चा शिक्षक के निर्देश नहीं समझ पाता। समूह कार्य में भाग नहीं ले पाता। खेल के मैदान में नियम समझ नहीं आते इसलिए साथी उसे टीम में नहीं लेते। यह अस्वीकृति आत्म सम्मान को तोड़ देती है। बच्चा कोना ढूंढ लेता है और पीछे हट जाता है।

8.7.3 शोषण और नागरिक अधिकारों से वंचित Exploitation and Denial of Rights

भाषा न होने का सबसे खतरनाक परिणाम असुरक्षा है। एक व्यक्ति जो ना नहीं क ह सकता वह शारीरिक, मानसिक या आर्थिक शोषण का आसान लक्ष्य बन जाता है। वह पुलिस में रिपोर्ट नहीं कर सकता, अदालत में गवाही नहीं दे सकता और सरकारी योजनाओं का फॉर्म नहीं भर सकता। वह नागरिक होते हुए भी नागरिक अधिकारों से वंचित रह जाता है।

8.8 भावनात्मक पक्ष पर प्रभाव

भावनाएं भाषा के बिना अराजक हो जाती हैं।

8.8.1 भावनात्मक नियमन की विफलता Emotional Dysregulation

यदि किसी को गुस्सा आए पर वह यह न कह सके कि मैं नाराज हूं तो वह गुस्सा शरीर से निकलेगा। यदि दुख हो पर शब्द न हों तो वह आंसू या हिंसा बनेगा। भाषा भावनाओं को नाम देती है और नाम देने से भावनाएं नियंत्रित होती हैं। भाषा अभाव में यह तंत्र नहीं होता।

8.8.2 सुरक्षित लगाव का टूटना Disrupted Secure Attachment

शिशु और माता पिता के बीच लगाव तभी बनता है जब माता पिता बच्चे के संकेतों को पढ़कर प्रतिक्रिया देते हैं। भाषा अभाव में यह संवाद टूट जाता है। बच्चा यह सीख जाता है कि दुनिया प्रतिक्रिया नहीं देती। इससे अविश्वास और चिंता की नींव पड़ जाती है।

8.8.3 सहानुभूति का अभाव Lack of Empathy

थ्योरी ऑफ माइंड यह समझ कि दूसरों के मन में भी भावनाएं होती हैं, यह पूरी तरह भाषा से विकसित होती है। भाषा अभाव वाला व्यक्ति यह नहीं समझ पाता कि मेरे व्यवहार से सामने वाला आहत हुआ होगा। इसलिए उसे असंवेदनशील समझा जाता है जबकि कारण भाषाई अभाव है।

8.9 मनोवैज्ञानिक पक्ष पर प्रभाव

मनोवैज्ञानिक स्तर पर भाषा अभाव सिंड्रोम सबसे गहरा घाव छोड़ता है।

8.9.1 हीन भावना और कम आत्म सम्मान Low Self Esteem

लगातार असफलता और दूसरों पर निर्भरता एक व्यक्ति के भीतर यह भाव भर दे ती है कि मैं कम हूं, मैं अक्षम हूं। यह हीन भावना जीवनभर पीछा करती है।

8.9.2 चिंता, अवसाद और आघात Anxiety, Depression and Trauma

अज्ञात भय सबसे बड़ी चिंता है। यदि व्यक्ति यह नहीं समझ पाता कि परिवार अ चानक क्यों
बाहर जा रहा है तो वह हमेशा सतर्क रहता है। समय के साथ यह अवसाद में बद ल जाता है। अकेलेपन का आघात भी गहरा होता है।

8.9.3 सोच की विकृति और गलत निदान Distorted Thinking and Misdi agnosis

भाषा तर्क का आधार है। भाषा न होने पर व्यक्ति वास्तविकता की जांच नहीं कर पाता। वह
घटनाओं के अजीब कारण बना लेता है। चिकित्सक इसे सिजोफ्रेनिया, ऑटिज्म या बौद्धिक
अक्षमता समझ लेते हैं। यह सबसे बड़ी त्रुटि है। व्यक्ति बीमार नहीं है, वह भाषा वंचित है।

8.10 रोकथाम और हस्तक्षेप Prevention and Intervention

भाषा अभाव सिंड्रोम एक अपरिवर्तनीय स्थिति है। एक बार मस्तिष्क का भाषा केंद्र विकसित होने का अवसर चूक जाए तो उसे पूरी तरह से पुनर्स्थापित नहीं किया जा सकता। इसलिए हमारा पूरा ध्यान रोकथाम पर होना चाहिए।

8.10.1 सार्वभौमिक नवजात श्रवण जांच Universal Newborn Hearing Screening UNHS

यह रोकथाम की पहली और सबसे महत्वपूर्ण सीढ़ी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिफारिश है कि प्रत्येक शिशु की सुनने की जांच जन्म के अड़तालीस घंटे के भीतर होनी चाहिए। यूएनएचएस के दो मुख्य लाभ हैं। पहला शीघ्र पहचान। दूसरा शीघ्र हस्तक्षेप। यूएनएचएस के बाद श्रवणविज्ञानी को तुरंत एक विशेष शिक्षक और सांकेतिक भाषा विशेषज्ञ से संपर्क कराना चाहिए।

8.10.2 सिद्धांत भाषा पहले तकनीक बाद में Language First Technology Later

जब माता पिता को पता चलता है कि बच्चा गंभीर रूप से बहरा है तो पहला प्रश्न होता है
कॉक्लियर इम्प्लांट कब लगेगा। परंतु चिकित्सा जगत का नवीनतम शोध स्पष्ट रूप से कहता है कि तकनीक की प्रतीक्षा करते समय भाषा का समय नष्ट न करें। कॉक्लियर इम्प्लांट का
परिणाम निश्चित नहीं होता। इसलिए सिद्धांत स्पष्ट है। उसी दिन से जब निदान हो जाए, भारतीय सांकेतिक भाषा का एक्सपोजर शुरू कर दें।

8.10.3 बायोमॉडल बाइलिंग्वलिज्म का कार्यान्वयन Implementation of Bimodal Bilingualism

बायोमॉडल बाइलिंग्वलिज्म आज के समय का सबसे स्वीकृत शैक्षणिक मॉडल है। बायोमॉडल का अर्थ है दो माध्यम। दृश्य और लिखित। बाइलिंग्वलिज्म का अर्थ है दो भाषाएं। इस मॉडल के तीन चरण हैं। पहला चरण एलवन की नींव। जन्म से तीन वर्ष तक बच्चे को केवल सांकेतिक
भाषा का समृद्ध वातावरण दिया जाए। दूसरा चरण एलटू का परिचय। तीन से पाँच वर्ष की
आयु में उसी मजबूत सांकेतिक भाषा आधार पर लिखित हिंदी और अंग्रेजी सिखाई जाए।
तीसरा चरण समन्वय। विद्यालय में शिक्षक सांकेतिक भाषा में पढ़ाए और साथ में लिखित सामग्री दे।

8.10.4 परिवार का सशक्तिकरण और परामर्श Family Empowerment and Counseling

केवल बच्चे को विद्यालय में सांकेतिक भाषा सिखाने से भाषा अभाव समाप्त नहीं होता। क्योंकि बच्चा दिन के बीस घंटे घर में रहता है और चार घंटे विद्यालय में। इसलिए परिवार को सशक्त
बनाना अनिवार्य है। माता पिता को यह समझाना होगा कि आपका बच्चा विकलांग नहीं है। वह एक अलग भाषा बोलता है। जैसे आप अंग्रेजी सीखते हैं वैसे ही आपको सांकेतिक भाषा सीखनी होगी। पारिवारिक परामर्श में दो बातें महत्वपूर्ण हैं। पहली भावनात्मक स्वीकृति। दूसरी व्यावहारिक प्रशिक्षण।

8.10.5 बधिर अनुकूल मानसिक स्वास्थ्य और बहुविषयक दल Deaf Friendly Mental Health and Multidisciplinary Team

जब भाषा अभाव से ग्रस्त एक किशोर या वयस्क व्यवहारिक समस्या लेकर मनोचिकित्सक के पास जाता है तो अक्सर गलत निदान होता है। इससे बचने के लिए दो उपाय हैं। पहला मनोचिकित्सकों और परामर्शदाताओं को भाषा अभाव सिंड्रोम का विशेष प्रशिक्षण देना। दूसरा प्रत्येक मानसिक स्वास्थ्य केंद्र में योग्य सांकेतिक भाषा दुभाषी की उपस्थिति अनिवार्य हो। इसके साथ एक बहुविषयक दल ब

नाना चाहिए। इस दल में श्रवणविज्ञानी, विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता और सांकेतिक भाषा दुभाषी शामिल हों।

अपनी उन्नति जानिए Check your Progress

प्रश्न 1 भाषा अभाव और श्रवण अभाव में एक मुख्य अंतर बताइए।

प्रश्न 2 डिनर टेबल सिंड्रोम से आप क्या समझते हैं।

प्रश्न 3 भाषा अभाव वाला बच्चा अमूर्त शब्द क्यों नहीं सीख पाता।

प्रश्न 4 आत्म चर्चा का अभाव कार्यकारी कार्यप्रणाली को कैसे प्रभावित करता है।

प्रश्न 5 गलत निदान से बचने के लिए शिक्षक को क्या करना चाहिए।

8.11 सारांश Summary

भाषा अभाव केवल संवाद की कमी नहीं है। यह एक गहरा तंत्रिकीय और सामाजिक संकट है जो पीडब्ल्यूएचआई के जीवन को जड़ से प्रभावित करता है। जब एक बच्चे को उसके संवेदनशील वर्षों में किसी भी सुलभ भाषा का इनपुट नहीं मिलता तो उसका मस्तिष्क भाषा केंद्र विकसित नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप उसमें व्याकरणहीनता, अमूर्त सोच का अभाव, आत्म चर्चा की कमी और सामाजिक नियमों की अनभिज्ञता दिखाई देती है। सामाजिक स्तर पर वह डिनर टेबल सिंड्रोम और साथियों के बहिष्कार का शिकार होता है। भावनात्मक स्तर पर वह भावनाओं को नाम न दे पाने के कारण आक्रोश और चिंता में जीता है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर वह हीन भावना, अवसाद और गलत निदान का शिकार बन जाता है। परंतु यह स्थिति रोकी जा सकती है। शीघ्र नवजात जांच, जन्म से सां

केतिक भाषा का एक्सपोजर, बायोमॉडल बाइलिंग्वलिज्म और पूरे परिवार की भागीदारी से हम हर बधिर बच्चे को भाषा दे सकते हैं। हमें बधिरता को रोग नहीं बल्कि भाषाई विविधता मानकर पीडब्ल्यूएचआई को भाषाई अल्पसंख्यक के रूप में स्वीकार करना होगा। जहाँ भाषा है वहाँ सोच है, जहाँ सोच है वहाँ जीवन है।

8.12 तकनीकी शब्दों की व्याख्या

Language Deprivation भाषा अभाव किसी भी प्राकृतिक भाषा का अभाव होना।

Language Deprivation Syndrome भाषा अभाव सिंड्रोम भाषा अभाव के कारण मस्तिष्क में होने वाले स्थायी संज्ञानात्मक और व्यवहारिक परिवर्तन।

Critical Period क्रिटिकल पीरियड जन्म से पाँच वर्ष की वह अवधि जब मस्तिष्क भाषा सीखने के लिए सबसे अधिक संवेदनशील होता है।

Neuroplasticity न्यूरोप्लास्टिसिटी मस्तिष्क की नई तंत्रिका संबंध बनाने और स्वयं को बदलने की क्षमता।

Incidental Learning आकस्मिक अधिगम बिना सीधे प्रयास के आसपास के संवाद से अनजाने में सीखना।

Inner Speech आत्म चर्चा मन में खुद से की जाने वाली आंतरिक बातचीत जो सोचने में मदद करती है।

Theory of Mind थ्योरी ऑफ माइंड यह समझ कि दूसरों के भी अपने विचार और भावनाएं होती हैं।

Dinner Table Syndrome डिनर टेबल सिंड्रोम घर में परिवार की बातचीत से बधिर बच्चे का पूरी तरह कट जाना।

Bimodal Bilingualism बायोमॉडल बाइलिंग्वलिज्म पहले सांकेतिक भाषा फिर लिखित मौखिक भाषा सिखाने का मॉडल।

Misdiagnosis गलत निदान भाषा अभाव को मानसिक रोग या बौद्धिक अक्षम ता समझ लेना।

8.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर Answers of Practice Questions

प्रश्न 1 श्रवण अभाव का अर्थ ध्वनि का न सुनाई देना है जबकि भाषा अभाव का अर्थ किसी भी भाषा का न मिलना है। एक बहरा बच्चा सांकेतिक भाषा से भाषा अभाव से बच सकता है।

प्रश्न 2 डिनर टेबल सिंड्रोम वह स्थिति है जब सुनने वाले परिवार में बधिर बच्चा परिवार की बातचीत से कट जाता है क्योंकि परिवार संकेत नहीं जानता।

प्रश्न 3 अमूर्त शब्द अनुभव और संवाद से सीखे जाते हैं। भाषा अभाव में बच्चा केव ल ठोस वस्तुओं तक सीमित रहता है इसलिए अमूर्त शब्द नहीं सीख पाता।

प्रश्न 4 आत्म चर्चा मन में योजना बनाने का माध्यम है। इसके अभाव में बच्चा आ वेग रोक नहीं पाता और समस्या सुलझाने में कठिनाई होती है।

प्रश्न 5 शिक्षक को बच्चे का भाषाई इतिहास लेना चाहिए और यह देखना चाहिए कि बच्चा ज्ञान नहीं रखता या भाषा नहीं रखता।

8.14 संदर्भ References

Hall W C 2017 Language Deprivation and Deaf Mental Health Routledge

Glickman N S 2009 Cognitive Behavioral Therapy for Deaf and Hearing Loss Youth Springer

National Center for Biotechnology Information Language Depriv ation Syndrome Research Papers

Rehabilitation Council of India RCI http://M.Ed Special Educatio n Hearing Impairment Curriculum

Netaji Subhas Open University NSOU Self Learning Material for http://M.Ed HI Unit on Language Deprivation

United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabi lities Article 21 Right to Sign Language

RPwD Act 2016 Government of India Recognition of Indian Sig n Language

Mayberry R I 2007 When timing is everything Age of first langu age acquisition effects on second language learning Applied Ps ycholinguistics

Humphries T et al 2012 A public health approach to addressing language deprivation in deaf children Language and Cognition

Allied Health Professionals Council of India AHP Act 2021 Guid elines for Sign Language Interpreters

8.15 निबंधात्मक प्रश्न Essay Type Question

प्रश्न 1

पीडब्ल्यूएचआई में भाषा अभाव सिंड्रोम को परिभाषित कीजिए। इसके न्यूरोबा योलॉजिकल आधार की व्याख्या करते हुए सामाजिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञा निक प्रभावों की विस्तार से विवेचना कीजिए।

प्रश्न 2

भाषा अभाव के भाषाई, संज्ञानात्मक और व्यवहारिक संकेतों की पहचान आप कै से करेंगे। प्रत्येक श्रेणी के तीन उदाहरण दीजिए।

प्रश्न 3

बायोमॉडल बाइलिंग्वलिज्म मॉडल क्या है। यह पीडब्ल्यूएचआई के लिए क्यों आ वश्यक है। एक काल्पनिक केस स्टडी के माध्यम से समझाइए।

प्रश्न 4

डिनर टेबल सिंड्रोम और साथियों द्वारा अस्वीकृति के कारण पीडब्ल्यूएचआई के सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभावों की चर्चा कीजिए।

प्रश्न 5

भाषा अभाव के कारण होने वाले गलत मनोवैज्ञानिक निदान के खतरों को सम झाइए। एक विशेष शिक्षक इस त्रुटि को कैसे रोक सकता है।

इकाई 9

दूसरी भाषा के लिए शुरुआती भारतीय सांकेतिक भाषा की नींव का महत्वय मौखिक भाषा और भारतीय सांकेतिक भाषा के शुरुआती विकास में जैविक आधार और शोधय पिछले दो दशकों के अनुभव

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 भाषा अर्जन का वैचारिक एवं वैज्ञानिक आधार

9.3.1 भाषा क्या हैघ् रू भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण

9.3.2 भाषा अर्जन बनाम भाषा अधिगम

9.3.3 प्रथम भाषा ;स्1द्ध एवं द्वितीय भाषा की अवधारणा

9.3.4 श्रवण बाधित बच्चों में भाषा अर्जन के मार्ग . मौखिकए सांकेतिकए द्विभाषिक एवं बहु.माध्यमीय भाषा आधारित

9.3.5 भाषाए संज्ञान एवं सामाजिक विकास का अंतर्संबंध

9.4 भाषा विकास का जैविक आधार

9.4.1 भाषा अर्जन की जैविक तैयारी

9.4.2 मस्तिष्क एवं भाषा ;ब्रोका क्षेत्रए वेर्निके क्षेत्रए न्यूरल नेटवर्कए एवं भाषा प्रसंस्करण प्रणालीद्ध

9.4.3 भाषा विकास में आनुवंशिक योगदान

9.4.4 भाषा विकास में न्यूरोप्लास्टिसिटी

9.4.5 संवेदनशील अवधि

9.4.6 श्रवण हानि और मस्तिष्कीय पुनर्संगठन

9.4.7 दृश्य भाषा एवं मस्तिष्क

9.5 भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्ध एक प्राकृतिक प्रथम भाषा के रूप में

9.5.1 प्ैस् की भाषाई विशेषताएँ

9.5.2 प्ैस् एक पूर्ण भाषा क्यों हैघ्

9.5.3 प्ैस् का व्याकरणिक ढाँचा

9.5.4 दृश्य.स्थानिक भाषा की प्रकृति

9.5.5 क्मं िसमुदाय एवं भाषा पहचान

9.5.6 प्ैस् और संज्ञानात्मक विकास

9.5.7 भारतीय संदर्भ में प्ैस् का विकास

9.6 शुरुआती सांकेतिक भाषा संपर्कन ;म्ंतसल म्गचवेनतम जव प्ैस्द्ध का महत्व

9.6.1 जन्म से भाषा संपर्कन की आवश्यकता

9.6.2 बधिर माता.पिता के बच्चों में भाषा विकास

9.6.3 सुनने वाले माता.पिता के बच्चों में चुनौतियाँ

9.6.4 संयुक्त ध्यान ;श्रवपदज ।जजमदजपवदद्ध

9ण्6ण्5 प्रारम्भिक संवाद एवं भाषा

9ण्6ण्6 सामाजिक.मनोवैज्ञानिक लाभ

9ण्6ण्7 प्रारम्भिक सांकेतिक भाषा और शैक्षिक तैयारी

9ण्7 भाषाई वंचना ;स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवदद्ध रू अवधारणाए कारण एवं प्रभाव

9ण्7ण्1 भाषा वंचना क्या हैघ्

9ण्7ण्2 श्रवण बाधित बच्चों में भाषा वंचना के कारण

9ण्7ण्3 संज्ञानात्मक प्रभाव

9ण्7ण्4 सामाजिक.भावनात्मक प्रभाव

9ण्7ण्5 शैक्षणिक प्रभाव

9ण्7ण्6 मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

9ण्7ण्7 भाषा.वंचन सिंड्रोम ;स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवद ैलदकतवउमद्ध

9ण्7ण्8 रोकथाम की रणनीतियाँ

9ण्8 मौखिक भाषा एवं प्ैस् के प्रारम्भिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन

9ण्8ण्1 सामान्य श्रवण वाले बच्चों में भाषा विकास

9ण्8ण्2 सांकेतिक भाषा अर्जित करने वाले बच्चों में भाषा विकास

9ण्8ण्3 विकासात्मक समानताएँ

9ण्8ण्4 विकासात्मक भिन्नताएँ

9ण्8ण्5 शब्दावली विकास

9ण्8ण्6 व्याकरण विकास

9ण्8ण्7 कथन कौशल ;छंततंजपअम ैापससेद्ध

9ण्8ण्8 प्राग्मैटिक विकास

9ण्9 प्रथम भाषा ;स्1द्ध से द्वितीय भाषा ;स्2द्ध विकास का सिद्धांत रू प्ैस् से लिखितध्मौखिक भाषा तक

9ण्9ण्1 ब्रउउपदे का स्पदहनपेजपब प्दजमतकमचमदकमदबम भ्लचवजीमेपे

9ण्9ण्2 ब्वउउवद न्दकमतसलपदह च्तवपिबपमदबल ;ब्न्च्द्ध

9ण्9ण्3 ज्तंदेमित ज्ीमवतल

9ण्9ण्4 ज्ीतमेीवसक भ्लचवजीमेपे

9ण्9ण्5 ज्तंदेसंदहनंहपदह

9ण्9ण्6 भारतीय सांकेतिक भाषा से हिन्दीध्अंग्रेजी सीखना

9ण्9ण्7 भारतीय सांकेतिक भाषा और साक्षरता विकास

9ण्10 पिछले दो दशकों ;2005द्2025द्ध के प्रमुख शोध निष्कर्ष

9ण्10ण्1 वैश्विक शोध प्रवृत्तियाँ

9ण्10ण्2 मस्तिष्क एवं भाषा पर शोध

9ण्10ण्3 म्ंतसल ैपहद म्गचवेनतम पर शोध

9ण्10ण्4 ब्वबीसमंत प्उचसंदज और ैपहद स्ंदहनंहम पर शोध

9ण्10ण्5 ठपसपदहनंस क्मं िम्कनबंजपवद पर शोध

9ण्10ण्6 स्पजमतंबल एवं ।बंकमउपब ।बीपमअमउमदज पर शोध

9ण्10ण्7 ैवबपंस.म्उवजपवदंस क्मअमसवचउमदज पर शोध

9ण्10ण्8 स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवद पर शोध

9ण्10ण्9 क्मं िळंपद च्मतेचमबजपअम

9ण्10ण्10 भारतीय शोध एवं अनुभव

9ण्11 भारत में पिछले दो दशकों का अनुभव

9ण्11ण्1 प्ैस्त्ज्ब् की भूमिका

9ण्11ण्2 त्च्ूक् ।बज 2016

9ण्11ण्3 छम्च् 2020

9ण्11ण्4 छब्थ्.थ्ै 2022

9ण्11ण्5 छब्थ्ैम् 2023

9ण्11ण्6 समावेशी शिक्षा में प्ैस्

9ण्11ण्7 विशेष विद्यालयों के अनुभव

9ण्11ण्8 क्मं िसमुदाय के दृष्टिकोण

9ण्11ण्9 वर्तमान चुनौतियाँ

9ण्11ण्10 भविष्य की दिशाएँ

9ण्12 प्रारम्भिक पहचानए मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप के निहितार्थ

9ण्12ण्1 भाषा प्रोफाइलिंग

9ण्12ण्2 स्1 मूल्यांकन की आवश्यकता

9ण्12ण्3 प्ैस् मूल्यांकन

9ण्12ण्4 द्विभाषिक मूल्यांकन

9ण्12ण्5 परिवार.केंद्रित हस्तक्षेप

9ण्12ण्6 विद्यालय आधारित हस्तक्षेप

9ण्12ण्7 बहुविषयक टीम की भूमिका

9ण्12ण्8 प्म्च् निर्माण में उपयोग

9ण्13 समकालीन मुद्दे एवं बहसें

9ण्13ण्1 व्तंसपेउ बनाम ठपसपदहनंसपेउ

9ण्13ण्2 ब्वबीसमंत प्उचसंदज और ैपहद स्ंदहनंहम

9ण्13ण्3 ैपहद स्ंदहनंहम क्मसंले डलजी

9ण्13ण्4 क्मं िळंपद बनाम क्मपिबपज डवकमस

9ण्13ण्5 स्पदहनपेजपब त्पहीजे

9ण्13ण्6 प्दबसनेपअम म्कनबंजपवद एवं प्ैस्

9ण्13ण्7 ।तजपपिबपंस प्दजमससपहमदबम एवं ैपहद स्ंदहनंहम

9ण्14 अध्याय सारांश

9ण्15 मुख्य शब्द

9ण्16 यूनिट के अंत में होने वाली गतिविधियाँरू

9.17 यूनिट के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

9.18 अधिन्यास ध् क्रियाकलाप

9.19 चर्चा के बिंदु और स्पष्टीकरण

9.20 सुझाए गए पठन और संदर्भ

9.1 प्रस्तावना

भाषा मानव विकास की आधारशिला है। मनुष्य भाषा के माध्यम से न केवल अपने विचारोंए भावनाओं और आवश्यकताओं को व्यक्त करता हैए बल्कि इसी के माध्यम से वह सामाजिक संबंध स्थापित करता हैए ज्ञान अर्जित करता हैए सांस्कृतिक पहचान विकसित करता है तथा अपने परिवेश को समझता है। भाषा का विकास संज्ञानात्मकए सामाजिकए भावनात्मक तथा शैक्षणिक विकास से गहराई से जुड़ा हुआ है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में भाषा विकास का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। अधिकांश श्रवण बाधित बच्चे ऐसे परिवारों में जन्म लेते हैं जहाँ माता.पिता श्रवणक्षम ;भ्मंतपदहद्ध होते हैं और सांकेतिक भाषा से परिचित नहीं होते। परिणामस्वरूप बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था में सुलभ भाषा इनपुट नहीं मिल पाता। यही स्थिति आगे चलकर भाषा विलम्ब भाषा वंचना

शैक्षणिक कठिनाइयों तथा सामाजिक.भावनात्मक चुनौतियों का कारण बन सकती है। पिछले दो दशकों में विश्वभर में हुए शोधों ने यह स्पष्ट किया है कि श्रवण बाधित बच्चे के लिए किसी भी सुलभ भाषा का प्रारम्भिक संपर्कन अत्यंत आवश्यक है। यदि बच्चे को जन्म से या प्रारम्भिक वर्षों में भारतीय सांकेतिक भाषा जैसी प्राकृतिक दृश्य.आधारित भाषा उपलब्ध हो जाएए तो उसका भाषा विकासए संज्ञानात्मक विकास तथा सामाजिक सहभागिता अधिक सुदृढ़ होती है। इसके अतिरिक्त यही प्रथम भाषा ;स्1द्ध आगे चलकर लिखित अथवा मौखिक भाषा जैसी द्वितीय भाषा सीखने का आधार बनती है।

वर्तमान समय में श्रवण बाधित शिक्षा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ है कि ध्यान केवल वाणी के विकास से हटकर भाषा ;संदहनंहमद्ध के विकास पर केन्द्रित हुआ है। आधुनिक शोध यह संकेत देते हैं कि प्रारम्भिक सांकेतिक भाषा संपर्कन मौखिक भाषा के विकास में बाधा नहीं बनताए बल्कि भाषा वंचना के जोखिम को कम करता है और द्विभाषिक विकास को प्रोत्साहित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ए त्च्ूक् ।बज 2016 तथा भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र ;प्ैस्त्ज्ब्द्ध की पहलों ने भारतीय संदर्भ में भी इस विचार को बल दिया है कि श्रवण बाधित बच्चों को उनकी प्राकृतिक एवं सुलभ भाषा में सीखने और विकसित होने का अवसर मिलना चाहिए। इसी पृष्ठभूमि में यह इकाई भाषा अर्जन के जैविक आधारए प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा के संबंधए भारतीय सांकेतिक भाषा की भूमिकाए प्रारम्भिक भाषा संपर्कनए भाषा वंचनाए द्विभाषिक शिक्षा तथा पिछले दो दशकों के शोध निष्कर्षों का वैज्ञानिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त शिक्षार्थी सक्षम होंगेरू

व भाषा अर्जन की अवधारणा एवं उसके वैज्ञानिक आधार को स्पष्ट कर सकेंगे।

व प्रथम भाषा ;स्1द्ध तथा द्वितीय भाषा ;स्2द्ध के संबंध का विश्लेषण कर सकेंगे।

व भारतीय सांकेतिक भाषा को प्राकृतिक प्रथम भाषा के रूप में समझा सकेंगे।

व प्रारम्भिक भाषा संपर्कन के महत्व का वर्णन कर सकेंगे।

व भाषा वंचना ;स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवदद्ध के प्रभावों का विश्लेषण कर सकेंगे।

व प्ैस् आधारित द्विभाषिक शिक्षा के सिद्धांतों को स्पष्ट कर सकेंगे।

व पिछले दो दशकों के शोध निष्कर्षों का समालोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

व भाषा मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप में शोध.आधारित निर्णय लेने में सक्षम होंगे।

9.3 भाषा अर्जन का वैचारिक एवं वैज्ञानिक आधार

श्यदि बच्चे को सुलभ भाषा नहीं मिलतीए तो वह भाषा नहीं सीख सकताय और यदि भाषा नहीं सीखताए तो सीखने के अनेक अन्य अवसर भी सीमित हो जाते हैं।

भाषा अर्जन मानव विकास की सबसे जटिल तथा अद्भुत प्रक्रियाओं में से एक है। एक नवजात शिशु कुछ ही वर्षों में अपनी मातृभाषा के हजारों शब्दए व्याकरणिक नियम तथा संचार के सामाजिक मानदण्ड सीख लेता है। यह प्रक्रिया सामान्यतः बिना औपचारिक शिक्षण के सम्पन्न होती है। भाषा अर्जन को समझने के लिए हमें भाषा की प्रकृतिए भाषा सीखने की प्रक्रिया तथा मानव मस्तिष्क की भूमिका को समझना आवश्यक है।

9.3.1 भाषारू

भाषा प्रतीकों की एक व्यवस्थित प्रणाली है जिसके माध्यम से मनुष्य विचारोंए भावनाओंए अनुभवों तथा सूचनाओं का आदान.प्रदान करता है। भाषाविज्ञान के अनुसार भाषा केवल शब्दों का संग्रह नहीं है बल्कि नियमबद्ध संरचनाओं की एक जटिल प्रणाली है। भाषा के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं.

ध्वन संकेत ध्वन्यात्मकतारू यह भाषा की सबसे छोटी अर्थभेदक इकाइयों का अध्ययन करती है।

यह शब्दों की आंतरिक संरचना का अध्ययन करती है। शब्दों को मिलाकर सार्थक वाक्य बनाने के नियम। भाषा में अर्थ की प्रणाली। सामाजिक परिस्थितियों में भाषा के प्रयोग का अध्ययन।

मौखिक भाषाओं मेंरू

- ध्वनियाँ
- स्वनिम

सांकेतिक भाषाओं मेंरू

- भ्ंदकींचम

ऽ स्वबंजपवद

ऽ डवअमउमदज

ऽ व्तपमदजंजपवद

ऽ छवद.उंदनंस डंतामते

ऽ उदाहरण

प्ैस् में किसी संकेत की गति या स्थान बदलने से उसका अर्थ बदल सकता है।

उदाहरण

ऽ बच्चा → बच्चे

ऽ पढ़ → पढ़ना → पढ़ाई

प्ैस् में भी रूपात्मक परिवर्तन होते हैंए जैसे संकेत की पुनरावृत्ति या गति में परिवर्तन द्वारा अर्थ परिवर्तन।

उदाहरण

ऽ राम विद्यालय गया।

ऽ विद्यालय राम गया। ;अस्वाभाविकद्ध

प्ैस् में भी स्वतंत्र व्याकरणिक संरचना होती है जो हिन्दी या अंग्रेजी से भिन्न हो सकती है।

उदाहरण

श्पुस्तकश्ए श्ज्ञानश्ए श्विद्यालयश् जैसे शब्द विशेष अर्थ वहन करते हैं।

उदाहरण

ऽ अभिवादन करना

ऽ अनुमति माँगना

ऽ धन्यवाद देना

भाषा की प्रमुख विशेषताएँरू

- भाषा नियमबद्ध होती हैरू हर भाषा के अपने व्याकरणिक नियम होते हैं।

- भाषा सृजनात्मक होती हैरू सीमित शब्दों से असीमित वाक्य बनाए जा सकते हैं।

- भाषा सामाजिक होती हैरू भाषा सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से विकसित होती है।

- भाषा सांस्कृतिक होती हैरू भाषा संस्कृति और पहचान का वाहक होती है।

- भाषा बहुआयामी होती हैरू यह केवल संचार नहीं बल्कि सोचए स्मृतिए अधिगम और सामाजिक सहभागिता से भी जुड़ी होती है।

श्रवण बाधित बच्चों के लिए भाषा की पुनर्परिभाषारू लंबे समय तक भाषा को केवल वाणी के रूप में देखा गया। आधुनिक भाषाविज्ञान ने इस धारणा को अस्वीकार कर दिया है। आज यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है किकृ

- भाषा ध्वनि आधारित भी हो सकती है।

- भाषा दृश्य आधारित भी हो सकती है।
- सांकेतिक भाषाएँ पूर्ण प्राकृतिक भाषाएँ हैं।
- प्ैस् किसी भी मौखिक भाषा से कम जटिल नहीं है।
- भाषा का मूल उद्देश्य अर्थ का संप्रेषण हैए माध्यम नहीं।

इसी कारण आधुनिक विशेष शिक्षा में भारतीय सांकेतिक भाषा को केवल सहायक संचार प्रणाली नहींए बल्कि एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता दी जा रही है।

9.3.2 भाषा अर्जन एवं भाषा अधिगमरू

भाषा विकास के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक यह है कि बच्चे भाषा कैसे सीखते हैंघ् क्या भाषा जन्मजात क्षमता है अथवा वातावरण द्वारा सिखाई जाती हैघ् क्या भाषा का विकास केवल औपचारिक शिक्षण से होता है या यह स्वाभाविक रूप से अर्जित होती हैघ् इन प्रश्नों के उत्तर भाषा अर्जन और भाषा अधिगम की अवधारणाओं में निहित हैं। विशेष शिक्षाए विशेषकर श्रवण बाधित बच्चों की शिक्षा में इन दोनों अवधारणाओं को समझना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यही निर्णय करती हैं कि बच्चे को भाषा सिखाने की रणनीति क्या होगीए मूल्यांकन कैसे किया जाएगा तथा हस्तक्षेप कार्यक्रम किस प्रकार निर्मित किए जाएंगे।

भाषा अर्जन क्या हैघ्ू भाषा अर्जन वह प्राकृतिकए अवचेतन ;न्दबवदेबपवनेद्ध एवं सहज प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चा अपने वातावरण में उपलब्ध भाषा को बिना औपचारिक शिक्षण के सीखता है। यह प्रक्रिया जन्म से ही प्रारम्भ हो जाती है। बच्चा अपने परिवारए समुदाय तथा सामाजिक वातावरण से निरंतर

भाषा इनपुट प्राप्त करता है और धीरे.धीरे भाषा की संरचनाओंए अर्थों तथा प्रयोग को समझने लगता है।

भाषा अर्जन की प्रमुख विशेषताएँ

- प्राकृतिक ;छंजनतंसद्ध प्रक्रिया है।
- अवचेतन रूप से होती है।
- अर्थपूर्ण सामाजिक अन्तःक्रिया पर आधारित होती है।
- निरंतर भाषा सम्पर्क की आवश्यकता होती है।
- औपचारिक व्याकरण शिक्षण आवश्यक नहीं होता।
- भाषा का प्रयोग पहले आता हैए नियमों का ज्ञान बाद में विकसित होता है।

उदाहरण एक सामान्य श्रवण वाला बच्चा अपने माता.पिता को सुनते.सुनते भाषा सीख लेता है। उसे किसी ने औपचारिक रूप से व्याकरण नहीं पढ़ाया होताए फिर भी वह सही वाक्य बोलने लगता है। उसी प्रकार क्मं िमाता.पिता के घर में जन्मा श्रवण बाधित बच्चा भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्ध को उसी स्वाभाविकता से अर्जित कर सकता है जिस प्रकार श्रवणक्षम बच्चा मौखिक भाषा अर्जित करता है।

भाषा अधिगम क्या हैघ् भाषा अधिगम वह सचेतन ;ब्वदेबपवनेद्ध एवं योजनाबद्ध प्रक्रिया है जिसमें भाषा को शिक्षणए अभ्यास तथा औपचारिक अध्ययन के माध्यम से सीखा जाता है। यह सामान्यतः विद्यालयी शिक्षा से जुड़ी होती है।

भाषा अधिगम की विशेषताएँरू

- औपचारिक शिक्षण पर आधारित।
- सचेतन प्रयास आवश्यक।
- व्याकरण नियमों का अध्ययन।
- पठन एवं लेखन पर बल।
- कक्षा.केंद्रित गतिविधियाँ।
- मूल्यांकन एवं परीक्षण से जुड़ा।

उदाहरणरू एक श्रवण बाधित बच्चा यदि भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्ध में दक्ष है और विद्यालय में हिन्दी पढ़ना.लिखना सीख रहा हैए तो हिन्दी का विकास भाषा अधिगम ;स्मंतदपदहद्ध कहलाएगा।

आधार	भाषा अर्जन	भाषा अधिगम
प्रकृति	प्राकृतिक	औपचारिक
प्रक्रिया	अवचेतन	सचेतन
माध्यम	सामाजिक अन्तःक्रिया	शिक्षण एवं अभ्यास
गति	सहज	अपेक्षाकृत धीमी
उद्देश्य	संप्रेषण	भाषा का अध्ययन
उदाहरण	प्ैस् का स्वाभाविक विकास	हिन्दीध्अंग्रेजी का विद्यालयी अध्ययन

भाषा अर्जन के सिद्धांत और श्रवण बाधित बच्चों में उनकी प्रासंगिकतारू

भाषा अर्जन के क्षेत्र में 1960 के दशक में नोम चॉम्स्की ;छवंउ ब्ीवउालद्ध ने एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत कियाए जिसे नैटिविस्ट ;छंजपअपेजद्ध सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। चॉम्स्की के अनुसार मानव मस्तिष्क जन्मजात रूप से भाषा सीखने की जैविक क्षमता से युक्त होता है। उन्होंने स्ंदहनंहम ।बुनपेपजपवद क्मअपबम ;स्।क्द्ध की अवधारणा प्रस्तुत कीए जिसके अनुसार प्रत्येक बच्चे के मस्तिष्क में एक अंतर्निहित भाषा तंत्र विद्यमान रहता है जो उसे भाषा के नियमों को समझने और व्यवस्थित करने में सहायता करता है। चॉम्स्की का मानना था कि यदि बच्चे को पर्याप्त और सार्थक भाषा इनपुट प्राप्त हो जाए तो वह स्वतः ही भाषा की संरचनाए व्याकरण और नियमों को सीख सकता है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह सिद्धांत विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि श्रवण माध्यम से भाषा इनपुट की कमी होने पर भी उनकी जन्मजात भाषा क्षमता प्रभावित नहीं होती। आवश्यकता केवल इस बात की होती है कि उन्हें दृश्य रूप में सुलभ भाषा इनपुटए जैसे भारतीय सांकेतिक भाषा उपलब्ध कराया जाए। आधुनिक अनुसंधान दर्शाते हैं कि प्रारम्भिक अवस्था में प्राकृतिक सांकेतिक भाषा का संपर्क श्रवण बाधित बच्चों के संज्ञानात्मकए भाषिक तथा सामाजिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है ;डंलइमततलए 2010 भ्नउचीतपमे मज ंसण्ए 2012द्ध।

भाषा विकास को सामाजिक संदर्भ में समझाने का महत्वपूर्ण कार्य लेव वाइगोत्स्की ;स्मअ टलहवजोलद्ध ने किया। उनके सामाजिक.सांस्कृतिक सिद्धांत के अनुसार भाषा का विकास सामाजिक अन्तःक्रिया से प्रारम्भ होकर धीरे.धीरे आंतरिक चिंतन ;प्ददमत ैचममबीद्ध का रूप लेता है। वाइगोत्स्की ने यह प्रतिपादित किया कि बच्चे भाषा को सामाजिक संबंधोंए संवादों और सहयोगात्मक गतिविधियों के माध्यम से सीखते हैं। उनर्का वदम व िच्तवगपउंस

क्मअमसवचउमदज र्;च्क्द्ध सिद्धांत बताता है कि बच्चा उन कार्यों को भी सीख सकता है जिन्हें वह अकेले नहीं कर सकताए यदि उसे किसी अधिक सक्षम व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त हो। इसी प्रकार ैबंिविसकपदह की अवधारणा भाषा विकास के लिए क्रमिक और संरचित सहायता प्रदान करने पर बल देती है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए माता.पिता द्वारा प्ैस् का प्रयोगए सहपाठियों के साथ सांकेतिक भाषा में संवादए दृश्य शिक्षण सामग्री तथा शिक्षकों द्वारा सांकेतिक भाषा मॉडलिंग भाषा विकास को तीव्र और प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। अनेक शोधों ने प्रमाणित किया है कि प्रारम्भिक और समृद्ध सामाजिक अन्तःक्रिया श्रवण बाधित बच्चों की भाषिक दक्षता तथा शैक्षणिक उपलब्धियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है

जेरोम ब्रूनर ने चॉम्स्की के जैविक दृष्टिकोण को सामाजिक समर्थन के साथ जोड़ते हुए स्ंदहनंहम ।बुनपेपजपवद ैनचचवतज ैलेजमउ की अवधारणा विकसित की। ब्रूनर के अनुसार भाषा सीखने के लिए केवल जन्मजात क्षमता पर्याप्त नहीं हैए बल्कि बच्चे को भाषा.समृद्ध वातावरण की भी आवश्यकता होती है। परिवारए विद्यालयए समुदायए संवादात्मक अवसर तथा भाषा मॉडल स्।ैै के प्रमुख घटक हैंए जो भाषा अर्जन की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाते हैं। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह सिद्धांत विशेष महत्व रखता है क्योंकि यदि परिवार सांकेतिक भाषा नहीं जानता या बच्चे को पर्याप्त भाषाई अवसर उपलब्ध नहीं होतेए तो वह भाषा वंचना ;स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवदद्ध का शिकार हो सकता है। अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि प्रारम्भिक वर्षों में सुलभ भाषा के अभाव का प्रभाव भाषा विकास के साथ.साथ संज्ञानात्मकए सामाजिक और भावनात्मक विकास पर भी पड़ता है ;भ्ंससए स्मअपद - ।दकमतेवदए 2017द्ध। अतः परिवार और विद्यालय दोनों की सक्रिय भूमिका आवश्यक है। आधुनिक क्मं िम्कनबंजपवद का दृष्टिकोण इन सभी सिद्धांतों को समेकित करते हुए यह स्पष्ट

करता है कि श्रवण बाधित बच्चों की सबसे बड़ी आवश्यकता केवल श्ैचममबी म्गचवेनतमश् नहींए बल्कि श्संदहनंहम म्गचवेनतमश् है। वर्तमान शोध इस बात पर बल देते हैं कि बच्चे को जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में किसी न किसी पूर्णए समृद्ध और सुलभ भाषा का अनुभव अवश्य प्राप्त होना चाहिए। यह भाषा भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्धए अन्य प्राकृतिक सांकेतिक भाषा अथवा बहुभाषिक वातावरण का हिस्सा हो सकती है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भाषा बच्चे के लिए संप्रेषणीय और सुलभ हो। जब श्रवण बाधित बच्चों को प्रारम्भिक अवस्था में प्राकृतिक सांकेतिक भाषा का अवसर मिलता हैए तब उनका भाषिकए शैक्षणिक और सामाजिक विकास सामान्य रूप से आगे बढ़ सकता है। इस प्रकार चॉम्स्की का स्।क्ए वाइगोत्स्की का सामाजिक.सांस्कृतिक सिद्धांत तथा ब्रूनर का स्।ैै मिलकर यह सिद्ध करते हैं कि श्रवण बाधित बच्चों के लिए प्रारम्भिकए सुलभ और भाषा.समृद्ध वातावरण उपलब्ध कराना उनकी भाषा अर्जन प्रक्रिया की सफलता की आधारशिला है।

9.3.3 प्रथम भाषा ;स्1द्ध एवं द्वितीय भाषा ;स्2द्ध की अवधारणा भाषा विकास के क्षेत्र में प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा की अवधारणाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विशेष रूप से श्रवण बाधित बच्चों की शिक्षा में यह प्रश्न लंबे समय से चर्चा का विषय रहा है कि क्या बच्चे को पहले सांकेतिक भाषा सीखनी चाहिए या सीधे मौखिकध्लिखित भाषा सिखाई जानी चाहिए। पिछले तीन दशकों के भाषावैज्ञानिकए मनोभाषावैज्ञानिक तथा तंत्रिका.विज्ञान ;छमनतवेबपमदबमद्ध आधारित शोधों ने स्पष्ट किया है कि मजबूत प्रथम भाषा किसी भी द्वितीय भाषा के सफल विकास का आधार बनती है। इसलिए आज श्रवण बाधित शिक्षा में प्रश्न यह नहीं रह गया है कि बच्चा सांकेतिक भाषा सीखे या नहींए बल्कि यह है कि बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था में कौन.सी भाषा सबसे अधिक सुलभ और पूर्ण रूप से उपलब्ध कराई जा सकती है।

श्रवण बाधित शिक्षा में स्1दृस्2 से जुड़ी सामान्य भ्रांतियाँ और वास्तविक तथ्यरू

श्रवण बाधित बच्चों की शिक्षा में प्रथम भाषा ;स्1द्ध और द्वितीय भाषा ;स्2द्ध की भूमिका को लेकर अनेक भ्रांतियाँ प्रचलित हैं। विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में यह धारणा लंबे समय तक बनी रही कि सांकेतिक भाषा का प्रयोग बच्चों के वाचिक भाषा विकासए भाषण प्रशिक्षण तथा शैक्षणिक उपलब्धियों में बाधा उत्पन्न करता है। किंतु पिछले तीन दशकों में हुए भाषावैज्ञानिकए मनोभाषावैज्ञानिकए तंत्रिका.विज्ञान तथा बधिर शिक्षा से संबंधित अनुसंधानों ने इन धारणाओं को चुनौती दी है। वर्तमान शोध यह स्पष्ट करते हैं कि किसी भी बच्चे के समग्र विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता सुलभ भाषा हैए न कि किसी विशेष माध्यम में भाषा का होना। यदि बच्चा श्रवण के माध्यम से पर्याप्त भाषा नहीं प्राप्त कर सकताए तो उसे दृश्य रूप से सुलभ भाषा उपलब्ध कराना आवश्यक है। यही कारण है कि विश्वभर में द्विभाषी.द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण को बढ़ती स्वीकृति मिल रही है। इसके अतिरिक्तए भाषा अर्जनए संज्ञानात्मक विकासए साक्षरताए सामाजिक.भावनात्मक विकास तथा शैक्षणिक उपलब्धियों के मध्य गहरा संबंध पाया गया है। इसलिए श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में और स्2 ;जैसे हिंदी अंग्रेज़ी या अन्य लिखितध्मौखिक भाषाएँद्ध को प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि पूरक माना जाता है। फिर भी समाजए अभिभावकोंए शिक्षकों और कभी.कभी पेशेवरों के बीच अनेक भ्रांतियाँ विद्यमान हैं। इन भ्रांतियों का वैज्ञानिक आधार पर निराकरण करना आवश्यक है ताकि बच्चों को समय पर समृद्ध भाषा वातावरण उपलब्ध कराया जा सके। निम्नलिखित सारणी में स्1दृस्2 संबंधी प्रमुख भ्रांतियों और उनके वैज्ञानिक तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है।

श्रवण बाधित शिक्षा में स्1दृस्2 संबंधी सामान्य भ्रांतियाँ एवं तथ्यरू

क्रमांक भ्रांति

1 यदि बच्चा प्ैस् सीखेगा तो वह बोलना नहीं सीखेगा। शोध बताते हैं कि प्ैस् सीखना मौखिक भाषा विकास में बाधा नहीं बनता। बल्कि मजबूत प्रथम भाषा ;स्1द्ध होने से दूसरी भाषा ;स्2द्ध सीखना अधिक सरल हो जाता है।

2 पहले ैचममबी विकसित हो जाएए फिर ैपहद स्ंदहनंहम सिखाएँ।

भाषा विकास प्रतीक्षा नहीं करता। प्रारम्भिक वर्षों में सुलभ भाषा इनपुट आवश्यक है। यदि बच्चा भाषा से वंचित रहता है तो भाषा वंचना ;स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवदद्ध का खतरा बढ़ जाता है।

3 सांकेतिक भाषा केवल संचार का सहायक साधन है।प्ैस् एक पूर्ण प्राकृतिक भाषा है जिसमें अपना व्याकरणए शब्दावलीए वाक्य संरचना और भाषाई नियम होते हैं।

4 कोक्लियर इम्प्लांट या श्रवण यंत्र लगने के बाद सांकेतिक भाषा की आवश्यकता नहीं रहती। सभी बच्चे श्रवण तकनीकों से समान लाभ नहीं प्राप्त करते। अनेक बच्चों को तकनीकी सहायता के साथ.साथ सांकेतिक भाषा की भी आवश्यकता होती है।

5 सांकेतिक भाषा सीखने से बच्चा हिंदी या अंग्रेज़ी नहीं सीख पाएगा।

मजबूत स्1 आधार बच्चों को स्2 सीखने में सहायता प्रदान करता है। द्विभाषिकता संज्ञानात्मक और शैक्षणिक लाभ प्रदान कर सकती है।

6 केवल भाषण प्रशिक्षण ही भाषा विकास का सर्वोत्तम माध्यम है। भाषा और भाषण अलग अवधारणाएँ हैं। बच्चा भाषा सांकेतिकए लिखितए दृश्य या मौखिक किसी भी माध्यम से अर्जित कर सकता है।

7 श्रवण बाधित बच्चों को सामान्य बच्चों की तरह ही भाषा सिखाई जानी चाहिए। श्रवण बाधित बच्चों को सुलभ एवं दृश्य भाषा इनपुट की आवश्यकता होती है। उनकी भाषा शिक्षा में दृश्य रणनीतियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं।

8 सांकेतिक भाषा सीखने से बच्चा आलसी हो जाएगा और बोलने का प्रयास नहीं करेगा। अनुसंधान इस धारणा का समर्थन नहीं करते। भाषा तक पहुँच मिलने से बच्चा अधिक आत्मविश्वासीए सामाजिक और सीखने के लिए प्रेरित बनता है।

9 घर में सांकेतिक भाषा प्रयोग करने से परिवार और समाज से दूरी बढ़ती है। वास्तव में सांकेतिक भाषा परिवार के भीतर संवाद को बेहतर बनाती है तथा भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करती है।

10 सांकेतिक भाषा केवल गंभीर श्रवण बाधिता वाले बच्चों के लिए है।

सांकेतिक भाषा विभिन्न स्तर की श्रवण हानि वाले बच्चों के लिए उपयोगी हो सकती है और भाषा विकास को समर्थन देती है।

11 बच्चा बड़ा होने पर स्वयं भाषा सीख जाएगा प्रारम्भिक बचपन भाषा अर्जन की संवेदनशील अवधि होती है। इस अवधि में भाषा इनपुट न मिलने से दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकते हैं।

12 सांकेतिक भाषा सीखने से शैक्षणिक प्रदर्शन कम हो जाता है। अनेक अध्ययनों में पाया गया है कि प्रारम्भिक सांकेतिक भाषा अनुभव बच्चों की साक्षरताए पढ़ने की क्षमता और शैक्षणिक उपलब्धियों को बेहतर बना सकता है।

13 स्1 और स्2 को एक साथ सीखना बच्चे को भ्रमित कर देगा। द्विभाषिक बच्चों में भाषाओं के बीच स्थानांतरण सामान्य प्रक्रिया है। यह भ्रम नहीं बल्कि सीखने का स्वाभाविक भाग है।

14 केवल स्कूल भाषा विकास के लिए जिम्मेदार है।परिवारए समुदायए विद्यालयए सहपाठी तथा भाषा मॉडल सभी भाषा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

15 यदि बच्चा कुछ संकेत जानता है तो उसकी भाषा विकसित हो गई है।केवल शब्द या संकेत जानना पर्याप्त नहीं है। वास्तविक भाषा विकास में व्याकरणए वाक्य संरचनाए कथन क्षमताए समझ और सामाजिक प्रयोग शामिल होते हैं।

9.3.4 श्रवण बाधित बच्चों में भाषा अर्जन के विभिन्न मार्गरू

भाषा अर्जन मानव विकास की एक स्वाभाविक प्रक्रिया हैए किन्तु श्रवण बाधित बच्चों में यह प्रक्रिया उनकी श्रवण क्षमताए उपलब्ध भाषा इनपुटए पारिवारिक वातावरणए शैक्षिक अवसरों तथा हस्तक्षेप सेवाओं के आधार पर भिन्न.भिन्न रूप ले सकती है। सभी श्रवण बाधित बच्चे समान नहीं होतेय उनकी श्रवण हानि की मात्राए पहचान की आयुए सहायक उपकरणों की उपलब्धताए परिवार की भाषाई पृष्ठभूमि तथा विद्यालयी वातावरण में पर्याप्त विविधता पाई जाती है। इसी कारण भाषा अर्जन का कोई एकमात्र सार्वभौमिक मार्ग नहीं है। आधुनिक विशेष शिक्षा यह स्वीकार करती है कि भाषा तक पहुँच ;संदहनंहम ।बबमेेपइपसपजलद्ध किसी भी विशिष्ट माध्यम से अधिक महत्वपूर्ण है। बच्चे को ऐसी भाषा उपलब्ध होनी चाहिए जिसे वह पूर्ण रूप से ग्रहण कर सकेए समझ सके तथा प्रयोग कर सके।

भाषा अर्जन के प्रमुख मार्ग

श्रवण बाधित बच्चों में भाषा अर्जन एक समान प्रक्रिया नहीं होतीए बल्कि यह बच्चे की श्रवण क्षमताए भाषा परिवेशए पारिवारिक समर्थनए शैक्षिक अवसरोंए तकनीकी सहायता तथा प्रारम्भिक हस्तक्षेप की उपलब्धता पर निर्भर करती है। प्रत्येक बच्चा अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुसार भाषा सीखता है।

सामान्यतः श्रवण बाधित बच्चों में निम्नलिखित चार प्रमुख भाषा अर्जन मार्ग देखे जाते हैं.

1. मौखिक भाषा आधारित मार्ग
2. सांकेतिक भाषा आधारित मार्ग
3. द्विभाषिक मार्ग
4. बहु.माध्यमीय मार्ग

इन सभी मार्गों का उद्देश्य बच्चे को प्रभावी भाषाए संचार और अधिगम के अवसर प्रदान करना हैए यद्यपि प्रत्येक मार्ग की रणनीतियाँ और भाषा माध्यम अलग.अलग हो सकते हैं।

1. मौखिक भाषा आधारित मार्ग

इस दृष्टिकोण में भाषा विकास मुख्यतः श्रवण अवशेषए श्रवण यंत्रए कॉक्लियर इम्प्लांटए श्रवण प्रशिक्षण तथा वाणी प्रशिक्षण के माध्यम से किया जाता है। इस पद्धति का प्रमुख लक्ष्य बच्चे को उपलब्ध श्रवण क्षमता का अधिकतम उपयोग करने में सहायता देना तथा उसे मौखिक भाषा को सुननेए समझने और बोलने के लिए सक्षम बनाना है। इस मार्ग में प्रारम्भिक पहचान और प्रारम्भिक हस्तक्षेप

अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। बच्चे को नियमित रूप से ध्वनियों की पहचानए शब्दों की समझए उच्चारण सुधारए श्रवण भेदभाव तथा संवाद कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। परिवार की सक्रिय भागीदारीए घर पर भाषा अभ्यास तथा विद्यालय में निरंतर भाषाई प्रोत्साहन इस प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं। इसका उद्देश्य बच्चे को मौखिक भाषा के माध्यम से समाजए विद्यालय और दैनिक जीवन की गतिविधियों में सहभागिता के लिए तैयार करना होता है। साथ हीए यह दृष्टिकोण पढ़ने.लिखने की क्षमताए शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक संचार कौशल के विकास को भी समर्थन प्रदान करता है। हालांकिए इस मार्ग की सफलता बच्चे की श्रवण हानि की मात्राए तकनीकी उपकरणों से प्राप्त लाभए हस्तक्षेप की गुणवत्ता तथा उपलब्ध भाषा वातावरण पर निर्भर करती है। इसलिए सभी बच्चों के लिए इसकी प्रभावशीलता समान नहीं हो सकतीए और आवश्यकता पड़ने पर अन्य भाषा मार्गों के साथ इसका समन्वय भी किया जा सकता है।

2. सांकेतिक भाषा आधारित मार्ग

इस दृष्टिकोण में भाषा विकास का आधार प्राकृतिक सांकेतिक भाषाए जैसे भारतीय सांकेतिक भाषा होती है। यह मार्ग इस सिद्धांत पर आधारित है कि प्रत्येक बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था से ही एक पूर्णए सुलभ और समृद्ध भाषा उपलब्ध होनी चाहिए। चूँकि श्रवण बाधित बच्चे श्रवण माध्यम से पर्याप्त भाषा इनपुट प्राप्त नहीं कर पातेए इसलिए उन्हें दृश्य माध्यम से भाषा प्रदान की जाती है। इस पद्धति में बच्चे भाषा को संकेतोंए मुखाभिव्यक्तियोंए शारीरिक मुद्राओं तथा दृश्य संकेतों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से अर्जित करते हैं। यदि परिवारए विद्यालय और समुदाय में सांकेतिक भाषा का नियमित उपयोग होए तो बच्चा उसी प्रकार भाषा सीख सकता है जैसे श्रवणक्षम बच्चे मौखिक भाषा सीखते हैं। प्रारम्भिक सांकेतिक भाषा संपर्क बच्चे के संज्ञानात्मकए सामाजिकए

भावनात्मक तथा भाषाई विकास को सुदृढ़ बनाता है। इस मार्ग का प्रमुख उद्देश्य बच्चे को भाषा तक पूर्ण पहुँच प्रदान करनाए प्रभावी संचार विकसित करना तथा सीखने के लिए मजबूत भाषाई आधार तैयार करना है। आधुनिक शोध यह दर्शाते हैं कि प्रारम्भिक सांकेतिक भाषा अनुभव भाषा वंचना के जोखिम को कम करता है तथा आगे चलकर साक्षरता और शैक्षणिक उपलब्धियों में भी सहायक होता है। विशेष रूप से गहन एवं अति.गहन श्रवण बाधिता वाले बच्चों के लिए यह मार्ग अत्यंत प्रभावी माना जाता है।

3. द्विभाषिक मार्ग

द्विभाषिक मार्ग में बच्चे को दो भाषाओं का व्यवस्थित अनुभव प्रदान किया जाता है। श्रवण बाधित शिक्षा में सामान्यतः भारतीय सांकेतिक भाषा को प्रथम भाषा तथा हिंदीए अंग्रेज़ी अथवा अन्य लिखितध्मौखिक भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में विकसित किया जाता है। यह दृष्टिकोण इस मान्यता पर आधारित है कि मजबूत प्रथम भाषा दूसरी भाषा के अधिगम को सरल और प्रभावी बनाती है। इस पद्धति में बच्चा पहले ऐसी भाषा अर्जित करता है जो उसके लिए पूर्णतः सुलभ होए अर्थात् इसके पश्चात उसी भाषाई आधार का उपयोग करते हुए उसे पढ़नाए लिखना तथा अन्य भाषाओं को सीखने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। भाषा की अवधारणाएँए शब्दार्थए व्याकरणिक संरचनाएँ और संज्ञानात्मक कौशल एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित हो सकते हैंए जिससे सीखना अधिक सार्थक बनता है। द्विभाषिक दृष्टिकोण बच्चे को दो भाषाई संसारों से जोड़ता हैकृएक ओर वह बधिर समुदाय और सांकेतिक भाषा संस्कृति से जुड़ता हैए वहीं दूसरी ओर व्यापक समाज की लिखित एवं मौखिक भाषाओं तक भी पहुँच प्राप्त करता है। इस मार्ग का उद्देश्य केवल संचार कौशल विकसित करना नहींए बल्कि साक्षरताए शैक्षणिक सफलताए सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समावेशन को भी प्रोत्साहित करना है। वर्तमान समय में अनेक देशों में

द्विभाषिक.द्विसांस्कृतिक मॉडल को प्रभावी शैक्षिक दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

4 बहु.माध्यमीय मार्ग

बहु.माध्यमीय मार्ग भाषा और संचार विकास के लिए एक से अधिक माध्यमों का उपयोग करता है। इस दृष्टिकोण में बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओंए क्षमताओं और परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न संचार विधियों को संयोजित किया जाता है। इनमें मौखिक भाषाए सांकेतिक भाषाए संकेत.सह.भाषणए होंठ पढ़नाए दृश्य संकेतए चित्रए लिखित भाषाए संचार बोर्डए डिजिटल तकनीक तथा सहायक एवं वैकल्पिक संचार शामिल हो सकते हैं।यह दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित है कि सभी श्रवण बाधित बच्चों की आवश्यकताएँ समान नहीं होतीं। कुछ बच्चे श्रवण यंत्र या कॉक्लियर इम्प्लांट से पर्याप्त लाभ प्राप्त करते हैंए जबकि कुछ बच्चों को दृश्य भाषा समर्थन की अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए संचार के विभिन्न साधनों का समन्वित उपयोग बच्चे को अधिक व्यापक भाषा अनुभव प्रदान करता है। बहु.माध्यमीय मार्ग विशेष रूप से उन बच्चों के लिए उपयोगी हो सकता है जिनमें अतिरिक्त दिव्यांगताएँ होंए जिनकी भाषा आवश्यकताएँ जटिल हों या जिनके लिए एकल संचार प्रणाली पर्याप्त न हो। इस पद्धति का मुख्य उद्देश्य बच्चे को अधिकतम संचार अवसर उपलब्ध करानाए भाषा तक पहुँच सुनिश्चित करना तथा विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षणिक परिस्थितियों में प्रभावी सहभागिता विकसित करना है। वर्तमान समावेशी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में बहु.माध्यमीय दृष्टिकोण को लचीलाए बाल.केंद्रित तथा आवश्यकता.आधारित मॉडल माना जाता हैए क्योंकि यह किसी एक संचार माध्यम तक सीमित न रहकर बच्चे की भाषाई और संचार संबंधी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देता है।

भाषा पहुँच सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत

आधुनिक क्मं िम्कनबंजपवद का प्रमुख सिद्धांत है कि भाषा का माध्यम नहींए बल्कि भाषा तक प्रभावी पहुँच सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यदि श्रवण बाधित बच्चा किसी भाषा को पूर्णतः समझ सकेए उसका प्रयोग कर सके तथा उसके माध्यम से विचार कर सकेए तो वही भाषा उसके भाषाईए संज्ञानात्मकए सामाजिक और शैक्षणिक विकास की सुदृढ़ आधारशिला बनती है।

9.3.5 भाषाए संज्ञान एवं सामाजिक.भावनात्मक विकास का अंतर्संबंध

मानव विकास के विभिन्न आयामकृभाषाए संज्ञानए सामाजिक व्यवहार तथा भावनात्मक विकासकृएक.दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। इनमें से किसी एक क्षेत्र का विकास अन्य क्षेत्रों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। विशेष रूप से भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने अनुभवों को व्यवस्थित करता हैए ज्ञान का निर्माण करता हैए सामाजिक संबंध विकसित करता है तथा अपनी भावनाओं को समझता और व्यक्त करता है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह संबंध और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भाषा तक सीमित पहुँच केवल संचार को ही प्रभावित नहीं करतीए बल्कि संज्ञानात्मक विकासए शैक्षणिक उपलब्धिए सामाजिक सहभागिताए आत्म.धारणा तथा मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डाल सकती है। आधुनिक शोध यह स्पष्ट करते हैं कि समस्या श्रवण हानि नहीं हैए बल्कि भाषा तक अपर्याप्त पहुँच है। यदि बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था में सुलभ भाषा उपलब्ध हो जाएए चाहे वह हो या कोई अन्य सांकेतिक भाषाए तो उसका समग्र विकास अधिक प्रभावी ढंग से हो सकता है।

भाषा और संज्ञान

भाषा और संज्ञान का संबंध मानव विकास के सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं हैए बल्कि यह सोचने

समझने योजना बनाने और ज्ञान का निर्माण करने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है। संज्ञानात्मक विकास और भाषा विकास एक.दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं तथा दोनों का विकास परस्पर प्रभाव के साथ आगे बढ़ता है।

संज्ञान क्या हैघ्ू संज्ञान उन मानसिक प्रक्रियाओं का समूह है जिनके माध्यम से व्यक्ति.

- सोचता हैए
- सीखता हैए
- याद रखता हैए
- समस्या हल करता हैए
- निर्णय लेता हैए
- तर्क करता हैए
- कल्पना करता हैए
- अनुभवों को व्यवस्थित करता हैए
- तथा नए ज्ञान का निर्माण करता है।

इन सभी प्रक्रियाओं के विकास में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा व्यक्ति को अपने अनुभवों को अर्थ देनेए विचारों को संगठित करने तथा दूसरों के साथ साझा करने की क्षमता प्रदान करती है।

भाषा और विचार का संबंधरू लंबे समय से मनोवैज्ञानिकों और भाषाविज्ञानियों के बीच यह प्रश्न चर्चा का विषय रहा हैकृ

ष्क्या भाषा विचारों को प्रभावित करती है या विचार भाषा कोघ्ष्

आज अधिकांश विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भाषा और विचार दोनों परस्पर एक.दूसरे को प्रभावित करते हैं। विचार भाषा के विकास को दिशा देते हैंए वहीं भाषा विचारों को अधिक संगठितए स्पष्ट और जटिल बनाने में सहायता करती है। जैसे.जैसे बच्चे की भाषा समृद्ध होती हैए वैसे.वैसे उसकी अवधारणात्मक समझए तर्क क्षमता तथा समस्या समाधान कौशल भी विकसित होते हैं।

पियाजे ;श्रमंद च्पंहमजद्ध का दृष्टिकोणरू पियाजे के अनुसार ष्संज्ञानात्मक विकास भाषा विकास से पहले प्रारम्भ होता है।ष् उनका मानना था कि बच्चा पहले अपने वातावरण को समझता है और बाद में उन अनुभवों को व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। अर्थात् भाषा संज्ञानात्मक विकास का परिणाम हैए यद्यपि बाद में दोनों एक.दूसरे को प्रभावित करते हैं।

पियाजे के अनुसार

संवेदी.गतिशील अवस्था ;0द्2 वर्षद्ध

- बच्चा इन्द्रियों एवं गतिविधियों के माध्यम से सीखता है।
- वस्तु स्थायित्व ;व्इरमबज च्मतउंदमदबमद्ध विकसित होता है।
- कारण.परिणाम संबंधों की प्रारम्भिक समझ विकसित होने लगती है।

पूर्व.संक्रियात्मक अवस्था

- प्रतीकात्मक चिंतन विकसित होता है।
- भाषा का तीव्र विकास होता है।

- बच्चा शब्दोंए संकेतों और प्रतीकों का उपयोग करके वस्तुओं एवं घटनाओं का प्रतिनिधित्व करना सीखता है।

- श्रवण बाधित बच्चों में निहितार्थ

यदि बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था में सुलभ भाषा उपलब्ध हो तो वह प्रतीकात्मक चिंतनए कल्पनाशील खेल ;च्तमजमदक च्संलद्धए अवधारणा निर्माण तथा संज्ञानात्मक विकास में प्रभावी प्रगति कर सकता है। भाषा तक पहुँच संज्ञानात्मक क्षमताओं के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वाइगोत्स्की का दृष्टिकोणरू वाइगोत्स्की ने भाषा को संज्ञानात्मक विकास का प्रमुख उपकरण माना। उनके अनुसार सामाजिक संवाद और भाषा सीखने की प्रक्रिया विचारों के विकास का आधार हैं। ष्भाषा सोचने का साधन है।ष् वाइगोत्स्की का मानना था कि बच्चा दूसरों के साथ संवाद करते हुए ज्ञान का निर्माण करता है और धीरे.धीरे यह बाहरी संवाद आंतरिक चिंतन में परिवर्तित हो जाता है।

निजी भाषा

छोटे बच्चे स्वयं से बात करते हुए कार्य करते हैं। उदाहरणरू ;पद्ध ष्पहले यह रखूँगा। यह बन गया।

ष्यहाँ गलती हो गईए फिर से करूँगा।ष् और ;पपपद्ध धीरे.धीरे यही निजी भाषा आंतरिक भाषा ;प्ददमत ैचममबीद्ध में बदल जाती है और व्यक्ति के सोचने का आधार बनती है।

श्रवण बाधित बच्चों मेंरू यदि बच्चा प्ैस् के माध्यम से विचार व्यक्त करता है तो यही प्रक्रिया दृश्य रूप में विकसित होती है। अर्थात् आंतरिक भाषा केवल ध्वनि

आधारित नहीं होतीय यह सांकेतिक भाषाए दृश्य प्रतीकों तथा मानसिक संकेतों के माध्यम से भी विकसित हो सकती है। यह तथ्य दर्शाता है कि प्रभावी भाषा का होना अधिक महत्वपूर्ण हैए न कि उसका माध्यम।

भाषा और कार्यकारी क्रियाएँ

कार्यकारी क्रियाएँ उच्च स्तरीय मानसिक प्रक्रियाएँ हैं जो व्यक्ति को अपने व्यवहारए सीखने और निर्णयों को नियंत्रित करने में सहायता करती हैं। ये विद्यालयी सफलताए सामाजिक व्यवहार और दैनिक जीवन के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनमें शामिल हैंकृ

- कार्यशील स्मृति जानकारी को अस्थायी रूप से याद रखना और उसका उपयोग करना।
- ध्यान नियंत्रण महत्वपूर्ण जानकारी पर ध्यान केंद्रित करना और विकर्षणों को नियंत्रित करना।
- आत्म.नियमन अपने व्यवहार और भावनाओं को नियंत्रित करना।
- योजना निर्माण लक्ष्य निर्धारित करना तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए चरणबद्ध योजना बनाना।
- निर्णय लेना ;क्मबपेपवद डंापदहद्धरू विभिन्न विकल्पों का मूल्यांकन कर उचित चयन करना।

भाषा की भूमिकारू भाषा व्यक्ति को सोच को व्यवस्थित करनेए समस्याओं का विश्लेषण करनेए विकल्पों की तुलना करनेए

भविष्य की योजना बनानेए तथा आत्म.निर्देशन विकसित करने में सहायता करती है। इसलिए समृद्ध भाषा अनुभव कार्यकारी क्रियाओं के विकास को भी सुदृढ़ करता है।

भाषा और अवधारणा निर्माण

भाषा ज्ञान के संगठन और वर्गीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम है। यह व्यक्ति को वस्तुओंए घटनाओं और विचारों के बीच संबंध स्थापित करने में सहायता करती है। उदाहरणरू यदि बच्चा ष्पक्षीष् की अवधारणा समझता है तो वह कबूतरए तोताए चिड़ियाए मैना को एक ही वर्ग में रख सकता है। इसी प्रकार वह जीवित.अजीवितए बड़ा.छोटाए गर्म.ठंडा जैसी अवधारणाओं का निर्माण भी करता है।

श्रवण बाधित बच्चों में यदि भाषा इनपुट सीमित है तो अवधारणा निर्माण धीमा हो सकता हैए अमूर्त चिंतन प्रभावित हो सकता है।

शैक्षणिक सीखना कठिन हो सकता हैए विषयों के बीच संबंध स्थापित करने में कठिनाई आ सकती हैए इसलिए प्रारम्भिक और समृद्ध भाषा अनुभव अत्यंत आवश्यक है।

भाषा और सामाजिक विकासरू मनुष्य सामाजिक प्राणी है और सामाजिक संबंधों का निर्माण मुख्यतः भाषा के माध्यम से होता है। भाषा व्यक्ति को दूसरों के विचार समझनेए अपने अनुभव साझा करने और सामाजिक समूहों में भाग लेने का अवसर प्रदान करती है।

भाषा सामाजिक विकास में कैसे सहायता करती हैघ्

1ण् सामाजिक अन्तःक्रिया

2ण् सहयोग

3ण् सामाजिक नियम सीखना

4ण् पहचान निर्माण

मित्र बनानाए संवाद करना तथा संबंधों को बनाए रखना।

समूह गतिविधियोंए खेलों और परियोजनाओं में सक्रिय भागीदारी।

अभिवादन करना

धन्यवाद देना

माफी माँगना

दूसरों की बात सुनना समुदायए संस्कृति और सामाजिक समूहों से जुड़ाव विकसित करना।

श्रवण बाधित बच्चों का सामाजिक विकासरू यदि बच्चे को प्रभावी भाषा उपलब्ध है तो वह मित्र बना सकता हैए समूह चर्चा में भाग ले सकता हैए सामाजिक संबंध स्थापित कर सकता हैए नेतृत्वकारी भूमिकाएँ निभा सकता है। लेकिन यदि भाषा उपलब्ध नहीं है तो सामाजिक अलगाव ;ैवबपंस प्ेवसंजपवदद्धए गलतफहमियाँ तथा सीमित सामाजिक सहभागिता की संभावना बढ़ सकती है।

भाषा और भावनात्मक विकास भावनाओं को समझनाए पहचानना और व्यक्त करना भाषा पर काफी हद तक निर्भर करता है। भाषा व्यक्ति को अपने अनुभवों और भावनाओं को अर्थ देने में सहायता करती है।

भावनात्मक शब्दावली का महत्वरू जब बच्चा शब्द सीखता है खुशीए दुःख ए क्रोध ए भय एआश्चर्य एगर्व ए निराशा

तो वह अपनी भावनाओं को बेहतर समझने और व्यक्त करने लगता है।

भावनात्मक आत्म.नियमन

भाषा व्यक्ति को अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में सहायता करती है।

उदाहरण ष्मुझे गुस्सा आ रहा हैष् या ष्मैं अभी परेशान महसूस कर रहा हूँष्

कह पाना भावनात्मक नियंत्रण और आत्म.जागरूकता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

श्रवण बाधित बच्चों में भावनात्मक विकासरू यदि बच्चा पर्याप्त भाषा नहीं सीख पाता तो.

- भावनाओं को पहचानने में कठिनाई हो सकती है।
- भावनाओं को व्यक्त करने में समस्या हो सकती है।
- व्यवहार संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- सामाजिक संबंधों में गलतफहमियाँ बढ़ सकती हैं।

इसके विपरीतए समृद्ध भाषा वातावरण भावनात्मक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करता है।

भाषा और आत्म.पहचान ;प्कमदजपजल क्मअमसवचउमदजद्ध

भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं बल्कि पहचान ;प्कमदजपजलद्ध का भी आधार है। व्यक्ति अपनी भाषा के माध्यम से संस्कृतिए समुदाय और सामाजिक मूल्यों से जुड़ता है।

क्मं िप्कमदजपजल

बहुत से श्रवण बाधित व्यक्ति स्वयं को ष्कम सुनने वाला व्यक्तिष् नहीं बल्कि क्मं िब्वउउनदपजल का सदस्य मानते हैं। सांकेतिक भाषा उनके लिए केवल संचार का माध्यम नहीं बल्कि सांस्कृतिक विरासत और सामुदायिक पहचान का स्रोत भी है।

प्ैस् उन्हेंकृ

ऽ सांस्कृतिक पहचानए

ऽ सामाजिक जुड़ावए

ऽ आत्म.सम्मानए

ऽ तथा समुदाय से अपनत्व की भावना

प्रदान करती है।

भाषा वंचना का प्रभाव

यदि प्रारम्भिक वर्षों में भाषा उपलब्ध न हो तो इसके प्रभाव जीवन के अनेक क्षेत्रों में दिखाई दे सकते हैं।

संज्ञानात्मक प्रभाव सामाजिक प्रभाव भावनात्मक प्रभाव शैक्षणिक प्रभाव

ऽ कमजोर स्मृति

ऽ सीमित अमूर्त चिंतन

ऽ समस्या समाधान में कठिनाई

ऽ अवधारणात्मक विकास में विलंब

- सामाजिक अलगाव
- सीमित मित्रता
- समूह गतिविधियों में कम सहभागिता
- आत्मविश्वास में कमी
- निराशा
- व्यवहारिक समस्याएँ
- भावनात्मक असंतुलन
- कम साक्षरता
- कम उपलब्धि
- विद्यालयी कठिनाइयाँ
- पढ़ने और लिखने में चुनौतियाँ

श्रवण बाधित शिक्षा के लिए निहितार्थरू शिक्षकोंए अभिभावकों और पेशेवरों को यह समझना चाहिए किकृ

- भाषा केवल संचार नहीं है।
- भाषा संज्ञानात्मक विकास का आधार है।
- भाषा सामाजिक विकास का माध्यम है।
- भाषा भावनात्मक स्वास्थ्य से जुड़ी है।
- भाषा आत्म.पहचान के निर्माण में योगदान देती है।

· प्रारम्भिक प्ैस् तथा अन्य सुलभ भाषा अनुभव समग्र विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

· भाषा पहुँच सुनिश्चित करना प्रत्येक श्रवण बाधित बच्चे का मूल शैक्षिक अधिकार है।

चिंतन कीजिए

यदि किसी श्रवण बाधित बच्चे की भाषा क्षमता सीमित हैए तो क्या उसकी शैक्षणिक कठिनाइयों का कारण केवल बुद्धिलब्धि हो सकता हैघ् भाषाए संज्ञानए सामाजिक विकासए भावनात्मक स्वास्थ्य तथा भाषा पहुँच के अंतर्संबंधों को ध्यान में रखते हुए अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। यह भी विचार कीजिए कि समय पर उपलब्ध सुलभ भाषा किस प्रकार बच्चे की सीखने की क्षमता और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है।

9.4 भाषा विकास का जैविक आधार

भाषा अर्जन मानव विकास की सबसे जटिल एवं अद्भुत उपलब्धियों में से एक है। जन्म के कुछ ही वर्षों में बच्चा हजारों शब्दों का अर्थ समझने लगता हैए व्याकरणिक नियमों का प्रयोग करने लगता है तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप भाषा का उपयोग करने में सक्षम हो जाता है। यह प्रश्न लंबे समय से वैज्ञानिकोंए मनोवैज्ञानिकोंए भाषाविज्ञानियों एवं तंत्रिका वैज्ञानिकों के लिए आकर्षण का विषय रहा है कि भाषा सीखने की यह असाधारण क्षमता कहाँ से आती है। क्या भाषा केवल वातावरण से सीखी जाती हैघ् या मानव मस्तिष्क जन्म से ही भाषा अर्जन के लिए तैयार होता हैघ् आधुनिक शोध यह स्पष्ट करते हैं कि भाषा विकास न तो केवल जैविक प्रक्रिया है और न ही केवल पर्यावरणीय प्रक्रिया। यह जैविक तैयारी ;ठपवसवहपबंस च्तमचंतमकदमेेद्धए मस्तिष्कीय

परिपक्वताए आनुवंशिक कारकोंए सामाजिक अन्तःक्रिया तथा भाषा अनुभवों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में जैविक आधार को समझना विशेष रूप से आवश्यक है क्योंकि इससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा विकास का मूल आधार श्रवण ;भ्मंतपदहद्ध नहींए बल्कि भाषा तक पहुँच ;स्ंदहनंहम ।बबमेेद्ध है। यदि मस्तिष्क को सुलभ भाषा इनपुट प्राप्त होए तो वह दृश्य माध्यम ;प्ैस्द्ध के द्वारा भी भाषा का विकास कर सकता है।

9.4.1 भाषा अर्जन की जैविक तैयारी

मानव शिशु जन्म के समय किसी विशिष्ट भाषा का ज्ञान लेकर पैदा नहीं होताए किन्तु वह भाषा सीखने की अद्भुत और स्वाभाविक क्षमता के साथ जन्म लेता है। यह क्षमता मानव विकास की सबसे महत्वपूर्ण जैविक विशेषताओं में से एक मानी जाती है। विश्व की कोई भी भाषाकृचाहे वह हिन्दीए अंग्रेज़ीए तमिलए कन्नड़ए भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्धए अमेरिकी सांकेतिक भाषा ;।ैस्द्ध अथवा कोई अन्य भाषा होकृयदि बच्चे को जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में पर्याप्तए निरंतर और अर्थपूर्ण भाषा इनपुट प्राप्त होए तो वह उस भाषा को स्वाभाविक रूप से अर्जित कर सकता है। यही कारण है कि विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक परिवेशों में जन्मे बच्चे अपने आसपास प्रयुक्त भाषा को बिना औपचारिक शिक्षण के सीख लेते हैं। भाषा अर्जन की यह क्षमता मानव मस्तिष्क की जैविक तैयारी और पर्यावरणीय अनुभवों के पारस्परिक प्रभाव का परिणाम है। विभिन्न शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि नवजात शिशु जन्म के तुरंत बाद से ही संचार संबंधी संकेतों के प्रति संवेदनशील होता है। वह विभिन्न ध्वनियों में अंतर पहचान सकता हैए चेहरे के भावों और नेत्र संपर्क पर ध्यान देता हैए लय और स्वर ;त्ीलजीउ ंदक प्दजवदंजपवदद्ध में भिन्नताओं को ग्रहण कर सकता है तथा संचार पैटर्न को पहचानने की प्रारम्भिक क्षमता रखता है। श्रवण बाधित शिशुओं में भी यह संवेदनशीलता दृश्य संकेतोंए चेहरे की अभिव्यक्तियोंए हाथों की गतिविधियों

तथा सांकेतिक संचार की ओर देखी जा सकती है। यही प्रारम्भिक क्षमताएँ आगे चलकर भाषा अर्जनए सामाजिक संचार और संज्ञानात्मक विकास की आधारशिला बनती हैं। शोध यह भी दर्शाते हैं कि जीवन के प्रारम्भिक वर्ष भाषा सीखने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैंए क्योंकि इसी अवधि में मस्तिष्क भाषा संबंधी अनुभवों के प्रति सबसे अधिक ग्रहणशील रहता है। भाषा अर्जन की इस जन्मजात क्षमता को समझाने में भाषाविद् नोआम चॉम्स्की का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने यह प्रस्तावित किया कि मानव मस्तिष्क में भाषा सीखने के लिए एक जन्मजात प्रणाली विद्यमान होती हैए जिसे उन्होंने स्ंदहनंहम ।बुनपेपजपवद क्मअपबम ;स्।क्द्ध नाम दिया। चॉम्स्की के अनुसार बच्चे भाषा के जटिल नियमों को केवल अनुकरण के माध्यम से नहीं सीखतेए बल्कि उनके मस्तिष्क में भाषा संरचनाओं को समझने और व्यवस्थित करने की अंतर्निहित क्षमता होती है। यद्यपि आधुनिक तंत्रिका.विज्ञान स्।क् को मस्तिष्क की किसी पृथक संरचना के रूप में स्वीकार नहीं करताए फिर भी अधिकांश वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि मानव मस्तिष्क भाषा सीखने के लिए जैविक रूप से तैयार होता है। यही जैविक तैयारी बच्चों को सीमित इनपुट से भी भाषा के नियमों का अनुमान लगानेए नए वाक्य बनाने तथा प्रभावी संचार विकसित करने में सक्षम बनाती है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह तथ्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैए क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि उनकी भाषा अर्जन क्षमता सुरक्षित रहती हैय आवश्यकता केवल इस बात की होती है कि उन्हें समय पर सुलभ और समृद्ध भाषा इनपुटकृविशेषकर सांकेतिक भाषा जैसे दृश्य माध्यमोंकृके द्वारा उपलब्ध कराया जाए।

9.4.2 मस्तिष्क और भाषा

भाषा विकास मानव मस्तिष्क की अत्यंत जटिल एवं संगठित प्रक्रिया हैए जो विभिन्न मस्तिष्कीय संरचनाओं तथा न्यूरल नेटवर्कों के समन्वित कार्य पर

आधारित होती है। भाषा केवल शब्दों को सुननेए समझने या बोलने तक सीमित नहीं हैए बल्कि इसमें ध्वनियों की पहचानए अर्थ ग्रहण करनाए वाक्य निर्माणए स्मृतिए ध्यानए तर्कए सामाजिक संचार तथा विचारों की अभिव्यक्ति जैसी अनेक प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। प्रारम्भिक शोधों में यह माना जाता था कि भाषा मुख्य रूप से मस्तिष्क के कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में स्थित होती हैए किंतु आधुनिक तंत्रिका.विज्ञान ;छमनतवेबपमदबमद्ध तथा मस्तिष्क इमेजिंग तकनीकोंए जैसे डित्प् और च्म्ज् स्कैनए ने यह स्पष्ट किया है कि भाषा पूरे मस्तिष्क में फैले हुए अनेक परस्पर जुड़े न्यूरल नेटवर्कों के सहयोग से संचालित होती है। यही कारण है कि भाषा विकास को समझने के लिए मस्तिष्क के विभिन्न भागों तथा उनके बीच होने वाले संचार को समझना आवश्यक है।

1. ब्रोका क्षेत्र

ब्रोका क्षेत्र मस्तिष्क के बाएँ गोलार्द्ध ;स्मजि भ्मउपेचीमतमद्ध के फ्रंटल लोब में स्थित होता है और इसे भाषा उत्पादन का प्रमुख केंद्र माना जाता है। यह क्षेत्र बोलने के लिए आवश्यक मांसपेशीय गतिविधियों की योजना बनानेए शब्दों को व्यवस्थित करनेए वाक्य निर्माण तथा व्याकरणिक संरचना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब कोई व्यक्ति अपने विचारों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता हैए तब ब्रोका क्षेत्र सक्रिय रूप से कार्य करता है। यदि इस क्षेत्र में क्षति हो जाए तो व्यक्ति सामान्यतः दूसरों की बात समझ सकता हैए किंतु स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण भाषा बोलने में कठिनाई अनुभव करता है। इस स्थिति को ब्रोका अफेज़िया कहा जाता हैए जिसमें भाषण धीमाए खंडित और व्याकरणिक रूप से अपूर्ण हो सकता है।

2. वेर्निके क्षेत्र

वेर्निके क्षेत्र बाएँ गोलार्द्ध के टेम्पोरल लोब में स्थित होता है और भाषा को समझने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र शब्दों के अर्थ ग्रहण करनेए भाषाई सूचना का विश्लेषण करने तथा सुनी या पढ़ी गई भाषा को समझने में सहायता करता है। जब हम किसी वार्तालापए व्याख्यान या लिखित पाठ को समझते हैंए तब वेर्निके क्षेत्र सक्रिय रहता है। यदि इस क्षेत्र में क्षति हो जाए तो व्यक्ति धाराप्रवाह बोल सकता हैए लेकिन उसके वाक्यों में अर्थपूर्णता का अभाव हो सकता है और वह दूसरों की भाषा को सही प्रकार से समझ नहीं पाता। इस स्थिति को वेर्निके अफेज़िया ;ॅमतदपबामष्े ।चींेपंद्ध कहा जाता है।

3. आर्कुएट फासीकुलस

आर्कुएट फासीकुलस तंत्रिका तंतुओं ;छमतअम थ्पइतमेद्ध का एक महत्वपूर्ण समूह है जो ब्रोका क्षेत्र और वेर्निके क्षेत्र के बीच संपर्क स्थापित करता है। यह दोनों क्षेत्रों के बीच भाषाई सूचनाओं के आदान.प्रदान का कार्य करता है तथा भाषा को समझने और व्यक्त करने के बीच समन्वय बनाए रखता है। यह विशेष रूप से शब्दों और वाक्यों की पुनरावृत्ति ;त्मचमजपजपवदद्धए श्रवण सूचना को भाषाई अभिव्यक्ति में परिवर्तित करने तथा भाषाई प्रसंस्करण की गति को बनाए रखने में सहायक होता है। इस मार्ग में क्षति होने पर व्यक्ति भाषा समझ सकता है और बोल भी सकता हैए लेकिन शब्दों या वाक्यों को दोहराने में कठिनाई अनुभव कर सकता है।

4. प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स

प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स मस्तिष्क का वह क्षेत्र है जो उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं और कार्यकारी क्रियाओं ;ग्गमबनजपअम थ्नदबजपवदेद्ध को नियंत्रित करता है। यह योजना निर्माणए निर्णय लेनेए ध्यान नियंत्रणए समस्या समाधानए

आत्म.नियमन तथा जटिल भाषाई प्रसंस्करण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भाषा के प्रयोग के दौरान व्यक्ति को संदर्भ के अनुसार उचित शब्द चुननेए विचारों को क्रमबद्ध करने तथा संवाद को व्यवस्थित रखने में इसी क्षेत्र की सहायता मिलती है। शैक्षणिक अधिगम तथा उच्च स्तरीय भाषा कौशलों के विकास में इसका विशेष महत्व है।

5. दृश्य प्रांतस्था

दृश्य प्रांतस्था ;टपेनंस ब्वतजमगद्ध ऑक्सिपिटल लोब में स्थित होती है और दृश्य सूचनाओं के प्रसंस्करण का प्रमुख केंद्र है। श्रवण बाधित व्यक्तियों तथा सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं में इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि वे भाषा को मुख्यतः दृश्य माध्यम से ग्रहण करते हैं। सांकेतिक भाषा के संकेतए हाथों की गतियाँए चेहरे की अभिव्यक्तियाँ तथा शारीरिक मुद्राएँ इसी दृश्य प्रणाली के माध्यम से संसाधित होती हैं। अनेक न्यूरोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि सांकेतिक भाषा का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों में दृश्य प्रांतस्था तथा भाषा संबंधी क्षेत्रों के बीच अधिक प्रभावी समन्वय विकसित हो सकता है।

भाषा मस्तिष्क में कहाँ स्थित हैघ् आधुनिक शोधों के अनुसार भाषा किसी एक मस्तिष्कीय क्षेत्र में सीमित नहीं होतीए बल्कि यह अनेक परस्पर जुड़े हुए न्यूरल नेटवर्कों में वितरित होती है। भाषा को समझनेए बोलनेए पढ़नेए लिखनेए संकेतों को ग्रहण करने तथा सामाजिक संदर्भ में उपयोग करने के लिए मस्तिष्क के विभिन्न भाग एक साथ कार्य करते हैं। यही कारण है कि आज भाषा को केवल ब्रोका या वेर्निके क्षेत्र तक सीमित न मानकर एक वितरित न्यूरल प्रणाली के रूप में समझा जाता है। इसलिए भाषा विकासए भाषा विकारों तथा श्रवण बाधित बच्चों में भाषा अर्जन को समझने के लिए संपूर्ण मस्तिष्कीय प्रणाली और उसके कार्यात्मक नेटवर्कों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। विशेष रूप से सांकेतिक

भाषा अनुसंधानों ने यह सिद्ध किया है कि मानव मस्तिष्क भाषा को उसके माध्यम ;ध्वनि या संकेतद्ध के आधार पर नहीं बल्कि उसकी भाषाई संरचना के आधार पर संसाधित करता हैए जो भाषा की जैविक और सार्वभौमिक प्रकृति को दर्शाता है।

9.4.3 सांकेतिक भाषा और मस्तिष्क

लंबे समय तक यह गलत धारणा प्रचलित रही कि सांकेतिक भाषाएँ केवल हाथों की गतिविधियोंए इशारों या दृश्य संकेतों का समूह हैं तथा उनका मस्तिष्कीय आधार मौखिक भाषाओं की तुलना में कम विकसित होता है। इस कारण कई वर्षों तक सांकेतिक भाषाओं को पूर्ण भाषा के रूप में मान्यता नहीं दी गई। किंतु पिछले कुछ दशकों में न्यूरोविज्ञान ;छमनतवेबपमदबमद्धए मनोभाषाविज्ञान ;च्ेलबीवसपदहनपेजपबेद्ध तथा मस्तिष्क इमेजिंग तकनीकों के विकास ने इस धारणा को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया है। आधुनिक न्यूरोइमेजिंग अध्ययनोंए जैसे फंक्शनल मैग्नेटिक रेज़ोनेंस इमेजिंग ;डित्प्द्धए पॉज़िट्रॉन एमिशन टोमोग्राफी ;च्म्ज्द्ध तथा इलेक्ट्रोफिजियोलॉजिकल अध्ययनों से यह प्रमाणित हुआ है कि सांकेतिक भाषाएँ भी मस्तिष्क में उसी प्रकार संसाधित ;च्तवबमेेद्ध होती हैं जैसे मौखिक भाषाएँ।

महत्वपूर्ण शोध निष्कर्षों से ज्ञात हुआ है कि जब बधिर व्यक्ति भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्धए अमेरिकन सांकेतिक भाषा ;।ैस्द्ध अथवा अन्य प्राकृतिक सांकेतिक भाषाओं का प्रयोग करते हैंए तब मस्तिष्क के वही प्रमुख भाषा क्षेत्र सक्रिय हो जाते हैं जो मौखिक भाषा के प्रयोग के दौरान सक्रिय होते हैं। इनमें विशेष रूप से ब्रॉका क्षेत्र ;ठतवबंष्े ।तमंद्धए जो भाषा उत्पादन और व्याकरणिक संरचना से संबंधित हैए तथा वर्निके क्षेत्र ;ॅमतदपबामष्े ।तमंद्धए जो भाषा की समझ और अर्थ ग्रहण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैए

शामिल हैं। इसके अतिरिक्त बाएँ मस्तिष्कीय गोलार्द्ध ;स्मजि भ्मउपेचीमतमद्ध के भाषा नेटवर्कए वाक्य संरचना प्रसंस्करण तंत्र तथा अर्थ.संबंधी क्षेत्र भी सक्रिय पाए गए हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि मस्तिष्क भाषा को उसके माध्यमकृध्वनि या संकेतकृके आधार पर नहींए बल्कि उसकी भाषाई संरचना और अर्थपूर्ण संगठन के आधार पर संसाधित करता है।

अनेक अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि जन्म से बधिर व्यक्तियों में सांकेतिक भाषा का नियमित उपयोग भाषाए स्मृतिए ध्यान तथा संज्ञानात्मक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। साथ हीए यदि किसी व्यक्ति को मस्तिष्क के भाषा क्षेत्रों में क्षति होती हैए तो उसका प्रभाव सांकेतिक भाषा पर भी उसी प्रकार पड़ सकता है जैसा मौखिक भाषा पर पड़ता है। यह तथ्य सांकेतिक भाषाओं की भाषाई वैधता का एक महत्वपूर्ण न्यूरोलॉजिकल प्रमाण माना जाता है।

अतः आधुनिक शोधों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि मस्तिष्क सांकेतिक भाषा को भी पूर्ण भाषा के रूप में ही संसाधित करता है। इसलिए भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्ध को केवल संकेतों या हाव.भावों का समूह नहीं माना जा सकताए बल्कि यह अपनी स्वतंत्र व्याकरणए शब्दावलीए वाक्य संरचना और भाषाई नियमों वाली एक समृद्ध एवं पूर्ण भाषाई प्रणाली है। यही कारण है कि आज विश्वभर में सांकेतिक भाषाओं को प्राकृतिक भाषाओं के रूप में मान्यता दी जा रही है तथा श्रवण बाधित बच्चों के प्रारम्भिक भाषा विकास में इनके महत्व को विशेष रूप से स्वीकार किया जा रहा है।

9.4.4 भाषा विकास में आनुवंशिक योगदान

भाषा विकास एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें जैविकए संज्ञानात्मकए सामाजिक तथा पर्यावरणीय कारकों के साथ.साथ आनुवंशिक कारकों की भी महत्वपूर्ण

भूमिका होती है। विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि मानव मस्तिष्क भाषा सीखने और भाषा का उपयोग करने की एक जन्मजात क्षमता लेकर आता हैए जिसकी नींव आंशिक रूप से आनुवंशिक संरचना में निहित होती है। जुड़वाँ बच्चों तथा पारिवारिक अध्ययनों ने संकेत दिया है कि भाषा विकासए भाषण उत्पादन तथा कुछ भाषा संबंधी कठिनाइयों में आनुवंशिक प्रभाव देखा जा सकता है। हालांकिए आनुवंशिक क्षमता तभी प्रभावी रूप से विकसित होती है जब बच्चे को उपयुक्त और समृद्ध भाषा वातावरण प्राप्त हो। भाषा एवं भाषण विकास से संबंधित सबसे चर्चित जीनों में से एक थ्व्ग्च्2 जीन है। इस जीन की पहचान उन परिवारों के अध्ययन से हुई जिनमें कई सदस्यों को भाषण एवं भाषा संबंधी कठिनाइयाँ थीं। थ्व्ग्च्2 जीन मुख्य रूप से भाषा विकासए भाषण नियंत्रण तथा मोटर योजना से संबंधित तंत्रिका प्रक्रियाओं में भूमिका निभाता है। यह मस्तिष्क के उन क्षेत्रों के विकास और कार्यप्रणाली को प्रभावित करता है जो ध्वनियों के उत्पादनए भाषा प्रसंस्करण तथा समन्वित मौखिक गतिविधियों से जुड़े होते हैं। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि थ्व्ग्च्2 को कभी.कभी लोकप्रिय रूप से श्स्ंदहनंहम ळमदमश् कहा जाता हैए किन्तु आधुनिक वैज्ञानिक शोध यह स्पष्ट करते हैं कि भाषा केवल एक जीन द्वारा नियंत्रित नहीं होती। वास्तव में भाषा विकास अनेक जीनोंए तंत्रिका तंत्र की परिपक्वताए संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं तथा पर्यावरणीय अनुभवों की संयुक्त क्रिया का परिणाम है। इसलिए किसी बच्चे की भाषा क्षमता को केवल आनुवंशिक कारकों से नहीं समझा जा सकता। समृद्ध भाषा इनपुटए सामाजिक अन्तःक्रियाए पारिवारिक सहयोग तथा गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर भी भाषा विकास में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकारए भाषा विकास को समझने के लिए आनुवंशिक और पर्यावरणीय दोनों कारकों के पारस्परिक प्रभाव को ध्यान में रखना आवश्यक है।

9.4.5 न्यूरोप्लास्टिसिटी

न्यूरोप्लास्टिसिटी मस्तिष्क की वह अद्भुत क्षमता है जिसके माध्यम से वह अनुभवों अधिगम पर्यावरणीय प्रभावों तथा अभ्यास के आधार पर स्वयं को पुनर्गठित और अनुकूलित कर सकता है। पहले यह माना जाता था कि मस्तिष्क की संरचना स्थिर होती हैए किंतु आधुनिक तंत्रिका.विज्ञान के शोधों ने सिद्ध किया है कि मस्तिष्क जीवन भर नई तंत्रिका कड़ियाँ बना सकता है तथा उपलब्ध अनुभवों के अनुसार अपने कार्यों का पुनर्वितरण कर सकता है। सरल शब्दों मेंए मस्तिष्क जितना अधिक किसी गतिविधिए भाषा या अनुभव का उपयोग करता हैए उससे संबंधित तंत्रिका नेटवर्क उतने ही अधिक सशक्त और प्रभावी बनते जाते हैं। उदाहरण के लिएए यदि किसी श्रवण बाधित बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था में भारतीय सांकेतिक भाषा या अन्य सुलभ सांकेतिक भाषा उपलब्ध हो जाएए तो उसका मस्तिष्क दृश्य सूचनाओं को भाषा के रूप में संसाधित करना सीख जाता है। इस प्रक्रिया में मस्तिष्क के वे क्षेत्रए जो सामान्यतः भाषा प्रसंस्करण से जुड़े होते हैंए दृश्य भाषा के लिए भी सक्रिय रूप से कार्य करने लगते हैं। यही कारण है कि सांकेतिक भाषा सीखने वाले श्रवण बाधित बच्चों में भाषाए संज्ञान और संचार कौशल का प्रभावी विकास देखा जाता है। न्यूरोप्लास्टिसिटी की प्रमुख विशेषताओं में अनुभव आधारित परिवर्तनए नई तंत्रिका कड़ियों का निर्माणए सीखने के साथ निरंतर विकासए मस्तिष्कीय पुनर्गठन की क्षमताए तथा पर्यावरण के प्रति अनुकूलन शामिल हैं। यह क्षमता विशेष रूप से प्रारम्भिक बाल्यावस्था में अधिक सक्रिय होती हैए जब मस्तिष्क तीव्र गति से विकसित हो रहा होता है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में न्यूरोप्लास्टिसिटी का विशेष महत्व है क्योंकि यह सिद्ध करती है कि भाषा विकास केवल श्रवण अनुभवों पर निर्भर नहीं है। यदि बच्चे को पर्याप्त और सुलभ भाषा इनपुट दृश्य माध्यम से उपलब्ध कराया जाएए तो वह प्रभावी रूप से भाषा अर्जित कर सकता है। यह सिद्धांत इस बात पर भी बल देता है कि

प्रारम्भिक पहचानए प्रारम्भिक हस्तक्षेप तथा प्रारम्भिक भाषा पहुँच अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जितनी जल्दी बच्चे को समृद्ध भाषा वातावरण उपलब्ध होगाए उतनी ही प्रभावी रूप से मस्तिष्क भाषाए संज्ञानात्मक तथा सामाजिक विकास के लिए आवश्यक तंत्रिका नेटवर्क विकसित कर सकेगा। इस प्रकार न्यूरोप्लास्टिसिटी श्रवण बाधित बच्चों में प्रारम्भिक और सुलभ भाषा अनुभव के महत्व को वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

9.4.6 संवेदनशील अवधि एवं निर्णायक अवधि

भाषा विकास जीवन के किसी भी चरण में संभव हैए किन्तु प्रारम्भिक बाल्यावस्था को भाषा अर्जन के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय माना जाता है। इस अवधि में मस्तिष्क अत्यधिक लचीला ;च्सं ेजपबद्ध और सीखने के लिए ग्रहणशील होता हैए जिसके कारण बच्चे बहुत कम प्रयास में भाषा के ध्वन्यात्मकए शब्दार्थिकए व्याकरणिक तथा प्राग्मैटिक पहलुओं को आत्मसात कर लेते हैं। न्यूरोविज्ञान और भाषा.विज्ञान के अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जीवन के शुरुआती वर्षों में प्राप्त भाषा अनुभव मस्तिष्क के भाषा नेटवर्क के विकास को गहराई से प्रभावित करते हैं। इसलिए प्रारम्भिक भाषा संपर्क को बच्चों के संज्ञानात्मकए सामाजिक तथा शैक्षणिक विकास की आधारशिला माना जाता है।

संवेदनशील अवधि उस समयावधि को कहा जाता है जब भाषा सीखना सबसे अधिक सहजए स्वाभाविक एवं प्रभावी होता है। सामान्यतः जन्म से लगभग 5द्ध6 वर्ष की आयु तक का समय भाषा विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता हैए यद्यपि भाषा सीखने की क्षमता इसके बाद भी बनी रहती है। इस अवधि में बच्चे बहुत तेजी से नए शब्द सीखते हैंए भाषा के नियमों को समझते हैं तथा संवादात्मक कौशल विकसित करते हैं। यदि इस समय उन्हें समृद्ध और

सुलभ भाषा वातावरण प्राप्त होए तो भाषा अर्जन की प्रक्रिया अधिक सफल होती है। इसी संदर्भ में स्मददमइमतह ;1967द्ध ने निर्णायक अवधि परिकल्पना प्रस्तुत की। उनके अनुसार यदि किसी बच्चे को प्रारम्भिक वर्षों में पर्याप्त भाषा इनपुट प्राप्त नहीं होताए तो बाद के वर्षों में पूर्ण भाषा दक्षता विकसित करना कठिन हो सकता है। यद्यपि आधुनिक शोध इस परिकल्पना के कुछ पहलुओं पर चर्चा करते हैंए फिर भी अधिकांश अध्ययन इस बात का समर्थन करते हैं कि प्रारम्भिक भाषा अनुभव भाषा विकास की गुणवत्ता और गति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। प्रारम्भिक भाषा वंचना का प्रभाव केवल भाषा तक सीमित नहीं रहताए बल्कि संज्ञानात्मक विकासए साक्षरताए सामाजिक सहभागिता तथा शैक्षणिक उपलब्धियों पर भी पड़ सकता है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह अवधारणा विशेष महत्व रखती है। यदि बच्चे को प्रारम्भिक वर्षों में न तो भारतीय सांकेतिक भाषा जैसी सुलभ प्राकृतिक भाषा प्राप्त हो और न ही पर्याप्त मौखिक भाषा इनपुट मिलेए तो उसका भाषा विकास गंभीर रूप से प्रभावित हो सकता है। ऐसी स्थिति में भाषा वंचना का जोखिम बढ़ जाता हैए जिससे संचारए अवधारणा निर्माणए सीखने की क्षमता तथा सामाजिक.भावनात्मक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए आधुनिक बधिर शिक्षा इस बात पर बल देती है कि प्रत्येक श्रवण बाधित बच्चे को जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही एक पूर्णए समृद्ध और सुलभ भाषा वातावरण उपलब्ध कराया जाएए चाहे वह सांकेतिक भाषाए मौखिक भाषा या दोनों का संयोजन ही क्यों न हो। इससे बच्चे की भाषाई क्षमता के साथ.साथ उसके समग्र विकास की भी मजबूत नींव तैयार होती है।

9.4.7 ब्तवे.डवकंस च्सं.जपबपजल

ब्तवे.डवकंस च्सं.जपबपजल ;अंतःसंवेदी पुनर्संगठनद्ध श्रवण बाधित बच्चों के मस्तिष्कीय विकास को समझने की एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है।

आधुनिक तंत्रिका.विज्ञान ;छमनतवेबपमदबमद्ध के अनुसार मानव मस्तिष्क स्थिर नहीं होताए बल्कि अनुभवों और उपलब्ध संवेदी इनपुट के आधार पर स्वयं को पुनर्गठित करने की क्षमता रखता है। विशेष रूप से जन्मजात अथवा प्रारम्भिक श्रवण बाधिता की स्थिति में मस्तिष्क उपलब्ध संवेदी संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने के लिए अपने कार्यों में अनुकूलन ;।कंचजंजपवदद्ध विकसित करता है। इसी प्रक्रिया को ब्तवेे.डवकंस च्संेजपबपजल कहा जाता है।

ब्तवेे.डवकंस च्संेजपबपजल क्या हैघ् ब्तवेे.डवकंस च्संेजपबपजल वह प्रक्रिया है जिसमें किसी एक इन्द्रिय से पर्याप्त सूचना प्राप्त न होने पर मस्तिष्क के उससे संबंधित क्षेत्र अन्य इन्द्रियों से प्राप्त सूचनाओं के प्रसंस्करण ;च्तवबमेेपदहद्ध में सक्रिय होने लगते हैं। दूसरे शब्दों मेंए जब कोई संवेदी प्रणाली सीमित या अनुपस्थित होती हैए तो मस्तिष्क उस कमी की आंशिक पूर्ति के लिए उपलब्ध संवेदी माध्यमों का अधिक प्रभावी उपयोग करना प्रारम्भ कर देता है। यह मस्तिष्क की अनुकूलन क्षमता ;।कंचजपअम ब्ंचंबपजलद्ध तथा न्यूरोप्लास्टिसिटी का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

उदाहरणरू यदि किसी बच्चे को श्रवण सूचना पर्याप्त मात्रा में प्राप्त नहीं होतीए तो मस्तिष्क की श्रवण प्रांतस्था ;।नकपजवतल ब्वतजमगद्धए जो सामान्यतः ध्वनियों के प्रसंस्करण के लिए कार्य करती हैए आंशिक रूप से दृश्य या अन्य संवेदी सूचनाओं के प्रसंस्करण में योगदान देने लग सकती है। शोधों में पाया गया है कि कई श्रवण बाधित व्यक्तियों में दृश्य उत्तेजनाओं के प्रति मस्तिष्क की प्रतिक्रिया अधिक सक्रिय और विस्तृत हो सकती है। यह परिवर्तन विशेष रूप से उन बच्चों में अधिक स्पष्ट देखा जाता है जिन्हें प्रारम्भिक अवस्था से ही सांकेतिक भाषा और दृश्य संचार का समृद्ध अनुभव प्राप्त होता है।

क्मं िबच्चों में महत्व

ब्तवे.डवकंस च्सं जपबपजल श्रवण बाधित बच्चों के विकास में अनेक सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। इसके परिणामस्वरूप

- दृश्य ध्यान ;टपेनंस ।जजमदजपवदद्ध अधिक विकसित हो सकता है।
- सांकेतिक भाषाद्ध सीखना और समझना अधिक प्रभावी हो सकता है।
- दृश्य.स्थानिक कौशल ;टपेनंस.ैचंजपंस ैापससेद्ध में वृद्धि हो सकती है।
- चेहरे की अभिव्यक्तियोंए संकेतों और शारीरिक मुद्राओं को पहचानने की क्षमता बेहतर हो सकती है।
- दृश्य संकेतों के माध्यम से सीखने की दक्षता बढ़ सकती है।
- परिवेश में होने वाले दृश्य परिवर्तनों के प्रति संवेदनशीलता अधिक विकसित हो सकती है।

इसी कारण आधुनिक बधिर शिक्षा में दृश्य अधिगम ;टपेनंस स्मंतदपदहद्धए भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्धए दृश्य शिक्षण सामग्री तथा बहु.माध्यमीय शिक्षण रणनीतियों को विशेष महत्व दिया जाता है। ब्तवे.डवकंस च्सं जपबपजल यह दर्शाती है कि श्रवण बाधिता केवल श्रवण की कमी नहीं हैए बल्कि मस्तिष्क के संगठन और सीखने की प्रक्रिया में विशिष्ट अनुकूलन भी उत्पन्न करती हैए जो श्रवण बाधित बच्चों की भाषाईए संज्ञानात्मक तथा शैक्षणिक क्षमताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

चिंतन कीजिए

यदि श्रवण बाधित बच्चे का मस्तिष्क दृश्य माध्यम से भाषा को संसाधित कर सकता हैए तो क्या भाषा विकास को केवल वाणी विकास तक सीमित रखना उचित होगाघ् अपने उत्तर को न्यूरोप्लास्टिसिटी एवं के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

9.4.8 प्रारम्भिक भाषा संपर्कन

भाषा विकास केवल भाषा सीखने की प्रक्रिया नहीं हैए बल्कि यह मस्तिष्क के विकासए संज्ञानात्मक संगठनए सामाजिक सहभागिता तथा भावनात्मक परिपक्वता से गहराई से जुड़ी हुई प्रक्रिया है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में प्राप्त भाषा अनुभव मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली दोनों को प्रभावित करते हैं। इसी कारण आधुनिक तंत्रिका.विज्ञानए मनोभाषाविज्ञानद्ध तथा में प्रारम्भिक भाषा संपर्कन को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह विषय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि अधिकांश बच्चे श्रवणक्षम माता.पिता के घर जन्म लेते हैं। यदि परिवार को सांकेतिक भाषा का ज्ञान नहीं है और बच्चा श्रवण के माध्यम से पर्याप्त भाषा ग्रहण नहीं कर पा रहा हैए तो प्रारम्भिक भाषा संपर्कन बाधित हो सकता है। यही स्थिति आगे चलकर भाषा वंचना का कारण बन सकती है। आज विश्वभर के शोध यह संकेत करते हैं कि बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था में कोई भी पूर्ण एवं सुलभ भाषा उपलब्ध होनी चाहिएए चाहे वह मौखिक भाषा हो या भारतीय सांकेतिक भाषा।

प्रारम्भिक भाषा संपर्कन ;म्तसल स्ंदहनंहम म्गचवेनतमद्ध क्या हैघ्

प्रारम्भिक भाषा संपर्कन ;म्तसल स्ंदहनंहम म्गचवेनतमद्ध से आशय जन्म के बाद जीवन के प्रारम्भिक वर्षोंए विशेषकर जन्म से लगभग पाँच वर्ष की आयु तकए बच्चे को प्राप्त होने वाले भाषा अनुभवों और संचार अवसरों से है। यह वह अवधि होती है जब मस्तिष्क भाषा सीखने के लिए अत्यधिक संवेदनशील और ग्रहणशील होता है। प्रारम्भिक भाषा संपर्कन केवल शब्दों को सुनने या संकेतों को

देखने तक सीमित नहीं होताए बल्कि इसमें बच्चे और उसके परिवेश के बीच होने वाली सभी अर्थपूर्ण संचारात्मक अन्तःक्रियाएँ शामिल होती हैं। इसके अंतर्गत माता.पिता एवं परिवार के सदस्यों से संवादए चेहरे के भावए नेत्र संपर्कए सांकेतिक भाषाए मौखिक भाषाए कहानी सुनानाए लोरी गानाए खेल आधारित अन्तःक्रियाए दैनिक गतिविधियों के दौरान बातचीत तथा सामाजिक संवाद जैसी गतिविधियाँ आती हैं। इन अनुभवों के माध्यम से बच्चा शब्दोंए संकेतोंए भावनाओंए सामाजिक नियमों और अपने आसपास की दुनिया के बारे में सीखता है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में प्रारम्भिक भाषा संपर्कन का विशेष महत्व हैए क्योंकि यदि उन्हें प्रारम्भिक अवस्था में सुलभ और समृद्ध भाषा अनुभव उपलब्ध कराए जाएँए चाहे वह भारतीय सांकेतिक भाषा होए मौखिक भाषा हो या दोनों का संयोजनए तो उनके भाषाईए संज्ञानात्मकए सामाजिक और भावनात्मक विकास की मजबूत नींव रखी जा सकती है। इसलिए प्रारम्भिक भाषा संपर्कन को बाल विकास और भाषा अर्जन की आधारशिला माना जाता है।

भाषा संपर्कन ;ंदहनंहम ग्चवेनतमद्ध और भाषा अधिगम ;ंदहनंहम स्मंतदपदहद्ध में अंतर

भाषा अनावरण ध् भाषा संपर्क ;ंदहनंहम ग्चवेनतमद्ध भाषा अधिगम ;ंदहनंहम स्मंतदपदहद्ध

भाषा से सम्पर्क भाषा सीखने की प्रक्रिया

जन्म से प्रारम्भ सामान्यतः बाद में विकसित

प्राकृतिक रूप से होता है औपचारिक या अनौपचारिक दोनों हो सकता है

वातावरण आधारित शिक्षण आधारित

परिवारए समुदाय और दैनिक अन्तःक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त होता है

शिक्षकए प्रशिक्षणए अभ्यास एवं निर्देश के माध्यम से विकसित होता है

भाषा को सुननेए देखने और अनुभव करने पर आधारित होता है भाषा के नियमोंए शब्दावली और संरचना को समझने पर आधारित होता है

भाषा अर्जन की नींव तैयार करता है भाषा दक्षता ;स्ंदहनंहम च्तवपिबपमदबलद्ध को विकसित करता है

अवचेतन ;ैनइबवदेबपवनेद्ध प्रक्रिया होती है अपेक्षाकृत सचेत ;ब्वदेबपवनेद्ध प्रक्रिया हो सकती है

प्रारम्भिक भाषा विकास के लिए अत्यंत आवश्यक शैक्षणिक एवं उन्नत भाषा कौशल विकसित करने के लिए आवश्यक

भाषा की समझ ;ब्वउचतमीमदेपवदद्ध विकसित करने में सहायक भाषा के प्रयोग ;म्गचतमेेपवद ंदक न्ेंहमद्ध को परिष्कृत करता है

जन्म से छह वर्ष तक भाषा विकास का महत्वरू शोध बताते हैं कि जन्म से लगभग छह वर्ष तक की अवधि भाषा विकास के लिए अत्यंत संवेदनशील ;ैमदेपजपअमद्ध होती है।

0दृ1 वर्ष 1दृ3 वर्ष 3दृ6 वर्ष

ध्वनियोंध्दृश्य संकेतों पर ध्यान

चेहरे की पहचान

संचार की प्रारम्भिक समझ

शब्दावली में तीव्र वृद्धि

संकेतों या शब्दों का प्रयोग

प्रारम्भिक वाक्य निर्माण

व्याकरणिक विकास

जटिल वाक्य

कथन एवं संवाद कौशल

मस्तिष्कीय परिपक्वता और भाषा

भाषा विकास मस्तिष्क की परिपक्वता से गहराई से जुड़ा हुआ है। जन्म के समय शिशु का मस्तिष्क पूर्ण रूप से विकसित नहीं होताए बल्कि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उसमें तीव्र गति से विकास होता है। इस अवधि के दौरान मस्तिष्क में लाखों नई तंत्रिका कड़ियाँ और सिनेप्स बनते हैंए जो सीखनेए स्मृतिए संचार तथा संज्ञानात्मक विकास की आधारशिला तैयार करते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि प्रारम्भिक बचपन मस्तिष्क की अत्यधिक लचीलेपन की अवस्था होती हैए जिसमें अनुभवों का मस्तिष्कीय संरचना और कार्यप्रणाली पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जो अनुभव बच्चे को बार.बार प्राप्त होते हैंए उनसे संबंधित न्यूरल नेटवर्क अधिक मजबूत और प्रभावी बन जाते हैंए जबकि जिन तंत्रिका मार्गों का उपयोग नहीं होताए वे धीरे.धीरे कमजोर पड़ सकते हैं। इसी सिद्धांत को श्ूेम प्ज वत स्वेम प्जश् कहा जाता है। भाषा भी उन महत्वपूर्ण अनुभवों में से एक है जो मस्तिष्क के विकास को दिशा प्रदान करते हैं। यदि बच्चे को जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में समृद्धए नियमित और सुलभ भाषा इनपुट प्राप्त होता हैए तो मस्तिष्क के भाषा.संबंधी नेटवर्क अधिक संगठितए कुशल और स्थायी रूप से

विकसित होते हैं। भाषा के माध्यम से बच्चा न केवल संवाद करना सीखता हैए बल्कि वह सोचनेए तर्क करनेए अवधारणाएँ बनानेए समस्याओं का समाधान करने और सामाजिक संबंध स्थापित करने की क्षमता भी विकसित करता है। इसलिए भाषा विकास को केवल संचार कौशल के रूप में नहींए बल्कि समग्र मस्तिष्कीय विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है।

प्रारम्भिक प्ैस् अनावरण का महत्व

आधुनिक तंत्रिका.विज्ञानए भाषाविज्ञान और बधिर शिक्षा से संबंधित शोधों ने यह सिद्ध किया है कि यदि श्रवण बाधित बच्चे को जन्म से ही भारतीय सांकेतिक भाषा या अन्य प्राकृतिक सांकेतिक भाषा का संपर्क प्राप्त हो जाएए तो उसका भाषा विकास सामान्य भाषा अर्जन के समान क्रम में आगे बढ़ सकता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि मस्तिष्क भाषा को उसके माध्यम के आधार पर नहींए बल्कि उसके भाषाई स्वरूप के आधार पर संसाधित करता है। दूसरे शब्दों मेंए मस्तिष्क के लिए भाषा ध्वनि आधारित हो या दृश्य.सांकेतिकए दोनों ही भाषा अर्जन के वैध और प्रभावी माध्यम हो सकते हैं। प्रारम्भिक अनावरण श्रवण बाधित बच्चों को निरंतर और सुलभ भाषा इनपुट प्रदान करता हैए जिससे भाषा वंचना का जोखिम कम हो जाता है। इसके अतिरिक्तए सांकेतिक भाषा के माध्यम से विकसित प्रारम्भिक भाषाई आधार आगे चलकर साक्षरताए शैक्षणिक उपलब्धिए सामाजिक सहभागिता तथा भावनात्मक विकास को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अनेक शोधों में यह पाया गया है कि माता.पिता के घर जन्मे बच्चेए जिन्हें जन्म से हीए अथवा अन्य प्राकृतिक सांकेतिक भाषाओं का वातावरण प्राप्त होता हैए वे भाषा के विभिन्न क्षेत्रों.जैसे शब्दावलीए व्याकरणए कथन क्षमता और संप्रेषण कौशल.में आयु.उपयुक्त विकास प्रदर्शित करते हैं। ऐसे बच्चे सामान्यतः विद्यालयी शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हैंए अधिक आत्मविश्वास विकसित करते हैं तथा सामाजिक रूप से भी अधिक सक्रिय और

सफल पाए जाते हैं। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि श्रवण बाधित बच्चों के लिए प्रारम्भिक और सुलभ भाषा अनुभव मस्तिष्कीय विकास तथा जीवनपर्यंत सीखने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य आधार है।

क्मं बनाम शोध निष्कर्ष

भाषा विकास के क्षेत्र में क्मं िच्ंतमदजे ;बधिर माता.पिताद्ध और भ्मंतपदह च्ंतमदजे ;श्रवणक्षम माता.पिताद्ध के श्रवण बाधित बच्चों की तुलना अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। अनेक अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि भाषा विकास की गुणवत्ता मुख्यतः इस बात पर निर्भर करती है कि बच्चे को जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में कितनी शीघ्रता से और कितनी सुलभ भाषा उपलब्ध होती है। शोधकर्ताओं ने पाया है कि अधिकांश श्रवण बाधित बच्चे श्रवणक्षम परिवारों में जन्म लेते हैंए जबकि अपेक्षाकृत कम बच्चे बधिर माता.पिता के परिवारों में जन्म लेते हैं। इस कारण प्रारम्भिक भाषा अनुभवों में महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलता है।

क्मं िच्ंतमदजे के बच्चों को सामान्यतः जन्म से ही प्राकृतिक सांकेतिक भाषा का समृद्ध और निरंतर वातावरण प्राप्त होता है। वे परिवार के दैनिक संवादए खेलए कहानीए भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा सामाजिक अन्तःक्रियाओं के माध्यम से सांकेतिक भाषा को उसी प्रकार स्वाभाविक रूप से अर्जित करते हैंए जैसे श्रवणक्षम बच्चे मौखिक भाषा सीखते हैं। परिणामस्वरूप उनका प्रारम्भिक भाषा विकास अपेक्षाकृत बेहतर पाया जाता हैए उनकी शब्दावली अधिक समृद्ध होती है तथा भाषा वंचना ;स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवदद्ध का जोखिम बहुत कम होता है। ऐसे बच्चों में संज्ञानात्मकए सामाजिक और भावनात्मक विकास भी अधिक सुदृढ़ रूप से विकसित होने की संभावना रहती है।

इसके विपरीतए भ्मंतपदह च्तमदजे के बच्चों को प्रारम्भिक भाषा पहुँच की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता हैए विशेषकर तब जब परिवार सांकेतिक भाषा नहीं जानता और बच्चा श्रवण यंत्रए कॉक्लियर इम्प्लांट या अन्य माध्यमों से पर्याप्त श्रवण इनपुट प्राप्त नहीं कर पाता। ऐसी परिस्थितियों में बच्चे को सीमित भाषा अनुभव मिल सकते हैंए जिसके कारण भाषा विकास में विलम्बए सीमित शब्दावलीए कमजोर भाषाई संरचना तथा संचार संबंधी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। कई बार माता.पिता और बच्चे के बीच प्रभावी संवाद का अभाव भावनात्मक तथा सामाजिक विकास को भी प्रभावित कर सकता है। हालांकिए यदि श्रवणक्षम माता.पिता प्रारम्भिक अवस्था में सांकेतिक भाषा सीख लेंए समृद्ध भाषा वातावरण प्रदान करें और विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में सक्रिय भागीदारी करेंए तो उनके बच्चे भी उत्कृष्ट भाषा विकास प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए आधुनिक शोध इस बात पर बल देते हैं कि बच्चे के विकास में माता.पिता के श्रवण स्तर से अधिक महत्वपूर्ण प्रारम्भिकए समृद्ध और सुलभ भाषा इनपुट है।

भाषा वंचना

भाषा वंचना वह स्थिति है जब किसी बच्चे को जीवन के प्रारम्भिक एवं अत्यंत महत्वपूर्ण विकासात्मक वर्षों में किसी भी पूर्णए समृद्ध और सुलभ भाषा तक पर्याप्त पहुँच नहीं मिलती। यह केवल शब्दों या संचार संकेतों की कमी नहीं हैए बल्कि ऐसी अवस्था है जिसमें बच्चा भाषा के माध्यम से विचारोंए अनुभवोंए भावनाओं और सामाजिक संबंधों को व्यवस्थित रूप से विकसित नहीं कर पाता। आधुनिक शोधों के अनुसार प्रारम्भिक बचपन भाषा अर्जन की संवेदनशील अवधि ;ैमदेपजपअम च्मतपवकद्ध माना जाता हैए इसलिए इस अवधि में भाषा

तक पहुँच का अभाव बच्चे के समग्र विकास पर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है।

भाषा वंचना क्यों होती हैघ्ू भाषा वंचना अनेक व्यक्तिगतए पारिवारिक तथा शैक्षिक कारणों से उत्पन्न हो सकती है। अक्सर यह समस्या तब दिखाई देती है जब श्रवण बाधिता की पहचान देर से होती है या बच्चे को समय पर उपयुक्त भाषाई सहायता उपलब्ध नहीं हो पाती। इसके प्रमुख कारणों में.

- देर से पहचान ;संजम प्कमदजपपिबंजपवदद्धए
- अपर्याप्त या विलंबित हस्तक्षेपए
- सीमित भाषा इनपुटए
- सांकेतिक भाषा तक पहुँच का अभावए
- परिवार और समुदाय में संचार के सीमित अवसरए
- तथा भाषा.समृद्ध वातावरण की कमी

शामिल हैं। कई बार बच्चे को तकनीकी उपकरण तो उपलब्ध हो जाते हैंए लेकिन पर्याप्त और सुलभ भाषा अनुभव नहीं मिल पाताए जिसके कारण भाषा विकास अपेक्षित गति से नहीं हो पाता।

भाषा वंचना के प्रभावरू भाषा वंचना का प्रभाव केवल भाषा तक सीमित नहीं रहताए बल्कि यह बच्चे के संज्ञानात्मकए सामाजिकए भावनात्मक तथा शैक्षणिक विकास को भी प्रभावित कर सकता है।

भाषाई प्रभाव संज्ञानात्मक प्रभाव सामाजिक प्रभाव भावनात्मक प्रभाव शैक्षणिक प्रभाव

- सीमित शब्दावलीए
- कमजोर व्याकरणिक संरचनाए
- भाषा को समझने में कठिनाईए
- विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में समस्याए
- अवधारणा विकास में विलम्बए
- समस्या समाधान में कठिनाईए
- सीमित अमूर्त चिंतनए
- कार्यशील स्मृति पर प्रभावए
- तर्क एवं विश्लेषणात्मक क्षमता के विकास में बाधा
- सामाजिक अलगावए
- सीमित मित्रताए
- समूह गतिविधियों में सहभागिता की कठिनाईए
- दूसरों के साथ विचार साझा करने में समस्याए
- सामाजिक नियमों को समझने में चुनौतियाँ
- निराशाए
- आत्मविश्वास में कमीए
- भावनाओं को व्यक्त करने में कठिनाईए

ऽ व्यवहारिक चुनौतियाँए

ऽ तनाव और हताशा की भावना

ऽ पढ़ने में कठिनाईए

ऽ लेखन में कठिनाईए

ऽ निर्देशों को समझने में समस्याए

ऽ विषयगत अवधारणाओं के अधिगम में विलम्बए

ऽ कम शैक्षणिक उपलब्धि

भाषा वंचना बनाम श्रवण हानि

यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि भाषा वंचना और श्रवण हानि एक ही बात नहीं हैं। श्रवण हानि एक संवेदी स्थिति हैए जो व्यक्ति की सुनने की क्षमता को प्रभावित करती है। दूसरी ओरए भाषा वंचना एक भाषाई एवं पर्यावरणीय स्थिति हैए जो तब उत्पन्न होती है जब बच्चे को पर्याप्त और सुलभ भाषा अनुभव प्राप्त नहीं होता। अर्थात् किसी बच्चे की श्रवण हानि भाषा वंचना का कारण बन सकती हैए लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक श्रवण बाधित बच्चा भाषा वंचना का अनुभव करे। यदि उसे प्रारम्भिक अवस्था से समृद्ध और सुलभ भाषा वातावरण उपलब्ध होए तो वह प्रभावी भाषा विकास प्राप्त कर सकता है। उदाहरणय दो बच्चों में समान स्तर की श्रवण हानि हो सकती है। किंतु यदिकृ

ऽ एक बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था से भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्ध या अन्य सुलभ भाषा उपलब्ध होए

ऽ जबकि दूसरे बच्चे को कोई पूर्ण एवं सुलभ भाषा उपलब्ध न होए

तो दोनों के भाषा विकासए संज्ञानात्मक कौशलए सामाजिक सहभागिता और शैक्षणिक उपलब्धियों में महत्वपूर्ण अंतर दिखाई दे सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि विकासात्मक परिणामों को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक केवल श्रवण हानि नहींए बल्कि भाषा तक समय पर और पर्याप्त पहुँच भी है। इसलिए आधुनिक बधिर शिक्षा में भाषा पहुँच ;स्ंदहनंहम ।बबमेंद्ध को प्रत्येक बच्चे के समग्र विकास की आधारशिला माना जाता है।

9.5 भारतीय सांकेतिक भाषा एक प्राकृतिक प्रथम भाषा के रूप में

भाषा मानव विकास की आधारशिला है। यह केवल संचार का साधन नहींए बल्कि विचारए ज्ञानए संस्कृतिए पहचान तथा सामाजिक सहभागिता का माध्यम भी है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनकी प्रथम भाषा ;स्1द्ध कौन.सी होनी चाहिए और किस प्रकार की भाषा उन्हें प्रारम्भिक अवस्था में उपलब्ध कराई जानी चाहिए। लंबे समय तक यह धारणा बनी रही कि भाषा का अर्थ केवल वाणी और श्रवण है। परिणामस्वरूप सांकेतिक भाषाओं को वास्तविक भाषा की अपेक्षा संचार के वैकल्पिक साधन के रूप में देखा गया। किन्तु पिछले पाँच दशकों में भाषाविज्ञानए मनोभाषाविज्ञानए तंत्रिका.विज्ञान तथा क्मं िैजनकपमे के क्षेत्र में हुए शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सांकेतिक भाषाएँ पूर्ण प्राकृतिक भाषाएँ हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा भारत के क्मं िसमुदाय द्वारा स्वाभाविक रूप से विकसित की गई एक समृद्धए संरचित एवं व्याकरणिक भाषा है। यह केवल संकेतों का संग्रह नहीं हैए बल्कि इसकी अपनी शब्दावलीए व्याकरणए वाक्य संरचनाए अर्थ व्यवस्था तथा सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं। यही कारण है कि वर्तमान समय में प्ैस् को श्रवण बाधित बच्चों के लिए एक संभावित प्रथम भाषा ;स्1द्ध के रूप में देखा जा रहा है।

9.5.1 भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्ध क्या हैघ्

भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहमदृप्ैस्द्ध भारत के बधिर ;क्मंद्धि समुदाय द्वारा प्रयुक्त एक प्राकृतिकए दृश्य.आधारित और पूर्ण विकसित भाषा है। यह भाषा ध्वनि के स्थान पर दृश्य संकेतों के माध्यम से संप्रेषण करती है तथा हाथों की आकृतियों ;भ्ंदकेींचमेद्धए हाथों की गति ;डवअमउमदजद्धए हाथों की दिशा ;व्तपमदजंजपवदद्धए संकेतों के स्थान ;स्वबंजपवदद्ध और चेहरे की अभिव्यक्तियों ;थ्ंबपंस म्गचतमेेपवदेद्ध के समन्वित उपयोग से अर्थ व्यक्त करती है। प्ैस् केवल संचार का साधन नहीं हैए बल्कि यह भारत के बधिर समुदाय की भाषाईए सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार भी है। यह भाषा पीढ़ी.दर.पीढ़ी समुदाय के भीतर स्वाभाविक रूप से विकसित हुई है और दैनिक जीवनए शिक्षाए सामाजिक संपर्क तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में व्यापक रूप से उपयोग की जाती है। भारतीय सांकेतिक भाषा एक प्राकृतिक भाषा है जो दृश्य माध्यम ;टपेनंस डवकंसपजलद्ध पर आधारित है तथा बधिर समुदाय के बीच सामाजिक अन्तःक्रियाओं के माध्यम से विकसित हुई है। अन्य प्राकृतिक भाषाओं की तरह इसकी भी अपनी स्वतंत्र शब्दावलीए व्याकरणिक संरचनाए वाक्य विन्यास तथा अर्थ निर्माण की प्रणाली होती है। भाषावैज्ञानिक अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि प्ैस् में जटिल विचारोंए भावनाओंए अनुभवोंए अमूर्त अवधारणाओं तथा शैक्षणिक विषयों को प्रभावी रूप से व्यक्त करने की क्षमता मौजूद है। यही कारण है कि आधुनिक बधिर शिक्षा में इसे भाषा अर्जनए संज्ञानात्मक विकास तथा शैक्षणिक अधिगम के लिए महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। यह समझना आवश्यक है कि प्ैस् न तो हिंदी की सांकेतिक प्रस्तुति हैए न अंग्रेज़ी का संकेत रूप है और न ही केवल साधारण इशारों का समूह है। वास्तव में यह एक स्वतंत्र एवं पूर्ण भाषा हैए जिसके अपने विशिष्ट भाषाई नियम और व्याकरणिक सिद्धांत हैं। जिस प्रकार हिंदीए अंग्रेज़ीए तमिल या अन्य भाषाएँ

स्वतंत्र भाषाएँ हैंए उसी प्रकार भारतीय सांकेतिक भाषा भी एक समृद्ध भाषाई प्रणाली है। इसके माध्यम से व्यक्ति विचारों का आदान.प्रदान कर सकता हैए ज्ञान अर्जित कर सकता हैए सामाजिक संबंध विकसित कर सकता है तथा अपनी सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्त कर सकता है। इसलिए प्ैस् को केवल संचार के साधन के रूप में नहींए बल्कि भाषाए संस्कृति और अधिकारों से जुड़े एक महत्वपूर्ण भाषाई संसाधन के रूप में समझना चाहिए।

9.5.2 प्राकृतिक भाषा ;छंजनतंस स्ंदहनंहमद्ध क्या होती हैघ्

प्राकृतिक भाषा वह भाषा है जो किसी समुदाय के भीतर समय के साथ स्वाभाविक रूप से विकसित होती है और जिसका निर्माण किसी व्यक्तिए संस्था या कृत्रिम नियमों के आधार पर नहीं किया जाता। यह भाषा समुदाय के सदस्यों के दैनिक जीवनए सामाजिक अंतःक्रियाओंए सांस्कृतिक अनुभवों तथा संचार संबंधी आवश्यकताओं के माध्यम से विकसित और समृद्ध होती है। प्राकृतिक भाषाएँए जैसे हिंदीए अंग्रेज़ीए तमिलए बंगाली तथा भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहमदृप्ैस्द्धए मानव संचार की पूर्ण विकसित प्रणालियाँ हैं। इन भाषाओं की प्रमुख विशेषताओं में सामाजिक उत्पत्तिए पीढ़ी.दर.पीढ़ी हस्तांतरणए स्वतंत्र व्याकरणिक संरचनाए सृजनात्मकता तथा सांस्कृतिक भूमिका शामिल हैं। प्राकृतिक भाषा समुदाय द्वारा विकसित होती है और परिवारए समाज तथा शिक्षा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है। प्रत्येक प्राकृतिक भाषा का अपना विशिष्ट व्याकरणए शब्दावली और वाक्य विन्यास होता हैए जिसके आधार पर अनगिनत नए वाक्यों और विचारों की अभिव्यक्ति संभव होती है। साथ हीए भाषा किसी समुदाय की सांस्कृतिक

पहचानए परंपराओंए मूल्यों और सामाजिक संबंधों को संरक्षित रखने का भी महत्वपूर्ण माध्यम होती है।

भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्ध को भी एक प्राकृतिक भाषा माना जाता है क्योंकि इसमें भाषा के सभी आवश्यक घटक विद्यमान हैं। प्ैस् में समृद्ध शब्दावली ;स्मगपबवदद्धए सुव्यवस्थित व्याकरण ;ळतंउउंतद्धए विशिष्ट वाक्य संरचना ;ैलदजंगद्धए स्पष्ट अर्थ प्रणाली ;ैमउंदजपबेद्ध तथा प्रभावी प्राग्मैटिक्स ;च्तंहउंजपबेद्ध पाई जाती है। इसके अतिरिक्तए प्ैस् का विकास बधिर समुदाय के सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों के आधार पर हुआ है तथा यह समुदाय के भीतर स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त और पीढ़ी.दर.पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है। यही कारण है कि आधुनिक भाषावैज्ञानिक अनुसंधान प्ैस् को केवल संचार का साधन नहींए बल्कि एक पूर्णए समृद्ध और स्वतंत्र प्राकृतिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान करते हैं। प्ैस् के माध्यम से श्रवण बाधित व्यक्ति न केवल विचारोंए भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति कर सकते हैंए बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक जुड़ाव को भी सुदृढ़ बना सकते हैं।

9ण्5ण्3 भारतीय सांकेतिक भाषा की भाषावैज्ञानिक संरचना

किसी भी भाषा की वैज्ञानिक मान्यता उसके भाषाई घटकोंए व्याकरणिक नियमों तथा संप्रेषणीय क्षमता पर आधारित होती है। भाषाविज्ञान के क्षेत्र में किसी भाषा को पूर्ण भाषा तभी माना जाता है जब उसमें ध्वन्यात्मक ;च्ीवदवसवहलद्धए रूपात्मक ;डवतचीवसवहलद्धए वाक्यविन्यास ;ैलदजंगद्धए अर्थविज्ञान ;ैमउंदजपबेद्ध तथा प्राग्मैटिक्स ;च्तंहउंजपबेद्ध जैसे

सभी प्रमुख भाषाई घटक विद्यमान हों। भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहमदृप्ैस्द्ध इन सभी भाषाई विशेषताओं से युक्त है और इसलिए इसे एक पूर्ण प्राकृतिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। अनेक भाषावैज्ञानिक अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि प्ैस् केवल संकेतों का संग्रह नहीं हैए बल्कि इसकी अपनी स्वतंत्र व्याकरणिक संरचनाए नियमए शब्दावली तथा अर्थ.निर्माण की प्रणाली है। यह भाषा दृश्य.हस्तचालित ;टपेनंस.ळमेजनतंसद्ध माध्यम के द्वारा संप्रेषित होती है और श्रवण बाधित समुदाय की भाषा एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण आधार है।

1ण् ध्वन्यात्मक स्तर ;च्ीवदवसवहपबंस स्मअमसद्ध

मौखिक भाषाओं में शब्दों का निर्माण विभिन्न ध्वनियों ;ैवनदकेध्च्ीवदमउमेद्ध के संयोजन से होता हैए जबकि भारतीय सांकेतिक भाषा में संकेत ;ैपहदेद्ध कई दृश्य घटकों के संयोजन से निर्मित होते हैं। प्ैस् में संकेतों की संरचना मुख्यतः पाँच प्रमुख घटकों पर आधारित होती हैकृ हस्तरूप ;भ्ंदकेींचमद्धए स्थान ;स्वबंजपवदद्धए गति ;डवअमउमदजद्धए अभिविन्यास ;व्तपमदजंजपवदद्ध तथा गैर.हस्तचालित संकेत ;छवद.डंदनंस डंतामतेद्ध। हस्तरूप से तात्पर्य हाथ के आकार से हैए स्थान यह दर्शाता है कि संकेत शरीर के किस भाग या स्थान के निकट बनाया जा रहा हैए गति हाथों की दिशा और चलन को व्यक्त करती है तथा अभिविन्यास हथेली की दिशा को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त चेहरे के भावए आँखों की गतिए भौंहों की स्थिति तथा सिर की हलचल जैसे गैर.हस्तचालित संकेत भी अर्थ निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि किसी संकेत में केवल हस्तरूपए स्थान अथवा गति बदल दी जाएए तो उसका

अर्थ भी परिवर्तित हो सकता है। यह प्रक्रिया उसी प्रकार कार्य करती है जैसे मौखिक भाषाओं में किसी एक ध्वनि के परिवर्तन से शब्द का अर्थ बदल जाता है। इसलिए प्ैस् की ध्वन्यात्मक संरचना अत्यंत व्यवस्थित और नियमबद्ध मानी जाती है।

2ण् रूपात्मक संरचना ;डवतचीवसवहलद्ध

भारतीय सांकेतिक भाषा में शब्द निर्माण और अर्थ परिवर्तन की अपनी विशिष्ट रूपात्मक प्रणाली होती है। प्ैस् में विभिन्न संकेतों का उपयोग संख्याए कालए मात्राए आवृत्ति तथा अन्य व्याकरणिक सूचनाओं को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिएए किसी संकेत की पुनरावृत्ति ;त्मचमजपजपवदद्ध उसके अर्थ में परिवर्तन ला सकती है या किसी क्रिया की निरंतरता को व्यक्त कर सकती है। इसी प्रकार संख्या सूचक संकेतों और समय संबंधी संकेतों के माध्यम से विभिन्न व्याकरणिक अर्थ व्यक्त किए जाते हैं। कई बार एक ही संकेत में गतिए दिशा या चेहरे के भाव में परिवर्तन करके अतिरिक्त अर्थ जोड़े जाते हैं। इस प्रकार प्ैस् में रूपात्मक संरचना अर्थ निर्माण और भाषा की अभिव्यक्ति को समृद्ध बनाती है।

3ण् वाक्यविन्यास ;ैलदजंगद्ध

वाक्यविन्यास किसी भाषा में शब्दों या संकेतों की व्यवस्था के नियमों को दर्शाता है। भारतीय सांकेतिक भाषा की वाक्य संरचना हिन्दी तथा अंग्रेज़ी जैसी मौखिक भाषाओं से भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिएए हिन्दी में वाक्य श्मैं विद्यालय जा रहा हूँश् कहा जाता हैए जबकि प्ैस् में इसे संदर्भानुसार श्विद्यालय ़ मैं ़

जानाश् जैसे क्रम में व्यक्त किया जा सकता है। यद्यपि संकेतों का क्रम स्थितिए संदर्भ और संवाद के उद्देश्य के अनुसार परिवर्तित हो सकता हैए फिर भी प्ैस् में अपने स्पष्ट व्याकरणिक नियम और संरचनात्मक सिद्धांत होते हैं। प्रश्नवाचक वाक्योंए नकारात्मक वाक्यों तथा वर्णनात्मक अभिव्यक्तियों के लिए भी विशिष्ट संरचनाएँ प्रयुक्त होती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि प्ैस् की अपनी स्वतंत्र वाक्यविन्यासिक व्यवस्था है और यह किसी मौखिक भाषा का मात्र दृश्य रूपांतरण नहीं है।

4ण् अर्थविज्ञान ;ैमउंदजपबेद्ध

अर्थविज्ञान भाषा में शब्दोंए संकेतों और वाक्यों के अर्थ का अध्ययन करता है। भारतीय सांकेतिक भाषा में प्रत्येक संकेत का एक विशिष्ट अर्थ होता हैए जिसे समुदाय द्वारा साझा और समझा जाता है। संकेतों का अर्थ संदर्भए परिस्थिति तथा संवाद की प्रकृति के अनुसार परिवर्तित भी हो सकता है। अनेक संकेत प्रत्यक्ष अर्थ व्यक्त करते हैंए जबकि कुछ संकेत रूपकात्मक ;डमजंचीवतपबंसद्ध या सांस्कृतिक अर्थ भी धारण कर सकते हैं। इसी प्रकार एक ही संकेत विभिन्न परिस्थितियों में अलग.अलग अर्थ व्यक्त कर सकता है। अर्थ की यह लचीलापन प्ैस् को एक जीवंत और प्रभावी भाषा बनाता हैए जो जटिल विचारोंए भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने में सक्षम है।

5ण् प्राग्मैटिक्स ;च्तंहउंजपबेद्ध

प्राग्मैटिक्स भाषा के सामाजिक उपयोग और संदर्भानुसार अर्थ को समझने से संबंधित है। भारतीय सांकेतिक भाषा में भी भाषा का प्रयोग सामाजिक

परिस्थितियोंए व्यक्तियों के संबंधों तथा संचार के उद्देश्य के अनुसार बदलता है। उदाहरण के लिएए औपचारिक संवादए अनौपचारिक बातचीतए शैक्षणिक चर्चाए सार्वजनिक भाषण तथा भावनात्मक अभिव्यक्तियों में संकेतों की शैलीए गति और चेहरे के भावों में अंतर देखा जा सकता है। सम्मानए विनम्रताए आग्रहए आश्चर्यए प्रसन्नता अथवा असहमति जैसे भावों को व्यक्त करने में गैर.हस्तचालित संकेतों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रकार प्ैस् केवल सूचना देने का माध्यम नहीं हैए बल्कि सामाजिक संबंधोंए सांस्कृतिक मूल्यों और भावनात्मक अभिव्यक्तियों को भी प्रभावी ढंग से संप्रेषित करती है।

इस प्रकार भारतीय सांकेतिक भाषा की ध्वन्यात्मकए रूपात्मकए वाक्यविन्यासिकए अर्थविज्ञानिक तथा प्राग्मैटिक संरचनाएँ यह स्पष्ट रूप से सिद्ध करती हैं कि प्ैस् एक पूर्णए समृद्ध और वैज्ञानिक रूप से मान्य प्राकृतिक भाषा है। इसकी भाषावैज्ञानिक विशेषताएँ इसे विश्व की अन्य प्राकृतिक भाषाओं के समान दर्जा प्रदान करती हैं तथा श्रवण बाधित व्यक्तियों के भाषाईए शैक्षणिक और सामाजिक विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्थापित करती हैं।

9ण्7 सारांशरू

इस इकाई में विभिन्न आयु समूहों के श्रवण बाधित व्यक्तियों में मौखिक भाषा तथा भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन की अवधारणाए प्रक्रियाए उपकरणए चुनौतियों तथा समकालीन दृष्टिकोणों का विस्तृत अध्ययन किया गया। यह स्पष्ट किया गया कि भाषा मूल्यांकन केवल भाषाई त्रुटियों की पहचान करने की प्रक्रिया नहीं हैए बल्कि शिक्षार्थी की संप्रेषण क्षमताए भाषा.अधिगमए शैक्षणिक आवश्यकताओं तथा सामाजिक सहभागिता को समझने का एक वैज्ञानिक एवं विकासात्मक माध्यम है।

इकाई के प्रारम्भ में यह स्पष्ट किया गया कि श्रवण बाधित व्यक्तियों का भाषा विकास एकरूप नहीं होताए बल्कि यह श्रवण हानि की प्रकृति एवं तीव्रताए प्रारम्भिक भाषा.अनुभवए पारिवारिक संप्रेषण वातावरणए शैक्षणिक अवसरए सहायक प्रौद्योगिकी तथा सामाजिक.सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। इसलिए भाषा मूल्यांकन सदैव शिक्षार्थी की व्यक्तिगत पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

आयु.आधारित मूल्यांकन की चर्चा में जन्म से लेकर वयस्क अवस्था तक भाषा विकास के विभिन्न चरणों का विश्लेषण किया गया। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में भाषा सम्पर्कए विद्यालयी स्तर पर शैक्षणिक भाषाए किशोरावस्था में जटिल भाषिक संरचनाएँ तथा उच्च शिक्षा एवं रोजगार के संदर्भ में कार्यात्मक संप्रेषण के महत्व को रेखांकित किया गया। यह भी स्पष्ट किया गया कि भाषा मूल्यांकन एक

सतत प्रक्रिया हैए जो जीवन के विभिन्न चरणों में बदलती आवश्यकताओं के अनुसार संशोधित होती रहती है।

इकाई में मौखिक भाषा तथा भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन के प्रमुख आयामोंकृग्रहणशील भाषाए अभिव्यक्तात्मक भाषाए शब्दावलीए व्याकरणए प्राग्मैटिक कौशलए कथन क्षमताए कार्यात्मक संप्रेषण तथा द्विभाषिक दक्षताकृका विस्तृत वर्णन किया गया। यह भी स्पष्ट किया गया कि भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल्यांकन केवल संकेतों की संख्या पर आधारित नहीं होना चाहिएए बल्कि उसकी व्याकरणिक संरचनाए स्थानिक व्याकरणए वर्गीकारकए गैर.हस्तचालित संकेतकों तथा सामाजिक प्रयोग का भी समुचित मूल्यांकन आवश्यक है।

मूल्यांकन की चरणबद्ध प्रक्रिया में रेफरलए पृष्ठभूमि जानकारीए भाषा प्रोफ़ाइलए मूल्यांकन योजनाए औपचारिक एवं अनौपचारिक मूल्यांकनए प्राकृतिक अवलोकनए परिणामों की व्याख्याए प्रतिपुष्टिए व्यक्तिगत शैक्षिक योजना तथा अनुवर्ती मूल्यांकन को एक सतत एवं चक्रीय प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस प्रक्रिया में बहुविषयक सहयोग तथा परिवार की सक्रिय सहभागिता के महत्व पर भी बल दिया गया।

इकाई में भाषा मूल्यांकन के विभिन्न उपकरणों एवं तकनीकों जैसे मानकीकृत परीक्षणए भाषा नमूना विश्लेषणए अवलोकनए पोर्टफोलियोए पाठ्यचर्या.आधारित मूल्यांकनए गतिशील मूल्यांकनए रूब्रिक तथा डिजिटल एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता ;।प्द्ध आधारित मूल्यांकन की उपयोगिता एवं सीमाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया। यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि किसी

एक उपकरण के आधार पर भाषा क्षमता का निर्णय करना उचित नहीं हैए बल्कि बहु.पद्धति एवं बहु.स्रोत मूल्यांकन अधिक विश्वसनीय एवं वैध परिणाम प्रदान करता है।

इकाई में यह भी स्पष्ट किया गया कि किसी भी भाषा मूल्यांकन की गुणवत्ता उसकी विश्वसनीयताए वैधताए निष्पक्षताए भाषाई एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा नैतिकता पर निर्भर करती है। विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में प्रशिक्षित मूल्यांकनकर्ताओंए उपयुक्त भाषा माध्यमए सांस्कृतिक विविधता के सम्मान तथा गोपनीयता एवं सूचित सहमति जैसे नैतिक सिद्धान्तों का पालन अत्यंत आवश्यक है।

मौखिक भाषा मूल्यांकन की चुनौतियों में श्रवण अनुभव की विविधताए श्रवण अवशेषए वाक्.बोध एवं भाषा.बोध का अंतरए उच्चारण पर अत्यधिक बलए ओष्ठ.पठनए बहुभाषिकताए मानकीकृत परीक्षणों की सीमाएँ तथा मूल्यांकनकर्ता की दक्षता जैसे प्रमुख मुद्दों का विश्लेषण किया गया। इसी प्रकार भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन की चुनौतियों में मानकीकृत उपकरणों का अभावए क्षेत्रीय विविधताएँए व्याकरणिक संरचना का मूल्यांकनए गैर.हस्तचालित संकेतकों की उपेक्षाए प्रशिक्षित विशेषज्ञों की कमीए द्विभाषिक मूल्यांकन की जटिलताएँ तथा डिजिटल एवं ।प् आधारित प्रणालियों की वर्तमान सीमाओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

इकाई में द्विभाषिक ;प्ैस्दृमौखिकध्लिखित भाषाद्ध मूल्यांकन को आधुनिक बधिर शिक्षा का आधार माना गया। यह स्पष्ट किया गया कि भारतीय सांकेतिक

भाषा तथा लिखित अथवा मौखिक भाषा दोनों की अपनी.अपनी भूमिका है और मूल्यांकन का उद्देश्य इन दोनों भाषाओं की तुलना करना नहींए बल्कि उनकी पूरक भूमिका को समझना है। द्विभाषिक मूल्यांकन के माध्यम से शिक्षार्थी की वास्तविक भाषाई क्षमताए शैक्षणिक आवश्यकताओं तथा हस्तक्षेप योजना को अधिक प्रभावी ढंग से विकसित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखादृआधारभूत अवस्थाए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखादृविशेष शिक्षा तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम के संदर्भ में यह प्रतिपादित किया गया कि भाषा मूल्यांकन को समावेशीए सुलभए दक्षता.आधारितए विकासात्मक तथा अधिकार.आधारित बनाया जाना चाहिए। मूल्यांकन को केवल परीक्षा अथवा प्रमाणन का माध्यम न मानकर सीखने में सहायताए व्यक्तिगत शैक्षिक योजना निर्माण तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार का आधार माना जाना चाहिए। अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया कि श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए प्रभावी भाषा मूल्यांकन वही है जो वैज्ञानिकए बहुभाषिकए बहु.स्रोत आधारितए सांस्कृतिक रूप से संवेदनशीलए तकनीकी रूप से अद्यतन तथा शिक्षार्थी.केंद्रित हो। ऐसा मूल्यांकन न केवल भाषा दक्षता का सही चित्र प्रस्तुत करता हैए बल्कि समावेशी शिक्षाए आत्मनिर्भरताए उच्च शिक्षाए रोजगार तथा सामाजिक सहभागिता की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

9ण्8 मुख्य शब्द ;ज्ञमल ज्मतउद्ध

अंग्रेज़ी शब्द हिन्दी शब्द संक्षिप्त अर्थ

।ेेमेेउमदज मूल्यांकन शिक्षार्थी की क्षमताए उपलब्धि एवं आवश्यकताओं का व्यवस्थित आकलन

स्ंदहनंहम ।ेेमेेउमदज भाषा मूल्यांकन भाषा के ग्रहणशीलए अभिव्यक्तात्मक एवं कार्यात्मक पक्षों का मूल्यांकन

व्तंस स्ंदहनंहम मौखिक भाषा श्रवण एवं वाक् के माध्यम से प्रयुक्त भाषा

प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम ;प्ैस्द्ध भारतीय सांकेतिक भाषा भारत में प्रयुक्त प्राकृतिक दृश्य.स्थानिक सांकेतिक भाषा

त्मबमचजपअम स्ंदहनंहम ग्रहणशील भाषा भाषा को समझने एवं उसका अर्थ ग्रहण करने की क्षमता

म्गचतमेेपअम स्ंदहनंहम अभिव्यक्तात्मक भाषाविचारों एवं भावनाओं को भाषा के माध्यम से व्यक्त करने की क्षमता

टवबंइनसंतल शब्दावली किसी व्यक्ति द्वारा ज्ञात एवं प्रयुक्त शब्दों अथवा संकेतों का भंडार

डवतचीवसवहल रूपविज्ञान शब्दों की आंतरिक संरचना एवं निर्माण का अध्ययन

ैलदजंग वाक्यविन्यास शब्दों को व्यवस्थित कर अर्थपूर्ण वाक्य बनाने के नियम

ैमउंदजपबे अर्थविज्ञान शब्दों एवं वाक्यों के अर्थ का अध्ययन

च्तंहउंजपबे व्यवहारिक भाषा प्रयोग सामाजिक परिस्थितियों में भाषा के उपयुक्त उपयोग की क्षमता

छंततंजपअम ैंापससे कथन कौशल घटनाओं या अनुभवों को क्रमबद्ध एवं अर्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता

थ्नदबजपवदंस ब्वउउनदपबंजपवद कार्यात्मक संप्रेषण दैनिक जीवन की आवश्यकताओं के लिए भाषा का प्रभावी उपयोग

ठपसपदहनंस ।ेेमेेउमदज द्विभाषिक मूल्यांकन दो भाषाओं में भाषाई दक्षताओं का मूल्यांकन

स्ंदहनंहम ैंउचसम भाषा नमूना स्वाभाविक परिस्थिति में प्रयुक्त भाषा का संकलन

स्ंदहनंहम ैंउचसम ।दंसलेपे भाषा नमूना विश्लेषण भाषा नमूने का संरचनात्मक एवं कार्यात्मक विश्लेषण

क्लदंउपब ।ेेमेेउमदज गतिशील मूल्यांकन सहायता प्रदान कर सीखने की क्षमता का मूल्यांकन

ब्रततपबनसनउ.ठंेमक ।ेेमेेउमदज पाठ्यचर्या.आधारित मूल्यांकन पाठ्यक्रम आधारित सीखने का मूल्यांकन

च्वतजविसपव ।ेेमेेउमदज पोर्टफोलियो मूल्यांकन समय के साथ शिक्षार्थी के कार्यों एवं प्रगति का संग्रह एवं मूल्यांकन

व्इेमतअंजपवद अवलोकन प्राकृतिक परिस्थितियों में व्यवहार एवं भाषा का निरीक्षण

ब्ीमबासपेज जाँच सूची पूर्वनिर्धारित संकेतकों पर आधारित मूल्यांकन सूची

ंजपदह ैबंसम निर्धारण मापनी विभिन्न स्तरों पर प्रदर्शन का अंकन

त्रइतपब रूब्रिक पूर्वनिर्धारित मानदण्डों के आधार पर प्रदर्शन मूल्यांकन का उपकरण

त्मसपंइपसपजल विश्वसनीयता परिणामों की स्थिरता एवं पुनरावृत्ति की क्षमता

टंसपकपजल वैधता परीक्षण द्वारा सही कौशल का मापन

थ्ंपतदमेे निष्पक्षता बिना पक्षपात के समान अवसर प्रदान करने वाला मूल्यांकन

।नजीमदजपब ।ेेमेेउमदज प्रामाणिक मूल्यांकन वास्तविक जीवन की परिस्थितियों पर आधारित मूल्यांकन

थ्वतउंजपअम ।ेेमेेउमदजनिर्माणात्मक मूल्यांकन सीखने की प्रक्रिया के दौरान किया जाने वाला मूल्यांकन

ैनउउंजपअम ।ेेमेेउमदज संकलनात्मक मूल्यांकन शिक्षण के अंत में उपलब्धि का मूल्यांकन

ब्तपजमतपवद.तममितमदबमक ।ेेमेेउमदज मानदण्ड.संदर्भित मूल्यांकन पूर्वनिर्धारित मानदण्डों के आधार पर मूल्यांकन

छवतउ.तममितमदबमक ।ेेमेेउमदज मानक.संदर्भित मूल्यांकन अन्य व्यक्तियों के प्रदर्शन की तुलना पर आधारित मूल्यांकन

ब्वउउनदपबंजपवद च्तवपिसम संप्रेषण प्रोफ़ाइल शिक्षार्थी की संप्रेषण विशेषताओं का समग्र विवरण

स्ंदहनंहम क्मचतपअंजपवद भाषाई अभावप्रारम्भिक अवस्था में पर्याप्त भाषा सम्पर्क का अभाव

म्ंतसल प्दजमतअमदजपवद प्रारम्भिक हस्तक्षेप प्रारम्भिक आयु में प्रदान की जाने वाली विशेष सेवाएँ

प्दकपअपकनंसप्रमक म्कनबंजपवद च्तवहतंउउम ;प्म्च्द्ध व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाशिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यक्तिगत शिक्षण योजना

डनसजपकपेबपचसपदंतल ज्मंउ बहुविषयक दल विभिन्न विशेषज्ञों का संयुक्त समूह

क्मं िब्नसजनतम बधिर संस्कृति बधिर समुदाय की सांस्कृतिक पहचान एवं जीवन शैली

भ्ंदकेींचम हस्त.आकृति संकेत बनाते समय हाथ का आकार

स्वबंजपवद संकेत स्थान शरीर अथवा स्थान जहाँ संकेत बनाया जाता है

डवअमउमदज गति संकेत की दिशा एवं गति

व्तपमदजंजपवद अभिमुखता हथेली एवं हाथ की दिशा

छवद.उंदनंस डंतामते गैर.हस्तचालित संकेतक चेहरे के भावए सिरए आँखों एवं शरीर की गतिविधियाँ

ैचंजपंस ळतंउउंत स्थानिक व्याकरण स्थान एवं दिशा पर आधारित व्याकरणिक संरचना

ब्संेेपपिमत वर्गीकारक वस्तुओं एवं क्रियाओं को दृश्य रूप से प्रदर्शित करने वाले विशेष संकेत

त्वसम ैीपजि भूमिका परिवर्तन विभिन्न पात्रों का अभिनय करते हुए संकेत करना

।ेेपेजपअम ज्मबीदवसवहल सहायक प्रौद्योगिकी संप्रेषण एवं अधिगम में सहायता देने वाली तकनीक

भ्मंतपदह ।पक श्रवण यंत्र ध्वनि को प्रवर्धित करने वाला उपकरण

ब्वबीसमंत प्उचसंदज कॉक्लियर इम्प्लांट गंभीर श्रवण हानि के लिए प्रत्यारोपित इलेक्ट्रॉनिक उपकरण

ैचममबी त्मंकपदह ओष्ठ.पठन होंठों एवं चेहरे की गतिविधियों को देखकर भाषा समझना

न्दपअमतेंस क्मेपहद वित स्मंतदपदह ;न्क्स्द्ध सार्वभौमिक अधिगम अभिकल्प सभी शिक्षार्थियों के लिए लचीला शिक्षण एवं मूल्यांकन ढाँचा

त्मंेवदंइसम ।बबवउउवकंजपवद युक्तिसंगत समायोजनदिव्यांग शिक्षार्थियों हेतु आवश्यक उपयुक्त संशोधन एवं सुविधाएँ

।बबमेेपइपसपजल सुलभता सेवाओं एवं संसाधनों तक समान पहुँच

ब्वउचमजमदबल.ठंेमक ।ेेमेेउमदज दक्षता.आधारित मूल्यांकन ज्ञान के साथ कौशल एवं अनुप्रयोग का मूल्यांकन

ब्वदजपदनवने ।ेेमेेउमदज सतत मूल्यांकन नियमित एवं निरंतर होने वाला मूल्यांकन

म्अपकमदबम.ठंेमक च्तंबजपबम साक्ष्य.आधारित व्यवहार शोध एवं प्रमाणों पर आधारित निर्णय प्रक्रिया

9ण्9 यूनिट के अंत में होने वाली गतिविधियाँरू

1. शब्दावली का विस्तार करें

शब्दावली को उनके सही विस्तारित रूप के साथ विस्तारित करें.

शब्दावली विस्तारित रूप

छम्च्

छब्थ्ैम्

न्क्स्

।ैभ्।

2. गतिविधियाँरू

;कद्ध समूह चर्चा ;ळतवनच क्पेबनेेपवदद्धरू

समावेशी शिक्षा में भाषा मूल्यांकन की वर्तमान चुनौतियाँ एवं समाधान क्या हैंघ्

;खद्ध वीडियो विश्लेषण ;टपकमव ।दंसलेपेद्धरू

5द्ध10 मिनट का प्ैस् वीडियो देखकर भ्ंदकेींचमए डवअमउमदजए स्वबंजपवदए व्तपमदजंजपवद एवं छवद.उंदनंस डंतामते का विश्लेषण कीजिए।

;गद्ध मूल्यांकन उपकरण निर्माण ;।ेेमेेउमदज ज्ववस च्तमचंतंजपवदद्धरू

3.8 वर्ष के श्रवण बाधित बच्चों के लिए द्विभाषिक ;प्ैस्द्गहिन्दीद्ध भाषा मूल्यांकन चेकलिस्ट विकसित कीजिए।

9ण्10 यूनिट के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न ध् अपनी प्रगति की जाँच करेरू

1. बहु विकल्पीय प्रश्न ;डब्फेद्धरू

ं मौखिकता ;व्तंसपेउद्ध के जनक किसे माना जाता हैघ्

क त्वल भ्वसबवउइ ग ज्ीवउंे ळंससंनकमज

ख ैं उनमस भ्मपदपबाम घ स्ंनतमदज ब्समतब

इ सम्पूर्ण सम्प्रेषण को किसने लोकप्रिय बनायाघ्

क त्वल भ्वसबवउइ ग ठमसस

ख ैं उनमस भ्मपदपबाम घ ैजवावम

ब भाषा मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य है

क त्रुटि खोज ग दंड

ख प्रतियोगिता घ क्षमता एवं आवश्यकताओं की पहचान

क प्ैस् के मूल्यांकन में वीडियो.आधारित परीक्षण का प्रमुख लाभ क्या हैघ्

क हिन्दी ग अंग्रेज़ी

ख सांकेतिक भाषा घ मौखिक भाषा

म प्ैस् मूल्यांकन में क्षेत्रीय विविधता किस प्रकार की चुनौती हैघ्

क गणितीय ग भाषाई

ख आर्थिकघ चिकित्सीय

िनिम्न में से कौन अभिव्यक्तात्मक भाषा का उदाहरण हैघ्

क बोलनाग पढ़ना

ख सुनना घ समझना

ह भाषा नमूना विश्लेषण मुख्यतः किसका मूल्यांकन करता हैघ्

क प्फ ग स्वाभाविक भाषा प्रयोग

ख दृष्टि घ व्यक्तित्व

2 रिक्त स्थान की पूर्ति ;थ्पसस पद जीम ठसंदोद्धरू

1 ग्रहणशील भाषा का संबंध भाषा ऋऋऋऋऋऋऋऋ से है। ;समझनेद्ध

2 चेहरे के भाव प्ैस् में ऋऋऋऋऋऋऋऋ डंतामते कहलाते हैं। ;छवद.उंदनंसद्ध

3 छम्च् ऋऋऋऋऋऋऋऋ में लागू की गई। ;2020द्ध

4 त्च्ूक् ।बज ऋऋऋऋऋऋऋऋ में पारित हुआ। ;2016द्ध

5 भ्ंदकेींचम प्ैस् का एक ऋऋऋऋऋऋऋऋ घटक है। ;भाषिकद्ध

6 द्विभाषिक मूल्यांकन में कम से कम ऋऋऋऋऋऋ भाषाओं का मूल्यांकन किया जाता है। ;दोद्ध

7 कार्यात्मक संप्रेषण का संबंध ऋऋऋऋऋऋऋऋ जीवन से है। ;दैनिकद्ध

8 भाषा मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य प्रभावी ऋऋऋऋऋऋऋऋ योजना बनाना है। ;हस्तक्षेपद्ध

3ण् जोड़ी मिलान ;डंजबी जीम थ्वससवूपदहद्धरू

ैमज ।ैमज इ

। व्तंसपेउ क त्वल भ्वसबवउइ

ठ ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद ख क्मं िब्नसजनतम

ब् म्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ ग ैंउनमस भ्मपदपबाम

क् ठपदृठप डवकमस घ स्1 एवं स्2 का प्रयोग

उत्तर ।.गए ठ.कए ब्.घए क्.ख

;खद्ध सत्यध्असत्य

1ण् व्तंसपेउ में सांकेतिक भाषा को मुख्य माध्यम माना जाता है। ;असत्यद्ध

2ण् ज्वजंस ब्वउउनदपबंजपवद एक शैक्षिक दर्शन है। ;सत्यद्ध

3ण् ठपदृठप मॉडल क्मं िन्नसजनतम को महत्व देता है। ;सत्यद्ध

4ण् म्कनबंजपवदंस ठपसपदहनंसपेउ में केवल एक भाषा का उपयोग किया जाता है। ;असत्यद्ध

5ण् सांकेतिक भाषा एक प्राकृतिक भाषा है। ;सत्यद्ध

6ण् भाषा नमूना विश्लेषण स्वाभाविक भाषा का अध्ययन करता है। ;सत्यद्ध

7ण् ब्वबीसमंत प्उचसंदज एक श्रवण सहायक तकनीक है। ;सत्यद्ध

8ण् पोर्टफोलियो मूल्यांकन केवल अंतिम परीक्षा पर आधारित होता है। ;असत्यद्ध

9ण् सांकेतिक भाषा में ैचंजपंस ळतंउउंत का कोई महत्व नहीं है। ;असत्यद्ध

10ण् द्विभाषिक मूल्यांकन केवल एक भाषा पर आधारित होता है। ;असत्यद्ध

11ण् छम्च् 2020 समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। ;सत्यद्ध

12ण् त्च्ूक् ।बज 2016 अधिकार.आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। ;सत्यद्ध

13ण् सांकेतिक भाषा में भ्ंदकेींचम एक महत्वपूर्ण घटक है। ;सत्यद्ध

14ण् भाषा मूल्यांकन में परिवार की कोई भूमिका नहीं होती। ;असत्यद्ध

15ण् रचनात्मक मूल्यांकन सीखने के दौरान किया जाता है। ;सत्यद्ध

अण् दीर्घ उत्तरीय प्रश्न ;स्वदह ।दूेमत फनमेजपवदेद्ध

1ण् विभिन्न आयु समूहों के श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा विकास एवं भाषा मूल्यांकन की आवश्यकताओं का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

2ण् मौखिक भाषा एवं भारतीय सांकेतिक भाषा ;प्ैस्द्ध मूल्यांकन के प्रमुख आयामों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।

3ण् ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक भाषा मूल्यांकन की प्रक्रियाए उपकरण एवं शैक्षिक उपयोगिता का विस्तार से वर्णन कीजिए।

4ण् भाषा मूल्यांकन में मानकीकृत एवं शिक्षक.निर्मित उपकरणों की उपयोगिता एवं सीमाओं की विवेचना कीजिए।

5ण् भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन में भाषावैज्ञानिक घटकों एवं गैर.हस्तचालित संकेतकों के महत्व का विश्लेषण कीजिए।

6ण् द्विभाषिक ;प्ैस्दृमौखिकध्लिखित भाषाद्ध मूल्यांकन की अवधारणाए चुनौतियों एवं शैक्षिक निहितार्थों की व्याख्या कीजिए।

7ण् भाषा मूल्यांकन में पोर्टफोलियोए गतिशील मूल्यांकन एवं भाषा नमूना विश्लेषण की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

8ण् छम्च् 2020ए छब्थ्.थ्ै 2022 एवं छब्थ्ैम् 2023 के आलोक में समावेशी भाषा मूल्यांकन की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

बण् लघु उत्तरीय प्रश्न ;ैंीवतज ।दूमत फनमेजपवदेद्ध

1ण् भाषा मूल्यांकन क्या हैघ्

2ण् ग्रहणशील भाषा से क्या अभिप्राय हैघ्

3ण् अभिव्यक्तात्मक भाषा क्या हैघ्

4ण् भारतीय सांकेतिक भाषा के प्रमुख घटक कौन.कौन से हैंघ्

5ण् भाषा नमूना विश्लेषण क्या हैघ्

6ण् गतिशील मूल्यांकन की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

7ण् पोर्टफोलियो का महत्व लिखिए।

8ण् नॉन मैन्युअल मारकर क्या हैंघ्

9ण् क्रियात्मक सम्प्रेषण का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

10ण् द्विभाषिक मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों हैघ्

उत्तरमालारू

1ण् बहु विकल्पीय प्रश्नरू

ंण् उत्तररू ;खद्ध ैंउनमस भ्मपदपबाम

इण् उत्तररू ;कद्ध त्वल भ्वसबवउइ

बण् उत्तररू ;घद्ध क्षमता एवं आवश्यकताओं की पहचान

कण् उत्तररू ;खद्ध सांकेतिक भाषा

मण् उत्तररू ;गद्ध भाषाई

ण् िउत्तररू ;कद्ध बोलना

हण् उत्तररू ;गद्ध स्वाभाविक भाषा प्रयोग

2ण् रिक्त स्थान की पूर्तिरू

ंण् उत्तररू समझने

इण् उत्तररू छवद.उंदनंस

बण् उत्तररू 2020

मण् उत्तररू भाषिक

ण् िउत्तररू दो

हण् उत्तररू दैनिक

ीण् उत्तररू हस्तक्षेप

9ण्11 अधिन्यास ध् क्रियाकलापरू

1ण् किसी विद्यालय में प्रयुक्त भाषा मूल्यांकन प्रणाली का अध्ययन कर उसकी शक्तियाँ एवं सीमाएँ लिखिए।

2ण् 8दृ12 वर्ष के श्रवण बाधित बच्चों के लिए द्विभाषिक ;प्ैस्दृहिन्दीद्ध भाषा मूल्यांकन चेकलिस्ट विकसित कीजिए।

3ण् किसी काल्पनिक श्रवण बाधित शिक्षार्थी के लिए भाषा मूल्यांकन आधारित प्म्च् तैयार कीजिए।

9ण्12 चर्चा के बिंदु और स्पष्टीकरणरू

;कद्ध क्या भारतीय सांकेतिक भाषा प्रत्येक श्रवण बाधित शिक्षार्थी के लिए आवश्यक हैघ्

ऋऋऋ

;खद्ध क्या मौखिक भाषा मूल्यांकन अकेले पर्याप्त हैघ्

ऋऋ

ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ
ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ

;गद्ध द्विभाषिक शिक्षा श्रवण बाधित विद्यार्थियों को किस प्रकार लाभ पहुँचाती हैघ्

ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ
ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ
ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ
ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ
ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ

9ण्13 सुझाए गए पठन और संदर्भरू

1ण् भारतीय पुनर्वास परिषद ;त्ब्प्द्ध्ण् विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण सामग्री एवं दिशा.निर्देश।

2ण् प्दकपंद ैपहद स्दहनंहम त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ब्मदजतम ;प्ैस्त्ब्द्ध्ण् प्दकपंद ैपहद स्दहनंहम क्पबजपवदंतल ;स्ंजमेज म्कपजपवदद्ध्ण्

3ण् प्दकपंद ैपहद स्दहनंहम त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ब्मदजतम ;प्ैस्त्ब्द्ध्ण् ज्मंबीपदह स्मंतदपदह डंजमतपंसे पद प्दकपंद ैपहद स्दहनंहमण्

4ण् डपदपेजतल व िम्कनबंजपवदण् छंजपवदंस म्कनबंजपवद च्वसपबल ;छम्च्द्धए 2020ण्

5ण् छंजपवदंस ब्वनदबपस व िम्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ;छब्म्त्ज्द्धण् छंजपवदंस ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित थ्वनदकंजपवदंस ैजंहम ;छब्थ्.थ्ैद्धए 2022ण्

6ण् छंजपवदंस ब्वनदबपस व िम्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ;छब्म्त्ज्द्धण् छंजपवदंस ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित ैचमबपंस म्कनबंजपवद ;छब्थ्ैम्द्धए 2023ण्

7ण् ळवअमतदउमदज व िप्दकपंण् त्पहीजे व िच्मतेवदे ूपजी क्पेंइपसपजपमे ।बजए 2016ण्

8ण् त्मींइपसपजंजपवद ब्वनदबपस व िप्दकपं ;त्ब्प्द्धण् डण्म्कण् ैचमबपंस म्कनबंजपवद ;भ्मंतपदह प्उचंपतउमदजद्ध ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवताण्

9ण् ।उमतपबंद ैचममबी.स्ंदहनंहम.भ्मंतपदह ।ेेवबपंजपवद ;।ैभ्।द्धण् च्तंबजपबम च्वतजंसरू ैचवामद स्ंदहनंहम क्पेवतकमतेण्

10ण् ।उमतपबंद म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ।ेेवबपंजपवद ;।म्त्।द्धए ।उमतपबंद च्ेलबीवसवहपबंस ।ेेवबपंजपवद ;।च्।द्धए - छंजपवदंस ब्वनदबपस वद डमंेनतमउमदज पद म्कनबंजपवद ;छब्डम्द्धण् ैजंदकंतके वित म्कनबंजपवदंस ंदक च्ेलबीवसवहपबंस ज्मेजपदहण्

11ण् भ्विएि म्ण् स्ंदहनंहम क्मअमसवचउमदजण्

12ण् व्ूमदेए त्ण् म्ण् स्ंदहनंहम क्मअमसवचउमदजरू ।द प्दजतवकनबजपवदण्

13ण् च्ंनसए च्ण् टण्ए - ॅंीपजमसंूए ळण् भ्मंतपदह ंदक क्मंदिमेेरू ।द प्दजतवकनबजपवद वित भ्मंसजी ंदक म्कनबंजपवद च्तवमिेपवदंसेण्

14ण् ैबीपबाए ठण्ए डंतेबींताए डण्ए - ैचमदबमतए च्ण् ;म्केण्द्धण् ।कअंदबमे पद जीम ैपहद स्ंदहनंहम क्मअमसवचउमदज व िक्मं िब्ीपसकतमदण्

15ण् ैचमदबमतए च्ण् म्ण्ए - डंतेबींताए डण् म्अपकमदबम.ठंेमक च्तंबजपबम पद म्कनबंजपदह क्मं िंदक भ्ंतक.व.िभ्मंतपदह ैजनकमदजेण्

16ण् टलहवजोलए स्ण् ैण् डपदक पद ैवबपमजलण्

17ण् ब्रउउपदेए श्रण् स्ंदहनंहमए च्वूमत ंदक च्मकंहवहलण्

18ण् न्छम्ैब्ण् ळसवइंस म्कनबंजपवद डवदपजवतपदह त्मचवतजे ;प्दबसनेपअम म्कनबंजपवदद्धण्

19ण् ।उमतपबंद म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ।ेेवबपंजपवदए ।उमतपबंद च्ेलबीवसवहपबंस ।ेेवबपंजपवदए - छंजपवदंस ब्वनदबपस वद डमंेनतमउमदज पद म्कनबंजपवदण् ;2014द्धण् ैजंदकंतके वित मकनबंजपवदंस ंदक चेलबीवसवहपबंस जमेजपदहण् ।उमतपबंद म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ।ेेवबपंजपवदण्

20ण् ।उमतपबंद ैचममबी.स्ंदहनंहम.भ्मंतपदह ।ेेवबपंजपवदण् ;दण्कण्द्धण् च्तंबजपबम च्वतजंसरू ैचवामद स्ंदहनंहम क्पेवतकमतेण्

21ण् ब्रउउपदेए श्रण् ;2000द्धण् स्ंदहनंहमए चवूमत ंदक चमकंहवहलरू ठपसपदहनंस बीपसकतमद पद जीम बतवेेपितमण् डनसजपसपदहनंस डंजजमतेण्

22ण् ळवअमतदउमदज व िप्दकपंण् ;2016द्धण् ज्ीम त्पहीजे व िच्मतेवदे ूपजी क्पेंइपसपजपमे ।बजए 2016ण् डपदपेजतल व िस्ंू ंदक श्रनेजपबमण्

23ण् भ्विि्ए म्ण् ;2018द्धण् स्ंदहनंहम कमअमसवचउमदज ;6जी मकण्द्धण् ब्मदहंहम स्मंतदपदहण्

24ण् प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ब्मदजतमण् ;स्ंजमेज मकण्द्धण् प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम क्पबजपवदंतलण् क्मचंतजउमदज व ि्म्उचवूमतउमदज व ि्च्मतेवदे ूपजी क्पेंइपसपजपमेण्

25ण् डपदपेजतल व ि्म्कनबंजपवदण् ;2020द्धण् छंजपवदंस म्कनबंजपवद च्वसपबल 2020ण् ळवअमतदउमदज व ि्प्दकपंण्

26ण् छंजपवदंस ब्वनदबपस व ि्म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदहण् ;2022द्धण् छंजपवदंस ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित थ्वनदकंजपवदंस ैजंहमण् छब्म्त्ज्ण्

27ण् छंजपवदंस ब्वनदबपस व ि्म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदहण् ;2023द्धण् छंजपवदंस ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवता वित ैचमबपंस म्कनबंजपवदण् छब्म्त्ज्ण्

28ण् व्ूमदेए त्ण् म्ण् ;2020द्धण् स्ंदहनंहम कमअमसवचउमदजरू ।द पदजतवकनबजपवद ;10जी मकण्द्धण् च्मंतेवदण्

29ण् च्ंनसए च्ण् टण्ए - ॅंीपजमसंूए ळण् ;2011द्धण् भ्मंतपदह ंदक कमंदिमे ेरू ।द पदजतवकनबजपवद वित ंीमंसजी ंदक मकनबंजपवद चतवमि ेपवदंसेण् श्रवदमे - ठंतजसमजजण्

30ण् त्मींइपसपजंजपवद ब्वनदबपस व ि्प्दकपंण् ;स्ंजमेज मकण्द्धण् डण्म्कण् ैचमबपंस म्कनबंजपवद ;भ्मंतपदह प्उचंपतउमदजद्ध ब्नततपबनसनउ थ्तंउमूवताण् त्ब्प्ण्

31ण् ैबीपबाए ठण्ए डंतेबींताए डण्ए - ैचमदबमतए च्ण् म्ण् ;म्केण्द्धण् ;2006द्धण् ।कअंदबमे पद जीम ेपहद संदहनंहम कमअमसवचउमदज व िकमं िबीपसकतमदण् व्गवितक न्दपअमतेपजल च्तमेेण्

32ण् ैचमदबमतए च्ण् म्ण्ए - डंतेबींताए डण् ;2010द्धण् म्अपकमदबम.इंेमक चतंबजपबम पद मकनबंजपदह कमं ि ंदक ींतक.व.िीमंतपदह ेजनकमदजेण् व्गवितक न्दपअमतेपजल च्तमेेण्

33ण् न्छम्ैब्ण् ;2020द्धण् ळसवइंस मकनबंजपवद उवदपजवतपदह तमचवतजरू प्दबसनेपवद ंदक मकनबंजपवद दृ ।सस उमंदे ंससण् न्छम्ैब्ण्

34ण् टलहवजोलए स्ण् ैण् ;1978द्धण् डपदक पद ेवबपमजलरू ज्ीम कमअमसवचउमदज व िीपहीमत चेलबीवसवहपबंस चतवबमेेमेण् भ्ंतअंतक न्दपअमतेपजल च्तमेेण्

इकाई -10

एक विषय के तौर पर भारतीय सांकेतिक भाषा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 भारतीय सांकेतिक भाषा अवधारणा, स्वरूप एवं विकास

10.3.1 भारतीय सांकेतिक भाषा की परिभाषा एवं विशेषताएँ

10.3.2 भारतीय सांकेतिक भाषा का ऐतिहासिक विकास

10.3.3 भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र की भूमिका

10.3.4 भारतीय सांकेतिक भाषा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति

10.3.5 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 एवं भारतीय सांकेतिक भाषा

10.3.6 भारतीय सांकेतिक भाषारू मिथक एवं वास्तविकताएँ

10.4 भाषा मूल्यांकन की अवधारणा एवं सिद्धांत

10.4.1 भाषा मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य

10.4.2 भाषा मूल्यांकन के प्रकार

10.4.3 श्रवण बाधित बच्चों में भाषा मूल्यांकन के सिद्धांत

10.4.4 सांस्कृतिक एवं भाषाई दृष्टिकोण से निष्पक्ष मूल्यांकन

10.4.5 द्विभाषिक (प्लिखितध्मौखिक भाषा) मूल्यांकन की आवश्यकता

10.5 भारतीय सांकेतिक भाषा की भाषाई संरचना

10.5.1 प्ैस् की ध्वन्यात्मक (च्ीवदवसवहपबंस) संरचना

10.5.2 प्ैस् की रूपात्मक (डवतचीवसवहपबंस) संरचना

10.5.3 प्ैस् की वाक्यात्मक संरचना

10.5.4 प्ैस् की अर्थगत संरचना

10.5.5 प्ैस् की प्राग्मैटिक (च्तंहउंजपब) संरचना

10.6 भारतीय सांकेतिक भाषा का ग्रहणशील (त्मबमचजपअम) मूल्यांकन

10.6.1 ग्रहणशील भाषा कौशल का अर्थ

10.6.2 ग्रहणशील प्ैस् मूल्यांकन का महत्त्व

10.6.3 ग्रहणशील मूल्यांकन के प्रमुख लाभ

10.6.4 ग्रहणशील मूल्यांकन के प्रमुख घटक

10.6.5 भारतीय सांकेतिक भाषा के ग्रहणशील मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण

10.6.6 भारतीय सांकेतिक भाषा के ग्रहणशील मूल्यांकन हेतु मानदण्ड एवं संकेतक

10.6.7 भारतीय सांकेतिक भाषा के ग्रहणशील मूल्यांकन की प्रक्रिया एवं चरण

10.7 भारतीय सांकेतिक भाषा का अभिव्यक्तात्मक (म्गचतमेेपअम) मूल्यांकन

10.7.1 अभिव्यक्तात्मक भाषा कौशल का अर्थ

10.7.2 अभिव्यक्तात्मक प्ैस् मूल्यांकन का महत्त्व

10.7.3 अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन के प्रमुख घटक

10.7.4 भारतीय सांकेतिक भाषा के अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपकरण

10.7.5 भारतीय सांकेतिक भाषा के अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया एवं चरण

10.8 भारतीय सांकेतिक भाषा के ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन में चुनौतियाँ एवं समाधान

10.8.1 मूल्यांकन संबंधी प्रमुख चुनौतियाँ

10.8.2 आधुनिक प्रवृत्तियाँ एवं नवाचार

10.9 अध्याय सारांश

10.10 मुख्य शब्द (ज्ञमल ज्मतउे)

10.11 यूनिट के अंत में होने वाली गतिविधियाँरू

10.12 यूनिट के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

10.13 अधिन्यास ध् क्रियाकलाप

10.14 चर्चा के बिंदु और स्पष्टीकरण

10.15 सुझाए गए पठन और संदर्भ

10.1 प्रस्तावना

भाषा मानव जीवन का एक आधारभूत माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों तथा आवश्यकताओं को व्यक्त करता है और दूसरों के साथ प्रभावी रूप से संवाद स्थापित करता है। भाषा केवल संचार का साधन ही नहीं है, बल्कि यह संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक सहभागिता, सांस्कृतिक पहचान तथा शैक्षिक उपलब्धियों का भी महत्वपूर्ण आधार है। किसी भी बालक के समग्र विकास में भाषा का स्थान केंद्रीय होता है, क्योंकि भाषा के माध्यम से ही वह अपने परिवेश को समझता है, ज्ञान अर्जित करता है तथा समाज के साथ अंतःक्रिया करता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में भाषा विकास का प्रश्न और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। श्रवण बाधिता के कारण ध्वनि आधारित भाषाई अनुभवों की सीमित उपलब्धता होने से भाषा अर्जन की प्रक्रिया भिन्न स्वरूप ग्रहण कर सकती है। ऐसे में भारतीय सांकेतिक भाषा प्ैस् श्रवण बाधित समुदाय के लिए एक स्वाभाविक, दृश्यात्मक तथा पूर्ण विकसित भाषा के रूप में कार्य करती है। भारतीय सांकेतिक भाषा न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि यह श्रवण बाधित समुदाय की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक सहभागिता और आत्म-अभिव्यक्ति का भी महत्वपूर्ण आधार है। विगत कुछ वर्षों में भारत में भारतीय सांकेतिक भाषा के प्रति जागरूकता और स्वीकार्यता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 ने भारतीय सांकेतिक भाषा के संरक्षण, संवर्धन तथा शैक्षिक उपयोग पर विशेष बल दिया है। भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र द्वारा शब्दकोश निर्माण, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा शोध गतिविधियों के माध्यम से भारतीय सांकेतिक भाषा को संस्थागत समर्थन प्रदान किया जा रहा है।

किसी भी भाषा के प्रभावी शिक्षण एवं अधिगम के लिए उसके मूल्यांकन की वैज्ञानिक व्यवस्था आवश्यक होती है। भाषा मूल्यांकन के माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षार्थी भाषा को किस सीमा तक समझता है तथा उसका उपयोग किस प्रकार करता है। भाषा मूल्यांकन के दो प्रमुख आयाम हैं.ग्रहणशील भाषा तथा अभिव्यक्तात्मक भाषा। ग्रहणशील भाषा उस क्षमता को दर्शाती है जिसके माध्यम से व्यक्ति दूसरों के संदेशों, संकेतों एवं विचारों को समझता है, जबकि अभिव्यक्तात्मक भाषा व्यक्ति की अपने विचारों, भावनाओं एवं आवश्यकताओं को भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने की क्षमता को इंगित करती है। भारतीय सांकेतिक भाषा के संदर्भ में ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन का विशेष महत्त्व है। ग्रहणशील मूल्यांकन के अंतर्गत यह देखा जाता है कि शिक्षार्थी विभिन्न संकेतों, वाक्यों, कथाओं, निर्देशों तथा गैर-हस्त संकेतों को किस सीमा तक समझ सकता है। दूसरी ओर, अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन में यह अध्ययन किया जाता है कि शिक्षार्थी संकेतों का प्रयोग, वाक्य निर्माण, कथन, वार्तालाप तथा भावाभिव्यक्ति किस प्रकार करता है। इन दोनों प्रकार के मूल्यांकन से शिक्षार्थी की भाषाई क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा शैक्षिक हस्तक्षेपों की दिशा निर्धारित करने में सहायता मिलती है। इस इकाई में भारतीय सांकेतिक भाषा की अवधारणा, भाषाई संरचना, ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ, मूल्यांकन उपकरण, समकालीन चुनौतियाँ तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा, जिससे शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा मूल्यांकन के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों को समग्र रूप से समझ सकें।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे

भारतीय सांकेतिक भाषा की अवधारणा एवं विशेषताओं को समझ सकेंगे।

प्ैस् की भाषाई संरचना का विश्लेषण कर सकेंगे।

ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक भाषा कौशलों का महत्त्व स्पष्ट कर सकेंगे।

व प्ैस् के ग्रहणशील मूल्यांकन की प्रक्रिया एवं तकनीकों को समझ सकेंगे।

व प्ैस् के अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन के आयामों एवं मानदण्डों का अध्ययन कर सकेंगे।

व विभिन्न मूल्यांकन उपकरणों एवं वीडियो-आधारित विधियों का उपयोग कर सकेंगे।

व सांस्कृतिक विविधता एवं द्विभाषिक दृष्टिकोण के महत्त्व को समझ सकेंगे।

व प्ैस् मूल्यांकन की समकालीन चुनौतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

व छम्च्-2020 एवं त्च्ूक् ।बजए 2016 के संदर्भ में प्ैस् मूल्यांकन की प्रासंगिकता समझ सकेंगे।

व डिजिटल तकनीकों एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नई प्रवृत्तियों का अध्ययन कर सकेंगे।

व समावेशी शिक्षा में परिवार, समुदाय एवं विशेषज्ञों की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे।

व मूल्यांकन के आधार पर शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान एवं हस्तक्षेप योजना बना सकेंगे।

10.3 भारतीय सांकेतिक भाषा रू अवधारणा, स्वरूप एवं विकास

10.3.1 भारतीय सांकेतिक भाषा की परिभाषा एवं विशेषताएँ

मानव समाज में भाषा संचार का प्रमुख माध्यम है। सामान्यतः भाषा को ध्वनि आधारित प्रणाली के रूप में देखा जाता है, किन्तु श्रवण बाधित समुदाय के लिए दृश्यात्मक भाषा प्रणालियाँ समान रूप से प्रभावी एवं समृद्ध होती हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा ऐसी ही एक प्राकृतिक दृश्यात्मक भाषा है, जिसका उपयोग भारत में लाखों श्रवण बाधित व्यक्ति संचार, शिक्षा, सामाजिक सहभागिता एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए करते हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा को केवल हाथों के संकेतों का समूह मानना उचित नहीं है। यह अपनी स्वतंत्र व्याकरणिक संरचना, शब्दावली, वाक्य-विन्यास तथा अर्थ प्रणाली वाली पूर्ण विकसित भाषा है। इसमें हस्त संकेतों के साथ-साथ चेहरे के भाव, शरीर की मुद्राएँ, दृष्टि की दिशा तथा अन्य गैर-हस्त संकेत भी भाषा के अभिन्न अंग होते हैं।

भारतीय सांकेतिक भाषा की प्रमुख विशेषताएँ

क) यह एक प्राकृतिक भाषा हैरू भारतीय सांकेतिक भाषा कृत्रिम रूप से निर्मित प्रणाली नहीं है, बल्कि यह श्रवण बाधित समुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के दौरान स्वाभाविक रूप से विकसित हुई है। जिस प्रकार मौखिक भाषाएँ समुदायों के भीतर विकसित होती हैं, उसी प्रकार सांकेतिक भाषाएँ भी सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से विकसित होती हैं।

ख) इसकी स्वतंत्र व्याकरणिक संरचना हैरू प्ैस् की व्याकरणिक संरचना हिंदी, अंग्रेजी अथवा अन्य मौखिक भाषाओं से भिन्न है। इसके वाक्य विन्यास, शब्द क्रम तथा अर्थ अभिव्यक्ति के अपने विशिष्ट नियम हैं। उदाहरण के लिए प्ैस् में कर्ता-कर्म-क्रिया क्रम का प्रयोग किया जाता है।

ग) दृश्यात्मक एवं स्थानिक भाषारू प्ैस् एक दृश्य-स्थानिक भाषा है। इसमें संचार का आधार ध्वनि के स्थान पर दृश्य संकेत होते हैं। भाषा के अर्थ को व्यक्त करने के लिए त्रिविमीय स्थान, गति तथा शारीरिक अभिव्यक्तियों का उपयोग किया जाता है।

घ) गैर-हस्त संकेतों का महत्त्वरू चेहरे के भाव, भौंहों की गति, सिर की स्थिति तथा शरीर की मुद्राएँ प्ैस् की व्याकरण का अभिन्न भाग हैं। प्रश्नवाचक वाक्य, निषेध, भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा बलाघात को व्यक्त करने में गैर-हस्त संकेतों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

ङ) सांस्कृतिक पहचान का माध्यमरू भारतीय सांकेतिक भाषा केवल संचार का साधन नहीं है, बल्कि यह श्रवण बाधित समुदाय की सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं तथा सामाजिक मूल्यों को भी अभिव्यक्त करती है। क्मं िन्नसजनतम के संरक्षण एवं संवर्धन में प्ैस् का महत्वपूर्ण योगदान है।

च) क्षेत्रीय विविधताएँरू भारत की भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता के कारण प्ैस् में भी विभिन्न क्षेत्रीय रूप एवं शब्दावली भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। तथापि, प्ैस्त्ज्ब् द्वारा मानकीकरण के प्रयासों से इन विविधताओं के मध्य एक सामान्य संचार प्रणाली विकसित की जा रही है।

10.3.2 भारतीय सांकेतिक भाषा का ऐतिहासिक विकास

भारतीय सांकेतिक भाषा प्ैस् का ऐतिहासिक विकास भारत के श्रवण बाधित समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा भाषाई यात्रा का परिणाम है। यद्यपि भारत में संकेतों एवं हाव-भावों के माध्यम से संचार की परंपरा प्राचीन काल से विद्यमान रही है, परन्तु भारतीय सांकेतिक भाषा को एक स्वतंत्र एवं वैज्ञानिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत हाल के दशकों में विकसित हुई है। इसका विकास समुदाय की आवश्यकताओं, सामाजिक सहभागिता, शैक्षिक आंदोलनों तथा सरकारी नीतियों के संयुक्त प्रभाव से संभव हुआ है। प्राचीन भारत में हस्त-मुद्राओं एवं संकेतों का व्यापक प्रयोग सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम था। भरतनाट्यम, कथक, कथकली और अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों में हस्त-मुद्राओं के माध्यम से भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने की समृद्ध परंपरा विकसित हुई। इसके अतिरिक्त ग्रामीण एवं जनजातीय समुदायों में भी विभिन्न प्रकार के संकेतों और हाव-भावों का उपयोग संचार के लिए किया जाता था। यद्यपि इन्हें आधुनिक अर्थों में सांकेतिक भाषा नहीं कहा जा सकता, फिर भी उन्होंने दृश्य-आधारित संचार संस्कृति की मजबूत आधारभूमि तैयार की, जिसने आगे चलकर भारतीय सांकेतिक भाषा के विकास को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

भारत में श्रवण बाधित बच्चों की औपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। वर्ष 1883 में मुंबई में देश का पहला बधिर विद्यालय स्थापित किया गया, जिसके बाद विभिन्न राज्यों में ऐसे विद्यालयों की स्थापना होने लगी। औपनिवेशिक शासन के दौरान यूरोप और अमेरिका की शैक्षिक विचारधाराओं

का प्रभाव भारतीय बधिर शिक्षा पर भी पड़ा और मौखिक पद्धति को प्राथमिकता दी गई। इस पद्धति में वाणी एवं होंठ-पठन के प्रशिक्षण पर बल दिया गया तथा सांकेतिक भाषा के प्रयोग को सीमित कर दिया गया।

वर्ष 1880 का मिलान सम्मेलन बधिर शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण किंतु विवादास्पद घटना थी। इस सम्मेलन में मौखिक शिक्षा को सांकेतिक भाषा से श्रेष्ठ घोषित किया गया और विद्यालयों में सांकेतिक भाषाओं के उपयोग को हतोत्साहित किया गया। इसका प्रभाव विश्व के अनेक देशों के साथ भारत पर भी पड़ा, जिसके कारण लंबे समय तक बधिर विद्यालयों में मौखिक शिक्षा को ही अपनाया गया। परिणामस्वरूप भारतीय सांकेतिक भाषा का स्वाभाविक विकास मुख्यतः श्रवण बाधित समुदाय के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन तक सीमित रहा।

यद्यपि औपचारिक शिक्षा संस्थानों में सांकेतिक भाषा को पर्याप्त स्थान नहीं मिला, फिर भी श्रवण बाधित समुदाय ने विद्यालयों, छात्रावासों, सामाजिक संगठनों तथा सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी भाषा और संस्कृति को संरक्षित रखा। विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय सांकेतिक शब्दावली एवं अभिव्यक्तियाँ विकसित होती रहीं, जिससे भारतीय सांकेतिक भाषा में क्षेत्रीय विविधताएँ उत्पन्न हुईं। विद्वानों का मत है कि भारतीय सांकेतिक भाषा स्थानीय संकेत प्रणालियों तथा कुछ विदेशी सांकेतिक प्रभावों के सम्मिश्रण से विकसित हुई और एक प्रकार की क्रियोल (ब्तमवसम) भाषा के रूप में उभरी। इसके बावजूद इसकी मूल संरचना पूरे देश में अपेक्षाकृत एकरूप बनी रही, जो इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में बधिर समुदाय के अधिकारों और भाषाई पहचान के प्रति जागरूकता बढ़ने लगी। वर्ष 1955 में ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ द डेफ (।प्थ्क्) की स्थापना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, जिसने बधिर व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा, शिक्षा के विस्तार तथा सांकेतिक भाषा के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संगठन ने देशभर के बधिर समुदाय में एकता और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने का कार्य किया। 1970 और 1980 के दशकों में वैश्विक स्तर पर बधिर अधिकार आंदोलनों तथा द्विभाषिक शिक्षा (ठपसपदहनंस म्कनबंजपवद) की अवधारणा के प्रभाव से भारत में भी सांकेतिक भाषा के महत्त्व को स्वीकार किया जाने लगा। इसके परिणामस्वरूप भारतीय सांकेतिक भाषा को केवल संचार का साधन न मानकर एक स्वतंत्र भाषा और सांस्कृतिक पहचान के रूप में देखा जाने लगा।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय सांकेतिक भाषा के वैज्ञानिक एवं भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रारम्भ हुए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विलियम स्टोकी के शोधों ने यह सिद्ध किया कि सांकेतिक भाषाएँ पूर्ण विकसित प्राकृतिक भाषाएँ हैं। इन अध्ययनों से प्रेरित होकर भारतीय शोधकर्ताओं ने भी प्ैस् की व्याकरणिक, रूपात्मक, वाक्यात्मक तथा अर्थगत संरचनाओं का अध्ययन किया और यह स्थापित किया कि इसकी अपनी स्वतंत्र भाषाई विशेषताएँ हैं, जो इसे अन्य मौखिक भाषाओं से भिन्न बनाती हैं।

इक्कीसवीं शताब्दी में भारतीय सांकेतिक भाषा के विकास को संस्थागत और नीतिगत समर्थन प्राप्त हुआ। भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रैि ैशक्षण केंद्र की स्थापना ने सांकेतिक भाषा के मानकीकरण, शब्दकोश निर्माण, शिक्षकों

एवं दुभाषियों के प्रशिक्षण तथा डिजिटल संसाधनों के विकास को नई गति प्रदान की। हजारों संकेतों का मानकीकरण कर पूरे देश में एक समान संचार व्यवस्था विकसित करने का प्रयास किया गया। साथ ही, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 ने भारतीय सांकेतिक भाषा को समावेशी शिक्षा, भाषाई अधिकारों और सांस्कृतिक पहचान के महत्वपूर्ण आधार के रूप में स्वीकार किया।

वर्तमान समय में भारतीय सांकेतिक भाषा के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है। उच्च शिक्षा संस्थानों, सरकारी विभागों, मीडिया, न्यायालयों तथा डिजिटल मंचों पर इसके उपयोग को प्रोत्साहन मिल रहा है। ऑनलाइन शिक्षण, मोबाइल अनुप्रयोगों, वीडियो संसाधनों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों ने इसके प्रसार को और अधिक गति प्रदान की है। इस प्रकार, भारतीय सांकेतिक भाषा का ऐतिहासिक विकास संघर्ष, सामाजिक सहभागिता, सामुदायिक संरक्षण, वैज्ञानिक अनुसंधान तथा नीतिगत समर्थन की एक सतत प्रक्रिया का परिणाम है, जिसने इसे आज एक समृद्ध, जीवंत और मान्यता प्राप्त भाषा के रूप में स्थापित किया है।

5.3.3 भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र की भूमिका

भारतीय सांकेतिक भाषा के संरक्षण, विकास, मानकीकरण एवं प्रसार के उद्देश्य से भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अधीन वर्ष 2015 में भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र ;प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहम त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह ब्मदजतमदृप्ैस्त्ज्ब्द्ध की स्थापना की गई। यह संस्था भारतीय सांकेतिक भाषा के संवर्धन तथा श्रवण बाधित समुदाय

के भाषाई अधिकारों को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। प्ैस्त्ज्ब् का उद्देश्य केवल सांकेतिक भाषा का प्रचार-प्रसार करना नहीं है, बल्कि इसे एक वैज्ञानिक, मानकीकृत एवं शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी भाषा के रूप में विकसित करना भी है।

10.3.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्च्-2020) एवं भारतीय सांकेतिक भाषा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्च्) 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था को समावेशी, न्यायसंगत, गुणवत्तापूर्ण तथा बहुभाषिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस नीति में दिव्यांग व्यक्तियों, विशेष रूप से श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा (प्दकपंद ैपहद स्ंदहनंहमदृप्ैस्) को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। छम्च्.2020 के क्लॉज 4ण्22 के अंतर्गत भारतीय सांकेतिक भाषा के संवर्धन, संरक्षण एवं मानकीकरण की स्पष्ट अनुशंसा की गई है तथा इसे एक स्वतंत्र भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री विकसित करने पर बल दिया गया है। नीति का उद्देश्य प्रत्येक शिक्षार्थी को उसकी आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप शिक्षा उपलब्ध कराना है, जिसके अंतर्गत भारतीय सांकेतिक भाषा आधारित शिक्षण एवं मूल्यांकन व्यवस्था को सुदृढ़ करने का प्रयास किया गया है। इस दिशा में भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (प्ैस्त्ज्ब्) को मानकीकरण, शब्दावली निर्माण तथा प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिससे विभिन्न राज्यों के बीच संचार, शिक्षण सामग्री, मूल्यांकन प्रक्रियाओं तथा दुभाषियों एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण में एकरूपता स्थापित हो सके। छम्च्.2020 समावेशी शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था का मूल आधार मानते हुए

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सांकेतिक भाषा दुभाषियों की उपलब्धता, विशेष शिक्षण सामग्री, डिजिटल एवं तकनीकी सहायता, तथा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। इसके साथ ही, नीति द्विभाषिक शिक्षा दृष्टिकोण का समर्थन करती है, जिसमें भारतीय सांकेतिक भाषा को प्रथम भाषा तथा लिखित अथवा मौखिक भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में विकसित किया जाता है। यह दृष्टिकोण भाषा अधिगम को सरल बनाता है, संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है, आत्मविश्वास एवं सामाजिक सहभागिता को सुदृढ़ करता है तथा श्रवण बाधित समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने में सहायक होता है। नीति ने भारतीय सांकेतिक भाषा के ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक मूल्यांकन के क्षेत्र में भी नई संभावनाएँ विकसित की हैं। इसने मानकीकृत मूल्यांकन उपकरणों, वीडियो आधारित मूल्यांकन प्रणालियों, प्रदर्शन आधारित, पोर्टफोलियो आधारित तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन जैसी बहुआयामी प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित किया है, जिससे शिक्षार्थियों की वास्तविक भाषाई दक्षताओं का अधिक वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय आकलन संभव हो सका है।

10.3.5 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 एवं भारतीय सांकेतिक भाषा

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, भारत में दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा, समान अवसरों की उपलब्धता तथा समावेशी विकास को सुनिश्चित करने

वाला एक महत्वपूर्ण कानूनी दस्तावेज है। यह अधिनियम संयुक्त राष्ट्र दिव्यांगजन अधिकार सम्मेलन ;न्छब्त्च्क्ए2006द्ध के सिद्धांतों के अनुरूप तैयार किया गया है और श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) को विशेष महत्त्व प्रदान करता है। त्च्ूक् ।बज ए2016 ने प्ैस् को सुगम्यता (।बबमेेपइपसपजल) और समावेशन का एक अनिवार्य अंग बनाया है। अधिनियम की धारा 1;द्धि में संचार की परिभाषा में सांकेतिक भाषा को शामिल किया गया है तथा अध्याय प्प् की धारा 3 के अंतर्गत गैर-भेदभाव के सिद्धांत को स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त, धारा 17 सरकारों को सांकेतिक भाषा में दक्ष शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं नियुक्ति के लिए आवश्यक कदम उठाने का निर्देश देती है, जबकि धारा 17;द्धि शैक्षणिक संस्थानों में सांकेतिक भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करती है। यह व्यवस्था 1995 के च्ॅक् ।बज की तुलना में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन थी, जिसने भारतीय सांकेतिक भाषा के व्यवस्थित संवर्धन और संस्थागत विकास की मजबूत नींव रखी।

त्च्ूक् ।बजए2016 की प्रमुख विशेषताओं में दिव्यांगताओं की संख्या को 7 से बढ़ाकर 21 करना, समान अवसर एवं गैर-भेदभाव को बढ़ावा देना, समावेशी शिक्षा को कानूनी समर्थन प्रदान करना, सुगम्यता सुनिश्चित करना तथा वैकल्पिक संचार माध्यमों को मान्यता देना शामिल है। इस अधिनियम के अंतर्गत भारतीय सांकेतिक भाषा को श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए एक प्रभावी एवं वैध संचार माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है, जिससे उनके भाषाई अधिकारों की सुरक्षा, शिक्षा में सांकेतिक भाषा के उपयोग, दुभाषिया सेवाओं की उपलब्धता, सरकारी एवं सार्वजनिक सेवाओं में सुगम संचार तथा सांस्कृतिक

पहचान के संरक्षण को बल मिला है। समावेशी शिक्षा के संदर्भ में यह अधिनियम विद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में भारतीय सांकेतिक भाषा सहित उपयुक्त संचार माध्यमों के उपयोग, प्रशिक्षित विशेष एवं सामान्य शिक्षकों की नियुक्ति तथा शिक्षण सामग्री, डिजिटल संसाधनों एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं को श्रवण बाधित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित करने पर विशेष बल देता है।

भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन और श्रवण बाधित समुदाय के सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी त्च्ूक् ।बजए2016 का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस अधिनियम के कारण सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त मूल्यांकन पद्धतियों, भारतीय सांकेतिक भाषा आधारित परीक्षणों के विकास तथा ग्रहणशील एवं अभिव्यक्तात्मक कौशलों के पृथक मूल्यांकन की आवश्यकता को मान्यता मिली है। साथ ही, डिजिटल एवं सुलभ मूल्यांकन प्रणालियों के विकास को भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। भारतीय सांकेतिक भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि श्रवण बाधित समुदाय की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का आधार भी है। यह अधिनियम उनकी भाषाई पहचान, आत्मनिर्णय, स्वतंत्रता तथा सामाजिक सहभागिता को सम्मान प्रदान करते हुए उन्हें मुख्यधारा में सशक्त रूप से स्थापित करने का कार्य करता है। इस प्रकारए त्च्ूक् ।बजए 2016 भारतीय सांकेतिक भाषा के संरक्षण, संवर्धन, शिक्षण तथा वैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए एक सुदृढ़ कानूनी आधार उपलब्ध कराता है, जो समावेशी एवं अधिकार-आधारित शिक्षा व्यवस्था के निर्माण में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है।

10.3.6 भारतीय सांकेतिक भाषारू मिथक एवं वास्तविकताएँ

भारतीय सांकेतिक भाषा के प्रति समाज में आज भी अनेक भ्रांतियाँ एवं मिथक प्रचलित हैं। इन मिथकों के कारण श्रवण बाधित व्यक्तियों के भाषाई अधिकारों, शैक्षिक अवसरों तथा सामाजिक सहभागिता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आधुनिक भाषावैज्ञानिक शोध, तंत्रिका-विज्ञान तथा शिक्षा विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि सांकेतिक भाषाएँ पूर्ण विकसित प्राकृतिक भाषाएँ हैं, जिनकी अपनी स्वतंत्र व्याकरणिक, सांस्कृतिक एवं संज्ञानात्मक विशेषताएँ होती हैं। विशेष शिक्षा के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए इन मिथकों एवं वास्तविकताओं की सही समझ विकसित करना आवश्यक है, ताकि वे वैज्ञानिक एवं अधिकार-आधारित दृष्टिकोण को अपनाकर श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के समग्र विकास में योगदान दे सकें। नीचे भारतीय सांकेतिक भाषा से संबंधित प्रमुख मिथकों एवं उनकी तथ्यों का वर्णन किया गया है।

मिथक

1. सांकेतिक भाषा केवल इशारों का संग्रह है तथा यह एक वास्तविक भाषा नहीं है। सांकेतिक भाषा एक पूर्ण प्राकृतिक भाषा है, जिसकी अपनी व्याकरण, शब्दावली, वाक्य संरचना, अर्थविज्ञान तथा गैर-हस्त संकेतों पर आधारित भाषिक प्रणाली होती है।

2. पूरी दुनिया में एक ही सांकेतिक भाषा प्रयोग की जाती है। विश्व में सैकड़ों स्वतंत्र सांकेतिक भाषाएँ प्रचलित हैं। प्ैस्ए ।ैस्ए ठैस् और ।नेसंद अलग-अलग भाषाएँ हैं, जैसे हिंदी, तमिल और अंग्रेजी अलग भाषाएँ हैं।

3. यदि बच्चों को सांकेतिक भाषा सिखाई जाए, तो वे बोलना नहीं सीख पाएँगे। अनुसंधान बताते हैं कि प्रारम्भिक सांकेतिक भाषा अधिगम संज्ञानात्मक, सामाजिक और द्विभाषिक भाषा-विकास को सुदृढ़ करता है तथा दूसरी भाषा सीखने में सहायता करता है।

4. सांकेतिक भाषा केवल गंभीर श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए उपयोगी है।प्ैस् का उपयोग बधिर व्यक्तियों के साथ-साथ परिवार, शिक्षक, दुभाषिए, स्वास्थ्यकर्मी और समाज के अन्य सदस्य भी प्रभावी एवं समावेशी संचार के लिए कर सकते हैं।

5. सांकेतिक भाषा केवल मौखिक भाषाओं का दृश्यात्मक अनुवाद है। प्ैस् की अपनी स्वतंत्र व्याकरणिक एवं स्थानिक संरचना होती हैय इसका वाक्य क्रम, अभिव्यक्ति और गैर-हस्त संकेत हिंदी या अंग्रेजी से भिन्न होते हैं।

6. सभी श्रवण बाधित व्यक्ति सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा का चयन श्रवण स्तर, पारिवारिक वातावरण, प्रारम्भिक हस्तक्षेप, शिक्षा और सांस्कृतिक पहचान पर निर्भर करता हैय इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की भाषाई वरीयता भिन्न हो सकती है।

7. सांकेतिक भाषा सीखना अत्यन्त कठिन है।नियमित अभ्यास, सामाजिक सहभागिता और डिजिटल संसाधनों की सहायता से प्ैस् सीखना अन्य भाषाओं की तरह सहज और व्यवस्थित प्रक्रिया है।

8. सांकेतिक भाषा का कोई व्याकरण नहीं होता।प्ैस् में हस्तरूप, स्थान, गति, अभिमुखता और चेहरे के भाव जैसे स्पष्ट व्याकरणिक नियम होते हैं, जो अर्थ और वाक्य संरचना निर्धारित करते हैं।

9. आधुनिक तकनीक आने से सांकेतिक भाषा की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। कॉक्लियर इम्प्लांट और श्रवण यंत्र उपयोगी हैं, किन्तु वे प्ैस् का विकल्प नहीं हैंय तकनीक और सांकेतिक भाषा मिलकर अधिक प्रभावी द्विभाषिक एवं समावेशी विकास सुनिश्चित करते हैं।

10. सांकेतिक भाषा केवल संचार का माध्यम है, संस्कृति का नहीं। प्ैस् बधिर समुदाय की भाषाई एवं सांस्कृतिक पहचान का आधार है, जो परंपराओं, मूल्यों, सामुदायिक अनुभवों और सामूहिक अस्मिता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न-1

1. भारतीय सांकेतिक भाषा को पूर्ण विकसित भाषा क्यों माना जाता है?

2. ष्पूरी दुनिया में एक ही सांकेतिक भाषा प्रयोग होती हैष् कृइस कथन का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

3. सांकेतिक भाषा एवं द्विभाषिक शिक्षा के मध्य संबंध स्पष्ट कीजिए।

4. भारतीय सांकेतिक भाषा में गैर-हस्त संकेतों का क्या महत्त्व है?

5. क्मं िब्नसजनतम के संदर्भ में भारतीय सांकेतिक भाषा की भूमिका का वर्णन कीजिए।

अपने अधिगम की जाँच करें

रिक्त स्थान भरिए

1. भारतीय सांकेतिक भाषा एक ऋऋऋऋऋऋऋऋ भाषा है।

2. प्ैस् में चेहरे के भाव ऋऋऋऋऋऋऋऋ संकेत कहलाते हैं।

3. विश्व में ऋऋऋऋऋऋऋऋ सांकेतिक भाषा प्रयोग नहीं होती।

4. त्व्ूक् ।बजए 2016 श्रवण बाधित व्यक्तियों के ऋऋऋऋऋऋऋऋ अधिकारों को मान्यता देता है।

5. क्मं िब्नसजनतम में प्ैस् ऋऋऋऋऋऋऋऋ का आधार है।

उत्तररू (1) प्राकृतिकध्स्वतंत्र, (2) गैर-हस्त (3) एक, (4) भाषाई, (5) सांस्कृतिक पहचान

10.4 भाषा मूल्यांकन की अवधारणा एवं सिद्धांत

भाषा मानव जीवन का आधारभूत संचार माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों तथा ज्ञान का आदान-प्रदान करता है। भाषा केवल बोलने और सुनने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक सहभागिता, सांस्कृतिक पहचान तथा शैक्षिक उपलब्धियों का भी महत्वपूर्ण आधार है। इसलिए किसी भी शिक्षार्थी की भाषा क्षमता का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा संभावनाओं को समझने के लिए आवश्यक होता है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के संदर्भ में भाषा मूल्यांकन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि उनके भाषा अधिगम की

प्रक्रिया सामान्य बच्चों से भिन्न हो सकती है। भारतीय सांकेतिक भाषा (प्ैस्) के माध्यम से भाषा अर्जित करने वाले बच्चों के लिए ऐसे मूल्यांकन उपकरणों एवं प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है, जो उनकी भाषाई एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हों। भाषा मूल्यांकन के माध्यम से शिक्षार्थी की ग्रहणशील (त्मबमचजपअम) एवं अभिव्यक्तात्मक (म्गचतमेेपअम) क्षमताओं का अध्ययन किया जाता है, जिससे उपयुक्त शैक्षिक हस्तक्षेपों एवं शिक्षण रणनीतियों का निर्धारण किया जा सके।

10.4.1 भाषा मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य

भाषा मूल्यांकन (स्ंदहनंहम ।ेेमेेउमदज) एक व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति की भाषा को समझने, प्रयोग करने तथा अभिव्यक्त करने की क्षमताओं का अध्ययन किया जाता है। यह प्रक्रिया भाषा के विभिन्न घटकों, जैसेकृशब्दावली, व्याकरण, अर्थबोध, संप्रेषण कौशल एवं सामाजिक भाषा प्रयोग का मूल्यांकन करती है। अमेरिकन स्पीच-लैंग्वेज-हियरिंग एसोसिएशन (।ैभ्।) के अनुसार, भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य किसी व्यक्ति की भाषा संबंधी शक्तियों एवं आवश्यकताओं की पहचान करना तथा उसके लिए उपयुक्त हस्तक्षेप कार्यक्रमों का निर्माण करना है।

भारतीय सांकेतिक भाषा के संदर्भ में भाषा मूल्यांकन का अर्थ केवल संकेतों की संख्या जानना नहीं है, बल्कि यह समझना भी है कि शिक्षार्थी संकेतों को किस प्रकार ग्रहण करता है, उनका अर्थ कैसे समझता है तथा विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में उनका उपयोग कैसे करता है। भाषा मूल्यांकन के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैंकृ

- मूल्यांकन से शिक्षार्थी की वर्तमान भाषाई दक्षताओं तथा अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की पहचान की जाती है।
- भाषा संबंधी कठिनाइयों के निदान के माध्यम से शब्दावली, व्याकरण, ग्रहणशील, अभिव्यक्तात्मक तथा सामाजिक संचार संबंधी समस्याओं का पता लगाया जाता है।
- मूल्यांकन के आधार पर व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम (प्म्च्) तथा शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण रणनीतियों का निर्माण किया जाता है।
- निरंतर मूल्यांकन से भाषा विकास की प्रगति और हस्तक्षेप कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का निर्धारण किया जाता है।
- मूल्यांकन के निष्कर्ष परिवार और शिक्षकों को शिक्षार्थी की भाषाई आवश्यकताओं को समझने तथा उचित सहयोग प्रदान करने में सहायता करते हैं।

भाषा मूल्यांकन के घटकरू भाषा मूल्यांकन सामान्यतः निम्नलिखित घटकों को सम्मिलित करता हैकृ

संकेतात्मक घटक (च्ीवदवसवहपबंस ब्वउचवदमदजे) मौखिक भाषाओं में ध्वनियों का तथा सांकेतिक भाषाओं में हस्तरूप, स्थान, गति एवं गैर-हस्त संकेतों का मूल्यांकन किया जाता है रूपात्मक घटक (डवतचीवसवहपबंस ब्वउचवदमदजे) शब्द निर्माण, काल, संख्या, लिंग एवं अन्य व्याकरणिक रूपों के प्रयोग का अध्ययन किया जाता है।

वाक्यात्मक घटक (ैलदजंबजपब ब्वउचवदमदजेद्ध वाक्य निर्माण एवं व्याकरणिक नियमों के प्रयोग का मूल्यांकन किया जाता है।

अर्थगत घटक (ैमउंदजपब ब्वउचवदमदजेद्ध शब्दों एवं वाक्यों के अर्थ की समझ तथा उनके उपयुक्त प्रयोग का अध्ययन किया जाता है।

प्राग्मैटिक घटक (च्तंहउंजपब ब्वउचवदमदजेद्ध सामाजिक परिस्थितियों में भाषा प्रयोग की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।

भारतीय सांकेतिक भाषा के संदर्भ में भाषा मूल्यांकनरू भारतीय सांकेतिक भाषा के मूल्यांकन में निम्नलिखित विशेष बातों का ध्यान रखना आवश्यक हैकृ

- दृश्यात्मक प्रकृतिरू प्ैस् एक दृश्य-स्थानिक भाषा है, इसलिए इसके मूल्यांकन में वीडियो, चित्र एवं प्रत्यक्ष प्रदर्शन का उपयोग किया जाना चाहिए।
- गैर-हस्त संकेतों का महत्त्वरू चेहरे के भाव एवं शरीर की मुद्राएँ प्ैस् की व्याकरण का अभिन्न भाग हैं। इसलिए मूल्यांकन प्रक्रिया में इनका समुचित आकलन आवश्यक है।
- सांस्कृतिक संवेदनशीलतारू श्रवण बाधित समुदाय की सांस्कृतिक पहचान एवं भाषाई विविधताओं का सम्मान करते हुए मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- द्विभाषिक दृष्टिकोणरू यदि शिक्षार्थी प्ैस् एवं लिखित भाषा दोनों का प्रयोग करता है, तो मूल्यांकन प्रक्रिया में दोनों भाषाओं को सम्मिलित करना चाहिए।

भाषा मूल्यांकन के सैद्धांतिक आधाररू भाषा मूल्यांकन की प्रक्रिया विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं भाषावैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित होती है। इनमें प्रमुख हैंकृ

10.4.2 भाषा मूल्यांकन के प्रकार

भाषा मूल्यांकन एक सतत एवं बहुआयामी प्रक्रिया है। शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं, उद्देश्यों तथा शैक्षिक परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन अपनाए जाते हैं। प्रत्येक प्रकार का

इकाई 11

शैक्षिक आकलन की अवधारणा, क्षेत्र एवं सिद्धांतय शिक्षा में समग्र आकलन का महत्व और क्षमता-आधारित दृष्टिकोण पर ध्यानय श्रवण बाधित व्यक्तियों में सभी आयु वर्गों में साक्षरता विकास का आकलनः चुनौतियाँ एवं सरोकार (माध्यम-भाषा की प्रकृति पर निर्भरय मानकीकृत बनाम शिक्षक-निर्मित उपकरणय मानकों का निर्धारणय पठन एवं लेखन का मापनय मापनीय संकेतकों की पहचानय सुगम्यता)

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 शैक्षिक आकलन की अवधारणा, क्षेत्र एवं सिद्धांतय शिक्षा में समग्र आकलन का महत्व तथा क्षमता-आधारित दृष्टिकोण पर केंद्रित

11.3.1 शैक्षिक आकलन की अवधारणा

11.3.2 आकलन के प्रमुख प्रकार

11.3.3 शैक्षिक आकलन का क्षेत्र

11.3.4 श्रवण बाधित छात्रों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन का क्षेत्र

11.3.5 शैक्षिक आकलन के उद्देश्य

11.3.6 शैक्षिक आकलन के सिद्धांत

11.3.7 शिक्षा में समग्र आकलन का महत्व

11.3.8 क्षमता-आधारित दृष्टिकोण

11.4 भारतीय संदर्भ

11.5 साक्षरता विकास एवं श्रवण बाधिता

11. 6 सभी आयु समूहों में साक्षरता आकलन

11.6.1 प्रारम्भिक बाल्यावस्था (0-6 वर्ष)

11.6.2 विद्यालयी आयु (6-18 वर्ष)

11.6.3 वयस्क अवस्था

11.7 विधा भाषा की प्रकृति पर निर्भर

11.7.1 साक्षरता आकलन पर भाषा विधा का प्रभाव

11.7.2 भाषा विधा और आकलन में निष्पक्षता

11.7.3 भाषा अभाव बनाम भाषा भिन्नता

11.8 मानकीकृत एवं शिक्षक-निर्मित उपकरण

11.8.1 मानकीकृत उपकरण

11.8.2 शिक्षक-निर्मित उपकरण

11.9 मानकों के निर्धारण की समस्या

11.10 पठन का मापन

11.10.1 पठन मापन के प्रमुख घटक

11.10.2 पठन मापन की विधियाँ

11.11 लेखन का मापन

11.11.1 लेखन आकलन के प्रमुख घटक

11.11.2 लेखन आकलन की विधियाँ एवं उपकरण

11.12 मापनीय संकेतकों की पहचान

11.12.1 मापनीय संकेतकों की विशेषताएँ

11.12.2 साक्षरता विकास के प्रमुख मापनीय संकेतक

11.12.3 मापनीय संकेतकों के चयन में सावधानियाँ

11.13 सुगम्यता श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता आकलन में सैद्धांतिक, वैचारिक एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य

11.13.1 सुगम्यता की अवधारणाः एक वैचारिक विश्लेषण

11.13.2 सुगम्यता का सैद्धांतिक आधार

11.13.3 सुगम्यता, वैधता और आकलन की गुणवत्ता

11.13.4 सुगम्यता और आकलन की निष्पक्षता

11.13.5 साक्षरता आकलन में सुगम्यता के प्रमुख आयाम

11.13.6 सीखने के लिए सार्वभौमिक रुपरेखा और सुगम्य आकलन

11.13.7 सांकेतिक भाषा दुभाषिया, मूल्यांकन अनुकूलन एवं सुगम्यता

11.13.8 सुगम्यता, भाषा-अधिकार और बधिर अध्ययन का परिप्रेक्ष्य

11.13.9 भारतीय परिप्रेक्ष्य में सुगम्यता और साक्षरता आकलन

11.14.सारांश

11.15 शब्दावली

11.16 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

11.17 संदर्भ ग्रन्थ सूची

11.18 निबंधात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्रों की पूर्ण क्षमताओं का विकास करना है। श्रवण बाधित छात्रों के लिए शैक्षिक आकलन यह सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण साधन

है कि उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उचित शैक्षिक व्यवस्थाएं एवं हस्तक्षेप किए जाएं। यह इकाई शैक्षिक आकलन की अवधारणा, क्षेत्र, सिद्धांतों तथा व्यावहारिक आयामों पर केंद्रित है।

इस इकाई में शैक्षिक आकलन को समग्र दृष्टिकोण से समझा गया है, जिसमें केवल विविधताओं की पहचान न करके छात्रों की क्षमताओं पर भी बल दिया गया है। श्रवण बाधित छात्रों में साक्षरता विकास का आकलन विशेष चुनौतियों से भरा है क्योंकि भाषा विकास माध्यम पर अत्यधिक निर्भर करता है। इकाई में मानकीकृत एवं शिक्षक-निर्मित उपकरणों, पठन-लेखन के मापन, संकेतकों की पहचान, माध्यम चयन के मापदंडों, औपचारिक एवं अनौपचारिक विधियों तथा आकलन परिणामों को शैक्षिक निर्णयों से जोड़ने पर विस्तार से चर्चा की गई है।

अंत में, शैक्षिक आकलन क्लिनिक/केंद्र की स्थापना की आवश्यकता, न्यूनतम अपेक्षित सुविधाएं एवं वांछनीय संसाधनों पर भी प्रकाश डाला गया है । यह इकाई सिद्धांत एवं व्यवहार के मध्य सेतु का कार्य करती है तथा शिक्षकों, आकलनकर्ताओं एवं विशेष शिक्षा पेशेवरों को श्रवण बाधित छात्रों के प्रभावी शैक्षिक समावेशन के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करती है।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगेः

1. शैक्षिक आकलन की अवधारणा, क्षेत्र, सिद्धांतों तथा समग्र एवं क्षमता-आधारित आकलन दृष्टिकोण के महत्व का वर्णन कर सकेंगे।

2. श्रवण बाधित व्यक्तियों में विभिन्न आयु-स्तरों पर साक्षरता विकास की प्रक्रिया तथा उसके प्रमुख घटकों को समझा सकेंगे।

3. साक्षरता आकलन में भाषा की माध्यम-निर्भर प्रकृति तथा उससे संबंधित चुनौतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

4. श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता विकास के आकलन में आने वाली चुनौतियों, जैसे मानकीकृत एवं शिक्षक-निर्मित उपकरणों का चयन, मानदंड निर्धारण तथा मूल्यांकन की वैधता, का वर्णन कर सकेंगे।

5. पठन, लेखन एवं साक्षरता विकास से संबंधित मापनीय संकेतकों की पहचान एवं उनका मूल्यांकन कर सकेंगे।

6. मानकीकृत एवं शिक्षक-निर्मित आकलन उपकरणों की उपयोगिता, सीमाओं तथा उपयुक्त प्रयोग की व्याख्या कर सकेंगे।

7. आकलन के परिणामों के आधार पर श्रवण बाधित व्यक्तियों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान कर उन्हें शिक्षण एवं अधिगम संबंधी निर्णयों से जोड़ सकेंगे।

8. सुगम, समावेशी एवं निष्पक्ष साक्षरता आकलन के लिए आवश्यक अनुकूलनों तथा उपयुक्त रणनीतियों का उपयोग कर सकेंगे।

9. श्रवण बाधित व्यक्तियों के शैक्षिक आकलन को एक सतत, अर्थपूर्ण, समग्र एवं व्यावहारिक प्रक्रिया के रूप में समझकर उसका प्रभावी अनुप्रयोग कर सकेंगे।

10. यह इकाई भावी विशेष शिक्षकों को श्रवण बाधित छात्रों के शैक्षिक आकलन एवं हस्तक्षेप की प्रक्रिया में निपुण बनाने में सहायक होगी।

11.3 शैक्षिक आकलन की अवधारणा, क्षेत्र एवं सिद्धांतय शिक्षा में समग्र आकलन का महत्व तथा क्षमता-आधारित दृष्टिकोण पर केंद्रित

शैक्षिक आकलन शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसके माध्यम से शिक्षार्थियों की उपलब्धियों, क्षमताओं, प्रगति तथा सीखने की आवश्यकताओं का व्यवस्थित मूल्यांकन किया जाता है। इसका क्षेत्र केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक विकास को भी सम्मिलित करता है। समग्र आकलन शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास को समझने में सहायता प्रदान करता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षमता-आधारित दृष्टिकोण पर विशेष बल दिया जा रहा है, जिसके अंतर्गत ज्ञान के साथ-साथ कौशल, दक्षताओं तथा वास्तविक जीवन में उनके अनुप्रयोग का मूल्यांकन किया जाता है।

11.3.1 शैक्षिक आकलन की अवधारणा

शैक्षिक आकलन एक व्यवस्थित, सतत, बहुआयामी और उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी के अधिगम, ज्ञान, कौशलों, दृष्टिकोणों, भावनात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक योग्यताओं तथा समग्र प्रगति की जानकारी एकत्रित की जाती है। इस जानकारी का विश्लेषण, व्याख्या तथा उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने, हस्तक्षेप की योजना बनाने, शैक्षिक निर्णय लेने तथा विद्यार्थी की पूर्ण क्षमता के विकास के लिए किया जाता है। यह प्रक्रिया मात्र परीक्षण लेना या अंक प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह एक समस्या-समाधान प्रक्रिया है। इसमें विद्यार्थी की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान, वर्तमान योग्यता का निर्धारण, व्यक्तिगत शिक्षा योजना का निर्माण, प्रगति की निगरानी तथा आवश्यक समायोजन शामिल हैं।

गियरहार्ट और गियरहार्ट (1990) के अनुसार, "आकलन वह प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न प्रकार की सूचनाओं का व्यवस्थित संग्रहण और व्याख्या की जाती है, जिसके आधार पर शिक्षण/हस्तक्षेप संबंधी निर्णय लिए जाते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर वर्गीकरण एवं स्थान निर्धारण के निर्णय भी किए जाते हैं" (पिएरेंजेलो और गिउलियानी के अनुसार (2006)।

स्वानसन और वॉटसन (1989) ने आकलन को समस्या-समाधान प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें विद्यार्थी के बारे में सूचनाओं का बहु-विधि संग्रह शामिल है।

पॉपहम (2014) और ब्रुकहार्ट (2018) के अनुसार, आकलन सूचनाओं का उपयोग अधिगम को बढ़ावा देने और शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए किया जाना चाहिए, न कि केवल विद्यार्थी को वर्गीकृत करने के लिए।

विशेष शिक्षा के संदर्भ में शैक्षिक आकलन और भी जटिल तथा बहुआयामी होता है। दिव्यांग व्यक्ति शिक्षा अधिनियम (आई डी ई ए, 2004) के अनुसार, मूल्यांकन पूर्ण एवं व्यक्तिगत होना चाहिए तथा विद्यार्थी के सभी संबंधित क्षेत्रों कृ शैक्षिक, विकासात्मक, कार्यात्मक, स्वास्थ्य, सामाजिक-भावनात्मक तथा संचार संबंधी में किया जाना चाहिए। किसी एकल उपकरण या परीक्षण पर पूर्ण रूप से निर्भर नहीं रहना चाहिए। श्रवण बाधित छात्रों के मामले में शैक्षिक आकलन अत्यंत संवेदनशील और विशिष्ट होता है। श्रवण में क्षति, भाषा विकास को गहराई से प्रभावित करती है, इसलिए आकलन में निम्नलिखित क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। श्रवण बाधित छात्रों के शैक्षिक आकलन में उनकी विभिन्न क्षमताओं एवं आवश्यकताओं का समग्र मूल्यांकन किया जाता है ताकि उनके लिए उपयुक्त शैक्षिक योजनाएँ एवं हस्तक्षेप विकसित किए जा सकें।

इस आकलन का प्रथम प्रमुख क्षेत्र भाषा विकास है, जिसमें मौखिक भाषा, लिखित भाषा तथा सांकेतिक भाषा के विकास का मूल्यांकन किया जाता है। इसके अंतर्गत शब्दावली, वाक्य संरचना, पठन-लेखन कौशल तथा संकेतों को समझने एवं उपयोग करने की क्षमता का आकलन किया जाता है।

दूसरा क्षेत्र संचार की विधियाँ है, जिसमें यह देखा जाता है कि छात्र मौखिक/बोलकर संचार, सांकेतिक भाषा, समग्र संचार (बोलना, संकेत, हाव-भाव एवं चित्रों का संयुक्त उपयोग) अथवा द्विभाषी-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण के माध्यम से कितनी प्रभावी ढंग से संचार कर पाता है।

तीसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र सुनने के उपकरणों का उपयोग एवं लाभ है। इसमें श्रवण यंत्र अथवा कॉक्लियर प्रत्यारोपण के उपयोग, रखरखाव तथा उनसे प्राप्त होने वाले श्रवण लाभ का मूल्यांकन किया जाता है। साथ ही यह भी आंका जाता है कि उपकरणों के उपयोग से सुनने, ध्वनि पहचानने तथा संचार करने की क्षमता में कितना सुधार हुआ है।

चैथा क्षेत्र दृश्य संकेतों पर निर्भरता तथा ओष्ठ-पठन कौशल से संबंधित है। इसमें छात्र की चेहरे के भाव, हाव-भाव, संकेतों तथा होंठों की गति को देखकर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का आकलन किया जाता है।

पाँचवाँ क्षेत्र समावेशी कक्षा में अनुकूलन क्षमता है। इसके अंतर्गत यह आकलन किया जाता है कि छात्र कक्षा में ध्यान केंद्रित करने, शिक्षकों के निर्देशों को समझने, सहपाठियों के साथ संवाद एवं सहयोग करने तथा कक्षा के वातावरण एवं शिक्षण रणनीतियों के अनुरूप स्वयं को ढालने में कितना सक्षम है।

अंततः सामाजिक-भावनात्मक विकास तथा आत्म-सम्मान का आकलन किया जाता है। इसमें छात्र के आत्मविश्वास, आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता, साथियों के

साथ संबंध, सामाजिक व्यवहार, आत्म-सम्मान तथा सकारात्मक आत्म-धारणा का मूल्यांकन किया जाता है।

इस प्रकार श्रवण बाधित छात्रों के शैक्षिक आकलन का उद्देश्य उनकी शैक्षिक, संचारात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं को समझना, उचित सहायता एवं हस्तक्षेप प्रदान करना तथा उनके समग्र विकास को प्रोत्साहित करना है।

11.3.2 आकलन के प्रमुख प्रकार

शैक्षिक आकलन को उसके उद्देश्य के आधार पर निम्न तीन प्रमुख रूपों में विभाजित किया जा सकता हैः

ऽ निदानात्मककृ कठिनाइयों की जड़ पहचानना।

ऽ रचनात्मक आकलन कृ अधिगम के दौरान निरंतर प्रतिक्रिया प्रदान करना।

ऽ योगात्मक कृ अंतिम उपलब्धि का मापन।

1. निदानात्मक आकलन

यह अधिगम प्रक्रिया शुरू होने से पहले विद्यार्थी की पूर्व-ज्ञान, कौशलों तथा कठिनाइयों की जड़ की पहचान करता है। विशेष शिक्षा में यह विकासात्मक विलंब, भाषा अंतराल तथा सह-घटित दिव्यांगताओं की पहचान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उदाहरणः पूर्व-परीक्षण, जांच उपकरण तथा विस्तृत मनो-शैक्षिक आकलन।

2. रचनात्मक आकलन

रूकहार्ट (2018) के अनुसार यह आकलन अधिगम के दौरान निरंतर प्रतिक्रिया प्रदान करता है ताकि शिक्षण को तत्काल समायोजित किया जा सके। निर्माणात्मक आकलन अधिगम को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली प्रक्रियाओं में से एक है । आकलन सूचनाओं का उपयोग अधिगम को बढ़ावा देने और शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए किया जाना चाहिए, न कि केवल विद्यार्थी को वर्गीकृत करने के लिए। श्रवण बाधित छात्रों के लिए यह भाषा कौशल, पठन-लेखन तथा संचार रणनीतियों की निरंतर निगरानी में उपयोगी है। उदाहरणः अवलोकन, पोर्टफोलियो, पाठ्यक्रम-आधारित मापन तथा तात्कालिक प्रश्नोत्तर।

3. योगात्मक आकलन

सारांशात्मक अधिगम की समाप्ति पर उपलब्धि का समग्र मापन करता है। यह श्रेणीकरण, प्रमाणन तथा कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए उपयोग किया जाता है। हालांकि, श्रवण बाधित छात्रों के मामले में इसे सावधानी से उपयोग करना चाहिए क्योंकि पारंपरिक सारांशात्मक परीक्षण भाषा या संचार बाधाओं के कारण अवैध परिणाम दे सकते हैं। उदाहरणः वार्षिक परीक्षाएं, मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण तथा अंतिम व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम समीक्षा।

11.3.3 शैक्षिक आकलन का क्षेत्र

शैक्षिक आकलन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक, बहुआयामी और समग्र है। यह केवल विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास, शैक्षिक प्रणाली के विभिन्न घटकों तथा पर्यावरणीय कारकों को भी समाहित करता है। आकलन विद्यार्थी-केंद्रित होने के साथ-साथ पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, विद्यालय पर्यावरण, पारिवारिक सहयोग तथा समुदाय-आधारित समर्थन को भी अपनी परिधि में शामिल करता है। यह प्रक्रिया

विद्यार्थी की वर्तमान क्षमताओं, शक्तियों, कमियों तथा शैक्षिक आवश्यकताओं की व्यापक जानकारी एकत्र करती है, ताकि प्रभावी हस्तक्षेप, व्यक्तिगत शिक्षा योजना तथा समावेशी शिक्षा की व्यवस्था की जा सके।

दिव्यांग व्यक्ति शिक्षा अधिनियम (2004) के अनुसार, आकलन पूर्ण एवं व्यक्तिगत होना चाहिए। इसमें निर्दिष्ट दिव्यांगता से संबंधित सभी क्षेत्रों में आकलन किया जाना अनिवार्य है, जिसमें स्वास्थ्य, दृष्टि, श्रवण, सामाजिक-भावनात्मक स्थिति, सामान्य बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि, संचार स्थिति तथा मोटर क्षमताएं शामिल हैं। आकलन इतना व्यापक होना चाहिए कि विद्यार्थी की सभी विशेष शैक्षिक एवं संबंधित सेवा आवश्यकताओं की पहचान हो सके, चाहे वे दिव्यांगता श्रेणी से सीधे संबंधित हों या न हों (अमेरिकी शिक्षा विभाग, 2017) । आकलन किसी एकल उपकरण, परीक्षण या स्रोत पर आधारित नहीं हो सकता। इसमें बहु-विधि तथा बहु-स्रोत दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए, जिसमें मानकीकृत परीक्षण, अवलोकन, साक्षात्कार, पोर्टफोलियो, अभिभावक एवं शिक्षक निविष्ट तथा पाठ्यक्रम-आधारित मापन शामिल हों।

11.3.4 श्रवण बाधित छात्रों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन का क्षेत्र

श्रवण बाधित छात्रों के संदर्भ में आकलन का क्षेत्र और भी विशिष्ट तथा जटिल होता है, क्योंकि श्रवण क्षति भाषा विकास, संचार, सामाजिक अंतर्क्रिया तथा शैक्षिक पहुंच को बहुआयामी रूप से प्रभावित करती है। इसके प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

ऽ भाषा एवं साक्षरता विकासः विशेष रूप से भाषा की माध्यम-निर्भर प्रकृति - मौखिक भाषा, भारतीय सांकेतिक भाषा, लिखित भाषा या द्विभाषी-द्विमोडल दृष्टिकोण। भाषा विलंब की पहचान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उदाहरण- 8 वर्षीय बच्चे राहुल (गहन श्रवण क्षति) का आकलन करते समय पाया गया कि उसकी मौखिक भाषा सीमित है, लेकिन भारतीय सांकेतिक भाषा में वह जटिल वाक्य बना सकता है। इसलिए लिखित हिंदी में पठन-लेखन का आकलन भारतीय सांकेतिक भाषा के माध्यम से किया गया, जिससे उसके वास्तविक साक्षरता स्तर का सही आकलन हो सका।

ऽ श्रवण कौशल एवं संचार दक्षताः श्रवण यंत्रों, कर्णावत प्रत्यारोपण का उपयोग, लाभ तथा सीमाएंय लिप-रीडिंगय दृश्य संकेतों पर निर्भरताय तथा संपूर्ण संचार की प्रभावशीलता। उदाहरण- 12 वर्षीय प्रिया (कर्णावत प्रत्यारोपण की उपयोगकर्ता) के आकलन में श्रवण उपकरण के साथ शोर भरे वातावरण में भाषा समझने की क्षमता को जांचा गया। पाया गया कि वह शांत कक्षा में अच्छा प्रदर्शन करती है, लेकिन व्यस्त कक्षा में नहीं। इसलिए एफ एम प्रणाली की सिफारिश की गई।

ऽ सामाजिक अंतर्क्रिया एवं भावनात्मक विकासः साथियों के साथ संबंध, आत्म-सम्मान, सामाजिक-भावनात्मक कौशल तथा संभावित अलगाव की पहचान। उदाहरण- कक्षा 9 के छात्र अमन, जो मुख्यधारा की कक्षा में पढ़ता है, सामाजिक रूप से अलग-थलग महसूस करता था। आकलन (साक्षात्कार ़ मनोविज्ञान स्केल) से पता चला कि वह सुनने की हानि के कारण समूह चर्चा में भाग नहीं ले पाता। परिणामस्वरूप, सांकेतिक भाषा दुभाषिया तथा सहकर्मी संवेदीकरण कार्यक्रम शामिल किया गया।

ऽ संज्ञानात्मक क्षमताएं एवं समस्या-समाधान कौशल: दृश्य-स्थानिक बुद्धि, स्मृति तथा अमूर्त चिंतन की क्षमता, जो अक्सर मौखिक भाषा पर निर्भर पारंपरिक परीक्षणों से प्रभावित होती है। उदाहरण- गैर-मौखिक परीक्षण (रेवेन की प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज या लेइटर अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन स्केल - तृतीय संस्करण) के माध्यम से 10 वर्षीय दीक्षा की दृश्य-स्थानिक बुद्धि का आकलन किया गया, जिसमें वह औसत से ऊपर पाई गई, जबकि मौखिक परीक्षणों में वह कम स्कोर कर रही थी।

ऽ समावेशी शिक्षा में अनुकूलन एवं सहायता आवश्यकताएं: कक्षा में सहायता, अतिरिक्त समय, दृश्य सहायता, सांकेतिक भाषा दुभाषिया तथा प्रौद्योगिकी-आधारित समर्थन। उदाहरण- परीक्षा में अतिरिक्त समय, दृश्य सामग्री, सांकेतिक भाषा दुभाषिया, और उपशीर्षक वाले वीडियो का प्रावधान।

ऽ स्वतंत्रता स्तर एवं स्थानांतरण कौशल: दैनिक जीवन कौशल, व्यावसायिक तैयारी तथा उच्च माध्यमिक स्थानांतरण योजना । उदाहरण- 14 वर्षीय छात्रा का आकलन करते समय स्थानांतरण योजना सूची का उपयोग किया गया, जिसमें पाया गया कि वह दैनिक जीवन कौशल में अच्छी है, लेकिन आजीविका निर्णय लेने में सहायता की जरूरत है। इसलिए व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण की योजना बनाई गई।

ऽ स्वास्थ्य एवं सह-घटित स्थितियांः अतिरिक्त दिव्यांगताएं (जैसे अशर सिंड्रोम, अधिगम दिव्यांगता) की पहचान। उदाहरण- अशर सिंड्रोम की आशंका में दृष्टि आकलन भी शामिल किया गया।

11.3.5 शैक्षिक आकलन के उद्देश्य

शैक्षिक आकलन का क्षेत्र यह निर्धारित करता है कि क्या आकलन किया जाएगा, जबकि इसके उद्देश्य यह स्पष्ट करते हैं कि आकलन क्यों किया जाएगा। उद्देश्य आकलन प्रक्रिया को एक सार्थक और लक्ष्य-उन्मुख गतिविधि बनाते हैं। ये उद्देश्य तय करते हैं कि एकत्रित जानकारी का उपयोग विद्यार्थी की शैक्षिक, विकासात्मक तथा समावेशी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कैसे किया जाएगा। श्रवण बाधित छात्रों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों को पूरा करता हैः

1. जाँच एवं शीघ्र पहचान विकासात्मक देरी या सुनने की हानि की शीघ्र पहचान करना, ताकि प्रारंभिक हस्तक्षेप के माध्यम से भाषा विलंब को न्यूनतम किया जा सके। उदाहरण- नवजात शिशु में ओ ए ई/ए बी आर परीक्षण द्वारा जन्म के बाद सुनने की हानि की पहचान।

2. पात्रता निर्धारण विद्यार्थी को विशेष शिक्षा सेवाओं, सहायता सामग्री तथा समर्थन के लिए पात्र घोषित करना। उदाहरण- दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अंतर्गत सुनने की हानि और भाषा विकास में अंतर के आधार पर विशेष शिक्षा सुविधाओं के लिए योग्यता तय करना।

3. व्यक्तिगत शिक्षा योजना का विकास विद्यार्थी की वर्तमान शैक्षिक एवं कार्यात्मक के आधार पर वार्षिक लक्ष्य, विशेष निर्देशन तथा अनुकूलनों का निर्धारण करना। उदाहरणः भारतीय सांकेतिक भाषा में मजबूत लेकिन लिखित भाषा में कमजोर विद्यार्थी के लिए व्यक्तिगत शिक्षा योजना में भारतीय सांकेतिक भाषा-समर्थित साक्षरता लक्ष्य तैयार करना।

4. शिक्षण योजना एवं अनुदेशात्मक निर्णय प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ, सामग्री, अनुकूलन तथा संशोधनों का चयन करना। उदाहरण- आकलन के आधार

पर एफ एम प्रणाली, दृश्य सहायक सामग्री तथा सबटाइटल वाले वीडियो को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करना।

5. प्रगति अनुवीक्षण विद्यार्थी की लक्ष्यों की ओर निरंतर प्रगति की निगरानी करना तथा आवश्यकतानुसार शिक्षण में संशोधन करना। उदाहरण- पाठ्यक्रम-आधारित मापन के माध्यम से हर पंद्रह दिन में संकेत-समर्थित हिंदी या भारतीय सांकेतिक भाषा की समझ की प्रगति का मूल्यांकन।

6. स्थानांतरण योजना विद्यालयोत्तर जीवन -उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, रोजगार तथा स्वतंत्र जीवन की तैयारी करना। उदाहरण- 16 वर्षीय श्रवण बाधित व्यक्ति के आकलन के आधार पर करियर कौशल तथा संवाद क्षमता का विकास।

7. कार्यक्रम मूल्यांकन - पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियों तथा समग्र शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना। उदाहरण- संपूर्ण संचार और मौखिकता पद्धतियों की तुलना कर विद्यालय स्तर पर बेहतर दृष्टिकोण को अपनाना।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अनुसार शैक्षिक आकलन पूर्ण, निष्पक्ष और व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए। भारतीय पुनर्वास परिषद् (आर सी आई) के दिशानिर्देश आकलन को समग्र, क्षमता-आधारित, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील तथा बहुभाषी बनाने पर बल देते हैं।

11.3.6 शैक्षिक आकलन के सिद्धांत

शैक्षिक आकलन एक वैज्ञानिक, व्यवस्थित और व्यावसायिक प्रक्रिया है जो कुछ मौलिक सिद्धांतों पर आधारित होती है। ये सिद्धांत आकलन की वैधता, विश्वसनीयता, निष्पक्षता और उपयोगिता सुनिश्चित करते हैं। विशेष शिक्षा,

विशेषकर श्रवण बाधित व्यक्ति (श्रवण क्षति वाले व्यक्तियों) के संदर्भ में, ये सिद्धांत और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि भाषा की मोडालिटी, संचार पद्धति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और संवेदी हानि आकलन परिणामों को गहराई से प्रभावित करती है। इन सिद्धांतों का पालन न करने पर आकलन अवैध, पूर्वाग्रहपूर्ण और अनुपयोगी हो सकता है (पिएरेंजेलो और गिउलियानी, 2006य साल्विया और अन्य, 2013). शैक्षिक आकलन निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिएः

1. वैधता

वैधता यह सुनिश्चित करती है कि आकलन वास्तव में उसी योग्यता या विशेषता को माप रहा है जिसे मापने का दावा किया गया है। यह केवल "सही माप" ही नहीं, बल्कि "उद्देश्य के अनुरूप सही माप" है। इसमें तीन मुख्य प्रकार हैं -सामग्री वैधता, निर्माण वैधता और मानदंड वैधता (एईआरए और अन्य, 2014)। श्रवण बाधित व्यक्ति के संदर्भ में महत्व देखें तो श्रवण बाधित विद्यार्थियों में भाषा मौखिक हो या सांकेतिक, दोनों ही मामलों में सामान्य मौखिक परीक्षण उनकी असली क्षमता को मापने में असफल रहते हैं। इसे हम विस्तृत उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं: एक 9 वर्षीय बच्चे (गहन सुनने की हानि) की बुद्धि का आकलन यदि केवल मौखिक प्रश्नों वाले परीक्षण से किया जाए तो वह कम स्कोर कर सकता है, जबकि उसकी दृश्य-स्थानिक बुद्धि, समस्या समाधान क्षमता और रचनात्मकता बहुत अच्छी हो सकती है। इसलिए लीटर इंटरनेशनल परफॉर्मेंस स्केल - तीसरा संस्करण (स्मपजमत-3) या यूनिवर्सल नॉनवर्बल इंटेलिजेंस टेस्ट जैसे अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण का उपयोग करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो आकलन अवैध माना जाएगा और गलत आई ई पी बनेगी।

2. विश्वसनीयता

विश्वसनीयता का मतलब है कि आकलन के परिणाम स्थिर, सुसंगत और दोहराने योग्य हों। यदि एक ही विद्यार्थी को अलग-अलग समय या अलग-अलग आकलनकर्ताओं द्वारा परीक्षित किया जाए तो परिणाम लगभग समान आने चाहिए। श्रवण बाधित व्यक्ति के संदर्भ में उदाहरण देखें तो यदि किसी विद्यार्थी का भारतीय सांकेतिक भाषा में कहानी समझने का आकलन आज एक भारतीय सांकेतिक भाषा विशेषज्ञ द्वारा 75ः और 15 दिन बाद दूसरे शिक्षक द्वारा 45ः आता है, तो आकलन अविश्वसनीय है। भारतीय सांकेतिक भाषा आकलनकर्ताओं की कमी और प्रशिक्षण की कमी अक्सर इस सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

3. निष्पक्षता एवं समावेशिता

आकलन किसी भी प्रकार के सांस्कृतिक, भाषाई, सामाजिक-आर्थिक या दिव्यांगता संबंधी पूर्वाग्रह से मुक्त होना चाहिए। हर विद्यार्थी को समान अवसर मिलना चाहिए। श्रवण बाधित व्यक्ति के संदर्भ में जो बच्चा मुख्य रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करता है, उसके लिए बिना भारतीय सांकेतिक भाषा दुभाषिया या वीडियो निर्देश के अंग्रेजी या हिंदी लिखित परीक्षा लेना अन्यायपूर्ण है। इसी प्रकार, कॉक्लियर इम्प्लांट वाले बच्चे का आकलन शांत कमरे में करना उचित है, जबकि शोर भरे वातावरण में करना अनुचित होगा। निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए अनुकूलन (जैसे अतिरिक्त समय, दृश्य सामग्री, सांकेतिक दुभाषिया) अनिवार्य हैं।

4. उद्देश्यपूर्णता एवं निरंतरता

आकलन बिना उद्देश्य के नहीं होना चाहिए। यह स्पष्ट लक्ष्य से संचालित हो और एक बार की घटना न होकर सतत प्रक्रिया हो। श्रवण बाधित व्यक्ति के लिए केवल प्रवेश के समय एक बार आकलन करके आई ई पी बना देना पर्याप्त नहीं है।

भाषा विकास बहुत तेजी से बदलता है, इसलिए हर 3 महीने में प्रगति निगरानी करनी चाहिए। यदि निरंतरता नहीं रखी गई तो भाषा विलंब बढ़ सकता है।

5. बहु-विधि एवं बहु-स्रोत दृष्टिकोण

कोई एक परीक्षण या एक व्यक्ति विद्यार्थी की पूरी तस्वीर नहीं दे सकता। इसलिए कई प्रकार की विधियों और कई स्रोतों से जानकारी एकत्र करनी चाहिए। जैसेः मानकीकृत परीक्षण, कक्षा अवलोकन, अभिभावक साक्षात्कार, भारतीय सांकेतिक भाषा वीडियो पोर्टफोलियो, शिक्षक की दैनिक रिपोर्ट, पाठ्यक्रम-आधारित मापन ये सभी मिलाकर ही सही निष्कर्ष निकलता है।

6. रचनात्मकता, उपयोगिता एवं नैतिकता

आकलन विद्यार्थी को प्रेरित करे, सकारात्मक हो, गोपनीयता बनाए रखे और नैतिक मानदंडों का पालन करे। इसका परिणाम विद्यार्थी के विकास में उपयोगी होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर आकलन रिपोर्ट में "बच्चे में भाषा की बहुत कमी है" लिखने के बजाय लिखा जाए -"बच्चा भारतीय सांकेतिक भाषा में जटिल वाक्य बना सकता है, लेकिन लिखित हिंदी में सहायता की जरूरत है। उसकी दृश्य स्मृति बहुत मजबूत है जिसका उपयोग साक्षरता विकास में किया जा सकता है।"

11.3.7 शिक्षा में समग्र आकलन का महत्व

समग्र आकलन विद्यार्थी को एक पूर्ण व्यक्ति के रूप में देखने और समझने की प्रक्रिया है। यह पारंपरिक आकलन पद्धति से अलग है, जो मुख्य रूप से शैक्षिक उपलब्धि या संज्ञानात्मक कौशलों तक सीमित रहती है। समग्र आकलन विद्यार्थी

के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, संचारात्मक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय आयामों को एकीकृत रूप से आकलित करता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी की समग्र व्यक्तित्व संरचना, शक्तियों, कमियों, आवश्यकताओं और संभावनाओं को समझना है ताकि सार्थक, व्यक्तिगत और प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेप किया जा सके (ओवरटन, 2016य पिएरेंजेलो और गिउलियानी, 2006)। समग्र आकलन का दृष्टिकोण व्यक्ति-केंद्रित और संदर्भ-आधारित है। यह विद्यार्थी को उसके परिवार, विद्यालय, समुदाय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ जोड़कर देखता है। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान और विशेष शिक्षा में इसे इसलिए महत्व दिया जाता है क्योंकि विद्यार्थी का विकास अलग-अलग क्षेत्रों में परस्पर जुड़ा होता है - एक क्षेत्र की कमी दूसरे क्षेत्रों को भी प्रभावित करती है। श्रवण क्षति केवल एक संवेदी क्षति नहीं है। यह भाषा विकास, संचार, सामाजिक अंतर्क्रिया, आत्म- सम्मान, शैक्षिक पहुंच और मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से और बहुआयामी रूप से प्रभावित करती है। इसलिए श्रवण बाधित व्यक्ति के मामले में समग्र आकलन अत्यंत आवश्यक है। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

1. भाषा विकास की जटिलता - श्रवण दोष भाषा अधिगम को प्रभावित करता है, जो आगे पढ़ने-लिखने, सोचने और सामाजिक संबंध बनाने में बाधा उत्पन्न करती है। समग्र आकलन भाषा की मोडालिटी (मौखिक, सांकेतिक, द्विभाषी) को ध्यान में रखकर आकलन करता है।

2. सामाजिक-भावनात्मक प्रभाव - श्रवण बाधित विद्यार्थी अक्सर सामाजिक अलगाव, पहचान संकट, कम आत्म-सम्मान और भावनात्मक चुनौतियों का सामना करते हैं। केवल अकादमिक आकलन इन मुद्दों को नहीं पकड़ पाता।

3. पर्यावरणीय और सांस्कृतिक कारक - विद्यार्थी का घरेलू भाषा वातावरण (बधिर या श्रवण में सक्षम परिवार), समुदाय, विद्यालय की समावेशी स्थिति और सांस्कृतिक पहचान (बधिर संस्कृति) समग्र विकास को आकार देते हैं।

उदाहरणः एक 12 वर्षीय श्रवण बाधित विद्यार्थी जो भारतीय सांकेतिक भाषा में माहिर है, लेकिन मुख्यधारा की कक्षा में लिखित हिंदी में कमजोर प्रदर्शन कर रहा है। यदि केवल अकादमिक टेस्ट किया जाए तो लगेगा कि उसमें "सीखने की अक्षमता" है। लेकिन समग्र आकलन से पता चलेगा कि समस्या भाषा पहुंच, कक्षा में संचार व्यवस्था और सामाजिक समावेशन की कमी के कारण है, न कि बौद्धिक क्षमता की। समग्र आकलन सुनिश्चित करता है कि केवल कमियों की पहचान न हो, बल्कि विद्यार्थी की शक्तियों - जैसे दृश्य स्मृति, समस्या-समाधान कौशल, रचनात्मकता और सांकेतिक भाषा दक्षता को भी पहचाना और मजबूत किया जाए।

11.3.8 क्षमता-आधारित दृष्टिकोण

क्षमता-आधारित दृष्टिकोण विशेष शिक्षा में एक आधुनिक और प्रगतिशील दृष्टिकोण है। यह पारंपरिक डेफिसिट मॉडल से पूरी तरह भिन्न है। डेफिसिट - केंद्रित दृष्टिकोण विद्यार्थी में मौजूद कमियों, दिव्यांगताओं और समस्याओं पर केंद्रित रहता है, जबकि क्षमता-आधारित दृष्टिकोण विद्यार्थी की क्षमताओं, शक्तियों, रुचियों, प्रतिभाओं, सकारात्मक गुणों और सफलता के क्षेत्रों को पहचानकर उन्हें विकास तथा सशक्तिकरण का मुख्य आधार बनाता है।

यह दृष्टिकोण विद्यार्थी को "समस्या" के रूप में नहीं, बल्कि सक्षम और सम्भावनाओं से भरे व्यक्ति के रूप में देखता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी की मौजूदा शक्तियों का उपयोग करते हुए कमियों को दूर करना और समग्र विकास को बढ़ावा देना है। एपस्टीन (2003) के अनुसार, "स्ट्रेंथ-बेस्ड आकलन उन

भावनात्मक एवं व्यवहारिक कौशलों, योग्यताओं तथा विशेषताओं का मापन है जो सफलता और कल्याण को बढ़ावा देते हैं तथा जो व्यक्ति को चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाते हैं"। श्रवण बाधित व्यक्तियों के मामले में यह दृष्टिकोण विशेष रूप से शक्तिशाली और उपयुक्त है। लंबे समय तक श्रवण बाधित विद्यार्थियों को "कम सुनने वाला" या "भाषा में पिछड़ा" मानकर केवल उनकी कमियों पर ध्यान दिया जाता रहा। क्षमता-आधारित दृष्टिकोण इस नकारात्मक दृष्टिकोण को बदलकर उनकी विशिष्ट शक्तियों को केंद्र में लाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों की प्रमुख शक्तियाँ जो इस दृष्टिकोण के अंतर्गत पहचानी और विकसित की जाती हैं:

ऽ दृश्य क्षमता और दृश्य-स्थानिक बुद्धि - वे दृश्य संकेतों, चेहरे के भावों और पर्यावरण को बेहतर तरीके से पढ़ पाते हैं।

ऽ समस्या-समाधान कौशल और रचनात्मकता - दृश्य सोच के कारण वे जटिल समस्याओं को नए तरीके से हल करते हैं।

ऽ सांकेतिक भाषा की दक्षता - भारतीय सांकेतिक भाषा में जटिल अवधारणाओं को व्यक्त करने की क्षमता।

ऽ अवलोकन शक्ति और स्मृति - सूक्ष्म दृश्य संकेतों को याद रखने की क्षमता।

ऽ सहानुभूति और सामाजिक बुद्धिमत्ता - बधिर संस्कृति के अनुभव के कारण अक्सर गहरी सहानुभूति विकसित होती है।

उदाहरण: एक 13 वर्षीय श्रवण बाधित विद्यार्थी लिखित हिंदी में कमजोर है, लेकिन सांकेतिक भाषा में वह अत्यंत कुशल है और दृश्य कला में असाधारण प्रतिभा रखता है। डेफिसिट-केंद्रित दृष्टिकोण में उसे "भाषा में पिछड़ा" कहा

जाएगा। जबकि क्षमता-आधारित दृष्टिकोण में उसकी दृश्य कला और सांकेतिक भाषा क्षमता को आधार बनाकर साक्षरता विकास (दृश्य कहानी सुनाना, ग्राफिक ऑर्गनाइजर, आई एस एल-समर्थित पठन) की रणनीति तैयार की जाएगी। क्षमता-आधारित दृष्टिकोण के श्रवण बाधित विद्यार्थी के संदर्भ में प्रमुख लाभ हैं जो निम्न प्रकार से हैं:

ऽ आत्मविश्वास और सकारात्मक आत्म-धारणा का विकास - विद्यार्थी खुद को सक्षम महसूस करते हैं।

ऽ प्रेरणा और सहभागिता में वृद्धि - जब शक्तियों पर ध्यान दिया जाता है तो विद्यार्थी अधिक उत्साहित रहते हैं।

ऽ सकारात्मक और प्राप्ति-उन्मुख बनाना - लक्ष्य कमियों को दूर करने के बजाय शक्तियों को और मजबूत करने पर आधारित होते हैं।

ऽ समावेशी शिक्षा में बेहतर समायोजन - साथी विद्यार्थी और शिक्षक उनकी क्षमताओं को देखते हैं, न कि केवल दिव्यांगता को।

ऽ दीर्घकालिक सफलता -स्वतंत्रता, रोजगार योग्यता और सामाजिक समावेशन में सुधार।

ऽ शिक्षक-अभिभावक संबंध मजबूत होना - सकारात्मक फोकस के कारण संबंध सुधार होते हैं।

एल्डर और अन्य (2018) ने स्ट्रेंथ-बेस्ड आई ई पी लेखन पर अपने शोध में कहा है कि यह दृष्टिकोण दिव्यांग विद्यार्थियों को “समस्या” के बजाय सक्षम योगदानकर्ता के रूप में पुनर्निर्मित करता है और समावेशी कक्षाओं में उनके प्रदर्शन तथा आत्म-सम्मान दोनों को बढ़ाता है।

11.4 भारतीय संदर्भ

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 और भारतीय पुनर्वास परिषद् के समावेशी शिक्षा दिशानिर्देश क्षमता-आधारित आकलन और शिक्षा पर बल देते हैं। भारत में बधिर संस्कृति और भारतीय सांकेतिक भाषा की बढ़ती स्वीकृति के साथ यह दृष्टिकोण और अधिक प्रासंगिक हो गया है।

क्षमता-आधारित दृष्टिकोण विशेष शिक्षा में एक प्रतिमान विस्थापन (चंतंकपहउ ेे◌ीपजि) का प्रतिनिधित्व करता है। श्रवण बाधित के संदर्भ में यह न केवल शैक्षिक विकास बल्कि विद्यार्थी की समग्र पहचान, आत्म-सम्मान और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह दृष्टिकोण समग्र आकलन के साथ मिलकर श्रवण बाधित विद्यार्थियों को सशक्त, आत्मनिर्भर और समावेशी समाज का सक्रिय सदस्य बनाने में सहायक है।

शैक्षिक आकलन विशेष शिक्षा की आधारशिला है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में समग्र तथा क्षमता-आधारित अपनाकर हम न केवल उनकी चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं, बल्कि उनकी पूर्ण क्षमता का विकास भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

आधुनिक विशेष शिक्षा में आकलन को एक बार की परीक्षा न मानकर सतत, सहयोगात्मक, विद्यार्थी- केंद्रित और सशक्तिकरण की प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 और भारतीय पुनर्वास परिषद् दिशानिर्देशों की भावना के अनुरूप है तथा समावेशी और समान शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. शैक्षिक आकलन की मुख्य विशेषता हैः

अं) केवल परीक्षा लेना इ) सूचना एकत्रित करना, विश्लेषण करना तथा अधिगम सुधारना ब) अंक देना क) उपरोक्त सभी

2. क्षमता-आधारित दृष्टिकोण मुख्यतः केंद्रित होता हैः ं

अ) केवल कमियों पर इ) विद्यार्थी की क्षमताओं और सकारात्मक पक्षों पर ब) केवल अकादमिक अंकों पर क) शारीरिक स्वास्थ्य पर

11.5 साक्षरता विकास एवं श्रवण बाधिता

साक्षरता किसी व्यक्ति की पढ़ने, लिखने, समझने तथा प्रभावी रूप से संप्रेषण करने की क्षमता को दर्शाती है। आधुनिक शिक्षा में साक्षरता को केवल अक्षरों को पहचानने अथवा शब्दों को पढ़ने की क्षमता तक सीमित नहीं माना जाता, बल्कि इसे सामाजिक सहभागिता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान तथा ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ा जाता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए साक्षरता विकास विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि भाषा अर्जन की प्रक्रिया उनके लिए सामान्य श्रवण वाले बच्चों की तुलना में भिन्न होती है। भाषा और साक्षरता का घनिष्ठ संबंध है। यदि किसी बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था में पर्याप्त भाषायी निविष्ट प्राप्त नहीं होता, तो उसके पठन एवं लेखन कौशल भी प्रभावित हो सकते हैं (पॉल और ली, 2024)। अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि श्रवण बाधित बच्चों में पठन उपलब्धि सामान्यतः उनकी भाषायी दक्षता से संबंधित होती है। जिन बच्चों को प्रारम्भिक अवस्था में सांकेतिक भाषा, श्रवण

यंत्र, कोक्लियर इम्प्लांट अथवा अन्य उपयुक्त हस्तक्षेप प्राप्त होते हैं, उनमें साक्षरता विकास अपेक्षाकृत बेहतर पाया जाता है (मार्शार्क और स्पेंसर, 2016)।

साक्षरता विकास एक बहुआयामी एवं क्रमिक प्रक्रिया है जो जन्म से प्रारम्भ होकर जीवनपर्यन्त चलती है। यह केवल पढ़ने और लिखने तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषा, संज्ञान, सामाजिक अन्तःक्रिया तथा अनुभवों के समन्वय से विकसित होने वाली क्षमता है। श्रवण बाधित बच्चों में साक्षरता विकास का स्वरूप सामान्य बच्चों से भिन्न हो सकता है क्योंकि उनकी भाषा तक पहुँच का माध्यम, मात्रा तथा गुणवत्ता अलग होती है। अतः साक्षरता विकास को समझने के लिए इसके प्रमुख घटकों का अध्ययन आवश्यक है। साक्षरता विकास के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं-भाषा विकास, शब्दावली विकास,, ध्वन्यात्मक जागरूकता, पठन कौशल, पठन-बोध, लेखन कौशल, आलोचनात्मक एवं कार्यात्मक साक्षरता।

1. भाषा विकास और श्रवण बाधिता

भाषा विकास साक्षरता का आधारभूत घटक है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा बच्चा अपने अनुभवों को समझता, संगठित करता और अभिव्यक्त करता है। सामान्यतः बच्चे अपने परिवेश से प्राप्त श्रव्य भाषा इनपुट के आधार पर शब्द, वाक्य संरचना, व्याकरण तथा संप्रेषण कौशल विकसित करते हैं। श्रवण बाधिता की स्थिति में यह प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है क्योंकि बच्चे को भाषा के प्राकृतिक सम्पर्क के अवसर सीमित मात्रा में प्राप्त होते हैं। भाषा विकास में सामान्यतः निम्न पक्ष शामिल होते हैं-ग्रहणशील भाषा, अभिव्यंजक भाषा, व्याकरण, वाक्य संरचना, अर्थ विज्ञान, प्रयोगात्मक भाषा । गंभीर अथवा गहन श्रवण बाधिता वाले बच्चों में इन क्षेत्रों का विकास सामान्य गति से नहीं हो पाता, विशेषकर तब जब उन्हें प्रारम्भिक अवस्था में उपयुक्त भाषायी हस्तक्षेप उपलब्ध

न हो। परिणामस्वरूप बाद के वर्षों में पढ़ने और लिखने की क्षमता भी प्रभावित हो सकती है (पॉल और ली, 2024)। उदाहरण-यदि कक्षा 4 के विद्यार्थी को ''क्योंकि'', ''हालाँकि'', ''यदि'' और ''लेकिन'' जैसे संयोजक शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आता, तो वह जटिल वाक्यों को पढ़ने और समझने में कठिनाई अनुभव करेगा।

2. शब्दावली विकास और श्रवण बाधिता

शब्दावली साक्षरता विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है। शब्दावली जितनी समृद्ध होगी, पठन और लेखन दोनों उतने ही प्रभावी होंगे। श्रवण बाधित बच्चों में शब्दावली विकास की गति सामान्य बच्चों की अपेक्षा धीमी हो सकती है क्योंकि वे अनेक शब्दों को अनौपचारिक रूप से सुनकर नहीं सीख पाते। शब्दावली दो प्रकार की होती हैकृ(क) ग्रहणशील शब्दावलीः वे शब्द जिन्हें बच्चा समझता है। (ख) अभिव्यंजक शब्दावलीः वे शब्द जिनका उपयोग बच्चा बोलने, लिखने या संकेत करने में करता है। अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों में ग्रहणशील तथा अभिव्यंजक दोनों प्रकार की शब्दावली सामान्यतः कम विकसित हो सकती है, विशेषकर अमूर्त अवधारणाओं से संबंधित शब्दों में (मार्शार्क और स्पेंसर, 2016)। उदाहरण-''पेड़'', ''कुत्ता'', ''घर'' जैसे ठोस शब्द अपेक्षाकृत आसानी से सीखे जा सकते हैं, जबकि ''स्वतंत्रता'', ''न्याय'', ''लोकतंत्र'' या ''जिम्मेदारी'' जैसे अमूर्त शब्दों को समझने में अधिक कठिनाई हो सकती है।

3. ध्वन्यात्मक जागरूकता और श्रवण बाधिता

ध्वन्यात्मक जागरूकता का अर्थ भाषा की ध्वनियों को पहचानने, अलग करने तथा उनके साथ कार्य करने की क्षमता से है। यह पठन विकास का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। इसमें शामिल हैं-तुकबंदी पहचानना, शब्दों को ध्वनियों

में विभाजित करना, ध्वनियों को जोड़कर शब्द बनाना, समान प्रारम्भिक ध्वनियों की पहचान। श्रवण बाधित बच्चों के लिए यह क्षेत्र विशेष चुनौतीपूर्ण हो सकता है क्योंकि ध्वनियों का प्रत्यक्ष श्रवण अनुभव सीमित होता है। तथापि आधुनिक शोध बताते हैं कि श्रवण बाधित विद्यार्थी दृश्य संकेतों, होंठों की गतिविधियों, सांकेतिक भाषा तथा लिखित भाषा के माध्यम से भी ध्वन्यात्मक जागरूकता का विकास कर सकते हैं (ईस्टरब्रूक्स और बील-अल्वारेज, 2013)। उदाहरण- सामान्य बच्चा ''कल'', ''फल'' और ''जल'' शब्दों की तुक पहचान सकता है, जबकि श्रवण बाधित विद्यार्थी को इस कौशल के विकास के लिए अतिरिक्त दृश्य एवं भाषायी सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

4. पठन कौशल और श्रवण बाधिता

पठन कौशल केवल शब्द पहचान तक सीमित नहीं है। इसमें कई उप-कौशल सम्मिलित होते हैं-अक्षर पहचान, शब्द पहचान, वाक्य पठन, प्रवाह, अर्थ ग्रहण। श्रवण बाधित विद्यार्थियों में शब्द पहचान विकसित हो जाने के बाद भी पठन की गति तथा सटीकता प्रभावित हो सकती है। इसके अतिरिक्त जटिल वाक्य संरचनाओं को समझना भी चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उदाहरण-विद्यार्थी निम्न वाक्य पढ़ सकता हैकृ''विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गई।'' लेकिन यदि उसे ''आयोजित'' शब्द का अर्थ ज्ञात नहीं है, तो वह वाक्य का पूर्ण अर्थ नहीं समझ पाएगा। पॉल (2021) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों की पठन उपलब्धि का स्तर मुख्यतः भाषा दक्षता, शब्दावली तथा पूर्वज्ञान पर निर्भर करता है।

5. पठन-बोध और श्रवण बाधिता

पठन-बोध साक्षरता विकास का उच्च स्तरीय घटक है। इसका सम्बन्ध लिखित सामग्री के अर्थ को समझने, उसका विश्लेषण करने तथा उससे निष्कर्ष निकालने

की क्षमता से है। पठन-बोध में निम्न प्रक्रियाएँ शामिल हैं-मुख्य विचार पहचानना, कारण-परिणाम समझना, अनुमान लगाना, निष्कर्ष निकालना, आलोचनात्मक विश्लेषण करना । श्रवण बाधित विद्यार्थियों में पठन-बोध संबंधी कठिनाइयाँ प्रायः सीमित शब्दावली, व्याकरणिक ज्ञान तथा पृष्ठभूमि अनुभवों की कमी से जुड़ी होती हैं। उदाहरण-अनुच्छेदः "अत्यधिक वर्षा के कारण नदी का जलस्तर बढ़ गया, जिससे आसपास के क्षेत्रों में बाढ़ आ गई।" यदि विद्यार्थी "जलस्तर" अथवा "बाढ़" शब्दों से परिचित नहीं है, तो वह अनुच्छेद का आशय पूरी तरह नहीं समझ पाएगा।

6. लेखन कौशल और श्रवण बाधिता

लेखन भाषा का सबसे जटिल कौशल माना जाता है क्योंकि इसमें भाषा ज्ञान, विचार संगठन, व्याकरण, शब्दावली तथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का समन्वय आवश्यक होता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लेखन में निम्न कठिनाइयाँ देखी जा सकती हैं- सीमित शब्द चयन, व्याकरणिक त्रुटियाँ, काल का अनुचित प्रयोग, वाक्य संरचना में त्रुटियाँ, विचारों का असंगठित प्रस्तुतीकरण । उदाहरण - सामान्य वाक्यः "मैंने कल पुस्तकालय से एक पुस्तक ली।" संभव त्रुटिपूर्ण लेखनः "मैं कल पुस्तकालय पुस्तक लिया।" यह त्रुटि व्याकरणिक संरचना की सीमित समझ को दर्शाती है।

7. आलोचनात्मक एवं कार्यात्मक साक्षरता

आधुनिक शिक्षा में साक्षरता का उद्देश्य केवल पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक एवं नागरिक जीवन में प्रभावी रूप से भाग लेने के लिए सक्षम बनाना भी है। इस संदर्भ में कार्यात्मक

साक्षरता और आलोचनात्मक साक्षरता को साक्षरता विकास के महत्वपूर्ण आयामों के रूप में देखा जाता है। कार्यात्मक साक्षरता से तात्पर्य उन व्यावहारिक कौशलों से है, जिनकी सहायता से व्यक्ति दैनिक जीवन के विभिन्न कार्यों को स्वतंत्र रूप से संपादित कर सके, जैसे बैंक फॉर्म भरना, मोबाइल संदेशों को पढ़ना एवं समझना, ऑनलाइन आवेदन करना तथा सरकारी निर्देशों का पालन करना। इसके विपरीत, आलोचनात्मक साक्षरता व्यक्ति को उपलब्ध सूचनाओं का विश्लेषण करने, तथ्य और मत के बीच अंतर करने तथा विभिन्न मीडिया स्रोतों से प्राप्त संदेशों का मूल्यांकन करने की क्षमता प्रदान करती है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए कार्यात्मक एवं आलोचनात्मक साक्षरता का विकास विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह उन्हें शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक जीवन में अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनने में सहायता करता है (यूनेस्को, 2020)। उदाहरणस्वरूप, यदि कोई श्रवण बाधित युवा स्वयं ऑनलाइन नौकरी के लिए आवेदन कर सकता है, आवश्यक निर्देशों को समझ सकता है तथा संबंधित दस्तावेजों को अपलोड कर सकता है, तो यह उसकी कार्यात्मक साक्षरता का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाएगा। इस प्रकार साक्षरता विकास अनेक परस्पर संबंधित घटकों से मिलकर निर्मित होता है। श्रवण बाधिता का प्रभाव इन सभी घटकों पर समान रूप से नहीं पड़ता, बल्कि यह भाषा तक पहुँच, संप्रेषण माध्यम, प्रारम्भिक हस्तक्षेप, पारिवारिक सहयोग तथा उपलब्ध शैक्षिक अवसरों के आधार पर भिन्न-भिन्न रूपों में दिखाई देता है। अतः श्रवण बाधित विद्यार्थियों के साक्षरता विकास का अध्ययन करते समय प्रत्येक घटक का पृथक तथा समग्र दोनों स्तरों पर मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

3. श्रवण बाधित विद्यार्थियों में पठन-बोध संबंधी कठिनाइयाँ प्रायः सीमित ़़़्््....., व्याकरणिक ज्ञान तथा पृष्ठभूमि अनुभवों की कमी से जुड़ी होती हैं।

4. ..... साक्षरता व्यक्ति को बैंक फॉर्म भरने, ऑनलाइन आवेदन करने तथा सरकारी निर्देशों का पालन करने में सक्षम बनाती है।

11. 6 सभी आयु समूहों में साक्षरता आकलन

साक्षरता विकास एक सतत एवं जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति की आयु, अनुभव, भाषा क्षमता, शैक्षिक अवसरों तथा सामाजिक परिवेश के अनुसार साक्षरता की प्रकृति एवं स्तर में परिवर्तन होता रहता है। इसलिए श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता आकलन के लिए एक समान मानदण्ड सभी आयु समूहों पर लागू नहीं किए जा सकते। प्रत्येक आयु स्तर पर साक्षरता की अपेक्षाएँ, कौशल तथा आकलन की विधियाँ अलग होती हैं। श्रवण बाधित बच्चों और वयस्कों के साक्षरता आकलन में केवल पठन और लेखन का आकलन पर्याप्त नहीं होता, बल्कि भाषा विकास, संप्रेषण कौशल, शब्दावली, समझ, कार्यात्मक उपयोग तथा सामाजिक संदर्भों में भाषा के प्रयोग का भी आकलन आवश्यक होता है। इस दृष्टि से साक्षरता आकलन को तीन प्रमुख आयु समूहों में विभाजित किया जा सकता हैकृ

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था (0-6 वर्ष)
2. विद्यालयी आयु (6-18 वर्ष)
3. वयस्क अवस्था (18 वर्ष से ऊपर)

11.6.1 प्रारम्भिक बाल्यावस्था (0-6 वर्ष)

प्रारम्भिक बाल्यावस्था को भाषा एवं साक्षरता विकास की आधारशिला माना जाता है। इस अवस्था में बच्चे औपचारिक रूप से पढ़ना और लिखना नहीं सीखते, किंतु वे उन आधारभूत क्षमताओं का विकास करते हैं जो भविष्य में सफल पठन एवं लेखन के लिए आवश्यक होती हैं। इन क्षमताओं को सामूहिक रूप से प्रारम्भिक साक्षरता कहा जाता है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए यह अवस्था विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि इसी अवधि में भाषा विकास, संप्रेषण कौशल, सामाजिक अन्तःक्रिया तथा संज्ञानात्मक क्षमताओं की नींव रखी जाती है। यदि इस अवस्था में समय पर पहचान, प्रारम्भिक हस्तक्षेप तथा उपयुक्त भाषायी वातावरण उपलब्ध कराया जाए, तो आगे चलकर साक्षरता विकास अधिक प्रभावी एवं सफल हो सकता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में साक्षरता आकलन का प्रमुख उद्देश्य बच्चे की उन प्रारम्भिक क्षमताओं की पहचान करना है जो भविष्य के भाषा एवं साक्षरता विकास का आधार बनती हैं। जो कि निम्न प्रकार से हैं -

1. दृश्य ध्यान का विशेष महत्व है, क्योंकि वे सूचना प्राप्त करने के लिए मुख्यतः दृश्य माध्यमों पर निर्भर रहते हैं। इसलिए मूल्यांकन के दौरान यह देखा जाता है कि बच्चा चित्रों, संकेतों, चेहरों तथा अन्य दृश्य सामग्रियों पर कितनी प्रभावी ढंग से ध्यान केंद्रित कर सकता है। उदाहरण के लिए शिक्षक बच्चे को चित्र कार्ड दिखाकर उसकी रुचि, ध्यान अवधि तथा प्रतिक्रिया का अवलोकन कर सकता है।

2. सांकेतिक संप्रेषण भी इस आयु वर्ग में साक्षरता विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यदि बच्चा सांकेतिक भाषा का उपयोग करता है, तो उसके संकेतों को समझने, उनका उचित प्रयोग करने तथा संकेतों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त

करने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकनकर्ता यह जानने का प्रयास करता है कि बच्चा कितने संकेतों को पहचानता है, उनका प्रयोग किस प्रकार करता है तथा संप्रेषण की स्थिति में कितनी प्रभावशीलता से उनका उपयोग कर पाता है। उदाहरणस्वरूप, ''खाना'', ''पानी'', ''माँ'' अथवा ''खेल'' जैसे सामान्य संकेत प्रस्तुत करके बच्चे की समझ एवं अभिव्यक्ति का अवलोकन किया जा सकता है।

3. चित्र पहचान प्रारम्भिक साक्षरता का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस अवस्था में बच्चे चित्रों के माध्यम से वस्तुओं, व्यक्तियों, घटनाओं तथा उनके बीच के संबंधों को समझना सीखते हैं। चित्रों की पहचान करने की क्षमता भविष्य में शब्दों एवं प्रतीकों को समझने की योग्यता के विकास में सहायक होती है। मूल्यांकन के दौरान बच्चे को विभिन्न परिचित चित्र दिखाकर उनसे संबंधित वस्तुओं की पहचान करने या उचित चित्र की ओर संकेत करने के लिए कहा जा सकता है।

4. शब्दावली विकास को भी प्रारम्भिक साक्षरता का एक प्रमुख आधार माना जाता है। इस स्तर पर यह देखा जाता है कि बच्चा कितने शब्दों अथवा संकेतों को समझता है, उनका प्रयोग किस प्रकार करता है तथा नए शब्दों को सीखने की उसकी क्षमता कितनी विकसित है। उदाहरण के लिए किसी चित्र को दिखाकर बच्चे से उसका नाम पूछना अथवा उससे संबंधित संकेत प्रदर्शित करने के लिए कहना शब्दावली विकास के मूल्यांकन का एक सरल माध्यम हो सकता है। समृद्ध शब्दावली आगे चलकर पठन-बोध और लेखन कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

5. कथा-बोध भी प्रारम्भिक साक्षरता का एक आवश्यक घटक है। इसके अंतर्गत बच्चे की घटनाओं के क्रम, पात्रों, क्रियाओं तथा कथानक को समझने की

क्षमता का आकलन किया जाता है। चित्र पुस्तकों, दृश्य कहानियों अथवा सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत कथाओं के माध्यम से यह जाना जा सकता है कि बच्चा कहानी की मुख्य घटनाओं को किस सीमा तक समझता है। उदाहरण के लिए किसी चित्रात्मक कहानी के पश्चात् बच्चे से यह पूछना कि कहानी का पात्र कहाँ गया था या उसके साथ कौन था, उसकी कथा-बोध क्षमता का संकेत प्रदान करता है।

व्हाइटहर्स्ट और लोनिगन (1998) के अनुसार प्रारम्भिक साक्षरता कौशल भविष्य की पठन उपलब्धियों के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक होते हैं। जिन बच्चों में प्रारम्भिक भाषा विकास, शब्दावली और कथा-बोध की क्षमता अधिक विकसित होती है, वे आगे चलकर पठन एवं लेखन में अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। इसलिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था में साक्षरता आकलन का उद्देश्य केवल वर्तमान क्षमताओं का मूल्यांकन करना नहीं, बल्कि भविष्य की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पहचान करना और समय रहते उपयुक्त हस्तक्षेप की योजना बनाना भी है। इस आयु वर्ग में साक्षरता आकलन सामान्यतः अवलोकन, विकासात्मक जाँच-सूचियों, माता-पिता साक्षात्कार, खेल-आधारित मूल्यांकन, चित्र-आधारित गतिविधियों तथा पोर्टफोलियो मूल्यांकन जैसी बाल-केंद्रित एवं विकासानुकूल विधियों के माध्यम से किया जाता है। ये विधियाँ बच्चे के स्वाभाविक व्यवहार और वास्तविक क्षमताओं को समझने में सहायता करती हैं तथा आगे की शैक्षिक योजना निर्माण के लिए उपयोगी आधार प्रदान करती हैं।

11.6.2 वद्यालयी आयु (6-18 वर्ष)

विद्यालयी आयु में साक्षरता विकास अधिक संरचित, व्यवस्थित तथा औपचारिक स्वरूप ग्रहण कर लेता है। इस अवधि में विद्यार्थी पढ़ना, लिखना, समझना तथा विभिन्न विषयों से संबंधित ज्ञान अर्जित करना सीखता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में

जहाँ साक्षरता विकास का केंद्र शब्द पहचान, पठन कौशल और आधारभूत लेखन होता है, वहीं उच्च कक्षाओं में पठन-बोध, विश्लेषणात्मक चिंतन, विषय-वस्तु आधारित अधिगम तथा प्रभावी लिखित अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया जाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए इस अवस्था में साक्षरता आकलन का उद्देश्य केवल शैक्षणिक उपलब्धि का मापन करना नहीं है, बल्कि उनकी भाषायी, संप्रेषणीय एवं शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करना तथा उपयुक्त शैक्षिक हस्तक्षेप की योजना बनाना भी है। विद्यालयी आयु में साक्षरता आकलन निम्न महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं दृ

1. शब्द पहचान से आशय लिखित शब्दों को पहचानने, उनका उच्चारण करने तथा उनके अर्थ को समझने की क्षमता से है। यह पठन कौशल का आधारभूत घटक माना जाता है, क्योंकि शब्दों की त्वरित एवं सटीक पहचान के बिना प्रभावी पठन संभव नहीं हो सकता। मूल्यांकन के दौरान विद्यार्थियों को विभिन्न स्तरों की शब्द-सूचियाँ प्रदान की जाती हैं और उनकी शब्द पहचान क्षमता का अवलोकन किया जाता है।

2. पठन प्रवाह भी साक्षरता विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसमें विद्यार्थी की पठन गति, शुद्धता तथा सहजता का आकलन किया जाता है। एक दक्ष पाठक न केवल शब्दों को सही पहचानता है, बल्कि उन्हें उचित गति और अर्थपूर्ण ढंग से पढ़ भी पाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में पठन प्रवाह का आकलन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि भाषा-अधिगम के विविध अनुभव उनके पठन प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। पठन प्रवाह का आकलन प्रायः अनुच्छेद पठन, समयबद्ध पठन गतिविधियों तथा त्रुटि विश्लेषण के माध्यम से किया जाता है।

3. पठन-बोध को साक्षरता का सबसे महत्वपूर्ण आयाम माना जाता है। इसका संबंध केवल शब्दों को पढ़ने से नहीं, बल्कि पाठ के अर्थ को समझने, उसका विश्लेषण करने तथा उससे निष्कर्ष निकालने की क्षमता से होता है। प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों से पाठ में निहित प्रत्यक्ष सूचनाओं से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं, जबकि उच्च कक्षाओं में उनसे विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित होते हैं। उदाहरणस्वरूप, विद्यार्थियों से किसी कहानी का मुख्य विचार, लेखक का उद्देश्य, पात्रों के व्यवहार के कारण अथवा पाठ से प्राप्त संदेश की व्याख्या करने के लिए कहा जा सकता है। इस प्रकार पठन-बोध का आकलन अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया को समझने में सहायता करता है।

4. लेखन कौशल विद्यालयी साक्षरता का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। लेखन के माध्यम से विद्यार्थी अपने विचारों, अनुभवों तथा ज्ञान को संगठित रूप में अभिव्यक्त करना सीखता है। लेखन आकलन में वर्तनी, व्याकरण, वाक्य संरचना, अनुच्छेद संगठन, विचारों की स्पष्टता तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति जैसे पक्षों का अध्ययन किया जाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लेखन में कई बार सांकेतिक भाषा अथवा वैकल्पिक भाषायी संरचनाओं का प्रभाव दिखाई दे सकता है, इसलिए आकलन करते समय उनकी भाषायी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना आवश्यक है। लेखन कार्यों में वर्णनात्मक, कथात्मक, व्याख्यात्मक तथा रचनात्मक लेखन गतिविधियों का उपयोग किया जाता है।

5. व्याकरणिक दक्षता भी साक्षरता विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। लिखित भाषा की शुद्धता और प्रभावशीलता काफी हद तक व्याकरणिक ज्ञान पर निर्भर करती है। विद्यालयी आयु में विद्यार्थियों की काल, लिंग, वचन, कारक, वाक्य-विन्यास तथा शब्द-रचना संबंधी समझ का मूल्यांकन किया जाता है।

व्याकरण का ज्ञान विद्यार्थियों को सटीक और अर्थपूर्ण भाषा प्रयोग में सक्षम बनाता है तथा पठन और लेखन दोनों में उनकी सफलता को प्रभावित करता है।

6. शब्दावली विकास विद्यालयी स्तर पर साक्षरता का एक केंद्रीय घटक बन जाता है। जैसे-जैसे विद्यार्थी उच्च कक्षाओं में पहुँचते हैं, उन्हें अधिक जटिल एवं विषय-विशेष शब्दावली से परिचित होना पड़ता है। इसलिए शब्दार्थ, पर्यायवाची, विलोम शब्द, बहुअर्थी शब्द तथा संदर्भानुसार शब्द प्रयोग की समझ का आकलन किया जाता है। समृद्ध शब्दावली न केवल पठन-बोध को सुदृढ़ करती है, बल्कि लेखन की गुणवत्ता और संप्रेषणीय प्रभावशीलता को भी बढ़ाती है।

विद्यालयी आयु में साक्षरता आकलन के लिए विविध प्रकार की विधियों का उपयोग किया जाता है। इनमें उपलब्धि परीक्षण, मानकीकृत परीक्षण, शिक्षक-निर्मित परीक्षण, पोर्टफोलियो आकलन, परियोजना कार्य तथा सतत एवं व्यापक आकलन प्रमुख हैं। उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति का मापन करते हैं, जबकि मानकीकृत परीक्षण उनकी उपलब्धियों की तुलना व्यापक मानकों से करने में सहायता प्रदान करते हैं। पोर्टफोलियो एवं परियोजना आधारित आकलन विद्यार्थियों के वास्तविक कार्यों और दीर्घकालिक प्रगति का आकलन करने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार सतत एवं व्यापक आकलन विद्यार्थियों के अधिगम की निरंतर निगरानी और सुधार के अवसर प्रदान करता है।

पॉल और ली (2024) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों की पठन उपलब्धि का आकलन केवल शब्द पहचान तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसमें भाषा समझ, अर्थ निर्माण, पृष्ठभूमि ज्ञान तथा पाठ के साथ अंतःक्रिया की प्रक्रिया को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण से विद्यालयी आयु में साक्षरता आकलन को बहुआयामी, समग्र तथा शिक्षार्थी-केंद्रित बनाना आवश्यक

है, ताकि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा शैक्षिक प्रगति का अधिक सटीक और सार्थक आकलन किया जा सके।

11.6.3 वयस्क अवस्था

वयस्क अवस्था में साक्षरता का स्वरूप अधिक व्यावहारिक, कार्यात्मक तथा जीवनोपयोगी हो जाता है। इस स्तर पर साक्षरता का उद्देश्य केवल पढ़ने और लिखने की क्षमता का आकलन करना नहीं होता, बल्कि यह जानना भी होता है कि व्यक्ति अपने दैनिक जीवन, व्यावसायिक गतिविधियों तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में साक्षरता कौशलों का उपयोग किस सीमा तक कर पा रहा है। इसलिए वयस्कों के साक्षरता आकलन में शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ कार्यात्मक साक्षरता पर विशेष बल दिया जाता है। कार्यात्मक साक्षरता व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा नागरिक गतिविधियों में स्वतंत्र एवं प्रभावी रूप से भाग लेने में सक्षम बनाती है। वयस्क अवस्था में साक्षरता आकलन के कई प्रमुख क्षेत्र हैं जो निम्न हैं दृ

1. दैनिक जीवन में पठन के अंतर्गत यह देखा जाता है कि व्यक्ति समाचार पत्र, मोबाइल संदेश, सार्वजनिक सूचनाएँ, निर्देश-पत्र, सूचना बोर्ड तथा अन्य दैनिक उपयोग की लिखित सामग्री को पढ़कर समझने में कितना सक्षम है। यह क्षमता व्यक्ति को अपने परिवेश के साथ प्रभावी रूप से संवाद स्थापित करने तथा आवश्यक सूचनाओं का उपयोग करने में सहायता प्रदान करती है।

2. लेखन कौशल भी वयस्क साक्षरता का एक महत्वपूर्ण आयाम है। इस स्तर पर व्यक्ति की आवेदन पत्र भरने, ई-मेल लिखने, संदेश तैयार करने, प्रपत्रों को पूर्ण करने तथा विभिन्न प्रकार के आधिकारिक पत्राचार करने की क्षमता का आकलन किया जाता है। प्रभावी लेखन कौशल व्यक्ति को शैक्षिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में सफलतापूर्वक संप्रेषण करने में सक्षम बनाता है।

3. व्यावसायिक साक्षरता वयस्क जीवन में विशेष महत्व रखती है। इसके अंतर्गत कार्यस्थल पर प्रयुक्त निर्देशों को समझने, लिखित रिपोर्ट तैयार करने, रिकॉर्ड संधारित करने तथा कार्य-संबंधी डिजिटल प्रणालियों का उपयोग करने की क्षमता का आकलन किया जाता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए यह क्षेत्र रोजगार एवं व्यावसायिक सफलता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि कार्यस्थल पर प्रभावी संप्रेषण और लिखित सूचनाओं की समझ उनकी कार्यकुशलता को प्रभावित करती है।

4. वर्तमान डिजिटल युग में डिजिटल साक्षरता भी वयस्क साक्षरता आकलन का एक अनिवार्य घटक बन गई है। इसके अंतर्गत ऑनलाइन प्रपत्र भरने, इंटरनेट का उपयोग करने, डिजिटल संचार माध्यमों का प्रयोग करने तथा ई-गवर्नेंस सेवाओं तक पहुँच स्थापित करने की क्षमता का आकलन किया जाता है। डिजिटल तकनीकों के बढ़ते उपयोग के कारण यह क्षमता व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन में समान रूप से महत्वपूर्ण हो गई है।

5. सामाजिक सहभागिता भी कार्यात्मक साक्षरता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। इसके अंतर्गत यह देखा जाता है कि व्यक्ति बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने, सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त करने, नागरिक सेवाओं तक पहुँच बनाने तथा सामाजिक एवं सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए साक्षरता कौशलों का किस प्रकार उपयोग करता है। प्रभावी सामाजिक सहभागिता व्यक्ति की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक समावेशन को प्रोत्साहित करती है।

उदाहरण के लिए यदि किसी श्रवण बाधित युवा को बैंक खाता खोलने का आवेदन प्रपत्र दिया जाए, तो मूल्यांकनकर्ता यह अवलोकन कर सकता है कि वह लिखित निर्देशों को समझने, आवश्यक व्यक्तिगत जानकारी भरने तथा पहचान-

पत्र एवं अन्य आवश्यक दस्तावेजों से संबंधित निर्देशों का पालन करने में कितना सक्षम है। यदि वह इन कार्यों को स्वतंत्र रूप से पूरा कर लेता है, तो इसे उसकी कार्यात्मक साक्षरता का महत्वपूर्ण संकेत माना जा सकता है। यूनेस्को (2020) के अनुसार कार्यात्मक साक्षरता व्यक्तियों को सामाजिक, आर्थिक तथा नागरिक जीवन में सक्रिय, स्वतंत्र और उत्तरदायी भागीदारी के लिए सक्षम बनाती है।

इस प्रकार विभिन्न आयु-समूहों में साक्षरता आकलन के उद्देश्य और प्राथमिकताएँ भिन्न होती हैं। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में मूल्यांकन का केंद्र प्रारम्भिक साक्षरता एवं भाषा विकास कौशल होते हैं, विद्यालयी आयु में शैक्षणिक साक्षरता एवं विषयगत अधिगम पर बल दिया जाता है, जबकि वयस्क अवस्था में कार्यात्मक, व्यावसायिक तथा जीवनोपयोगी साक्षरता का आकलन अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए प्रत्येक आयु-स्तर पर भाषा-संवेदनशील, सुलभ तथा व्यक्ति-केंद्रित आकलन प्रक्रियाओं का उपयोग आवश्यक है, ताकि उनकी वास्तविक क्षमताओं का सही आकलन किया जा सके तथा उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप शैक्षिक, व्यावसायिक एवं पुनर्वास संबंधी सेवाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

5. प्रारम्भिक बाल्यावस्था में साक्षरता विकास की आधारशिला.....मानी जाती है।

6. विद्यालयी आयु में साक्षरता विकास का एक महत्वपूर्ण घटक.....है, जिसमें पढ़ने की गति, शुद्धता और सहजता का आकलन किया जाता है।

7. वयस्क अवस्था में साक्षरता का स्वरूप अधिक.....तथा जीवनोपयोगी हो जाता है।

8. कार्यात्मक साक्षरता व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक तथा नागरिक गतिविधियों में ..... रूप से भाग लेने में सक्षम बनाती है।

9. श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए प्रत्येक आयु-स्तर पर.....आकलन प्रक्रियाओं का उपयोग आवश्यक माना गया है।

11.7 विधा भाषा की प्रकृति पर निर्भर

श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता आकलन में सबसे महत्वपूर्ण और जटिल चुनौतियों में से एक भाषा की विधा-निर्भर प्रकृति है। सामान्यतः भाषा अर्जन श्रवण और वाणी के माध्यम से होता है, जबकि श्रवण बाधित व्यक्तियों में भाषा अर्जन के लिए विभिन्न संप्रेषण माध्यमों का उपयोग किया जाता है। इसलिए यह मान लेना कि सभी श्रवण बाधित शिक्षार्थी एक ही प्रकार की भाषा का उपयोग करते हैं, उचित नहीं है। ''विधा'' से आशय उस माध्यम से है जिसके द्वारा भाषा ग्रहण और अभिव्यक्त की जाती है। सामान्य श्रवण वाले व्यक्ति मुख्यतः श्रव्य-वाचिक माध्यम का उपयोग करते हैं, जबकि श्रवण बाधित व्यक्ति दृश्य-हस्तचालित अथवा मिश्रित माध्यमों का उपयोग कर सकते हैं। परिणामस्वरूप साक्षरता आकलन के दौरान भाषा की विधा का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। पॉल (2021) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों की भाषा एवं साक्षरता उपलब्धि का सही आकलन तभी संभव है जब मूल्यांकन उनकी प्राथमिक भाषा और संप्रेषण विधि के अनुरूप किया जाए। श्रवण बाधित व्यक्तियों में सामान्यतः निम्नलिखित भाषा विधाएँ पाई जाती हैं:

1. मौखिक भाषा

कुछ श्रवण बाधित विद्यार्थी श्रवण यंत्र, कोक्लियर इम्प्लांट, स्पीच थेरेपी तथा श्रवण प्रशिक्षण की सहायता से मौखिक भाषा का उपयोग करते हैं। ऐसे विद्यार्थी बोलकर संप्रेषण करते हैं तथा दूसरों की वाणी को श्रवण या होंठ पढ़ने के माध्यम से समझते हैं। इन विद्यार्थियों का भाषा अनुभव सामान्य विद्यार्थियों से कुछ हद तक मिलता-जुलता हो सकता है। इसलिए इनके साक्षरता आकलन में मौखिक भाषा आधारित परीक्षण अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त हो सकते हैं। उदाहरण-यदि कोई विद्यार्थी हिंदी बोल और समझ सकता है तथा कक्षा में मौखिक निर्देशों का पालन कर सकता है, तो उसके लिए हिंदी भाषा आधारित पठन एवं लेखन परीक्षण प्रभावी हो सकते हैं।

2. सांकेतिक भाषा

कई श्रवण बाधित व्यक्तियों की प्रथम भाषा सांकेतिक भाषा होती है। भारत में इस उद्देश्य के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग किया जाता है। सांकेतिक भाषा एक पूर्ण विकसित प्राकृतिक भाषा है, जिसकी अपनी व्याकरणिक संरचना, शब्दावली तथा भाषा नियम होते हैं। यह केवल हाथों के संकेतों का समूह नहीं है, बल्कि एक स्वतंत्र भाषा प्रणाली है। ऐसे विद्यार्थियों के लिए लिखित हिंदी या अंग्रेजी अक्सर द्वितीय भाषा की तरह होती है। इसलिए यदि मूल्यांकन केवल लिखित अथवा मौखिक भाषा पर आधारित हो, तो उनके वास्तविक ज्ञान और क्षमता का सही आकलन नहीं हो सकता। उदाहरण-एक विद्यार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा में विज्ञान की अवधारणाओं को अच्छी तरह समझ सकता है, लेकिन यदि उसे वही अवधारणाएँ जटिल हिंदी में लिखित रूप में प्रस्तुत की जाएँ, तो वह अपेक्षाकृत कम प्रदर्शन कर सकता है। इसका अर्थ यह

नहीं है कि उसे विषय का ज्ञान नहीं है, बल्कि यह भाषा माध्यम की समस्या को दर्शाता है।

3. द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण

वर्तमान समय में अनेक विशेषज्ञ द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक मॉडल का समर्थन करते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार-

ऽ प्रथम भाषा (स्1) = सांकेतिक भाषा

ऽ द्वितीय भाषा (स्2) = लिखित हिंदी अथवा अंग्रेजी

इस मॉडल में विद्यार्थी पहले सांकेतिक भाषा के माध्यम से अवधारणाओं को सीखता है और बाद में उन्हें लिखित भाषा से जोड़ता है। मेयर और अकामात्सु (2011) के अनुसार मजबूत प्रथम भाषा आधार द्वितीय भाषा साक्षरता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण-यदि विद्यार्थी सांकेतिक भाषा में ''जल चक्र'' की अवधारणा समझता है, तो वह बाद में हिंदी या अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक में उसी अवधारणा को अधिक आसानी से समझ सकता है।

11.7.1 साक्षरता आकलन पर भाषा विधा का प्रभाव

साक्षरता आकलन की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि आकलन प्रक्रिया शिक्षार्थी की भाषा विधा एवं संचार प्रणाली के अनुरूप है या नहीं। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में भाषा की विविध विधाएँ- जैसे मौखिक भाषा, लिखित भाषा, सांकेतिक भाषा तथा द्विभाषी-द्विसांस्कृतिक संचार-साक्षरता आकलन के परिणामों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। यदि आकलन उपकरण शिक्षार्थी की भाषाई पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर निर्मित न

किए जाएँ, तो प्राप्त निष्कर्ष उसकी वास्तविक साक्षरता क्षमता का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाते।

1. परीक्षण की वैधता

भाषा विधा आकलन की वैधता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। जब परीक्षण की भाषा एवं शिक्षार्थी की प्रमुख संचार भाषा में असंगति होती है, तब आकलन वास्तविक ज्ञान एवं कौशलों के बजाय भाषाई बाधाओं को मापने लगता है। उदाहरणार्थ, यदि सांकेतिक भाषा को प्राथमिक भाषा के रूप में उपयोग करने वाले विद्यार्थी का आकलन केवल मौखिक अथवा जटिल लिखित हिंदी में किया जाए, तो प्राप्त परिणाम उसकी विषयगत समझ के बजाय भाषा संबंधी सीमाओं को प्रदर्शित कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में परीक्षण की वैधता प्रभावित होती है।

2. निर्देशों की समझ

साक्षरता आकलन में प्रश्नों एवं निर्देशों की स्पष्ट समझ अत्यंत आवश्यक है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त भाषा यदि उनकी भाषाई क्षमता से अधिक जटिल हो, तो वे कार्य की अपेक्षाओं को सही ढंग से समझ नहीं पाते। परिणामस्वरूप उनका प्रदर्शन वास्तविक क्षमता से कम दिखाई दे सकता है। उदाहरण के लिए, "निम्नलिखित अनुच्छेद का विश्लेषण कीजिए" जैसे निर्देश में प्रयुक्त शैक्षणिक शब्दावली की अपरिचितता उत्तर की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है।

3. पठन उपलब्धि का मूल्यांकन

पठन उपलब्धि का मूल्यांकन केवल शब्द-पहचान क्षमता तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें अर्थ-ग्रहण, भाषाई संरचना की समझ तथा संदर्भगत व्याख्या भी

सम्मिलित होती है। श्रवण बाधित विद्यार्थी अनेक बार शब्दों को पहचान लेने के बावजूद जटिल वाक्य संरचनाओं अथवा व्याकरणिक संबंधों को समझने में कठिनाई अनुभव कर सकते हैं। फलस्वरूप पठन परीक्षणों में प्राप्त अंक उनकी वास्तविक पठन क्षमता का पूर्ण प्रतिबिंब प्रस्तुत नहीं करते।

4. लेखन मूल्यांकन की चुनौतियाँ

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लेखन पर उनकी प्राथमिक भाषा, विशेषकर सांकेतिक भाषा, की संरचना का प्रभाव देखा जा सकता है। कई बार उनके लिखित उत्तरों में मानक भाषा के व्याकरणिक नियमों से भिन्न संरचनाएँ दिखाई देती हैं। उदाहरणतः विद्यार्थी ‘‘मैं कल बाजार जाना‘‘ लिख सकता है, जबकि मानक हिंदी में ‘‘मैं कल बाजार गया था‘‘ अपेक्षित होगा। यदि मूल्यांकनकर्ता केवल व्याकरणिक शुद्धता को आधार बनाकर मूल्यांकन करता है, तो वह विद्यार्थी की विचार अभिव्यक्ति, संप्रेषणीयता तथा अर्थ-निर्माण की क्षमता का समुचित आकलन नहीं कर पाएगा। अतः लेखन मूल्यांकन में भाषाई विविधता एवं संचार के उद्देश्य दोनों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

अतः साक्षरता आकलन में भाषा विधा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रभावी एवं समावेशी आकलन के लिए आवश्यक है कि परीक्षण की भाषा, निर्देशों की प्रस्तुति तथा आकलन मानदंड शिक्षार्थी की भाषाई एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप हों। इससे न केवल आकलन की वैधता एवं विश्वसनीयता में वृद्धि होती है, बल्कि विद्यार्थियों की वास्तविक साक्षरता क्षमताओं का अधिक सटीक एवं न्यायसंगत आकलन भी संभव हो पाता है।

11.7.2 भाषा विधा और आकलन में निष्पक्षता

साक्षरता आकलन का मूल उद्देश्य शिक्षार्थी की वास्तविक ज्ञान, कौशल एवं साक्षरता क्षमताओं का आकलन करना है, न कि उसकी भाषा विधा या संचार प्रणाली के कारण उसकी उपलब्धियों को कम आँकना। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उनकी भाषाई आवश्यकताएँ एवं संचार के माध्यम सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न हो सकते हैं। अतः आकलन प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जो निष्पक्ष, सुलभ तथा भाषा-संवेदनशील हो। इससे प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी वास्तविक क्षमता प्रदर्शित करने का समान अवसर प्राप्त होता है।

1. भाषा-अनुकूल आकलन

निष्पक्ष आकलन का प्रथम सिद्धांत यह है कि परीक्षण शिक्षार्थी की प्राथमिक भाषा एवं संचार विधा के अनुरूप होना चाहिए। यदि विद्यार्थी सांकेतिक भाषा को अपनी प्रमुख भाषा के रूप में उपयोग करता है, तो आकलन सामग्री एवं निर्देशों को उसी के अनुरूप अनुकूलित किया जाना चाहिए। इससे भाषाई बाधाएँ कम होती हैं और विद्यार्थी की वास्तविक साक्षरता एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं का अधिक सटीक आकलन संभव हो पाता है।

2. बहुविध आकलन

साक्षरता आकलन को केवल लिखित परीक्षा तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। श्रवण बाधित विद्यार्थियों की विविध क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए बहुविध मूल्यांकन पद्धतियों का उपयोग आवश्यक है। इसके अंतर्गत लिखित परीक्षण, सांकेतिक भाषा आधारित प्रस्तुति, दृश्य सामग्री पर आधारित गतिविधियाँ तथा प्रदर्शन-आधारित कार्य सम्मिलित किए जा सकते हैं। बहुविध आकलन विद्यार्थियों को अपनी समझ एवं कौशलों को विभिन्न माध्यमों से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

3. दुभाषिया सहायता

जहाँ आवश्यक हो, वहाँ प्रशिक्षित भारतीय सांकेतिक भाषा दुभाषिए की सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए। दुभाषिया आकलन के निर्देशों, प्रश्नों तथा आवश्यक संवाद को विद्यार्थी तक स्पष्ट रूप से पहुँचाने में सहायता करता है। इससे भाषा संबंधी अवरोध कम होते हैं और मूल्यांकन प्रक्रिया अधिक न्यायसंगत एवं विश्वसनीय बनती है।

4. दृश्य समर्थन

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए दृश्य माध्यम सीखने एवं समझने का प्रमुख स्रोत होते हैं। इसलिए आकलन में चित्रों, आरेखों, ग्राफिक्स, वीडियो सामग्री तथा सांकेतिक भाषा आधारित वीडियो का उपयोग किया जाना चाहिए। दृश्य समर्थन न केवल निर्देशों को स्पष्ट बनाते हैं, बल्कि विद्यार्थियों की समझ, सहभागिता एवं प्रदर्शन को भी बेहतर बनाते हैं। इससे मूल्यांकन अधिक सुगम और समावेशी बनता है।

इस प्रकार, भाषा विधा और आकलन में निष्पक्षता एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। भाषा-अनुकूल परीक्षण, बहुविध मूल्यांकन पद्धतियाँ, दुभाषिया सहायता तथा दृश्य समर्थन जैसे उपाय यह सुनिश्चित करते हैं कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों का आकलन उनकी वास्तविक साक्षरता एवं अधिगम उपलब्धियों के आधार पर हो। परिणामस्वरूप आकलन अधिक समावेशी, वैध, विश्वसनीय एवं न्यायपूर्ण बनता है।

11.7.3 भाषा अभाव बनाम भाषा भिन्नता

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के साक्षरता एवं भाषा आकलन में भाषा अभाव और भाषा भिन्नता (के मध्य अंतर को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनेक बार

विद्यार्थियों के कमजोर शैक्षणिक प्रदर्शन को भाषा अभाव समझ लिया जाता है, जबकि वास्तविकता में वह केवल भाषा भिन्नता का परिणाम हो सकता है। इस अंतर की सही पहचान निष्पक्ष एवं वैध आकलन के लिए आवश्यक है।

ऽ भाषा अभावः भाषा अभाव उस स्थिति को संदर्भित करता है जब किसी बच्चे को जीवन के प्रारम्भिक एवं संवेदनशील वर्षों में किसी भी पूर्ण एवं सुलभ भाषा तक पर्याप्त पहुँच नहीं मिलती। परिणामस्वरूप उसके भाषा विकास, संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, सामाजिक अंतःक्रियाओं तथा शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। भाषा अभाव केवल श्रवण बाधिता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उपयुक्त भाषायी अवसरों की अनुपलब्धता का परिणाम होता है।

ऽ भाषा भिन्नताः भाषा भिन्नता उस स्थिति को दर्शाती है जिसमें शिक्षार्थी मुख्यधारा की भाषा के स्थान पर किसी अन्य भाषा अथवा भाषा विधा का उपयोग करता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी भाषायी रूप से सक्षम हो सकता है, किंतु उसकी दक्षता आकलन की भाषा में अपेक्षाकृत कम हो सकती है। यह किसी कमी का संकेत नहीं है, बल्कि भाषायी विविधता का एक स्वाभाविक रूप है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई श्रवण बाधित विद्यार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा में दक्ष है, किंतु हिंदी में उसकी दक्षता सीमित है, तो यह भाषा अभाव नहीं बल्कि भाषा भिन्नता का उदाहरण माना जाएगा। ऐसे विद्यार्थी के संज्ञानात्मक एवं भाषायी कौशल विकसित हो सकते हैं, किंतु वे एक भिन्न भाषायी माध्यम में व्यक्त होते हैं। हम्फ्रीज और अन्य (2012) के अनुसार, श्रवण बाधित बच्चों को प्रारम्भिक अवस्था से ही किसी पूर्ण एवं सुलभ भाषा तक पहुँच प्रदान करना उनके संज्ञानात्मक, भाषायी तथा साक्षरता विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शोधकर्ताओं ने यह स्पष्ट किया है कि प्रारम्भिक भाषायी अनुभवों की कमी बच्चों के दीर्घकालिक शैक्षणिक विकास को प्रभावित कर सकती है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

10. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए यदि सांकेतिक भाषा उनकी प्रथम भाषा है, तो लिखित हिंदी या अंग्रेजी प्रायः उनकी.....भाषा होती है।

11. निष्पक्ष साक्षरता आकलन के लिए परीक्षण को शिक्षार्थी की प्राथमिक भाषा एवं.....के अनुरूप होना चाहिए।

12. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में भारतीय सांकेतिक भाषा में दक्ष होना भाषा.....का नहीं, बल्कि भाषा.....का उदाहरण है।

11.8 मानकीकृत एवं शिक्षक-निर्मित उपकरण

श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता विकास के आकलन में उपयुक्त आकलन उपकरणों का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। किसी भी आकलन की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रयुक्त उपकरण शिक्षार्थी की वास्तविक क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा उपलब्धियों को कितनी सटीकता से मापता है। साक्षरता आकलन के क्षेत्र में सामान्यतः दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है- मानकीकृत उपकरण तथा शिक्षक-निर्मित उपकरण। दोनों प्रकार के उपकरणों की अपनी-अपनी उपयोगिता, सीमाएँ तथा विशेषताएँ हैं। श्रवण बाधित विद्यार्थियों

के आकलन में अक्सर इन दोनों का समन्वित उपयोग अधिक प्रभावी माना जाता है।

11.8.1 मानकीकृत उपकरण

मानकीकृत उपकरण वे आकलन साधन हैं जिनका विकास वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। इनके निर्माण में व्यापक शोध, पायलट परीक्षण, सांख्यिकीय विश्लेषण तथा विविध जनसमूहों पर परीक्षण सम्मिलित होता है। इन उपकरणों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी विद्यार्थियों का आकलन समान परिस्थितियों में किया जाए, जिससे प्राप्त परिणामों की तुलना निष्पक्ष एवं विश्वसनीय रूप से की जा सके। अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च एसोसिएशन के अनुसार, मानकीकृत परीक्षणों का प्रमुख उद्देश्य किसी व्यक्ति के प्रदर्शन की तुलना एक पूर्वनिर्धारित मानक समूह से करना होता है, जिससे उसकी उपलब्धियों का वस्तुनिष्ठ आकलन संभव हो सके। मानकीकृत उपकरणों की प्रमुख विशेषताएँ-

1. विश्वसनीयता

विश्वसनीयता से तात्पर्य परीक्षण परिणामों की स्थिरता एवं निरंतरता से है। एक विश्वसनीय परीक्षण समान परिस्थितियों में बार-बार प्रशासन किए जाने पर लगभग समान परिणाम प्रदान करता है। यह सुनिश्चित करता है कि प्राप्त अंक आकस्मिक कारकों के बजाय शिक्षार्थी की वास्तविक क्षमता को प्रतिबिंबित करें। उदाहरणार्थ, यदि कोई विद्यार्थी किसी पठन परीक्षण में आज 80 अंक प्राप्त करता है तथा समान परिस्थितियों में पुनः परीक्षण किए जाने पर 79 या 81

अंक प्राप्त करता है, तो यह परीक्षण उच्च विश्वसनीयता वाला माना जाएगा। इस प्रकार विश्वसनीयता परीक्षण की स्थिरता एवं भरोसेमंदता का संकेतक है।

2. वैधता

वैधता किसी परीक्षण की उस क्षमता को दर्शाती है जिसके माध्यम से वह वास्तव में उसी गुण, कौशल अथवा क्षमता का मापन करता है जिसके लिए उसे विकसित किया गया है। किसी भी आकलन उपकरण की उपयोगिता उसके वैध होने पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी परीक्षण का उद्देश्य पठन-बोध का आकलन करना है, तो प्रश्न इस प्रकार होने चाहिए कि वे शिक्षार्थी की अर्थ-ग्रहण क्षमता का आकलन करें। यदि परीक्षण में अत्यधिक जटिल भाषा अथवा कठिन शब्दावली का प्रयोग किया गया हो, तो वह पठन-बोध के बजाय भाषा दक्षता को मापने लगेगा, जिससे परीक्षण की वैधता प्रभावित होगी।

3. मानकीकरण

मानकीकरण से आशय परीक्षण के प्रशासन, स्कोरिंग तथा परिणामों की व्याख्या की प्रक्रियाओं में एकरूपता बनाए रखने से है। मानकीकृत परीक्षणों में सभी विद्यार्थियों को समान निर्देश, समान समय, समान परीक्षण परिस्थितियाँ तथा समान मूल्यांकन मानदण्ड प्रदान किए जाते हैं। यह एकरूपता सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थियों के प्रदर्शन में दिखाई देने वाला अंतर उनकी वास्तविक क्षमताओं का परिणाम हो, न कि परीक्षण प्रशासन में हुई भिन्नताओं का। इस प्रकार मानकीकरण परीक्षण की निष्पक्षता एवं तुलनात्मकता को सुदृढ़ बनाता है।

4. वस्तुनिष्ठता

वस्तुनिष्ठता का अर्थ है कि परीक्षण के परिणाम आकलनकर्ता की व्यक्तिगत धारणाओं, पूर्वाग्रहों अथवा पक्षपात से प्रभावित न हों। मानकीकृत उपकरणों में

स्कोरिंग के स्पष्ट एवं पूर्वनिर्धारित नियम होते हैं, जिसके कारण विभिन्न आकलनकर्ताओं द्वारा दिए गए अंक प्रायः समान होते हैं। उदाहरण के लिए, बहुविकल्पीय प्रश्नों वाले परीक्षणों में सही एवं गलत उत्तरों के स्पष्ट मानदण्ड होते हैं, जिससे व्यक्तिगत व्याख्या की संभावना न्यूनतम हो जाती है। परिणामस्वरूप आकलन अधिक निष्पक्ष एवं विश्वसनीय बनता है।

मानकीकृत उपकरण शैक्षिक आकलन की वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया का आधार हैं। उनकी विश्वसनीयता, वैधता, मानकीकरण तथा वस्तुनिष्ठता जैसी विशेषताएँ उन्हें विद्यार्थियों की क्षमताओं एवं उपलब्धियों के निष्पक्ष आकलन के लिए उपयोगी बनाती हैं। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में इन उपकरणों का उपयोग करते समय यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वे विविध शिक्षार्थियों, विशेषकर श्रवण बाधित विद्यार्थियों, की भाषायी एवं संचार संबंधी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हों, ताकि आकलन वास्तव में उनकी वास्तविक क्षमताओं को प्रतिबिंबित कर सके।

11.8.2 शिक्षक-निर्मित उपकरण

शिक्षक-निर्मित उपकरण वे आकलन साधन हैं जिनका निर्माण शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकताओं, अधिगम उद्देश्यों, कक्षा की परिस्थितियों तथा स्थानीय संदर्भों को ध्यान में रखकर किया जाता है। ये उपकरण औपचारिक मानकीकृत परीक्षणों की तुलना में अधिक लचीले होते हैं तथा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत प्रगति, अधिगम शैली एवं शैक्षिक आवश्यकताओं का गहन आकलन करने में सहायक होते हैं। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में इनका महत्व विशेष रूप से अधिक है, क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमताएँ, चुनौतियाँ तथा अधिगम की गति भिन्न होती है। शिक्षक-निर्मित उपकरण सतत एवं व्यापक आकलन को प्रोत्साहित करते हैं तथा शिक्षण एवं आकलन के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित करते हैं।

शिक्षक-निर्मित उपकरणों निम्न प्रकार के उपकरणों का उपयोग किया जाता है जो निम्न प्रकार से हैं -

1. चेकलिस्ट

चेकलिस्ट एक व्यवस्थित आकलन उपकरण है जिसका उपयोग किसी विशिष्ट कौशल, व्यवहार अथवा अधिगम परिणाम की उपलब्धि को दर्ज करने के लिए किया जाता है। इसमें पूर्वनिर्धारित संकेतकों की सूची होती है, जिनके आधार पर शिक्षक यह निर्धारित करता है कि विद्यार्थी ने संबंधित कौशल अर्जित किया है या नहीं। उदाहरण के लिए, पठन कौशल के आकलन हेतु शिक्षक यह दर्ज कर सकता है कि विद्यार्थी 20 शब्दों की पहचान कर सकता है या नहीं तथा सरल वाक्यों को पढ़ सकता है या नहीं। चेकलिस्ट विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी करने तथा अधिगम में मौजूद कमियों की पहचान करने में उपयोगी होती है।

2. पोर्टफोलियो

पोर्टफोलियो विद्यार्थी के कार्यों, उपलब्धियों एवं प्रगति का व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण संग्रह होता है। यह केवल अंतिम उपलब्धि पर नहीं, बल्कि अधिगम की पूरी प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करता है। पोर्टफोलियो में लेखन नमूने, चित्र, परियोजनाएँ, कार्यपत्रक, आकलन गतिविधियाँ तथा अन्य शैक्षिक कार्य सम्मिलित किए जा सकते हैं। पोर्टफोलियो का प्रमुख लाभ यह है कि यह विद्यार्थी के विकास का दीर्घकालिक एवं समग्र चित्र प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से शिक्षक, अभिभावक तथा स्वयं विद्यार्थी समय के साथ होने वाली प्रगति का अवलोकन कर सकते हैं।

3. परियोजना कार्य

परियोजना कार्य एक प्रदर्शन-आधारित आकलन विधि है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की साक्षरता एवं अन्य शैक्षणिक कौशलों का आकलन वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में किया जाता है। यह विद्यार्थियों को जानकारी एकत्र करने, उसे व्यवस्थित करने, विश्लेषण करने तथा प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, "मेरा गाँव" विषय पर चित्रों एवं विवरण सहित परियोजना तैयार करने के माध्यम से विद्यार्थी के पठन, लेखन, संगठनात्मक कौशल तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति का आकलन किया जा सकता है। परियोजना कार्य अधिगम को अर्थपूर्ण एवं अनुभवात्मक बनाता है।

4. कक्षा परीक्षण

कक्षा परीक्षण वे आकलन साधन हैं जिन्हें शिक्षक विशिष्ट अधिगम उद्देश्यों एवं पाठ्यवस्तु के आधार पर तैयार करता है। इन परीक्षणों का उद्देश्य यह जानना होता है कि विद्यार्थियों ने पढ़ाए गए विषयों को किस सीमा तक समझा एवं आत्मसात किया है। कक्षा परीक्षणों के माध्यम से शिक्षक तत्काल प्रतिपुष्टि प्राप्त कर सकता है तथा आवश्यकता अनुसार अपनी शिक्षण रणनीतियों में संशोधन कर सकता है। ये परीक्षण रचनात्मक तथा योगात्मक दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

5. अवलोकन

अवलोकन एक महत्वपूर्ण गुणात्मक आकलन तकनीक है, जिसमें शिक्षक कक्षा गतिविधियों, समूह कार्यों तथा दैनिक शैक्षिक परिस्थितियों के दौरान विद्यार्थी के व्यवहार, सहभागिता, संचार कौशल एवं अधिगम प्रक्रियाओं का व्यवस्थित निरीक्षण करता है। विशेष शिक्षा में अवलोकन का विशेष महत्व है, क्योंकि कई बार विद्यार्थियों की क्षमताएँ औपचारिक परीक्षणों में पूर्णतः व्यक्त नहीं हो पातीं। अवलोकन के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थी की वास्तविक कार्यात्मक क्षमताओं,

सामाजिक अंत:क्रियाओं तथा अधिगम व्यवहार का अधिक प्रामाणिक आकलन कर सकता है।

शिक्षक-निर्मित उपकरण विशेष रूप से समावेशी एवं विशेष शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत उपयोगी आकलन साधन हैं। चेकलिस्ट, पोर्टफोलियो, परियोजना कार्य, कक्षा परीक्षण तथा अवलोकन जैसी तकनीकें विद्यार्थियों की उपलब्धियों, प्रगति एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं की गहन समझ प्रदान करती हैं। ये उपकरण न केवल अधिगम परिणामों का मूल्यांकन करते हैं, बल्कि शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, विद्यार्थी-केंद्रित तथा आवश्यकता-आधारित बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

13. मानकीकृत उपकरणों की एक प्रमुख विशेषता.....है, जो परीक्षण परिणामों की स्थिरता एवं निरंतरता को दर्शाती है।

14. .....विद्यार्थी के कार्यों, उपलब्धियों तथा प्रगति का व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण संग्रह होता है।

15. शिक्षक-निर्मित आकलन उपकरणों .....एक ऐसी तकनीक है, जिसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों के व्यवहार, सहभागिता एवं अधिगम प्रक्रियाओं का व्यवस्थित निरीक्षण करता है।

11.9 मानकों के निर्धारण की समस्या

आकलन विज्ञान में मानक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि किसी परीक्षण में प्राप्त अंक तब तक पूर्ण अर्थ नहीं रखते जब तक उनकी तुलना किसी उपयुक्त संदर्भ समूह से न की जाए। मानक ऐसे तुलनात्मक आधार प्रदान करते हैं जिनकी सहायता से यह निर्धारित किया जाता है कि किसी व्यक्ति का प्रदर्शन अपने समवयस्कों अथवा समान विशेषताओं वाले समूह की तुलना में किस स्तर का है। उदाहरणार्थ, यदि कोई विद्यार्थी पठन परीक्षण में 70 अंक प्राप्त करता है, तो केवल अंक जानना पर्याप्त नहीं होताय यह जानना भी आवश्यक है कि समान आयु या समान कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की तुलना में उसका प्रदर्शन कैसा है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मानकों का उपयोग किया जाता है।

मानक सामान्यतः किसी बड़े एवं प्रतिनिधि समूह के औसत प्रदर्शन के आधार पर विकसित किए जाते हैं। इनके माध्यम से यह निर्धारित किया जाता है कि कोई शिक्षार्थी औसत, औसत से ऊपर अथवा औसत से नीचे प्रदर्शन कर रहा है। उदाहरण के लिए, यदि 10 वर्ष आयु के बच्चों का औसत पठन स्कोर 75 है, तो उसी आधार पर अन्य बच्चों के परिणामों की व्याख्या की जा सकती है। तथापि, श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता आकलन में मानकों का निर्धारण अत्यंत जटिल एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि यह समूह भाषा, संप्रेषण, श्रवण स्तर तथा शैक्षिक अनुभवों की दृष्टि से अत्यधिक विविध होता है।

मानक निर्धारण की पहली चुनौती श्रवण क्षति के स्तर में विविधता है। श्रवण बाधिता हल्की, मध्यम, गंभीर अथवा गहन हो सकती है और प्रत्येक स्तर का भाषा एवं साक्षरता विकास पर भिन्न प्रभाव पड़ता है। उदाहरणतः हल्की श्रवण बाधिता वाला विद्यार्थी अपेक्षाकृत सामान्य भाषायी अनुभव प्राप्त कर सकता है, जबकि गहन श्रवण बाधिता वाले विद्यार्थी को भाषा अर्जन के लिए अधिक

संरचित सहायता एवं हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है। ऐसी स्थिति में एक ही मानक समूह सभी विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं माना जा सकता।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती श्रवण बाधिता की आयु से संबंधित है। कुछ बच्चों में श्रवण हानि जन्मजात होती है, जबकि कुछ में यह जीवन के बाद के चरणों में उत्पन्न होती है। जन्मजात श्रवण बाधिता वाले बच्चे प्रारम्भिक भाषा अनुभवों से वंचित रह सकते हैं, जबकि बाद में श्रवण बाधिता प्राप्त करने वाले बच्चों ने पहले ही भाषा एवं संचार कौशल विकसित कर लिए होते हैं। इसलिए समान आयु के दो विद्यार्थियों की भाषायी एवं साक्षरता क्षमताओं में पर्याप्त अंतर हो सकता है।

तीसरी चुनौती संप्रेषण विधियों की विविधता है। श्रवण बाधित विद्यार्थी मौखिक भाषा, भारतीय सांकेतिक भाषा, टोटल कम्युनिकेशन अथवा द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण जैसी विभिन्न संचार प्रणालियों का उपयोग करते हैं। इन विविध संचार माध्यमों के कारण उनके भाषायी अनुभव एवं साक्षरता विकास की प्रकृति भी भिन्न होती है, जिससे एक समान मानकों का विकास कठिन हो जाता है।

चैथी चुनौती सहायक तकनीकों के उपयोग में अंतर है। वर्तमान समय में अनेक विद्यार्थी श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट तथा एफ.एम. प्रणाली जैसी तकनीकों का उपयोग करते हैं। इन तकनीकों की उपलब्धता, उपयोग की अवधि तथा प्रभावशीलता भाषा विकास एवं साक्षरता उपलब्धियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। परिणामस्वरूप समान श्रवण स्तर वाले विद्यार्थियों के प्रदर्शन में भी पर्याप्त भिन्नता देखी जा सकती है।

पाँचवीं चुनौती सामाजिक एवं भाषायी पृष्ठभूमि से जुड़ी हुई है। परिवार की शैक्षिक स्थिति, आर्थिक संसाधन, घर का भाषा वातावरण तथा शैक्षणिक अवसरों की उपलब्धता साक्षरता विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

समृद्ध भाषायी वातावरण वाले विद्यार्थी सामान्यतः बेहतर साक्षरता उपलब्धियाँ प्रदर्शित करते हैं, जबकि संसाधनों की कमी विकास की गति को प्रभावित कर सकती है।

छठी चुनौती प्रारम्भिक हस्तक्षेप में पाए जाने वाले अंतर से संबंधित है। कुछ बच्चों को जन्म के तुरंत बाद पहचान एवं हस्तक्षेप सेवाएँ प्राप्त हो जाती हैं, जबकि अन्य बच्चों को कई वर्षों बाद सहायता उपलब्ध होती है। प्रारम्भिक हस्तक्षेप की उपलब्धता भाषा, संज्ञानात्मक विकास तथा साक्षरता उपलब्धियों पर दीर्घकालिक प्रभाव डालती है।

इन चुनौतियों को समझने के लिए समान आयु वाले दो बच्चों का उदाहरण लिया जा सकता है। यदि एक बालक जन्म से गहन श्रवण बाधिता से ग्रस्त हो तथा उसकी पहचान पाँच वर्ष की आयु में हुई हो, जबकि दूसरे बालक को सात वर्ष की आयु के बाद श्रवण बाधिता हुई हो और उसके भाषा कौशल पहले से विकसित हों, तो दोनों की कालानुक्रमिक आयु समान होने के बावजूद उनकी भाषायी आयु, शैक्षणिक अनुभव तथा साक्षरता स्तर में महत्वपूर्ण अंतर होगा। अतः दोनों की तुलना एक ही मानक समूह से करना न्यायसंगत नहीं माना जा सकता।

इन्हीं कारणों से विशेष शिक्षा में पारंपरिक मानक-आधारित मूल्यांकन के साथ-साथ कुछ वैकल्पिक दृष्टिकोणों को भी महत्व दिया जाता है। मानदण्ड-संदर्भित आकलन में विद्यार्थी की तुलना अन्य विद्यार्थियों से न करके पूर्वनिर्धारित अधिगम उद्देश्यों से की जाती है। प्रगति-आधारित आकलन में वर्तमान उपलब्धि की तुलना विद्यार्थी के पूर्व प्रदर्शन से की जाती है, जिससे उसकी व्यक्तिगत प्रगति का आकलन संभव होता है। इसी प्रकार गतिशील आकलन में सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के पश्चात विद्यार्थी की सीखने की क्षमता तथा प्रतिक्रिया का मूल्यांकन किया जाता है।

अतः श्रवण बाधित व्यक्तियों में मानकों का निर्धारण एक जटिल एवं बहुआयामी प्रक्रिया है। भाषा, संप्रेषण प्रणाली, श्रवण स्तर, तकनीकी सहायता, प्रारम्भिक हस्तक्षेप तथा सामाजिक पृष्ठभूमि जैसे कारकों की विविधता के कारण केवल पारंपरिक मानकीकृत मानकों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। साक्षरता आकलन की निष्पक्षता, वैधता एवं उपयोगिता सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत प्रगति, कार्यात्मक उपलब्धियों तथा भाषा-अनुकूल मानदण्डों को समान महत्व दिया जाना आवश्यक है। इससे शिक्षार्थियों की वास्तविक क्षमताओं एवं शैक्षिक आवश्यकताओं का अधिक सटीक और न्यायसंगत आकलन संभव हो पाता है।

11.10 पठन का मापन

पठन साक्षरता का एक मूलभूत एवं जटिल घटक है, जिसके माध्यम से व्यक्ति लिखित प्रतीकों को पहचानता है, उनका अर्थ ग्रहण करता है तथा उन्हें अपने पूर्वज्ञान एवं अनुभवों से जोड़कर ज्ञान का निर्माण करता है। समकालीन साक्षरता सिद्धांतों के अनुसार पठन केवल शब्दों के उच्चारण अथवा पहचान की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह अर्थ-निर्माण, संज्ञानात्मक प्रसंस्करण तथा भाषायी व्याख्या की बहुआयामी प्रक्रिया है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में पठन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि उनके लिए लिखित भाषा अक्सर सूचना प्राप्ति, शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक सहभागिता का प्रमुख माध्यम बन जाती है। इसलिए साक्षरता आकलन में पठन का मापन केंद्रीय स्थान रखता है।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के पठन मूल्यांकन का उद्देश्य केवल यह निर्धारित करना नहीं है कि विद्यार्थी कितनी दक्षता से शब्दों को पढ़ सकता है, बल्कि यह भी समझना है कि वह लिखित सामग्री से कितना अर्थ ग्रहण कर सकता है तथा उस जानकारी का उपयोग नए संदर्भों में किस प्रकार कर सकता है। पॉल (2021)

के अनुसार पठन मूल्यांकन का वास्तविक उद्देश्य विद्यार्थी की अर्थ-निर्माण क्षमता, भाषायी दक्षता तथा पाठ की व्याख्या करने की योग्यता का आकलन करना है। इस दृष्टिकोण से पठन मापन को बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जिसमें शब्द पहचान, पठन प्रवाह, शब्दावली ज्ञान, पठन-बोध तथा पठन रणनीतियों का समावेश होता है।

11.10.1 पठन मापन के प्रमुख घटक

पठन आकलन सामान्यतः निम्नलिखित प्रमुख घटकों पर आधारित होता है-

1. शब्द पहचान
2. पठन प्रवाह
3. पठन-बोध
4. शब्दावली ज्ञान
5. पठन रणनीतियाँ

1. शब्द पहचान

पठन का प्रथम एवं आधारभूत घटक शब्द पहचान है। शब्द पहचान से आशय लिखित शब्दों को देखकर उन्हें सटीक रूप से पहचानने तथा उनके अर्थ से संबंध स्थापित करने की क्षमता से है। यह पठन विकास की आधारशिला मानी जाती है, क्योंकि जब तक शिक्षार्थी शब्दों को पहचानने में दक्ष नहीं होगा, तब तक वह पाठ का अर्थ प्रभावी रूप से ग्रहण नहीं कर सकेगा। श्रवण बाधित विद्यार्थियों में शब्द पहचान का विकास दृश्य शब्द पहचान, चित्र-शब्द संबंध, सांकेतिक भाषा

और लिखित भाषा के बीच संबंध स्थापित करने तथा संदर्भगत संकेतों के उपयोग के माध्यम से विकसित हो सकता है। शब्द पहचान का आकलन सामान्यतः शब्द सूची परीक्षण, चित्र-शब्द मिलान, फ्लैश कार्ड तथा दृश्य शब्दावली परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है। इस प्रकार के मूल्यांकन से यह ज्ञात किया जाता है कि विद्यार्थी परिचित एवं अपरिचित शब्दों को किस सीमा तक पहचान सकता है तथा उसकी पहचान की शुद्धता कितनी है।

2. पठन प्रवाह

पठन का दूसरा महत्वपूर्ण घटक पठन प्रवाह है। पठन प्रवाह से अभिप्राय उचित गति, शुद्धता तथा सहजता के साथ पाठ पढ़ने की क्षमता से है। प्रवाहपूर्ण पाठक शब्दों की पहचान में कम मानसिक ऊर्जा व्यय करते हैं और अपना ध्यान पाठ के अर्थ पर केंद्रित कर पाते हैं। पठन प्रवाह में सामान्यतः तीन आयाम सम्मिलित माने जाते हैं-गति, शुद्धता तथा स्वचालितता। उदाहरण के लिए यदि किसी विद्यार्थी को 100 शब्दों का अनुच्छेद पढ़ने के लिए दिया जाए और वह एक निश्चित समय में 92 शब्दों को सही ढंग से पढ़ ले, तो उसकी शुद्धता 92 प्रतिशत मानी जाएगी। तथापि श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में पठन प्रवाह का आकलन करते समय विशेष सावधानी अपेक्षित होती है। अनेक विद्यार्थी शब्दों की पहचान करने में सक्षम होते हैं, परंतु भाषा संरचना एवं अर्थ संबंधी कठिनाइयों के कारण उनकी पठन गति अपेक्षाकृत धीमी हो सकती है। इसके अतिरिक्त, सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं के लिए पारंपरिक मौखिक पठन परीक्षण उनकी वास्तविक क्षमता को पूर्णतः प्रतिबिंबित नहीं करते। इसी कारण ईस्टरब्रूक्स और बील-अल्वारेज (2013) ने मौखिक पठन के साथ-साथ मौन पठन तथा समझ- आधारित मूल्यांकन को भी महत्वपूर्ण माना है।

3. पठन-बोध

पठन प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण घटक पठन-बोध है। पठन-बोध का अर्थ केवल पाठ में निहित सूचनाओं को समझना नहीं है, बल्कि उनके विश्लेषण, व्याख्या, मूल्यांकन तथा नए संदर्भों में उपयोग की क्षमता से भी है। एक विद्यार्थी शब्दों को सही ढंग से पढ़ सकता है, परंतु यदि वह उनका अर्थ नहीं समझ पाता, तो उसे प्रभावी पाठक नहीं माना जा सकता। पठन-बोध को सामान्यतः चार स्तरों पर समझा जाता है-शाब्दिक बोध, व्याख्यात्मक बोध, आलोचनात्मक बोध तथा सृजनात्मक बोध। शाब्दिक स्तर पर विद्यार्थी पाठ में दी गई प्रत्यक्ष जानकारी को समझता है, जबकि व्याख्यात्मक स्तर पर वह अप्रत्यक्ष अर्थों एवं निष्कर्षों को ग्रहण करता है। आलोचनात्मक स्तर पर वह तथ्यों एवं तर्कों का आकलन करता है और सृजनात्मक स्तर पर पाठ से नए विचारों एवं संभावनाओं का निर्माण करता है। अतः पठन-बोध उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का द्योतक माना जाता है।

पठन-बोध कई परस्पर संबंधित कारकों से प्रभावित होता है। इनमें शब्दावली ज्ञान एक प्रमुख कारक है। जिस विद्यार्थी की शब्दावली समृद्ध होगी, वह पाठ के अर्थ को अधिक प्रभावी ढंग से समझ सकेगा। इसी प्रकार पूर्वज्ञान (भी पठन-बोध को प्रभावित करता है। जब विद्यार्थी पाठ के विषय से पूर्व परिचित होता है, तो वह नई जानकारी को अपने पूर्व अनुभवों से जोड़कर अधिक अर्थपूर्ण ढंग से समझ पाता है। व्याकरणिक ज्ञान भी पठन-बोध के लिए आवश्यक है, क्योंकि जटिल वाक्य संरचनाओं एवं विचारों को समझने के लिए भाषा की संरचना का ज्ञान अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त भाषा दक्षता और पठन-बोध के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया गया है। पॉल और ली (2024) के अनुसार भाषा विकास का स्तर पठन-बोध उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक है, विशेषकर श्रवण बाधित विद्यार्थियों में।

11.10.2 पठन मापन की विधियाँ

पठन मापन के लिए विभिन्न प्रकार की आकलन विधियों का उपयोग किया जाता है। इनमें मौखिक पठन परीक्षण, मौन पठन परीक्षण, बहुविकल्पीय प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न, क्लोज परीक्षण तथा पुनर्कथन प्रमुख हैं। मौखिक पठन परीक्षण मुख्यतः प्रवाह एवं शुद्धता का आकलन करते हैं, जबकि मौन पठन एवं समझ-आधारित परीक्षण अर्थ ग्रहण क्षमता का मूल्यांकन करते हैं। पुनर्कथन तकनीक विशेष रूप से उपयोगी मानी जाती है क्योंकि इसमें विद्यार्थी अपने शब्दों में पाठ की पुनर्व्याख्या करता है, जिससे उसकी वास्तविक समझ का आकलन संभव होता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के पठन आकलन में कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। आकलन की भाषा विद्यार्थी की भाषायी क्षमता के अनुरूप होनी चाहिए तथा अनावश्यक रूप से जटिल शब्दावली से बचना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर चित्रों, ग्राफिक्स अथवा अन्य दृश्य साधनों का उपयोग किया जा सकता है। निर्देश स्पष्ट, सुलभ एवं भाषा-अनुकूल होने चाहिए तथा सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं के लिए उपयुक्त अनुकूलन उपलब्ध कराए जाने चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आकलन केवल शब्द पहचान तक सीमित न रहे, बल्कि अर्थ ग्रहण, व्याख्या एवं ज्ञान निर्माण की क्षमता को भी सम्मिलित करे।

अतः पठन का मापन साक्षरता आकलन का एक बहुआयामी एवं अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसमें शब्द पहचान, पठन प्रवाह, शब्दावली ज्ञान, पठन रणनीतियाँ तथा पठन-बोध जैसे परस्पर संबंधित घटकों का समावेश होता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में प्रभावी पठन आकलन तभी संभव है जब वह भाषा-संवेदनशील, सुलभ तथा विद्यार्थी-केंद्रित हो। ऐसा आकलन न केवल शैक्षणिक उपलब्धियों का आकलन करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि विद्यार्थी लिखित भाषा के माध्यम से ज्ञान का निर्माण, व्याख्या एवं उपयोग किस सीमा

तक कर पा रहा है। यही कारण है कि पठन मापन को श्रवण बाधित विद्यार्थियों के साक्षरता आकलन का एक केंद्रीय एवं अपरिहार्य घटक माना जाता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

16़. पठन प्रवाह के तीन प्रमुख आयाम ....., शुद्धता तथा स्वचालितता हैं।

17. पठन-बोध का वह स्तर जिसमें विद्यार्थी तथ्यों एवं तर्कों का आकलन करता है,.....बोध कहलाता है।

11.11 लेखन का मापन

लेखन साक्षरता का एक महत्वपूर्ण उत्पादक कौशल है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, अनुभवों, भावनाओं तथा ज्ञान को लिखित रूप में अभिव्यक्त करता है। समकालीन साक्षरता सिद्धांतों के अनुसार लेखन केवल शब्दों अथवा वाक्यों के निर्माण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भाषायी, संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा संप्रेषणात्मक प्रक्रियाओं का समन्वित परिणाम है। लेखन में विचारों की योजना बनाना, उपयुक्त शब्दों का चयन करना, व्याकरणिक संरचनाओं का प्रयोग करना, सूचनाओं का संगठन करना तथा पाठक के लिए अर्थपूर्ण संदेश तैयार करना शामिल होता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए लेखन का महत्व विशेष रूप से अधिक है, क्योंकि लिखित भाषा उनके लिए संचार, शैक्षणिक उपलब्धि, उच्च शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक सहभागिता का एक प्रमुख माध्यम बन जाती है। इसलिए साक्षरता आकलन में लेखन का मापन

एक केंद्रीय एवं अनिवार्य घटक माना जाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लेखन आकलन में यह समझना आवश्यक है कि लेखन त्रुटियाँ सदैव बौद्धिक कमी अथवा अधिगम अक्षमता का संकेत नहीं होतीं। अनेक बार ये त्रुटियाँ सीमित भाषायी अनुभव, भाषा अर्जन में विलम्ब, सांकेतिक भाषा की संरचना के प्रभाव अथवा लिखित भाषा के अपर्याप्त संपर्क का परिणाम होती हैं। मार्सचर्क और स्पेंसर (2016) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लेखन का आकलन केवल व्याकरणिक शुद्धता के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि विचारों की स्पष्टता, अर्थपूर्ण संप्रेषण, संगठन तथा कार्यात्मक उपयोगिता को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार पॉल (2021) ने यह प्रतिपादित किया है कि लेखन आकलन का उद्देश्य केवल त्रुटियों की पहचान करना नहीं, बल्कि यह समझना है कि विद्यार्थी लिखित भाषा का उपयोग अर्थ निर्माण एवं संचार के लिए किस सीमा तक कर पा रहा है।

लेखन आकलन का प्रमुख उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि विद्यार्थी अपने विचारों को लिखित रूप में कितनी प्रभावशीलता से व्यक्त कर सकता है, भाषा के नियमों का किस सीमा तक उपयोग करता है, विचारों को कितनी तार्किकता एवं सुसंगति के साथ संगठित करता है तथा विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक एवं कार्यात्मक लेखन कार्यों को किस स्तर तक संपन्न कर सकता है।

11.11.1 लेखन मूल्यांकन के प्रमुख घटक

दृष्टि से लेखन का आकलन बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें वर्तनी, व्याकरण, संगठन, अभिव्यक्ति, शब्दावली तथा लेखन की यांत्रिक शुद्धता जैसे विभिन्न घटकों का समावेश होता है।

1. वर्तनी

वर्तनी लेखन आकलन का आधारभूत घटक है। इससे तात्पर्य शब्दों को मानक रूप में लिखने की क्षमता से है। सही वर्तनी न केवल भाषा की शुद्धता को सुनिश्चित करती है, बल्कि अर्थ संप्रेषण को भी स्पष्ट बनाती है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों में वर्तनी संबंधी कठिनाइयाँ अपेक्षाकृत अधिक देखी जा सकती हैं, क्योंकि उन्हें ध्वन्यात्मक संकेत सीमित मात्रा में प्राप्त होते हैं और वे अनेक शब्दों को दृश्य स्मृति के आधार पर सीखते हैं। परिणामस्वरूप जटिल शब्दों तथा संयुक्त अक्षरों वाले शब्दों में त्रुटियाँ दिखाई दे सकती हैं।

2. व्याकरण

लेखन का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम व्याकरण है। व्याकरण भाषा को संरचना एवं संगठन प्रदान करता है तथा विचारों को स्पष्ट एवं अर्थपूर्ण रूप में व्यक्त करने में सहायता करता है। लेखन आकलन में लिंग, वचन, काल, कारक, सर्वनाम तथा वाक्य संरचना जैसे पहलुओं का परीक्षण किया जाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लेखन में कई बार उनकी प्रथम भाषा, विशेषकर भारतीय सांकेतिक भाषा, की संरचना का प्रभाव दिखाई देता है। उदाहरणतः "मैं बाजार कल गया" जैसी संरचनाएँ भाषा त्रुटि की अपेक्षा भाषा भिन्नता का संकेत हो सकती हैं। इसलिए आकलनकर्ता के लिए यह समझना आवश्यक है कि कौन-सी त्रुटि वास्तविक व्याकरणिक कठिनाई का परिणाम है और कौन-सी भाषा पृष्ठभूमि से प्रभावित है।

3. संगठन

संगठन लेखन की गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। इससे आशय विचारों को तार्किक, क्रमबद्ध एवं सुसंगत रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता से है। प्रभावी लेखन में स्पष्ट भूमिका, मुख्य विवरण तथा निष्कर्ष का समुचित समावेश होता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों में कभी-कभी विचारों की असंगति, अनुच्छेदों के

बीच संबंध का अभाव अथवा घटनाओं के क्रम में त्रुटियाँ देखी जा सकती हैं। इसलिए संगठन का आकलन करते समय विचारों की निरंतरता एवं संरचना पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

4. अभिव्यक्ति

अभिव्यक्ति लेखन का वह आयाम है जो यह दर्शाता है कि विद्यार्थी अपने विचारों, भावनाओं एवं अनुभवों को कितनी स्पष्टता और प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत कर सकता है। अभिव्यक्ति का आकलन करते समय विचारों की स्पष्टता, भाषा की सुसंगति, अर्थपूर्ण वाक्य निर्माण तथा संदेश की प्रभावशीलता को देखा जाता है। यह घटक विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि लेखन का अंतिम उद्देश्य अर्थपूर्ण संप्रेषण है।

5. शब्दावली

शब्दावली लेखन की समृद्धि एवं गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। समृद्ध शब्दावली विद्यार्थियों को अपने विचारों को अधिक सटीक, प्रभावशाली एवं विविध रूपों में व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करती है। लेखन आकलन में शब्दों की विविधता, उपयुक्तता तथा विषयानुकूल प्रयोग का विश्लेषण किया जाता है। सीमित शब्दावली अक्सर विचारों की अभिव्यक्ति को बाधित करती है, जबकि समृद्ध शब्दावली लेखन को अधिक प्रभावी बनाती है।

6. लेखन की यांत्रिक शुद्धता

लेखन की यांत्रिक शुद्धता भी लेखन आकलन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। इसमें विराम चिह्नों का सही प्रयोग, अनुच्छेद विभाजन, प्रस्तुतीकरण, लिखावट की स्पष्टता तथा भाषा की तकनीकी शुद्धता का आकलन किया जाता है। यद्यपि यह

लेखन की विषयवस्तु से भिन्न है, फिर भी प्रभावी संप्रेषण के लिए इसका महत्व स्वीकार किया जाता है।

11.11.2 लेखन आकलन की विधियाँ एवं उपकरण

लेखन आकलन के लिए विविध औपचारिक एवं अनौपचारिक विधियों का उपयोग किया जाता है, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों की लिखित अभिव्यक्ति, भाषा दक्षता, विचार संगठन तथा संप्रेषण क्षमता का समग्र आकलन करना है। चित्र-आधारित लेखन में विद्यार्थियों को किसी चित्र अथवा दृश्य के आधार पर वाक्य या अनुच्छेद लिखने के लिए कहा जाता है, जिससे उनकी वर्णनात्मक क्षमता, शब्द चयन तथा वाक्य निर्माण का आकलन किया जा सकता है। अनुच्छेद लेखन विद्यार्थियों की विचारों को तार्किक एवं क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता का आकलन करता है, जबकि कहानी लेखन रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति, कथानक संगठन तथा भाषा प्रयोग के आकलन में सहायक होता है। इसी प्रकार कार्यात्मक लेखन के अंतर्गत आवेदन पत्र, ई-मेल, संदेश, सूचना अथवा निमंत्रण पत्र जैसे दैनिक जीवन से संबंधित लेखन कार्यों का आकलन किया जाता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी वास्तविक परिस्थितियों में लिखित भाषा का उपयोग किस सीमा तक कर सकता है। इसके अतिरिक्त पोर्टफोलियो आकलन विद्यार्थियों के लेखन विकास का दीर्घकालिक एवं प्रामाणिक अभिलेख प्रस्तुत करता है, क्योंकि इसमें समय-समय पर किए गए लेखन कार्यों का व्यवस्थित संकलन किया जाता है।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लेखन आकलन में भाषा पृष्ठभूमि एवं भाषायी अनुभवों को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। लेखन में दिखाई देने वाली त्रुटियाँ सदैव कम क्षमता का संकेत नहीं होतीं, बल्कि वे सीमित भाषायी संपर्क,

विलंबित भाषा-अर्जन अथवा सांकेतिक भाषा की संरचनात्मक विशेषताओं का परिणाम भी हो सकती हैं। इसलिए आकलनकर्ता को लेखन की विषयवस्तु तथा भाषा-संबंधी त्रुटियों का पृथक विश्लेषण करना चाहिए। साथ ही, सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं के लेखन में दिखाई देने वाली संरचनात्मक भिन्नताओं को समझते हुए भाषा भिन्नता और वास्तविक भाषा त्रुटि के बीच अंतर करना आवश्यक है। किसी एक लेखन नमूने के आधार पर निष्कर्ष निकालने के बजाय बहुआयामी एवं सतत आकलन दृष्टिकोण अपनाना अधिक उपयुक्त माना जाता है।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों की लेखन एवं भाषा तत्परता के आकलन हेतु विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इनमें टेस्ट फॉर प्री-एकेडमिक स्किल्स एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जिसे जी. मलार, तनुजा सिंह तथा बी. एन. शोभा ने बनाया है। द्वारा विकसित किया गया है। यह उपकरण पूर्व-शैक्षणिक कौशलों, भाषा विकास तथा प्रारम्भिक साक्षरता तत्परता का आकलन करता है और उन आधारभूत भाषायी एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं की पहचान करने में सहायता प्रदान करता है जो आगे चलकर लेखन विकास को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान, मैसूरु द्वारा विकसित भाषा एवं संप्रेषण मूल्यांकन उपकरण, चेकलिस्ट तथा शिक्षक-आधारित आकलन प्रारूप भारतीय संदर्भ में भाषा विकास, संचार कौशल तथा साक्षरता उपलब्धियों के आकलन के लिए व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं। लेखन मूल्यांकन में भाषा नमूना विश्लेषण, पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन, पोर्टफोलियो आकलन तथा लेखन रूब्रिक भी महत्वपूर्ण साधन माने जाते हैं।

लेखन आकलन को अधिक वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय बनाने के लिए रूब्रिक-आधारित आकलन का व्यापक उपयोग किया जाता है। इसमें वर्तनी, व्याकरण, शब्दावली, संगठन, अभिव्यक्ति तथा संप्रेषणात्मक प्रभावशीलता जैसे विभिन्न आयामों के लिए स्पष्ट मानदण्ड निर्धारित किए जाते हैं। यह पद्धति विद्यार्थियों

की उपलब्धियों का निष्पक्ष मूल्यांकन करने के साथ-साथ उनकी शक्तियों तथा सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने में भी सहायक होती है।

अतः लेखन का मापन साक्षरता आकलन का एक महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी क्षेत्र है, जो विद्यार्थी की भाषा दक्षता, विचार संगठन, शब्दावली ज्ञान, व्याकरणिक समझ तथा संप्रेषण क्षमता का समग्र चित्र प्रस्तुत करता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में प्रभावी लेखन आकलन के लिए केवल त्रुटियों पर केंद्रित दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं हैय इसके स्थान पर अर्थपूर्ण संप्रेषण, कार्यात्मक लेखन क्षमता, विचारों की स्पष्टता तथा भाषायी विविधता के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। ऐसा आकलन विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं और शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने तथा उपयुक्त शैक्षिक हस्तक्षेपों की योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

18. व्याकरण भाषा को.....प्रदान करता है।

19. टी -पास का पूर्ण रूप टेस्ट फॉर.....स्किल्स है।

11.12 मापनीय संकेतकों की पहचान

साक्षरता आकलन की गुणवत्ता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि आकलन के लिए चुने गए संकेतक कितने स्पष्ट, वैध, विश्वसनीय एवं मापनयोग्य हैं। समकालीन शैक्षिक आकलन में केवल यह जानना पर्याप्त नहीं माना जाता कि विद्यार्थी ने कोई कौशल अर्जित किया है या नहीं, बल्कि यह भी आवश्यक है कि

उस कौशल की उपलब्धि को वस्तुनिष्ठ रूप से मापा जा सके तथा समय के साथ उसकी प्रगति का दस्तावेजीकरण किया जा सके। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मापनीय संकेतकों का उपयोग किया जाता है।

मापनीय संकेतक ऐसे प्रेक्षणीय व्यवहार, प्रदर्शन मानदण्ड अथवा उपलब्धि स्तर होते हैं जिनके माध्यम से किसी विशिष्ट अधिगम परिणाम की प्राप्ति का आकलन किया जाता है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में इनका महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ आकलन का उद्देश्य केवल उपलब्धि का निर्धारण नहीं, बल्कि व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पहचान, हस्तक्षेप योजना का निर्माण तथा शैक्षिक प्रगति की सतत निगरानी भी होता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में यह आवश्यकता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि भाषा-अर्जन, संप्रेषण अनुभव, श्रवण हानि की तीव्रता, तकनीकी सहायता तथा शैक्षिक अवसरों में व्यापक विविधता पाई जाती है। ऐसी परिस्थितियों में सामान्य एवं अस्पष्ट मूल्यांकन मानदण्ड विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं का उचित प्रतिनिधित्व नहीं कर पाते।

साल्विया, यस्सेल्डाइक और बोल्ट (2017) के अनुसार प्रभावी मूल्यांकन के लिए अधिगम उद्देश्यों को प्रेक्षणीय एवं मापनयोग्य व्यवहारों में रूपांतरित करना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण परिणाम-आधारित शिक्षा तथा डेटा-आधारित निर्णय-निर्माण की अवधारणा से भी जुड़ा हुआ है। जब अधिगम उद्देश्यों को स्पष्ट संकेतकों में परिवर्तित किया जाता है, तब शिक्षक यह निर्धारित कर सकते हैं कि विद्यार्थी अपेक्षित उपलब्धि स्तर तक पहुँचा है या नहीं तथा भविष्य के शिक्षण हस्तक्षेपों में किन संशोधनों की आवश्यकता है।

11.12.1 मापनीय संकेतकों की विशेषताएँ

किसी भी संकेतक की उपयोगिता उसकी गुणवत्ता पर निर्भर करती है। एक प्रभावी संकेतक में स्पष्टता, प्रेक्षणीयता, मापनयोग्यता, प्रासंगिकता तथा संवेदनशीलता जैसे गुण होने चाहिए। स्पष्टता यह सुनिश्चित करती है कि संकेतक की व्याख्या विभिन्न आकलनकर्ताओं द्वारा समान रूप से की जा सके। प्रेक्षणीयता संकेतक को प्रत्यक्ष व्यवहार अथवा प्रदर्शन से जोड़ती है, जबकि मापनयोग्यता उसके परिणामों को संख्यात्मक रूप में व्यक्त करने की सुविधा प्रदान करती है। प्रासंगिकता यह सुनिश्चित करती है कि संकेतक वास्तव में उसी कौशल का प्रतिनिधित्व कर रहा हो जिसका मूल्यांकन किया जाना है। इसके अतिरिक्त, एक अच्छा संकेतक इतना संवेदनशील होना चाहिए कि वह विद्यार्थी की छोटी-से-छोटी प्रगति को भी दर्ज कर सके।

उदाहरणार्थ, "विद्यार्थी अच्छा पढ़ता है" एक अस्पष्ट कथन है क्योंकि इसकी कोई स्पष्ट परिचालनात्मक परिभाषा (नहीं है। इसके विपरीत "विद्यार्थी प्रति मिनट 80 शब्द 95 प्रतिशत शुद्धता के साथ पढ़ सकता है" एक स्पष्ट एवं मापनयोग्य संकेतक है, जिसके आधार पर प्रदर्शन की तुलना एवं प्रगति का विश्लेषण किया जा सकता है।

11.12.2 साक्षरता विकास के प्रमुख मापनीय संकेतक

साक्षरता एक बहुआयामी संरचना है, जिसमें शब्दावली, पठन, पठन-बोध, लेखन, संप्रेषण तथा कार्यात्मक भाषा उपयोग जैसे अनेक घटक सम्मिलित होते हैं। अतः किसी एक संकेतक के आधार पर साक्षरता दक्षता का आकलन करना पर्याप्त नहीं माना जाता।

शब्दावली विकास के संदर्भ में ज्ञात शब्दों की संख्या, शब्दार्थ बोध, संदर्भानुसार शब्द प्रयोग तथा शब्द भंडार की वृद्धि महत्वपूर्ण संकेतक माने जाते हैं। शब्दावली

का स्तर सामान्यतः पठन-बोध एवं लेखन उपलब्धि का महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक माना जाता है।

पठन आकलन में शब्द पहचान, पठन प्रवाह, पठन शुद्धता तथा पठन-बोध प्रमुख संकेतक होते हैं। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में केवल शब्द पहचान का आकलन पर्याप्त नहीं है, क्योंकि कई विद्यार्थी शब्दों को पहचान तो लेते हैं, किन्तु उनके अर्थ का प्रभावी निर्माण नहीं कर पाते। इसलिए पठन आकलन में गति एवं शुद्धता के साथ-साथ अर्थ ग्रहण क्षमता का आकलन भी आवश्यक है।

पठन-बोध के संकेतकों में मुख्य विचार की पहचान, निष्कर्ष निकालने की क्षमता, आलोचनात्मक विश्लेषण तथा पाठ से प्राप्त जानकारी का नए संदर्भों में उपयोग शामिल होता है। उच्च स्तरीय पठन-बोध संकेतक केवल तथ्यात्मक जानकारी की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि संज्ञानात्मक प्रसंस्करण की गहराई को भी प्रदर्शित करते हैं।

लेखन आकलन में वर्तनी एवं व्याकरणिक शुद्धता के अतिरिक्त विचार संगठन, पाठ की सुसंगति, अभिव्यक्ति की स्पष्टता तथा संप्रेषणात्मक प्रभावशीलता को भी संकेतकों के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए। आधुनिक लेखन मूल्यांकन केवल त्रुटियों की गणना तक सीमित नहीं है, बल्कि लेखन की कार्यात्मक उपयोगिता एवं अर्थ संप्रेषण की क्षमता को भी महत्व देता है।

इसी प्रकार संप्रेषण दक्षता के आकलन में स्वतंत्र अभिव्यक्ति, संवाद में सहभागिता, भाषा अथवा सांकेतिक भाषा का प्रभावी उपयोग तथा सामाजिक अंतःक्रिया की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए संप्रेषण और साक्षरता परस्पर संबद्ध प्रक्रियाएँ हैंय अतः इनका आकलन एकीकृत दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए।

विशेष रूप से किशोर एवं वयस्क शिक्षार्थियों में कार्यात्मक साक्षरता के संकेतकों को भी शामिल किया जाना चाहिए। फॉर्म भरना, डिजिटल संदेशों को समझना, ई-मेल लिखना, सार्वजनिक सूचनाओं का अर्थ ग्रहण करना तथा दैनिक जीवन की लिखित जानकारी का उपयोग करना कार्यात्मक साक्षरता के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। ये संकेतक वास्तविक जीवन में साक्षरता कौशलों के अनुप्रयोग को प्रदर्शित करते हैं और इसलिए विशेष शिक्षा में अत्यधिक महत्व रखते हैं।

11.12.3 मापनीय संकेतकों के चयन में सावधानियाँ

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए संकेतकों का चयन करते समय भाषा विधा, संप्रेषण शैली, सांस्कृतिक संदर्भ, आयु तथा विकासात्मक स्तर को ध्यान में रखना आवश्यक है। भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के लिए ऐसे संकेतकों का चयन किया जाना चाहिए जो उनकी भाषायी पृष्ठभूमि के अनुरूप हों। यदि आकलन केवल मौखिक भाषा-आधारित संकेतकों पर निर्भर करेगा, तो परिणाम विद्यार्थियों की वास्तविक साक्षरता क्षमता को प्रतिबिंबित नहीं कर पाएँगे।

इसके अतिरिक्त, किसी एक संकेतक अथवा एकल परीक्षण के आधार पर निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है। समकालीन आकलन बहु-स्रोत तथा बहु-विधि दृष्टिकोण का समर्थन करता है, जिसमें परीक्षण परिणामों, कक्षा अवलोकन, पोर्टफोलियो, भाषा नमूना विश्लेषण तथा कार्यात्मक प्रदर्शन को सम्मिलित किया जाता है।

मापनीय संकेतक व्यक्तिगत शैक्षिक योजना के निर्माण एवं आकलन का आधार प्रदान करते हैं। इनके माध्यम से अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारित किए जा सकते हैं, प्रगति की नियमित निगरानी की जा सकती है तथा हस्तक्षेप कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन किया जा सकता है। साथ ही, ये संकेतक

शिक्षकों, अभिभावकों तथा अन्य पेशेवरों के बीच साक्ष्य-आधारित संवाद को भी सुदृढ़ बनाते हैं।

मापनीय संकेतकों की पहचान साक्षरता आकलन की एक केंद्रीय प्रक्रिया है, जो आकलन को वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा निर्णयोन्मुख बनाती है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में ऐसे संकेतक भाषा, पठन, लेखन, संप्रेषण तथा कार्यात्मक साक्षरता की वास्तविक उपलब्धियों को समझने का आधार प्रदान करते हैं। उपयुक्त एवं संवेदनशील संकेतकों का चयन न केवल आकलन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, बल्कि प्रभावी शिक्षण, व्यक्तिगत हस्तक्षेप योजना तथा समावेशी शैक्षिक निर्णयों के लिए भी आवश्यक आधार उपलब्ध कराता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

20. मापनीय संकेतक ऐसे.....व्यवहार होते हैं जिनके आधार पर उपलब्धि का आकलन किया जाता है।

21. प्रभावी संकेतकों में स्पष्टता, मापनयोग्यता और..... प्रमुख गुण हैं।

11.13 सुगम्यता श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता मूल्यांकन में सैद्धांतिक, वैचारिक एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में समावेशन, समानता और शैक्षिक न्याय को विशेष महत्व दिया जा रहा है। इन सिद्धांतों के प्रभाव के परिणामस्वरूप आकलन की पारंपरिक अवधारणाओं में भी व्यापक परिवर्तन हुआ है। पहले

आकलन को केवल उपलब्धि मापन का माध्यम माना जाता था, जबकि आज इसे अधिगम को समझने, शैक्षिक निर्णय लेने, शिक्षण में सुधार करने तथा शिक्षार्थी की वास्तविक क्षमताओं की पहचान करने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इस परिवर्तन ने आकलन में सुगम्यता की अवधारणा को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के संदर्भ में सुगम्यता केवल परीक्षा में अतिरिक्त समय या सांकेतिक भाषा दुभाषिए की व्यवस्था तक सीमित नहीं है। यह एक व्यापक अवधारणा है, जिसका संबंध भाषा-अधिगम, संप्रेषण, सांस्कृतिक पहचान, सूचना तक पहुँच, प्रौद्योगिकी के उपयोग तथा मूल्यांकन की वैधता एवं निष्पक्षता से है। यदि मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षार्थी की भाषायी और संप्रेषणीय आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है, तो वह शिक्षार्थी की वास्तविक साक्षरता क्षमता का सही चित्र प्रस्तुत नहीं कर सकती। परिणामस्वरूप प्राप्त अंक वास्तविक उपलब्धि के बजाय आकलन व्यवस्था की सीमाओं को प्रतिबिंबित करने लगते हैं।

श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता आकलन में यह समस्या विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि साक्षरता का विकास भाषा से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। श्रवण बाधिता भाषा-अर्जन की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है, जिसके कारण पढ़ने, लिखने, शब्दावली विकास, व्याकरणिक समझ तथा पाठ-बोध के क्षेत्र में विविध प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। यदि आकलन इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर विकसित नहीं किया जाता, तो यह वास्तविक साक्षरता कौशल के बजाय भाषा-अभिगम की सीमाओं को मापने लगता है। इसलिए समकालीन आकलन विज्ञान में सुगम्यता को मूल्यांकन की वैधता, विश्वसनीयता और निष्पक्षता का अभिन्न अंग माना जाता है।

11.13.1 सुगम्यता की अवधारणा: एक वैचारिक विश्लेषण

समावेशी शिक्षा और न्यायसंगत आकलन की समकालीन अवधारणाओं में सुगम्यता एक केंद्रीय सिद्धांत के रूप में उभरी है। सामान्यतः सुगम्यता का तात्पर्य किसी व्यक्ति के लिए सेवाओं, संसाधनों, सूचनाओं अथवा अवसरों तक प्रभावी एवं समान पहुँच सुनिश्चित करने से है। तथापि शैक्षिक आकलन के संदर्भ में सुगम्यता का अर्थ केवल पहुँच प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना है जिनमें प्रत्येक शिक्षार्थी अपनी वास्तविक क्षमताओं और उपलब्धियों का प्रदर्शन कर सके। इस दृष्टि से सुगम्यता मूल्यांकन की निष्पक्षता, वैधता तथा समानता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई अवधारणा है। परंपरागत रूप से सुगम्यता को मुख्यतः भौतिक पहुँच तक सीमित समझा जाता था। विद्यालय भवनों में रैम्प, उपयुक्त बैठने की व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था अथवा परीक्षा कक्ष तक पहुँच जैसी सुविधाओं को ही सुगम्यता का प्रमुख आधार माना जाता था। किंतु समकालीन समावेशी शिक्षा दर्शन ने इस अवधारणा का दायरा व्यापक कर दिया है। वर्तमान में सुगम्यता को एक बहुआयामी संरचना के रूप में देखा जाता है, जिसमें भौतिक पहुँच के साथ-साथ भाषायी, संप्रेषणीय, डिजिटल, सांस्कृतिक तथा संज्ञानात्मक पहुँच भी सम्मिलित है। अतः किसी आकलन प्रणाली को तभी वास्तव में सुलभ माना जा सकता है जब वह शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं एवं सीखने की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए विकसित की गई हो।

शैक्षिक मूल्यांकन के क्षेत्र में सुगम्यता का संबंध आकलन की वैधता से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। ।म्त्।ए ।च्। और छब्डम् (2014) द्वारा प्रकाशित शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण के मानक में यह स्पष्ट किया गया है कि किसी परीक्षण की गुणवत्ता केवल उसकी विश्वसनीयता या मानकीकरण पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों के लिए कितनी सुलभ है। यदि परीक्षण की भाषा, प्रारूप, प्रशासनिक प्रक्रिया

अथवा प्रतिक्रिया प्रणाली किसी विशेष समूह के लिए अनावश्यक बाधा उत्पन्न करती है, तो प्राप्त परिणाम शिक्षार्थी की वास्तविक क्षमता का प्रतिनिधित्व नहीं करेंगे। ऐसी स्थिति में परीक्षण की वैधता प्रभावित हो जाती है क्योंकि परीक्षण इच्छित अधिगम परिणामों के बजाय बाह्य बाधाओं को मापने लगता है।

श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के संदर्भ में सुगम्यता का महत्व विशेष रूप से बढ़ जाता है। अधिकांश श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए सूचना तक पहुँच का प्रमुख माध्यम श्रवण नहीं होता, बल्कि वे दृश्य, सांकेतिक अथवा बहु-माध्यमीय संप्रेषण प्रणालियों का उपयोग करते हैं। कुछ शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा को अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में उपयोग करते हैं, जबकि अन्य मौखिक भाषा, श्रवण सहायक उपकरणों अथवा द्विभाषिक संप्रेषण प्रणाली पर निर्भर हो सकते हैं। इस विविधता के कारण एक समान आकलन व्यवस्था सभी शिक्षार्थियों के लिए समान अवसर उपलब्ध नहीं करा सकती। उदाहरण के लिए, यदि किसी श्रवण बाधित शिक्षार्थी को जटिल मौखिक निर्देशों पर आधारित परीक्षण दिया जाता है, तो उसका प्रदर्शन वास्तविक ज्ञान या कौशल के बजाय निर्देशों को समझने की कठिनाइयों से प्रभावित हो सकता है। इसी प्रकार यदि मूल्यांकन सामग्री केवल श्रव्य प्रारूप में उपलब्ध हो, तो वह शिक्षार्थी की अधिगम उपलब्धि का निष्पक्ष आकलन नहीं कर पाएगी। इसलिए सुगम्यता का उद्देश्य आकलन के मानकों को कम करना नहीं, बल्कि उन अनावश्यक बाधाओं को हटाना है जो शिक्षार्थी की वास्तविक क्षमता के प्रदर्शन में अवरोध उत्पन्न करती हैं। समकालीन आकलन सिद्धांत सुगम्यता को समानता के बजाय न्यायसंगतता के सिद्धांत से जोड़कर देखते हैं। समानता का अर्थ सभी को एक जैसी व्यवस्था प्रदान करना है, जबकि न्यायसंगतता का अर्थ प्रत्येक शिक्षार्थी को उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त समर्थन प्रदान करना है ताकि सभी को उपलब्धि प्रदर्शित करने के समान अवसर प्राप्त हो सकें। इस प्रकार सुगम्यता केवल सुविधा प्रदान करने

का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, शैक्षिक समावेशन तथा मानवाधिकारों से जुड़ी एक महत्वपूर्ण अवधारणा है।

अतः सुगम्यता को शैक्षिक आकलन की एक मूलभूत आवश्यकता के रूप में देखा जाना चाहिए। विशेष रूप से श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए सुलभ मूल्यांकन व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि आकलन उनके ज्ञान, कौशल एवं अधिगम उपलब्धियों का मापन करे, न कि उनकी दिव्यांगता से उत्पन्न बाधाओं का। यही दृष्टिकोण समावेशी, वैध एवं न्यायसंगत आकलन प्रणाली की आधारशिला है।

11.13.2 सुगम्यता का सैद्धांतिक आधार

1. चिकित्सीय मॉडल

चिकित्सीय मॉडल दिव्यांगता को व्यक्ति के भीतर स्थित कमी या विकृति के रूप में देखता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार श्रवण बाधिता एक ऐसी स्थिति है जिसे चिकित्सा, पुनर्वास अथवा सहायक उपकरणों के माध्यम से सुधारने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस मॉडल के प्रभाव में विकसित मूल्यांकन प्रणालियाँ मुख्यतः व्यक्ति की सीमाओं को मापने पर केंद्रित रहती हैं। उदाहरणस्वरूप पारंपरिक भाषा परीक्षण अक्सर यह मानकर बनाए जाते हैं कि सभी शिक्षार्थी समान श्रवण एवं भाषायी अनुभव रखते हैं। परिणामस्वरूप श्रवण बाधित विद्यार्थियों का प्रदर्शन वास्तविक क्षमता की अपेक्षा कम दिखाई दे सकता है। यद्यपि चिकित्सीय मॉडल ने निदान और प्रारंभिक हस्तक्षेप के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, किंतु आधुनिक समावेशी शिक्षा इसकी आलोचना करती है क्योंकि यह सामाजिक एवं पर्यावरणीय बाधाओं की भूमिका को पर्याप्त महत्व नहीं देता।

2. सामाजिक मॉडल

सामाजिक मॉडल दिव्यांगता को व्यक्ति की समस्या न मानकर समाज द्वारा निर्मित बाधाओं का परिणाम मानता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार श्रवण बाधिता स्वयं समस्या नहीं है, बल्कि समस्या तब उत्पन्न होती है जब समाज सूचना, संप्रेषण और शिक्षा को इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि श्रवण बाधित व्यक्ति उसमें पूर्ण भागीदारी न कर सके। इस मॉडल के अनुसार यदि आकलन में सांकेतिक भाषा, कैप्शनिंग, दृश्य सहायता या वैकल्पिक प्रस्तुतीकरण उपलब्ध नहीं हैं, तो समस्या विद्यार्थी में नहीं बल्कि आकलन प्रणाली में है। इसी कारण सामाजिक मॉडल सुगम्यता को मूल्यांकन की केंद्रीय आवश्यकता मानता है।

3. मानवाधिकार मॉडल

मानवाधिकार मॉडल दिव्यांगता को समान अधिकारों, गरिमा और सामाजिक न्याय के संदर्भ में देखता है। संयुक्त राष्ट्र दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अभिसमय (यूएनसीआरपीडी, 2006) ने शिक्षा एवं आकलन में सुगम्यता को मूलभूत अधिकार के रूप में मान्यता प्रदान की है। इस दृष्टिकोण के अनुसार श्रवण बाधित शिक्षार्थियों को आकलन में भाग लेने के लिए आवश्यक अनुकूलन उपलब्ध कराना कोई दया या विशेष सुविधा नहीं है, बल्कि उनका वैधानिक एवं नैतिक अधिकार है।

11.13.3 सुगम्यता, वैधता और आकलन की गुणवत्ता

टाकलन विज्ञान में वैधता को सबसे महत्वपूर्ण गुण माना जाता है। वैधता का अर्थ है कि कोई परीक्षण वास्तव में उसी क्षमता का मापन कर रहा है जिसके लिए उसे विकसित किया गया है। मेसिक (1995) के अनुसार वैधता केवल तकनीकी गुण नहीं है, बल्कि यह परीक्षण के सामाजिक परिणामों और उसकी व्याख्या से भी संबंधित है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में यदि पठन-बोध परीक्षण के निर्देश केवल मौखिक रूप में दिए जाएँ, तो कम प्राप्तांक का अर्थ यह नहीं होगा

कि विद्यार्थी की पठन क्षमता कमजोर है। यह भी संभव है कि वह निर्देशों को समझ ही न पाया हो। ऐसी स्थिति में परीक्षण वास्तविक पठन क्षमता के बजाय श्रवण निर्भरता को माप रहा होगा। इसे आकलन सिद्धांत में संरचना-अप्रासंगिक विचरण कहा जाता है। अर्थात् प्राप्त परिणाम उन कारकों से प्रभावित हो रहे हैं जो वास्तव में मापी जाने वाली क्षमता का हिस्सा नहीं हैं। इसी प्रकार यदि प्रश्नों की भाषा अत्यधिक जटिल है, तो परीक्षण साक्षरता कौशल के बजाय भाषा जटिलता को मापने लगेगा। फलतः आकलन की संरचनात्मक वैधता और परिणामों की विश्वसनीयता दोनों प्रभावित होंगी। इसलिए आधुनिक आकलन विशेषज्ञों का मत है कि सुगम्यता कोई अतिरिक्त सुविधा नहीं बल्कि वैध आकलन की पूर्व-शर्त है।

11.13.4 सुगम्यता और आकलन की निष्पक्षता

निष्पक्षता की अवधारणा को अक्सर समानता के साथ भ्रमित कर दिया जाता है। समानता का अर्थ सभी को एक जैसी व्यवस्था देना है, जबकि निष्पक्षता का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुरूप अवसर उपलब्ध कराना है। उदाहरण के लिए यदि सभी विद्यार्थियों को एक ही मौखिक निर्देश दिए जाएँ, तो इसे समानता कहा जा सकता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि यह निष्पक्ष भी हो। श्रवण बाधित विद्यार्थी उन निर्देशों को उसी प्रकार ग्रहण नहीं कर पाएगा जैसे सामान्य श्रवण वाला विद्यार्थी करता है। इसलिए सांकेतिक भाषा दुभाषिया, अतिरिक्त समय, कैप्शनिंग, दृश्य समर्थन तथा डिजिटल अनुकूलन निष्पक्षता सुनिश्चित करने के उपकरण हैं। ये किसी प्रकार का अनुचित लाभ प्रदान नहीं करते, बल्कि पहले से विद्यमान बाधाओं को कम करते हैं। समकालीन शोध यह संकेत करते हैं कि उचित अनुकूलन उपलब्ध कराने से प्राप्तांक की वैधता बढ़ती है तथा आकलन परिणाम वास्तविक शैक्षणिक उपलब्धियों का अधिक सटीक प्रतिनिधित्व करते हैं।

11.13.5 साक्षरता आकलन में सुगम्यता के प्रमुख आयाम

श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता आकलन में सुगम्यता एक बहुआयामी अवधारणा है। इसे केवल कुछ अनुकूलनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं किया जा सकता। वास्तव में सुगम्यता उन समस्त परिस्थितियों, प्रक्रियाओं और संसाधनों का समुच्चय है जो यह सुनिश्चित करते हैं कि शिक्षार्थी अपनी वास्तविक क्षमताओं का प्रदर्शन कर सके। समकालीन साहित्य में सुगम्यता को भाषायी, संप्रेषणीय, सांस्कृतिक, तकनीकी, संज्ञानात्मक तथा प्रशासनिक आयामों में विभाजित किया गया है। इन सभी आयामों का आकलन की गुणवत्ता पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

1. भाषायी अभिगम्यता

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के साक्षरता आकलन में भाषायी सुगम्यता सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयामों में से एक है। साक्षरता स्वयं भाषा-आधारित अवधारणा हैय अतः भाषा तक पहुँच में कोई भी बाधा आकलन परिणामों को प्रभावित कर सकती है। भाषायी सुगम्यता का तात्पर्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रश्नों, निर्देशों तथा आकलन सामग्री की भाषा शिक्षार्थी की भाषायी क्षमता और अनुभवों के अनुरूप हो। अनेक श्रवण बाधित विद्यार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा को अपनी प्रथम भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं, जबकि लिखित हिंदी या अंग्रेजी उनके लिए द्वितीय भाषा का कार्य करती है। ऐसी स्थिति में जटिल व्याकरणिक संरचनाओं, अमूर्त शब्दावली या सांस्कृतिक रूप से अपरिचित अभिव्यक्तियों से युक्त प्रश्न उनकी वास्तविक साक्षरता क्षमता के आकलन में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं।

भाषायी सुगम्यता केवल भाषा को सरल बनाने तक सीमित नहीं है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रश्नों की कठिनाई साक्षरता कौशल के स्तर को प्रतिबिंबित करे, न कि अनावश्यक भाषायी जटिलता को। उदाहरण के लिए यदि किसी पठन-बोध परीक्षण में अत्यधिक जटिल वाक्य-विन्यास का प्रयोग किया गया है, तो यह संभव है कि विद्यार्थी पाठ की मूल अवधारणा समझता हो, किंतु भाषा संरचना के कारण प्रश्नों का उत्तर न दे पाए। भाषायी सुगम्यता के संदर्भ में द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण विशेष महत्व रखता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि सांकेतिक भाषा और लिखित भाषा दोनों की अपनी-अपनी भाषायी संरचनाएँ एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ होती हैं। इसलिए आकलन प्रक्रिया को इस भाषायी विविधता का सम्मान करना चाहिए।

2. संप्रेषणीय सुगम्यता

श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए सूचना तक पहुँच मुख्यतः दृश्य एवं वैकल्पिक संप्रेषण माध्यमों पर आधारित होती है। इसलिए आकलन में संप्रेषणीय सुगम्यता अत्यंत आवश्यक है। संप्रेषणीय सुगम्यता का अर्थ है कि शिक्षार्थी परीक्षा के निर्देशों, प्रक्रियाओं, प्रश्नों तथा आकलनकर्ता के साथ होने वाले संवाद को स्पष्ट रूप से समझ सके। यदि संप्रेषण में बाधा उत्पन्न होती है, तो मूल्यांकन की विश्वसनीयता और वैधता दोनों प्रभावित हो सकती हैं। इस संदर्भ में सांकेतिक भाषा दुभाषिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दुभाषिए का कार्य केवल शब्दों का अनुवाद करना नहीं है, बल्कि भाषा एवं संप्रेषण के बीच एक प्रभावी सेतु स्थापित करना है। हालाँकि शोध यह भी इंगित करते हैं कि दुभाषिए की दक्षता, विषय-वस्तु का ज्ञान तथा सांकेतिक भाषा में उसकी प्रवीणता मूल्यांकन परिणामों को प्रभावित कर सकती है। इसलिए आकलन में प्रशिक्षित एवं प्रमाणित दुभाषियों का उपयोग आवश्यक माना जाता है। संप्रेषणीय सुगम्यता के अंतर्गत कैप्शनिंग, रियल-टाइम ट्रांसक्रिप्शन, वीडियो-आधारित निर्देश तथा दृश्य

संकेतों का प्रयोग भी सम्मिलित है। ऑनलाइन आकलन प्रणालियों में इन सुविधाओं का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

3. सांस्कृतिक सुगम्यता

समकालीन बधिर अध्ययन ने यह स्थापित किया है कि श्रवण बाधिता को केवल चिकित्सीय स्थिति के रूप में नहीं देखा जा सकता। अनेक श्रवण बाधित व्यक्ति स्वयं को एक विशिष्ट भाषायी एवं सांस्कृतिक समुदाय का सदस्य मानते हैं। इस समुदाय की अपनी भाषा, परंपराएँ, सामाजिक अनुभव और सांस्कृतिक पहचान होती है। इस दृष्टिकोण से साक्षरता आकलन में सांस्कृतिक सुगम्यता का विशेष महत्व है। यदि आकलन सामग्री केवल सामान्य श्रवण वाले समुदाय के अनुभवों और संदर्भों पर आधारित है, तो यह बधिर समुदाय के विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक रूप से पक्षपातपूर्ण हो सकती है। उदाहरण के लिए यदि किसी पाठ-बोध गतिविधि में ऐसी परिस्थितियों का वर्णन किया गया है जो मुख्यतः श्रवण अनुभवों पर आधारित हैं, तो श्रवण बाधित विद्यार्थी के लिए पाठ की व्याख्या भिन्न हो सकती है। इससे उसके प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ सकता है, जबकि यह प्रभाव उसकी साक्षरता क्षमता से संबंधित नहीं होगा। सांस्कृतिक सुगम्यता का उद्देश्य मूल्यांकन को सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी बनाना है, ताकि विभिन्न पृष्ठभूमियों के विद्यार्थी समान अवसर के साथ उसमें भाग ले सकें।

4. तकनीकी सुगम्यता

डिजिटल युग में तकनीकी सुगम्यता साक्षरता आकलन का एक महत्वपूर्ण घटक बन गई है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए आकलन को अधिक सुलभ, लचीला और व्यक्तिगत बनाने की संभावनाएँ विकसित की हैं। तकनीकी सुगम्यता के अंतर्गत निम्नलिखित साधनों का विशेष महत्व है-कैप्शनयुक्त वीडियो, स्पीच-टू-टेक्स्ट तकनीक, रियल-टाइम

ट्रांसक्रिप्शन, डिजिटल रीडर, इंटरैक्टिव मूल्यांकन प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद प्रणाली, सांकेतिक भाषा वीडियो समर्थन । इन तकनीकों का प्रमुख उद्देश्य श्रवण आधारित बाधाओं को कम करना और सूचना तक वैकल्पिक पहुँच प्रदान करना है। हालाँकि तकनीकी सुगम्यता से संबंधित कुछ चुनौतियाँ भी हैं। डिजिटल विभाजन, संसाधनों की असमान उपलब्धता, तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव तथा ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी की सीमाएँ इसके प्रभावी उपयोग में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं।

5. संज्ञानात्मक सुगम्यता

संज्ञानात्मक सुगम्यता का संबंध इस बात से है कि आकलन सामग्री शिक्षार्थी की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के अनुरूप है या नहीं। अनेक बार प्रश्नों की प्रस्तुति, संगठन या भाषा इस प्रकार की होती है कि विद्यार्थी प्रश्न की वास्तविक माँग को समझने में कठिनाई अनुभव करता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों में भाषा-अनुभव की विविधता के कारण संज्ञानात्मक प्रसंस्करण के पैटर्न भी भिन्न हो सकते हैं। इसलिए मूल्यांकन को इस प्रकार डिजाइन किया जाना चाहिए कि वह अनावश्यक संज्ञानात्मक बोझ उत्पन्न न करे। संज्ञानात्मक सुगम्यता के लिए निम्न रणनीतियाँ उपयोगी मानी जाती है-स्पष्ट एवं संक्षिप्त निर्देश, चरणबद्ध प्रस्तुतीकरण, दृश्य आयोजकों का उपयोग, उदाहरणों की उपलब्धता, प्रश्नों की तार्किक संरचना । इस प्रकार की व्यवस्थाएँ आकलन को अधिक सुलभ बनाने के साथ-साथ उसके परिणामों की वैधता भी बढ़ाती हैं।

11.13.6 सीखने के लिए सार्वभौमिक रुपरेखा और सुगम्य आकलन

सुगम्यता की समकालीन अवधारणाओं में सीखने के लिए सार्वभौमिक रुपरेखा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यू डी एल का विकास इस विचार पर आधारित है कि शिक्षार्थियों की विविधता कोई अपवाद नहीं बल्कि शिक्षा की

सामान्य वास्तविकता है। इसलिए शिक्षण एवं आकलन प्रणालियों को प्रारम्भ से ही इस प्रकार डिजाइन किया जाना चाहिए कि वे अधिकतम शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी और सुगम हों।

यू डी एल के तीन प्रमुख सिद्धांत हैंकृ

1. सूचना प्रस्तुत करने के अनेक माध्यम
2. अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम
3. सहभागिता के अनेक माध्यम

श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता आकलन में यू डी एल का प्रयोग प्रश्नों को पाठ, चित्र, वीडियो तथा सांकेतिक भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने, उत्तर देने के वैकल्पिक तरीकों की अनुमति देने तथा शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखने में सहायता करता है। हालाँकि कुछ विद्वानों का मत है कि यू डी एल का सामान्य ढाँचा बधिर संस्कृति और सांकेतिक भाषा पहचान की विशिष्ट आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करता। इसलिए बधिर अध्ययन के परिप्रेक्ष्य को यू डी एल के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया जाता है।

11.13.7 सांकेतिक भाषा दुभाषिया, आकलन अनुकूलन एवं सुगम्यता

श्रवण बाधित व्यक्तियों के साक्षरता आकलन में सांकेतिक भाषा दुभाषिया की भूमिका लंबे समय से चर्चा का विषय रही है। विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए, जिनकी प्रथम भाषा सांकेतिक भाषा है और जो लिखित अथवा मौखिक भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में सीखते हैं, आकलन प्रक्रिया में भाषायी पहुँच सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। सांकेतिक भाषा दुभाषिया

आकलनकर्ता और शिक्षार्थी के बीच संप्रेषण का माध्यम बनता है। उसका कार्य केवल शब्दों का अनुवाद करना नहीं, बल्कि अर्थ, संदर्भ और निर्देशों को ऐसी भाषा में प्रस्तुत करना है जिसे विद्यार्थी सहज रूप से समझ सके। साक्षरता आकलन के दौरान दुभाषिए की भूमिका विशेष रूप से निर्देशों, प्रशासनिक प्रक्रियाओं और स्पष्टीकरण तक सीमित होनी चाहिए। उसे किसी भी परिस्थिति में प्रश्नों की व्याख्या इस प्रकार नहीं करनी चाहिए जिससे उत्तर प्रभावित हो।

शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि दुभाषिए की योग्यता, विषय-वस्तु की समझ, सांकेतिक भाषा में दक्षता तथा आकलन संबंधी प्रशिक्षण परीक्षा परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। यदि दुभाषिया विषय-विशेष की शब्दावली से परिचित नहीं है, तो प्रश्नों के अर्थ में परिवर्तन आ सकता है। इसलिए समकालीन आकलन प्रणाली प्रशिक्षित एवं प्रमाणित दुभाषियों के उपयोग पर बल देती है।

इसके अतिरिक्त, यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रत्येक श्रवण बाधित विद्यार्थी सांकेतिक भाषा का उपयोग नहीं करता। कुछ विद्यार्थी मौखिक संप्रेषण, श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट अथवा टोटल कम्युनिकेशन पद्धति का प्रयोग करते हैं। इसलिए दुभाषिए की उपलब्धता को सार्वभौमिक समाधान नहीं माना जा सकता। आकलन की योजना विद्यार्थी की व्यक्तिगत भाषायी एवं संप्रेषणीय प्रोफाइल के आधार पर तैयार की जानी चाहिए।

11.13.8 सुगम्यता, भाषा-अधिकार और बधिर अध्ययन का परिप्रेक्ष्य

पिछले कुछ दशकों में बधिर अध्ययन ने श्रवण बाधिता की पारंपरिक समझ को चुनौती दी है। बधिर अध्ययन का दृष्टिकोण श्रवण बाधित व्यक्तियों को केवल

चिकित्सा या पुनर्वास के संदर्भ में नहीं देखता, बल्कि उन्हें एक विशिष्ट भाषायी एवं सांस्कृतिक समुदाय के रूप में मान्यता देता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार सांकेतिक भाषाएँ पूर्ण विकसित प्राकृतिक भाषाएँ हैं, जिनकी अपनी व्याकरणिक संरचना, शब्दावली और सांस्कृतिक विशेषताएँ होती हैं। अतः यदि किसी विद्यार्थी की प्रथम भाषा भारतीय सांकेतिक भाषा है, तो उसकी साक्षरता का मूल्यांकन केवल लिखित हिंदी अथवा अंग्रेजी के आधार पर करना उसकी भाषायी पहचान की उपेक्षा करना होगा। भाषायी अधिकारों के संदर्भ में यह तर्क दिया जाता है कि प्रत्येक शिक्षार्थी को अपनी भाषा में शिक्षा और आकलन प्राप्त करने का अधिकार है। इस विचारधारा ने विश्वभर में सांकेतिक भाषा आधारित आकलन प्रणालियों के विकास को प्रोत्साहित किया है। डेफ गेन सिद्धांत भी इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण है। यह सिद्धांत श्रवण बाधिता को कमी के रूप में नहीं, बल्कि मानव विविधता के एक विशिष्ट रूप के रूप में देखता है। इसके अनुसार श्रवण बाधित समुदाय के दृश्य-आधारित संप्रेषण, सांस्कृतिक अनुभव और वैकल्पिक ज्ञान प्रणालियाँ समाज को समृद्ध बनाती हैं। इसलिए आकलन को भी कमी-आधारित दृष्टिकोण से हटकर क्षमता-आधारित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

11.13.9 भारतीय परिप्रेक्ष्य में सुगम्यता और साक्षरता आकलन

भारत में समावेशी शिक्षा की अवधारणा को सुदृढ़ बनाने में विभिन्न नीतियों और विधानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 ने शिक्षा एवं आकलन में सुगम्यता को कानूनी अधिकार का दर्जा प्रदान किया है।यह अधिनियम शैक्षणिक संस्थानों को यह सुनिश्चित करने के लिए बाध्य करता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों को उपयुक्त अनुकूलन, सहायक उपकरण तथा समान अवसर उपलब्ध कराए जाएँ। परीक्षा व्यवस्था में अतिरिक्त समय, लेखक, सांकेतिक भाषा दुभाषिया तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं का प्रावधान इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) की सुगम्यता दिशानिर्देश, 2021 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) द्वारा जारी उच्च शिक्षा संस्थानों और विश्वविद्यालयों के लिए सुगम्यता दिशानिर्देश और मानक में उच्च शिक्षा संस्थानों को दिव्यांग-अनुकूल परिसर, सुगम्य डिजिटल संसाधन, समावेशी शिक्षण सामग्री तथा सुगम परीक्षा एवं आकलन प्रणाली विकसित करने हेतु दिशा-निर्देश प्रदान किए गए हैं। इन दिशानिर्देशों में सार्वभौमिक अभिकल्पना, डिजिटल सुगम्यता तथा उचित अनुकूलन की व्यवस्था को अनिवार्य महत्व दिया गया है। इससे उच्च शिक्षा स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए निष्पक्ष एवं समतामूलक मूल्यांकन सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है।

एन सी ई आर टी-सी आई ई टी की सुगम्यता पहल

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा समावेशी डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु अनेक पहलें संचालित की जा रही हैं। ई-पाठशाला, दीक्षा, पीएम ई-विद्या तथा सांकेतिक भाषा आधारित शैक्षिक संसाधनों के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सुगम अधिगम अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इन पहलों का उद्देश्य शिक्षण-अधिगम सामग्री और आकलन प्रक्रियाओं को अधिक सुलभ एवं सहभागी बनाना है।

एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित “दिव्यांग बच्चों के लिए ई-कंटेंट विकसित करने के लिए दिशानिर्देश (2021)” में दिव्यांग बच्चों के लिए सुगम डिजिटल सामग्री निर्माण के मानक निर्धारित किए गए हैं। इन दिशानिर्देशों में कैप्शनयुक्त वीडियो,

सांकेतिक भाषा अनुवाद, स्क्रीन रीडर अनुकूल सामग्री, वैकल्पिक पाठ, सुगम्य पी डी एफ तथा बहु-माध्यमीय अधिगम संसाधनों के विकास पर विशेष बल दिया गया है। ऐसे प्रावधान ऑनलाइन मूल्यांकन को अधिक न्यायसंगत एवं प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की पहल

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद ने तकनीकी शिक्षा संस्थानों में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सुगम एवं समावेशी वातावरण विकसित करने हेतु विभिन्न दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनमें सुलभ अधोसंरचना, सहायक प्रौद्योगिकी, डिजिटल संसाधनों की अभिगम्यता तथा परीक्षा संबंधी सुविधाओं के प्रावधान सम्मिलित हैं। इन पहलों का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा में दिव्यांग विद्यार्थियों की समान भागीदारी और निष्पक्ष आकलन सुनिश्चित करना है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद की सुगम्यता दिशानिर्देश

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा जारी सुगम्यता दिशानिर्देश शिक्षक शिक्षा संस्थानों में समावेशी एवं सुगम शिक्षण-अधिगम वातावरण के विकास पर बल देती हैं। इन दिशानिर्देशों के अनुसार शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सुगम्यता, सहायक प्रौद्योगिकी, सांकेतिक भाषा, समावेशी आकलन तथा सार्वभौमिक अभिकल्पना से संबंधित विषयों को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। इससे भावी शिक्षकों में समावेशी आकलन के प्रति संवेदनशीलता एवं दक्षता विकसित होती है।

इस प्रकार भारतीय परिप्रेक्ष्य में सुगम्यता केवल भौतिक पहुँच तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि शिक्षण-अधिगम सामग्री, डिजिटल संसाधनों, शिक्षक तैयारी तथा आकलन प्रणालियों को भी समावेशी बनाने की दिशा में व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं। इन नीतियों, दिशानिर्देशों और संस्थागत पहलों के परिणामस्वरूप श्रवण बाधित एवं अन्य दिव्यांग शिक्षार्थियों के लिए अधिक न्यायपूर्ण, समतामूलक और गुणवत्तापूर्ण साक्षरता एवं शैक्षिक आकलन प्रणाली का विकास संभव हो रहा है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

22. राष्ट्रीय शिक्षा नीति.....समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली पर विशेष बल देती है।

23. .....मॉडल के अनुसार दिव्यांगता व्यक्ति की समस्या नहीं, बल्कि समाज द्वारा निर्मित बाधाओं का परिणाम है।

24. श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के साक्षरता मूल्यांकन में सुगम्यता का संबंध आकलन की.....से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

11.14 सारांश

श्रवण बाधित व्यक्तियों में साक्षरता विकास का आकलन एक जटिल, बहुआयामी तथा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य केवल पठन और लेखन कौशलों का मापन करना नहीं, बल्कि शिक्षार्थी की समग्र भाषायी, संप्रेषणात्मक तथा कार्यात्मक साक्षरता क्षमताओं को समझना भी है। श्रवण बाधिता के कारण

भाषा अर्जन, संप्रेषण माध्यम तथा अधिगम अनुभवों में जो विविधताएँ उत्पन्न होती हैं, वे साक्षरता विकास और उसके आकलन को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं।

इस अध्याय में स्पष्ट किया गया कि साक्षरता विकास शैशवावस्था से प्रारम्भ होकर जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में उभरती साक्षरता, विद्यालयी आयु में औपचारिक पठन-लेखन कौशल तथा वयस्क अवस्था में कार्यात्मक साक्षरता का विकास विभिन्न स्तरों पर होता है। अतः प्रत्येक आयु समूह के लिए आकलन की प्रकृति, उद्देश्य तथा उपकरण भी भिन्न होते हैं। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के साक्षरता आकलन में भाषा की विधा-निर्भर प्रकृति एक प्रमुख चुनौती के रूप में सामने आती है। कुछ विद्यार्थी मौखिक भाषा का उपयोग करते हैं, कुछ भारतीय सांकेतिक भाषा का तथा कुछ द्विभाषिक पद्धति अपनाते हैं। इसलिए सभी विद्यार्थियों के लिए एक समान परीक्षण उपयुक्त नहीं माना जा सकता। मूल्यांकन की भाषा एवं माध्यम का चयन विद्यार्थी की प्राथमिक भाषा तथा संप्रेषण शैली के अनुरूप होना चाहिए। अध्याय में मानकीकृत तथा शिक्षक-निर्मित उपकरणों की उपयोगिता और सीमाओं का भी विश्लेषण किया गया। मानकीकृत परीक्षण वैज्ञानिक रूप से विकसित होने के कारण विश्वसनीय एवं वैध माने जाते हैं, किन्तु अधिकांश परीक्षण सामान्य श्रवण वाले बच्चों पर आधारित होते हैं। दूसरी ओर शिक्षक-निर्मित उपकरण अधिक लचीले एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप होते हैं, परंतु उनमें मानकीकरण का अभाव हो सकता है। इसलिए दोनों प्रकार के उपकरणों का संतुलित एवं पूरक उपयोग अधिक प्रभावी माना जाता है। साक्षरता आकलन में मानकों के निर्धारण की समस्या भी महत्वपूर्ण है। श्रवण बाधित व्यक्तियों में श्रवण हानि की मात्रा, भाषा अनुभव, संप्रेषण प्रणाली, तकनीकी सहायता तथा

सामाजिक पृष्ठभूमि में व्यापक भिन्नताएँ होती हैं। इस कारण सभी विद्यार्थियों के लिए एक समान मानकों का उपयोग कई बार उचित नहीं होता। ऐसी परिस्थितियों में मानदण्ड-संदर्भित, प्रगति-आधारित तथा गतिशील आकलन दृष्टिकोण अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। अध्याय में पठन एवं लेखन के मापन पर भी विस्तार से चर्चा की गई। पठन आकलन में शब्द पहचान, पठन प्रवाह, शब्दावली तथा पठन-बोध जैसे घटकों का आकलन किया जाता है। वहीं लेखन आकलन में वर्तनी, व्याकरण, विचार संगठन, अभिव्यक्ति तथा शब्दावली का परीक्षण किया जाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए इन दोनों क्षेत्रों का आकलन करते समय भाषा पृष्ठभूमि, संप्रेषण शैली तथा उपलब्ध भाषायी अनुभवों को ध्यान में रखना आवश्यक है। साक्षरता विकास की प्रगति को वस्तुनिष्ठ रूप से समझने के लिए मापनीय संकेतकों की पहचान भी आवश्यक है। शब्दावली का आकार, प्रति मिनट पढ़े गए शब्द, पठन-बोध का प्रतिशत, लेखन त्रुटियों की संख्या तथा स्वतंत्र अभिव्यक्ति की क्षमता जैसे संकेतक आकलन को अधिक विश्वसनीय और सटीक बनाते हैं। समावेशी शिक्षा के संदर्भ में सुगम्यता को आकलन का अनिवार्य अंग माना गया है। सांकेतिक भाषा दुभाषिया, दृश्य समर्थन, अतिरिक्त समय, सहायक तकनीक तथा सरल भाषा जैसे अनुकूलन श्रवण बाधित विद्यार्थियों को अपनी वास्तविक क्षमताओं का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करते हैं। सुगम्यता के अभाव में मूल्यांकन परिणाम वास्तविक उपलब्धि के बजाय संप्रेषणीय बाधाओं को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। अध्याय में साक्षरता आकलन की प्रमुख चुनौतियों-जैसे भाषायी विविधता, मानकीकृत परीक्षणों का अभाव, प्रशिक्षित विशेषज्ञों की कमी, सांस्कृतिक पक्षपात, तकनीकी संसाधनों की सीमित उपलब्धता तथा बहुदिव्यांगता पर भी प्रकाश डाला गया। ये सभी कारक मूल्यांकन की निष्पक्षता, वैधता तथा विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकते हैं।

अंततः यह निष्कर्ष निकलता है कि श्रवण बाधित व्यक्तियों में साक्षरता विकास का प्रभावी आकलन केवल उपलब्धि मापन तक सीमित नहीं है। यह शिक्षार्थी की वर्तमान स्थिति, उसकी शक्तियों, कठिनाइयों तथा शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। उचित आकलन के आधार पर व्यक्तिगत शैक्षिक योजना, उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ तथा प्रभावी हस्तक्षेप कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं। इस प्रकार साक्षरता आकलन समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

11.15 शब्दावली

शब्द अर्थ

साक्षरता पढ़ने-लिखने एवं समझने की क्षमता

श्रवण बाधिता सुनने की क्षमता में कमी

पठन-बोध पढ़ी गई सामग्री को समझने की क्षमता

मानकीकृत परीक्षण वैज्ञानिक रूप से विकसित परीक्षण

विश्वसनीयता परिणामों की स्थिरता

वैधता किसी परीक्षण की वह क्षमता, जिससे वह उसी गुण या योग्यता का सही मापन करे जिसके लिए उसे बनाया गया है।

अभिगम्यता सभी के लिए पहुँच योग्य व्यवस्था

संकेतकमापन योग्य विशेषता

अभ्यास प्रश्न (स्व-मूल्यांकन प्रश्न)

26. साक्षरता का अर्थ क्या है?

27. पठन-बोध क्या है?

28. मानकीकृत उपकरण क्या हैं?

29. सुगम्यता का क्या अर्थ है?

30. शिक्षक-निर्मित उपकरणों के दो लाभ लिखिए।

30. पठन आकलन के तीन घटक बताइए।

31. मापनीय संकेतकों का महत्व स्पष्ट कीजिए।

32. सुगम्यता सुनिश्चित करने के दो उपाय लिखिए।

11.16 अभ्यास प्रश्नों (स्व-मूल्यांकन प्रश्न) के उत्तर

1. सूचना एकत्रित करना, विश्लेषण करना तथा अधिगम सुधारना

2. विद्यार्थी की क्षमताओं और सकारात्मक पक्षों पर

3. शब्दावली

4. कार्यात्मक

5. भाषा एवं साक्षरता विकास
6. पठन प्रवाह
7. व्यावहारिक
8. स्वतंत्र एवं प्रभावी
9. भाषा-संवेदनशील, सुगम तथा व्यक्ति-केंद्रित
10. द्वितीय
11. संचार विधा
12. अभाव, भिन्नता
13. विश्वसनीयता
14. पोर्टफोलियो
15. अवलोकन
16. गति
17. आलोचनात्मक
18. संरचना
19. प्री अकादमिक
20. प्रेक्षणीय
21. प्रासंगिकता

22. 2020

23. समाजिक

24. वैधता

25. पढ़ने, लिखने और समझने की क्षमता।

26. पढ़ी गई सामग्री को समझने की क्षमता।

27. वैज्ञानिक रूप से विकसित आकलन उपकरण।

28. सभी व्यक्तियों के लिए पहुँच योग्य व्यवस्था।

29. स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप, व्यक्तिगत आकलन संभव।

30. शब्द पहचान, प्रवाह, पठन-बोध।

31. ये प्रगति को वस्तुनिष्ठ रूप से मापने में सहायता करते हैं।

32. सांकेतिक भाषा सहायता एवं अतिरिक्त समय।

11.17 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. All India Council for Technical Education (AICTE). (2021). Accessibility and Inclusive Education Initiatives for Students with Disabilities. New Delhi: AICTE.

2. American Educational Research Association, American Psychological Association, & National Council on Measurement

in Education. (2014). Standards for educational and psychological testing. AERA.

3. Black, P., & Wiliam, D. (1998). Assessment and classroom learning. Assessment in Education: Principles, Policy & Practice, 5(1), 7–74.

4. Brookhart, S. M. (2010). Formative Assessment Strategies for Every Classroom (2nd ed., p. 2). ASCD.

5. Center for Applied Special Technology. Universal Design for Learning (UDL) Guidelines.

6. Çizmeci, H., et al. (2018). Evaluation of the reading and writing skills of children with cochlear implants. The Journal of International Advanced Otology, 14(1), 70–76. https://doi.org/10.5152/iao.2017.3505

7. Department of Empowerment of Persons with Disabilities. (2021). Accessible India Campaign (Sugamya Bharat Abhiyan): Guidelines and Framework. Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India.

8. Easterbrooks, S. R., & Beal-Alvarez, J. (2013). Literacy Instruction for Students Who Are Deaf and Hard of Hearing. Oxford University Press.

9. Elder, B. C., Rood, C. E., & Damiani, M. L. (2018). Writing strength-based IEPs for students with disabilities in inclusive education. International Journal of Whole Schooling, 14(1), 1-27. https://rdw.rowan.edu/education_facpub/15/

10. Epstein, M. H. (2003). Strength-based assessment. In Encyclopedia of Special Education (pp. 1-3). John Wiley & Sons.

11. Gearheart, B. R., & Gearheart, C. J. (1990). Introduction to special education (as cited in Pierangelo, R., & Giuliani, G. A. (2006). Assessment in special education: A practical approach. Pearson).

12. Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016. Ministry of Law and Justice, New Delhi.

13. Graham, S., & Harris, K. R. (2018). An Examination of Writing Development and Instruction.

14. Harris, M., Terlektsi, E., & Kyle, F. E. (2017). Literacy outcomes for primary school children who are deaf and hard of hearing: A cohort comparison study. Journal of Speech, Language, and Hearing Research, 60(3), 701–711.

15. Humphries, T., Kushalnagar, P., Mathur, G., et al. (2012). Language Acquisition for Deaf Children.

16. Indian Sign Language Research and Training Centre (ISLRTC). (n.d.). Indian Sign Language Research and Training Centre. Department of Empowerment of Persons with Disabilities, Government of India.

17. Krishan, S. & Radhakrishnan, K. V. (2019). Understanding and Application of Universal Design for Learning (UDL) among Special Educators in Inclusive Classroom. International Journal of Research in Social Sciences, Vol. 9 (Issue 7), pp. 56-69. ISSN 2249- 2496. https://indianjournals.com/article/ijrss-9-7-005

18. Krishan, S. & Venkata, R. K. (2024). Ways to Prepare Accessible Documents for Students with Disabilities. In R. Sarkar & S. K. Baskey (Eds.), A Handbook on Accommodation for Students with Disabilities in Higher Education (pp. 30-39). Redshine Publications. ISBN 9198924060. https://chapters.redshine.in/index.php/redshine/article/view/925

19. Krishan, S., & Sharma, N. (2023). Awareness of Universal Design for Learning (UDL) among Teachers in India. Journal of Educational Technology Development and Exchange, 16(1), 109-125. ISSN No. online: 1941-8035, print: 1941-8027. https://aquila.usm.edu/jetde/vol16/iss1/6/

20. Lederberg, A. R., Schick, B., & Spencer, P. E. (2013). Language and literacy development of deaf and hard-of-hearing

children: Successes and challenges. Developmental Psychology, 49(1), 15–30.

21. Luft, P. (2020). Strengths-based reading assessment for deaf and hard-of-hearing students. American Annals of the Deaf, 165(3), 293–317.

22. Marschark, M., & Spencer, P. E. (2016). The Oxford Handbook of Deaf Studies in Learning and Cognition. Oxford University Press.

23. Mayer, C., & Akamatsu, C. T. (2011). Bilingual-Bicultural Models of Literacy Education for Deaf Students.

24. Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India, New Delhi.

25. Moeller, M. P., Tomblin, J. B., & the Early Intervention Project. (2007). Current state of knowledge: Language and literacy of children with hearing impairment. Ear and Hearing, 28(6), 740–753.

26. National Council for Teacher Education (NCTE). (2025). Accessibility Guidelines for Teacher Education Institutions. New Delhi: NCTE.

27. National Council of Educational Research and Training (NCERT) & Central Institute of Educational Technology (CIET).

(2021). Guidelines for Development of e-Content for Children with Disabilities. New Delhi: NCERT.

28. Overton, T. (2016). Assessing learners with special needs: An applied approach (8th ed.). Pearson.

29. Paul, P. V. (2021). Literacy and Deafness: The Development of Reading, Writing and Literate Thought.

30. Paul, P. V., & Lee, C. (2024). The Education of Deaf and Hard of Hearing Learners. Routledge.

31. Perfetti, C. A., & Stafura, J. Z. (2014). Word Knowledge in a Theory of Reading Comprehension. Scientific Studies of Reading, 18(1), 22–37.

32. Pierangelo, R., & Giuliani, G. A. (2006). Assessment in special education: A practical approach (2nd ed.). Pearson.

33. Pizzo, L. (2019). Assessment of language and literacy in children who are d/Deaf and hard of hearing. Education Sciences, 9(3), 223. https://doi.org/10.3390/educsci9030223

34. Qi, S., & Mitchell, R. E. (2012). Large-scale academic achievement testing of deaf and hard-of-hearing students: Past, present, and future. Journal of Deaf Studies and Deaf Education, 17(1), 1–18.

35. Rights of Persons with Disabilities Act, 2016; RCI Guidelines on Inclusive Education; NCERT Position Papers on Assessment)

36. Saleebey, D. (2013). The strengths perspective in social work practice (6th ed.). Pearson.

37. Salvia, J., Ysseldyke, J., & Bolt, S. (2017). Assessment in Special and Inclusive Education.

38. U.S. Department of Education. (2017). Sec. 300.304 Evaluation procedures. Individuals with Disabilities Education Act. https://sites.ed.gov/idea/regs/b/d/300.304

39. UNESCO (2020). Global Education Monitoring Report.

40. United Nations. (2006). Convention on the Rights of Persons with Disabilities (CRPD). New York: United Nations.

41. University Grants Commission. (2021). Draft Guidelines on Accessibility of Higher Education Institutions for Persons with Disabilities. New Delhi: UGC.

42. University Grants Commission. (2026). Accessibility Guidelines and Standards for Higher Education Institutions and Universities. New Delhi: UGC.

43. Werfel, K. L. (2017). Emergent literacy skills in preschool children with hearing loss. Journal of Deaf Studies and Deaf

Education, 22(3), 251–263. https://doi.org/10.1093/deafed/enx013

44. Whitehurst, G. J., & Lonigan, C. J. (1998). Child Development and Emergent Literacy.

45. Wisconsin Department of Public Instruction. (n.d.). Comprehensive special education evaluations for students who are deaf or hard of hearing.

46. World Health Organization (WHO). (2021). World Report on Disability. Geneva: World Health Organization.

11.18 निबंधात्मक प्रश्न

1. शैक्षिक आकलन की अवधारणा, क्षेत्र एवं सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन कीजिए। श्रवण बाधित वाले व्यक्तियों के संदर्भ में इसके महत्व पर चर्चा कीजिए।

2. शिक्षा में समग्र आकलन तथा क्षमता-आधारित दृष्टिकोण की भूमिका पर प्रकाश डालिए। वर्तमान विशेष शिक्षा परिदृश्य में इनकी प्रासंगिकता बताइए।

3. श्रवण बाधित व्यक्तियों में साक्षरता विकास के आकलन की प्रमुख चुनौतियों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

4. मानकीकृत एवं शिक्षक-निर्मित उपकरणों की तुलना कीजिए।

5. पठन एवं लेखन कौशल के आकलन की विधियों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

6. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सुगम्य आकलन प्रणाली की आवश्यकता एवं महत्व पर चर्चा कीजिए।

इकाई 12

शैक्षिक आकलन एवं प्रतिवेदन की विधियाँ, तकनीकें तथा उपकरणः औपचारिक एवं अनौपचारिक, श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अनुदेशन माध्यम के चयन के मानदण्डः घर, स्कूल और समुदाय में उपयोग की जाने वाली भाषाएँ

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 शैक्षिक आकलनः अर्थ एवं अवधारणा

12.3.1 शैक्षिक आकलन की अवधारणा

12.4 श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन

12.4.1 शैक्षिक आकलन की प्रमुख विशेषताएँ

12.4.2 शैक्षिक आकलन के उद्देश्य

12.4.3 शैक्षिक आकलन की प्रक्रिया

12.4.4 शैक्षिक आकलन का महत्व

12.5 शैक्षिक आकलन की विधियाँ, तकनीकें एवं उपकरण

12.5.1 औपचारिक आकलन

12.5.1.1 औपचारिक आकलन की अवधारणा

12.5.1.2 औपचारिक आकलन की विशेषताएँ

12.5.1.3 औपचारिक आकलन के प्रमुख उपकरण

12.5.1.4 औपचारिक आकलन की उपयोगिता एवं सीमाएँ

12.5.2 अनौपचारिक आकलन

12.5.2.1 अनौपचारिक आकलन की अवधारणा

12.5.2.2 अनौपचारिक आकलन की प्रमुख विशेषताएँ

12.5.2.3 अनौपचारिक आकलन की प्रमुख तकनीकें एवं उपकरण

12.5.2.4 श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए अनौपचारिक आकलन का महत्व

12.5.2.5 आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

12.6 श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए प्रमुख आकलन उपकरण एवं उनके मूल्यांकन क्षेत्र

12.7 प्रतिवेदन की तकनीकें

12.7.1 प्रतिवेदन की अवधारणा

12.7.2 प्रतिवेदन की प्रमुख तकनीकें

12.7.3 आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

12.8 श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अनुदेशन माध्यम के चयन के मानदण्ड

12.8.1 अनुदेशन माध्यम की अवधारणा

12.8.2 अनुदेशन माध्यम के चयन के प्रमुख मानदण्ड

12.8.3 अनुदेशन माध्यम चयन हेतु बहुआयामी आकलन

12.9 घर, विद्यालय एवं समुदाय में प्रयुक्त भाषाओं की भूमिका

12.9.1 घर में प्रयुक्त भाषा की भूमिका

12.9.1.1 घर में प्रयुक्त भाषा के प्रमुख प्रभाव

12.9.2 विद्यालय में प्रयुक्त भाषा की भूमिका

12.9.2.1 विद्यालयी भाषा की प्रमुख भूमिकाएँ

12.9.3 समुदाय में प्रयुक्त भाषा की भूमिका

12.9.4 घर, विद्यालय एवं समुदाय की भाषाओं में सामंजस्य का महत्व

12.9.5 द्विभाषिक एवं बहुभाषिक परिप्रेक्ष्य

12.10 भाषा एवं अनुदेशन माध्यम के चयन में चुनौतियाँ

12.11 सारांश

12.12 शब्दावली

12.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

12.14 संदर्भ ग्रन्थ सूची

12.15 निबंधात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

शिक्षा की प्रक्रिया में आकलन एक महत्वपूर्ण घटक है, जो विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धियों, क्षमताओं, कठिनाइयों तथा शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करने में सहायता करता है। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन केवल शैक्षणिक उपलब्धियों के मापन तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह उनकी भाषा, संप्रेषण, सामाजिक सहभागिता तथा कार्यात्मक कौशलों का भी मूल्यांकन करता है।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति का सटीक आकलन तभी संभव है जब मूल्यांकन प्रक्रिया उनकी भाषा और संप्रेषण आवश्यकताओं के अनुरूप हो। इसी प्रकार आकलन के परिणामों का व्यवस्थित प्रतिवेदन शिक्षकों, अभिभावकों तथा अन्य विशेषज्ञों को उपयुक्त शैक्षिक निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में आकलन की दो प्रमुख श्रेणियाँ मानी जाती हैं- औपचारिक तथा अनौपचारिक। दोनों प्रकार के आकलन विद्यार्थियों की अधिगम स्थिति को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त श्रवण

बाधित विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त अनुदेशन माध्यम का चयन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भाषा ही अधिगम एवं संप्रेषण का आधार है। पॉल (2021) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय में प्रयुक्त भाषा और संप्रेषण प्रणाली उनकी भाषा आवश्यकताओं तथा पारिवारिक भाषायी वातावरण के साथ कितनी संगत है।

12.2 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थीकृ

1. शैक्षिक आकलन एवं प्रतिवेदन की अवधारणा को समझ सकेंगे।

2. औपचारिक एवं अनौपचारिक आकलन की विधियों एवं उपकरणों का वर्णन कर सकेंगे

3. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों की व्याख्या कर सकेंगे ।

4. अनुदेशन माध्यम के चयन के मानदण्डों का विश्लेषण कर सकेंगे।

5. घर, विद्यालय तथा समुदाय में प्रयुक्त भाषाओं की भूमिका को समझ सकेंगे।

6. भाषा-आधारित शैक्षिक निर्णयों के महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

12.3 शैक्षिक आकलनः अर्थ एवं अवधारणा

शिक्षा की प्रक्रिया में आकलन एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है, जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को समझने तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति का निर्धारण करने में सहायता करता है। शैक्षिक आकलन केवल परीक्षा लेकर अंक देने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों, व्यवहारों, अधिगम आवश्यकताओं तथा विकास की वर्तमान स्थिति को समझने की एक व्यवस्थित एवं निरंतर प्रक्रिया है।

शैक्षिक आकलन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विद्यार्थी के अधिगम से संबंधित सूचनाओं को एकत्रित, विश्लेषित तथा व्याख्यायित किया जाता है, ताकि उसके संबंध में उचित शैक्षिक निर्णय लिए जा सकें। यह प्रक्रिया शिक्षण की योजना बनाने, अधिगम कठिनाइयों की पहचान करने, प्रगति की निगरानी करने तथा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन करने में सहायता करती है।

साल्विया, यस्सेल्डाइक और बोल्ट (2017) के अनुसार "आकलन शैक्षिक निर्णय लेने के उद्देश्य से सूचनाएँ एकत्रित करने की प्रक्रिया है।"

इसी प्रकार लर्नर, लोवेन्थल और ईगन (2022) के अनुसार आकलन वह साधन है जिसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की शक्तियों, सीमाओं तथा शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान कर पाते हैं।

12.3.1 शैक्षिक आकलन की अवधारणा

आधुनिक शिक्षा में आकलन को केवल परिणाम नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। यह शिक्षण और अधिगम के बीच एक सेतु का कार्य करता है। शिक्षक आकलन के माध्यम से यह जान पाता है किकृ

- विद्यार्थी क्या सीख चुका है?
- वह किस स्तर पर सीख रहा है?
- उसे किन क्षेत्रों में कठिनाई हो रही है?
- कौन-सी शिक्षण रणनीतियाँ प्रभावी हैं?
- किन क्षेत्रों में अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है?

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में यह महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि प्रत्येक शिक्षार्थी की आवश्यकताएँ, क्षमताएँ एवं अधिगम शैली भिन्न होती हैं। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों में भाषा, संप्रेषण तथा साक्षरता विकास की स्थिति को समझने के लिए आकलन आवश्यक होता है।

12.4 श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन

श्रवण बाधित विद्यार्थियों का शैक्षिक आकलन सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक व्यापक होता है। इसमें केवल शैक्षणिक उपलब्धियों का ही नहीं, बल्कि निम्न क्षेत्रों का भी मूल्यांकन किया जाता है-भाषा विकास, संप्रेषण कौशल, पठन एवं लेखन क्षमता, श्रवण कौशल, वाक् एवं भाषा विकास, सामाजिक समायोजन, कार्यात्मक कौशल, संज्ञानात्मक विकास ।

मार्सचर्क और स्पेंसर (2016) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए आकलन का उद्देश्य केवल कमियों की पहचान करना नहीं, बल्कि उनकी संभावनाओं और अधिगम क्षमताओं को समझना भी है ।

12.4.1 शैक्षिक आकलन की प्रमुख विशेषताएँ

1. निरंतर प्रक्रिया

आकलन एक बार की गतिविधि नहीं है, बल्कि यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के साथ निरंतर चलता रहता है। उदाहरण- शिक्षक पूरे सत्र के दौरान विद्यार्थी के पठन कौशल का समय-समय पर मूल्यांकन करता है।

2. व्यवस्थित प्रक्रिया

आकलन पूर्व निर्धारित उद्देश्यों, उपकरणों एवं मानदण्डों के आधार पर किया जाता है। उदाहरण- पठन-बोध का मूल्यांकन निर्धारित प्रश्नों और अंकन योजना के अनुसार किया जाता है।

3. निर्णयोन्मुख प्रक्रिया

आकलन का उद्देश्य शैक्षिक निर्णय लेना होता है। उदाहरण- यदि विद्यार्थी को भाषा संबंधी कठिनाई है, तो उसके लिए विशेष भाषा हस्तक्षेप कार्यक्रम तैयार किया जा सकता है।

4. बहुआयामी प्रक्रिया

आकलन केवल ज्ञान का नहीं, बल्कि कौशल, व्यवहार, अभिवृत्ति तथा संप्रेषण क्षमता का भी होता है। उदाहरण-श्रवण बाधित विद्यार्थी का मूल्यांकन पठन, लेखन, संकेत भाषा तथा सामाजिक सहभागिता सभी क्षेत्रों में किया जा सकता है।

5. व्यक्ति-केंद्रित प्रक्रिया

आधुनिक आकलन विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं क्षमताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। उदाहरण-भारतीय सांकेतिक भाषा उपयोग करने वाले

विद्यार्थी के लिए मूल्यांकन में सांकेतिक भाषा दुभाषिए की सहायता दी जा सकती है।

12.4.2 शैक्षिक आकलन के उद्देश्य

शैक्षिक आकलन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों की वर्तमान उपलब्धि एवं सीखने के स्तर की पहचान करना है, ताकि यह ज्ञात हो सके कि वे क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं। इसके माध्यम से अधिगम में आने वाली कठिनाइयों एवं बाधाओं की पहचान की जाती है तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं और आवश्यक सहयोग सेवाओं का निर्धारण किया जाता है। आकलन के परिणामों के आधार पर उपयुक्त शिक्षण योजनाएँ एवं प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित की जाती हैं। साथ ही, विद्यार्थियों की प्रगति की निरंतर निगरानी की जाती है और प्राप्त सूचनाओं के आधार पर कक्षा शिक्षण, विशेष सहायता, आईईपी निर्माण तथा अन्य शैक्षिक हस्तक्षेपों से संबंधित उचित निर्णय लिए जाते हैं। इस प्रकार शैक्षिक आकलन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, समावेशी एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

12.4.3 शैक्षिक आकलन की प्रक्रिया

शैक्षिक आकलन सामान्यतः निम्न चरणों में सम्पन्न होता हैकृ

1. वर्तमान उपलब्धि स्तर की पहचान दृ विद्यार्थी वर्तमान में क्या जानता है और क्या कर सकता है, इसका निर्धारण करना।

2. अधिगम कठिनाइयों की पहचान दृ सीखने में आने वाली समस्याओं, त्रुटियों एवं बाधाओं की पहचान करना।

3. शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण दृ यह जानना कि विद्यार्थी को किस प्रकार के सहयोग, संसाधनों एवं सेवाओं की आवश्यकता है।

4. शिक्षण योजना बनाना दृ आकलन के परिणामों के आधार पर प्रभावी शिक्षण रणनीतियों एवं शिक्षण योजनाओं का विकास करना।

5. प्रगति की निगरानी दृ समय-समय पर विद्यार्थी की प्रगति का मूल्यांकन कर उसकी सीखने की गति और उपलब्धियों का पता लगाना।

6. शैक्षिक निर्णय लेना दृ कक्षा उन्नयन, विशेष सहायता, व्यक्तिगत शिक्षण योजना निर्माण तथा अन्य शैक्षिक हस्तक्षेपों से संबंधित उचित निर्णय लेना।

उदाहरणः श्रवण बाधित विद्यार्थी का शैक्षिक आकलन मान लीजिए कक्षा 5 का एक श्रवण बाधित विद्यार्थी हिंदी पढ़ने में कठिनाई अनुभव कर रहा है। शिक्षक निम्नलिखित आकलन करता हैकृशब्द पहचान, परीक्षण, पठन-बोध परीक्षण, शब्दावली मूल्यांकन, लेखन नमूना विश्लेषण, कक्षा अवलोकन।

आकलन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी की शब्द पहचान क्षमता अच्छी है, लेकिन पठन-बोध अपेक्षाकृत कम है। इसके आधार पर शिक्षक अतिरिक्त शब्दावली विकास एवं पठन-बोध गतिविधियाँ प्रारम्भ करता है। यह उदाहरण दर्शाता है कि आकलन केवल समस्या की पहचान नहीं करता, बल्कि समाधान की दिशा भी प्रदान करता है।

12.4.4 शैक्षिक आकलन का महत्व

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलनकृ

- व्यक्तिगत शैक्षिक योजना निर्माण में सहायता करता है।
- समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाता है।

- शिक्षण रणनीतियों में सुधार लाता है।
- अभिभावकों को प्रगति की जानकारी प्रदान करता है।
- भाषा एवं संप्रेषण संबंधी आवश्यकताओं की पहचान करता है।
- शैक्षिक हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है।

डब्ल्यू एच ओ (2021) के अनुसार प्रारम्भिक पहचान एवं नियमित शैक्षिक आकलन श्रवण बाधित बच्चों के भाषा एवं साक्षरता विकास को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शैक्षिक आकलन एक व्यवस्थित, निरंतर तथा निर्णयोन्मुख प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धियों, क्षमताओं एवं आवश्यकताओं को समझना है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि यह उनकी भाषा, संप्रेषण, साक्षरता एवं शैक्षणिक विकास की वास्तविक स्थिति का आकलन करने में सहायता करता है। प्रभावी आकलन के आधार पर उपयुक्त शिक्षण योजना, व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम तथा आवश्यक हस्तक्षेप विकसित किए जा सकते हैं, जिससे शिक्षार्थी के समग्र विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. शैक्षिक आकलन एक.....निरंतर तथा निर्णयोन्मुख प्रक्रिया है।

2. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए आकलन का उद्देश्य केवल कमियों की पहचान करना नहीं, बल्कि उनकी.....और अधिगम क्षमताओं को समझना भी है।

3. आधुनिक शिक्षा में आकलन को केवल परिणाम नहीं, बल्कि एक.....के रूप में देखा जाता है।

12.5 शैक्षिक आकलन की विधियाँ, तकनीकें एवं उपकरण

श्रवण बाधित व्यक्तियों की शैक्षिक आवश्यकताएँ सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न हो सकती हैं। उनकी भाषा, संप्रेषण शैली, श्रवण क्षमता, साक्षरता स्तर तथा अधिगम अनुभवों में विविधता पाई जाती है। इसलिए उनके शैक्षिक आकलन के लिए ऐसी विधियों, तकनीकों एवं उपकरणों की आवश्यकता होती है जो उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं तथा संप्रेषण संबंधी विशेषताओं के अनुरूप हों।

शैक्षिक आकलन का उद्देश्य केवल यह जानना नहीं है कि विद्यार्थी ने कितना सीखा है, बल्कि यह भी समझना है कि वह कैसे सीखता है, किन क्षेत्रों में कठिनाई अनुभव करता है तथा उसकी शैक्षिक आवश्यकताएँ क्या हैं। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में आकलन की प्रक्रिया भाषा, संप्रेषण, साक्षरता, शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक सहभागिता जैसे विभिन्न आयामों को समाहित करती है।

साल्विया, यस्सेल्डाइक और बोल्ट (2017) के अनुसार प्रभावी आकलन के लिए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी की क्षमताओं और आवश्यकताओं का समग्र चित्र प्राप्त हो सके।

सामान्यतः शैक्षिक आकलन को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जाता हैकृ

1. औपचारिक आकलन

2. अनौपचारिक आकलन

दोनों प्रकार के आकलन एक-दूसरे के पूरक हैं और श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

12.5.1 औपचारिक आकलन

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक आकलन में औपचारिक आकलन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों, भाषा दक्षता, संज्ञानात्मक क्षमताओं तथा साक्षरता विकास का वस्तुनिष्ठ एवं व्यवस्थित मूल्यांकन करने का माध्यम प्रदान करता है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में औपचारिक आकलन का उपयोग विद्यार्थियों की वर्तमान उपलब्धि स्तर, शैक्षिक आवश्यकताओं, विशेष सेवाओं की आवश्यकता तथा हस्तक्षेप कार्यक्रमों की योजना बनाने के लिए किया जाता है।

औपचारिक आकलन एक वैज्ञानिक एवं संरचित प्रक्रिया है, जिसमें पूर्वनिर्धारित नियमों, मानकों तथा मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार के आकलन में परीक्षण प्रशासन, निर्देश, समय-सीमा, अंकन तथा परिणामों की व्याख्या सभी विद्यार्थियों के लिए समान होती है, जिससे प्राप्त परिणामों की विश्वसनीयता एवं तुलनात्मकता सुनिश्चित की जा सके। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में औपचारिक आकलन का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इसके माध्यम से भाषा, साक्षरता, शैक्षणिक उपलब्धि तथा संज्ञानात्मक विकास के विभिन्न आयामों का व्यवस्थित मूल्यांकन किया जा सकता है। यद्यपि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की भाषायी एवं संप्रेषणीय

विविधताओं के कारण औपचारिक परीक्षणों के उपयोग में सावधानी अपेक्षित होती है, फिर भी शैक्षिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

साल्विया, यस्सेल्डाइक और बोल्ट (2017) के अनुसार औपचारिक आकलन एक ऐसी मानकीकृत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के प्रदर्शन की तुलना निर्धारित मानकों अथवा संदर्भ समूहों से की जा सकती है, जिससे उनकी उपलब्धियों एवं आवश्यकताओं का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन संभव होता है।

12.5.1.1 औपचारिक आकलन की अवधारणा

औपचारिक आकलन इस सिद्धांत पर आधारित है कि किसी भी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन एक समान एवं नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाना चाहिए, ताकि प्राप्त परिणाम विश्वसनीय एवं वैध हों। इसके अंतर्गत प्रयुक्त परीक्षणों का निर्माण वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से किया जाता है तथा उनकी विश्वसनीयता, वैधता और मानकीकरण की जाँच की जाती है।

यह आकलन केवल यह जानने का प्रयास नहीं करता कि विद्यार्थी ने कितना सीखा है, बल्कि यह भी निर्धारित करता है कि उसका प्रदर्शन समान आयु अथवा कक्षा समूह के अन्य विद्यार्थियों की तुलना में किस स्तर का है। इस प्रकार औपचारिक आकलन शैक्षिक योजना निर्माण, विशेष सेवाओं की पात्रता निर्धारण तथा प्रगति मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। विशेष शिक्षा में औपचारिक आकलन को निदानात्मक, स्थान निर्धारण (प्लेसमेंट), प्रगति निगरानी तथा उपलब्धि मूल्यांकन के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

12.5.1.2 औपचारिक आकलन की विशेषताएँ

औपचारिक आकलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका मानकीकृत एवं वैज्ञानिक स्वरूप है। इसमें प्रत्येक विद्यार्थी को समान निर्देश, समान समय तथा समान मूल्यांकन मानदण्ड प्रदान किए जाते हैं। इससे प्राप्त परिणामों की तुलना एवं व्याख्या अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय होती है।

औपचारिक आकलन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैंकृ

ऽ यह मानकीकृत प्रक्रिया पर आधारित होता है।

ऽ परीक्षण प्रशासन के लिए निश्चित नियम एवं प्रक्रियाएँ निर्धारित होती हैं।

ऽ अंकन वस्तुनिष्ठ एवं पूर्वनिर्धारित मानदण्डों के अनुसार किया जाता है।

ऽ परिणामों की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित की जाती है।

ऽ विद्यार्थियों के प्रदर्शन की तुलना मानकों अथवा अन्य समूहों से की जा सकती है।

ऽ शैक्षिक निर्णय लेने हेतु प्रमाण-आधारित जानकारी उपलब्ध कराता है।

12.5.1.3 औपचारिक आकलन के प्रमुख उपकरण

औपचारिक आकलन में विभिन्न प्रकार के मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में ये परीक्षण भाषा, साक्षरता, शैक्षणिक उपलब्धि तथा संज्ञानात्मक विकास के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन करते हैं।

1. उपलब्धि परीक्षण

उपलब्धि परीक्षण किसी विषय-वस्तु में विद्यार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान एवं कौशलों का मूल्यांकन करते हैं। ये परीक्षण सामान्यतः पाठ्यक्रम आधारित होते हैं और यह निर्धारित करते हैं कि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए उपलब्धि परीक्षणों का उपयोग भाषा, गणित, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों में शैक्षणिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थ, यदि कक्षा 6 का कोई श्रवण बाधित विद्यार्थी हिंदी भाषा में अध्ययन कर रहा है, तो उसके पठन-बोध, शब्दार्थ ज्ञान तथा लिखित अभिव्यक्ति का मूल्यांकन उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया जा सकता है। हालाँकि यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भाषा-आधारित उपलब्धि परीक्षणों में कम प्रदर्शन सदैव कम शैक्षणिक क्षमता का संकेत नहीं होता, कई बार यह भाषा की सीमित उपलब्धता अथवा परीक्षण माध्यम की अनुपयुक्तता का परिणाम भी हो सकता है।

2. भाषा आकलन

भाषा श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक विकास का आधार है। इसलिए भाषा आकलन विशेष महत्व रखता है। भाषा आकलन के माध्यम से ग्रहणशील भाषा तथा अभिव्यंजक भाषा दोनों का आकलन किया जाता है। भाषा आकलन के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं: शब्दावली विकास, वाक्य संरचना, व्याकरणिक दक्षता, भाषा बोध, कथात्मक कौशल, लिखित भाषा दक्षता। भाषा परीक्षणों के परिणाम शिक्षक को यह समझने में सहायता करते हैं कि विद्यार्थी की भाषा संबंधी कठिनाइयाँ किन क्षेत्रों में केंद्रित हैं तथा किस प्रकार के हस्तक्षेप की आवश्यकता है। पॉल (2021) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों में साक्षरता उपलब्धि का सबसे महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक भाषा दक्षता है।

3. साक्षरता आकलन

साक्षरता आकलन का उद्देश्य पठन एवं लेखन कौशलों का व्यवस्थित आकलन करना है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों में साक्षरता विकास का स्तर प्रायः भाषा अनुभवों, संप्रेषण माध्यम तथा प्रारम्भिक हस्तक्षेप की गुणवत्ता से प्रभावित होता है। साक्षरता आकलन में निम्न घटक सम्मिलित होते हैंः शब्द पहचान, पठन प्रवाह, पठन-बोध, शब्दावली ज्ञान, लेखन कौशल, व्याकरणिक शुद्धता, विचार संगठन। परफेटी और स्टाफुरा (2014) के अनुसार प्रभावी पठन-बोध शब्द पहचान, शब्दावली ज्ञान तथा पूर्वज्ञान के परस्पर अंतःक्रिया का परिणाम होता है।

4. बुद्धि एवं संज्ञानात्मक आकलन

श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक कठिनाइयों का समुचित विश्लेषण करने के लिए कई बार संज्ञानात्मक क्षमताओं का मूल्यांकन आवश्यक होता है। बुद्धि एवं संज्ञानात्मक परीक्षणों के माध्यम से ध्यान, स्मृति, समस्या-समाधान, तार्किक चिंतन तथा कार्यकारी कार्यों का अध्ययन किया जाता है।

विशेषज्ञ यह सावधानी बरतते हैं कि प्रयुक्त परीक्षण भाषा अथवा श्रवण-निर्भर न हों, अन्यथा परिणाम वास्तविक संज्ञानात्मक क्षमता को प्रतिबिंबित नहीं करेंगे।

12.5.1.4 औपचारिक आकलन की उपयोगिता एवं सीमाएँ

औपचारिक आकलन का प्रमुख लाभ यह है कि यह मानकीकृत, विश्वसनीय एवं तुलनात्मक जानकारी प्रदान करता है। इसके माध्यम से विभिन्न विद्यार्थियों अथवा समूहों की उपलब्धियों की तुलना संभव होती है तथा निदानात्मक निर्णय लेने में सहायता मिलती है। किन्तु श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। अधिकांश मानकीकृत परीक्षण सामान्य श्रवण वाले बच्चों पर विकसित किए गए हैं और वे सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं अथवा द्विभाषिक

विद्यार्थियों की भाषायी विविधताओं को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं करते। मार्सचर्क और हौसर (2012) का मत है कि पारंपरिक मानकीकृत परीक्षण अनेक बार श्रवण बाधित विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं का कम आकलन करते हैं क्योंकि उनमें भाषा एवं संस्कृति संबंधी पक्षपात विद्यमान हो सकता है।

12.5.2 अनौपचारिक आकलन

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक आकलन में अनौपचारिक आकलन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यद्यपि औपचारिक एवं मानकीकृत परीक्षण विद्यार्थियों की उपलब्धियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं, तथापि वे हमेशा शिक्षार्थी की वास्तविक क्षमताओं, दैनिक प्रदर्शन, संप्रेषण शैली तथा अधिगम व्यवहार का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं कर पाते। ऐसी परिस्थितियों में अनौपचारिक आकलन विद्यार्थी के अधिगम एवं विकास को समझने का एक प्रभावी माध्यम बन जाता है। अनौपचारिक आकलन एक सतत, लचीली तथा संदर्भ-आधारित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी के व्यवहार, प्रदर्शन, कौशल, भाषा उपयोग तथा शैक्षिक प्रगति का आकलन वास्तविक परिस्थितियों में किया जाता है। यह आकलन प्रायः कक्षा-कक्ष, खेल गतिविधियों, समूह कार्यों, परियोजनाओं तथा दैनिक जीवन की परिस्थितियों में सम्पन्न होता है। इसका उद्देश्य केवल उपलब्धियों का मापन करना नहीं, बल्कि अधिगम प्रक्रिया को समझना और शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाना भी होता है।

साल्विया, यस्सेल्डाइक और बोल्ट (2017) के अनुसार अनौपचारिक आकलन विद्यार्थियों के प्रामाणिक प्रदर्शन को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है, क्योंकि यह उन्हें कृत्रिम परीक्षण परिस्थितियों के बजाय स्वाभाविक अधिगम वातावरण में देखने का अवसर प्रदान करता है।

12.5.2.1 अनौपचारिक आकलन की अवधारणा

अनौपचारिक आकलन इस धारणा पर आधारित है कि अधिगम एक सतत प्रक्रिया है और विद्यार्थी की प्रगति को केवल एक परीक्षण के आधार पर नहीं समझा जा सकता। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों में भाषा, संप्रेषण तथा सामाजिक अन्तःक्रियाओं का विकास विभिन्न गति से होता है। इसलिए शिक्षकों को ऐसे आकलन दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं एवं अधिगम संदर्भों को ध्यान में रख सके। अनौपचारिक आकलन में शिक्षक केवल यह नहीं देखता कि विद्यार्थी क्या जानता है, बल्कि यह भी समझने का प्रयास करता है कि वह कैसे सीखता है, किन रणनीतियों का उपयोग करता है तथा किन परिस्थितियों में उसका प्रदर्शन बेहतर होता है।

12.5.2.2 अनौपचारिक आकलन की प्रमुख विशेषताएँ

अनौपचारिक आकलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी लचीलापन है। इसे विद्यार्थी की आवश्यकता, आयु, भाषा स्तर तथा संप्रेषण शैली के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है। यह सतत एवं विकासात्मक प्रकृति का होता है और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा रहता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

- यह वास्तविक जीवन एवं वास्तविक अधिगम परिस्थितियों पर आधारित होता है।
- इसमें विद्यार्थी के व्यवहार एवं प्रदर्शन का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जाता है।
- यह व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करता है।

ऽ यह शिक्षण सुधार एवं हस्तक्षेप योजना बनाने में सहायता करता है।

ऽ यह भाषा एवं सांस्कृतिक विविधताओं के प्रति अधिक संवेदनशील होता है।

ऽ यह व्यक्तिगत शिक्षा योजना निर्माण के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।

12.5.2.3 अनौपचारिक आकलन की प्रमुख तकनीकें एवं उपकरण

1. अवलोकन

अवलोकन अनौपचारिक आकलन की सबसे प्राचीन एवं व्यापक रूप से प्रयुक्त तकनीक है। इसके अंतर्गत शिक्षक विद्यार्थी के व्यवहार, सहभागिता, भाषा उपयोग, सामाजिक अन्तःक्रिया तथा समस्या- समाधान कौशलों का व्यवस्थित अध्ययन करता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में अवलोकन विशेष महत्व रखता है क्योंकि अनेक महत्वपूर्ण व्यवहार मानकीकृत परीक्षणों द्वारा मापे नहीं जा सकते। उदाहरण के लिए, शिक्षक यह देख सकता है कि विद्यार्थी-

ऽ सांकेतिक भाषा का उपयोग कितनी दक्षता से करता है।

ऽ समूह गतिविधियों में किस प्रकार सहभागिता करता है।

ऽ दृश्य संकेतों को किस प्रकार समझता है।

ऽ सहपाठियों के साथ संप्रेषण कैसे स्थापित करता है।

अवलोकन से प्राप्त सूचनाएँ विद्यार्थी की कार्यात्मक संप्रेषण क्षमता तथा सामाजिक समायोजन को समझने में सहायता करती हैं।

2. जांच सूची

जांच सूची एक संरचित उपकरण है जिसमें विशिष्ट व्यवहारों, कौशलों अथवा उपलब्धियों की सूची होती है। शिक्षक यह दर्ज करता है कि कोई विशेष व्यवहार उपस्थित है या नहीं। श्रवण बाधित विद्यार्थियों में भाषा, पठन, लेखन तथा संप्रेषण कौशलों के विकास की निगरानी के लिए जांच सूची का व्यापक उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ, प्रारम्भिक साक्षरता विकास की जांच सूची में निम्न बिंदु सम्मिलित हो सकते हैं-

- चित्र पहचानता है।
- सरल शब्द पढ़ता है।
- संकेतों के माध्यम से कहानी का अर्थ व्यक्त करता है।
- स्वतंत्र रूप से वाक्य लिखता है।

जांच सूची की सहायता से शिक्षक विद्यार्थी की प्रगति को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड कर सकता है तथा समय के साथ होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन कर सकता है।

3. निर्धारण मापनी (रेटिंग स्केल)

निर्धारण मापनी का उपयोग किसी व्यवहार अथवा कौशल की गुणवत्ता, तीव्रता अथवा आवृत्ति का आकलन करने के लिए किया जाता है। इसमें शिक्षक पूर्व निर्धारित मानदण्डों के आधार पर विद्यार्थी के प्रदर्शन को विभिन्न स्तरों पर अंकित करता है। उदाहरण के लिए पठन कौशल का आकलन निम्न स्तरों पर किया जा सकता है-उत्कृष्ट, अच्छा, संतोषजनक, सुधार अपेक्षित। निर्धारण मापनी विशेष रूप से उन कौशलों के आकलन में उपयोगी है जिन्हें केवल ‘‘हाँ‘‘ या ‘‘नहीं‘‘ के रूप में नहीं मापा जा सकता।

4. कार्य-संकलन (पोर्टफोलियो)

कार्य-संकलन विद्यार्थी के कार्यों, उपलब्धियों तथा प्रगति का व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण संग्रह होता है। यह आकलन की एक प्रामाणिक विधि मानी जाती है क्योंकि यह विद्यार्थी की वास्तविक उपलब्धियों को समय के साथ प्रदर्शित करती है। कार्य-संकलन में निम्न सामग्री सम्मिलित की जा सकती है-लेखन नमूने, पठन गतिविधियों के अभिलेख, परियोजनाए, चित्र एवं रचनात्मक कार्य, शिक्षक की टिप्पणियाँ, स्व-आकलन प्रतिवेदन। श्रवण बाधित विद्यार्थियों में कार्य-संकलन विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि यह उनकी दीर्घकालिक प्रगति का प्रमाण प्रस्तुत करता है। ईस्टरब्रूक्स और बील-अल्वारेज (2013) के अनुसार कार्य-संकलन आकलन विद्यार्थियों की भाषा एवं साक्षरता प्रगति को समझने का प्रभावी माध्यम है।

5. कार्य-आधारित अथवा प्रदर्शन आकलन

कार्य-आधारित आकलन में विद्यार्थी को वास्तविक जीवन से संबंधित कार्य करने के लिए कहा जाता है और उसके प्रदर्शन का आकलन किया जाता है। यह दृष्टिकोण इस सिद्धांत पर आधारित है कि वास्तविक अधिगम का आकलन वास्तविक कार्यों के माध्यम से किया जाना चाहिए। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए निम्न प्रकार के कार्य उपयोगी हो सकते हैं-किसी सूचना-पट्ट को पढ़कर उसका अर्थ बताना, आवेदन-पत्र भरना, कहानी लिखना, सांकेतिक भाषा में प्रस्तुतीकरण देना, वीडियो संदेश की व्याख्या करना। इस प्रकार का आकलन कार्यात्मक साक्षरता तथा व्यावहारिक कौशलों को समझने में सहायता करता है।

6. साक्षात्कार

साक्षात्कार के माध्यम से विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक तथा अन्य विशेषज्ञों से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की जाती है। यह विशेष रूप से उन सूचनाओं के लिए उपयोगी है जिन्हें प्रत्यक्ष परीक्षण द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए अभिभावकों से निम्न जानकारी प्राप्त की जा सकती है-घर में प्रयुक्त भाषा, संप्रेषण का प्रमुख माध्यम, अध्ययन संबंधी आदत, सामाजिक सहभागिता। इन सूचनाओं के आधार पर विद्यार्थी की शैक्षिक आवश्यकताओं को अधिक व्यापक रूप से समझा जा सकता है।

7. उपाख्यान अभिलेख

उपाख्यान अभिलेख विद्यार्थी के व्यवहार अथवा उपलब्धि से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाओं का संक्षिप्त एवं वस्तुनिष्ठ विवरण होता है। उदाहरण-"दिनांक 12 अगस्त को विद्यार्थी ने पहली बार बिना सहायता के संपूर्ण अनुच्छेद पढ़कर उसका अर्थ सांकेतिक भाषा में व्यक्त किया।" ऐसे अभिलेख विद्यार्थी की प्रगति का गुणात्मक विवरण प्रदान करते हैं तथा आई ई पी निर्माण में उपयोगी होते हैं।

12.5.2.4 श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए अनौपचारिक आकलन का महत्व

अनौपचारिक आकलन श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है क्योंकि यह उनकी वास्तविक क्षमताओं का अधिक सटीक चित्र प्रस्तुत करता है। यह भाषा-निर्भर परीक्षणों की सीमाओं को कम करता है तथा शिक्षार्थी की संप्रेषण शैली एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का सम्मान करता है। इसके प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं-वास्तविक एवं कार्यात्मक प्रदर्शन का मूल्यांकन, व्यक्तिगत प्रगति की निगरानी, आई ई पी निर्माण हेतु उपयोगी जानकारी, भाषा एवं सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता, शिक्षण रणनीतियों के सुधार में सहायता, अभिभावकों एवं शिक्षकों के सहयोग को प्रोत्साहन।

12.5.2.5 आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

यद्यपि अनौपचारिक आकलन अनेक दृष्टियों से उपयोगी है, तथापि इसमें कुछ सीमाएँ भी हैं। इसके परिणाम कई बार आकलनकर्ता की व्याख्या पर निर्भर होते हैं, जिससे वस्तुनिष्ठता प्रभावित हो सकती है। विभिन्न शिक्षकों द्वारा समान व्यवहार की अलग-अलग व्याख्या की जा सकती है। इसलिए अनौपचारिक आकलन को अकेले प्रयोग करने के बजाय औपचारिक आकलन के साथ समन्वित करना अधिक उपयुक्त माना जाता है। मार्सचर्क और स्पेंसर (2016) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों के प्रभावी मूल्यांकन के लिए बहु-स्रोत तथा बहु-विधि दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।

अनौपचारिक आकलन श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक आकलन का एक अनिवार्य घटक है। यह विद्यार्थियों के वास्तविक प्रदर्शन, भाषा उपयोग, संप्रेषण कौशल तथा कार्यात्मक उपलब्धियों का समग्र चित्र प्रस्तुत करता है। यद्यपि इसकी कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी औपचारिक आकलन के साथ इसके समन्वित उपयोग से अधिक वैध, विश्वसनीय तथा विद्यार्थी-केंद्रित मूल्यांकन संभव हो पाता है। आधुनिक समावेशी शिक्षा में अनौपचारिक आकलन केवल मूल्यांकन का साधन नहीं, बल्कि प्रभावी शिक्षण एवं अधिगम सुधार का आधार भी है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

4. निर्धारण मापनी का उपयोग किसी व्यवहार अथवा कौशल की.....का आकलन करने के लिए किया जाता है।

5. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के प्रभावी आकलन हेतु मार्चार्क एवं स्पेंसर (2016) ने ..... दृष्टिकोण अपनाने की अनुशंसा की है।

6. भाषा आकलन के माध्यम से ग्रहणशील भाषा तथा .....भाषा दोनों का आकलन किया जाता है।

7. उपलब्धि परीक्षण सामान्यतः.....आधारित होते हैं।

8. अनौपचारिक आकलन विद्यार्थी के व्यवहार, प्रदर्शन एवं अधिगम का आकलन ..... परिस्थितियों में करता है।

12.6 श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए प्रमुख आकलन उपकरण एवं उनके आकलन क्षेत्र

श्रवण बाधित व्यक्तियों की शैक्षिक, भाषायी, संप्रेषणात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताओं को समझने के लिए विभिन्न आकलन उपकरणों का उपयोग किया जाता है। ये उपकरण उनकी श्रवण क्षमता, भाषा विकास, बौद्धिक स्तर, सामाजिक परिपक्वता तथा विद्यालय तत्परता आदि का आकलन करने में सहायक होते हैं। आकलन के परिणामों के आधार पर उपयुक्त शैक्षिक, चिकित्सीय एवं पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाई जाती है। निम्नलिखित सारणी में श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त प्रमुख आकलन उपकरणों एवं उनके आकलन क्षेत्रों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

आकलन उपकरण एवं उनके आकलन क्षेत्र

उपकरण	प्रमुख मूल्यांकन क्षेत्र	उपयोगिता

ैचममबी ।नकपवउमजतल ज्मेज श्रवण एवं भाषण पहचान यह परीक्षण श्रवण यंत्र अथवा कॉक्लियर इम्प्लांट के लाभ का मूल्यांकन करने तथा भाषा प्रशिक्षण की योजना बनाने में सहायता करता है।

1. भाषण एवं भाषा कौशल आईईपी निर्माण एवं भाषा हस्तक्षेप योजना के लिए उपयोगी।
2. भाषा संरचना एवं भाषा विकास भाषा विकास की शक्तियों एवं कमियों की पहचान।
3. भाषा अधिग्रहण प्रारम्भिक भाषा विकास के आकलन में उपयोगी।

   स्पीच थेरेपी कार्यक्रमों की योजना बनाने में सहायक।

4. प्रारम्भिक संप्रेषण 0-6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों में प्रारम्भिक हस्तक्षेप कार्यक्रमों की योजना हेतु।
5. वाणी की स्पष्टता स्पीच थेरेपी की प्रभावशीलता का आकलन।
6. सांकेतिक भाषा दक्षता सांकेतिक भाषा उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के भाषा आकलन हेतु।
7. सामाजिक परिपक्वता सामाजिक परिपक्वता एवं अनुकूलन व्यवहार का आकलन।
8. विकासात्मक स्तर विकासात्मक विलम्ब की पहचान।
9. गैर-शाब्दिक बुद्धि भाषा-न्यून बुद्धि परीक्षण के रूप में उपयोग।
10. विकासात्मक परिपक्वता प्रारम्भिक संज्ञानात्मक आकलन।
11. गैर-शाब्दिक बुद्धि कम आयु के श्रवण बाधित बच्चों में बुद्धि आकलन।
12. सामान्य बुद्धि भाषा-स्वतंत्र बुद्धि परीक्षण।

13. गैर-मौखिक संप्रेषण शैशवावस्था में संप्रेषण विकास का आकलन।

14. समग्र विकास समग्र विकासात्मक आकलन।

15. भाषा एवं भाषण विकास भाषा विकास में विलम्ब की पहचान

16. संचार, भाषा, सामाजिक अंतःक्रिया, संज्ञानात्मक एवं व्यवहारिक कौशल संचार एवं विकासात्मक कौशलों का समग्र आकलन कर हस्तक्षेप योजना बनाने में सहायक।

जी. मलार, तनुजा सिंह, शोभा बी. एन., और ई. जी. आशा सुरेश द्वारा विकसित (2016) विद्यालय तत्परता विद्यालय प्रवेश से पूर्व शैक्षणिक तैयारी का मूल्यांकन।

डॉ. प्रीति वेंकटेश (2018) विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि एवं कक्षा-स्तरीय दक्षता विज्ञान विषय में कक्षा-स्तरीय शैक्षणिक उपलब्धि का आकलन करता है।

जी. मलार, एंटोनी और सोम कृष्ण द्वारा विकसित (2016) जीवन कौशल किशोर एवं युवा श्रवण बाधित विद्यार्थियों में विद्यालय से कार्यजीवन की ओर तैयारी हेतु।

12.7 प्रतिवेदन की तकनीकें

शैक्षिक आकलन की प्रक्रिया केवल सूचनाओं के संग्रह एवं विश्लेषण तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसका अंतिम एवं अत्यंत महत्वपूर्ण चरण उन निष्कर्षों का व्यवस्थित संप्रेषण भी है। यही प्रक्रिया प्रतिवेदन कहलाती है। प्रतिवेदन वह माध्यम है जिसके द्वारा आकलन से प्राप्त सूचनाओं को विद्यार्थियों, अभिभावकों,

शिक्षकों, प्रशासकों तथा अन्य पेशेवरों के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि वे शैक्षिक निर्णयों, हस्तक्षेप कार्यक्रमों तथा भविष्य की योजना निर्माण में उपयोगी सिद्ध हों। विशेष शिक्षा, विशेषतः श्रवण बाधिता के क्षेत्र में, प्रतिवेदन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ मूल्यांकन केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं होता, बल्कि भाषा विकास, संप्रेषण दक्षता, साक्षरता, सामाजिक-भावनात्मक समायोजन, श्रवण कौशल तथा कार्यात्मक व्यवहार जैसे बहुआयामी पक्षों को भी सम्मिलित करता है। इसलिए प्रतिवेदन को मात्र अंकों अथवा ग्रेडों की प्रस्तुति न मानकर एक ऐसी व्यावसायिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए जो मूल्यांकन निष्कर्षों को सार्थक शैक्षिक कार्यवाहियों में रूपान्तरित करने का आधार प्रदान करती है।

साल्विया, यस्सेल्डाइक और बोल्ट (2017) के अनुसार आकलन प्रतिवेदन का उद्देश्य केवल परिणामों की सूचना देना नहीं, बल्कि ऐसे निर्णयों को सुगम बनाना है जो शिक्षार्थी के अधिगम एवं विकास को प्रोत्साहित कर सकें।

12.7.1 प्रतिवेदन की अवधारणा

प्रतिवेदन मूलतः आकलन से प्राप्त सूचनाओं का व्यवस्थित, वस्तुनिष्ठ तथा उद्देश्यपरक प्रस्तुतीकरण है। एक प्रभावी प्रतिवेदन में विद्यार्थी की वर्तमान उपलब्धियों, शक्तियों, सीमाओं, शैक्षिक आवश्यकताओं तथा अनुशंसित हस्तक्षेपों का स्पष्ट विवरण होना चाहिए। विशेष शिक्षा के संदर्भ में प्रतिवेदन को केवल निदानात्मक दस्तावेज न मानकर एक गतिशील शैक्षिक उपकरण के रूप में देखा जाता है, जो व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम, शिक्षण संशोधनों तथा प्रगति निगरानी के लिए आधार प्रदान करता है। आधुनिक समावेशी शिक्षा व्यवस्था में प्रतिवेदन को बहु-विषयक दृष्टिकोण के अंतर्गत विकसित किया जाता है, जिसमें विशेष

शिक्षक, वाक-भाषा विशेषज्ञ, श्रवण विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक तथा अभिभावक सभी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

12.7.2 प्रतिवेदन की प्रमुख तकनीकें

1. वर्णनात्मक प्रतिवेदन

वर्णनात्मक प्रतिवेदन, प्रतिवेदन की सर्वाधिक व्यापक एवं गुणात्मक तकनीक है। इसमें विद्यार्थी के प्रदर्शन, व्यवहार, भाषा उपयोग, संप्रेषण शैली तथा अधिगम प्रगति का विस्तृत विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया जाता है। यह तकनीक विशेष शिक्षा में अत्यंत उपयोगी मानी जाती है क्योंकि यह मात्रात्मक आँकड़ों के साथ-साथ उनके शैक्षिक अर्थों को भी स्पष्ट करती है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में वर्णनात्मक प्रतिवेदन भाषा एवं संप्रेषण संबंधी सूक्ष्म पहलुओं को अभिव्यक्त करने में विशेष रूप से सहायक होता है। उदाहरणार्थ, किसी विद्यार्थी के बारे में यह उल्लेख किया जा सकता है कि वह दृश्य संकेतों के माध्यम से निर्देशों को प्रभावी ढंग से समझता है, किन्तु जटिल व्याकरणिक संरचनाओं के बोध में कठिनाई अनुभव करता है। वर्णनात्मक प्रतिवेदन की प्रमुख विशेषता यह है कि यह शिक्षार्थी की शक्तियों एवं आवश्यकताओं का संतुलित चित्र प्रस्तुत करता है तथा शिक्षण योजना के लिए विशिष्ट सुझाव प्रदान करता है।

2. मात्रात्मक प्रतिवेदन

मात्रात्मक प्रतिवेदन में आकलन परिणामों को संख्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जैसे अंक, प्रतिशत, मानक प्राप्तांक, प्रतिशतक अथवा श्रेणी। यह तकनीक विशेष रूप से मानकीकृत परीक्षणों के परिणामों को प्रस्तुत करने में प्रयुक्त होती है। इस प्रकार का प्रतिवेदन परिणामों की वस्तुनिष्ठता एवं तुलनात्मकता सुनिश्चित करता है तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन की तुलना मानकों

अथवा संदर्भ समूहों से करने में सहायता प्रदान करता है। तथापि श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में केवल मात्रात्मक परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकालना उचित नहीं माना जाता, क्योंकि भाषा एवं संप्रेषण संबंधी कारक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। मार्सचर्क और स्पेंसर (2016) ने बल दिया है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या करते समय मात्रात्मक आँकड़ों को उनके भाषायी एवं सांस्कृतिक संदर्भों में समझना आवश्यक है।

3. दक्षता-आधारित प्रतिवेदन

दक्षता-आधारित प्रतिवेदन में विद्यार्थी की उपलब्धियों को पूर्वनिर्धारित दक्षताओं अथवा अधिगम परिणामों के संदर्भ में प्रस्तुत किया जाता है। इसका उद्देश्य यह बताना होता है कि विद्यार्थी ने किसी विशिष्ट कौशल अथवा योग्यता को किस स्तर तक अर्जित किया है। यह तकनीक परिणाम-आधारित शिक्षा के सिद्धांतों पर आधारित है और विशेष शिक्षा में आई ई पी लक्ष्यों की प्राप्ति के मूल्यांकन हेतु अत्यंत उपयोगी मानी जाती है। उदाहरणतः किसी श्रवण बाधित विद्यार्थी के लिए "दृश्य संकेतों के आधार पर पाँच चरणों वाले निर्देशों का पालन करना" एक विशिष्ट दक्षता हो सकती है, जिसके अधिग्रहण स्तर को प्रतिवेदन में दर्ज किया जा सकता है।

4. कार्य-संकलन (पोर्टफोलियो) आधारित प्रतिवेदन

कार्य-संकलन आधारित प्रतिवेदन विद्यार्थी के कार्यों, उपलब्धियों एवं प्रगति के दस्तावेजी साक्ष्यों पर आधारित होता है। इसमें विभिन्न समयावधियों में संकलित कार्य नमूनों, परियोजनाओं, लेखन कार्यों, भाषा गतिविधियों तथा प्रदर्शन कार्यों का विश्लेषण सम्मिलित होता है। यह तकनीक विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के भाषा एवं साक्षरता विकास के आकलन में उपयोगी है क्योंकि यह

समय के साथ होने वाले विकासात्मक परिवर्तनों को प्रदर्शित करती है। पोर्टफोलियो प्रतिवेदन विद्यार्थियों की वास्तविक उपलब्धियों का प्रामाणिक साक्ष्य प्रदान करता है तथा अधिगम प्रक्रिया को परिणाम जितना ही महत्व देता है। ईस्टरब्रूक्स और बील-अल्वारेज (2013) ने कार्य-संकलन को श्रवण बाधित विद्यार्थियों की भाषा एवं साक्षरता प्रगति के दस्तावेजीकरण का प्रभावी माध्यम माना है।

5. प्रगति प्रतिवेदन

प्रगति प्रतिवेदन का उद्देश्य किसी निश्चित अवधि के दौरान विद्यार्थी में हुए विकास, परिवर्तन अथवा सुधार को प्रदर्शित करना है। यह तकनीक सतत एवं व्यापक आकलन तथा आई ई पी निगरानी में व्यापक रूप से प्रयुक्त होती है। प्रगति प्रतिवेदन विशेष रूप से तब उपयोगी होता है जब किसी विद्यार्थी के लिए अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारित किए गए हों। इसके माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि विद्यार्थी ने किन लक्ष्यों को प्राप्त किया है, किन क्षेत्रों में सुधार हुआ है तथा किन क्षेत्रों में अतिरिक्त हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

6. सम्मेलन आधारित प्रतिवेदन

सम्मेलन आधारित प्रतिवेदन एक सहभागितापूर्ण तकनीक है जिसमें शिक्षक, अभिभावक, विद्यार्थी तथा अन्य विशेषज्ञ आकलन परिणामों पर सामूहिक रूप से विचार-विमर्श करते हैं। यह दृष्टिकोण विशेष शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इससे विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का एकीकरण संभव होता है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में ऐसी बैठकों में विशेष शिक्षक, श्रवण विशेषज्ञ, वाक्-भाषा विशेषज्ञ तथा अभिभावकों की सहभागिता विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की समग्र समझ विकसित करने में सहायक होती है। श्रवण बाधित

विद्यार्थियों के लिए प्रभावी प्रतिवेदन के लिए निम्न सिद्धांतों का पालन आवश्यक माना जाता है-

- प्रतिवेदन वस्तुनिष्ठ एवं प्रमाण-आधारित हो।
- भाषा स्पष्ट, सटीक एवं पेशेवर हो।
- केवल कमियों पर नहीं, बल्कि शक्तियों पर भी बल दिया जाए।
- भाषा एवं संप्रेषण संबंधी आवश्यकताओं का पृथक उल्लेख किया जाए।
- अनुशंसाएँ व्यावहारिक एवं क्रियान्वयन योग्य हों।
- बहु-स्रोत एवं बहु-विषयक सूचनाओं का समावेश किया जाए।
- प्रतिवेदन शैक्षिक निर्णयों के लिए उपयोगी हो।

12.7.3 आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

आधुनिक विशेष शिक्षा में प्रतिवेदन की भूमिका केवल आकलन परिणामों को संप्रेषित करने तक सीमित नहीं रही है। वर्तमान दृष्टिकोण प्रतिवेदन को एक सहयोगात्मक एवं विद्यार्थी-केंद्रित प्रक्रिया के रूप में देखता है। केवल अंक-आधारित प्रतिवेदन श्रवण बाधित विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं का समुचित चित्र प्रस्तुत नहीं कर सकता। इसलिए गुणात्मक, मात्रात्मक, पोर्टफोलियो तथा प्रगति-आधारित प्रतिवेदन तकनीकों के समन्वित उपयोग पर बल दिया जा रहा है। पॉल (2021) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए प्रभावी प्रतिवेदन वह है जो उनकी भाषा, साक्षरता एवं संप्रेषण संबंधी आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हुए शिक्षण हस्तक्षेपों के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करे।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

9. आकलन से प्राप्त सूचनाओं के व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया को..... कहा जाता है।

10. .....प्रतिवेदन में विद्यार्थी के प्रदर्शन, व्यवहार, भाषा उपयोग तथा अधिगम प्रगति का विस्तृत गुणात्मक विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

11. अंकों, प्रतिशतों, मानक प्राप्तांकों अथवा श्रेणियों के रूप में परिणाम प्रस्तुत करने वाली तकनीक को.....प्रतिवेदन कहा जाता है।

12.8 श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अनुदेशन माध्यम के चयन के मानदण्ड

श्रवण बाधित व्यक्तियों की शिक्षा में अनुदेशन माध्यम का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण शैक्षिक निर्णय है। अनुदेशन माध्यम से आशय उस भाषा अथवा संप्रेषण प्रणाली से है जिसके माध्यम से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया संचालित की जाती है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के संदर्भ में यह निर्णय और अधिक जटिल हो जाता है क्योंकि उनकी श्रवण क्षमता, भाषायी अनुभव, संप्रेषण की प्राथमिक विधि, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा शैक्षिक आवश्यकताएँ एक-दूसरे से भिन्न हो सकती हैं। अतः सभी श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए एक समान अनुदेशन माध्यम उपयुक्त नहीं माना जा सकता। ऐतिहासिक रूप से श्रवण बाधित व्यक्तियों की शिक्षा में मौखिक पद्धति, सांकेतिक भाषा आधारित पद्धति, सम्पूर्ण संप्रेषण तथा

द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण जैसे विभिन्न मॉडल विकसित हुए हैं। वर्तमान समय में विशेषज्ञ इस बात पर बल देते हैं कि अनुदेशन माध्यम का चयन किसी विचारधारा विशेष के आधार पर नहीं, बल्कि शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं भाषायी विशेषताओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

पॉल (2021) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण आधार यह है कि उन्हें ऐसा भाषा माध्यम उपलब्ध कराया जाए जिसके माध्यम से वे पाठ्यवस्तु को प्रभावी रूप से समझ सकें तथा अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकें।

12.8.1 अनुदेशन माध्यम की अवधारणा

अनुदेशन माध्यम केवल शिक्षण की भाषा नहीं है, बल्कि वह संपूर्ण संप्रेषण तंत्र है जिसके माध्यम से ज्ञान, विचार, अनुभव तथा शैक्षिक सामग्री विद्यार्थियों तक पहुँचाई जाती है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए यह माध्यम निम्न रूपों में हो सकता है-मौखिक भाषा, सांकेतिक भाषा, लिखित भाषा, सम्पूर्ण संप्रेषण, द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक मॉडल, बहु-माध्यमीय संप्रेषण। अनुदेशन माध्यम का चयन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि वह शिक्षार्थी के लिए सर्वाधिक सुलभ, बोधगम्य तथा प्रभावी हो।

12.8.2 अनुदेशन माध्यम के चयन के प्रमुख मानदण्ड

1. श्रवण क्षति की प्रकृति एवं स्तर

अनुदेशन माध्यम के चयन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण आधार शिक्षार्थी की श्रवण क्षति का स्तर, प्रकार तथा समय है। यदि शिक्षार्थी को हल्की अथवा मध्यम श्रवण क्षति है तथा वह श्रवण यंत्रों या कॉक्लियर इम्प्लांट के माध्यम से पर्याप्त श्रवण लाभ प्राप्त कर रहा है, तो मौखिक भाषा आधारित शिक्षण प्रभावी हो

सकता है। इसके विपरीत गहन अथवा अत्यधिक श्रवण बाधिता वाले विद्यार्थियों के लिए सांकेतिक भाषा या द्विभाषिक दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त हो सकता है। उदाहरण-एक विद्यार्थी जिसे कॉक्लियर इम्प्लांट के माध्यम से पर्याप्त श्रवण लाभ प्राप्त हो रहा है, वह मौखिक हिंदी माध्यम में सफलतापूर्वक अध्ययन कर सकता है, जबकि जन्मजात गहन श्रवण बाधिता वाला विद्यार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा के माध्यम से अधिक प्रभावी अधिगम कर सकता है।

2. भाषा एवं संप्रेषण दक्षता

किसी भी शिक्षार्थी की वर्तमान भाषा दक्षता अनुदेशन माध्यम चयन का प्रमुख आधार होनी चाहिए। यह देखा जाना आवश्यक है कि विद्यार्थी किस भाषा अथवा संप्रेषण प्रणाली को सबसे अधिक समझता और उपयोग करता है। आकलन के दौरान निम्न प्रश्नों पर विचार किया जाता है-

- विद्यार्थी की प्रथम भाषा कौन-सी है?
- क्या वह सांकेतिक भाषा में दक्ष है?
- क्या वह मौखिक भाषा को समझ सकता है?
- उसकी ग्रहणशील एवं अभिव्यंजक भाषा का स्तर क्या है?

मार्सचर्क और स्पेंसर (2016) के अनुसार शिक्षण की प्रभावशीलता तब बढ़ती है जब अनुदेशन उस भाषा में प्रदान किया जाए जिसमें शिक्षार्थी सर्वाधिक दक्षता रखता हो।

3. प्रारम्भिक भाषा अनुभव

अनुसंधान से स्पष्ट हुआ है कि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में भाषा तक पहुँच शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। जिन बच्चों को प्रारम्भिक

अवस्था से ही किसी सुगम भाषा-चाहे वह सांकेतिक हो या मौखिक का पर्याप्त अनुभव प्राप्त होता है, उनका भाषा एवं साक्षरता विकास अपेक्षाकृत बेहतर होता है। उदाहरण- यदि कोई बच्चा जन्म से ही सांकेतिक भाषा उपयोग करने वाले परिवार में बड़ा हुआ है, तो विद्यालय में सांकेतिक भाषा आधारित शिक्षण उसके लिए अधिक स्वाभाविक एवं प्रभावी होगा।

4. घर में प्रयुक्त भाषा

घर में प्रयुक्त भाषा तथा संप्रेषण शैली का अनुदेशन माध्यम चयन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यदि विद्यालय की भाषा और घर की भाषा में अत्यधिक अंतर हो, तो अधिगम में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए आकलन के दौरान यह जानकारी एकत्र की जानी चाहिए कि-

ऽ घर में कौन-सी भाषा बोली जाती है?

ऽ परिवार सांकेतिक भाषा का उपयोग करता है या नहीं?

ऽ परिवार के सदस्य विद्यार्थी से किस प्रकार संप्रेषण करते हैं?

उदाहरण- यदि घर में हिंदी तथा भारतीय सांकेतिक भाषा दोनों का उपयोग किया जाता है, तो विद्यालय में द्विभाषिक दृष्टिकोण अधिक प्रभावी हो सकता है।

5. विद्यालय में उपलब्ध भाषायी वातावरण

विद्यालय का भाषायी एवं संप्रेषणीय वातावरण भी अनुदेशन माध्यम के चयन को प्रभावित करता है। केवल किसी माध्यम को सैद्धान्तिक रूप से उपयुक्त मान लेना पर्याप्त नहीं ह,ै यह भी आवश्यक है कि विद्यालय में उस माध्यम के प्रभावी उपयोग हेतु प्रशिक्षित शिक्षक, संसाधन तथा शैक्षिक सामग्री उपलब्ध हों। उदाहरणार्थ-

ऽ क्या विद्यालय में भारतीय सांकेतिक भाषा जानने वाले शिक्षक उपलब्ध हैं?

ऽ क्या सांकेतिक भाषा दुभाषिए उपलब्ध हैं?

ऽ क्या दृश्य-अधिगम सामग्री उपलब्ध है?

6. समुदाय में प्रयुक्त भाषा

विद्यालय और घर के अतिरिक्त समुदाय में प्रयुक्त भाषा भी शिक्षार्थी के सामाजिक समायोजन एवं सहभागिता को प्रभावित करती है। यदि अनुदेशन माध्यम समुदाय की भाषा से पूर्णतः भिन्न हो, तो शिक्षार्थी को सामाजिक सहभागिता में कठिनाई हो सकती है। यूनेस्को (2020) ने शिक्षा में मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं के उपयोग को प्रभावी अधिगम एवं सामाजिक समावेशन का महत्वपूर्ण आधार माना है।

7. सहायक तकनीकों की उपलब्धता

वर्तमान समय में विभिन्न सहायक तकनीकों ने श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए भाषा एवं संप्रेषण की संभावनाओं का विस्तार किया है। इनमें शामिल हैं-श्रवण यंत्र, कोक्लियर इम्प्लांट्स, एफ एम प्रणाली, अनुशीर्षक, स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर, वीडियो रिले सेवाएँ। यदि शिक्षार्थी इन तकनीकों से प्रभावी लाभ प्राप्त कर रहा है, तो अनुदेशन माध्यम के चयन में इनका भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

8. शैक्षणिक एवं व्यावसायिक लक्ष्य

अनुदेशन माध्यम का चयन शिक्षार्थी के दीर्घकालिक शैक्षिक एवं व्यावसायिक लक्ष्यों के अनुरूप होना चाहिए। माध्यम ऐसा होना चाहिए जो न केवल वर्तमान

अधिगम को सुगम बनाए, बल्कि भविष्य में उच्च शिक्षा, रोजगार एवं सामाजिक सहभागिता के अवसरों को भी विस्तृत करे। उदाहरण- यदि विद्यार्थी उच्च शिक्षा में प्रवेश की तैयारी कर रहा है, तो लिखित भाषा दक्षता के विकास पर विशेष बल देना आवश्यक होगा, चाहे उसका प्राथमिक संप्रेषण माध्यम सांकेतिक भाषा ही क्यों न हो।

9. द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण की उपयुक्तता

आधुनिक शोध यह संकेत करते हैं कि अनेक श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण अत्यंत प्रभावी हो सकता है। इस मॉडल में भारतीय सांकेतिक भाषा को प्रथम भाषा तथा लिखित/मौखिक भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में विकसित किया जाता है। हम्फ्रीज और अन्य (2012) के अनुसार प्रारम्भिक सांकेतिक भाषा तक पहुँच श्रवण बाधित बच्चों के भाषा, संज्ञानात्मक एवं शैक्षणिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

12.8.3 अनुदेशन माध्यम चयन हेतु बहुआयामी आकलन

अनुदेशन माध्यम का चयन निम्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के समन्वित विश्लेषण पर आधारित होना चाहिए- श्रवण संबंधी आकलन, भाषा आकलन, साक्षरता आकलन, कक्षा अवलोकन, अभिभावक साक्षात्कार, शिक्षक प्रतिवेदन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन। इस प्रकार का बहुआयामी आकलन शिक्षार्थी-केंद्रित निर्णय लेने में सहायता करता है।

श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अनुदेशन माध्यम का चयन एक जटिल, बहुआयामी एवं व्यक्तिगत प्रक्रिया है। इसका निर्धारण केवल श्रवण हानि के स्तर के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि भाषा दक्षता, प्रारम्भिक भाषा अनुभव, घर, विद्यालय एवं समुदाय में प्रयुक्त भाषाओं, उपलब्ध संसाधनों,

सहायक तकनीकों तथा भविष्य के शैक्षिक एवं व्यावसायिक लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। वर्तमान समावेशी एवं अधिकार-आधारित दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक श्रवण बाधित शिक्षार्थी को उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप सुगम एवं प्रभावी भाषा माध्यम उपलब्ध कराया जाए, जिससे उसका समग्र शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक विकास सुनिश्चित हो सके।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

12. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए अनुदेशन माध्यम का चयन उनकी.....भाषा दक्षता तथा संप्रेषण आवश्यकताओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

13. आधुनिक शोधों के अनुसार अनेक श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए.....दृष्टिकोण एक प्रभावी शैक्षिक मॉडल माना जाता है।

14. अनुदेशन माध्यम के चयन हेतु श्रवण आकलन, भाषा आकलन, साक्षरता आकलन तथा अभिभावक साक्षात्कार जैसे अनेक स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के समेकित विश्लेषण को.....आकलन कहा जाता है।

12.9 घर, विद्यालय एवं समुदाय में प्रयुक्त भाषाओं की भूमिका

श्रवण बाधित व्यक्तियों के भाषा, संप्रेषण, साक्षरता तथा शैक्षणिक विकास में घर, विद्यालय एवं समुदाय में प्रयुक्त भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह संज्ञानात्मक विकास,

सामाजिक सहभागिता, सांस्कृतिक पहचान तथा शैक्षिक उपलब्धि का आधार भी है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के संदर्भ में यह प्रश्न विशेष महत्व रखता है कि वे किन भाषाओं और संप्रेषण प्रणालियों के संपर्क में आते हैं तथा उन तक उनकी पहुँच कितनी सुगम है।

अनुसंधान से स्पष्ट हुआ है कि श्रवण बाधित बच्चों की शैक्षणिक सफलता का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक उनकी भाषा तक प्रारम्भिक एवं निरंतर पहुँच है। यदि बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था से ही किसी सुगम भाषा-चाहे वह सांकेतिक भाषा हो या मौखिक भाषा-का पर्याप्त अनुभव प्राप्त होता है, तो उसका भाषा, साक्षरता एवं संज्ञानात्मक विकास अधिक प्रभावी होता है (हम्फ्रीज और अन्य, 2012)। इसलिए अनुदेशन माध्यम के चयन में यह समझना आवश्यक है कि घर, विद्यालय तथा समुदाय में कौन-सी भाषाएँ प्रयुक्त हो रही हैं और उनका शिक्षार्थी के अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ता है।

12.9.1 घर में प्रयुक्त भाषा की भूमिका

घर बच्चे का प्रथम एवं सर्वाधिक प्रभावशाली भाषा-अधिगम वातावरण होता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में अधिकांश भाषायी अनुभव परिवार के माध्यम से प्राप्त होते हैं। श्रवण बाधित बच्चों के लिए यह और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भाषा तक पहुँच में किसी प्रकार की बाधा उनके संपूर्ण विकास को प्रभावित कर सकती है।

यदि परिवार बच्चे से प्रभावी एवं सुगम भाषा में संवाद करता है, तो भाषा अर्जन की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से विकसित होती है। इसके विपरीत, यदि परिवार और बच्चे के बीच संप्रेषण का उपयुक्त माध्यम उपलब्ध नहीं है, तो भाषा विकास में विलम्ब की संभावना बढ़ जाती है।

12.9.1.1 घर में प्रयुक्त भाषा के प्रमुख प्रभाव

- प्रारम्भिक भाषा विकास को प्रभावित करती है।
- शब्दावली एवं अवधारणात्मक विकास का आधार बनती है।
- सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करती है।
- विद्यालयी अधिगम की तैयारी में सहायता करती है।
- आत्म-अभिव्यक्ति एवं आत्मविश्वास को विकसित करती है।

उदाहरण- मान लीजिए एक श्रवण बाधित बालक ऐसे परिवार में रह रहा है जहाँ माता-पिता भारतीय सांकेतिक भाषा सीखकर नियमित रूप से उसका उपयोग करते हैं। ऐसी स्थिति में बालक को प्रारम्भिक अवस्था से ही सुगम भाषायी इनपुट प्राप्त होगा, जिससे उसका भाषा एवं संज्ञानात्मक विकास अपेक्षाकृत बेहतर हो सकता है। इसके विपरीत यदि परिवार और बच्चे के बीच प्रभावी संप्रेषण स्थापित नहीं हो पाता, तो भाषा अर्जन प्रभावित हो सकता है। मार्सचर्क और हौसर (2012) के अनुसार श्रवण बाधित बच्चों की भाषा उपलब्धियों में परिवार की संप्रेषण शैली एवं भाषा उपयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

12.9.2 विद्यालय में प्रयुक्त भाषा की भूमिका

विद्यालय वह औपचारिक संस्था है जहाँ भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं रहती, बल्कि ज्ञानार्जन, अवधारणाओं के निर्माण तथा शैक्षणिक उपलब्धि का प्रमुख साधन बन जाती है। इसलिए विद्यालय में प्रयुक्त भाषा और विद्यार्थी की भाषायी क्षमता के मध्य सामंजस्य होना आवश्यक है। यदि विद्यालय में प्रयुक्त भाषा विद्यार्थी के लिए सुगम नहीं है, तो उसे पाठ्यवस्तु को समझने, प्रश्नों का

उत्तर देने तथा शैक्षणिक गतिविधियों में सहभागिता करने में कठिनाई हो सकती है।

12.9.2.1 विद्यालयी भाषा की प्रमुख भूमिकाएँ

1. अधिगम का माध्यमः विद्यालयी भाषा के माध्यम से ही गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा अन्य विषयों का ज्ञान अर्जित किया जाता है।

2. साक्षरता विकास: पठन, लेखन, शब्दावली तथा भाषा-बोध का विकास विद्यालयी भाषा के माध्यम से होता है।

3. शैक्षणिक उपलब्धिः भाषा दक्षता और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया गया है।

4. सामाजिक सहभागिताः विद्यालयी भाषा सहपाठियों एवं शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया का आधार प्रदान करती है।

उदाहरण- यदि एक श्रवण बाधित विद्यार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा में दक्ष है, लेकिन विद्यालय में केवल मौखिक भाषा आधारित शिक्षण प्रदान किया जाता है, तो वह पाठ्यवस्तु को समझने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। इसके विपरीत यदि सांकेतिक भाषा, दृश्य सामग्री तथा लिखित भाषा का समन्वित उपयोग किया जाए, तो अधिगम अधिक प्रभावी हो सकता है। पॉल (2021) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता के लिए विद्यालयी भाषा और विद्यार्थी की भाषा दक्षता के मध्य सामंजस्य अत्यंत आवश्यक है।

12.9.3 समुदाय में प्रयुक्त भाषा की भूमिका

समुदाय भाषा के प्रयोग एवं विकास का व्यापक सामाजिक संदर्भ प्रदान करता है। विद्यालय के बाहर व्यक्ति जिन लोगों, संस्थाओं तथा सामाजिक गतिविधियों

के संपर्क में आता है, वे उसकी भाषा दक्षता तथा सामाजिक पहचान को प्रभावित करते हैं। समुदाय में प्रयुक्त भाषा का महत्व विशेष रूप से कार्यात्मक साक्षरता, सामाजिक सहभागिता तथा स्वतंत्र जीवन कौशलों के विकास में देखा जाता है।

समुदाय की भाषा के प्रमुख कार्यः

- सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देना।
- सांस्कृतिक पहचान का विकास करना।
- कार्यात्मक भाषा कौशलों का विकास करना।
- रोजगार एवं व्यावसायिक अवसरों तक पहुँच सुनिश्चित करना।
- स्वतंत्र जीवन के लिए आवश्यक संप्रेषण कौशल विकसित करना।

उदाहरण-यदि समुदाय में हिंदी प्रमुख भाषा है, तो श्रवण बाधित विद्यार्थी के लिए लिखित हिंदी का ज्ञान सार्वजनिक सेवाओं, बैंकिंग, परिवहन, स्वास्थ्य सेवाओं तथा रोजगार से संबंधित गतिविधियों में उपयोगी होगा। इसी प्रकार यदि स्थानीय समुदाय में सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं का समूह उपलब्ध है, तो यह सामाजिक समर्थन एवं पहचान का महत्वपूर्ण स्रोत बन सकता है। यूनेस्को (2020) के अनुसार समुदाय की भाषा एवं संस्कृति को शिक्षा प्रक्रिया से जोड़ना समावेशी एवं प्रभावी अधिगम का महत्वपूर्ण आधार है।

12.9.4 घर, विद्यालय एवं समुदाय की भाषाओं में सामंजस्य का महत्व

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सबसे अनुकूल स्थिति तब होती है जब घर, विद्यालय एवं समुदाय में प्रयुक्त भाषाओं के मध्य पर्याप्त सामंजस्य हो। भाषायी निरंतरता शिक्षार्थी को विभिन्न संदर्भों में भाषा का अर्थपूर्ण उपयोग करने में सहायता करती है। जब इन तीनों स्तरों पर भाषायी असंगति होती है, तो निम्न समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं-

- भाषा विकास में विलम्ब
- सीमित शब्दावली
- शैक्षणिक कठिनाइयाँ
- सामाजिक अलगाव
- आत्मविश्वास में कमी

इसके विपरीत भाषायी सामंजस्य से-

- अधिगम की गुणवत्ता बढ़ती है।
- साक्षरता विकास सुदृढ़ होता है।
- सामाजिक सहभागिता में वृद्धि होती है।
- आत्म-अभिव्यक्ति बेहतर होती है।
- शैक्षणिक उपलब्धियाँ बढ़ती हैं।

12.9.5 द्विभाषिक एवं बहुभाषिक परिप्रेक्ष्य

भारत जैसे बहुभाषिक समाज में अनेक श्रवण बाधित विद्यार्थी एक से अधिक भाषाओं के संपर्क में आते हैं। उदाहरणतः एक विद्यार्थी घर में स्थानीय बोली, विद्यालय में हिंदी और संप्रेषण के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग कर सकता है। ऐसी परिस्थितियों में द्विभाषिक या बहुभाषिक दृष्टिकोण अपनाना अधिक उपयुक्त माना जाता है। वर्तमान शोध यह संकेत करते हैं कि सुगम प्रथम भाषा के आधार पर दूसरी भाषा का अधिगम अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है (हम्फ्रीज और अन्य, 2012)

घर, विद्यालय एवं समुदाय में प्रयुक्त भाषाएँ श्रवण बाधित व्यक्तियों के भाषा, संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा शैक्षणिक विकास की आधारशिला हैं। घर प्रारम्भिक भाषा अनुभव प्रदान करता है, विद्यालय भाषा को शैक्षणिक अधिगम के माध्यम में रूपांतरित करता है और समुदाय भाषा के कार्यात्मक एवं सामाजिक उपयोग का अवसर प्रदान करता है। अतः अनुदेशन माध्यम के चयन तथा शैक्षिक योजना निर्माण में इन तीनों भाषायी संदर्भों का समग्र विश्लेषण आवश्यक है। एक सुलभ, निरंतर एवं भाषायी रूप से समन्वित वातावरण श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

15. श्रवण बाधित बच्चों के लिए.....उनका प्रथम एवं सर्वाधिक प्रभावशाली भाषा-अधिगम वातावरण होता है।

16. विद्यालय में प्रयुक्त भाषा.....का प्रमुख माध्यम होती है।

17. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए घर, विद्यालय एवं समुदाय की भाषाओं के मध्य..... अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

12.10 भाषा एवं अनुदेशन माध्यम के चयन में चुनौतियाँ

श्रवण बाधित व्यक्तियों की शिक्षा में भाषा एवं अनुदेशन माध्यम का चयन एक केंद्रीय शैक्षिक प्रश्न रहा है। यह केवल शिक्षण की भाषा निर्धारित करने का विषय नहीं है, बल्कि ज्ञान तक पहुँच, भाषा विकास, साक्षरता अर्जन, सामाजिक सहभागिता तथा सांस्कृतिक पहचान से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। पिछले एक शताब्दी से अधिक समय से श्रवण बाधित शिक्षा के क्षेत्र में मौखिकवाद, सांकेतिक भाषा आधारित शिक्षा, सम्पूर्ण संप्रेषण तथा द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण के बीच वैचारिक बहस चलती रही है। इस बहस का मूल प्रश्न यह रहा है कि श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए कौन-सा भाषा माध्यम सर्वाधिक प्रभावी एवं सुलभ है।

समकालीन शोध यह स्पष्ट करते हैं कि किसी एक भाषा या संप्रेषण पद्धति को सार्वभौमिक रूप से श्रेष्ठ नहीं माना जा सकता। भाषा एवं अनुदेशन माध्यम का चयन शिक्षार्थी की भाषायी पृष्ठभूमि, श्रवण स्थिति, पारिवारिक परिवेश, उपलब्ध संसाधनों तथा शैक्षिक लक्ष्यों के संदर्भ में किया जाना चाहिए। यही कारण है कि वर्तमान समय में यह विषय केवल भाषायी चयन का प्रश्न न होकर शैक्षिक न्याय, भाषायी अधिकार तथा समावेशी शिक्षा से जुड़ा हुआ मुद्दा बन गया है।

1. भाषा बनाम संप्रेषणः एक वैचारिक चुनौती

श्रवण बाधित शिक्षा में लंबे समय तक भाषा और संप्रेषण को समानार्थी समझा जाता रहा। परिणामस्वरूप अनेक शैक्षिक कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य श्रवण बाधित बच्चों को मौखिक भाषा सिखाना बन गया। परन्तु आधुनिक भाषावैज्ञानिक एवं मनोभाषावैज्ञानिक अध्ययनों ने यह स्थापित किया है कि भाषा और संप्रेषण दो भिन्न अवधारणाएँ हैं। कोई शिक्षार्थी प्रभावी संप्रेषण कर सकता है, परन्तु उसकी भाषिक संरचनाओं पर पूर्ण पकड़ न होय इसी प्रकार किसी भाषा का औपचारिक ज्ञान होने के बावजूद संप्रेषण दक्षता सीमित हो सकती है। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह प्रश्न विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि अनेक बार शिक्षण कार्यक्रम भाषा विकास के बजाय केवल वाक्-उत्पादन पर केंद्रित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में वास्तविक भाषिक दक्षता और शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है। मार्सचर्क और स्पेंसर (2016) का मत है कि श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए भाषा की सुगम्यता को भाषा के रूप से अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।

2. प्रारम्भिक भाषा उपलब्धता की चुनौती

समकालीन शोध साहित्य में भाषा एवं अनुदेशन माध्यम के चयन से जुड़ी सबसे गंभीर चुनौती ''प्रारम्भिक भाषा उपलब्धता'' मानी जाती है। अधिकांश श्रवण बाधित बच्चे ऐसे परिवारों में जन्म लेते हैं जहाँ माता-पिता श्रवणक्षम होते हैं और सांकेतिक भाषा से परिचित नहीं होते। परिणामस्वरूप जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में बच्चे को पर्याप्त भाषायी इनपुट प्राप्त नहीं हो पाता। यह स्थिति केवल भाषा विकास को ही प्रभावित नहीं करती, बल्कि संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक परिपक्वता तथा साक्षरता अर्जन को भी प्रभावित करती है। हम्फ्रीज और अन्य (2012) ने इसे ''भाषा से वंचित'' की समस्या के रूप में वर्णित किया है और इसे श्रवण बाधित बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए एक प्रमुख जोखिम कारक माना है। इस परिप्रेक्ष्य में अनुदेशन माध्यम चयन की चुनौती यह है कि

क्या विद्यालय उस भाषा को अपनाए जिसमें बच्चा पहले से दक्ष है, अथवा उस भाषा को जिसे भविष्य की शैक्षणिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

3. भाषायी विविधता और शिक्षार्थी की विषमता

श्रवण बाधित समुदाय को एक समरूप समूह के रूप में नहीं देखा जा सकता। इस समुदाय के भीतर भाषायी, सांस्कृतिक एवं संप्रेषणीय विविधता अत्यंत व्यापक है। कुछ शिक्षार्थी भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं, कुछ मौखिक भाषा पर निर्भर होते हैं, जबकि अनेक विद्यार्थी बहु-माध्यमीय संप्रेषण का प्रयोग करते हैं। यह विविधता अनुदेशन माध्यम के चयन को जटिल बनाती है। एक ही कक्षा में ऐसे विद्यार्थी उपस्थित हो सकते हैं जिनकी भाषिक आवश्यकताएँ एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न हों। ऐसी परिस्थिति में किसी एक माध्यम को अपनाना कई विद्यार्थियों के लिए बाधा उत्पन्न कर सकता है।

पॉल (2021) का तर्क है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए भाषा एवं साक्षरता कार्यक्रमों की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वे विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भाषायी आवश्यकताओं को किस सीमा तक संबोधित करते हैं।

4. घर, विद्यालय एवं समुदाय की भाषाओं में असंगति

भाषा एवं अनुदेशन माध्यम चयन की एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती विभिन्न भाषायी परिवेशों के मध्य असंगति है। अनेक श्रवण बाधित बच्चे घर में स्थानीय बोली या सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं, जबकि विद्यालय में हिंदी अथवा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त समुदाय में एक तीसरी भाषा या संप्रेषण प्रणाली प्रचलित हो सकती है। यह भाषायी विसंगति शिक्षार्थी के लिए संज्ञानात्मक एवं शैक्षणिक बोझ को बढ़ा देती है। उसे केवल विषय-वस्तु

ही नहीं, बल्कि उस विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने वाली भाषा भी सीखनी पड़ती है। परिणामस्वरूप शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है। कमिंग्स (2000) के अंतर्निहित भाषिक दक्षता सिद्धांत के अनुसार प्रथम भाषा में विकसित भाषायी आधार दूसरी भाषा के अधिगम को सुगम बनाता है। इसलिए विद्यालयी भाषा चयन में घर की भाषा की उपेक्षा करना शैक्षिक दृष्टि से उचित नहीं माना जाता।

5. भारतीय सांकेतिक भाषा की संस्थागत चुनौतियाँ

यद्यपि भारतीय सांकेतिक भाषा को श्रवण बाधित समुदाय की प्राकृतिक भाषा के रूप में व्यापक मान्यता प्राप्त हो रही है, फिर भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था में इसका प्रभावी कार्यान्वयन अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ है। प्रशिक्षित शिक्षकों, सांकेतिक भाषा दुभाषियों, मानकीकृत शिक्षण सामग्री तथा पाठ्यक्रम संसाधनों का अभाव इस दिशा में प्रमुख बाधाएँ हैं। इसके अतिरिक्त अनेक अभिभावक सांकेतिक भाषा को अपनाने में संकोच करते हैं क्योंकि उन्हें यह आशंका होती है कि इससे मौखिक भाषा का विकास प्रभावित होगा। जबकि उपलब्ध शोध इस धारणा का समर्थन नहीं करते। इसके विपरीत, अनेक अध्ययनों ने संकेत दिया है कि प्रारम्भिक सांकेतिक भाषा अनुभव भाषा एवं साक्षरता विकास के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है (हम्फ्रीज और अन्य, 2012)।

6. तकनीकी हस्तक्षेप और भाषा चयन का प्रश्न

कॉक्लियर इम्प्लांट तथा उन्नत श्रवण सहायक उपकरणों के विकास ने भाषा एवं अनुदेशन माध्यम चयन के प्रश्न को एक नया आयाम प्रदान किया है। तकनीकी हस्तक्षेपों से अनेक बच्चों को श्रवण अनुभव प्राप्त होता है, किन्तु यह लाभ सभी बच्चों में समान नहीं होता। अनेक बार यह मान लिया जाता है कि कॉक्लियर इम्प्लांट प्राप्त करने वाला प्रत्येक बच्चा स्वतः मौखिक भाषा आधारित शिक्षा के

लिए तैयार हो जाएगा। किन्तु शोध इंगित करते हैं कि उपकरण की उपलब्धता और भाषा दक्षता के मध्य प्रत्यक्ष एवं सार्वभौमिक संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता। भाषा विकास अनेक सामाजिक, पारिवारिक तथा शैक्षिक कारकों से प्रभावित होता है। इसलिए केवल तकनीकी आधार पर अनुदेशन माध्यम का चयन करना शैक्षिक दृष्टि से अपर्याप्त माना जाता है।

7. समावेशी शिक्षा और भाषा अधिकार

समावेशी शिक्षा की अवधारणा ने भाषा एवं अनुदेशन माध्यम चयन को अधिकार-आधारित विमर्श से जोड़ दिया है। अब प्रश्न केवल यह नहीं है कि कौन-सी भाषा में पढ़ाना अधिक सुविधाजनक है, बल्कि यह भी है कि शिक्षार्थी को किस भाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यू एन सी आर पी डी, 2006) दिव्यांग व्यक्तियों के लिए सुगम संप्रेषण एवं उपयुक्त भाषा माध्यम की उपलब्धता पर बल देता है। इसी प्रकार भारत का दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 भी शिक्षा में उपयुक्त सुविधाओं एवं संप्रेषण माध्यमों की व्यवस्था का समर्थन करता है।

इस परिप्रेक्ष्य में भाषा एवं अनुदेशन माध्यम का चयन केवल शैक्षणिक निर्णय नहीं, बल्कि भाषायी एवं शैक्षिक अधिकारों का प्रश्न भी बन जाता है।

भाषा एवं अनुदेशन माध्यम का चयन श्रवण बाधित शिक्षा के सबसे जटिल एवं बहुआयामी मुद्दों में से एक है। यह निर्णय भाषावैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक कारकों से प्रभावित होता है। समकालीन दृष्टिकोण किसी एक सार्वभौमिक पद्धति को स्वीकार करने के बजाय शिक्षार्थी-केंद्रित, बहुभाषिक एवं बहु-माध्यमीय दृष्टिकोण का समर्थन करता है। प्रभावी भाषा नीति वही मानी जाएगी जो शिक्षार्थी को प्रारम्भिक अवस्था से सुलभ

भाषा उपलब्ध कराए, उसकी भाषायी पहचान का सम्मान करे तथा उसे शैक्षणिक एवं सामाजिक जीवन में पूर्ण सहभागिता के अवसर प्रदान करे।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

18. श्रवण बाधित बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए.....उपलब्धता को समकालीन शोध में सबसे गंभीर चुनौती माना गया है।

19. समावेशी शिक्षा के संदर्भ में भाषा एवं अनुदेशन माध्यम का चयन केवल शैक्षिक निर्णय नहीं, बल्कि .....एवं शैक्षिक अधिकारों का प्रश्न भी है।

20. समकालीन दृष्टिकोण किसी एक सार्वभौमिक पद्धति के बजाय .....-केंद्रित दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

12.11 सारांश

इस इकाई में श्रवण बाधित व्यक्तियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन, प्रतिवेदन तथा अनुदेशन माध्यम के चयन से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन किया गया। शैक्षिक आकलन को एक निरंतर, व्यवस्थित एवं निर्णयोन्मुख प्रक्रिया के रूप में समझाया गया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की उपलब्धियों, क्षमताओं, सीमाओं तथा शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान की जाती है। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए आकलन केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषा विकास, संप्रेषण कौशल, साक्षरता, सामाजिक सहभागिता तथा कार्यात्मक दक्षताओं का भी आकलन करता है।

इकाई में आकलन की दो प्रमुख विधियों-औपचारिक एवं अनौपचारिक आकलन का विस्तृत विवेचन किया गया है। औपचारिक आकलन मानकीकृत परीक्षणों, उपलब्धि परीक्षणों, भाषा परीक्षणों तथा संज्ञानात्मक मूल्यांकन पर आधारित होता है, जबकि अनौपचारिक आकलन में अवलोकन, चेकलिस्ट, रेटिंग स्केल, पोर्टफोलियो, प्रदर्शन मूल्यांकन तथा साक्षात्कार जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। दोनों प्रकार के आकलन एक-दूसरे के पूरक हैं तथा श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन के लिए आवश्यक हैं।

प्रतिवेदन की प्रक्रिया को शैक्षिक निर्णय लेने का आधार माना गया है। वर्णनात्मक, मात्रात्मक, दक्षता-आधारित, पोर्टफोलियो आधारित, प्रगति प्रतिवेदन तथा सम्मेलन आधारित प्रतिवेदन जैसी तकनीकों का अध्ययन किया गया है। प्रभावी प्रतिवेदन शिक्षार्थी की शक्तियों, आवश्यकताओं एवं संभावित हस्तक्षेपों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

इकाई का एक महत्वपूर्ण भाग श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अनुदेशन माध्यम के चयन से संबंधित है। इसमें श्रवण हानि की प्रकृति, भाषा दक्षता, प्रारम्भिक भाषा अनुभव, घर एवं विद्यालय में प्रयुक्त भाषा, समुदाय का भाषायी वातावरण, सहायक तकनीकों की उपलब्धता तथा शैक्षिक लक्ष्यों को अनुदेशन माध्यम चयन के प्रमुख मानदण्डों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

घर, विद्यालय एवं समुदाय में प्रयुक्त भाषाओं की भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि भाषायी निरंतरता श्रवण बाधित विद्यार्थियों के भाषा, साक्षरता एवं शैक्षणिक विकास को सुदृढ़ बनाती है। साथ ही भाषा एवं अनुदेशन माध्यम चयन से जुड़ी चुनौतियों जैसे भाषायी विविधता, प्रारम्भिक भाषा अभाव, सांकेतिक भाषा संसाधनों की कमी, तकनीकी हस्तक्षेपों की सीमाएँ

तथा भाषायी अधिकारों से जुड़े मुद्दों का भी आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया है कि श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए प्रभावी शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु बहुआयामी आकलन, विद्यार्थी-केंद्रित प्रतिवेदन तथा सुलभ एवं उपयुक्त भाषा माध्यम का चयन अनिवार्य है।

12.12 शब्दावली

शब्द अर्थ

शैक्षिक आकलन विद्यार्थियों की उपलब्धियों, क्षमताओं एवं आवश्यकताओं का व्यवस्थित मूल्यांकन

औपचारिक आकलन मानकीकृत एवं संरचित परीक्षणों पर आधारित मूल्यांकन

अनौपचारिक आकलन वास्तविक परिस्थितियों में किया गया लचीला एवं सतत मूल्यांकन

उपलब्धि परीक्षण विषय-विशेष में अर्जित ज्ञान एवं कौशलों का परीक्षण

भाषा आकलन भाषा समझने एवं अभिव्यक्त करने की क्षमता का मूल्यांकन

साक्षरता पठन लेखन एवं भाषा-बोध की क्षमता

पोर्टफोलियो विद्यार्थी के कार्यों एवं प्रगति का संगठित संग्रह

प्रदर्शन आकलन वास्तविक कार्यों के माध्यम से दक्षताओं का मूल्यांकन

प्रतिवेदन आकलन परिणामों का व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण

वर्णनात्मक प्रतिवेदन गुणात्मक विवरण पर आधारित प्रतिवेदन

दक्षता-आधारित प्रतिवेदन अधिगम परिणामों एवं दक्षताओं पर आधारित प्रतिवेदन

अनुदेशन माध्यम शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रयुक्त भाषा या संप्रेषण प्रणाली

भारतीय सांकेतिक भाषा भारत में प्रयुक्त मान्यता प्राप्त सांकेतिक भाषा

सम्पूर्ण संप्रेषणमौखिक भाषा, संकेत, हाव-भाव एवं दृश्य माध्यमों का संयुक्त उपयोग

द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण सांकेतिक भाषा को प्रथम तथा लिखित/मौखिक भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में विकसित करने की पद्धति

भाषा अभाव प्रारम्भिक अवस्था में पर्याप्त भाषायी अनुभव का अभाव

श्रवण यंत्र श्रवण क्षमता बढ़ाने वाला सहायक उपकरण

कार्यात्मक साक्षरता दैनिक जीवन की आवश्यकताओं हेतु भाषा एवं साक्षरता का उपयोग

बहुआयामी आकलन विभिन्न स्रोतों एवं विधियों के माध्यम से किया गया समग्र मूल्यांकन

अभ्यास प्रश्न (स्व-मूल्यांकन प्रश्न)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

21. शैक्षिक आकलन से क्या अभिप्राय है?

22. औपचारिक आकलन की एक विशेषता लिखिए।

23. अनौपचारिक आकलन का एक उदाहरण दीजिए।

24. पोर्टफोलियो आकलन क्या है?

25. प्रतिवेदन का उद्देश्य क्या है?

26. भारतीय सांकेतिक भाषा क्या है?

27. सम्पूर्ण संप्रेषण से क्या तात्पर्य है?

28. आई ई पी का पूर्ण रूप लिखिए।

29. कार्यात्मक साक्षरता से क्या अभिप्राय है?

30. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए भाषा आकलन क्यों आवश्यक है?

12.13 अभ्यास प्रश्नों (स्व-मूल्यांकन प्रश्न) के उत्तर

1. व्यवस्थित

2. संभावनाओं

3. प्रक्रिया

4. गुणवत्ता

5. बहु-स्रोत तथा बहु-विधि

6. अभिव्यंजक

7. पाठ्यक्रम

8. वास्तविक (या प्राकृतिक)

9. प्रतिवेदन

10. वर्णनात्मक

11. मात्रात्मक

12. श्रवण क्षति

13. द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक

14. बहुआयामी

15. घर

16. अधिगम (या ज्ञानार्जन)

17. सामंजस्य (या भाषाई निरंतरता)

18. प्रारम्भिक भाषा

19. भाषायी अधिकार

20. शिक्षार्थी (या विद्यार्थी)

21. विद्यार्थियों की उपलब्धियों, क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के व्यवस्थित आकलन की प्रक्रिया को शैक्षिक आकलन कहते हैं।

22. औपचारिक आकलन मानकीकृत एवं संरचित होता है।

23. अवलोकन।

24. विद्यार्थी के कार्यों एवं प्रगति का संगठित संग्रह पोर्टफोलियो कहलाता है।

25. आकलन परिणामों को संबंधित व्यक्तियों तक पहुँचाना।

26. भारत में प्रयुक्त मान्यता प्राप्त सांकेतिक भाषा।

27. विभिन्न संप्रेषण माध्यमों का संयुक्त उपयोग।

28. व्यक्तिगत शिक्षा योजना

29. दैनिक जीवन में भाषा एवं साक्षरता कौशलों का प्रभावी उपयोग।

30. भाषा विकास एवं शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान के लिए।

12.14 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Arschark, M., & Spencer, P. E. (2016). The Oxford Handbook of Deaf Studies in Learning and Cognition. Oxford University Press.

2. Bharatraj, J. (1992). Developmental Screening Test. Mysore: Swayamsiddha.

3. Cummins, J. (2000). Language, Power and Pedagogy: Bilingual Children in the Crossfire. Multilingual Matters.

4. Easterbrooks, S. R., & Beal-Alvarez, J. (2013). Literacy Instruction for Students Who Are Deaf and Hard of Hearing. Oxford University Press.

5. Government of India. (2016). Rights of Persons with Disabilities Act, 2016.

6. Humphries, T., et al. (2012). Language acquisition for deaf children: Reducing the harms of zero tolerance to the use of sign languages. Harm Reduction Journal, 9(16), 1–9.

7. Humphries, T., Kushalnagar, P., Mathur, G., Napoli, D. J., Padden, C., Rathmann, C., & Smith, S. (2012). Language acquisition for deaf children: Reducing the harms of zero tolerance to the use of sign languages. Harm Reduction Journal, 9(16), 1–9.

8. Karanth, P. (1980). Linguistic Profile Test. Mysore: AIISH.

9. Katz, J., Chasin, M., English, K., Hood, L., & Tillery, K. (2015). Handbook of Clinical Audiology (7th ed.). Wolters Kluwer.

10. Lerner, J. W., Lowenthal, B., & Egan, R. W. (2022). Special Education for Today's Teachers. Cengage Learning.

11. Malar, G., Antony, F., & Krishan, S. (2016). Readiness checklist for post-school transition (for screening adolescents with hearing impairment) – RCPST. All India Institute of Speech and Hearing, Mysore. ISBN: 978-93-81584-72-9. https://www.researchgate.net/publication/392015713_Readiness_checklist_for_post-

school_transition_for_screening_adolescents_with_hearing_impairment_-_RCPST

12. Malar, G., Singh, T., Shobha, B. N., & Suresh, E. G. A. (2016). Test for Pre-Academic Skills (T-PAS).

13. Malin, A. J. (1971). Vineland Social Maturity Scale: Indian Adaptation. Agra: National Psychological Corporation.

14. Marschark, M., & Hauser, P. (2012). How Deaf Children Learn. Oxford University Press.

15. Marschark, M., & Spencer, P. E. (2016). The Oxford Handbook of Deaf Studies in Learning and Cognition. Oxford University Press.

16. Paul, P. V. (2021). Literacy and Deafness: The Development of Reading, Writing and Literate Thought. Routledge.

17. Paul, P. V. (2021). Literacy and Deafness: The Development of Reading, Writing and Literate Thought. Routledge.

18. Raven, J. (2008). Raven Progressive Matrices and Vocabulary Scales. Pearson.

19. Salvia, J., Ysseldyke, J., & Bolt, S. (2017). Assessment in Special and Inclusive Education (13th ed.). Cengage Learning.

20. UNESCO. (2020). Global Education Monitoring Report 2020: Inclusion and Education – All Means All. UNESCO.

21. United Nations. (2006). Convention on the Rights of Persons with Disabilities (UNCRPD).

22. World Health Organization (2021). World Report on Hearing.

12.15 निबंधात्मक प्रश्न

1. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन की अवधारणा, उद्देश्य एवं महत्व का समालोचनात्मक विवेचन कीजिए।

2. औपचारिक एवं अनौपचारिक आकलन की विधियों, तकनीकों एवं उपकरणों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।

3. श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए प्रमुख आकलन उपकरणों का वर्णन करते हुए उनकी उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

4. श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अनुदेशन माध्यम चयन के मानदण्डों का विस्तृत विवेचन कीजिए।

5. घर, विद्यालय एवं समुदाय में प्रयुक्त भाषाओं की भूमिका का श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

6. भाषा एवं अनुदेशन माध्यम चयन में आने वाली चुनौतियों का समकालीन दृष्टिकोण से परीक्षण कीजिए।

7. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के भाषा एवं साक्षरता विकास में प्रारम्भिक भाषा उपलब्धता के महत्व का विश्लेषण कीजिए।

इकाई 13

शैक्षिक आकलन के परिणामः पहचान, शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्तिय शैक्षणिक ध् शिक्षाशास्त्र संबंधी निर्णयों के साथ जोड़ना

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान

13.4 शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति

13.5 शैक्षिक आकलन एवं शैक्षणिक निर्णयों के मध्य संबंध

13.5.1 आकलन आधारित प्रमुख शैक्षणिक निर्णय

13.5.2 शैक्षिक आकलन और शैक्षणिक निर्णयों का सैद्धान्तिक आधार

13.5.3 श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन एवं शैक्षणिक निर्णयों का समेकित उदाहरण

13.6 आकलन परिणामों का महत्व

13.7 सारांश

13.8 शब्दावली

13.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

13.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची

13.11 निबन्धात्मक प्रश्न

13.1 प्रस्तावना

शिक्षा की प्रक्रिया में शैक्षिक आकलन केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों को मापने का साधन नहीं है, बल्कि यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, समावेशी और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने का महत्वपूर्ण आधार भी है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में आकलन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि प्रत्येक शिक्षार्थी की क्षमताएँ, आवश्यकताएँ, अधिगम शैली तथा विकासात्मक विशेषताएँ भिन्न होती हैं। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में आकलन भाषा, संप्रेषण,

साक्षरता, सामाजिक सहभागिता तथा शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान करता है।

आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार आकलन का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों की कमियों की पहचान करना नहीं है, बल्कि उनकी शक्तियों, संभावनाओं तथा विकास के अवसरों को समझना भी है। आकलन से प्राप्त परिणाम शिक्षकों, अभिभावकों तथा अन्य विशेषज्ञों को विद्यार्थी की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करने, उपयुक्त हस्तक्षेपों की योजना बनाने तथा प्रभावी शिक्षण रणनीतियों का चयन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

साल्विया, यस्सेल्डाइक एवं बोल्ट (2017) के अनुसार शैक्षिक आकलन का वास्तविक मूल्य तभी है जब उसके परिणामों का उपयोग विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शैक्षिक निर्णय लेने तथा अधिगम को बेहतर बनाने में किया जाए।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी-

1. शैक्षिक आकलन के परिणामों की अवधारणा को समझ सकेंगे।

2. आकलन के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान कर सकेंगे।

3. शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हस्तक्षेप योजनाओं का महत्व समझ सकेंगे।

4. आकलन परिणामों और शैक्षणिक निर्णयों के मध्य संबंध का विश्लेषण कर सकेंगे।

5. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में आकलन आधारित शिक्षण की आवश्यकता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

13.3 शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान

शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान शैक्षिक आकलन का एक प्रमुख परिणाम है, जिसके माध्यम से शिक्षार्थी की वर्तमान शैक्षिक स्थिति, अधिगम क्षमताओं, सीमाओं, संभावनाओं तथा समर्थन आवश्यकताओं का व्यवस्थित विश्लेषण किया जाता है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में इसका उद्देश्य केवल कठिनाइयों की पहचान करना नहीं है, बल्कि उन कारकों को समझना भी है जो शिक्षार्थी के अधिगम, सहभागिता तथा शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करते हैं।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में यह प्रक्रिया भाषा, संप्रेषण, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक - भावनात्मक विकास, कार्यात्मक दक्षताओं तथा सहायक तकनीकों की आवश्यकता का समग्र आकलन करती है। यही मूल्यांकन व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम, शिक्षण-अधिगम रणनीतियों तथा आवश्यक सहयोगी सेवाओं के निर्धारण का आधार बनता है (लर्नर और अन्य, 2022).

1. भाषा एवं संप्रेषण संबंधी आवश्यकताओं की पहचान

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में भाषा एवं संप्रेषण केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। इसलिए आकलन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षार्थी की ग्रहणशील तथा अभिव्यंजक भाषा दक्षताओं का मूल्यांकन करना है। इसके अंतर्गत शब्दावली विकास, व्याकरणिक संरचना, भाषा-बोध, कथन क्षमता, सांकेतिक भाषा दक्षता तथा लिखित भाषा कौशलों का अध्ययन किया जाता है।

भाषा आकलन के माध्यम से यह निर्धारित किया जाता है कि विद्यार्थी पाठ्यवस्तु को किस सीमा तक समझ पा रहा है, अपने विचारों को किस प्रकार अभिव्यक्त कर रहा है तथा उसे भाषा विकास के लिए किस प्रकार के हस्तक्षेप की आवश्यकता है। शोधों से स्पष्ट हुआ है कि भाषा दक्षता श्रवण बाधित विद्यार्थियों की साक्षरता, संज्ञानात्मक विकास तथा शैक्षणिक उपलब्धियों का प्रमुख निर्धारक है (पॉल, 2021)।

उदाहरणार्थ, यदि कोई श्रवण बाधित विद्यार्थी लिखित पाठ को पढ़ तो लेता है, किन्तु उसका अर्थ समझने अथवा अपने विचारों को लिखित रूप में व्यक्त करने में कठिनाई अनुभव करता है, तो आकलन यह संकेत दे सकता है कि उसे भाषा समृद्धि कार्यक्रम तथा अतिरिक्त भाषाई हस्तक्षेप की आवश्यकता है। इसी प्रकार, यदि विद्यार्थी सांकेतिक भाषा का प्रभावी उपयोग करता है परन्तु मौखिक भाषा में कठिनाई अनुभव करता है, तो द्विभाषी-द्विसांस्कृतिक शिक्षण दृष्टिकोण उपयोगी हो सकता है (पॉल, 2021).

2. शैक्षणिक आवश्यकताओं की पहचान

शैक्षणिक आवश्यकताओं का निर्धारण विद्यार्थी की विषयगत उपलब्धियों तथा अधिगम स्तर के विश्लेषण के माध्यम से किया जाता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षार्थी विभिन्न विषयों में अपेक्षित अधिगम परिणामों को किस सीमा तक प्राप्त कर पा रहा है।

इस प्रक्रिया में पठन-बोध, लेखन कौशल, गणितीय तर्क, वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ तथा समस्या-समाधान क्षमताओं का आकलन किया जाता है। शैक्षणिक आकलन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों को यह निर्णय लेने में सहायता करते हैं कि किन क्षेत्रों में अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता, पाठ्यक्रम अनुकूलन, विभेदित शिक्षण

अथवा वैकल्पिक शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता है (साल्विया और अन्य, 2022)।

उदाहरण के लिए, यदि आकलन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी गणितीय अवधारणाओं को समझता है, किन्तु शब्द-आधारित (शब्द-समस्याएँ) गणितीय प्रश्नों को हल करने में कठिनाई अनुभव करता है, तो शिक्षक दृश्य सामग्री अथवा सरल भाषा आधारित निर्देशों का प्रयोग कर सकते हैं। इसी प्रकार, यदि पठन-बोध स्तर कक्षा की अपेक्षित उपलब्धि से कम पाया जाता है, तो व्यक्तिगत पठन कार्यक्रम विकसित किया जा सकता है (साल्विया और अन्य, 2022)।

3. सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं की पहचान

श्रवण बाधिता केवल भाषा एवं शैक्षणिक उपलब्धियों को ही प्रभावित नहीं करती, बल्कि सामाजिक अन्तःक्रिया, आत्म-अभिव्यक्ति तथा भावनात्मक समायोजन को भी प्रभावित कर सकती है। इसलिए प्रभावी शैक्षिक आकलन में सामाजिक एवं भावनात्मक पक्षों का मूल्यांकन अनिवार्य माना जाता है।

इस संदर्भ में आत्मविश्वास, आत्म-अवधारणा, सहपाठियों के साथ संबंध, समूह सहभागिता, सामाजिक संप्रेषण कौशल तथा भावनात्मक स्थिरता जैसे आयामों का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं की पहचान समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने तथा आवश्यक परामर्श एवं मनोसामाजिक सहायता सेवाओं की योजना तैयार करने में सहायक होती है।

मार्सचर्क और स्पेंसर (2016) के अनुसार सामाजिक सहभागिता एवं संप्रेषण दक्षता श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता तथा मनोसामाजिक समायोजन से घनिष्ठ रूप से संबद्ध हैं।

उदाहरणार्थ, यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में चर्चाओं में भाग लेने से बचता है अथवा समूह गतिविधियों के दौरान स्वयं को अलग रखता है, तो यह सामाजिक संप्रेषण संबंधी कठिनाइयों अथवा कम आत्मविश्वास का संकेत हो सकता है। ऐसी स्थिति में सामाजिक कौशल प्रशिक्षण, सहपाठी सहयोग कार्यक्रम अथवा परामर्श सेवाएँ उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। इसी प्रकार, यदि विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करने में संकोच करता है, तो आत्म-अधिवक्ता कौशल विकसित करने की आवश्यकता हो सकती है मार्सचर्क और स्पेंसर (2016)।

4. कार्यात्मक एवं अनुकूलन संबंधी आवश्यकताओं की पहचान

आधुनिक विशेष शिक्षा केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वतंत्र जीवन-यापन तथा सामाजिक कार्यक्षमता को भी समान महत्व देती है। इसलिए आकलन के माध्यम से उन कार्यात्मक कौशलों का मूल्यांकन किया जाता है जो दैनिक जीवन में सफल सहभागिता के लिए आवश्यक हैं।

इनमें स्वतंत्र संप्रेषण, समय प्रबंधन, निर्णय क्षमता, समस्या-समाधान, सामाजिक व्यवहार, आत्म-प्रबंधन तथा जीवन कौशल सम्मिलित हैं। कार्यात्मक मूल्यांकन विशेष रूप से किशोर एवं युवा श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विद्यालय से रोजगार तथा स्वतंत्र जीवन की ओर स्थानांतरण की प्रभावी योजना बनाने में सहायता करता है (हलाहन और अन्य, 2022)।

उदाहरण के लिए, यदि कोई किशोर श्रवण बाधित विद्यार्थी सार्वजनिक स्थानों पर जानकारी प्राप्त करने या यात्रा संबंधी निर्देशों को समझने में कठिनाई अनुभव करता है, तो उसे कार्यात्मक संप्रेषण कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है। इसी प्रकार, यदि विद्यार्थी समय-प्रबंधन अथवा कार्यों को प्राथमिकता देने में कठिनाई अनुभव करता है, तो संगठनात्मक कौशल विकसित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है (हलाहन और अन्य, 2022).

5. सहायक तकनीकों एवं सहयोगी सेवाओं की आवश्यकता की पहचान

वर्तमान समय में विभिन्न सहायक तकनीकों ने श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक पहुँच एवं सहभागिता को व्यापक बनाया है। आकलन प्रक्रिया यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि शिक्षार्थी को किस प्रकार की तकनीकी सहायता अथवा सहयोगी सेवाओं की आवश्यकता है।

इस आकलन में श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट, एफ.एम. प्रणाली, अनुशीर्षक सेवाएँ, स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर तथा अन्य सहायक तकनीकों की उपयोगिता का परीक्षण किया जाता है। साथ ही यह भी निर्धारित किया जाता है कि विद्यार्थी को श्रवण विशेषज्ञ, वाक-भाषा विशेषज्ञ, सांकेतिक भाषा दुभाषिया अथवा विशेष शिक्षक जैसी सहयोगी सेवाओं की आवश्यकता है या नहीं। उपयुक्त सहायक तकनीकों तक पहुँच विद्यार्थियों की शैक्षिक सहभागिता, संप्रेषण दक्षता तथा अधिगम परिणामों में उल्लेखनीय सुधार ला सकती है (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2021)।

उदाहरणार्थ, यदि विद्यार्थी कक्षा में शिक्षक की आवाज को स्पष्ट रूप से सुनने में कठिनाई अनुभव करता है, तो एफ.एम. प्रणाली का उपयोग उसकी श्रवण पहुँच को बेहतर बना सकता है। इसी प्रकार, यदि विद्यार्थी व्याख्यान को सुनने की अपेक्षा लिखित रूप में बेहतर समझता है, तो रियल-टाइम कैप्शनिंग अथवा स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर का उपयोग लाभकारी हो सकता है। कॉक्लियर इम्प्लांट उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के लिए नियमित श्रवण-अनुवर्तन तथा वाक्-भाषा चिकित्सा भी आवश्यक हो सकती है (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2021).

शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान विशेष शिक्षा की आधारभूत प्रक्रिया है। यह केवल विद्यार्थियों की कठिनाइयों को चिह्नित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनकी शक्तियों, संभावनाओं तथा विकासात्मक आवश्यकताओं की समग्र समझ

विकसित करती है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में भाषा, संप्रेषण, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक-भावनात्मक विकास, कार्यात्मक कौशल तथा सहायक तकनीकों से संबंधित आवश्यकताओं की सटीक पहचान प्रभावी शिक्षण, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना निर्माण, समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन तथा शिक्षार्थी-केंद्रित शैक्षिक योजना के लिए अनिवार्य है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं की पहचान के अंतर्गत ..... आत्म-अवधारणा तथा सहपाठियों के साथ संबंधों का आकलन किया जाता है।

2. यदि विद्यार्थी कक्षा में शिक्षक की आवाज स्पष्ट रूप से सुनने में कठिनाई अनुभव करता है, तो.....प्रणाली का उपयोग लाभकारी हो सकता है

3. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सहायक तकनीकों में श्रवण यंत्र, कॉक्लियर इम्प्लांट तथा..... सॉफ्टवेयर शामिल हैं।

13.4 शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति

शैक्षिक आकलन का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं कठिनाइयों की पहचान करना नहीं है, बल्कि उन आवश्यकताओं की प्रभावी पूर्ति हेतु उपयुक्त शैक्षिक हस्तक्षेपों, सेवाओं तथा समर्थन व्यवस्थाओं का विकास करना भी है। विशेष शिक्षा के संदर्भ में आकलन तभी सार्थक माना जाता है जब उसके निष्कर्षों का उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, पाठ्यक्रम

अनुकूलन, सहयोगी सेवाओं तथा व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाओं के निर्माण में किया जाए। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का उद्देश्य उनकी भाषा, संप्रेषण, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक सहभागिता तथा स्वतंत्र जीवन कौशलों का अधिकतम विकास सुनिश्चित करना है (साल्विया और अन्य, 2022)

1. व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम का निर्माण

शैक्षिक आकलन का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम का निर्माण है। व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम एक लिखित शैक्षिक योजना है जो विद्यार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक लक्ष्यों के आधार पर तैयार की जाती है।

व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम में सामान्यतः वर्तमान कार्यक्षमता स्तर, वार्षिक लक्ष्य, अल्पकालिक उद्देश्य, शिक्षण रणनीतियाँ, आवश्यक सहयोगी सेवाएँ तथा मूल्यांकन प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं।

उदाहरणार्थ, यदि आकलन से ज्ञात होता है कि कोई श्रवण बाधित विद्यार्थी कक्षा स्तर की अपेक्षा दो वर्ष पीछे पठन कौशल रखता है, तो व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम में पठन-बोध सुधार हेतु विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए जा सकते हैं, जैसे छह माह के भीतर सरल अनुच्छेदों की मुख्य अवधारणा पहचानने की क्षमता विकसित करना। इसी प्रकार, यदि विद्यार्थी सांकेतिक भाषा में दक्ष है, तो शिक्षण प्रक्रिया में सांकेतिक भाषा आधारित रणनीतियों को शामिल किया जा सकता है (हलाहन और अन्य, 2022).

2. भाषा एवं संप्रेषण हस्तक्षेप कार्यक्रम

जब आकलन के माध्यम से भाषा अथवा संप्रेषण संबंधी कठिनाइयों की पहचान होती है, तब उपयुक्त भाषा हस्तक्षेप कार्यक्रम विकसित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य भाषा विकास, संप्रेषण दक्षता तथा साक्षरता कौशलों को सुदृढ़ बनाना होता है।

भाषा हस्तक्षेप कार्यक्रमों में शब्दावली विस्तार गतिविधियाँ, पठन-बोध प्रशिक्षण, लेखन कौशल विकास, सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण तथा वाक एवं भाषा चिकित्सा सम्मिलित हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी की शब्दावली सीमित पाई जाती है, तो चित्रों, वीडियो तथा संदर्भ-आधारित गतिविधियों के माध्यम से शब्दावली विकास कार्यक्रम संचालित किया जा सकता है। यदि विद्यार्थी लिखित भाषा को समझने में कठिनाई अनुभव करता है, तो संरचित पठन-बोध कार्यक्रम विकसित किया जा सकता है। जिन विद्यार्थियों में मौखिक संप्रेषण की सीमाएँ हों, उनके लिए सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण या द्विभाषी-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण उपयोगी हो सकता है (पॉल, 2021).

3. पाठ्यक्रम अनुकूलन

शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम तथा शिक्षण सामग्री में आवश्यक संशोधन करना भी महत्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम अनुकूलन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थी अपनी क्षमताओं के अनुरूप अधिगम के अवसर प्राप्त कर सके।

इसके अंतर्गत शिक्षण सामग्री का सरलीकरण, दृश्य-सहायक सामग्री का उपयोग, अतिरिक्त समय प्रदान करना, वैकल्पिक आकलन विधियों का प्रयोग तथा शिक्षण गति में आवश्यक परिवर्तन शामिल किए जा सकते हैं।

उदाहरणार्थ, यदि कोई श्रवण बाधित विद्यार्थी जटिल भाषाई निर्देशों को समझने में कठिनाई अनुभव करता है, तो शिक्षक सरल भाषा, चित्रों, चार्टों एवं ग्राफिक आयोजकों का प्रयोग कर सकते हैं। इसी प्रकार, परीक्षा के दौरान अतिरिक्त समय या लिखित निर्देश उपलब्ध कराना उसकी शैक्षणिक उपलब्धि को बेहतर बना सकता है (फ्रेंड और बरसक, 2019).

4. सहायक सेवाएँ एवं बहु-विषयक सहयोग

विशेष शिक्षा में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहु-विषयक सहयोग अत्यंत आवश्यक है। आकलन के निष्कर्ष यह निर्धारित करते हैं कि विद्यार्थी को किन विशेषज्ञ सेवाओं की आवश्यकता है। इन सहयोगी सेवाओं में विशेष शिक्षक, ऑडियोलॉजिस्ट, वाक एवं भाषा चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता, व्यावसायिक चिकित्सक तथा सांकेतिक भाषा दुभाषिया शामिल हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आकलन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी श्रवण यंत्र का प्रभावी उपयोग नहीं कर पा रहा है, तो श्रवण विशेषज्ञ द्वारा उपकरण का पुनः समायोजन किया जा सकता है। यदि विद्यार्थी सामाजिक समायोजन संबंधी कठिनाइयों का सामना कर रहा है, तो मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं। इसी प्रकार, कक्षा शिक्षण को सुलभ बनाने हेतु सांकेतिक भाषा दुभाषिए की व्यवस्था की जा सकती है (मार्शार्क और स्पेंसर, 2016).

5. अभिभावक सहभागिता एवं गृह-विद्यालय सहयोग

शैक्षिक आवश्यकताओं की प्रभावी पूर्ति के लिए अभिभावकों की सक्रिय सहभागिता अत्यंत महत्वपूर्ण है। आकलन के परिणामों को अभिभावकों के साथ

साझा किया जाता है ताकि घर एवं विद्यालय के बीच समन्वित हस्तक्षेप सुनिश्चित किया जा सके।

अभिभावकों को विद्यार्थी की शक्तियों, कठिनाइयों, प्रगति तथा आवश्यक सहयोग संबंधी जानकारी प्रदान की जाती है। साथ ही उन्हें घर पर भाषा विकास, संप्रेषण कौशल तथा अध्ययन आदतों को प्रोत्साहित करने के उपायों से भी अवगत कराया जाता है।

उदाहरणार्थ, यदि विद्यार्थी को शब्दावली विकास में कठिनाई है, तो अभिभावकों को घर पर चित्र-पुस्तकों, कहानी-कथन तथा दैनिक वार्तालाप गतिविधियों के माध्यम से भाषा समृद्धि के अवसर प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसी प्रकार, यदि विद्यार्थी श्रवण यंत्र का उपयोग करता है, तो अभिभावकों को उसके रख-रखाव एवं नियमित उपयोग के संबंध में प्रशिक्षित किया जा सकता है (टर्नबुल और अन्य, 2022).

शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति शैक्षिक आकलन प्रक्रिया का व्यावहारिक एवं क्रियात्मक पक्ष है। यह प्रक्रिया पहचान की गई आवश्यकताओं को प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेपों, व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रमों, पाठ्यक्रम अनुकूलन, सहयोगी सेवाओं तथा अभिभावक सहभागिता के माध्यम से संबोधित करती है। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में आवश्यकताओं की उचित पूर्ति न केवल उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों को बढ़ाती है, बल्कि भाषा विकास, सामाजिक सहभागिता, आत्मनिर्भरता तथा जीवन की समग्र गुणवत्ता में भी सकारात्मक योगदान देती है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

4. शैक्षिक आकलन का एक महत्वपूर्ण परिणाम ..... शैक्षिक कार्यक्रम का निर्माण है।

5. शैक्षिक आवश्यकताओं की प्रभावी पूर्ति के लिए अभिभावकों की ..... सहभागिता अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

6. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए बहु-विषयक सहयोग में विशेष शिक्षक, ऑडियोलॉजिस्ट तथा..... भाषा दुभाषिया शामिल हो सकते हैं।

13.5 शैक्षिक आकलन एवं शैक्षणिक निर्णयों के मध्य संबंध

शैक्षिक आकलन और शैक्षणिक निर्णय शिक्षा प्रक्रिया के दो परस्पर पूरक एवं अभिन्न घटक हैं। आकलन केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मापन करने का साधन नहीं है, बल्कि यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को दिशा प्रदान करने वाला एक वैज्ञानिक आधार भी है। प्रभावी शिक्षण की योजना, क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन के लिए शिक्षक को यह जानना आवश्यक होता है कि विद्यार्थी क्या जानते हैं, कैसे सीखते हैं, किन कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं तथा उनकी अधिगम आवश्यकताएँ क्या हैं। यह जानकारी मुख्यतः आकलन प्रक्रिया से प्राप्त होती है।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में, विशेषकर श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में, आकलन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि प्रत्येक शिक्षार्थी की भाषा, संप्रेषण, संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा शैक्षणिक आवश्यकताएँ भिन्न हो सकती

हैं। इसलिए आकलन के निष्कर्षों को सीधे शिक्षण निर्णयों से जोड़ना आवश्यक होता है ताकि शिक्षण अधिक व्यक्तिगत, समावेशी तथा परिणामोन्मुख बन सके।

ब्लैक और विलियम (2018) के अनुसार, "आकलन उस समय निर्माणात्मक स्वरूप ग्रहण करता है, जब विद्यार्थियों की उपलब्धियों से संबंधित प्रमाणों का संकलन एवं विश्लेषण किया जाए तथा उनका उपयोग शिक्षक और शिक्षार्थी शिक्षण की आगामी दिशा निर्धारित करने वाले निर्णयों के लिए करें।" अर्थात् आकलन तभी सार्थक होता है जब उसके निष्कर्षों का उपयोग शिक्षण संबंधी निर्णयों में किया जाए।

13.5.1 शैक्षिक आकलन और शैक्षणिक निर्णयों का सैद्धान्तिक आधार

आधुनिक अधिगम सिद्धांतों के अनुसार शिक्षण एक गतिशील एवं प्रत्युत्तरशील प्रक्रिया है। शिक्षक को विद्यार्थियों की वर्तमान उपलब्धियों एवं आवश्यकताओं के आधार पर शिक्षण रणनीतियों में निरंतर संशोधन करना पड़ता है। इस दृष्टिकोण को सीखने के लिए आकलन कहा जाता है, जिसमें आकलन का उद्देश्य केवल अधिगम का मापन करना नहीं, बल्कि अधिगम को बेहतर बनाना होता है।

टॉमलिंसन (2017) के अनुसार, विभेदित शिक्षण तभी संभव है जब शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं एवं अधिगम आवश्यकताओं की पहचान आकलन के माध्यम से करें। इसी प्रकार, हैलाहन,

कॉफमैन और पुलेन (2022) का मत है कि विशेष शिक्षा में सभी शैक्षणिक निर्णय-जैसे व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना निर्माण, शिक्षण रणनीतियों का चयन, सहायक तकनीकों का उपयोग तथा प्रगति मूल्यांकन का आधार व्यवस्थित आकलन होना चाहिए।

13.5.2 आकलन आधारित प्रमुख शैक्षणिक निर्णय

1. शिक्षण उद्देश्यों एवं अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण

शिक्षण प्रक्रिया का प्रथम चरण यथार्थवादी एवं मापनीय अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण है। आकलन शिक्षक को यह जानकारी प्रदान करता है कि विद्यार्थी वर्तमान में किस स्तर पर कार्य कर रहा है तथा उसके लिए अगले उपयुक्त अधिगम लक्ष्य क्या होने चाहिए।

यदि आकलन यह दर्शाता है कि विद्यार्थी शब्द-स्तर पर पढ़ने में दक्ष है, किंतु अनुच्छेदों के अर्थ ग्रहण करने में कठिनाई अनुभव करता है, तो शिक्षण का अगला लक्ष्य पठन-बोध विकसित करना हो सकता है। इसी प्रकार यदि कोई श्रवण बाधित विद्यार्थी सरल वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझ सकता है, किंतु तकनीकी शब्दावली के प्रयोग में कठिनाई अनुभव करता है, तो लक्ष्य वैज्ञानिक शब्दावली के विकास पर केंद्रित किया जा सकता है।

उदाहरण-एक श्रवण बाधित विद्यार्थी कक्षा 5 स्तर के पाठ को पढ़ सकता है, किंतु पाठ का सारांश लिखने में कठिनाई अनुभव करता है। आकलन के आधार पर निम्न लक्ष्य निर्धारित किए जा सकते हैंकृ

- मुख्य विचार की पहचान करना।
- अनुच्छेद का संक्षिप्त सार लिखना।
- विषय-विशेष शब्दावली का प्रयोग करना।
- लिखित अभिव्यक्ति में वाक्य संरचना सुधारना।

2. शिक्षण रणनीतियों एवं पद्धतियों का चयन

आकलन से प्राप्त जानकारी यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि कौन-सी शिक्षण रणनीति किसी विशेष विद्यार्थी के लिए सर्वाधिक प्रभावी होगी। विभिन्न विद्यार्थियों की अधिगम शैली, संप्रेषण पद्धति तथा संज्ञानात्मक क्षमताएँ भिन्न होती हैंय अतः सभी के लिए एक समान शिक्षण पद्धति प्रभावी नहीं हो सकती।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए दृश्य आधारित शिक्षण, बहु-संवेदी शिक्षण, सहयोगी अधिगम, अनुभवात्मक अधिगम तथा द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण विशेष रूप से उपयोगी पाए गए हैं।

उदाहरण-यदि आकलन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी दृश्य संकेतों एवं चित्रों के माध्यम से बेहतर सीखता है, तो शिक्षक निम्न रणनीतियाँ अपना सकता हैकृ

- चित्र एवं आरेख आधारित शिक्षण
- वीडियो एवं मल्टीमीडिया संसाधनों का उपयोग
- रेखाचित्रीय आयोजक
- अवधारणा मानचित्र
- प्रदर्शन आधारित शिक्षण

3. अनुदेशन माध्यम एवं संप्रेषण प्रणाली का चयन

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए अनुदेशन माध्यम का चयन एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक निर्णय है। यह निर्णय विद्यार्थी की श्रवण क्षमता, भाषा दक्षता, संप्रेषण प्राथमिकताओं तथा पारिवारिक भाषाई पृष्ठभूमि के आकलन पर आधारित होता है।

आकलन के आधार पर शिक्षक यह निर्धारित कर सकता है कि विद्यार्थी के लिए कौन-सा संप्रेषण मॉडल अधिक उपयुक्त होगाकृ

- ऽ मौखिक-अश्रव्य दृष्टिकोण
- ऽ सांकेतिक भाषा आधारित शिक्षण
- ऽ सम्पूर्ण संप्रेषण
- ऽ द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक मॉडल
- ऽ बहु-माध्यमीय संप्रेषण

उदाहरण-यदि किसी विद्यार्थी की सांकेतिक भाषा दक्षता उच्च है तथा मौखिक भाषा सीमित है, तो विज्ञान एवं गणित की जटिल अवधारणाओं के शिक्षण में सांकेतिक भाषा का उपयोग अधिगम को अधिक प्रभावी बना सकता है।

4. पाठ्यक्रम अनुकूलन एवं शिक्षण सामग्री का चयन

आकलन शिक्षक को यह समझने में सहायता करता है कि पाठ्यक्रम के कौन-से घटक विद्यार्थी के लिए चुनौतीपूर्ण हैं तथा किन क्षेत्रों में अनुकूलन या संशोधन की आवश्यकता है।

संभावित पाठ्यक्रम अनुकूलन

- ऽ भाषा का सरलीकरण
- ऽ अतिरिक्त दृश्य सामग्री का समावेश
- ऽ कार्यपत्रकों का संशोधन

ऽ वैकल्पिक अधिगम गतिविधियाँ

ऽ अतिरिक्त समय की व्यवस्था

ऽ वैकल्पिक मूल्यांकन तकनीकों का प्रयोग

उदाहरण-यदि किसी श्रवण बाधित विद्यार्थी को विज्ञान विषय में तकनीकी शब्दों को समझने में कठिनाई होती है, तो शिक्षककृ

ऽ दृश्य शब्दावली कार्ड तैयार कर सकता है।

ऽ चित्रयुक्त शब्दकोश का उपयोग कर सकता है।

ऽ सांकेतिक भाषा में शब्दावली प्रशिक्षण दे सकता है।

ऽ अवधारणाओं को मॉडल एवं प्रदर्शन के माध्यम से समझा सकता है।

5. समूह निर्धारण एवं विभेदित शिक्षण

आकलन परिणाम विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के आधार पर समूहबद्ध करने में सहायता करते हैं। यह प्रक्रिया समरूप अथवा विषमरूप समूहों के निर्माण में उपयोगी होती है।

उदाहरण-भाषा आकलन के आधार पर विद्यार्थियों को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता हैकृ

ऽ उन्नत भाषा दक्षता समूह

ऽ मध्यम भाषा दक्षता समूह

ऽ गहन भाषा समर्थन समूह

प्रत्येक समूह के लिए अलग-अलग शिक्षण गतिविधियाँ, अधिगम संसाधन तथा मूल्यांकन विधियाँ निर्धारित की जा सकती हैं।

6. सहायक तकनीकों एवं सहयोगी सेवाओं का चयन

आकलन यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि विद्यार्थी को किन सहायक तकनीकों तथा विशेषज्ञ सेवाओं की आवश्यकता है।

संभावित सहायक तकनीकें

- श्रवण यंत्र
- कोक्लियर इम्प्लांट
- एफ एम प्रणाली
- ध्वनि क्षेत्र प्रवर्धन प्रणाली
- अनुशीर्षक सेवाएँ
- स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर
- दृश्य चेतावनी प्रणालियाँ

सहयोगी सेवाएँ

- श्रवण विशेषज्ञ
- वाक्-भाषा रोगविज्ञानी
- विशेष शिक्षक
- सांकेतिक भाषा दुभाषिया

ऽ विद्यालय परामर्शदाता

ऽ मनोविज्ञानी

उदाहरण- यदि आकलन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी कक्षा में शिक्षक की आवाज स्पष्ट रूप से नहीं सुन पा रहा है, तो एफ.एम. प्रणाली का उपयोग उसकी अधिगम उपलब्धि एवं सहभागिता को बढ़ा सकता है।

7. प्रगति निगरानी एवं शिक्षण संशोधन

प्रभावी शिक्षण एक सतत प्रक्रिया है। आकलन के माध्यम से शिक्षक यह निर्धारित करता है कि अपनाई गई शिक्षण रणनीतियाँ अपेक्षित परिणाम दे रही हैं या नहीं। यदि अपेक्षित प्रगति नहीं हो रही है, तो शिक्षण योजना में आवश्यक संशोधन किए जाते हैं।

उदाहरण-यदि तीन माह के हस्तक्षेप के बाद भी विद्यार्थी की पठन-बोध क्षमता में अपेक्षित सुधार नहीं होता, तो शिक्षक-

ऽ वैकल्पिक शिक्षण रणनीतियाँ अपनाता है।

ऽ व्यक्तिगत शिक्षण सत्र आयोजित करता है।

ऽ दृश्य सहायता बढ़ाता है।

ऽ व्यक्तिगत शैक्षिक योजना लक्ष्यों की पुनर्समीक्षा करता है।

13.5.3 श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन एवं शैक्षणिक निर्णयों का समेकित उदाहरण

ऽ शैक्षिक आकलन और शैक्षणिक निर्णयों के मध्य संबंध को समझने के लिए श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में एक व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किया जा

सकता है। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि किस प्रकार आकलन से प्राप्त साक्ष्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न आयामों को प्रभावित करते हैं तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप शैक्षिक हस्तक्षेपों का निर्धारण करते हैं।

ऽ एक समावेशी विद्यालय की कक्षा 6 में अध्ययनरत एक श्रवण बाधित विद्यार्थी विज्ञान विषय में लगातार निम्न उपलब्धि प्रदर्शित कर रहा था। यद्यपि कक्षा गतिविधियों के दौरान वह सक्रिय दिखाई देता था, तथापि लिखित परीक्षाओं एवं विषयगत असाइनमेंट्स में उसका प्रदर्शन अपेक्षित स्तर से कम पाया गया। इस स्थिति को समझने के लिए विद्यार्थी का व्यापक शैक्षिक आकलन किया गया।

ऽ आकलन प्रक्रिया में शैक्षणिक उपलब्धि, भाषा एवं संप्रेषण कौशल, अधिगम शैली, कक्षा व्यवहार तथा विषयगत दक्षताओं का बहुआयामी अध्ययन किया गया। मूल्यांकन के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थी की अवधारणात्मक समझ संतोषजनक थी और वह विज्ञान की मूल अवधारणाओं को समझने में सक्षम था।

इसके विपरीत, लिखित भाषा कौशल अपेक्षाकृत कमजोर पाए गए, जिसके कारण वह अपनी समझ को लिखित रूप में प्रभावी ढंग से व्यक्त नहीं कर पा रहा था। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक शब्दावली का सीमित ज्ञान तथा विषय-विशेष भाषा में कमी भी उसके प्रदर्शन को प्रभावित कर रही थी। आकलन से यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थी सांकेतिक भाषा के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से संप्रेषण करता है तथा दृश्य सामग्री, चित्रों, मॉडलों और वीडियो आधारित शिक्षण से बेहतर अधिगम करता है।

ऽ आकलन से प्राप्त इन निष्कर्षों के आधार पर अनेक महत्वपूर्ण शैक्षणिक निर्णय लिए गए। सर्वप्रथम विज्ञान शिक्षण को अधिक दृश्य एवं गतिविधि-आधारित बनाया गया ताकि विद्यार्थी की अधिगम शैली के अनुरूप शिक्षण प्रदान किया जा सके। वैज्ञानिक शब्दावली के विकास हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किया गया, जिसमें विषयगत शब्दों के दृश्य प्रस्तुतीकरण, सांकेतिक भाषा समकक्षों तथा संदर्भ आधारित अधिगम को सम्मिलित किया गया। जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए सांकेतिक भाषा दुभाषिया की सहायता उपलब्ध कराई गई तथा कैप्शनयुक्त शैक्षिक वीडियो का उपयोग किया गया।

ऽ इसके अतिरिक्त विद्यार्थी के व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम में संशोधन करते हुए भाषा विकास तथा विज्ञान विषय में उपलब्धि वृद्धि से संबंधित विशिष्ट एवं मापनीय लक्ष्य निर्धारित किए गए। पारंपरिक लिखित मूल्यांकन की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए वैकल्पिक मूल्यांकन तकनीकों जैसे परियोजना कार्य, प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन, पोर्टफोलियो तथा मौखिक प्रस्तुतीकरण को भी मूल्यांकन प्रक्रिया में सम्मिलित किया गया।

ऽ इन हस्तक्षेपों के कुछ महीनों के उपरांत पुनः आकलन किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थी की वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ में उल्लेखनीय सुधार हुआ। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के प्रयोग में वृद्धि देखी गई तथा लिखित अभिव्यक्ति में भी सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हुआ। कक्षा गतिविधियों में उसकी सहभागिता बढ़ी और आत्मविश्वास में सुधार हुआ। साथ ही विज्ञान विषय में उसकी शैक्षणिक उपलब्धि पूर्व की अपेक्षा अधिक संतोषजनक पाई गई।

ऽ यह उदाहरण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि समस्या का मूल कारण अवधारणात्मक कमजोरी नहीं था, बल्कि भाषा एवं संप्रेषण संबंधी बाधाएँ थीं। यदि शिक्षक केवल परीक्षा परिणामों के आधार पर निर्णय लेते, तो संभवतः विद्यार्थी को विषयगत रूप से कमजोर समझ लिया जाता। किंतु व्यापक शैक्षिक आकलन ने वास्तविक आवश्यकता की पहचान की और उसी के आधार पर शिक्षण रणनीतियों, मूल्यांकन प्रक्रियाओं तथा सहयोगी सेवाओं में आवश्यक संशोधन किए गए। परिणामस्वरूप शिक्षण अधिक व्यक्तिगत, समावेशी तथा प्रभावी बन सका।

ऽ यह समेकित उदाहरण इस तथ्य को रेखांकित करता है कि शैक्षिक आकलन और शैक्षणिक निर्णयों के मध्य एक घनिष्ठ एवं द्विदिशीय संबंध विद्यमान है। आकलन केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मापन नहीं करता, बल्कि उनकी अधिगम आवश्यकताओं, शक्तियों, सीमाओं तथा संभावनाओं की पहचान कर शिक्षण प्रक्रिया को दिशा प्रदान करता है।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में आकलन-आधारित निर्णय उपयुक्त संप्रेषण माध्यम, शिक्षण रणनीतियों, पाठ्यक्रम अनुकूलन, सहायक तकनीकों तथा व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रमों के विकास का आधार बनते हैं। इस प्रकार प्रभावी विशेष शिक्षा में आकलन को शिक्षण का अभिन्न, निरंतर तथा निर्णय-निर्देशक घटक माना जाना चाहिए।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

7. शैक्षिक आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर शिक्षक.....एवं अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण करता है।

8. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए.....आधारित शिक्षण एक प्रभावी शिक्षण रणनीति मानी जाती है।

9. यदि किसी विद्यार्थी की सांकेतिक भाषा दक्षता उच्च हो, तो ..... मॉडल उसके लिए अधिक उपयुक्त हो सकता है।

10. शैक्षिक आकलन के आधार पर विद्यार्थी को आवश्यक ..... तकनीकों एवं सहयोगी सेवाओं का चयन किया जाता है।

11. प्रभावी शिक्षण में आकलन का उपयोग विद्यार्थियों की प्रगति की ..... तथा शिक्षण संशोधन के लिए किया जाता है।

13.6 आकलन परिणामों का महत्व

शैक्षिक आकलन केवल विद्यार्थियों के प्रदर्शन को मापने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को दिशा प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण उपकरण है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में आकलन के परिणाम विद्यार्थियों की क्षमताओं, सीमाओं, आवश्यकताओं तथा संभावनाओं के संबंध में वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ जानकारी उपलब्ध कराते हैं। ये परिणाम न केवल शैक्षिक योजना निर्माण का आधार बनते हैं, बल्कि शिक्षण रणनीतियों, संसाधनों के उपयोग, सहयोगी सेवाओं तथा समावेशी शैक्षिक वातावरण के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1 अधिगम कठिनाइयों की पहचान

आकलन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के अधिगम में उपस्थित कठिनाइयों एवं बाधाओं की पहचान करना है। यह प्रक्रिया शिक्षकों को यह समझने में सहायता

करती है कि विद्यार्थी किन क्षेत्रों में अपेक्षित स्तर का प्रदर्शन नहीं कर पा रहा है तथा उन कठिनाइयों के पीछे कौन-से कारक कार्य कर रहे हैं।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में आकलन भाषा विकास, पठन-बोध, लेखन कौशल, श्रवण- प्रसंस्करण, संप्रेषण दक्षता तथा शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित चुनौतियों को पहचानने में सहायता करता है।

उदाहरणार्थ, यदि कोई विद्यार्थी विज्ञान की अवधारणाओं को समझने में सक्षम है, परन्तु तकनीकी शब्दावली को समझने में कठिनाई अनुभव करता है, तो यह भाषा-आधारित अधिगम कठिनाई का संकेत हो सकता है।

लर्नर, लोवेन्थल और ईगन (2022) के अनुसार अधिगम कठिनाइयों की समय पर पहचान प्रभावी हस्तक्षेप एवं शैक्षणिक सफलता की आधारशिला है।

2 विद्यार्थियों की शक्तियों एवं संभावनाओं की पहचान

आधुनिक आकलन केवल कमियों की पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की शक्तियों, रुचियों तथा संभावनाओं को भी उजागर करता है। शक्ति-आधारित दृष्टिकोण विशेष शिक्षा का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसके अनुसार प्रभावी शिक्षण विद्यार्थियों की क्षमताओं को आधार बनाकर विकसित किया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, किसी श्रवण बाधित विद्यार्थी में दृश्य-अधिगम की उत्कृष्ट क्षमता हो सकती है। ऐसी स्थिति में शिक्षक चित्रों, आरेखों, वीडियो एवं मॉडल आधारित शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करके अधिगम को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

मार्सचर्क और स्पेंसर (2016) के अनुसार श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक एवं दृश्य-स्थानिक क्षमताओं की पहचान उनके शैक्षणिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3 व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम निर्माण में सहायता

आकलन परिणाम व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम के निर्माण का आधार प्रदान करते हैं। व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम एक व्यवस्थित दस्तावेज है जिसमें विद्यार्थी की वर्तमान कार्यक्षमता, दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक लक्ष्य, आवश्यक सहयोगी सेवाएँ तथा मूल्यांकन प्रक्रियाएँ निर्धारित की जाती हैं।

उदाहरणार्थ, यदि आकलन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी की भाषा दक्षता उसकी आयु-स्तर की अपेक्षा कम है, तो व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम में भाषा विकास, शब्दावली विस्तार एवं संप्रेषण कौशल से संबंधित विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए जा सकते हैं।

हैलाहन, कॉफमैन एवं पुलेन (2024) के अनुसार प्रभावी व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम निर्माण के लिए व्यापक एवं बहुआयामी आकलन अनिवार्य है।

4 उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों के चयन में सहायता

आकलन परिणाम शिक्षकों को यह निर्णय लेने में सहायता करते हैं कि कौन-सी शिक्षण पद्धति, अनुदेशन रणनीति अथवा अधिगम गतिविधि किसी विशेष विद्यार्थी के लिए सर्वाधिक प्रभावी होगी।

उदाहरणकृ

ऽ दृश्य आधारित शिक्षण

ऽ गतिविधि आधारित अधिगम

ऽ सहयोगात्मक अधिगम

ऽ द्विभाषी-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण

ऽ बहु-संवेदी शिक्षण

यदि आकलन यह दर्शाता है कि विद्यार्थी दृश्य संकेतों के माध्यम से बेहतर सीखता है, तो शिक्षक मौखिक व्याख्यान की अपेक्षा दृश्य सामग्रियों का अधिक उपयोग कर सकते हैं।

ब्लैक और विलियम (2018) के अनुसार आकलन आधारित शिक्षण निर्णय अधिगम की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार लाते हैं।

5 समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाना

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है। आकलन परिणाम शिक्षकों एवं विद्यालय प्रशासन को यह समझने में सहायता करते हैं कि विद्यार्थियों को समावेशी कक्षा में प्रभावी सहभागिता हेतु किस प्रकार के समर्थन की आवश्यकता है।

उदाहरणकृ

ऽ सांकेतिक भाषा दुभाषिया

ऽ कैप्शनयुक्त शिक्षण सामग्री

ऽ श्रवण यंत्र अथवा एफ.एम. प्रणाली

ऽ अतिरिक्त समय

ऽ वैकल्पिक मूल्यांकन

इस प्रकार आकलन समावेशी शिक्षा की योजना, कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन का आधार बनता है।

6 प्रगति निगरानी का आधार

आकलन केवल प्रारंभिक पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों की प्रगति की निरंतर निगरानी का साधन भी है। समय-समय पर किए गए आकलन यह निर्धारित करते हैं कि शिक्षण हस्तक्षेप अपेक्षित परिणाम दे रहे हैं या नहीं।

उदाहरण के लिए, यदि किसी विद्यार्थी के लिए भाषा हस्तक्षेप कार्यक्रम लागू किया गया है, तो आवधिक आकलन के माध्यम से यह देखा जा सकता है कि उसकी शब्दावली, भाषा-बोध एवं संप्रेषण दक्षता में कितना सुधार हुआ है।

साल्विया, यस्सेल्डाइक और विटमर (2020) के अनुसार प्रगति निगरानी साक्ष्य-आधारित शिक्षण का एक अनिवार्य घटक है।

7 अभिभावक-विद्यालय सहयोग को सुदृढ़ करना

आकलन परिणाम अभिभावकों, शिक्षकों एवं अन्य पेशेवरों के मध्य प्रभावी संवाद स्थापित करने में सहायता करते हैं। जब अभिभावकों को विद्यार्थी की प्रगति, शक्तियों तथा आवश्यकताओं की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है, तो वे घर पर भी उपयुक्त सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

उदाहरणार्थ, यदि आकलन से भाषा विकास में कमी का संकेत मिलता है, तो अभिभावकों को घर पर संवादात्मक गतिविधियों, कहानी-वाचन अथवा सांकेतिक भाषा अभ्यास के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

8 संसाधनों एवं सहयोगी सेवाओं के प्रभावी उपयोग में सहायता

आकलन परिणाम यह निर्धारित करने में सहायता करते हैं कि किस विद्यार्थी को किस प्रकार की सेवाओं, उपकरणों अथवा संसाधनों की आवश्यकता है। इससे उपलब्ध संसाधनों का वैज्ञानिक एवं न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है।

उदाहरणकृ

- श्रवण यंत्र
- कॉक्लियर इम्प्लांट
- एफएम प्रणाली
- कैप्शनिंग सेवाएँ
- स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर
- विशेष शिक्षक एवं भाषण-भाषा विशेषज्ञ की सेवाएँ

विश्व स्वास्थ्य संगठन (2021) के अनुसार उपयुक्त सहायक तकनीकों तक पहुँच दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शैक्षिक आकलन के परिणाम विशेष शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया का आधार प्रदान करते हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थियों की शक्तियों, सीमाओं, अधिगम आवश्यकताओं तथा विकासात्मक संभावनाओं की वैज्ञानिक पहचान की जाती है। आकलन परिणाम व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण, शिक्षण रणनीतियों के चयन, संसाधनों के प्रभावी उपयोग, प्रगति निगरानी तथा समावेशी शैक्षिक वातावरण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में आकलन परिणाम भाषा एवं संप्रेषण विकास, साक्षरता कौशल, शैक्षणिक उपलब्धियों तथा सामाजिक सहभागिता को सुदृढ़ करने हेतु साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने में सहायता करते हैं। अतः आकलन को केवल उपलब्धि मापन का साधन न मानकर एक सतत, विकासोन्मुख एवं निर्णय-निर्देशक प्रक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए, जो गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा की आधारशिला है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

12. आकलन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों की.....कठिनाइयों एवं बाधाओं की पहचान करना है।

13. शक्ति-आधारित दृष्टिकोण के अनुसार प्रभावी शिक्षण विद्यार्थियों की.....को आधार बनाकर विकसित किया जाता है।

14. आकलन परिणाम .....शैक्षिक कार्यक्रम के निर्माण का आधार प्रदान करते हैं।

15. यदि विद्यार्थी दृश्य संकेतों के माध्यम से बेहतर सीखता है, तो शिक्षक.....आधारित शिक्षण का अधिक उपयोग कर सकता है।

16. आकलन परिणामों के आधार पर विद्यार्थियों को आवश्यक .....तकनीकों एवं सहयोगी सेवाओं की व्यवस्था की जा सकती है।

13.7 सारांश

शैक्षिक आकलन विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा की आधारभूत प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मापन करना नहीं, बल्कि उनकी क्षमताओं, सीमाओं, आवश्यकताओं तथा संभावनाओं की पहचान करना भी है। आकलन से प्राप्त परिणाम शिक्षकों, अभिभावकों एवं अन्य विशेषज्ञों को विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने तथा उनके अनुरूप प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेपों की योजना बनाने में सहायता प्रदान करते हैं।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक आकलन भाषा एवं संप्रेषण, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक-भावनात्मक विकास, कार्यात्मक कौशल तथा सहायक तकनीकों की आवश्यकता का निर्धारण करता है। इन आवश्यकताओं की पहचान के आधार पर व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम, भाषा हस्तक्षेप कार्यक्रम, पाठ्यक्रम अनुकूलन, सहायक सेवाएँ तथा अभिभावक सहभागिता जैसी व्यवस्थाएँ विकसित की जाती हैं।

शैक्षिक आकलन और शैक्षणिक निर्णयों के मध्य घनिष्ठ संबंध विद्यमान है। आकलन के परिणाम शिक्षण उद्देश्यों के निर्धारण, शिक्षण रणनीतियों के चयन, अनुदेशन माध्यम, पाठ्यक्रम अनुकूलन, समूह निर्धारण, सहायक तकनीकों के उपयोग तथा प्रगति निगरानी जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों का आधार बनते हैं। विशेष रूप से श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए आकलन आधारित निर्णय शिक्षण को अधिक व्यक्तिगत, समावेशी एवं प्रभावी बनाते हैं।

अतः शैक्षिक आकलन को केवल मूल्यांकन की प्रक्रिया न मानकर एक सतत, साक्ष्य-आधारित एवं निर्णय-निर्देशक प्रक्रिया के रूप में समझना चाहिए, जो गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा की आधारशिला है।

13.8 शब्दावली

शब्द अर्थ

शैक्षिक आवश्यकता अधिगम को प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक सहायता एवं समर्थन।

श्रवण बाधिता सुनने की क्षमता में कमी या अभाव।

ग्रहणशील भाषा दूसरों की भाषा को समझने की क्षमता।

अभिव्यंजक भाषा विचारों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करने की क्षमता।

पठन-बोध पढ़ी गई सामग्री के अर्थ को समझने की क्षमता।

साक्षरता पढ़ने, लिखने एवं समझने की योग्यता।

यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम विद्यार्थी की आवश्यकताओं पर आधारित व्यक्तिगत शिक्षण योजना।

पाठ्यक्रम अनुकूलन विद्यार्थी की आवश्यकता अनुसार पाठ्यक्रम में संशोधन।

समावेशी शिक्षा सभी विद्यार्थियों को एक साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।

सामाजिक सहभागिता सामाजिक गतिविधियों एवं संबंधों में सक्रिय भागीदारी।

कार्यात्मक कौशल दैनिक जीवन में उपयोगी व्यावहारिक कौशल।

सहायक तकनीक अधिगम एवं संप्रेषण में सहायता देने वाले उपकरण।

एफ.एम. प्रणाली शिक्षक की आवाज को स्पष्ट रूप से सुनाने वाला श्रवण उपकरण।

कैप्शनिंग वाचिक ध्वनियों अथवा मौखिक कथनों को पर्दे पर लिखित पाठ के रूप में प्रदर्शित करने की प्रक्रिया।

प्रगति निगरानी विद्यार्थी की उन्नति का नियमित मूल्यांकन।

शैक्षणिक निर्णय आकलन के आधार पर लिए गए शिक्षण संबंधी निर्णय।

अभ्यास प्रश्न (स्व-मूल्यांकन प्रश्न)

रिक्त स्थान भरिए

17. आई ई पी का पूर्ण रूप ऋऋऋऋऋऋऋऋऋ है।

18. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए ऋऋऋऋऋऋऋऋऋ एक प्रमुख संप्रेषण माध्यम है।

19. एफ एम प्रणाली एक ऋऋऋऋऋऋऋऋऋ तकनीक है।

20. सीखने के लिए आकलन का उद्देश्य ऋऋऋऋऋऋऋऋऋ को बेहतर बनाना है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्न में से कौन-सा शैक्षिक आकलन का प्रमुख परिणाम है?

(क) दंड देना

(ख) शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान

(ग) अनुशासन स्थापित करना

(घ) इनमें से कोई नहीं

2. आई ई पी का मुख्य उद्देश्य है-

(क) सभी विद्यार्थियों के लिए समान योजना बनाना

(ख) व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार योजना बनाना

(ग) परीक्षा आयोजित करना

(घ) केवल अंक प्रदान करना

3. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए कौन-सी तकनीक उपयोगी है?

(क) श्रवण यंत्र

(ख) एफ एम प्रणाली

(ग) कैप्शनिंग सेवाएँ

(घ) उपर्युक्त सभी

4. ब्लैक और विलियम के अनुसार आकलन का उपयोग किसके लिए होना चाहिए?

(क) केवल ग्रेड देने के लिए

(ख) शिक्षण निर्णय लेने के लिए

(ग) दंड देने के लिए

(घ) तुलना करने के लिए

5. प्रगति की निगरानी का उद्देश्य है-

(क) विद्यार्थियों को वर्गीकृत करना

(ख) प्रगति का सतत मूल्यांकन करना

(ग) केवल अंतिम परीक्षा लेना

(घ) उपस्थिति दर्ज करना

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शैक्षिक आकलन से क्या अभिप्राय है?
2. शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान का क्या महत्व है?
3. आई ई पी का पूर्ण रूप लिखिए।
4. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए दो सहायक तकनीकों के नाम लिखिए।
5. शिक्षण-संबंधी निर्णय से क्या अभिप्राय है?
6. पाठ्यक्रम अनुकूलन क्या है?
7. प्रगति की निगरानी का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
8. सीखने के लिए आकलन क्या है?
9. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सांकेतिक भाषा का क्या महत्व है?

10. शैक्षिक आकलन के दो प्रमुख परिणाम लिखिए।

13.9 अभ्यासों प्रश्नों (स्व-मूल्यांकन प्रश्न) के उत्तर

रिक्त स्थानों के उत्तर

1. आत्मविश्वास
2. एफ.एम.
3. स्पीच-टू-टेक्स्ट
4. व्यक्तिगत
5. सक्रिय
6. सांकेतिक
7. शिक्षण उद्देश्यों
8. दृश्य
9. द्विभाषिक-द्विसांस्कृतिक
10. सहायक
11. निगरानी
12. अधिगम
13. क्षमताओं
14. व्यक्तिगत

15. दृश्य

16. सहायक

17. व्यक्तिगत शिक्षा योजना

18. सांकेतिक भाषा

19. सहायक

20. अधिगम

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान

2. (ख) व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार योजना बनाना

3. (घ) उपर्युक्त सभी

4. (ख) शिक्षण निर्णय लेने के लिए

5. (ख) प्रगति का सतत मूल्यांकन करना

अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर

1. शैक्षिक आकलन विद्यार्थियों की क्षमताओं, उपलब्धियों एवं आवश्यकताओं का व्यवस्थित मूल्यांकन है।

2. यह विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताओं एवं कठिनाइयों की पहचान करने में सहायता करता है।

3. व्यक्तिगत शिक्षा योजना

4. श्रवण यंत्र एवं एफ एम प्रणाली

5. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से संबंधित निर्णय।

6. विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम में संशोधन।

7. विद्यार्थी की प्रगति का सतत मूल्यांकन।

8. अधिगम को बेहतर बनाने हेतु प्रयुक्त आकलन।

9. यह प्रभावी संप्रेषण एवं अधिगम में सहायता करती है।

10. शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान तथा शैक्षणिक निर्णयों का निर्धारण।

13.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Black, P., & Wiliam, D. (2018). Classroom Assessment and Pedagogy. Assessment in Education: Principles, Policy & Practice, 25(6), 551–575.

2. Friend, M., & Bursuck, W. D. (2019). Including students with special needs: A practical guide for classroom teachers (8th ed.). Pearson.

3. Hallahan, D. P., Kauffman, J. M., & Pullen, P. C. (2022). Exceptional learners: An introduction to special education (15th ed.). Pearson.

4. Hallahan, Daniel P., D. P., Kauffman, James M., J. M., & Pullen, Paige C., P. C. (2024). Exceptional Learners: An Introduction to Special Education (15th ed.). Boston: Pearson.

5. Krishan, S. (2021). Universal Design for Learning in Inclusive Classroom. In M. Dwivedi & P. Srivastava (Eds.), Creating Inclusive Classroom (pp. 30-39). Sunrise Publications. ISBN 978-81-952361-0-7.

6. Lerner, J. W., Lowenthal, B., & Egan, R. W. (2022). Learning disabilities and related disabilities: Strategies for success (14th ed.). Cengage Learning.

7. Lerner, J. W., Lowenthal, B., & Egan, R. W. (2022). Special Education for Today's Teachers: An Introduction (5th ed.). Cengage Learning.

8. Lerner, Janet W., J. W., Lowenthal, B., & Egan, R. W. (2022). Learning Disabilities and Related Disabilities: Strategies for Success (14th ed.). Boston: Cengage Learning.

9. Marschark, Marc, M., & Spencer, Patricia Elizabeth, P. E. (2016). The Oxford Handbook of Deaf Studies in Learning and Cognition. Oxford: Oxford University Press.

10. Paul, P. V. (2021). Language and Deafness (5th ed.). Jones & Bartlett Learning.

11. Salvia, J., Ysseldyke, J. E., & Witmer, S. (2022). Assessment in special and inclusive education (14th ed.). Cengage Learning.

12. Salvia, John, J., Ysseldyke, J., & Witmer, S. (2020). Assessment in Special and Inclusive Education (14th ed.). Boston: Cengage Learning.

13. Tomlinson, C. A. (2017). How to Differentiate Instruction in Academically Diverse Classrooms (3rd ed.). ASCD.

14. Turnbull, A., Turnbull, R., Wehmeyer, M. L., & Shogren, K. A. (2022). Exceptional lives: Practice, progress, and dignity in today's schools (10th ed.). Pearson.

15. World Health Organization. (2021). World report on hearing. World Health Organization.

13.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. शैक्षिक आकलन के परिणामों का विस्तृत वर्णन कीजिए तथा श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में उनकी उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

2. शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान एवं उनकी पूर्ति की प्रक्रिया का आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।

3. शैक्षिक आकलन एवं शैक्षणिक निर्णयों के मध्य संबंध का विश्लेषण कीजिए।

4. श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए आकलन आधारित शैक्षणिक निर्णयों की आवश्यकता एवं महत्व का मूल्यांकन कीजिए।

5. आकलन परिणामों के महत्व पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

6. समेकित उदाहरण की सहायता से स्पष्ट कीजिए कि आकलन आधारित शिक्षण किस प्रकार अधिगम परिणामों में सुधार करता है।

इकाई 14

शैक्षिक आकलन चिकित्सालय/केंद्र की स्थापनाः आवश्यकता और अपेक्षाएँ, (अनिवार्य एवं वांछनीय)

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 शैक्षिक आकलन चिकित्सालय/केंद्र की अवधारणा

14.3.1 शैक्षिक आकलन केंद्र की प्रमुख विशेषताएँ

14.3.2 शैक्षिक आकलन केंद्र की आवश्यकता

14.3.3 शैक्षिक आकलन केंद्र की अनिवार्य आवश्यकताएँ

14.3.4 शैक्षिक आकलन केंद्र की वांछनीय आवश्यकताएँ

14.3.5 शैक्षिक आकलन केंद्र के उद्देश्य

14.4 शैक्षिक आकलन केंद्र के प्रमुख कार्य

14.5 शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना हेतु चरण

14.6 सारांश

14.7 शब्दावली

14.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

14.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

14.10 निबन्धात्मक प्रश्न

14.1 प्रस्तावना

समावेशी शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में प्रत्येक शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं, रुचियों तथा कठिनाइयों की पहचान करना अत्यंत आवश्यक है। विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों, श्रवण बाधिता, दृष्टि बाधिता, अधिगम अक्षमता तथा अन्य विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए व्यवस्थित शैक्षिक आकलन की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। शैक्षिक आकलन केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों को मापने का साधन नहीं है, बल्कि यह उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान, उपयुक्त शैक्षणिक हस्तक्षेपों के निर्धारण तथा व्यक्तिगत शिक्षण योजना के निर्माण का आधार भी प्रदान करता है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शैक्षिक आकलन चिकित्सालय अथवा शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना की जाती है। यह केंद्र विद्यार्थियों की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, भाषायी, सामाजिक तथा व्यवहारिक आवश्यकताओं का बहुआयामी मूल्यांकन कर उनके लिए उपयुक्त शैक्षिक सेवाओं की योजना तैयार करता है।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्याथीर्ः

1. शैक्षिक आकलन चिकित्सालय/केंद्र की अवधारणा को समझ सकेंगे।

2. शैक्षिक आकलन केंद्र की आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन कर सकेंगे।

3. शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना हेतु आवश्यक एवं वांछनीय आवश्यकताओं की पहचान कर सकेंगे।

4. आकलन केंद्र में उपलब्ध सेवाओं एवं कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।

5. आकलन केंद्र के संगठन एवं प्रबंधन की रूपरेखा तैयार कर सकेंगे।

6. समावेशी शिक्षा में शैक्षिक आकलन केंद्र की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

14.3 शैक्षिक आकलन चिकित्सालयध्केंद्र की अवधारणा

शैक्षिक आकलन चिकित्सालय अथवा शैक्षिक आकलन केंद्र एक विशेषीकृत संस्थागत व्यवस्था है, जहाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यवहारिक क्षमताओं और कठिनाइयों का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित मूल्यांकन किया जाता है। यह केंद्र शिक्षा, मनोविज्ञान, पुनर्वास तथा विशेष शिक्षा के विशेषज्ञों द्वारा संचालित किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों की अधिगम संबंधी समस्याओं, विशेष आवश्यकताओं तथा विकासात्मक चुनौतियों की सटीक पहचान की जा सके।

शैक्षिक आकलन केंद्र का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों की कमियों या समस्याओं का निदान करना नहीं है, बल्कि उनकी शक्तियों, रुचियों, क्षमताओं और संभावनाओं

की पहचान करना भी है। इस प्रकार यह केंद्र विद्यार्थियों के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त शैक्षिक योजनाओं, शिक्षण रणनीतियों तथा हस्तक्षेप कार्यक्रमों के निर्माण में सहायता प्रदान करता है।

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में शैक्षिक आकलन केंद्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की पहचान कर उन्हें उपयुक्त शैक्षिक सहायता उपलब्ध कराने का आधार प्रदान करता है। यह केंद्र शिक्षकों, अभिभावकों तथा अन्य पेशेवरों को आवश्यक परामर्श और मार्गदर्शन भी प्रदान करता है, जिससे विद्यार्थियों के लिए प्रभावी शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण किया जा सके।

उदाहरण- मान लीजिए किसी विद्यालय में कक्षा 3 का एक विद्यार्थी बार-बार शिक्षक के निर्देशों को समझने में कठिनाई अनुभव करता है और उसकी शैक्षणिक उपलब्धि लगातार कम होती जा रही है। विद्यालय उसे शैक्षिक आकलन केंद्र भेजता है। केंद्र में श्रवण परीक्षण, भाषा आकलन तथा शैक्षणिक उपलब्धि परीक्षण किए जाते हैं। मूल्यांकन से पता चलता है कि विद्यार्थी को मध्यम स्तर की श्रवण बाधिता है। इसके आधार पर उसे श्रवण यंत्र, भाषण प्रशिक्षण तथा विशेष शिक्षण सहायता प्रदान की जाती है। इस प्रकार आकलन केंद्र समस्या की पहचान करने के साथ-साथ समाधान भी सुझाता है।

14.3.1 शैक्षिक आकलन केंद्र की प्रमुख विशेषताएँ

1. बहुआयामी मूल्यांकन की व्यवस्था।
2. बहु-विषयक विशेषज्ञों की सहभागिता।

3. वैज्ञानिक एवं मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग।
4. निदान के साथ-साथ हस्तक्षेप एवं परामर्श सेवाएँ।
5. व्यक्तिगत शैक्षिक योजना निर्माण में सहयोग।
6. समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका।

अतः शैक्षिक आकलन चिकित्सालय/केंद्र केवल एक आकलन इकाई नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान, शैक्षिक नियोजन, परामर्श, पुनर्वास तथा समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन का एक महत्वपूर्ण संसाधन केंद्र है। यह प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी क्षमता के अनुरूप सीखने के अवसर प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

14.3.2 शैक्षिक आकलन केंद्र की आवश्यकता

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शैक्षिक आकलन केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों को मापने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं, क्षमताओं, सीमाओं तथा अधिगम संबंधी चुनौतियों को समझने का एक वैज्ञानिक साधन है। विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक आकलन केंद्र एक महत्वपूर्ण संस्थागत व्यवस्था के रूप में कार्य करता है, जो निदान, शैक्षिक नियोजन, हस्तक्षेप, परामर्श तथा अनुसंधान की प्रक्रियाओं को एकीकृत करता है। विशेष रूप से श्रवण बाधिता, दृष्टि बाधिता, अधिगम अक्षमता तथा अन्य विशेष आवश्यकताओं वाले शिक्षार्थियों के संदर्भ में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

1. शैक्षिक आवश्यकताओं की व्यवस्थित पहचान

प्रत्येक शिक्षार्थी अपनी अधिगम क्षमता, भाषा विकास, सामाजिक अनुभवों, संज्ञानात्मक दक्षताओं तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण अन्य शिक्षार्थियों से भिन्न होता है। इसलिए एक समान शिक्षण व्यवस्था सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती। शैक्षिक आकलन केंद्र वैज्ञानिक उपकरणों एवं प्रक्रियाओं के माध्यम से शिक्षार्थियों की वास्तविक शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण करता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान में अध्ययनरत श्रवण बाधित शिक्षार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षित स्तर से कम पाया जाता है, तो आकलन केंद्र यह विश्लेषण कर सकता है कि समस्या विषय-वस्तु की समझ में है या शिक्षण माध्यम, संचार व्यवस्था अथवा सहायक सेवाओं की कमी में। इस प्रकार आकलन केंद्र समस्या के मूल कारणों की पहचान कर उपयुक्त समाधान प्रस्तुत करता है।

2. विशेष आवश्यकताओं एवं अधिगम बाधाओं की पहचान

समकालीन विशेष शिक्षा में यह स्वीकार किया जाता है कि शैक्षिक कठिनाइयाँ केवल व्यक्ति की सीमाओं का परिणाम नहीं होतीं, बल्कि अनेक बार वे विद्यालयी वातावरण, पाठ्यक्रम संरचना अथवा सामाजिक अवरोधों से भी उत्पन्न होती हैं। शैक्षिक आकलन केंद्र इन व्यक्तिगत तथा पर्यावरणीय दोनों प्रकार के कारकों का विश्लेषण करता है।

उदाहरणस्वरूप, किसी समावेशी विश्वविद्यालय में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अपेक्षाकृत कम पाई जाती है। आकलन से ज्ञात हो सकता है कि अध्ययन सामग्री सुलभ प्रारूपों में उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में समस्या

विद्यार्थी में नहीं, बल्कि शिक्षा व्यवस्था में होती है। अतः आकलन केंद्र संस्थागत सुधारों की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. व्यक्तिगत शैक्षिक योजना एवं स्थानांतरित योजना का निर्माण

विशेष शिक्षा का मूल उद्देश्य प्रत्येक शिक्षार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था विकसित करना है। यह तभी संभव है जब शिक्षार्थी की वर्तमान कार्यात्मक स्थिति का विस्तृत आकलन उपलब्ध हो। शैक्षिक आकलन केंद्र द्वारा प्राप्त आंकड़े व्यक्तिगत शैक्षिक योजना के निर्माण का आधार बनते हैं।

उदाहरण के रूप में, यदि कोई श्रवण बाधित युवा उच्च शिक्षा से रोजगार की ओर स्थानांतरित कर रहा है, तो आकलन केंद्र उसकी भाषा दक्षता, व्यावसायिक रुचियों, सामाजिक कौशलों तथा कार्यस्थल अनुकूलन क्षमता का मूल्यांकन कर उसके लिए उपयुक्त प्रशिक्षण एवं रोजगार योजना तैयार करने में सहायता कर सकता है।

4. समावेशी शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन में सहायता

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य केवल दिव्यांग विद्यार्थियों को सामान्य शिक्षा संस्थानों में प्रवेश देना नहीं है, बल्कि उन्हें समान अवसर एवं आवश्यक सहयोग प्रदान करना भी है। शैक्षिक आकलन केंद्र इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रमाण-आधारित सुझाव उपलब्ध कराता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी विश्वविद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थियों की उच्च ड्रॉपआउट दर देखी जाती है, तो आकलन केंद्र द्वारा किए गए अध्ययन से यह ज्ञात हो सकता है कि परिसर में सुगम्यता, सहायक तकनीकों तथा परामर्श

सेवाओं की कमी है। इस जानकारी के आधार पर प्रशासन सुधारात्मक कदम उठा सकता है।

5. शिक्षण-अधिगम एवं पाठ्यक्रम विकास में योगदान

शैक्षिक आकलन केंद्र केवल शिक्षार्थियों का मूल्यांकन ही नहीं करता, बल्कि शिक्षण पद्धतियों एवं पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का भी परीक्षण करता है। इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों एवं पाठ्यक्रम निर्माताओं को शिक्षण प्रक्रिया में सुधार हेतु दिशा प्रदान करते हैं।

उदाहरणस्वरूप, यदि किसी विशेष शिक्षा संस्थान में विकसित डिजिटल अधिगम सामग्री का मूल्यांकन यह दर्शाता है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सांकेतिक भाषा आधारित वीडियो अधिक प्रभावी हैं, तो भविष्य में पाठ्यक्रम विकास के दौरान इन संसाधनों को प्राथमिकता दी जा सकती है।

6. बहु-विषयक समन्वय को प्रोत्साहन

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावी हस्तक्षेप तभी संभव है जब विभिन्न विशेषज्ञ एक साथ कार्य करें। शैक्षिक आकलन केंद्र विशेष शिक्षक, श्रवण विशेषज्ञ, वाक्-भाषा रोगविज्ञानी, मनोवैज्ञानिक, पुनर्वास विशेषज्ञ तथा परिवार के सदस्यों के बीच समन्वय स्थापित करता है।

उदाहरण के लिए, किसी श्रवण बाधित शिक्षार्थी के लिए भाषा विकास कार्यक्रम तैयार करते समय केवल शिक्षक की भूमिका पर्याप्त नहीं होती। इसमें श्रवण विशेषज्ञ प्रतिवेदन, वाक् मूल्यांकन तथा पारिवारिक सहयोग सभी को ध्यान में रखा जाता है। यह समन्वय आकलन केंद्र के माध्यम से संभव होता है।

7. अनुसंधान एवं नीति-निर्माण के लिए आधार प्रदान करना

शैक्षिक आकलन केंद्रों द्वारा संकलित आंकड़े शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान तथा नीति-निर्माण दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। ये आंकड़े विभिन्न कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने तथा नई नीतियों के निर्माण में सहायक होते हैं।

उदाहरण के रूप में, यदि किसी राज्य में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर किए गए व्यापक अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि सांकेतिक भाषा दुभाषियों की उपलब्धता से शैक्षणिक सफलता में वृद्धि होती है, तो सरकार इस आधार पर विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में दुभाषियों की नियुक्ति संबंधी नीति विकसित कर सकती है।

अतः शैक्षिक आकलन केंद्र केवल परीक्षण एवं निदान की इकाई नहीं है, बल्कि यह समावेशी शिक्षा, विशेष शिक्षा, पुनर्वास, अनुसंधान तथा नीति-निर्माण के मध्य एक सेतु के रूप में कार्य करता है। यह शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान करने, शैक्षिक हस्तक्षेपों की योजना बनाने, संस्थागत सुधारों को प्रोत्साहित करने तथा शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। इसलिए आधुनिक विशेष शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना और सुदृढ़ीकरण अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

14.3.3 शैक्षिक आकलन केंद्र की अनिवार्य आवश्यकताएँ

शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना केवल कुछ परीक्षणों और विशेषज्ञों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी संस्थागत व्यवस्था का निर्माण है जो शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान, निदान, हस्तक्षेप नियोजन, शैक्षिक निर्णय-निर्माण, अनुसंधान तथा नीति-निर्धारण के लिए

विश्वसनीय आधार प्रदान करती है। समावेशी शिक्षा और विशेष शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में आकलन केंद्रों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि शिक्षा का फोकस अब केवल उपलब्धि मापन से हटकर शिक्षार्थी की समग्र कार्यात्मक क्षमता और सहभागिता के आकलन पर केंद्रित हो गया है।

इस संदर्भ में किसी भी शैक्षिक आकलन केंद्र की प्रभावशीलता उसके संसाधनों, मानव शक्ति, आकलन प्रक्रियाओं तथा प्रशासनिक संरचना पर निर्भर करती है। अतः कुछ आवश्यक घटकों का होना अनिवार्य माना जाता है।

1. भौतिक एवं संगठनात्मक अवसंरचना

शैक्षिक आकलन की प्रक्रिया एक नियंत्रित, व्यवस्थित तथा नैतिक वातावरण की अपेक्षा करती है। इसलिए आकलन केंद्र के लिए उपयुक्त भौतिक एवं संगठनात्मक अवसंरचना का होना अनिवार्य है।

भौतिक अवसंरचना केवल भवन अथवा कमरों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मूल्यांकन की गोपनीयता, सुगमता, सुरक्षा तथा कार्यात्मक दक्षता भी सम्मिलित होती है। आकलन केंद्र में व्यक्तिगत मूल्यांकन, समूह मूल्यांकन, केस-कॉन्फ्रेंसिंग, परामर्श, दस्तावेजीकरण तथा शोध कार्यों के लिए पृथक व्यवस्थाएँ होनी चाहिए।

विशेष शिक्षा के संदर्भ में सुगम्यता एक मूलभूत आवश्यकता है। यदि कोई आकलन केंद्र स्वयं दिव्यांगजनों के लिए सुगम नहीं है, तो उसकी कार्यप्रणाली समावेशी शिक्षा के मूल सिद्धांतों के विपरीत मानी जाएगी। उदाहरण- जब किसी विश्वविद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं का संस्थागत अध्ययन किया जाता है, तब केवल परीक्षण कक्ष पर्याप्त नहीं होते। इसके लिए डेटा विश्लेषण प्रयोगशाला, केस डिस्कशन रूम, डिजिटल रिकॉर्डिंग सुविधाएँ

तथा ऑनलाइन मूल्यांकन प्लेटफॉर्म जैसी व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है। यह दर्शाता है कि आधुनिक आकलन केंद्र केवल मूल्यांकन स्थल नहीं, बल्कि ज्ञान एवं संसाधन केंद्र के रूप में विकसित हो रहे हैं।

2. बहु-विषयक मानव संसाधन

आधुनिक आकलन सिद्धांत इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी शिक्षार्थी की कठिनाइयों को केवल एक विषयगत दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। अधिगम, भाषा, संज्ञान, व्यवहार तथा सामाजिक सहभागिता एक-दूसरे से गहरे रूप से जुड़े होते हैं। इसलिए आकलन केंद्र में बहु-विषयक विशेषज्ञों की उपलब्धता आवश्यक है।

विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, ऑडियोलॉजिस्ट, स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट, पुनर्वास विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता तथा परामर्शदाता मिलकर शिक्षार्थी की स्थिति का समग्र विश्लेषण करते हैं। यह प्रक्रिया आकलन को अधिक व्यापक, वस्तुनिष्ठ तथा कार्यात्मक बनाती है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि बहु-विषयक टीम केवल डेटा एकत्र नहीं करती, बल्कि विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का समेकन कर शैक्षिक निर्णयों के लिए सार्थक निष्कर्ष प्रस्तुत करती है। उदाहरण- किसी राज्य विश्वविद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों के कम प्रतिधारण और उच्च ड्रॉपआउट दर के कारणों का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में मनोवैज्ञानिक प्रेरणा संबंधी कारकों का विश्लेषण करता है, श्रवण विशेषज्ञ श्रवण सहायता सेवाओं की उपलब्धता का मूल्यांकन करता है, जबकि विशेष शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। इन सभी निष्कर्षों के समेकन से संस्थागत सुधारों की रूपरेखा तैयार की जाती है।

3. वैज्ञानिक एवं मानकीकृत आकलन उपकरण

शैक्षिक आकलन की गुणवत्ता उसके उपकरणों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यदि उपकरण वैध, विश्वसनीय तथा मानकीकृत नहीं हैं, तो उनसे प्राप्त निष्कर्ष भी संदिग्ध होंगे।

मास्टर स्तर पर यह समझना आवश्यक है कि आकलन उपकरण केवल परीक्षण नहीं होते। आधुनिक आकलन में परीक्षण, अवलोकन, साक्षात्कार, पोर्टफोलियो, कार्यात्मक मूल्यांकन तथा तकनीक-सहायित मूल्यांकन सभी सम्मिलित होते हैं।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में सांस्कृतिक एवं भाषायी उपयुक्तता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। किसी उपकरण की वैधता केवल उसके मनोमितीय गुणों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह संबंधित जनसंख्या के लिए कितना उपयुक्त है।

उदाहरण-यदि श्रवण बाधित शिक्षार्थियों की भाषा दक्षता का मूल्यांकन केवल श्रवण-आधारित परीक्षणों के माध्यम से किया जाए, तो परिणाम वास्तविक क्षमता को प्रतिबिंबित नहीं करेंगे। इसलिए मूल्यांकन उपकरणों को शिक्षार्थी की संप्रेषण प्रणाली और भाषायी पृष्ठभूमि के अनुरूप अनुकूलित करना आवश्यक है।

4. अभिलेख प्रबंधन एवं डेटा प्रणाली

आधुनिक आकलन केंद्रों में डेटा को एक संसाधन के रूप में देखा जाता है। मूल्यांकन रिपोर्टें केवल तत्काल निर्णयों के लिए उपयोगी नहीं होतीं, बल्कि वे दीर्घकालिक योजना, कार्यक्रम मूल्यांकन, शोध तथा नीति-निर्माण का आधार भी बनती हैं।

इसलिए आकलन केंद्र में व्यवस्थित अभिलेख प्रबंधन प्रणाली का होना अनिवार्य है। वर्तमान समय में डिजिटल डेटाबेस, ई-पोर्टफोलियो तथा क्लाउड-आधारित रिकॉर्ड प्रबंधन प्रणालियाँ इस कार्य को अधिक प्रभावी बना रही हैं।

उदाहरण-किसी विश्वविद्यालय में पाँच वर्षों के दौरान दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन, सहायता सेवाओं तथा रोजगार परिणामों से संबंधित डेटा का विश्लेषण संस्थागत नीतियों की समीक्षा तथा गुणवत्ता सुधार के लिए किया जा सकता है।

5. नैतिक एवं व्यावसायिक मानकों का अनुपालन

एक प्रभावी शैक्षिक आकलन केंद्र के लिए केवल संसाधनों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है, बल्कि नैतिक एवं व्यावसायिक मानकों का पालन भी अनिवार्य है। आकलन प्रक्रिया में गोपनीयता, सूचित सहमति, निष्पक्षता तथा डेटा सुरक्षा जैसे सिद्धांतों का पालन किया जाना चाहिए।

उदाहरण-किसी शिक्षार्थी की मनोवैज्ञानिक रिपोर्ट को बिना उसकी अनुमति के अन्य व्यक्तियों के साथ साझा करना व्यावसायिक नैतिकता का उल्लंघन माना जाएगा। इसलिए आकलन केंद्र में डेटा गोपनीयता की स्पष्ट नीति होना आवश्यक है।

6. अनुसंधान एवं गुणवत्ता आश्वासन व्यवस्था

मास्टर स्तर पर शैक्षिक आकलन केंद्र को केवल सेवा प्रदाता इकाई नहीं, बल्कि अनुसंधान एवं नवाचार के केंद्र के रूप में भी देखा जाता है। केंद्र में सेवाओं की गुणवत्ता का नियमित आकलन, उपकरणों का प्रमाणीकरण तथा शोध गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

उदाहरण-यदि किसी आकलन केंद्र में सांकेतिक भाषा आधारित भाषा मूल्यांकन उपकरण विकसित किया जाता है, तो उसकी वैधता एवं विश्वसनीयता स्थापित करने हेतु शोध अध्ययन करना आवश्यक होगा।

इस प्रकार शैक्षिक आकलन केंद्र की अनिवार्य आवश्यकताओं में केवल भवन, कक्ष एवं उपकरणों की उपलब्धता ही शामिल नहीं है, बल्कि एक ऐसी बहु-विषयक, वैज्ञानिक, नैतिक एवं शोध-आधारित प्रणाली का विकास भी सम्मिलित है जो शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं का समग्र आकलन कर सके। मास्टर स्तर पर शैक्षिक आकलन केंद्र को एक व्यावसायिक संसाधन केंद्र तथा निर्णय-समर्थन प्रणाली के रूप में समझा जाना चाहिए, जो विशेष शिक्षा, समावेशी शिक्षा एवं पुनर्वास सेवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

14.3.4 शैक्षिक आकलन केंद्र की वांछनीय आवश्यकताएँ

शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना के लिए कुछ आवश्यक संसाधनों का होना अनिवार्य होता है, परंतु वर्तमान समय में केवल न्यूनतम सुविधाएँ पर्याप्त नहीं मानी जातीं। शिक्षा, प्रौद्योगिकी तथा पुनर्वास सेवाओं के क्षेत्र में हो रहे निरंतर विकास ने आकलन केंद्रों की भूमिका को अधिक व्यापक और गतिशील बना दिया है। इसलिए कुछ ऐसी सुविधाएँ एवं व्यवस्थाएँ भी अपेक्षित हैं जो आकलन की गुणवत्ता, दक्षता, शोध क्षमता तथा सेवाओं की पहुँच को बढ़ाती हैं। इन्हें शैक्षिक आकलन केंद्र की वांछनीय आवश्यकताएँ कहा जाता है। यद्यपि इन सुविधाओं के अभाव में केंद्र का संचालन संभव है, तथापि उनकी उपलब्धता केंद्र को अधिक प्रभावी, आधुनिक, शोधोन्मुख तथा शिक्षार्थी-केंद्रित बनाती है।

1. कंप्यूटर एवं डिजिटल सुविधाएँ

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने शैक्षिक आकलन की प्रक्रियाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। आधुनिक आकलन केंद्रों में डिजिटल तकनीकों का उपयोग आकलन की गति, सटीकता तथा विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए किया जाता है।

डिजिटल सुविधाओं में कंप्यूटर आधारित परीक्षण, ऑनलाइन आकलन प्रणाली, डिजिटल रिकॉर्ड प्रबंधन तथा डेटा विश्लेषण सॉफ्टवेयर का उपयोग शामिल है। ये सुविधाएँ न केवल आकलन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित बनाती हैं, बल्कि दीर्घकालिक डेटा संग्रहण एवं विश्लेषण को भी सरल बनाती हैं।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल तकनीकों का उपयोग शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप आकलन को अनुकूलित करने में भी सहायक होता है।

उदाहरण-किसी समावेशी विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों से संबंधित पाँच वर्षों के आंकड़ों का विश्लेषण डिजिटल डेटा प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से किया जाता है। इस विश्लेषण के आधार पर विद्यालय यह निर्धारित कर सकता है कि कौन-सी शिक्षण रणनीतियाँ अधिक प्रभावी रही हैं तथा किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

2. सहायक प्रौद्योगिकी

समावेशी एवं विशेष शिक्षा में सहायक प्रौद्योगिकी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शैक्षिक आकलन केंद्र में उपलब्ध सहायक प्रौद्योगिकियाँ शिक्षार्थियों की क्षमताओं का अधिक यथार्थ एवं कार्यात्मक आकलन करने में सहायता करती हैं।

श्रवण बाधिता के संदर्भ में श्रवण यंत्र परीक्षण उपकरण, एफ.एम. प्रणाली, डिजिटल श्रवण सहायक उपकरण तथा संप्रेषण सहायता प्रौद्योगिकियाँ महत्वपूर्ण

हैं। इसी प्रकार दृष्टिबाधित शिक्षार्थियों के लिए स्क्रीन रीडर, ब्रेल डिस्प्ले तथा अन्य सहायक तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

सहायक प्रौद्योगिकी केवल मूल्यांकन का साधन नहीं है, बल्कि यह शिक्षार्थियों की कार्यात्मक स्वतंत्रता तथा शैक्षिक सहभागिता का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। उदाहरण-यदि किसी श्रवण बाधित शिक्षार्थी की कक्षा सहभागिता का आकलन किया जा रहा हो, तो केवल उसकी श्रवण क्षमता का परीक्षण पर्याप्त नहीं होगा। यह भी देखना आवश्यक होगा कि श्रवण यंत्र अथवा अन्य सहायक उपकरणों के उपयोग से उसकी शैक्षिक सहभागिता एवं संप्रेषण क्षमता में किस सीमा तक सुधार हुआ है।

3. संसाधन पुस्तकालय

एक गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक आकलन केंद्र के लिए संसाधन पुस्तकालय का होना अत्यंत उपयोगी माना जाता है। यह पुस्तकालय केवल पुस्तकों का संग्रह नहीं होता, बल्कि ज्ञान, शोध एवं व्यावसायिक विकास का केंद्र होता है।

संसाधन पुस्तकालय में विशेष शिक्षा, मनोविज्ञान, मूल्यांकन एवं पुनर्वास से संबंधित नवीन साहित्य, शोध पत्रिकाएँ, परीक्षण मैनुअल, सरकारी नीतियाँ, दिशानिर्देश तथा डिजिटल संसाधन उपलब्ध होने चाहिए।

मास्टर स्तर के विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा पेशेवरों के लिए यह पुस्तकालय नवीन ज्ञान एवं साक्ष्य-आधारित अभ्यासों तक पहुँच प्रदान करता है।

उदाहरण- किसी आकलन केंद्र का संसाधन पुस्तकालय समावेशी शिक्षा पर नवीन शोध अध्ययनों, भारतीय शिक्षा नीति, आर.पी.डब्ल्यू.डी. अधिनियम,

2016 तथा विभिन्न मानकीकृत परीक्षणों के मैनुअल उपलब्ध कराकर शोध एवं व्यावसायिक विकास को समर्थन प्रदान कर सकता है।

4. प्रशिक्षण एवं शोध सुविधाएँ

आधुनिक शैक्षिक आकलन केंद्र केवल सेवा प्रदाता संस्थान नहीं होते, बल्कि प्रशिक्षण एवं अनुसंधान के महत्वपूर्ण केंद्र भी होते हैं। शिक्षकों, विशेष शिक्षकों, पुनर्वास पेशेवरों तथा शोधार्थियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन केंद्र की महत्वपूर्ण वांछनीय आवश्यकता है।

इन केंद्रों में कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ, अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा शोध परियोजनाएँ संचालित की जा सकती हैं। इससे मूल्यांकन प्रक्रियाओं में नवीनतम ज्ञान एवं तकनीकों का समावेश संभव हो पाता है।

अनुसंधान गतिविधियाँ आकलन उपकरणों के विकास, उनकी वैधता एवं विश्वसनीयता के परीक्षण तथा नई शैक्षिक हस्तक्षेप रणनीतियों के निर्माण में योगदान देती हैं। उदाहरण-किसी शैक्षिक आकलन केंद्र द्वारा श्रवण बाधित विद्यार्थियों की भाषा उपलब्धि के आकलन हेतु विकसित उपकरण की वैधता एवं विश्वसनीयता स्थापित करने के लिए शोध अध्ययन संचालित किया जा सकता है। ऐसे अध्ययन विशेष शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान-वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

5. सामुदायिक संपर्क एवं विस्तार कार्यक्रम

समकालीन विशेष शिक्षा में यह स्वीकार किया गया है कि शिक्षार्थी का विकास केवल विद्यालय तक सीमित नहीं होता, बल्कि परिवार, समुदाय तथा सामाजिक परिवेश भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए शैक्षिक आकलन केंद्रों को सामुदायिक सहभागिता एवं विस्तार सेवाओं से भी जोड़ना आवश्यक है।

सामुदायिक संपर्क कार्यक्रमों में जागरूकता अभियान, विद्यालय सहयोग कार्यक्रम, अभिभावक प्रशिक्षण, परामर्श सेवाएँ तथा क्षमता निर्माण गतिविधियाँ सम्मिलित हो सकती हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य समुदाय को विशेष आवश्यकताओं वाले शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं एवं अधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाना है। उदाहरण- किसी जिले में संचालित शैक्षिक आकलन केंद्र विद्यालयों के शिक्षकों के लिए श्रवण बाधित विद्यार्थियों की पहचान एवं शैक्षिक समर्थन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर सकता है। इससे प्रारंभिक पहचान एवं समय पर हस्तक्षेप की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

समालोचनात्मक टिप्पणी

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उपर्युक्त सुविधाएँ यद्यपि ''वांछनीय''श्रेणी में रखी जाती हैं, परंतु 21वीं सदी के समावेशी एवं प्रौद्योगिकी-सक्षम शैक्षिक परिदृश्य में इनका महत्व लगातार बढ़ रहा है। अनेक विशेषज्ञों का मत है कि डिजिटल संसाधन, सहायक प्रौद्योगिकी तथा शोध सुविधाएँ अब केवल अतिरिक्त सुविधाएँ न होकर गुणवत्तापूर्ण आकलन सेवाओं की अनिवार्य शर्त बनती जा रही हैं।

शैक्षिक आकलन केंद्र की वांछनीय आवश्यकताएँ उसकी कार्यक्षमता, गुणवत्ता तथा प्रभावशीलता को बढ़ाने वाली सुविधाएँ हैं। कंप्यूटर एवं डिजिटल तकनीक, सहायक प्रौद्योगिकी, संसाधन पुस्तकालय, प्रशिक्षण एवं शोध सुविधाएँ तथा सामुदायिक संपर्क कार्यक्रम केंद्र को एक साधारण आकलन इकाई से आगे बढ़ाकर ज्ञान, अनुसंधान एवं संसाधन केंद्र के रूप में विकसित करते हैं। ये सुविधाएँ विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

14.3.5 शैक्षिक आकलन केंद्र के उद्देश्य

शैक्षिक आकलन केंद्र का मूल उद्देश्य शिक्षार्थियों की क्षमताओं, आवश्यकताओं, सीमाओं तथा संभावनाओं का वैज्ञानिक एवं बहुआयामी आकलन कर प्रभावी शैक्षिक, पुनर्वासात्मक तथा स्थानांतरित सेवाओं के लिए आधार प्रदान करना है। समावेशी शिक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आकलन केंद्र केवल निदानात्मक कार्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शैक्षिक नियोजन, हस्तक्षेप, अनुसंधान, परामर्श तथा नीति-निर्माण की प्रक्रियाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में यह केंद्र साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने का आधार प्रदान करता है।

1. शिक्षार्थियों की क्षमताओं एवं कठिनाइयों का वैज्ञानिक आकलन करना

शैक्षिक आकलन केंद्र का प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थियों की संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक, भावनात्मक, व्यवहारिक तथा शैक्षणिक क्षमताओं का वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन करना है। यह आकलन केवल कमियों की पहचान के लिए नहीं, बल्कि शिक्षार्थी की शक्तियों और संभावनाओं को समझने के लिए भी किया जाता है।

विशेष शिक्षा में प्रभावी हस्तक्षेप तभी संभव है जब शिक्षार्थी की वर्तमान कार्यात्मक स्थिति का स्पष्ट ज्ञान हो। इसलिए आकलन केंद्र विभिन्न मानकीकृत परीक्षणों, अवलोकन तकनीकों, साक्षात्कारों तथा कार्यात्मक आकलन प्रक्रियाओं का उपयोग करता है। उदाहरण-यदि किसी विश्वविद्यालय में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की भाषा दक्षता अपेक्षित स्तर से कम पाई जाती है, तो आकलन केंद्र उनकी ग्रहणशील तथा अभिव्यक्तिक भाषा क्षमताओं का आकलन कर यह निर्धारित करता है कि उन्हें किस प्रकार के भाषायी समर्थन की आवश्यकता है।

2. विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं एवं अधिगम बाधाओं की पहचान करना

शैक्षिक आकलन केंद्र का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य उन विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं तथा अधिगम संबंधी बाधाओं की पहचान करना है जो शिक्षार्थी की शैक्षणिक प्रगति को प्रभावित कर रही हैं। यह प्रक्रिया केवल दिव्यांगता की पहचान तक सीमित नहीं होती, बल्कि सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय कारकों का भी विश्लेषण करती है।

समकालीन दृष्टिकोण के अनुसार, कई बार समस्या शिक्षार्थी में नहीं बल्कि शिक्षा प्रणाली की संरचना में होती है। इसलिए आकलन केंद्र व्यक्ति और पर्यावरण दोनों का आकलन करता है। उदाहरण-किसी उच्च शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की कम शैक्षणिक उपलब्धि का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात हो सकता है कि समस्या विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता में नहीं, बल्कि सांकेतिक भाषा दुभाषियों और सुलभ शिक्षण सामग्री की अनुपलब्धता में है।

3. शैक्षिक हस्तक्षेप एवं समर्थन सेवाओं की योजना बनाना

आकलन केंद्र का उद्देश्य केवल समस्याओं की पहचान करना नहीं है, बल्कि उनके समाधान हेतु उपयुक्त हस्तक्षेप और समर्थन सेवाओं की योजना भी तैयार करना है। आकलन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शिक्षण रणनीतियों, सहायक तकनीकों, परामर्श सेवाओं तथा पुनर्वास कार्यक्रमों की अनुशंसा की जाती है।

इस प्रकार आकलन प्रक्रिया शिक्षा और हस्तक्षेप के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करती है। उदाहरण-यदि किसी उच्च शिक्षण संस्थान में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को व्याख्यान समझने में कठिनाई हो रही है, तो आकलन केंद्र रीयल-टाइम कैप्शनिंग, सांकेतिक भाषा दुभाषिया सेवाओं तथा दृश्य-आधारित शिक्षण सामग्री के उपयोग की अनुशंसा कर सकता है।

4. व्यक्तिगत शैक्षिक योजना एवं संक्रमण योजना के निर्माण में सहायता प्रदान करना

विशेष शिक्षा का एक प्रमुख सिद्धांत यह है कि प्रत्येक शिक्षार्थी की आवश्यकताएँ विशिष्ट होती हैं। इसलिए सभी के लिए समान शिक्षण कार्यक्रम प्रभावी नहीं हो सकता। शैक्षिक आकलन केंद्र शिक्षार्थी की आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं लक्ष्यों के आधार पर व्यक्तिगत शैक्षिक योजना तैयार करने में सहायता करता है।

इसके अतिरिक्त, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा रोजगार की ओर स्थानांतरित की योजना बनाने में भी आकलन केंद्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण-व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे एक श्रवण बाधित युवा के लिए आकलन केंद्र उसकी भाषा दक्षता, रोजगार कौशल तथा सामाजिक संप्रेषण क्षमताओं का मूल्यांकन कर रोजगारोन्मुख आई ई पी एवं स्थानांतरित योजना विकसित करने में सहायता प्रदान करता है।

5. समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य केवल शिक्षार्थियों को सामान्य संस्थानों में प्रवेश देना नहीं, बल्कि उन्हें गुणवत्तापूर्ण एवं समान अवसर प्रदान करना है। शैक्षिक आकलन केंद्र समावेशी वातावरण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर आवश्यक सुधारों की अनुशंसा करता है।

यह केंद्र संस्थानों को यह समझने में सहायता करता है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, आकलन प्रणाली तथा भौतिक अवसंरचना किस सीमा तक समावेशी हैं। उदाहरण-किसी विश्वविद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और सहभागिता का अध्ययन करने पर यह पाया जाता है कि डिजिटल सामग्री

पूरी तरह सुलभ नहीं है। आकलन केंद्र सीखने के लिए सार्वभौमिक रूपरेखा के सिद्धांतों को अपनाने तथा सुलभ ई-संसाधनों के विकास की अनुशंसा करता है।

6. अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहित करना

शैक्षिक आकलन केंद्र शिक्षा एवं पुनर्वास के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देने का भी महत्वपूर्ण कार्य करता है। केंद्र द्वारा संकलित आंकड़े शिक्षण विधियों, सहायक तकनीकों, पुनर्वास कार्यक्रमों तथा समावेशी नीतियों की प्रभावशीलता के अध्ययन में उपयोग किए जाते हैं।

यह प्रक्रिया विशेष शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार तथा साक्ष्य-आधारित प्रथाओं को प्रोत्साहित करती है। उदाहरण-किसी विश्वविद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों पर डिजिटल सांकेतिक भाषा आधारित शिक्षण सामग्री के प्रभाव का अध्ययन आकलन केंद्र के माध्यम से किया जाता है। शोध निष्कर्षों के आधार पर नई शिक्षण सामग्री विकसित की जाती है।

7. परामर्श एवं मार्गदर्शन सेवाएँ प्रदान करना

शैक्षिक आकलन केंद्र शिक्षार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, प्रशासकों तथा अन्य पेशेवरों को विशेषज्ञ परामर्श एवं मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह परामर्श शैक्षिक समायोजन, पुनर्वास सेवाओं, करियर नियोजन, मनोसामाजिक सहयोग तथा समावेशी शिक्षण रणनीतियों से संबंधित हो सकता है।

विशेष शिक्षा में प्रभावी सहयोग के लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण आवश्यक है, और आकलन केंद्र इस सहयोगात्मक प्रक्रिया का समन्वय करता है। उदाहरण-किसी विश्वविद्यालय के दिव्यांगता सहायता प्रकोष्ठ को यह निर्धारित करने में सहायता

प्रदान की जाती है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए कौन-से शैक्षणिक समायोजन सबसे अधिक उपयुक्त होंगे।

8. शैक्षिक नीति एवं संस्थागत निर्णय-निर्माण में योगदान देना

शैक्षिक आकलन केंद्रों द्वारा प्राप्त आंकड़े केवल व्यक्तिगत शिक्षार्थियों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे संस्थागत सुधारों एवं नीतिगत निर्णयों का आधार भी बनते हैं। इन आंकड़ों के आधार पर समावेशी शिक्षा, सहायक सेवाओं, संसाधन आवंटन तथा शिक्षक प्रशिक्षण से संबंधित नीतियाँ विकसित की जा सकती हैं।

उदाहरण-यदि किसी राज्य में श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर किए गए व्यापक अध्ययन से यह स्पष्ट हो कि सांकेतिक भाषा दुभाषिया सेवाएँ शैक्षणिक सफलता को बढ़ाती हैं, तो सरकार इन सेवाओं के विस्तार के लिए नीति तैयार कर सकती है।

इस प्रकार शैक्षिक आकलन केंद्र का उद्देश्य केवल शिक्षार्थियों का परीक्षण करना नहीं है, बल्कि उनकी आवश्यकताओं की पहचान, शैक्षिक हस्तक्षेपों की योजना, व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण, समावेशी शिक्षा के सुदृढ़ीकरण, अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहन तथा नीति-निर्माण के लिए वैज्ञानिक आधार प्रदान करना भी है। मास्टर स्तर पर शैक्षिक आकलन केंद्र को एक बहु-विषयक, अनुसंधान-आधारित एवं निर्णय-समर्थन प्रणाली के रूप में समझा जाना चाहिए, जो विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास सेवाओं की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1. शैक्षिक आकलन केन्द्र में विद्यार्थियों की शैक्षिक, संज्ञानात्मक, भाषायी तथा.....क्षमताओं का आकलन किया जाता है।

2. शैक्षिक आकलन केन्द्र का उद्देश्य केवल समस्याओं का निदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की..... की पहचान करना भी है।

3. समावेशी शिक्षा के संदर्भ में शैक्षिक आकलन केन्द्र.....आवश्यकताओं वाले बच्चों की पहचान में सहायता करता है।

4. शैक्षिक आकलन केन्द्र में आकलन के लिए.....एवं मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग किया जाता है।

5. व्यक्तिगत शैक्षिक योजना का निर्माण शैक्षिक आकलन केन्द्र द्वारा प्राप्त.....के आधार पर किया जाता है।

6. शैक्षिक आकलन केन्द्र में विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, ऑडियोलॉजिस्ट आदि के बीच..... स्थापित किया जाता है।

7. शैक्षिक आकलन केन्द्र द्वारा संकलित आंकड़े अनुसंधान तथा ..... निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

14.4 शैक्षिक आकलन केंद्र के प्रमुख कार्य

शैक्षिक आकलन केंद्र केवल परीक्षण एवं मूल्यांकन करने वाली संस्था नहीं है, बल्कि यह एक बहुआयामी शैक्षिक, परामर्शात्मक एवं संसाधन समर्थन प्रणाली के रूप में कार्य करता है। विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में इसकी भूमिका शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान से लेकर शैक्षिक हस्तक्षेपों के मूल्यांकन तथा संस्थागत क्षमता निर्माण तक विस्तृत होती है। आधुनिक दृष्टिकोण

में शैक्षिक आकलन केंद्र को एक ऐसे पेशेवर संसाधन केंद्र के रूप में देखा जाता है जो शिक्षार्थी, शिक्षक, परिवार, विद्यालय एवं समुदाय के बीच समन्वय स्थापित करते हुए शैक्षिक निर्णय-निर्माण को साक्ष्य-आधारित बनाता है।

शैक्षिक आकलन केंद्र के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:

1. स्क्रीनिंग एवं पहचान

शैक्षिक आकलन केंद्र का प्राथमिक कार्य उन शिक्षार्थियों की पहचान करना है जिन्हें सीखने, संप्रेषण, व्यवहार, सामाजिक समायोजन अथवा अन्य विकासात्मक क्षेत्रों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। स्क्रीनिंग प्रक्रिया का उद्देश्य किसी समस्या का अंतिम निदान करना नहीं, बल्कि संभावित जोखिम या विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों की प्रारंभिक पहचान करना है।

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में प्रारंभिक पहचान अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि समय पर हस्तक्षेप से शैक्षिक कठिनाइयों के प्रभाव को कम किया जा सकता है। उदाहरण-किसी जिले के विद्यालयों में संचालित स्क्रीनिंग कार्यक्रम के दौरान यह पाया जाता है कि कुछ श्रवण बाधित शिक्षार्थियों को भाषा विकास एवं पठन कौशल में कठिनाई हो रही है। इस प्रारंभिक पहचान के आधार पर उन्हें विस्तृत मूल्यांकन हेतु आकलन केंद्र में संदर्भित किया जाता है।

2. निदानात्मक आकलन

स्क्रीनिंग के बाद आकलन केंद्र का अगला महत्वपूर्ण कार्य शिक्षार्थी की कठिनाइयों, क्षमताओं तथा आवश्यकताओं का गहन एवं व्यवस्थित विश्लेषण करना है। निदानात्मक मूल्यांकन केवल समस्या की पहचान नहीं करता, बल्कि उसके कारणों, प्रकृति तथा शैक्षिक प्रभावों को भी स्पष्ट करता है।

आधुनिक विशेष शिक्षा में निदान को केवल चिकित्सीय दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि कार्यात्मक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण से भी देखा जाता है। उदाहरण- यदि किसी श्रवण बाधित शिक्षार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि अपेक्षित स्तर से कम है, तो निदानात्मक मूल्यांकन यह निर्धारित कर सकता है कि समस्या भाषा दक्षता, संप्रेषण अवरोध, शिक्षण पद्धति अथवा पर्यावरणीय बाधाओं से संबंधित है।

3. शैक्षिक योजना निर्माण

मूल्यांकन का वास्तविक महत्व तब सिद्ध होता है जब उसके निष्कर्षों का उपयोग शैक्षिक योजना निर्माण में किया जाए। आकलन केंद्र शिक्षार्थी की क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा उपलब्ध संसाधनों के आधार पर उपयुक्त शैक्षिक कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने में सहायता करता है।

विशेष शिक्षा में यह प्रक्रिया व्यक्तिगत शैक्षिक योजना के निर्माण से जुड़ी होती है, जबकि समावेशी शिक्षा में यह शिक्षण-अधिगम अनुकूलन एवं समर्थन सेवाओं के निर्धारण में सहायक होती है। उदाहरण-किसी श्रवण बाधित शिक्षार्थी के मूल्यांकन के बाद यह अनुशंसा की जा सकती है कि उसे दृश्य शिक्षण सामग्री, सांकेतिक भाषा समर्थन तथा भाषा समृद्धि कार्यक्रम उपलब्ध कराए जाएँ।

4. परामर्श सेवाएँ

शैक्षिक आकलन केंद्र का एक महत्वपूर्ण कार्य शिक्षार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों तथा प्रशासकों को परामर्श प्रदान करना है। मूल्यांकन रिपोर्ट तभी सार्थक होती है जब उससे संबंधित व्यक्तियों को उसके निष्कर्षों और निहितार्थों की स्पष्ट समझ हो।

परामर्श सेवाएँ शैक्षिक, मनोसामाजिक, व्यावसायिक तथा पुनर्वास संबंधी निर्णयों में सहायता प्रदान करती हैं। उदाहरण-किसी विद्यालय में श्रवण बाधित

शिक्षार्थियों के लिए समावेशी शिक्षण व्यवस्था विकसित करने के उद्देश्य से शिक्षकों को कक्षा-अनुकूलन तथा संप्रेषण रणनीतियों के संबंध में परामर्श प्रदान किया जा सकता है।

5. प्रगति निगरानी

आकलन केंद्र का कार्य केवल प्रारंभिक मूल्यांकन तक सीमित नहीं होता। शिक्षार्थी की प्रगति का नियमित आकलन करना भी इसकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। प्रगति निगरानी के माध्यम से यह निर्धारित किया जाता है कि हस्तक्षेप कार्यक्रम अपेक्षित परिणाम प्रदान कर रहे हैं या नहीं।

यह प्रक्रिया साक्ष्य-आधारित निर्णय-निर्माण को सुदृढ़ बनाती है और आवश्यकतानुसार शैक्षिक योजनाओं में संशोधन की सुविधा प्रदान करती है। उदाहरण-यदि किसी शिक्षार्थी के लिए भाषा विकास कार्यक्रम संचालित किया गया है, तो निर्धारित अंतराल पर उसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन कर कार्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन किया जा सकता है।

6. पुनर्मूल्यांकन

विशेष शिक्षा में शिक्षार्थियों की आवश्यकताएँ स्थिर नहीं होतींय वे समय, आयु एवं अनुभव के साथ परिवर्तित होती रहती हैं। इसलिए समय-समय पर पुनर्मूल्यांकन आवश्यक होता है।

पुनर्मूल्यांकन के माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षार्थी की वर्तमान स्थिति क्या है, पूर्व निर्धारित लक्ष्य किस सीमा तक प्राप्त हुए हैं तथा भविष्य में किन प्रकार के समर्थन की आवश्यकता होगी। उदाहरण-किसी शिक्षार्थी के लिए तीन वर्षों से चल रहे शैक्षिक हस्तक्षेप कार्यक्रम की समीक्षा हेतु पुनर्मूल्यांकन किया जा सकता है, जिससे आगे की शैक्षिक योजना निर्धारित की जा सके।

7. विद्यालयों को तकनीकी सहायता प्रदान करना

आधुनिक शैक्षिक आकलन केंद्र केवल व्यक्तिगत शिक्षार्थियों के मूल्यांकन तक सीमित नहीं हैं। वे विद्यालयों को तकनीकी एवं व्यावसायिक सहायता भी प्रदान करते हैं।

इस सहायता में शिक्षकों का प्रशिक्षण, मूल्यांकन उपकरणों का चयन, समावेशी शिक्षण रणनीतियों का विकास, पाठ्यक्रम अनुकूलन तथा सहायता सेवाओं की योजना शामिल हो सकती है। उदाहरण-किसी समावेशी विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए आकलन केंद्र विद्यालय को संप्रेषण-अनुकूल कक्षा वातावरण विकसित करने संबंधी तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

8. समावेशी शिक्षा कार्यक्रमों को सहयोग देना

समावेशी शिक्षा की सफलता काफी हद तक प्रभावी आकलन एवं समर्थन सेवाओं पर निर्भर करती है। शैक्षिक आकलन केंद्र समावेशी शिक्षा कार्यक्रमों के लिए आवश्यक आंकड़े, विशेषज्ञता तथा परामर्श उपलब्ध कराता है।

यह केंद्र शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान, उचित समायोजन, सहायक प्रौद्योगिकी के उपयोग तथा शिक्षण-अधिगम रणनीतियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण-यदि किसी विद्यालय में समावेशी शिक्षा कार्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है, तो आकलन केंद्र विद्यालय को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के विश्लेषण, संसाधन नियोजन तथा शिक्षकों के क्षमता निर्माण में सहयोग प्रदान कर सकता है।

समालोचनात्मक दृष्टिकोण

समकालीन विशेष शिक्षा साहित्य में शैक्षिक आकलन केंद्र को केवल "मूल्यांकन इकाई" के रूप में नहीं, बल्कि "संसाधन, परामर्श एवं समर्थन केंद्र" के रूप में देखा जाता है। इसका कार्य केवल शिक्षार्थी की कठिनाइयों का निदान करना नहीं, बल्कि विद्यालयी व्यवस्था, शिक्षण प्रक्रियाओं तथा शैक्षिक नीतियों को अधिक समावेशी एवं उत्तरदायी बनाने में योगदान देना भी है। इस प्रकार आकलन केंद्र विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा के मध्य एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है।

शैक्षिक आकलन केंद्र के प्रमुख कार्यों में स्क्रीनिंग एवं पहचान, निदानात्मक मूल्यांकन, शैक्षिक योजना निर्माण, परामर्श सेवाएँ, प्रगति निगरानी, पुनर्मूल्यांकन, विद्यालयों को तकनीकी सहायता प्रदान करना तथा समावेशी शिक्षा कार्यक्रमों को सहयोग देना शामिल है। ये सभी कार्य मिलकर शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान, प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेपों के विकास तथा समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु आधार प्रदान करते हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

8. आधुनिक दृष्टिकोण में शैक्षिक आकलन केन्द्र को एक ..... संसाधन केन्द्र के रूप में देखा जाता है।

9. निदानात्मक मूल्यांकन केवल समस्या की पहचान नहीं करता, बल्कि उसके..... एवं प्रभावों को भी स्पष्ट करता है।

10. प्रगति निगरानी की प्रक्रिया ..... आधारित निर्णय-निर्माण को सुदृढ़ बनाती है।

11. विद्यालयों को तकनीकी सहायता प्रदान करने में मूल्यांकन उपकरणों का चयन, पाठ्यक्रम अनुकूलन तथा ..... रणनीतियों का विकास शामिल है।

12. शैक्षिक आकलन केन्द्र विशेष शिक्षा और समावेशी शिक्षा के मध्य एक महत्वपूर्ण..... का कार्य करता है।

14.5 शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना हेतु चरण

शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना एक सुनियोजित, व्यवस्थित तथा बहुस्तरीय प्रक्रिया है। यह केवल भवन, उपकरण एवं मानव संसाधनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि एक ऐसी संस्थागत प्रणाली के विकास से संबंधित है जो शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान, शैक्षिक निर्णय-निर्माण, हस्तक्षेप नियोजन तथा समावेशी शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन में योगदान दे सके। किसी भी आकलन केंद्र की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी स्थापना वैज्ञानिक योजना, स्थानीय आवश्यकताओं तथा व्यावसायिक मानकों के अनुरूप की गई है या नहीं।

विशेष शिक्षा एवं समावेशी शिक्षा के संदर्भ में शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना के लिए निम्नलिखित चरण महत्वपूर्ण माने जाते हैं-

1. आवश्यकताओं का आकलन

किसी भी शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना का प्रथम चरण आवश्यकता विश्लेषण है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य यह निर्धारित करना होता है कि संबंधित क्षेत्र, विद्यालय, जिला अथवा संस्थान में आकलन सेवाओं की वास्तविक आवश्यकता क्या है तथा किस प्रकार की सेवाएँ अपेक्षित हैं।

आवश्यकता आकलन के अंतर्गत शिक्षार्थियों की संख्या, उनकी शैक्षिक एवं विशेष आवश्यकताएँ, उपलब्ध सेवाएँ, संसाधनों की स्थिति तथा सेवा-अंतराल का विश्लेषण किया जाता है। यह चरण केंद्र की प्रकृति, कार्यक्षेत्र एवं प्राथमिकताओं को निर्धारित करने का आधार प्रदान करता है। उदाहरण-यदि किसी जिले में समावेशी विद्यालयों की संख्या बढ़ रही है, परंतु विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों के लिए व्यवस्थित आकलन सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं, तो आवश्यकता विश्लेषण यह संकेत दे सकता है कि एक जिला स्तरीय शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना आवश्यक है।

2. उद्देश्य निर्धारण

आवश्यकताओं के विश्लेषण के पश्चात् केंद्र के उद्देश्यों का स्पष्ट निर्धारण किया जाता है। उद्देश्य यह स्पष्ट करते हैं कि केंद्र किन सेवाओं का संचालन करेगा तथा उसके कार्यक्षेत्र की सीमाएँ क्या होंगी।

उद्देश्यों का निर्धारण संस्थान की आवश्यकताओं, उपलब्ध संसाधनों तथा लक्षित समूह की विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। उद्देश्य यथार्थवादी, मापनीय तथा संस्थागत लक्ष्यों के अनुरूप होने चाहिए।

उदाहरण-किसी आकलन केंद्र का उद्देश्य केवल विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों का मूल्यांकन करना हो सकता है, जबकि किसी अन्य केंद्र का उद्देश्य मूल्यांकन के साथ-साथ परामर्श, शिक्षक प्रशिक्षण तथा अनुसंधान गतिविधियों का संचालन भी हो सकता है।

3. संसाधनों की व्यवस्था

उद्देश्यों के निर्धारण के बाद आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की जाती है। संसाधनों में भौतिक अवसंरचना, वित्तीय सहायता, तकनीकी सुविधाएँ, मानव संसाधन तथा प्रशासनिक समर्थन सम्मिलित होते हैं।

संसाधन नियोजन किसी भी केंद्र की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए आवश्यक है। पर्याप्त संसाधनों के अभाव में आकलन सेवाओं की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। उदाहरण-यदि किसी राज्य स्तर के आकलन केंद्र की स्थापना की जा रही है, तो उसके लिए भवन, डिजिटल डेटा प्रबंधन प्रणाली, मानकीकृत परीक्षण सामग्री तथा प्रशिक्षित विशेषज्ञों हेतु बजट का प्रावधान आवश्यक होगा।

4. विशेषज्ञ कर्मियों की नियुक्ति

शैक्षिक आकलन केंद्र की सफलता काफी हद तक उसकी मानव संसाधन संरचना पर निर्भर करती है। इसलिए योग्य एवं प्रशिक्षित विशेषज्ञों की नियुक्ति एक महत्वपूर्ण चरण है। केंद्र में विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, ऑडियोलॉजिस्ट, स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट, सामाजिक कार्यकर्ता, परामर्शदाता तथा अन्य आवश्यक विशेषज्ञों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। बहु-विषयक टीम की उपस्थिति समग्र एवं कार्यात्मक मूल्यांकन को संभव बनाती है।

उदाहरण-श्रवण बाधिता से संबंधित आकलन सेवाएँ प्रदान करने वाले केंद्र में ऑडियोलॉजिस्ट एवं स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट की अनुपस्थिति मूल्यांकन की गुणवत्ता को सीमित कर सकती है। इसलिए विशेषज्ञों की नियुक्ति केंद्र की प्रकृति के अनुरूप की जानी चाहिए।

5. आकलन उपकरणों का चयन

आकलन केंद्र में प्रयुक्त उपकरणों का चयन उसके उद्देश्यों तथा लक्षित समूह की आवश्यकताओं के अनुरूप किया जाना चाहिए। उपकरणों का चयन करते समय उनकी वैधता, विश्वसनीयता, मानकीकरण तथा सांस्कृतिक उपयुक्तता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

आधुनिक आकलन दृष्टिकोण में केवल औपचारिक परीक्षणों पर निर्भरता पर्याप्त नहीं मानी जाती। इसलिए अवलोकन, साक्षात्कार, पोर्टफोलियो, कार्यात्मक मूल्यांकन तथा तकनीक-सहायित उपकरणों को भी सम्मिलित किया जाता है।

उदाहरण- किसी समावेशी विद्यालय प्रणाली के लिए स्थापित केंद्र में केवल बुद्धिलब्धि परीक्षण पर्याप्त नहीं होंगे। वहाँ शैक्षणिक उपलब्धि, भाषा विकास, सामाजिक सहभागिता तथा कार्यात्मक कौशलों के मूल्यांकन हेतु विविध उपकरणों की आवश्यकता होगी।

6. संचालन प्रक्रिया का विकास

केंद्र की प्रभावशीलता के लिए स्पष्ट एवं मानकीकृत संचालन प्रक्रियाओं का विकास आवश्यक है। इन प्रक्रियाओं में संदर्भन, पंजीकरण, मूल्यांकन, रिपोर्ट लेखन, परामर्श, अभिलेख प्रबंधन तथा अनुवर्ती सेवाओं की व्यवस्था शामिल होती है। मानकीकृत प्रक्रियाएँ कार्य में एकरूपता, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व सुनिश्चित करती हैं।

उदाहरण-यदि विभिन्न विशेषज्ञ एक ही शिक्षार्थी का मूल्यांकन कर रहे हैं, तो रिपोर्टिंग प्रारूप एवं डेटा संकलन प्रक्रिया में एकरूपता होना आवश्यक है ताकि निष्कर्षों का समेकित विश्लेषण किया जा सके।

7. गुणवत्ता आश्वासन एवं निगरानी प्रणाली का निर्माण

किसी भी आकलन केंद्र की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए गुणवत्ता नियंत्रण एवं निगरानी प्रणाली का होना आवश्यक है। गुणवत्ता आश्वासन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी सेवाएँ निर्धारित व्यावसायिक एवं नैतिक मानकों के अनुरूप संचालित हों। इस प्रक्रिया में आंतरिक मूल्यांकन, बाह्य समीक्षा, प्रतिक्रिया प्रणाली, सेवा गुणवत्ता संकेतकों तथा नियमित निरीक्षण को शामिल किया जा सकता है।

उदाहरण-यदि किसी केंद्र द्वारा जारी मूल्यांकन रिपोर्टों की गुणवत्ता में भिन्नता पाई जाती है, तो गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली के माध्यम से रिपोर्टिंग प्रक्रियाओं की समीक्षा कर आवश्यक सुधार किए जा सकते हैं।

8. सतत मूल्यांकन एवं सुधार

आधुनिक संस्थागत विकास की अवधारणा के अनुसार कोई भी प्रणाली स्थिर नहीं होती। बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं, तकनीकी प्रगति तथा नीति परिवर्तनों के अनुरूप आकलन केंद्रों को भी निरंतर स्वयं का मूल्यांकन एवं सुधार करना होता है।

सतत मूल्यांकन से यह ज्ञात होता है कि केंद्र अपने उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक कर रहा है तथा किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह प्रक्रिया संस्थागत अधिगम एवं गुणवत्ता संवर्धन का आधार बनती है।

उदाहरण-यदि केंद्र के आँकड़े यह दर्शाते हैं कि मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने में अत्यधिक समय लग रहा है, तो डिजिटल रिपोर्टिंग प्रणाली अथवा अतिरिक्त विशेषज्ञों की नियुक्ति जैसे सुधारात्मक कदम उठाए जा सकते हैं।

समालोचनात्मक दृष्टिकोण

शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना को केवल प्रशासनिक प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह एक सतत विकासशील प्रणाली है, जो बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं, समावेशी शिक्षा की चुनौतियों तथा नई प्रौद्योगिकियों के अनुरूप विकसित होती रहती है। इसलिए स्थापना प्रक्रिया का लक्ष्य केवल केंद्र का प्रारंभ करना नहीं, बल्कि एक ऐसी संस्थागत संस्कृति का निर्माण करना होना चाहिए जो गुणवत्ता, उत्तरदायित्व तथा साक्ष्य-आधारित निर्णय-निर्माण को प्रोत्साहित करे।

शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है जिसमें आवश्यकता विश्लेषण, उद्देश्य निर्धारण, संसाधनों की व्यवस्था, विशेषज्ञ कर्मियों की नियुक्ति, आकलन उपकरणों का चयन, संचालन प्रक्रियाओं का विकास, गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली का निर्माण तथा सतत मूल्यांकन एवं सुधार जैसे चरण सम्मिलित होते हैं। ये सभी चरण मिलकर एक ऐसे प्रभावी आकलन केंद्र के विकास में योगदान देते हैं जो शिक्षार्थियों, शिक्षकों तथा संस्थानों की आवश्यकताओं को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप से पूरा कर सके।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

13. शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना का प्रथम चरण ..... विश्लेषण है।

14. केंद्र के उद्देश्यों का निर्धारण ..... के विश्लेषण के पश्चात किया जाता है।

15. शैक्षिक आकलन केंद्र की सफलता काफी हद तक उसकी ..... संरचना पर निर्भर करती है।

16. आकलन उपकरणों का चयन करते समय उनकी वैधता, विश्वसनीयता तथा .....पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

17. किसी भी आकलन केंद्र की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए ..... आश्वासन एवं निगरानी प्रणाली आवश्यक है।

14.6 सारांश

शैक्षिक आकलन केंद्र एक विशेषीकृत संस्थागत व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों की शैक्षिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक तथा व्यवहारिक आवश्यकताओं का व्यवस्थित मूल्यांकन करना है। यह केंद्र केवल निदान तक सीमित नहीं होता, बल्कि शैक्षिक योजना निर्माण, हस्तक्षेप, परामर्श, पुनर्मूल्यांकन तथा प्रगति निगरानी जैसी सेवाएँ भी प्रदान करता है।

समावेशी शिक्षा एवं विशेष शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में शैक्षिक आकलन केंद्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शिक्षार्थियों की विशेष आवश्यकताओं की पहचान, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना के निर्माण तथा शिक्षण-अधिगम संबंधी निर्णयों के लिए वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह अनुसंधान, नीति-निर्माण तथा संसाधन विकास में भी योगदान देता है।

किसी भी आकलन केंद्र की स्थापना के लिए भौतिक अवसंरचना, प्रशिक्षित मानव संसाधन, मानकीकृत आकलन उपकरण तथा प्रभावी अभिलेख प्रबंधन प्रणाली जैसी अनिवार्य आवश्यकताओं का होना आवश्यक है। वहीं डिजिटल तकनीक, सहायक प्रौद्योगिकी, संसाधन पुस्तकालय, प्रशिक्षण एवं शोध सुविधाएँ तथा सामुदायिक संपर्क कार्यक्रम इसकी वांछनीय आवश्यकताओं में सम्मिलित हैं।

शैक्षिक आकलन केंद्र के प्रमुख कार्यों में स्क्रीनिंग एवं पहचान, निदानात्मक मूल्यांकन, शैक्षिक योजना निर्माण, परामर्श सेवाएँ, प्रगति निगरानी, पुनर्मूल्यांकन, विद्यालयों को तकनीकी सहायता तथा समावेशी शिक्षा कार्यक्रमों को सहयोग प्रदान करना शामिल है। केंद्र की स्थापना के लिए आवश्यकता आकलन, उद्देश्य निर्धारण, संसाधनों की व्यवस्था, विशेषज्ञों की नियुक्ति, उपकरणों का चयन, संचालन प्रक्रियाओं का विकास, गुणवत्ता आश्वासन तथा सतत मूल्यांकन जैसे चरणों का पालन किया जाता है।

14.7 शब्दावली

शब्द अर्थ

शैक्षिक आकलन शिक्षार्थी की क्षमताओं, उपलब्धियों एवं आवश्यकताओं का व्यवस्थित आकलन

स्क्रीनिंग संभावित कठिनाइयों अथवा विशेष आवश्यकताओं की प्रारंभिक पहचान की प्रक्रिया

निदानात्मक मूल्यांकन समस्या की प्रकृति, कारणों एवं प्रभावों का विस्तृत मूल्यांकन

व्यक्तिगत शैक्षिक योजना शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार की गई शिक्षण योजना

बहु-विषयक टीम विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों का समूह जो संयुक्त रूप से आकलन एवं हस्तक्षेप का कार्य करता है

समावेशी शिक्षा ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें सभी शिक्षार्थियों को समान अवसर प्रदान किए जाते हैं

सहायक प्रौद्योगिकी दिव्यांग व्यक्तियों की कार्यात्मक क्षमता बढ़ाने वाली तकनीकें एवं उपकरण

प्रगति निगरानी हस्तक्षेपों के परिणामों एवं शिक्षार्थी की प्रगति का नियमित आकलन

पुनर्मूल्यांकन समय-समय पर शिक्षार्थी की स्थिति का पुनः मूल्यांकन

गुणवत्ता आश्वासन सेवाओं की गुणवत्ता एवं मानकों को बनाए रखने की प्रक्रिया

अभिलेख प्रबंधन आकलन संबंधी सूचनाओं का व्यवस्थित संरक्षण एवं उपयोग

संसाधन पुस्तकालय विशेष शिक्षा, आकलन, मूल्यांकन एवं पुनर्वास संबंधी साहित्य एवं संसाधनों का संग्रह

अभ्यास प्रश्न (स्व-मूल्यांकन प्रश्न)

रिक्त स्थानों के उत्तर

1. व्यवहारिक
2. शक्तियों
3. विशेष
4. वैज्ञानिक

5. आंकड़ों
6. समन्वय
7. नीति
8. पेशेवर
9. कारणों
10. साक्ष्य
11. समावेशी शिक्षण
12. सेतु
13. आवश्यकता
14. आवश्यकताओं
15. मानव संसाधन
16. मानकीकरण
17. गुणवत्ता

लघु प्रश्न

1. शैक्षिक आकलन केंद्र क्या है?
2. शैक्षिक आकलन केंद्र की आवश्यकता क्यों है?
3. बहु-विषयक टीम से क्या अभिप्राय है?

4. शैक्षिक आकलन केंद्र की दो अनिवार्य आवश्यकताएँ लिखिए।

5. शैक्षिक आकलन केंद्र की दो वांछनीय आवश्यकताएँ लिखिए।

6. शैक्षिक आकलन केंद्र के दो प्रमुख कार्य लिखिए।

7. प्रगति निगरानी का क्या महत्व है?

14.8 अभ्यासों प्रश्नों (स्व-मूल्यांकन प्रश्न) के उत्तर

1. शैक्षिक आकलन केंद्र एक ऐसी संस्थागत व्यवस्था है जहाँ शिक्षार्थियों की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, भाषायी, सामाजिक तथा व्यवहारिक आवश्यकताओं का वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जाता है तथा उसके आधार पर शैक्षिक हस्तक्षेप एवं परामर्श सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

2. यह शिक्षार्थियों की विशेष आवश्यकताओं की पहचान, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना निर्माण, समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन, शिक्षण-अधिगम निर्णयों तथा अनुसंधान एवं नीति-निर्माण के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है।

3. बहु-विषयक टीम ऐसे विशेषज्ञों का समूह है जिसमें विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, ऑडियोलॉजिस्ट, स्पीच-लैंग्वेज विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता एवं परामर्शदाता सम्मिलित होते हैं।

4. प्रशिक्षित एवं विशेषज्ञ मानव संसाधन।

मानकीकृत एवं विश्वसनीय आकलन उपकरण।

5. सहायक प्रौद्योगिकी ।

संसाधन पुस्तकालय एवं शोध सुविधाएँ।

6. स्क्रीनिंग एवं पहचान।

निदानात्मक आकलन।

7. यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि शैक्षिक हस्तक्षेप एवं समर्थन सेवाएँ अपेक्षित परिणाम दे रही हैं या नहीं तथा आवश्यकतानुसार उनमें संशोधन किया जा सकता है।

14.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ansari, M. S. (2021). Hearing Screening Program for School Going Children in India. Egyptian Journal of Otolaryngology.

2. Braden, J. P. (2003). Psychological Assessment in School Settings. Handbook of Psychology.

3. Gargiulo, R. M., & Bouck, E. C. (2020). Special Education in Contemporary Society. Sage Publications.

4. Hallahan, D. P., Kauffman, J. M., & Pullen, P. C. (2022). Exceptional Learners: An Introduction to Special Education. Pearson.

5. Hayes, A., Elder, B., & Bulat, J. (2020). Assessment as a Service Not a Place: Transitioning Assessment Centers to School-Based Identification Systems. RTI Press.

6. Heward, W. L. (2023). Exceptional Children: An Introduction to Special Education. Pearson.

7. Lovett, B. J., & Nelson, J. M. (2019). Assessment in Educational Settings. Cambridge University Press.

8. National Joint Committee on Learning Disabilities (2011). Comprehensive Assessment and Evaluation of Students with Learning Disabilities. Learning Disability Quarterly.

9. NCERT (2022). Guidelines for Inclusive Education. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.

10. Pierangelo, R., & Giuliani, G. (2017). Assessment in Special Education: A Practical Approach. Pearson.

11. Rehabilitation Council of India (RCI). (2023). Standards and Guidelines for Special Education and Rehabilitation Services. New Delhi.

12. Salvia, J., Ysseldyke, J. E., & Bolt, S. (2021). Assessment in Special and Inclusive Education (14th Edition). Cengage Learning.

13. Salvia, J., Ysseldyke, J. E., & Witmer, S. (2017). Assessment in Special and Inclusive Education. Cengage Learning.

14. UNESCO. (2020). Global Education Monitoring Report: Inclusion and Education-All Means All. Paris: UNESCO.

15. University of Mumbai. M.Ed. Special Education (HI) Curriculum.

14.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. शैक्षिक आकलन केंद्र की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसकी आवश्यकता एवं उद्देश्यों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

2. समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में शैक्षिक आकलन केंद्र की भूमिका का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

3. शैक्षिक आकलन केंद्र की अनिवार्य एवं वांछनीय आवश्यकताओं का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

4. शैक्षिक आकलन केंद्र के प्रमुख कार्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए तथा विशेष शिक्षा के संदर्भ में उनकी उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

5. शैक्षिक आकलन केंद्र की स्थापना हेतु आवश्यक चरणों का क्रमबद्ध वर्णन कीजिए।

6. बहु-विषयक टीम की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए शैक्षिक आकलन केंद्र में इसकी भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

7. आधुनिक शैक्षिक आकलन केंद्रों में डिजिटल प्रौद्योगिकी एवं सहायक प्रौद्योगिकी की भूमिका का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

8. शैक्षिक आकलन केंद्र को ''निदान, हस्तक्षेप एवं संसाधन समर्थन केंद्र'' के रूप में स्पष्ट कीजिए।

9. विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों के लिए शैक्षिक योजना निर्माण में आकलन केंद्र की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

10. शैक्षिक आकलन केंद्रों के संदर्भ में गुणवत्ता आश्वासन एवं सतत सुधार की आवश्यकता का विवेचन कीजिए।

इकाई 15

दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच): अवधारणा एवं प्रकार (बहुविषयक, अंतःविषयक और पार-विषयक)

15.1 प्रस्तावना (Introduction)

15.2 उद्देश्य (Objectives)

15.3 दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) की अवधारणा (Concept of Team Approach)

15.4 दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) का अर्थ (Meaning of team approach)

15.5 दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) की परिभाषाएं (Definition of Team Approach)

15.6 एक प्रभावी टीम की विशेषताएं (Characteristics of an Effective Team)

15.7 दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) की आवश्यकता (Need of Team Approach)

15.8 दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) के लाभ (Advantages of Team Approach)

15.9 टीम अप्रोच के प्रकार (Types of Team Approach)

15.10 PwHI के संदर्भ में दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) का महत्व (Importance of Team Approach in Context of PwHI)

15.11 एक प्रभावी टीम के आवश्यक गुण (Essential Qualities of an Effective Team)

15.12 भारत के संदर्भ में टीम अप्रोच की चुनौतियां एवं समाधान (Challenges and Solutions of team approach in Indian Context)

15.13 जीवन वृत्त (Case Study)

15.14 सारांश (Summary)

15.15 तकनीकी शब्दों की व्याख्या (Glossary of Technical Terms)

15.16 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer of Practice Questions)

15.17 संदर्भ (References)

15.18 निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

15.1 प्रस्तावना (Introduction)

दल-आधारित उपागम / Team Approach किसी बच्चे में श्रवण बधिरता का प्रभाव उसके संपूर्ण जीवन पर पड़ता है - जिसमें उसका भाषा विकास, शैक्षणिक प्रगति, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक संतुलन और पारिवारिक जीवन सभी प्रभावित होते हैं। इस कठिनता को जानने, समझने और उसका समाधान करने के लिए यह जरूरी है कि विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ एक साथ मिलकर उस बच्चे के हितार्थ कार्य करें। जब सभी विशेषज्ञ मिलकर कार्य करते है तो इसी सहयोगात्मक प्रक्रिया को दल-आधारित उपागम अथवा टीम अप्रोच कहा जाता है। दल-आधारित उपागम में समावेशी और प्रभावी हस्तक्षेप को अति आवश्यक माना गया है। कोई स्पेशल एजुकेटर हो या ऑडियोलॉजिस्ट या स्पीच थेरेपिस्ट ये अकेले बच्चे की सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते। प्रत्येक बच्चे और परिवार की आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। इसलिए किसी एक ही उपचार या हस्तक्षेप को सभी पर लागू नहीं किया जा सकता। एक अच्छे हस्तक्षेप योजना

में निरंतर मॉनिटरिंग, फॉलो-अप और समय-समय पर आवश्यक बदलाव शामिल होते हैं। सुनने में दिक्कत वाले बच्चों और उनके परिवारों के लिए विभिन्न विकल्प उपलब्ध हैं, जैसे - संवाद कौशल सीखने में मदद, हियरिंग एड जैसे सहायक उपकरण, और सपोर्ट ग्रुप से जुड़ना।

15.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप:

1. टीम अप्रोच की अवधारणा को समझा पाएंगे और उसके महत्व को स्पष्ट कर पाएंगे।

2. टीम अप्रोच के प्रकारों - बहुविषयक, Educators और पार-विषयक - के बीच अंतर कर पाएंगे और IPwHI के संदर्भ में प्रत्येक प्रकार की भूमिका का विश्लेषण कर पाएंगे।

3. टीम के विभिन्न सदस्यों की भूमिका को बता पाएंगे, जिसमें प्रोफेशनल्स, कर्मचारी, माता-पिता और बच्चा शामिल हैं।

4. CWHI के लिए टीम का गठन करते समय बच्चे की उम्र, श्रवण हानि की गंभीरता और उससे जुड़ी स्थितियों को ध्यान में रख पाएंगे।

5. असेसमेंट की प्रक्रिया में टीम की भूमिका को समझ पाएंगे - असेसमेंट से पहले, उसके दौरान और बाद में।

6. IEP / IFSP की आवश्यकता को पहचानकर उसकी योजना बना पाएंगे और उसे लागू कर पाएंगे।

7. आउटकम मापन में टीम की भूमिका को समझ पाएंगे, जिसमें समय-समय पर मूल्यांकन और निर्धारित लक्ष्यों के आधार पर प्रदर्शन की समीक्षा शामिल है।

8. एक प्रभावी टीम के गुणों को सूचीबद्ध कर पाएंगे।

15.3 दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) की अवधारणा (Concept of Team Approach)

दल आधारित उपागम एक सहयोगात्मक कार्यप्रणाली है। इसमें समान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न पृष्ठभूमि, ज्ञान और कौशल रखने वाले विशेषज्ञ एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। यह उपागम इस मान्यता पर आधारित है कि किसी एक व्यक्ति के लिए एक ही पेशेवर सभी समस्याओं का समाधान नहीं दे सकता। विशेषकर श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में यह अवधारणा और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। सुनने की समस्या केवल कान से जुड़ी नहीं होती। इसका असर भाषा, शिक्षा, व्यवहार, सामाजिक जीवन और रोजगार तक पड़ता है। इसलिए ENT चिकित्सक, ऑडियोलॉजिस्ट, वाक् भाषा चिकित्सक, ऑडिटरी वर्बल थेरेपिस्ट, पुनर्वास कार्यकर्ता, विशेष शिक्षक के साथ माता पिता और परिवार के सदस्यों को भी टीम का हिस्सा बनाना आवश्यक है। दल आधारित उपागम की अवधारणा का मूल विचार है संयुक्त उत्तरदायित्व और सूचना का आदान प्रदान। इसमें टीम के सभी सदस्य मिलकर बच्चे का मूल्यांकन करते हैं, योजना बनाते हैं और हस्तक्षेप को लागू करते हैं। परिवार की भागीदारी को इसमें सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वही बच्चे की दैनिक प्रगति को समझ सकते हैं।vइस उपागम के माध्यम से हमें बच्चे की सुनने की समस्या की प्रकृति, निदान, चिकित्सा और शैक्षणिक संभावनाओं की स्पष्ट जानकारी मिलती है। साथ ही व्यावसायिक प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर, सरकारी योजनाएं और PWDs के लिए कार्यरत संस्थाओं से जुड़ने में भी सहायता मिलती है।वर्तमान समय में विद्वान और नीति निर्माता भी परिणामों की गुणवत्ता और कार्य वातावरण को बेहतर बनाने के लिए दल आधारित उपागम को सबसे उपयुक्त मानते हैं। इस प्रक्रिया में विचारों का सृजन होता है, आपसी चर्चा होती है और सामूहिक निर्णय के द्वारा बच्चे के लिए सबसे प्रभावी योजना बनाई जाती है। संक्षेप में कहा जाए तो दल आधारित उपागम यह मानता है कि एक से अधिक विशेषज्ञों की सोच और सामूहिक प्रयास ही बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए अधिक उपयोगी साबित होते हैं।

15.4 दल-आधारित उपागम"(टीम अप्रोच) का अर्थ (Meaning of team approach)

दल-आधारित उपागम अथवा टीम अप्रोच वह प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ, माता-पिता और शिक्षक मिलकर एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के समग्र विकास के लिए संयुक्त रूप से मूल्यांकन, योजना बनाना और हस्तक्षेप करते हैं। टीम अप्रोच एक सहयोगात्मक कार्य प्रणाली है जिसमें विभिन्न विषयों के पेशेवर एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक साथ काम करते हैं। यहां लक्ष्य है PwHI के बच्चे का समग्र विकास। इस प्रकार हम कह सकते है कि दल आधारित उपागम में ऑडियोलॉजिस्ट, स्पेशल एजुकेटर, SLP, डॉक्टर और माता-पिता सब एक टीम बनकर बच्चे की जरूरतों पर एक साथ काम करते हैं ताकि बच्चे को सबसे अच्छा सपोर्ट मिल सके।

15.5 दल आधारित उपागम की परिभाषाएं (Definition of Team Approach)

दल आधारित उपागम की परिभाषाएं निम्न प्रकार हैं। Bailey एवं Wolery 1992 के अनुसार- "दल-आधारित उपागम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न अनुशासनों के पेशेवर, माता-पिता के साथ मिलकर एक साझा लक्ष्य के लिए एक साथ काम करते हैं, जानकारी साझा करते हैं और निर्णय लेते हैं।" "The team approach is a process in which professionals from different disciplines, along with parents, work together toward a common goal, share information and make decisions." (According by Bailey and Wolery - 1992) National Early Childhood Technical Assistance Center - NECTAC के अनुसार- "टीम उपागम एक सहयोगात्मक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न पेशेवर और परिवार के सदस्य बच्चे की

जरूरतों का आकलन करने, योजना बनाने और सेवाएं प्रदान करने के लिए मिलकर काम करते हैं।" "The team approach is a collaborative process in which professionals from different disciplines and family members work together to assess the child's needs, plan and provide services." (According by National Early Childhood Technical Assistance Center - NECTA उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम दल आधारित उपागम को अपने शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं। "दल-आधारित उपागम वह विधि है जिसमें ऑडियोलॉजिस्ट, विशेष शिक्षक, वाक्-चिकित्सक, डॉक्टर और माता-पिता एक टीम के रूप में मिलकर श्रवण बाधित बच्चे की शिक्षा और विकास की योजना बनाते और लागू करते हैं।"

15.6 दल आधारित उपागम की मुख्य विशेषताएं (Main characteristics of team approach)

1. साझा लक्ष्य (Shared Goal) सभी सदस्य बच्चे की भाषा, शिक्षा और सामाजिक समावेश के लिए काम करते हैं।

2. विशेषज्ञता का समन्वय (Coordination of Expertise) ऑडियोलॉजी, स्पीच थेरेपी, स्पेशल एजुकेशन, मनोविज्ञान, मेडिकल और सामाजिक कार्य जैसे क्षेत्र एक साथ आते हैं।

3. संचार (Communication) नियमित बैठकें, केस चर्चा और फीडबैक टीम की जान है।

4. परिवार की भागीदारी (Family Involvement) माता-पिता और देखभालकर्ता को टीम का सबसे महत्वपूर्ण सदस्य माना जाता है

15.7 दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) की आवश्यकता (Need of Team Approach)

श्रवण बधिर बालक को केवल सुनने में दिक्कत नहीं होती। उसके साथ भाषा का अभाव, शैक्षणिक पिछड़ापन, सामाजिक अलगाव और कभी-कभी व्यवहार संबंधी चुनौतियां भी जुड़ जाती हैं। यदि ऑडियोलॉजिस्ट केवल हियरिंग एड लगाकर छोड़ दे, तो बच्चा उसका उपयोग नहीं कर पाएगा। यदि शिक्षक केवल पुस्तक पढ़ाए, तो बच्चा भाषा न होने के कारण समझ नहीं पाएगा। श्रवण बाधित बच्चों के साथ कार्य करना एक जटिल प्रक्रिया है। केवल एक विशेषज्ञ के द्वारा बच्चे की सभी समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। इसलिए दल आधारित उपागम की आवश्यकता होती है।

1. श्रवण हानि का प्रभाव केवल सुनने तक सीमित नहीं रहता। इससे भाषा विकास, शैक्षणिक प्रगति, सामाजिक व्यवहार और भावनात्मक विकास सभी प्रभावित होते हैं। इन सभी क्षेत्रों के लिए अलग विशेषज्ञता की जरूरत होती है।
2. सही समय पर पहचान और हस्तक्षेप के लिए ENT चिकित्सक, ऑडियोलॉजिस्ट, वाक् चिकित्सक और विशेष शिक्षक का साथ में काम करना जरूरी है।

3. प्रत्येक बच्चे की जरूरत अलग होती है। टीम मिलकर बच्चे का समग्र मूल्यांकन करती है और उसी के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षा योजना और पारिवारिक सेवा योजना बनाती है।

4. परिवार टीम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। माता पिता के सहयोग से ही घर पर हस्तक्षेप को सही ढंग से लागू किया जा सकता है।

5. टीम के माध्यम से परिवार को थेरेपी, शैक्षणिक अवसर, व्यावसायिक प्रशिक्षण, सरकारी योजनाओं और सहायक उपकरणों की सही जानकारी मिलती है।

6. विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के विचारों के कारण निर्णय अधिक व्यावहारिक और प्रभावी बनते हैं। इससे बच्चे के विकास की गति तेज होती है। इस प्रकार टीम

अप्रोच यह सुनिश्चित करता है कि श्रवण बाधित बच्चे को सभी स्तरों पर समय पर और समन्वित सहायता मिल सके।

15.8 दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) के लाभ (Advantages of Team Approach)

15.8.1 समग्र मूल्यांकन संभव होता है **(Comprehensive Assessment is Possible)** टीम में अलग क्षेत्र के विशेषज्ञ होने के कारण बच्चे का शारीरिक, मानसिक, शैक्षणिक और सामाजिक सभी पक्षों का मूल्यांकन एक साथ हो जाता है।

15.8.2 सही समय पर हस्तक्षेप **(Timely Intervention)**

विभिन्न विशेषज्ञों की संयुक्त राय से बच्चे की समस्या की जल्दी पहचान हो जाती है और तुरंत उपचार तथा थेरेपी शुरू की जा सकती है।

15.8.3 व्यक्तिगत योजना का निर्माण **(Development of Individualized Plan)**

टीम बच्चे की उम्र, आवश्यकता और क्षमता के अनुसार IEP और IFSP जैसी व्यक्तिगत योजनाएं बनाती है जिससे विकास लक्षित रूप से होता है।

15.8.4 परिवार की सक्रिय भागीदारी **(Active Involvement of Family)**

माता पिता और परिवार के सदस्य टीम का हिस्सा बनकर बच्चे की प्रगति को बेहतर समझते हैं और घर पर भी सहयोग दे पाते हैं।

15.8.5 सूचना और संसाधनों की उपलब्धता **(Availability of Information and Resources)**

टीम के माध्यम से परिवार को थेरेपी, शैक्षणिक सुविधाएं, सरकारी योजनाएं, सहायक उपकरण और रोजगार के अवसरों की पूरी जानकारी मिलती है।

15.8.6 बेहतर समन्वय और सहयोग (Better Coordination and Collaboration)

सभी पेशेवर एक लक्ष्य पर काम करते हैं इसलिए सेवाओं में दोहराव नहीं होता और कार्य का बोझ कम हो जाता है।

15.8.7 निर्णय अधिक प्रभावी होते हैं (More Effective Decision Making)

कई विशेषज्ञों की राय से योजना अधिक व्यावहारिक बनती है और बच्चे के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है।

15.9 टीम अप्रोच के प्रकार (Types of Team Approach)

PwHI के साथ काम करने वाली टीमों को उनके काम करने के तरीके के आधार पर 3 भागों में बांटा गया है। इन तीनों में 'टीम वर्क' की विशेषताएं अब महत्व अलग-अलग होते है। जिस बच्चे को सुनने में दिक्कत होती है, उसका मतलब है बोलने, भाषा और सोचने-समझने की क्षमता में देरी। सुनने में दिक्कत की जल्दी पहचान और असरदार इलाज से भाषा, बातचीत और सोचने-समझने की स्किल बेहतर होती हैं। इस मामले में, ज़्यादातर एजेंसियां बोलने, भाषा और सुनने पर ध्यान देने की क्षमता के विकास के मकसद से सुनने में दिक्कत वाले बच्चे के लिए एक पर्सनल इलाज प्लान बनाने के लिए प्रोफेशनल्स की टीम के साथ काम करती हैं। क्योंकि बोलने, भाषा और सुनने पर ध्यान देना एकेडमिक स्किल के विकास के लिए सबसे ज़रूरी फैक्टर है। इसीलिए सुनने में दिक्कत वाले बच्चों में टीम अप्रोच बहुत ज़रूरी हिस्सा है। टीम अप्रोच तीन तरह की होती है। ये हैं मल्टीडिसिप्लिनरी, इंटरडिसिप्लिनरी और ट्रांस-डिसिप्लिनरी। मल्टीडिसिप्लिनरी, इंटरडिसिप्लिनरी और ट्रांस-डिसिप्लिनरी शब्द आजकल एक-दूसरे की जगह इस्तेमाल होने लगे हैं। लेकिन जब सुनने में दिक्कत के क्षेत्र में किसी खास मामले में टीम अप्रोच को लागू किया जाता है, तो यह सबसे ज़रूरी होना चाहिए कि टीम अप्रोच की मदद से सुनने में दिक्कत वाले छात्रों का

एकेडमिक कामकाज, कम्युनिकेशन स्किल, सेंसरी-मोटर स्किल, सोशल/इमोशनल स्किल, रोज़मर्रा के काम करने की स्किल, करियर/वोकेशनल स्किल और बची हुई सुनने की क्षमता का इस्तेमाल किया जा सके। इसलिए, जिन स्टूडेंट्स को सुनने में दिक्कत होती है, उन्हें अच्छी शिक्षा देने के लिए, टीम अप्रोच का प्रयोग करके सेवाएं दी जानी चाहिए, जिसमें सुनने में दिक्कत वाले बच्चों को पढ़ाने में दिव्यांगता की जानकारी रखने वाले सदस्य सम्मलित हों

15.9.1 बहुविषयक टीम (Multidisciplinary Team) अवधारणा (Concept)

बहुविषयक टीम में अलग-अलग विषयों और क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होते हैं। इस उपागम में दो या दो से अधिक क्षेत्र एक सामान्य समस्या को हल करने के लिए साथ काम करते हैं। हर विशेषज्ञ स्वतंत्र रूप से बच्चे का मूल्यांकन करता है, अपनी रिपोर्ट तैयार करता है और अपने सुझाव देता है। लेकिन विशेषज्ञों के बीच बहुत अधिक आपसी चर्चा या गहरा समन्वय नहीं होता। यह कैसे काम करती है (How it Works) उदाहरण के तौर पर एक श्रवण बाधित बच्चा क्लिनिक जाता है।

1. ऑडियोलॉजिस्ट श्रवण जांच करके बताता है कि 70 dB की संवेदी तंत्रिका हानि है और हियरिंग एड लगाने की सलाह देता है।

2. वाक् चिकित्सक अलग से मूल्यांकन करके कहता है कि बच्चे की मौखिक भाषा में 2 साल की देरी है और उसे वाक् थेरेपी की जरूरत है।

3. विशेष शिक्षक बताता है कि बच्चे को कक्षा में आगे की सीट और दृश्य सामग्री की आवश्यकता है।

4. मनोवैज्ञानिक अलग से बुद्धि परीक्षण करता है। इस प्रक्रिया में सभी रिपोर्ट माता पिता को अलग अलग मिलती हैं। परंतु ये सभी पेशेवर एक साथ बैठकर यह तय नहीं करते कि इन सुझावों को आपस में कैसे जोड़ा जाए।

मुख्य विशेषताएं (Key Features)

1. समानांतर कार्य (Parallel Work) सभी विशेषज्ञ एक ही समय में काम करते हैं लेकिन एक दूसरे से अलग रहकर।

2. सीमित संचार (Limited Communication) विशेषज्ञों के बीच केवल रिपोर्ट का आदान प्रदान होता है, सीधी चर्चा नहीं।

3. माता पिता समन्वयक की भूमिका में (Parent as Coordinator) सभी सुझावों को जोड़ने और उन्हें लागू करने की जिम्मेदारी माता पिता पर होती है।

लाभ (Advantages)

1. यह विशेषज्ञों की पूरी टीम तक पहुंच प्रदान करता है और उपलब्ध सर्वोत्तम विकल्पों तक पहुंच आसान बनाता है।

2. यह सेवाओं के समन्वय को बेहतर बनाता है जिससे बच्चे को जल्दी सहायता मिलती है।

3. यह रेफरल प्रक्रिया को तेज करता है और स्वास्थ्य स्थिति को बनाए रखने में मदद करता है।

4. यह अलग विभागों और संस्थाओं में सेवाएं लागू करने के नए मार्ग खोलता है जिससे जरूरत पड़ने पर तुरंत संसाधन जुटाए जा सकते हैं।

5. यह बच्चों को अपने लिए दैनिक, साप्ताहिक, मासिक और वार्षिक लक्ष्य निर्धारित करने की अनुमति देता है।

6. प्रत्येक क्षेत्र का गहन विशेषज्ञ शामिल होता है और मूल्यांकन जल्दी पूरा हो जाता है।

सीमाएं (Limitations)

1. सेवाएं प्रदान करने में समय का दबाव बना रहता है।

2. टीम के सदस्य अलग पृष्ठभूमि और कार्य समय से आते हैं। इसलिए उनके बीच आपसी समझ की कमी हो सकती है। उदाहरण के लिए मनोचिकित्सक को यह नहीं पता होता कि सामाजिक कार्यकर्ता क्या कार्य करता है।

3. इसे प्रभावी बनाने के लिए बार बार बैठक और सहयोग की आवश्यकता होती है।

4. यह उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है।

5. हस्तक्षेप टुकड़ों में बंटा हुआ होता है।

6. माता पिता भ्रमित हो सकते हैं क्योंकि उन्हें ही सभी सुझावों को जोड़ना पड़ता है।

7. सेवाओं में दोहराव या विरोधाभास की संभावना रहती है।

15.9.2 अंतःविषयक टीम (Interdisciplinary Team) अवधारणा (Concept)

अंतर्विषयक टीम बहुविषयक टीम से एक कदम आगे होती है। इसमें अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ केवल अलग काम नहीं करते, बल्कि नियमित रूप से मिलकर चर्चा करते हैं और एक संयुक्त योजना बनाते हैं। यहां जानकारी का आदान प्रदान और उसे एक साथ जोड़ने की प्रक्रिया होती है ताकि बच्चे के लिए एक समग्र निष्कर्ष और सुझाव तैयार किए जा सकें। यह कैसे काम करती है (How it Works) उसी श्रवण बाधित बच्चे के लिए सभी 4 विशेषज्ञ एक केस कॉन्फ्रेंस में एक साथ बैठते हैं।

1. ऑडियोलॉजिस्ट बताता है कि बच्चे को हियरिंग एड लगा दिया गया है।

2. वाक् चिकित्सक कहता है कि अब हियरिंग एड का उपयोग करके श्रवण प्रशिक्षण शुरू किया जा सकता है।

3. विशेष शिक्षक कहता है कि वह कक्षा में भी उन ध्वनियों को शामिल करेगा।

4. मनोवैज्ञानिक सुझाव देता है कि बच्चा शर्मीला है इसलिए छोटे समूह में काम किया जाए। अंत में सभी मिलकर एक साझा IEP यानी व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम तैयार करते हैं। मुख्य विशेषताएं

(Key Features)

1. नियमित संचार (Regular Communication) विशेषज्ञों की साप्ताहिक या मासिक बैठकें होती हैं जहां वे बच्चे की प्रगति पर चर्चा करते हैं।

2. एकीकृत योजना (ntegrated Planning) सभी का लक्ष्य एक ही होता है लेकिन उसे पाने की रणनीतियां अलग होती हैं।

3. भूमिका की स्पष्टता (Role Clarity) यह पहले से तय होता है कि कौन सा पेशेवर कौन सा कार्य करेगा।

4. परिवार और विद्यालय की भागीदारी (Family and School Involvement) मनोचिकित्सक, तंत्रिका रोग विशेषज्ञ, बाल ऑडियोलॉजिस्ट, वाक् भाषा और श्रवण मौखिक चिकित्सक, कोक्लियर इम्प्लांट टीम, बाल विकास विशेषज्ञ, आनुवंशिकी, नेत्र रोग विशेषज्ञ, रेडियोलॉजिस्ट, मेडिकल सोशल वर्कर और मनोवैज्ञानिक जैसे सदस्य बच्चे, परिवार और स्कूल के साथ मिलकर काम करते हैं।

लाभ (Advantages)

1. यह एक बहुआयामी पद्धति है क्योंकि इसमें मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को भी शामिल किया जाता है।

2. यह एक समन्वित उपागम है क्योंकि सभी सदस्य एक ही स्थान पर मिलकर कार्यात्मक क्षमता विकसित करने के लिए आवश्यक सभी सहायता सेवाएं प्रदान करते हैं।

3. सेवाएं आपस में जुड़ी हुई होती हैं जिससे बच्चे को निरंतरता मिलती है।

4. माता पिता को एक ही समेकित योजना मिलती है जिससे भ्रम कम होता है।

5. इससे मनोवैज्ञानिक कल्याण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

6. यह लागत प्रभावी और व्यापक प्रबंधन कार्यक्रम विकसित करने में मदद करता है।

सीमाएं (Limitations)

1. इसमें समय और ऊर्जा अधिक लगती है और इसे लागू करना कठिन होता है।

2. यह टीम के सदस्यों के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। कुछ सदस्य अपने तरीके पर अडिग रहते हैं और लचीलापन नहीं दिखाते।

3. फिर भी प्रत्येक पेशेवर अपनी सीमा के भीतर ही काम करता है। कोई दूसरे की भूमिका नहीं निभाता।

15.9.3. पार-विषयक टीम (Transdisciplinary Team) अवधारणा (Concept)

पार-विषयक टीम वर्क का सबसे उन्नत रूप है। इसमें पेशेवर अपनी-अपनी सीमाओं को पार करके काम करते हैं। वे एक दूसरे से सीखते हैं और आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे की भूमिका भी निभाते हैं। इसे भूमिका रिहाई भी कहा जाता है। इसका अंतिम उद्देश्य एकीकृत मूल्यांकन को बढ़ावा देना और एक एकीकृत उपचार योजना बनाना है जिसे सभी टीम सदस्य मिलकर लागू करते हैं। यह कैसे काम करती है

(How it Works) इस मॉडल में टीम से एक केस मैनेजर या प्राथमिक प्रदाता चुना जाता है। अक्सर यह विशेष शिक्षक या माता पिता होते हैं। उदाहरण: वाक् चिकित्सक ने विशेष शिक्षक को कुछ भाषा उत्तेजना तकनीक सिखा दीं। अब विशेष शिक्षक रोज कक्षा में उन तकनीकों का उपयोग करेगा। ऑडियोलॉजिस्ट ने माता पिता को हियरिंग एड की रोजमर्रा की जांच सिखा दी। अब माता पिता हर सुबह बैटरी और उपकरण की जांच करेंगे। मनोवैज्ञानिक ने पूरी टीम को व्यवहार प्रबंधन के टिप्स दे दिए। इस तरह एक ही व्यक्ति के माध्यम से सेवाएं बच्चे और परिवार तक पहुंचती हैं।

मुख्य विशेषताएं (Key Features)

1. भूमिका रिहाई (Role Release) टीम के सदस्य एक दूसरे को प्रशिक्षित करते हैं ताकि वे बुनियादी कौशल सीख सकें और उन्हें रोजमर्रा में लागू कर सकें।

2. एक प्राथमिक प्रदाता (One Primary Provide बच्चा और परिवार सबसे अधिक संपर्क एक ही व्यक्ति से रखते हैं जिससे संचार आसान हो जाता है।

3. साझा उत्तरदायित्व (Shared Responsibility योजना की सफलता और असफलता की जिम्मेदारी पूरी टीम की होती है।

4. समन्वय और सहयोग पर जोर. (Focus on Coordination) नियमित टीम बैठकें होती हैं। एक सुविधा प्रदाता इन बैठकों को संचालित करता है और बच्चे की जरूरतों के आधार पर समग्र उपचार योजना बनाने में मदद करता है।

5. पर्यावरण आधारित मूल्यांकन (Environment Referenced Assessment) केवल विषय आधारित जांच के साथ साथ बच्चे के दैनिक जीवन और वातावरण में अनुकूलन को भी मापा जाता है।

लाभ (Advantages)

1. प्राथमिक हस्तक्षेप का अधिक प्रभावी उपयोग होता है और सेवाओं की गुणवत्ता बेहतर होती है।

2. विशेषज्ञों की टीम मिलकर एक समान और सटीक हस्तक्षेप कार्यक्रम बनाती है।

3. सेवाएं सबसे निरंतर और प्राकृतिक वातावरण में मिलती हैं।

4. माता पिता सबसे अधिक सशक्त होते हैं क्योंकि उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है।

5. माता पिता की जानकारी को प्रक्रिया में महत्व दिया जाता है।

6. सेवाएं परिवार की जरूरतों और प्राथमिकताओं के अनुसार दी जाती हैं।

7. परिवार पर बोझ कम होता है क्योंकि उन्हें हर पेशेवर से अलग बात नहीं करनी पड़ती।

8. संसाधनों की बर्बादी नहीं होती और पेशेवरों का विकास भी होता है।

सीमाएं (Limitations)

1. इस विधि में बहुत समय लगता है। इसमें बैठक, संयुक्त मूल्यांकन, अनुवर्ती कार्य और अतिरिक्त संपर्क शामिल हैं।

2. इसे लागू करने के लिए अधिक भरोसा, प्रशिक्षण और निवेश की आवश्यकता होती है।

3. टीम के सदस्यों को अपने अहंकार को किनारे रखकर काम करना पड़ता है।

4. विभिन्न हितधारकों की भूमिका स्पष्ट रखनी पड़ती है। इनमें पेशेवर, कर्मचारी, माता पिता और बच्चा सभी शामिल हैं। हितधारक वे लोग या समूह हैं जिन पर परियोजना के परिणाम का असर पड़ता है। यहां ये भी ध्यान रखें कि पार-विषयक उपागम की शुरुआत 1970 के दशक में अमेरिका में मस्तिष्क पक्षाघात वाले बच्चों के लिए हुई थी। बाद में इसे पुनर्वास केंद्रों और विशेषकर श्रवण बाधित बच्चों के लिए अपनाया गया क्योंकि उन्हें भाषा और संचार में विशेष सहायता की आवश्यकता होती है।

15.9.4 तीनों प्रकारों में अंतर (Comparison of the Three Types)

1. संचार के आधार पर (On the basis of Communication) बहुविषयक टीम में संचार बहुत कम या लगभग नहीं होता। हर विशेषज्ञ अपनी रिपोर्ट अलग देता है। अंतःविषयक टीम में नियमित बैठकें होती हैं और जानकारी को आपस में साझा किया जाता है। पार-विषयक टीम में संचार निरंतर और अनौपचारिक होता है। सदस्य हर समय एक दूसरे से सीखते और चर्चा करते रहते हैं।

2. योजना बनाने के आधार पर (On the basis of Planning) बहुविषयक में हर पेशेवर अलग योजना बनाता है। अंतःविषयक में सभी मिलकर एक संयुक्त योजना बनाते हैं जिसका लक्ष्य एक ही होता है। पार-विषयक में योजना एकीकृत

और लचीली होती है। इसे जरूरत के अनुसार बदला जा सकता है और सभी एक ही योजना पर काम करते हैं।

3. भूमिका के आधार पर (On the basis of Role) बहुविषयक में भूमिका कठोर और अलग अलग होती है। कोई दूसरे के काम में हस्तक्षेप नहीं करता। अंतःविषयक में भूमिकाएं अलग रहती हैं पर सभी को एक दूसरे के काम की जानकारी होती है। पार-विषयक में भूमिका लचीली और साझा होती है। यहां भूमिका रिहाई होती है यानी एक पेशेवर दूसरे को प्रशिक्षित करके उसकी भूमिका भी निभा सकता है।

4. माता पिता की भूमिका के आधार पर (On the basis of Parent's Role) बहुविषयक में माता पिता केवल सूचना प्राप्त करने वाले होते हैं। अंतःविषयक में माता पिता टीम के सक्रिय सदस्य होते हैं और निर्णय में भाग लेते हैं। पार-विषयक में माता पिता टीम लीडर या प्राथमिक प्रदाता बन जाते हैं। उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है और वे रोजमर्रा की सेवाएं देते हैं।

5. सेवा वितरण के आधार पर (On the basis of Service Delivery) बहुविषयक में सेवाएं खंडित रूप में मिलती हैं। हर सेवा अलग समय और स्थान पर। अंतःविषयक में सेवाएं समन्वित होती हैं। सभी एक साथ बैठकर तय करते हैं कि क्या करना है। पार-विषयक में सेवाएं एकीकृत होती हैं और सबसे प्राकृतिक वातावरण में मिलती हैं। एक ही व्यक्ति के माध्यम से कई सेवाएं मिल जाती हैं।

6. समय और प्रयास के आधार पर (On the basis of Time and Effort) बहुविषयक सबसे कम समय लेता है पर समन्वय कमजोर होता है। अंतःविषयक में मध्यम समय और प्रयास लगता है क्योंकि बैठकें और चर्चा जरूरी हैं। पार-विषयक में सबसे अधिक समय, प्रशिक्षण और भरोसे की जरूरत होती है।

7. प्रभावशीलता के आधार पर (On the basis of Effectiveness) बहुविषयक में मूल्यांकन जल्दी हो जाता है पर हस्तक्षेप टुकड़ों में बंटा रहता है। अंतःविषयक में निरंतरता और जुड़ाव बेहतर होता है। पार-विषयक सबसे

प्रभावी माना जाता है क्योंकि सेवाएं एकीकृत होती हैं, संसाधनों की बर्बादी नहीं होती और परिवार सबसे अधिक सशक्त होता है।

15.10 PwHI के संदर्भ में दल आधारित उपागम (टीम अप्रोच) का महत्व

श्रवण बधिरता सिर्फ़ कान की समस्या नहीं है। इसका प्रभाव बच्चे के जीवन के हर क्षेत्र पर पड़ता है। इसलिए टीम अप्रोच यहां और भी जरूरी हो जाता है।

1. भाषा विकास के लिए (Language Development) PwHI बच्चे को सबसे ज्यादा जरूरत भाषा की होती है। ऑडियोलॉजिस्ट यह सुनिश्चित करता है कि बच्चे को ध्वनि मिले। स्पीच थेरेपिस्ट उस ध्वनि को भाषा में बदलना सिखाता है। स्पेशल एजुकेटर उस भाषा का उपयोग पढ़ाई और संचार के लिए करवाता है। यदि कोई एक भी कड़ी टूट जाए, तो बच्चा भाषा से वंचित रह जाएगा।

2. प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention) 0-3 साल का समय भाषा सीखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। इस समय में ऑडियोलॉजिस्ट, ईआई स्पेशलिस्ट, माता-पिता और काउंसलर को एक साथ काम करना पड़ता है। पार-विषयक मॉडल यहां सबसे ज्यादा सफल है क्योंकि माता-पिता को ही घर पर थेरपिस्ट बनाया जाता है।

3. शैक्षणिक समावेशन (Academic Inclusion) स्कूल में बच्चे को केवल किताबें नहीं पढ़नी हैं। उसे साथियों से बात करनी है, शिक्षक के निर्देश सुनने हैं, और परीक्षा देनी है। इसके लिए स्पेशल एजुकेटर, सामान्य शिक्षक, स्पीच थेरेपिस्ट और ऑडियोलॉजिस्ट को मिलकर कक्षा में बैठने की व्यवस्था, FM सिस्टम, दृश्य सामग्री और मूल्यांकन में छूट जैसी सुविधाएं तय करनी होती हैं।

4. सामाजिक-भावनात्मक विकास (Social-Emotional Development) बहुत से PwHI बच्चे अकेलेपन, हीन भावना या चिड़चिड़ापन का शिकार होते हैं। इसका कारण भाषा का अभाव है। यहां मनोवैज्ञानिक, काउंसलर, स्पेशल एजुकेटर और परिवार को मिलकर बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ाना होता है। टीम के बिना यह काम अधूरा रहता है।

5. सहायक तकनीक और पुनर्वास (Assistive Technology and Rehabilitation) हियरिंग एड, कॉक्लियर इम्प्लांट, FM सिस्टम सिर्फ लगाना काफी नहीं है। उसके बाद उसकी मैपिंग, मेंटेनेंस, ऑडिटरी वेरबल थेरपी और स्कूल में उपयोग सिखाना पड़ता है। यह काम ऑडियोलॉजिस्ट, स्पीच थेरेपिस्ट, तकनीशियन और शिक्षक की टीम ही कर सकती है।

15.11 एक प्रभावी टीम के आवश्यक गुण (Essential Qualities of an Effective Team)

चाहे टीम कोई भी प्रकार की हो, उसकी सफलता कुछ गुणों पर निर्भर करती है:

1. आपसी सम्मान (Mutual Respect) हर सदस्य को दूसरे की विशेषज्ञता का सम्मान करना चाहिए। डॉक्टर, स्पेशल एजुकेटर और माता-पिता, सब बराबर महत्वपूर्ण हैं।

2. खुला संचार (Open Communication) टीम में अपनी बात रखने, सवाल पूछने और असहमति जताने का माहौल होना चाहिए। बिना डरे बोलना जरूरी है।

3. साझा दृष्टिकोण (Shared Vision) सबका एक ही सपना होना चाहिए: "बच्चे को आत्मनिर्भर बनाना"। यदि ऑडियोलॉजिस्ट का लक्ष्य सिर्फ डिवाइस बेचना होगा, तो टीम टूट जाएगी।

4. लचीलापन (Flexibility) कभी-कभी स्पेशल एजुकेटर को स्पीच थेरेपी का काम करना पड़े, या माता-पिता को आकलन करना पड़े। पार-विषयक टीम में यह लचीलापन बहुत जरूरी है।

5. नेतृत्व (Leadership) टीम को चलाने के लिए एक समन्वयक चाहिए। यह कोई भी हो सकता है, पर उसकी भूमिका स्पष्ट होनी चाहिए।

6. माता-पिता को केंद्र में रखना (Family-Centered Approach) माता-पिता टीम के 'सेवक' नहीं, बल्कि 'नेता' हैं। वे 24x7 बच्चे के साथ रहते हैं। उनकी चिंता, उनके लक्ष्य और उनकी संस्कृति को टीम में सबसे ऊपर रखना चाहिए।

15.12 भारत के संदर्भ में टीम अप्रोच की चुनौतियां एवं समाधान

1. समय का अभाव (Lack of Time) विशेषज्ञों के अलग-अलग शेड्यूल के कारण नियमित बैठक करना मुश्किल होता है।

2. संचार की कमी (Challenge: Poor Communication) टीम के सदस्य एक दूसरे के काम को नहीं समझ पाते जिससे गलतफहमी होती है।

3. भूमिका में अस्पष्टता (Challenge: Role Confusion) कौन क्या करेगा यह स्पष्ट न होने से काम दोहराव या छूट जाता है।

4. संसाधनों की कमी (Lack of Resources) छोटे शहरों और स्कूलों में विशेषज्ञ और उपकरण उपलब्ध नहीं होते।

5. परिवार की कम भागीदारी (Less Family Involvement) कई बार माता पिता को प्रक्रिया की जानकारी नहीं होती इसलिए वे सहयोग नहीं कर पाते।

6. पेशेवर अहंकार और समन्वय की कमी (Challenge: Professional Ego and Lack of Coordination) हर विशेषज्ञ अपने क्षेत्र को ही महत्वपूर्ण मानता है।

7. रिकॉर्ड और फॉलोअप का अभाव (Challenge: Lack of Record and Follow-up) सेवाओं का रिकॉर्ड न रखने से प्रगति मापना कठिन होता है।

8. विशेषज्ञों की कमी (Shortage of Professionals) हर जिले में ऑडियोलॉजिस्ट या स्पीच थेरेपिस्ट उपलब्ध नहीं हैं।

9. भौगोलिक दूरी (Geographical Distance) माता-पिता को अलग-अलग विशेषज्ञों के पास शहर-शहर भटकना पड़ता है।

10. जागरूकता की कमी (Lack of Awareness) बहुत से परिवारों को पता ही नहीं होता कि टीम क्या होती है। वे केवल एक डॉक्टर के चक्कर लगाते हैं।

11. आर्थिक बाधा Financial Barrier कई विशेषज्ञों को अलग-अलग फीस देना गरीब परिवारों के लिए मुश्किल है। समाधान (Solution) महीने में एक बार ऑनलाइन मीटिंग तय की जाए। व्हाट्सएप ग्रुप या गूगल फॉर्म से रिपोर्ट साझा की जाए।प्रत्येक बैठक में भूमिका स्पष्ट की जाए। सामान्य भाषा का प्रयोग हो और सभी को दूसरे क्षेत्र की बुनियादी जानकारी दी जाए।शुरुआत में ही प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी लिखित रूप में तय की जाए। एक केस कोऑर्डिनेटर नियुक्त किया जाए। सरकारी योजनाओं, NGO और टेली-हेल्थ सेवा का उपयोग किया जाए। पास के जिले के विशेषज्ञों से नेटवर्क बनाया जाए। माता पिता को टीम का सदस्य बनाकर प्रशिक्षित किया जाए। उन्हें सरल भाषा में बच्चे की प्रगति बताई जाए।पारस्परिक सम्मान और टीम भावना विकसित की जाए। साझा लक्ष्य तय करके काम किया जाए। बच्चे की एक फाइल बनाई जाए जिसमें सभी की रिपोर्ट और लक्ष्य लिखे हों। हर 3 महीने में समीक्षा की जाए। टेली-रिहैबिलिटेशन, ब्लॉक स्तर पर बहु-विशेषज्ञ क्लिनिक और माता-पिता प्रशिक्षण कार्यक्रम इन चुनौतियों का उत्तर हैं।

15.13 केस स्टडी: दल आधारित उपागम का (टीम अप्रोच) व्यावहारिक उदाहरण

बच्चा: आरव, 4 वर्ष, गहन संवेदी तंत्रिका श्रवण हानि 90 dB। समस्या: बोलता नहीं है, अकेला रहता है, माता-पिता परेशान। यदि बहुविषयक टीम होती तो: ऑडियोलॉजिस्ट CI की सलाह देता और चला जाता। स्पीच थेरेपिस्ट हफ्ते में 2 बार थेरपी देता। स्कूल कहता "बच्चा कुछ सुनता ही नहीं"। माता-पिता भ्रमित। परिणाम: धीमी प्रगति। अंतःविषयक टीम में क्या हुआ: सभी विशेषज्ञ मिले। एक IEP बना। लक्ष्य रखा गया: "1 साल में आरव 50 शब्द बोलेगा और स्कूल जाएगा।" सबने अपनी भूमिका तय की। प्रगति बेहतर हुई। पार-विषयक टीम में क्या हुआ

1. स्पीच थेरेपिस्ट ने माँ को रोज 1 घंटे 'ऑडिटरी वेरबल' तकनीक सिखाई।

2. ऑडियोलॉजिस्ट ने पिता को CI की मैपिंग और देखभाल सिखाई।

3. स्पेशल एजुकेटर ने आंगनवाड़ी टीचर को दृश्य सामग्री और संकेत भाषा के बुनियादी शब्द सिखाए।

4. मनोवैज्ञानिक ने पूरे परिवार को काउंसलिंग दी ताकि वे तनाव न लें। परिणाम आरव 6 महीने में CI के साथ ध्वनियों पर प्रतिक्रिया देने लगा। माँ उसकी प्राथमिक थेरपिस्ट बन गई। 1.5 साल में वह सामान्य स्कूल में गया। निष्कर्ष: पार-विषयक मॉडल ने परिवार को सशक्त बनाया और सबसे तेज प्रगति दी। अपनी उन्नति जानिए (Check Your Progress)

1. FM सिस्टम कौन सा विशेषज्ञ सुझाता है?

2. बहुविषयक टीम की 2 सीमाएं लिखिए।

3. 'भूमिका मुक्त' से आप क्या समझते हैं?

4. अंतःविषयक और पार-विषयक टीम में 2 मुख्य अंतर बताइए।

5. टीम अप्रोच PwHI के भाषा विकास में कैसे मदद करता है? रिक्त स्थान भरें

6. जिसमें विशेषज्ञ स्वतंत्र रूप से काम करते हैं उसे ..... टीम कहते हैं।

7. ..... टीम में 'भूमिका मुक्त' सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा है।

8. PwHI के लिए टीम में माता-पिता को ..... माना जाता है।

15.14 सारांश (Summary)

टीम अप्रोच यानी दल आधारित उपागम का अर्थ है विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों, परिवार और विद्यालय का मिलकर श्रवण बाधित बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करना। आज बच्चे की समस्या केवल एक क्षेत्र से नहीं जुड़ी होती। उसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, भाषा, व्यवहार और सामाजिक पक्ष सभी शामिल होते हैं। इसलिए अकेले एक विशेषज्ञ से सभी जरूरतों को पूरा करना संभव नहीं है। टीम अप्रोच की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि इससे सही समय पर समस्या की पहचान होती है, तुरंत हस्तक्षेप किया जा सकता है और संसाधनों का सही उपयोग होता है। टीम अप्रोच के तीन मुख्य प्रकार होते हैं। बहुविषयक टीम में सभी विशेषज्ञ स्वतंत्र रूप से काम करते हैं और अलग अलग रिपोर्ट देते हैं। इनके बीच संचार बहुत कम होता है और माता पिता को ही सभी सुझावों को जोड़ना पड़ता है। इसमें मूल्यांकन जल्दी हो जाता है पर सेवाएं खंडित रहती हैं। अंतर्विषयक टीम इससे आगे की अवस्था है। इसमें सभी विशेषज्ञ नियमित बैठक करके एक संयुक्त योजना बनाते हैं। संचार नियमित होता है और माता पिता टीम के सक्रिय सदस्य बनते हैं। इससे सेवाओं में निरंतरता और समन्वय आता है। पार-विषयक टीम सबसे उन्नत रूप है। इसमें पेशेवर अपनी सीमाओं को पार करके एक दूसरे को प्रशिक्षित करते हैं और जरूरत पड़ने पर एक दूसरे की भूमिका निभाते हैं। इसे भूमिका रिहाई कहा जाता है। इसमें एक प्राथमिक प्रदाता चुना जाता है जो परिवार से मुख्य संपर्क रखता है। सेवाएं एकीकृत और प्राकृतिक

वातावरण में मिलती हैं और माता पिता सबसे अधिक सशक्त होते हैं। एक प्रभावी टीम के कुछ विशेष गुण होते हैं। सभी सदस्य बच्चे के विकास के लिए एक साझा लक्ष्य पर काम करते हैं। टीम में खुला संचार होता है और हर सदस्य दूसरे के ज्ञान का सम्मान करता है। प्रत्येक की भूमिका पहले से स्पष्ट होती है और जरूरत के अनुसार लचीलापन भी रखा जाता है। इसमें परिवार को निर्णय प्रक्रिया में बराबर का स्थान मिलता है और समय पर टीम अपनी प्रगति का मूल्यांकन भी करती है। टीम अप्रोच का महत्व इस बात में है कि इससे बच्चे का समग्र मूल्यांकन संभव होता है। व्यक्तिगत योजना बनती है, परिवार सक्रिय रूप से जुड़ता है और सभी प्रकार की सूचना तथा संसाधन आसानी से उपलब्ध होते हैं। सेवाओं में दोहराव नहीं होता और निर्णय अधिक व्यावहारिक बनते हैं। अंत में टीम अप्रोच का मुख्य उद्देश्य बच्चे को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और समाज में सफल नागरिक बनाना है।

15.15 तकनीकी शब्दों की व्याख्या (Glossary of Technical Terms)

टीम अप्रोच Team Approach विभिन्न पेशेवरों का साझा लक्ष्य के लिए सहयोग। बहुविषयक Multidisciplinary अलग-अलग विशेषज्ञ, अलग-अलग रिपोर्ट। अंतःविषयक Interdisciplinary: मिलकर योजना बनाने वाली टीम। पार-विषयक Transdisciplinary भूमिकाएं साझा करने वाली टीम। भूमिका मुक्त Role Release: एक पेशेवर द्वारा दूसरे को प्रशिक्षण देना। IEP Individualized Education Programme, व्यक्तिगत शिक्षा योजना।

15.16 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer of Practice questions)

1. उत्तर ऑडियोलॉजिस्ट FM सिस्टम सुझाता है, फिट करता है और उसके इस्तेमाल व रखरखाव के बारे में बताता है।

2. उत्तर समन्वय में दिक्कत: अलग-अलग प्रोफेशनल्स के बीच तालमेल और समय मिलाना मुश्किल होता है। भूमिका में अस्पष्टता: कई बार टीम के सदस्यों की जिम्मेदारियां आपस में ओवरलैप हो जाती हैं।

3. उत्तर भूमिका मुक्त' का मतलब है Role Release इसमें टीम का हर सदस्य अपनी स्पेशल जानकारी और स्किल्स को बाकी टीम मेंबर्स के साथ शेयर करता है, ताकि बच्चा सभी से एक जैसा सपोर्ट पा सके।

4. उत्तर पहला अंतर: अंतःविषयक टीम में सभी विशेषज्ञ मिलकर योजना बनाते हैं पर अपना काम अलग करते हैं। पार-विषयक टीम में सदस्य एक-दूसरे की भूमिका भी निभाते हैं। दूसरा अंतर: अंतःविषयक टीम में संचार होता है, पर पार-विषयक टीम में भूमिका रिहाई होती है जिससे माता-पिता को प्रशिक्षण मिलता है।

5. उत्तर: टीम अप्रोच में स्पीच थेरेपिस्ट भाषा सिखाता है, ऑडियोलॉजिस्ट सुनने में मदद करता है और स्पेशल एजुकेटर स्कूल में भाषा का उपयोग कराता है। सभी एक ही लक्ष्य पर काम करते हैं इसलिए बच्चा तेजी से और निरंतर सीखता है। घर पर माता-पिता भी थेरपी करते हैं जिससे भाषा का अभ्यास रोज होता है

6. जिसमें विशेषज्ञ स्वतंत्र रूप से काम करते हैं उसे बहुविषयक टीम कहते हैं। कारण: Multidisciplinary Team में आपसी संचार कम होता है और सभी अलग-अलग रिपोर्ट देते हैं।

7. पार-विषयक टीम में भूमिका रिहाई सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा है। कारण: Transdisciplinary Team में एक विशेषज्ञ दूसरे सदस्य को अपना कौशल सिखाता है।

8. PwHI के लिए टीम में माता-पिता को प्राथमिक प्रदाता या टीम लीडर माना जाता है। कारण: क्योंकि बच्चा सबसे ज्यादा समय माता-पिता के साथ बिताता है, इसलिए वही मुख्य थेरपिस्ट बनते हैं।

9.17 संदर्भ References

Rehabilitation Council of India. M.Ed. Special Education Hearing Impairment Course Syllabus. RCI, New Delhi, 2023.

Ministry of Education, Govt. of India. National Education Policy 2020. MHRD, New Delhi, 2020.

World Health Organization. World Report on Hearing. WHO, Geneva, 2021.

Moeller, M. P. Early Intervention and Language Development in Children Who Are Deaf and Hard of Hearing. Pediatrics, 2000.

Meadow-Orlans, K. P., Spencer, P. E., and Koester, L. S. The World of Deaf Infants. Oxford University Press, 2004.

Luckner, J. L., and Cooke, C. Evidence-Based Practices for Students Who Are Deaf or Hard of Hearing. American Annals of the Deaf, 2010.

Sass-Lehrer, M. Early Intervention Approaches for Children Who Are Deaf or Hard of Hearing. Oxford University Press, 2011.

National Institute for the Empowerment of Persons with Hearing Disabilities. Manual for Parents. NIEPMD, 2015.

Govt. of India. Rights of Persons with Disabilities Act 2016. MSJE, 2016. American Speech-Language-Hearing Association. Roles of SLPs. ASHA, 2001.

UNESCO. Guidelines for Inclusion. UNESCO, Paris, 2005.

Yoshinaga-Itano, C. Universal Newborn Hearing Screening. Journal of Communication Disorders, 2003.

Allen, T. E., and Morere, D. A. Deaf Cognition. Oxford University Press, 2008.

Kumar, P. Inclusive Education for Children with Hearing Impairment. NCERT, 2019.

Singh, R. and Sharma, A. Transdisciplinary Model in Special Education. JIASE, 2022.

15.18 निबंधात्मक प्रश्न

1. टीम अप्रोच से आप क्या समझते हैं? इसकी आवश्यकता क्यों है?

2. टीम अप्रोच के प्रमुख लाभों को अपने शब्दों में समझाइए।

3. एक श्रवण बाधित बच्चे के उदाहरण द्वारा बहुविषयक टीम की कार्यप्रणाली को स्पष्ट कीजिए। 4. अंतर्विषयक टीम की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए और बताइए कि यह बहुविषयक टीम से किस प्रकार भिन्न है?

5.पार-विषयक टीम को टीम वर्क का सबसे उन्नत रूप क्यों माना जाता है? इसकी विशेषताओं और भूमिका रिहाई की अवधारणा को विस्तार से समझाइए।

6. बहुविषयक, अंतर्विषयक और पार-विषयक टीमों का मूल्यांकन कीजिए। आपके विचार में श्रवण बाधित बच्चों के लिए कौन सी टीम सबसे उपयुक्त है और क्यों?

7. एक प्रभावी टीम के गुणों को ध्यान में रखते हुए, एक आदर्श टीम अप्रोच मॉडल का सुझाव दीजिए जो भारतीय विद्यालयों में श्रवण बाधित बच्चों के लिए लागू किया जा सके।

इकाई 16:

अलग-अलग हितधारकों की भूमिका: पेशेवर, कर्मी, अभिभावक, बधिर मेंटर, सांकेतिक भाषा शिक्षक, दुभाषिया और श्रवण बाधित व्यक्ति। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए टीम का गठन: उम्र, गंभीरता और संबंधित स्थितियों पर

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 श्रवण बाधित पुनर्वास में पेशेवर हितधारक

16.3.1 श्रवण विशेषज्ञ (ऑडियोलॉजिस्ट)

16.3.2 विशेष शिक्षक (श्रवण बाधित)

16.3.3 वाक् एवं भाषा चिकित्सक (स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट)

16.3.4 अपनी प्रगति की जाँच करें

16.4 गैर-पेशेवर और विशेष हितधारक

16.4.1 अभिभावक या देखभाल करने वाला

16.4.2 बधिर मेंटर

16.4.3 सांकेतिक भाषा शिक्षक (साइन लैंग्वेज टीचर)

16.4.4 शैक्षिक दुभाषिया (एजुकेशनल इंटरप्रेटर)

16.4.5 श्रवण बाधित व्यक्ति की स्व-अधिवक्ता (सेल्फ़-एडवोकेसी)

16.4.6 अपनी प्रगति की जाँच करें

16.5 श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए टीम का गठन

16.5.1 प्रस्तावना

16.5.2 उद्देश्य

16.6 आयु के आधार पर टीम का गठन

16.6.1 शिशु और प्रीस्कूल बच्चे (0-6 वर्ष)

16.6.2 स्कूल-जाने की उम्र के बच्चे और किशोर (6–18 वर्ष)

16.6.3 वयस्क (18 वर्ष और उससे अधिक)

16.6.4 अपनी प्रगति की जाँच करें

16.7 गंभीरता और संबंधित स्थितियों के आधार पर टीम का गठन

16.7.1 श्रवण हानि की गंभीरता के आधार पर टीम का गठन

16.7.2 अतिरिक्त दिव्यांगताओं के आधार पर टीम का निर्माण

16.7.3 सीखने की अक्षमता, बहु-अक्षमताएँ, और टीम अनुकूलन के सिद्धांत

16.7.4 अपनी प्रगति की जाँच करें

16.8 सारांश

16.9 सामान्य / तकनीकी शब्दावली

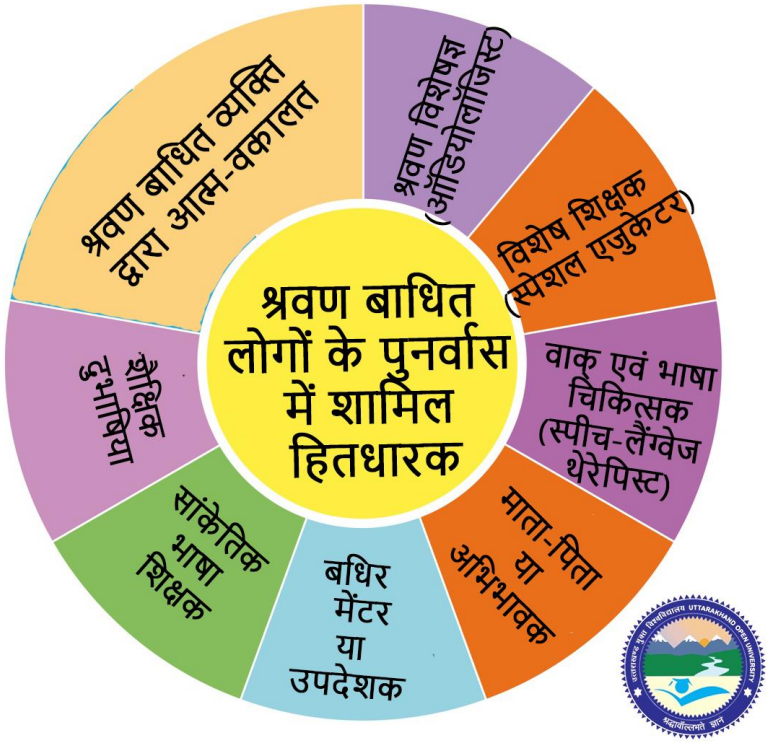
16.10 अपनी प्रगति की जाँच करने वाले प्रश्नों के उत्तर

16.11 निबंध वाले सवाल

16.1 प्रस्तावना

जब किसी बच्चे में श्रवण बाधा का पता चलता है, तो संचार और सीखने की यात्रा किसी एक व्यक्ति पर निर्भर नहीं करती है। इसमें प्रशिक्षित पेशेवरों, परिवार के सदस्यों और श्रवण बाधित व्यक्ति का एक नेटवर्क शामिल होता है। इस नेटवर्क में प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट भूमिका निभाता है। मिलकर, वे एक ऐसी टीम बनाते हैं जिसे बहु-विषयक टीम कहा जाता है।

आपने शायद देखा होगा कि सरकारी अस्पतालों या विशेष स्कूलों में, कई अलग-अलग प्रकार के पेशेवर एक ही बच्चे के साथ काम करते हैं। एक श्रवण विशेषज्ञ बच्चे की सुनने की क्षमता का परीक्षण करता है। एक डॉक्टर कान की जाँच करता है। एक शिक्षक पाठों को अनुकूलित करता है। एक अभिभावक घर पर गतिविधियाँ करता है। यह समन्वित प्रयास संयोगवश नहीं है। यह इस अच्छी तरह से स्थापित समझ को दर्शाता है कि श्रवण हानि किसी व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को प्रभावित करती है चिकित्सा, शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक और भाषाई।



भारत में, इस आवश्यकता का पैमाना महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय विकलांगता डेटा के अनुसार, बड़ी संख्या में बच्चे और वयस्क विभिन्न स्तरों की श्रवण हानि के साथ जीते हैं। विकलांग व्यक्तियों के अधिकार (RPWD) अधिनियम, 2016 श्रवण हानि को एक ऐसी विकलांगता के रूप में मान्यता देता है जिसके लिए संरचित सहायता की आवश्यकता होती है। भारत पुनर्वास परिषद (RCI) पुनर्वास पेशेवरों के प्रशिक्षण और पंजीकरण को विनियमित करती है। अली यावर जंग राष्ट्रीय वाक् एवं श्रवण विकलांगता संस्थान (AYJNISHD) और अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान (AIISH) जैसी राष्ट्रीय संस्थाएँ इस क्षेत्र के लिए नैदानिक और शैक्षिक मानक विकसित करती हैं।

यह इकाई आपको श्रवण बाधित व्यक्तियों का समर्थन करने में शामिल प्रमुख हितधारकों से परिचित कराती है। स्टेकहोल्डर शब्द से तात्पर्य किसी भी व्यक्ति,

पेशेवर या समूह से है जिसकी श्रवण बाधित व्यक्ति की पहचान, मूल्यांकन, हस्तक्षेप, शिक्षा या पुनर्वास में प्रत्यक्ष भूमिका या जिम्मेदारी होती है। इन भूमिकाओं को समझने से आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि प्रत्येक योगदान दूसरे से कैसे जुड़ता है। यह आपको सहयोग, परिवार की भागीदारी, और श्रवण बाधित व्यक्ति की अपनी पुनर्वास प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका के महत्व को पहचानने में भी मदद करेगा।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे:

1. श्रवण हानि पुनर्वास के संदर्भ में 'हितधारक' शब्द की व्याख्या करना।
2. पहचान, मूल्यांकन और हस्तक्षेप प्रक्रिया में एक श्रवण-विशेषज्ञ (ऑडियोलॉजिस्ट) और एक विशेष शिक्षक की व्यावसायिक भूमिकाओं की पहचान करना।
3. प्रारंभिक हस्तक्षेप में प्राथमिक प्राकृतिक हस्तक्षेपकर्ता के रूप में माता-पिता या देखभाल करने वाले की भूमिका का वर्णन करना।
4. बधिर मार्गदर्शक के पारिवारिक समर्थन और सांस्कृतिक मार्गदर्शन में अद्वितीय योगदान की व्याख्या करें।
5. भाषा में दक्षता विकसित करने में सांकेतिक भाषा शिक्षक के कार्यों का वर्णन करें।
6. कक्षा में सीखने तक समान पहुँच सुनिश्चित करने में शैक्षिक दुभाषिए की भूमिका पर चर्चा करें।
7. श्रवण बाधित व्यक्ति के आत्म-वकील के रूप में अधिकारों और जिम्मेदारियों की पहचान करें।

8. कई हितधारकों की भूमिकाओं की तुलना करें और समझाएं कि उनकी सहयोगात्मक कार्यप्रणाली कैसे व्यापक पुनर्वास का समर्थन करती है।

16.3 श्रवण बाधित पुनर्वास में पेशेवर हितधारक

श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ काम करने वाली एक बहु-विषयक टीम में स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और पुनर्वास के पेशेवर शामिल होते हैं। प्रत्येक पेशेवर का अभ्यास का एक परिभाषित दायरा होता है। आइए, इस टीम के पहले तीन पेशेवर हितधारकों पर नज़र डालें।

16.3.1 श्रवण विशेषज्ञ (ऑडियोलॉजिस्ट)

निम्नलिखित स्थिति के बारे में सोचें: एक नवजात शिशु अपने कान के पास ज़ोर से ताली बजाने पर प्रतिक्रिया नहीं देता है। एक नर्स या डॉक्टर इस बच्चे को किसके पास भेजेंगे? इसका जवाब है एक श्रवण विशेषज्ञ। एक श्रवण विशेषज्ञ एक स्वास्थ्य सेवा और पुनर्वास पेशेवर है। वे सुनने और संतुलन से संबंधित विकारों वाले व्यक्तियों के मूल्यांकन, निदान और गैर-चिकित्सीय प्रबंधन में विशेषज्ञ होते हैं (ASHA, 2018)।

पहचान में भूमिका

श्रवण हानि का शीघ्र पता लगाने में श्रवण विशेषज्ञ की प्राथमिक भूमिका होती है। वे दो प्रमुख परीक्षणों का उपयोग करके सार्वभौमिक नवजात शिशु श्रवण स्क्रीनिंग (UNHS) करते हैं। पहला है ट्रांज़िएंट इवोक्ड ओटोएक्स्टिक इमिशन (TEOAE) टेस्ट, जो आंतरिक कान द्वारा स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होने वाली

ध्वनियों को मापता है। दूसरा है ऑटोमेटेड ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स (ABR) टेस्ट, जो यह मापता है कि मस्तिष्क ध्वनि के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करता है। ये परीक्षण सो रहे नवजातों पर भी किए जा सकते हैं और पूरी तरह से सुरक्षित हैं। जब कोई बच्चा प्रारंभिक जांच में असफल हो जाता है, तो श्रवण विशेषज्ञ श्रवण हानि की डिग्री और प्रकार की पुष्टि करने के लिए एक पूर्ण नैदानिक मूल्यांकन करता है। वे सामुदायिक और ग्रामीण क्षेत्रों में श्रवण जांच शिविरों का भी प्रबंधन करते हैं।

मूल्यांकन में भूमिका

श्रवण विशेषज्ञ श्रवण हानि के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं का निर्धारण करता है: इसका प्रकार (कंडक्टिव, सेंसोरिन्यूरल, या मिश्रित), इसकी डिग्री (हल्की से गहरी), और इसकी विन्यास (विभिन्न ध्वनि आवृत्तियों पर श्रवण हानि का पैटर्न)। इस उद्देश्य के लिए वे विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का उपयोग करते हैं, जिसमें प्योर टोन ऑडियोमेट्री (पीटीए), शिशुओं के लिए विज़ुअल रिइन्फोर्समेंट ऑडियोमेट्री (वीआरए), छोटे बच्चों के लिए कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री (सीपीए), और मध्य कान के कार्य का आकलन करने के लिए इम्पेडेंस ऑडियोमेट्री शामिल हैं।

हस्तक्षेप और पुनर्वास में भूमिका

मूल्यांकन के परिणामों के आधार पर, श्रवण विशेषज्ञ उपयुक्त एम्पलीफिकेशन तकनीक का चयन करते हैं, जैसे कि श्रवण यंत्र या कोक्लियर इम्प्लांट। वे डिवाइस को फिट करते हैं, रियल-ईयर मेजरमेंट (REM) का उपयोग करके इसके प्रदर्शन को सत्यापित करते हैं, और समय के साथ बच्चे की प्रगति की निगरानी करते हैं। वे यह सुनिश्चित करने के लिए NAL-NL2 और DSL v5.0

जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रिस्क्रिप्टिव फ़ार्मुलों का उपयोग करते हैं कि डिवाइस प्रत्येक आवृत्ति पर सही मात्रा में ध्वनि प्रदान करे।

पारिवारिक सहयोग और शिक्षा में भूमिका

श्रवण-विशेषज्ञ माता-पिता को स्पष्ट, सरल भाषा में ऑडियोग्राम के परिणाम समझाते हैं। वे निदान के बाद के भावनात्मक दौर में परिवारों को परामर्श देते हैं। वे कक्षा के शिक्षकों को कमरे की ध्वनि-प्रणाली और सहायक श्रवण प्रौद्योगिकियों पर भी सलाह देते हैं जो शैक्षिक परिवेश में सिग्नल-टू-नॉइज़ अनुपात (SNR) में सुधार करती हैं।

इस स्तर पर, आपको यह समझना चाहिए कि श्रवण हानि की पहचान और प्रबंधन में श्रवण विशेषज्ञ (ऑडियोलॉजिस्ट) पेशेवर संपर्क का पहला बिंदु है।

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ

भारत में, श्रवण विशेषज्ञ आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम 2016 के ढांचे के भीतर काम करते हैं और आरसीआई के तहत पंजीकृत हैं। AIISH और AYJNISHD



जैसे संस्थानों द्वारा संस्थागत दिशानिर्देश प्रदान किए जाते हैं।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, श्रवण विशेषज्ञ संयुक्त शिशु श्रवण समिति (Joint Committee on Infant Hearing) या. जे. सी. आई. एच. (JCIH) की 1-3-6 समय-सीमा का पालन करते हैं, जो एक महीने के भीतर स्क्रीनिंग, तीन महीने के भीतर नैदानिक पुष्टि, और छह महीने की आयु तक प्रारंभिक हस्तक्षेप में नामांकन की सिफारिश करती है। इस स्तर पर, आपको यह समझना चाहिए कि सुनने की क्षमता में कमी की पहचान और प्रबंधन में श्रवण विशेषज्ञ पेशेवर संपर्क का पहला बिंदु है।

16.3.2 विशेष शिक्षक (श्रवण बाधित)

हो सकता है कि आप ऐसे शिक्षक के बारे में जानते हों जो खास तौर पर दिव्यांग बच्चों के साथ काम करते हैं। श्रवण बाधित के लिए एक विशेष शिक्षक एक ऐसा ही पेशेवर होता है। एक विशेष शिक्षक एक प्रमाणित पेशेवर है जिसे शिक्षाशास्त्र, संचार विधियों और अनुकूलित पाठ्यक्रम रणनीतियों में प्रशिक्षित किया गया है। उनका प्राथमिक लक्ष्य किसी बच्चे के शैक्षणिक, सामाजिक और कार्यात्मक विकास पर सुनने में कमी के प्रभाव को कम करना है।

पहचान और मूल्यांकन में भूमिका

विशेष शिक्षक शैक्षिक परिवेश में बच्चों में अनिर्धारित या प्रगतिशील सुनने की कठिनाइयों के लक्षणों पर नज़र रखते हैं। वे भाषा, साक्षरता, या सामाजिक विकास में देरी की पहचान करने के लिए व्यवहार संबंधी चेकलिस्ट और

कार्यात्मक स्क्रीनिंग उपकरणों का उपयोग करते हैं। वे यह समझने के लिए कार्यात्मक शैक्षिक मूल्यांकन भी करते हैं कि कोई बच्चा सीखने की सामग्री का इस्तेमाल कैसे करता है, उसका शब्दावली स्तर क्या है, और वह भाषा को कितनी अच्छी तरह समझता और उपयोग करता है।

हस्तक्षेप योजना और शैक्षिक सहायता में भूमिका

विशेष शिक्षक श्रवण संबंधी और मनोवैज्ञानिक डेटा को व्यावहारिक कक्षा के लक्ष्यों में बदलते हैं। वे व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEPs) डिजाइन और कार्यान्वित करते हैं ये संरचित दस्तावेज़ हैं जो एक छात्र के वर्तमान प्रदर्शन स्तर, वार्षिक सीखने के लक्ष्यों, आवश्यक सुविधाओं और सहायता सेवाओं को निर्दिष्ट करते हैं। IEP के भीतर लक्ष्य SMART ढांचे का पालन करते हैं: विशिष्ट, मापनीय, प्राप्त करने योग्य, यथार्थवादी और समय-बद्ध।

कक्षा में, विशेष शिक्षक अनुकूलित रणनीतियों की एक श्रृंखला का उपयोग करते हैं। इनमें दृश्य संकेत, अर्थ-आधारित मानचित्रण, ग्राफिक आयोजक, संशोधित बैठने की व्यवस्था, और अनुकूलित पाठ्यपुस्तकें शामिल हैं। वे सार्वभौमिक डिजाइन फॉर लर्निंग (UDL) ढांचे के भीतर काम करते हैं, जो बाद में अनुकूलित करने के बजाय शुरू से ही पाठों में सुलभता का निर्माण करता है।

संचार और पारिवारिक सहायता में भूमिका

विशेष शिक्षक बच्चे के चुने हुए संचार के तरीके का समर्थन करते हैं, चाहे वह श्रव्य-मौखिक चिकित्सा (एवीटी), कुल संचार, भारतीय सांकेतिक भाषा

(आईएसएल), या कोई अन्य प्रणाली हो। वे माता-पिता को घर पर प्रशिक्षण के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं, और उन्हें दैनिक दिनचर्या के दौरान भाषा संवर्धन रणनीतियों पर प्रशिक्षण देते हैं।

आइए एक व्यावहारिक स्थिति का विश्लेषण करें: एक विशेष शिक्षक एक समावेशी तीसरी कक्षा में श्रवण बाधित छात्र को ध्वन्यात्मक जागरूकता में संघर्ष करते हुए देखता है। वे विज़ुअल फोनिक्स और स्पर्श प्रतिक्रिया चार्ट पेश करते हैं। यह बच्चे को एक दृश्य दृष्टिकोण के माध्यम से भाषण ध्वनियों और लिखे हुए अक्षरों के बीच संबंध को समझने में मदद करता है। यह शिक्षार्थी की संवेदी शक्तियों के अनुसार निर्देश को अनुकूलित करने का एक उदाहरण है।

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ

भारत में, विशेष शिक्षक आर. सी. आई (RCI) अधिनियम, 1992 के तहत पंजीकृत हैं। वे समावेशी शिक्षा के लिए एन. ई. पी (NEP) 2020 के जनादेश के अनुरूप काम करते हैं और आई. एस. एल. आर. टी. सी. (ISLRTC) द्वारा विकसित शिक्षण संसाधनों का उपयोग करते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, उनका अभ्यास संयुक्त राज्य अमेरिका में व्यक्तियों को विकलांगता शिक्षा अधिनियम (Individuals with Disabilities Education Act) या आई. डी. ई. ए. (IDEA) और समावेशी शिक्षा पर यूनेस्को सलामांका घोषणा पत्र के अनुरूप है।

आइए एक व्यावहारिक स्थिति का विश्लेषण करें: एक विशेष शिक्षक एक समावेशी तीसरी कक्षा में श्रवण बाधित एक छात्र को ध्वन्यात्मक जागरूकता में संघर्ष करते हुए देखता है। वे दृश्य ध्वन्यात्मकता और स्पर्श प्रतिक्रिया चार्ट पेश करते हैं। यह बच्चे को एक दृश्य दृष्टिकोण के माध्यम से भाषण ध्वनियों और लिखे

हुए अक्षरों के बीच संबंध को समझने में सक्षम बनाता है। यह शिक्षार्थी की संवेदी शक्तियों के अनुसार निर्देश को अनुकूलित करने का एक उदाहरण है।

विशेष शिक्षक की भूमिकाएं



प्रारंभिक जांच और IEPs: कार्यात्मक मूल्यांकन करना और अनुकूलित व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) तैयार करना।



संचार के माध्यम: सांकेतिक भाषा, श्रवण-मौखिक चिकित्सा और ओष्ठ-पठन (स्पीच-रीडिंग) जैसे विशेष तरीकों को सिखाना।





तकनीक और ध्वनि विज्ञान: हियरिंग एड, FM सिस्टम और कक्षा की ध्वनि-व्यवस्था जैसे सहायक उपकरणों का प्रबंधन करना।



दृश्य TLM का निर्माण: आकर्षक और स्पर्श-आधारित शिक्षण सामग्री तैयार करना।



परिवार और समुदाय सशक्तिकरण: अभिभावक परामर्श, घरेलू प्रशिक्षण रणनीतियाँ,और सामुदायिक समावेशन जागरूकता प्रदान करना।

16.3.3 वाक् एवं भाषा चिकित्सक (स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट - SLP)

अब आप देख सकते हैं कि एक बार बच्चे की सुनने की क्षमता का आकलन हो जाने और एक शैक्षिक योजना तैयार हो जाने के बाद, मौखिक संचार का विकास एक महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु बन जाता है। यह वह जगह है जहाँ स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट (SLP) एक केंद्रीय भूमिका निभाता है।

एक SLP एक प्रमाणित पुनर्वास पेशेवर है जो वाक्, भाषा, स्वर और संचार विकारों के आकलन और उपचार में विशेषज्ञ होता है।

पहचान और मूल्यांकन में भूमिका

SLP बच्चों में वाक् या भाषा में देरी के लिए स्क्रीनिंग करते हैं, जो किसी अंतर्निहित विकार का संकेत दे सकती है। वे मानकीकृत उपकरणों का उपयोग करके ग्रहणशील भाषा (भाषा की समझ) और अभिव्यक्ति भाषा (भाषा का उपयोग) का मूल्यांकन करते हैं। वे भाषण ध्वनि त्रुटियों, आवाज़ की गुणवत्ता, लय और व्यावहारिक संचार कौशल का विश्लेषण करते हैं यानी, कोई बच्चा सामाजिक परिस्थितियों में भाषा का उपयोग कैसे करता है।

हस्तक्षेप और पुनर्वास में भूमिका

वाक् एवं भाषा चिकित्सक IEPs और IFSPs के लिए अनुकूलित वाक्-भाषा चिकित्सा लक्ष्य तैयार करता है। श्रवण यंत्र या कोक्लियर इम्प्लांट का उपयोग करने वाले बच्चों के लिए, SLP श्रवण-मौखिक चिकित्सा (AVT) प्रदान कर सकता है यह एक संरचित दृष्टिकोण है जो बच्चे को होंठ-पठन या सांकेतिक भाषा पर निर्भर हुए बिना, सुनकर बोली जाने वाली भाषा विकसित करना सिखाता है। SLP ध्वनिक हाइलाइटिंग जैसी तकनीकों का उपयोग करता है, जहाँ पिच,

वॉल्यूम या गति में बदलाव बच्चे को विशिष्ट लक्षित ध्वनियों की पहचान करने में मदद करते हैं।

सहयोग और परिवार की भूमिका

शैक्षणिक योजना में सहायता के लिए SLP विशेष शिक्षकों के साथ भाषा विकास के आंकड़ों को साझा करता है। जब भाषण त्रुटियों से पता चलता है कि किसी श्रवण यंत्र को फिर से प्रोग्राम करने की आवश्यकता हो सकती है, तो वे ऑडियोलॉजिस्ट के साथ समन्वय करते हैं। वे माता-पिता को भोजन के समय और खेलने जैसी दैनिक घरेलू गतिविधियों में भाषा उत्तेजना को शामिल करने का प्रशिक्षण भी देते हैं।

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ

भारत में, एसएलपी (SLPs) आर.सी.आई अधिनियम, 1992 के तहत पंजीकृत होते हैं और ए.वाई.जे.एन.आई.एस.एच.डी (AYJNISHD) और ए.आई.आई.एस.एच. (AIISH) द्वारा विकसित संसाधनों का उपयोग करते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, वे अमेरिकन स्पीच-लैंग्वेज-हियरिंग एसोसिएशन (ASHA) के पेशेवर दिशानिर्देशों का पालन करते हैं। आर.सी.आई (RCI) की सिफारिश है कि हाल ही में सुनने की मशीन लगवाने वाले बच्चों को शुरुआती विकासात्मक चरणों के दौरान प्रति सप्ताह कम से कम दो संरचित थेरेपी सत्र प्राप्त हों।

स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट की भूमिकाएँ



क्लिनिकल मूल्यांकन और निदान:
सभी उम्र के लोगों में बोलने, भाषा, आवाज, प्रवाह और निगलने की समस्याओं का आकलन करना



वाणी और उच्चारण चिकित्सा:
उच्चारण, स्पष्टता और बोलने की मांसपेशियों के कौशल को सुधारने के लिए विशेष उपचार योजनाएं बनाना





भाषा और साक्षरता का विकास:
सुनने-समझने और बोलने की क्षमता में सुधार, शब्दकोश बढ़ाना, और सामाजिक संवाद कौशल।



AAC और सहायक तकनीक:
बोल न पाने वाले लोगों के लिए AAC डिवाइस और हाई-टेक कम्युनिकेशन ऐप्स का उपयोग करना।



निगलने में कठिनाई और खाने-पीने में मदद:
सुरक्षित, कुशल भोजन और पोषण सुनिश्चित करने के लिए निगलने की कठिनाइयों का आकलन और प्रबंधन



पारिवारिक प्रशिक्षण और समर्थन:
देखभाल करने वालों के लिए परामर्श, घर पर अभ्यास के तरीके, और संचार विकारों के प्रति जागरूकता

16.3.4 अपनी प्रगति की जाँच करें

1. नवजात शिशुओं की श्रवण जांच के दौरान ऑडियोलॉजिस्ट किन दो प्रमुख परीक्षणों का उपयोग करते हैं? संक्षेप में बताएं कि प्रत्येक परीक्षण क्या मापता है।
2. JCIH 1-3-6 समयरेखा की व्याख्या करें। श्रवण हानि वाले बच्चे के लिए शीघ्र पहचान क्यों महत्वपूर्ण है?
3. व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) क्या है? किसी भी तीन घटकों का वर्णन करें जिन्हें एक सुव्यवस्थित IEP में शामिल होना चाहिए।
4. एक विशेष शिक्षक और एक स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट दोनों श्रवण हानि वाले बच्चे के साथ काम करते हैं। उनकी भूमिकाएँ कैसे भिन्न होती हैं? वे किन-किन तरीकों से सहयोग करते हैं?
5. ऑडिटरी-वर्बल थेरेपी (AVT) क्या है? एक ऐसी स्थिति की पहचान करें जिसमें AVT एक उपयुक्त हस्तक्षेप विकल्प होगा।

(उत्तर अनुभाग 16.10 में दिए गए हैं)

16.4 गैर-पेशेवर और विशेष हितधारक

अब तक, आपने श्रवण बाधित व्यक्तियों के पुनर्वास में तीन नैदानिक और शैक्षणिक पेशेवरों की भूमिकाओं का अध्ययन किया है। हालाँकि, प्रभावी पुनर्वास केवल पेशेवरों पर निर्भर नहीं करता है। कई अन्य हितधारक कुछ विशेष भूमिकाओं में प्रशिक्षित और कुछ गैर-पेशेवर इस प्रक्रिया के लिए समान रूप से आवश्यक हैं।

इस खंड में, आप चार और हितधारकों का अध्ययन करेंगे: अभिभावक या देखभाल करने वाला, बधिर मार्गदर्शक, सांकेतिक भाषा शिक्षक, और शैक्षिक दुभाषिया। आप संपूर्ण पुनर्वास प्रक्रिया में केंद्रीय हितधारक के रूप में श्रवण बाधित व्यक्ति की भूमिका का भी अध्ययन करेंगे।

16.4.1 अभिभावक या देखभाल करने वाला

निम्नलिखित स्थिति के बारे में सोचें: एक पेशेवर एक बच्चे को सप्ताह में दो बार, एक घंटे के लिए क्लिनिक में देखता है। एक अभिभावक हर दिन, हर घंटे उस बच्चे के साथ रहता है। बच्चे के भाषा विकास में सहायता करने का अधिक अवसर किसे मिलता है? जवाब स्पष्ट है।

माता-पिता या प्राथमिक देखभालकर्ता बच्चे के पुनर्वास में सबसे निरंतर और मौलिक हितधारक होते हैं। वे बच्चे के विकास के लिए कानूनी, भावनात्मक और वित्तीय जिम्मेदारी रखते हैं। प्रारंभिक हस्तक्षेप के क्षेत्र में, माता-पिता को केवल पेशेवर सेवाओं के समर्थक के रूप में ही नहीं, बल्कि प्राथमिक हस्तक्षेपकर्ता के रूप में भी पहचाना जाता है।

पहचान में भूमिका

अक्सर माता-पिता ही सबसे पहले यह ध्यान देते हैं कि उनके बच्चे की ध्वनि के प्रति प्रतिक्रियाओं में कुछ अलग है। एक माँ यह देख सकती है कि उसका शिशु तेज़ आवाज़ से चौंकता नहीं है। एक पिता यह देख सकता है कि उसका छोटा बच्चा कमरे के दूसरी तरफ से आने वाली किसी परिचित आवाज़ की ओर मुड़ता नहीं है। व्यवहार के ये शुरुआती अवलोकन, जब सावधानीपूर्वक नोट किए जाते

हैं और किसी बाल रोग विशेषज्ञ को बताए जाते हैं, तो वे समय पर श्रवण संबंधी रेफरल कर सकते हैं। इसलिए, पहचान प्रक्रिया में माता-पिता द्वारा प्रारंभिक रिपोर्टिंग एक महत्वपूर्ण कदम है।

मूल्यांकन और हस्तक्षेप योजना में भूमिका

नैदानिक मूल्यांकन के दौरान, माता-पिता व्यापक विकासात्मक इतिहास प्रदान करते हैं। वे कार्यात्मक प्रदर्शन सूची और संचार लॉग भरते हैं जो घरेलू परिवेश में बच्चे के व्यवहार का वर्णन करते हैं। यह जानकारी मूल्यवान है क्योंकि पेशेवर केवल संक्षिप्त नैदानिक मुलाकातों के दौरान ही बच्चे का अवलोकन कर सकते हैं।

माता-पिता व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजना (IFSP) के निर्माण में भी सीधे भाग लेते हैं यह तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए उपयोग किया जाने वाला एक दस्तावेज़ है जो परिवार के लक्ष्यों, सांस्कृतिक प्राथमिकताओं, आर्थिक बाधाओं और पसंदीदा संचार दृष्टिकोण की पहचान करता है। IFSP शुरुआती हस्तक्षेप के लिए परिवार को मुख्य आधार मानता है।

संचार और पुनर्वास में भूमिका

माता-पिता बच्चे के प्राथमिक संवादात्मक साथी के रूप में कार्य करते हैं। भाषा की कमी को रोकने के लिए चुनी गई संचार रणनीति बोली जाने वाली भाषा, सांकेतिक भाषा, या उनका संयोजन का लगातार दैनिक उपयोग आवश्यक है। भाषा वंचना का अर्थ है वह गंभीर विकासात्मक क्षति जो तब होती है जब किसी बच्चे को मस्तिष्क के विकास के महत्वपूर्ण शुरुआती वर्षों के दौरान कोई सुलभ भाषा नहीं मिलती है।

माता-पिता श्रवण यंत्रों के दैनिक उपयोग और रखरखाव का भी प्रबंधन करते हैं। वे हर सुबह यह जांचते हैं कि श्रवण यंत्र ठीक से काम कर रहे हैं, बैटरियों को बदलते हैं, और एस. एल. पी या विशेष शिक्षक द्वारा दी गई घर पर आधारित श्रवण और भाषा उत्तेजना अभ्यास करते हैं।

चुनौतियाँ और सहायता

निदान के बाद, कई माता-पिता शोक, सदमे और चिंता का अनुभव करते हैं। ये भावनात्मक प्रतिक्रियाएं स्वाभाविक हैं और उन्हें स्वीकार किया जाना चाहिए। डिवाइस के रखरखाव और बार-बार क्लिनिक जाने से जुड़ी आर्थिक और अधिक दबाव डालती है। भारत में, परिवार आयुष्मान भारत और ADIP योजना जैसी योजनाओं के माध्यम से सब्सिडी वाले उपकरणों और कोक्लियर इम्प्लांट सर्जरी के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त, परिवार-केंद्रित प्रारंभिक हस्तक्षेप (FCEI) मॉडल, सभी हस्तक्षेप निर्णयों में परिवार को केंद्र में रखता है। यह मॉडल पूरी तरह से नैदानिक दृष्टिकोण के बजाय परिवार सशक्तिकरण पर जोर देता है।

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ

RPWD अधिनियम 2016 के तहत, माता-पिता को अपने बच्चे के लिए उचित स्कूल प्रवेश और परीक्षा संबंधी रियायतें मांगने का कानूनी अधिकार है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय सिफारिश करता है कि माता-पिता के प्रशिक्षण कार्यक्रम श्रवण दोष का निदान होने के दिन से ही शुरू होने चाहिए, न कि प्रतीक्षा अवधि के बाद।

अभिभावकों की भूमिकाएँ



बच्चे के प्राथमिक, दैनिक प्राकृतिक हस्तक्षेपकर्ता और आजीवन समर्थक के रूप में कार्य करना



पहचान: सुनने में अंतर के शुरुआती व्यवहारिक संकेतों को पहचानना और डॉक्टरों को बताना।



आकलन और योजना: सुधारात्मक योजना बनाने में मदद के लिए परिवार के इतिहास की ज़रूरी जानकारी देना।

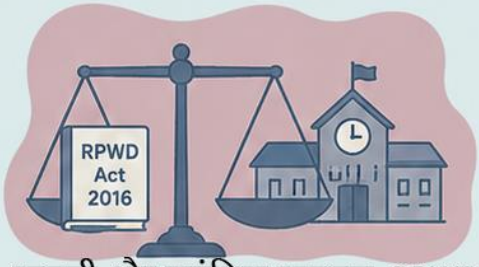




संचार और पुनर्वास: सुनने की मशीनों का दैनिक प्रबंधन और भाषा में देरी को रोकने के लिए निरंतर बातचीत का अभ्यास करना।



चुनौतियां और सहायता: ADIP और आयुष्मान भारत जैसी सरकारी मदद का इस्तेमाल करके भावनात्मक और आर्थिक बाधाओं से निपटना।



कानूनी और प्रारंभिक वकालत: RPWD अधिनियम 2016 के तहत कानूनी अधिकारों का प्रयोग करते हुए, पहले ही दिन से तत्काल शैक्षिक सहायता प्राप्त करना।

16.4.2 बधिर मेंटर

आपने देखा होगा कि बधिर बच्चों के सुनने में सक्षम माता-पिता अक्सर सांकेतिक भाषा, बधिर संस्कृति और अपने बच्चे के भविष्य को लेकर अनिश्चित महसूस करते हैं। दो खास तरह के लोग बधिर मेंटर और सांकेतिक भाषा शिक्षक इन ज़रूरतों को अलग-अलग तरीकों से पूरा करते हैं।

बधिर मेंटर

बधिर मेंटर एक ऐसा बधिर या कम सुनने वाला वयस्क होता है जिसे सुनने की अक्षमता वाले बच्चों के परिवारों को घर या समुदाय में सहायता, भाषाई मॉडलिंग और सांस्कृतिक मार्गदर्शन देने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है (वाटकिंस और अन्य, 1998)।

बधिर मेंटर कुछ ऐसा लेकर आते हैं जो कोई भी सुनने में सक्षम पेशेवर नहीं दे सकता एक बधिर व्यक्ति के तौर पर बड़े होने और जीने का वास्तविक अनुभव। यह नज़रिया बहरेपन को ठीक की जाने वाली मेडिकल समस्या के बजाय एक ऐसी भाषाई और सांस्कृतिक पहचान के रूप में देखने में मदद करता है जिसका सम्मान किया जाना चाहिए।

परिवार की सहायता और बातचीत में भूमिका

बधिर मेंटर परिवार से उनके घर पर मिलते हैं। वे स्वाभाविक और धाराप्रवाह दृश्य बातचीत (विज़ुअल कम्युनिकेशन) का उदाहरण पेश करते हैं जिसमें चेहरे के सही हाव-भाव, शारीरिक भाषा और स्थानिक ट्रैकिंग (spatial tracking) शामिल हैं। वे माता-पिता को व्यावहारिक तकनीकें सिखाते हैं, जैसे 'विज़ुअल

अटेंशन-गेटिंग' (दृश्य ध्यान आकर्षित करना), जिसमें संकेत शुरू करने से पहले नज़रें मिलाकर बातचीत करने के लिए हाथ हिलाना या हल्का थपथपाना शामिल है। वे परिवारों को बधिर संस्कृति, इतिहास और सामुदायिक संसाधनों से परिचित कराते हैं।

जो माता-पिता सुन सकते हैं और शायद पहले कभी किसी बधिर वयस्क से नहीं मिले हैं, उनके लिए ये मुलाकातें जीवन बदलने वाली हो सकती हैं। एक बधिर मेंटर यह दिखा सकता है कि कैसे एक बधिर व्यक्ति उच्च शिक्षा, रोज़गार और स्वतंत्र जीवन को संभालता है जिससे बच्चे के भविष्य को लेकर माता-पिता की चिंता सीधे तौर पर कम होती है।

पहचान और हस्तक्षेप में भूमिका

घर पर मुलाकातों के दौरान, बधिर मेंटर बच्चे में भाषा की कमी या मनोवैज्ञानिक परेशानी के संकेतों की पहचान करते हैं। वे यह पता लगाते हैं कि क्या परिवार का घरेलू माहौल देखने-समझने के लिहाज़ से सुलभ है और क्या बातचीत में कोई बाधा है। वे सांस्कृतिक बदलावों और स्वाभाविक भाषा के लक्ष्यों पर सलाह देकर IFSP (व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजना) में योगदान देते हैं।

ढांचा और भारतीय संदर्भ

SKI-HI बधिर मेंटर प्रोग्राम (यूटा स्टेट यूनिवर्सिटी) एक शोध-आधारित मॉडल है जो द्विभाषी-द्वि-सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक बधिर वयस्क को परिवार का हिस्सा बनाता है। शोध से पता चलता है कि जिन बच्चों के परिवार बधिर मेंटर के साथ काम करते हैं, वे बातचीत के विभिन्न तरीकों में भाषा के मामले में बेहतर प्रगति दिखाते हैं। भारत में, ISLRTC के माध्यम से

बधिर मेंटर पहल विकसित की जा रही हैं और ये NEP 2020 द्वारा ISL (भारतीय सांकेतिक भाषा) को शिक्षा के एक मान्य माध्यम के रूप में मान्यता देने के अनुरूप हैं। वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ़ द डेफ (WFD) यह सुझाव देता है कि बहरे वयस्कों को बचपन में शुरुआती मदद (अर्ली चाइल्डहुड इंटरवेंशन) देने वाली सेवाओं में एक मुख्य मानक के तौर पर शामिल किया जाए।

बधिर मेंटर की भूमिकाएँ



निजी अनुभवों के ज़रिए बहरेपन को एक सकारात्मक सांस्कृतिक और भाषाई पहचान के तौर पर फिर से परिभाषित करना



पारिवारिक संवाद: सहज श्य संचार का उदाहरण देना और परिवारों को ध्यान आकर्षित करने के प्राकृतिक तरीके सिखाना





चिंता कम करना: सुनने में सक्षम माता-पिता को यह दिखाकर प्रेरित करना कि कैसे बहरे लोग वयस्क जीवन को सफलतापूर्वक जीते हैं



घरेलू हस्तक्षेप: भाषा की कमी के संकेतों को पहचानना और घर को दृश्य सुलभता के लिए अनुकूलित करना



भाषा प्रोत्साहन: बच्चे के समग्र संचार कौशल को तेज़ी से बढ़ाने के लिए एक द्विभाषी रोल मॉडल के रूप में कार्य करना



नीतिगत तालमेल: भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करके वैश्विक WFD मानकों और NEP 2020 का समर्थन करना।

साइन लैंग्वेज टीचर एक ट्रेंड इंस्ट्रक्टर होता है अक्सर कोई ऐसा व्यक्ति जिसकी मातृभाषा साइन लैंग्वेज होती है जो किसी मान्यता प्राप्त साइन लैंग्वेज की शब्दावली, व्याकरण, वाक्य-संरचना और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के बारे में व्यवस्थित और पाठ्यक्रम-आधारित शिक्षा देता है।

भाषा के विकास में भूमिका

साइन लैंग्वेज टीचर बच्चे के हाथों से किए जाने वाले संचार कौशल (मैनुअल कम्युनिकेशन स्किल्स) का औपचारिक रूप से आकलन करता है और शब्दावली के दायरे और व्याकरण की सटीकता पर नज़र रखता है। वे भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसे कि नॉन-मैनुअल फीचर्स (NMFs) यानी चेहरे, सिर और धड़ के हाव-भाव जिनसे संकेतों का अर्थ बदल जाता है और स्पेशल मैपिंग, जिसमें व्याकरण और संबंधों को व्यवस्थित करने के लिए शरीर के चारों ओर की त्रि-आयामी (3D) जगह का उपयोग किया जाता है।

भाषाई परस्पर निर्भरता मॉडल (Linguistic Interdependence Model) यह बताता है कि साक्षरता के लिए साइन लैंग्वेज का मजबूत कौशल क्यों महत्वपूर्ण है। यह दिखाता है कि जो बच्चा अपनी पहली प्राकृतिक भाषा यानी साइन लैंग्वेज में मजबूत आधार बनाता है, उसके लिए दूसरी भाषा, जैसे हिंदी या अंग्रेजी, में पढ़ना और लिखना सीखना आसान हो जाता है।

शैक्षिक और सामुदायिक परिवेश में भूमिका

साइन लैंग्वेज टीचर द्विभाषी शिक्षण संसाधन तैयार करते हैं और बहरे छात्रों को उनकी साइन लैंग्वेज की औपचारिक संरचना सिखाते हैं। समावेशी स्कूलों में, वे सुनने में सक्षम शिक्षकों और सहपाठियों को निर्देश देते हैं, जिससे पूरे स्कूल के माहौल में संचार की बाधाएं कम होती हैं।

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ

भारत में, साइन लैंग्वेज टीचर ISLRTC कार्यक्रमों के माध्यम से प्रमाणित होते हैं और RCI के तहत पंजीकृत होते हैं। RPWD एक्ट 2016 भारतीय साइन लैंग्वेज (ISL) को बहरे नागरिकों के भाषाई अधिकार के रूप में मान्यता देता है। NEP 2020 स्पष्ट रूप से पूरे देश में ISL को मानकीकृत करने और सभी स्कूलों में उपयोग के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक सामग्री बनाने की सिफारिश करता है।

साइन लैंग्वेज टीचर की भूमिकाएँ



औपचारिक शब्दावली, व्याकरण और वाक्य-रचना में व्यवस्थित और पाठ्यक्रम-आधारित शिक्षण प्रदान करना।



भाषा मूल्यांकन: बच्चे के सांकेतिक संचार कौशल, शब्दकोश विकास और व्याकरणिक सटीकता का औपचारिक रूप से ट्रैक करना।





साक्षरता आधार: लिखित भाषाओं को सीखने में आसानी के लिए, सांकेतिक भाषा में एक मजबूत मातृभाषा आधार स्थापित करना।



भाषाई विशेषताएँ: स्पष्ट बातचीत के लिए महत्वपूर्ण गैर-मौखिक विशेषताओं (चेहरे के हाव-भाव) और स्थानिक मैपिंग (spatial mapping) को सिखाना।



समावेशी शिक्षा: पूरे स्कूल में बातचीत की बाधाओं को दूर करने के लिए सुनने में सक्षम साथियों और शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।



कानूनी और प्रमाणित भूमिका: ISLRTC, NEP 2020 और RPWD अधिनियम 2016 के मानकों के अनुरूप RCI-पंजीकृत पेशेवर के रूप में कार्य करना।

16.4.4 *शैक्षिक दुभाषिया (एजुकेशनल इंटरप्रेटर)*

इस स्थिति पर विचार करें: एक बहरा छात्र मुख्यधारा के सेकेंडरी स्कूल की कक्षा में प्रवेश करता है। शिक्षक बोली जाने वाली हिंदी में लेक्चर देता है। छात्र इंडियन साइन लैंग्वेज का उपयोग करता है। इन दो भाषाओं के बीच किसी पुल के बिना, छात्र किसी भी निर्देश को समझ नहीं सकता है। एजुकेशनल इंटरप्रेटर वह पुल है।

एज्यूकेशनल इंटरप्रेटर एक सर्टिफाइड कम्युनिकेशन प्रोफेशनल होता है जो शैक्षिक परिवेश में साइन लैंग्वेज और बोली जाने वाली भाषा के बीच रियल-टाइम अनुवाद की सुविधा प्रदान करता है।

शैक्षिक पहुंच में भूमिका

एज्यूकेशनल इंटरप्रेटर कक्षा में दिए गए मौखिक निर्देशों का साइन लैंग्वेज में अनुवाद करता है और छात्र की साइन लैंग्वेज में दी गई प्रतिक्रियाओं को शिक्षक तक बोलकर पहुंचाता है। इसे साइमलटेनियस इंटरप्रिटेशन (एक साथ अनुवाद) कहा जाता है और इसके लिए उच्च स्तर के भाषाई कौशल और एकाग्रता की आवश्यकता होती है। कक्षा से पहले, एक कुशल इंटरप्रेटर विषय-विशिष्ट सामग्री की तैयारी के लिए तकनीकी शब्दावली और पाठ योजनाओं की समीक्षा करता है।

इंटरप्रेटर खुद को छात्र की दृष्टि रेखा में, मुख्य वक्ता के बगल में स्पष्ट रूप से स्थित करता है, ताकि छात्र स्वाभाविक रूप से इंटरप्रेटर और शिक्षक के विज़ुअल एड्स (दृश्य सहायक सामग्री) के बीच अपनी नज़र घुमा सके।

मूल्यांकन और सहयोग में भूमिका

एज्यूकेशनल इंटरप्रेटर मानकीकृत मूल्यांकन के दौरान प्रश्नों की कठिनाई या अर्थ को बदले बिना परीक्षण निर्देशों का अनुवाद करके सहायता करता है। वे IEP टीमों को सलाह देते हैं कि कक्षा का लेआउट, गति और दृश्य विकर्षण अनुवादित पाठों की गुणवत्ता को कैसे प्रभावित करते हैं। वे शैक्षिक टीम को संचार व्यवहार में बदलाव की रिपोर्ट करते हैं।

एक महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत इंटरप्रेटर की भूमिका का मार्गदर्शन करता है: वे पढ़ाते, समझाते या ट्यूशन नहीं देते हैं। उनकी भूमिका सटीक, निष्पक्ष भाषा पहुंच सुनिश्चित करना है। 'कंड्यूट बनाम सहयोगी मॉडल' (Conduit vs. Ally Model) इंटरप्रेटर को केवल एक यांत्रिक अनुवाद मशीन के रूप में देखने से हटकर एक ऐसे पेशेवर के रूप में देखने की ओर बदलाव का वर्णन करता है जो सख्त नैतिक सीमाओं को बनाए रखते हुए संचार की गतिशीलता का प्रबंधन करता है।

चुनौतियां

एज्यूकेशनल इंटरप्रेटर को लगातार अनुवाद करने से अत्यधिक मानसिक थकान का अनुभव होता है। खराब रोशनी, तेज़ गति से बोलना और अस्पष्ट ऑडियो इस चुनौती को और बढ़ा देते हैं। भूमिका को लेकर भ्रम जब शिक्षक इंटरप्रेटर से कक्षा सहायक के रूप में भी काम करने की अपेक्षा करते हैं एक आम पेशेवर सीमा संबंधी समस्या है।

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ

भारत में, एजुकेशनल इंटरप्रेटर ISLRTC द्वारा विकसित आचार संहिता का पालन करते हैं और समग्र शिक्षा समावेशी शिक्षा पहल के तहत मुख्य सहायता प्रदाताओं के रूप में कार्य करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, एजुकेशनल इंटरप्रेटर परफॉर्मेंस असेसमेंट (EIPA) K-12 कक्षा के काम के लिए आवश्यक पेशेवर कौशल मानक निर्धारित करता है।

शैक्षिक दुभाषिया की भूमिकाएँ



सांकेतिक और मौखिक भाषाओं के बीच एक प्रमाणित संचार माध्यम के रूप में कार्य करना।



शिक्षा तक पहुँच: छात्र की नज़र के सामने ही रहते हुए लेक्चर का साथ-साथ अनुवाद करना।



आकलन और सहयोग: परीक्षा के निर्देशों को सही ढंग से समझना और देखने की सुविधा के लिए कक्षा के सेटअप को बेहतर बनाने में मदद करना।





नैतिक सीमाएँ: बिना ट्यूशन या शिक्षा के, सख्त और निष्पक्ष भाषा पहुँच प्रदान करना।



चुनौतियों का प्रबंधन: उच्च संज्ञानात्मक थकान पर काबू पाना और शिक्षकों के साथ स्पष्ट पेशेवर सीमाएँ बनाए रखना।



व्यावसायिक रूपरेखा: कक्षा में समावेश को बढ़ावा देने के लिए ISLRTC और समग्र शिक्षा के दिशानिर्देशों का पालन करना।

16.4.5 श्रवण बाधित व्यक्ति की स्व-अधिवक्ता (सेल्फ़-एडवोकेसी)

अब आप देख सकते हैं कि सुनने में अक्षमता वाले व्यक्ति के आस-पास पेशेवरों और समर्थकों की एक लंबी सूची होती है। हालाँकि, इस पूरी व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति खुद सुनने में अक्षमता वाला व्यक्ति ही होता है।

सुनने में अक्षमता वाला व्यक्ति केवल पुनर्वास सेवाओं का 'विषय' (जिस पर काम किया जा रहा है) नहीं होता है। वे इस प्रक्रिया के मुख्य कर्ता-धर्ता होते हैं वे व्यक्ति जिनके लक्ष्य, प्राथमिकताएँ और अधिकार उनकी टीम द्वारा लिए जाने वाले हर फ़ैसले का आधार होने चाहिए।

आकलन और हस्तक्षेप (इंटरवेंशन) में भूमिका

सुनने में अक्षमता वाला व्यक्ति डिवाइस फिटिंग के दौरान COSI प्रश्नावली जैसे टूल के माध्यम से अपना व्यक्तिगत फ़ीडबैक देता है; ये टूल उनके सुनने के व्यक्तिगत लक्ष्यों और सुनने वाले डिवाइस से उनकी संतुष्टि को रिकॉर्ड करते हैं। वे कार्यात्मक लाभ, बातचीत से होने वाली थकान और आस-पास के माहौल से जुड़ी मुश्किलों के बारे में बताते हैं। यूज़र का यह रियल-टाइम फ़ीडबैक ऑडियोलॉजिस्ट को डिवाइस की प्रोग्रामिंग को बेहतर बनाने में मदद करता है ताकि वह असल ज़िंदगी में सुनने की ज़रूरतों के हिसाब से सही हो सके।

शिक्षा और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भूमिका

कम उम्र से ही, सुनने में अक्षमता वाले व्यक्तियों को 'सेल्फ़-एडवोकेसी' कौशल विकसित करना चाहिए — यानी अपनी ज़रूरतों और अधिकारों को स्पष्ट रूप से पहचानने, बताने और उन्हें हासिल करने की क्षमता। क्लासरूम में, इसका

मतलब है बैठने के लिए सही जगह की मांग करना, कैप्शन वाले वीडियो के लिए कहना, या डिवाइस के ठीक से काम न करने पर बताना। कोई छात्र जो अपने FM सिस्टम में स्टेटिक (शोर) महसूस करता है और शांति से अपने शिक्षक से चैनल रीसेट करने के लिए कहता है, वह ठीक इसी कौशल का प्रदर्शन कर रहा होता है।

सेल्फ़-एडवोकेसी का मतलब अपनी बातचीत की प्राथमिकताओं को समझना और उन्हें दूसरों के सामने रखना भी है — चाहे वह प्राथमिकता बोली जाने वाली भाषा हो, सांकेतिक भाषा हो, या दोनों का मिश्रण हो।

अधिकार और पहचान

विकलांगता अधिकारों के लिए वैश्विक आंदोलन इस सिद्धांत पर आधारित है: "हमारे बारे में कुछ भी हमारे बिना नहीं।" संयुक्त राष्ट्र के विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन (CRPD) में शामिल यह बात ज़ोर देती है कि विकलांग व्यक्तियों को प्रभावित करने वाला कोई भी फ़ैसला उनकी सार्थक भागीदारी के बिना नहीं लिया जाना चाहिए।

भारत में, RPWD एक्ट 2016 सुनने में अक्षमता वाले व्यक्तियों को कानूनी सुरक्षा और सकारात्मक कार्रवाई के अवसर प्रदान करता है, जिसमें शैक्षिक कोटा और AYJNISHD के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुँच शामिल है। NEP 2020 समावेशी स्कूल परिवेश में छात्रों की सक्रिय भागीदारी और सेल्फ़-एडवोकेसी के विकास को बढ़ावा देता है।

सुनने से जुड़ी थकान (Listening Fatigue) — जो सुनने की कमज़ोर क्षमता वाले सिस्टम के माध्यम से बातचीत को समझने के लगातार मानसिक प्रयास से होने वाली शारीरिक और मानसिक थकान है — एक वास्तविक और अक्सर न दिखने वाली चुनौती है। इस थकान को पहचानना और उसे संभालना ज़िम्मेदार सेल्फ़-केयर (अपनी देखभाल) और सेल्फ़-एडवोकेसी का हिस्सा है।

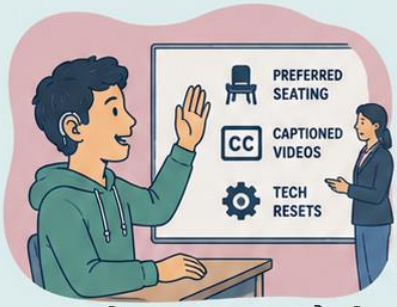
स्व-अधिवक्ता की भूमिकाएँ



प्राथमिक निर्णयकर्ता के रूप में देखभाल प्रक्रिया का नेतृत्व करना, जिसके लक्ष्य टीम का मार्गदर्शन करते हैं



मूल्यांकन प्रतिक्रिया: डिवाइस के कामकाज की रिपोर्ट देना ताकि ऑडियोलॉजिस्ट प्रोग्रामिंग को सटीक बना सकें।



कक्षा में आत्म-वकालत: बैठने की उचित व्यवस्था, कैप्शन वाले वीडियो, या तकनीकी सहायता जैसी आवश्यक सुविधाओं का अनुरोध करना।





संवाद का विकल्प: अपनी व्यक्तिगत संवाद प्राथमिकताओं (बोलना, सांकेतिक भाषा, या दोनों) को आत्मविश्वास से चुनना और व्यक्त करना।



अधिकार और पहचान: RPWD अधिनियम 2016 के तहत कानूनी सुरक्षा और "हमारे बारे में कुछ भी हमारे बिना नहीं" के सिद्धांत का पालन करना।



थकान का प्रबंधन: हियरिंग एड से होने वाली सुनने की थकान को पहचानना और मानसिक थकावट को रोकने के लिए सक्रिय रूप से ब्रेक लेना।

16.4.6 अपनी प्रगति की जाँच करें — 2

1. भाषा वंचितता शब्द की व्याख्या करें। श्रवण बाधित बच्चे में भाषा वंचितता को रोकने में माता-पिता की क्या भूमिका है?

2. एक बधिर मार्गदर्शक और एक सांकेतिक भाषा शिक्षक की भूमिका में क्या अंतर है? दोनों को महत्वपूर्ण हितधारक क्यों माना जाता है?

3. एक शैक्षणिक दुभाषिए की व्यावसायिक जिम्मेदारियों का वर्णन करें। कक्षा के माहौल में एक दुभाषिए को किन नैतिक सिद्धांतों का पालन करना चाहिए?

4. श्रवण बाधित व्यक्तियों के पुनर्वास के संदर्भ में "हमारे बिना हमारे बारे में कुछ नहीं" (Nothing About Us Without Us) सिद्धांत का क्या अर्थ है? आत्म-वकालत का एक व्यावहारिक उदाहरण दें।

5. भारत में श्रवण बाधित बच्चों के माता-पिता द्वारा सामना की जाने वाली दो चुनौतियों की पहचान करें। इन चुनौतियों से निपटने में मदद करने के लिए कौन सी सहायता प्रणालियाँ मौजूद हैं?

(जवाब सेक्शन 16.10 में दिए गए हैं)

16.5 श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए टीम का गठन

16.5.1 प्रस्तावना

जब किसी व्यक्ति में श्रवण हानि की पहचान होती है, तो पेशेवरों और परिवार के सदस्यों की एक टीम उनका समर्थन करने के लिए एक साथ आती है। हालाँकि, श्रवण हानि वाले हर व्यक्ति को एक जैसी टीम की आवश्यकता नहीं होती है। टीम की संरचना यानी, इसमें कौन शामिल है और वे कौन सी भूमिकाएँ निभाते हैं कई महत्वपूर्ण कारकों के आधार पर बदलती रहती है।

आपने शायद देखा होगा कि श्रवण हानि वाले एक नवजात शिशु को, उसी स्थिति वाले स्कूल जाने वाले बच्चे या कामकाजी वयस्क से बहुत अलग तरह के समर्थन की आवश्यकता होती है। इसी तरह, हल्की सुनने की क्षमता में कमी वाले बच्चे को गहरी सुनने की क्षमता में कमी वाले बच्चे जितने पेशेवर हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होती है। जब सुनने की क्षमता में कमी दृष्टि बाधा, सेरेब्रल पाल्सी, या ऑटिज्म जैसी किसी अन्य स्थिति के साथ होती है, तो टीम को और भी विस्तार और अनुकूलन करना पड़ता है।

यह इकाई उन तीन प्रमुख कारकों पर केंद्रित है जो यह निर्धारित करते हैं कि सुनने की क्षमता में कमी वाले व्यक्ति के लिए पुनर्वास टीम का गठन कैसे किया जाता है। ये तीन कारक हैं: आयु, सुनने की क्षमता में कमी की गंभीरता, और संबंधित स्थितियाँ या अक्षमताएँ।

विशेष शिक्षा या पुनर्वास के क्षेत्र में काम करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए इन कारकों को समझना आवश्यक है। भारत में, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (आरपीडब्ल्यूडी) 2016 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 दोनों ही दिव्यांगजनों के लिए व्यक्तिगत, ज़रूरत-आधारित सहायता पर ज़ोर देते हैं। भारत पुनर्वास परिषद (आरसीआई) व्यावसायिक प्रशिक्षण मानक निर्धारित करती है, जिनमें पुनर्वास पेशेवरों को यह समझने की आवश्यकता होती है कि विभिन्न क्लाइंट प्रोफाइल के साथ टीम की संरचना कैसे बदलती है।

यह इकाई आपको इस बात की एक व्यवस्थित समझ विकसित करने में मदद करेगी कि टीमें कैसे संरचित होती हैं, वे विभिन्न परिस्थितियों में क्यों भिन्न होती हैं, और वे समन्वित सहायता प्रदान करने के लिए कैसे मिलकर काम करती हैं।

16.5.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे:

1. यह समझाएँ कि श्रवण हानि वाले व्यक्ति की आयु, गंभीरता और संबंधित स्थितियों के अनुसार पुनर्वास टीम की संरचना क्यों भिन्न होती है।
2. शिशु अवस्था से वयस्कता तक - प्रत्येक आयु वर्ग के लिए उपयुक्त टीम के सदस्यों, मूल्यांकन प्राथमिकताओं और हस्तक्षेप दृष्टिकोणों की पहचान करें।
3. वर्णन करें कि श्रवण हानि की गंभीरता कैसे टीम की संरचना, संचार दृष्टिकोण और सहायक प्रौद्योगिकी के विकल्पों को प्रभावित करती है।
4. बौद्धिक अक्षमता, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, सेरेब्रल पाल्सी, दृष्टि बाधा, या सीखने की अक्षमता जैसी स्थितियों के साथ श्रवण हानि के सह-अस्तित्व में आवश्यक अतिरिक्त टीम के सदस्यों और संशोधित रणनीतियों पर चर्चा करें।
5. ट्रांसडिसिप्लिनरी, इंटरडिसिप्लिनरी और मल्टीडिसिप्लिनरी टीम मॉडल की तुलना करें और समझाएं कि प्रत्येक मॉडल कब सबसे उपयुक्त है।
6. विभिन्न आयु समूहों और श्रवण हानि की गंभीरता के स्तरों में परिवार की भागीदारी की भूमिका का विश्लेषण करें।
7. श्रवण हानि के दीर्घकालिक प्रभाव को कम करने में शीघ्र पहचान और समय पर टीम के गठन के महत्व का मूल्यांकन करें।

16.6 आयु के आधार पर टीम का गठन

श्रवण हानि वाले व्यक्ति की आयु, टीम की संरचना निर्धारित करने में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कारक है। जैसे-जैसे व्यक्ति बड़ा होता है, उसकी विकासात्मक आवश्यकताएं, संचार के लक्ष्य, शैक्षिक आवश्यकताएं और पुनर्वास की प्राथमिकताएं सभी बदल जाती हैं। टीम को हर चरण पर इन परिवर्तनों का जवाब देना चाहिए।
आइए हम जांच करें कि पांच आयु समूहों में टीम का गठन कैसे किया जाता है।

16.6.1 शिशु और प्रीस्कूल बच्चे (0-6 वर्ष)

निम्नलिखित स्थिति के बारे में सोचें: एक अस्पताल में स्क्रीनिंग के दौरान एक नवजात शिशु में सुनने की क्षमता में कमी का पता चलता है। माता-पिता सुन सकते हैं और उन्होंने पहले कभी सुनने की क्षमता में कमी का सामना नहीं किया है। इस परिवार को किस तरह की टीम की आवश्यकता है?

शिशु (0–3 वर्ष)

शिशुओं के लिए, टीम में आमतौर पर एक बाल श्रवण विशेषज्ञ, एक ईएनटी विशेषज्ञ, एक बालरोग विशेषज्ञ, माता-पिता या देखभाल करने वाले, और एक प्रारंभिक हस्तक्षेप विशेषज्ञ शामिल होते हैं। यह टीम तीन तत्काल प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करती है: वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के माध्यम से सुनने की क्षमता में कमी की पुष्टि करना, यथासंभव जल्द से जल्द उपयुक्त ध्वनि-वर्धन (amplification) लगाना, और माता-पिता को बच्चे के प्राथमिक भाषा सहायक बनने के लिए सशक्त बनाना।

इस चरण में मूल्यांकन के लिए ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स (एबीआर), ऑडिटरी स्टेडी-स्टेट रिस्पॉन्स (एएसएसआर), और ओटोएकॉस्टिक इमिशन (ओएई) जैसे वस्तुनिष्ठ इलेक्ट्रोफिजियोलॉजिकल तरीकों का उपयोग किया जाता है। इन परीक्षणों के लिए शिशु से स्वेच्छा से प्रतिक्रिया की आवश्यकता नहीं होती है, जो इन्हें बहुत छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त बनाता है। टीम विकासात्मक मील के पत्थर और शुरुआती पूर्व-भाषीय स्वर-उत्सर्जन की भी निगरानी करती है।

इस चरण में संचार का दृष्टिकोण शुरुआती भाषाई नींव बनाने पर केंद्रित होता है। परिवार की पसंद और बच्चे के श्रवण संबंधी प्रोफ़ाइल के आधार पर, इसमें श्रवण-भाषण चिकित्सा (AVT), कुल संचार, या प्राकृतिक सांकेतिक भाषा का समावेश हो सकता है।

इस चरण में उपयोग किया जाने वाला टीम मॉडल अंतःविषय (Transdisciplinary) है। इस मॉडल में, पेशेवर माता-पिता को प्रशिक्षित करने के लिए अपनी सामान्य सीमाओं से परे जाते हैं, जो फिर घर में केंद्रीय हस्तक्षेप समन्वयक के रूप में काम करते हैं। यह आवश्यक है क्योंकि शिशु अपना अधिकांश समय क्लिनिक में नहीं, बल्कि घर पर बिताता है। इसलिए इस अवधि के दौरान परिवार की भागीदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है।

सेवाएँ व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजनाओं (IFSPs) के माध्यम से प्रदान की जाती हैं, जो तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए पारिवारिक लक्ष्यों, सांस्कृतिक प्राथमिकताओं और हस्तक्षेप रणनीतियों की पहचान करती हैं। रेफरल मार्ग आमतौर पर प्रसूति अस्पतालों से नैदानिक श्रवण केंद्रों और फिर प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं तक होते हैं।

प्रीस्कूल बच्चे (3–6 वर्ष)

जैसे ही बच्चा प्रीस्कूल चरण में प्रवेश करता है, टीम में बाल श्रवण विशेषज्ञ (पीडियाट्रिक ऑडियोलॉजिस्ट) और माता-पिता के साथ-साथ एक स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट (SLP), श्रवण बाधित बच्चों के लिए एक विशेष शिक्षक, और एक शैक्षणिक मनोवैज्ञानिक को भी शामिल किया जाता है।

अब मूल्यांकन में कंडीशन्ड प्ले ऑडियमेट्री (CPA) का उपयोग करके व्यवहारिक ऑडियमेट्री, साथ ही ग्रहणशील और अभिव्यक्तिपूर्ण भाषा, ध्वन्यात्मक जागरूकता, और स्कूल के लिए तैयार होने के कौशल का मूल्यांकन शामिल है।

हस्तक्षेप की प्राथमिकताएँ गहन भाषा उत्तेजना, प्रारंभिक साक्षरता की नींव, और सामाजिक खेल की बातचीत का विस्तार की ओर स्थानांतरित हो जाती हैं। प्रीस्कूल समावेशन एक केंद्र बिंदु बन जाता है, जिसमें संसाधन कक्ष की योजना और दृश्य सहायता प्रणालियों को कक्षा के लेआउट में पेश किया जाता है।

परिवार की भागीदारी अधिक बनी रहती है। माता-पिता घर पर शब्दावली के लक्ष्यों को सुदृढ़ करते हैं और प्रीस्कूल IEP योजना बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। टीम का मॉडल अंतःविषय (Interdisciplinary) में बदल जाता है, जहाँ पेशेवर स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन करते हैं लेकिन एकीकृत भाषा और सीखने के लक्ष्यों को बनाने के लिए नियमित रूप से मिलते हैं।

16.6.2 स्कूल-जाने की उम्र के बच्चे और किशोर (6–18 वर्ष)

इस चरण में, आपको यह समझना चाहिए कि बच्चे की दुनिया काफी हद तक बढ़ गई है। वे अब अपना ज़्यादातर समय स्कूल के माहौल में कई शिक्षकों, साथियों और शैक्षणिक मांगों के साथ बिताते हैं। टीम को इस नई वास्तविकता को दर्शाना चाहिए।

स्कूल-जाने की उम्र के बच्चे (6–18 वर्ष)

स्कूल-आयु वर्ग की टीम में आमतौर पर एक श्रवण-विशेषज्ञ, एक विशेष शिक्षक, एक संसाधन शिक्षक, एक नियमित कक्षा शिक्षक, एक स्कूल मनोवैज्ञानिक, माता-पिता और बढ़ते रूप से, स्वयं छात्र शामिल होते हैं।

मूल्यांकन का ध्यान प्योर टोन ऑडियोमेट्री (सहायक युक्त और बिना सहायक दोनों), शैक्षणिक उपलब्धि के स्तर, कक्षा में व्यावहारिक सुनने के प्रदर्शन और सामाजिक-भावनात्मक विकास पर होता है। कक्षा में सुनने के छात्र के अपने अनुभव से प्राप्त जानकारी एक महत्वपूर्ण स्रोत बन जाती है।

इस चरण में संचार के दृष्टिकोण लचीले होते हैं, जो इस बात पर निर्भर करते हैं कि पहले क्या स्थापित किया गया है। विकल्पों में मौखिक-श्रवण निर्देश, टोटल कम्युनिकेशन, क्यूड स्पीच, या शैक्षिक दुभाषिए के साथ भारतीय सांकेतिक भाषा शामिल हैं।

हस्तक्षेप की प्राथमिकताओं में IEP का कार्यान्वयन, कक्षा के ध्वनिक वातावरण को अनुकूलित करना, और सहपाठियों के साथ सामाजिक संबंध बनाना शामिल है। शैक्षिक व्यवस्था एक निरंतरता में फैली होती है छात्र की प्रोफ़ाइल के आधार पर विशेष स्कूलों से लेकर संसाधन कक्ष सहायता से लेकर पूर्ण समावेशन तक।

परिवार की भूमिका प्रत्यक्ष प्रबंधन से सहयोगात्मक समर्थन में बदल जाती है। माता-पिता होमवर्क में सहायता करते हैं, डिवाइस के उपयोग की निगरानी करते हैं, और वार्षिक IEP समीक्षाओं में भाग लेते हैं। टीम का मॉडल बहु-विषयक या

अंतर-विषयक होता है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ संरचित IEP ढांचे के भीतर प्रगति की जानकारी साझा करते हैं।

किशोर (12-18 वर्ष)

किशोरावस्था नई चुनौतियाँ पेश करती है। इस समूह के लिए टीम में एक व्यावसायिक सलाहकार शामिल होता है और किशोर छात्र की अपनी भागीदारी पर अधिक जोर दिया जाता है।

मूल्यांकन में शोर में भाषण की धारणा, व्यावसायिक योग्यता प्रोफाइलिंग, स्वतंत्र जीवन कौशल, और मनो-सामाजिक पहचान के विकास को शामिल करने के लिए विस्तार किया जाता है। करियर और तकनीकी शिक्षा ट्रैक, संक्रमण योजना, और परीक्षण सुविधाएँ शैक्षिक प्राथमिकताएँ बन जाती हैं।

इस चरण में पारिवारिक भागीदारी में एक महत्वपूर्ण बदलाव आता है। माता-पिता सीधे निर्णय लेने से हटकर किशोर की स्वतंत्र आत्म-वकालत का समर्थन करने की ओर बढ़ते हैं। टीम युवा व्यक्ति को अपने उपकरणों का प्रबंधन करने, शिक्षकों को अपनी ज़रूरतों के बारे में बताने, और स्कूल के बाद के जीवन की योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है।

टीम का मॉडल अंतःविषय बना रहता है, जिसमें आत्म-निर्देशन और संक्रमण योजनाओं को बनाने में छात्र की सक्रिय भागीदारी पर विशेष जोर दिया जाता है।

16.6.3 वयस्क (18 वर्ष और उससे अधिक)

आप अब देख सकते हैं कि श्रवण हानि वाले व्यक्ति के वयस्कता में प्रवेश करने पर, उनकी ज़रूरतों का स्वरूप मौलिक रूप से बदल जाता है। ध्यान शिक्षा से हटकर रोजगार, स्वतंत्र जीवन और दीर्घकालिक पुनर्वास पर केंद्रित हो जाता है। वयस्क टीम में आमतौर पर एक ऑडियोलॉजिस्ट, एक ईएनटी विशेषज्ञ, एक पुनर्वास परामर्शदाता, एक नियोक्ता या एचआर प्रतिनिधि, और स्वयं वयस्क व्यक्ति शामिल होते हैं।

इस चरण में मूल्यांकन के लिए कार्यात्मक ऑडियोमेट्रिक उपायों और कार्यस्थल-विशिष्ट उपकरणों जैसे कि वयस्कों के लिए श्रवण हैंडीकैप इन्वेंटरी (HHIA) का उपयोग किया जाता है, जो वास्तविक दुनिया की स्थितियों में सुनने में कमी के सामाजिक और भावनात्मक प्रभाव को मापता है।

संचार प्राथमिकताओं में कार्यात्मक मार्गों को बनाए रखना, कार्यस्थल पर भाषण-पठन को अनुकूलित करना, टेक्स्ट-आधारित पूरक संचार का उपयोग करना, और जहां लागू हो वहां उन्नत सांकेतिक भाषा के उपयोग का प्रबंधन करना शामिल है।

हस्तक्षेप प्राथमिकताओं में व्यावसायिक पुनर्वास, कार्यस्थल पर सुविधाओं को विन्यस्त करना, और सुनने में बदलाव के अनुकूल होने के लिए परामर्श शामिल है। इस चरण में सहायक प्रौद्योगिकी में टेलीफोन एम्पलीफायर, अनुकूलित लूप सिस्टम, और उन्नत स्पीच-टू-टेक्स्ट प्रोग्राम शामिल हैं।

इस चरण में परिवार की भागीदारी कम और परामर्शात्मक होती है, जिसे पूरी तरह से व्यक्ति की विवेक पर चुना जाता है। टीम मॉडल बहु-विषयक है, जिसमें विशेषज्ञ पेशेवर वयस्क की विशिष्ट पेशेवर और व्यक्तिगत पसंद के अनुरूप प्रत्यक्ष सेवाएं प्रदान करते हैं।

इस चरण में रेफरल मार्ग अक्सर स्व-रेफरल, ईएनटी (कान, नाक और गला) क्लीनिकों, या कार्यस्थल के चिकित्सा अधिकारियों द्वारा व्यक्ति को विशेष श्रवण संबंधी पुनर्वास क्लीनिकों में भेजने से शुरू होते हैं।

16.6.4 अपनी प्रगति की जाँच करें

1. एक अंतःविषय टीम मॉडल क्या है? समझाएँ कि 0-3 वर्ष की आयु के श्रवण हानि वाले शिशुओं के लिए यह मॉडल सबसे उपयुक्त क्यों माना जाता है।
2. टीम के उन चार सदस्यों की पहचान करें जो आमतौर पर श्रवण हानि वाले स्कूल-उम्र के बच्चे का समर्थन करने में शामिल होते हैं। प्रत्येक सदस्य की भूमिका का संक्षेप में वर्णन करें।
3. श्रवण हानि वाले बच्चे के शिशु अवस्था से किशोरावस्था में जाने पर पारिवारिक भागीदारी कैसे बदलती है? कम से कम तीन आयु समूहों के संदर्भ में समझाएँ।
4. व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजना (IFSP) क्या है? यह व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) से कैसे भिन्न है?
5. श्रवण हानि वाले किशोर की पुनर्वास प्राथमिकताएँ स्कूल-उम्र के बच्चे की प्राथमिकताओं से जिन दो तरीकों से भिन्न होती हैं, उनका वर्णन करें।

(जवाब सेक्शन 16.10 में दिए गए हैं)

16.7 गंभीरता और संबंधित स्थितियों के आधार पर टीम का गठन

पिछले खंड में, आपने अध्ययन किया कि श्रवण हानि वाले व्यक्ति की आयु कैसे पुनर्वास टीम की संरचना और प्राथमिकताओं को आकार देती है। हालाँकि, आयु केवल एक कारक है। दो अतिरिक्त कारक समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं: श्रवण हानि की गंभीरता और संबंधित स्थितियों या विकलांगताओं की उपस्थिति।

आइए हम इन प्रत्येक कारकों की बारी-बारी से जाँच करें।

16.7.1 श्रवण हानि की गंभीरता के आधार पर टीम का गठन

श्रवण हानि की डिग्री सीधे यह निर्धारित करती है कि कितने पेशेवरों की आवश्यकता है, कौन सा संचार दृष्टिकोण सबसे उपयुक्त है, और सहायक प्रौद्योगिकी का कौन सा स्तर आवश्यक है। जैसे-जैसे गंभीरता बढ़ती है, टीम बड़ी होती जाती है, हस्तक्षेप अधिक गहन हो जाता है, और परिवार की प्रतिबद्धता भी तदनुसार गहरी होनी चाहिए।

श्रवण हानि को चार व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है: हल्की (26–40 डीबी), मध्यम (41–55 डीबी), गंभीर (56–70 डीबी), और गहरी (71 डीबी और उससे अधिक)। प्रत्येक स्तर के लिए एक अलग टीम संरचना की आवश्यकता होती है।

हल्की सुनने की क्षमता में कमी (26–40 डीबी)

आपने शायद देखा होगा कि हल्की सुनने की क्षमता में कमी वाले बच्चे को अक्सर शांत वातावरण में सामान्य रूप से सुनते हुए प्रतीत होता है। कठिनाई मुख्य रूप से शोर वाले कक्षाओं में या जब वक्ता दूर होता है तो स्पष्ट होती है। इस वजह से,

सुनने की क्षमता में कमी का अक्सर पता नहीं चल पाता या देर से पता चलता है।

इस स्तर पर टीम अपेक्षाकृत छोटी होती है। इसमें आमतौर पर एक ऑडियोलॉजिस्ट, एक नियमित कक्षा शिक्षक, एक ईएनटी विशेषज्ञ, माता-पिता और एक स्कूल काउंसलर शामिल होते हैं। एक विशेष शिक्षक से परामर्श किया जा सकता है लेकिन वह हमेशा मुख्य टीम का सदस्य नहीं होता है।

मूल्यांकन शोर भरे माहौल में भाषण-धारणा की सूक्ष्म कमियों का पता लगाने, उच्च-आवृत्ति श्रवण सीमा हानि, और कक्षा में व्यवहारिक ध्यान थकान के शुरुआती संकेतों पर केंद्रित होता है।

संचार का दृष्टिकोण डिफ़ॉल्ट रूप से श्रव्य-मौखिक होता है, जिसमें वरीयता से पहली पंक्ति में बैठने और स्पष्ट भाषण उत्पादन पर शिक्षक को उन्मुख करने जैसे छोटे स्पष्टीकरण संशोधन शामिल होते हैं। डिजिटल श्रवण यंत्र तुरंत लगाए जाते हैं। आवश्यकतानुसार स्कूल वीडियो के लिए क्लोज्ड-कैप्शनिंग उपकरण और सरल शोर-निरोधक सेटअप पेश किए जाते हैं।

टीम का मॉडल परामर्शात्मक बहु-विषयक है: ऑडियोलॉजिस्ट मुख्यधारा के परिवेश से न्यूनतम हस्तक्षेप के साथ नियमित कक्षा शिक्षक का मार्गदर्शन करता है। पारिवारिक भागीदारी दैनिक डिवाइस जांच करने और कक्षा में थकान के पैटर्न की निगरानी करने पर केंद्रित होती है।

मध्यम श्रवण हानि (41–55 डीबी)

इस स्तर पर, बच्चा अपेक्षाकृत शांत वातावरण में भी, भाषण को समझने में लगातार कठिनाई का अनुभव करता है। टीम में एक ऑडियोलॉजिस्ट, एक स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट (SLP), एक विशेष शिक्षक, एक कक्षा शिक्षक और माता-पिता शामिल होते हैं।

अब मूल्यांकन में भाषण बोध सूचकांक, ग्रहणशील और अभिव्यक्तिपूर्ण शब्दावली ट्रैकिंग, और कार्यात्मक कक्षा सिग्नल-टू-नोइज़ अनुपात (SNR) विश्लेषण शामिल होता है। SNR का अर्थ लक्ष्य भाषण और पृष्ठभूमि शोर के बीच ध्वनि तीव्रता के अंतर से है — एक उच्च SNR सुनना आसान बनाता है।

संचार दृष्टिकोण श्रव्य-मौखिक या कुल संचार हो सकता है, जिसमें श्रव्य प्रशिक्षण, होंठ-पढ़ने में सहायता, और ध्वनिक हाइलाइटिंग तकनीकों पर जोर दिया जाता है। प्रोग्रामेबल डिजिटल श्रवण यंत्र लगाए और सत्यापित किए जाते हैं। शिक्षक की आवाज़ को सीधे बच्चे के श्रवण यंत्र में प्रसारित करने के लिए व्यक्तिगत एफएम या डिजिटल मॉड्यूलेशन (डीएम) वायरलेस सिस्टम पेश किए जाते हैं।

टीम मॉडल अंतःविषय की ओर स्थानांतरित हो जाता है: ऑडियोलॉजिस्ट, एसएलपी, और शिक्षक शैक्षणिक और भाषा के लक्ष्यों को संरेखित करने के लिए नियमित प्रगति नोट साझा करते हैं। परिवार की भागीदारी बढ़ जाती है, जिसमें माता-पिता भाषण-भाषा गृह सुदृढ़ीकरण योजनाओं में भाग लेते हैं और दैनिक डिवाइस के उपयोग को ट्रैक करना सीखते हैं।

गंभीर श्रवण हानि (56–70 डीबी)

निम्नलिखित स्थिति के बारे में सोचें: गंभीर श्रवण हानि वाला एक बच्चा उच्च-शक्ति वाला श्रवण यंत्र (हियरिंग एड) का उपयोग करता है, लेकिन फिर भी कक्षा में बोले जाने वाले महत्वपूर्ण हिस्से को नहीं सुन पाता है। इस बच्चे को एक बहुत अधिक व्यापक और विशेष टीम की आवश्यकता होती है।

इस टीम में अब एक ऑडियोलॉजिस्ट, एक ईएनटी विशेषज्ञ, एक एसएलपी, एक विशेष शिक्षक, एक शैक्षिक दुभाषिया, माता-पिता और एक सामाजिक कार्यकर्ता शामिल होते हैं।

इस स्तर पर मूल्यांकन में वाक्य-स्तर की श्रवण डिकोडिंग, ध्वन्यात्मक जागरूकता की कमी, दृश्य-निर्भरता स्केलिंग, और व्यापक भाषा विलंब मैपिंग शामिल हैं। टीम यह जांचती है कि बच्चा अपनी सीमित श्रवण पहुँच को पूरा करने के लिए दृश्य संकेतों पर कितना निर्भर करता है।

संचार दृष्टिकोण का विस्तार टोटल कम्युनिकेशन, क्यूड स्पीच, या इंडियन साइन लैंग्वेज (ISL) को शामिल करने के लिए होता है, जो प्रारंभिक हस्तक्षेप के समय और प्रौद्योगिकी से मिलने वाले कार्यात्मक लाभ पर निर्भर करता है। हाई-गेन पावर डिजिटल श्रवण यंत्र लगाए जाते हैं। सहायक प्रौद्योगिकी के रूप में कंपन वाले अलार्म उपकरण और विशेष पाठ-रूपान्तरण अनुप्रयोग पेश किए जाते हैं।

शैक्षिक प्लेसमेंट संसाधन कक्ष सेटिंग्स या विशेष स्व-निहित कक्षाओं की ओर बढ़ता है, जिसमें संरचनात्मक दृश्य सहायता और संशोधित पाठों को दैनिक निर्देशों में एकीकृत किया जाता है।

टीम का मॉडल अंतःविषय या पार-विषय है: नैदानिक भाषा पुनर्वास को दैनिक कक्षा और घर के लेआउट में वैकल्पिक संचार उपकरणों के साथ सक्रिय रूप से विलय किया जाता है। परिवार की भागीदारी गहन होती है माता-पिता से वैकल्पिक संचार प्रणालियों को सक्रिय रूप से सीखने और स्पष्ट दृश्य रेखाओं के लिए घरेलू वातावरण को संशोधित करने की अपेक्षा की जाती है।

गंभीर श्रवण हानि (71 डीबी और उससे अधिक)

इस स्तर पर, बच्चे को शक्तिशाली श्रवण यंत्रों के साथ भी न्यूनतम या कोई भी उपयोगी सुनने की क्षमता नहीं होती है। टीम अपनी सबसे व्यापक स्थिति में होती है। इसमें एक ओटोलैरिंजोलॉजिस्ट (कोक्लियर इम्प्लांट सर्जन), एक पीडियाट्रिक ऑडियोलॉजिस्ट, एवीटी विशेषज्ञता वाला एक एसएलपी, एक विशेष शिक्षक, एक बधिर मेंटर, एक सांकेतिक भाषा प्रशिक्षक और एक शैक्षिक दुभाषिया शामिल होते हैं।

मूल्यांकन में सीटी स्कैन और एमआरआई का उपयोग करके प्री-सर्जिकल संरचनात्मक इमेजिंग, इलेक्ट्रोफिजियोलॉजिकल प्रोफाइलिंग, कोक्लियर इम्प्लांट कैंडिडेटशिप प्रोटोकॉल, और पूर्ण भाषा वंचितता संकेतकों पर नज़र रखना शामिल है।

इस स्तर पर दो अलग-अलग संचार मार्ग मौजूद हैं। सर्जिकल मार्ग में कोक्लियर इम्प्लांटेशन शामिल है, जिसके बाद गहन श्रवण-वाचिक चिकित्सा (एवीटी) की जाती है। दृश्य-द्विभाषी मार्ग में बच्चे की प्राथमिक भाषा के रूप में स्वदेशी भारतीय सांकेतिक भाषा (ISL) शामिल है, जिसे लिखित भाषा साक्षरता विकास का समर्थन प्राप्त है। टीम परिवार को दोनों विकल्पों पर सलाह देती है और परिवार की सूचित पसंद का सम्मान करती है।

सहायक प्रौद्योगिकी में बहु-चैनल कोक्लियर इम्प्लांट, बोन-एन्कर्ड ट्रैकिंग सिस्टम, स्पर्श अलर्ट सिस्टम, और वास्तविक समय स्वचालित कैप्शनिंग मॉनिटर शामिल हैं।

परिवार की भागीदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। परिवारों को या तो एवीटी (AVT) के दीर्घकालिक थेरेपी प्रोटोकॉल के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए या सांकेतिक भाषा में पूरे परिवार की प्रवीणता विकसित करनी चाहिए। इस

प्रतिबद्धता के बिना, बच्चे को भाषा वंचित होने का खतरा होता है यह शुरुआती महत्वपूर्ण वर्षों के दौरान किसी भी पूरी तरह से सुलभ भाषा की अनुपस्थिति के कारण होने वाली एक गंभीर विकासात्मक हानि है।

टीम का मॉडल अंत:विषय है: नैदानिक, शल्यचिकित्सा, शैक्षिक और सांस्कृतिक मेंटर गहनता से मिलकर काम करते हैं, और पूरे परिवार इकाई को एक समन्वित इकाई के रूप में प्रशिक्षित करते हैं।

16.7.2 अतिरिक्त दिव्यांगताओं के आधार पर टीम का निर्माण

अब आप देख सकते हैं कि केवल गंभीरता ही इस बात को महत्वपूर्ण रूप से बदल देती है कि एक टीम कैसे बनाई जाती है। जब श्रवण हानि किसी अन्य विकलांगता या विकासात्मक स्थिति के साथ होती है, तो टीम को और विस्तारित होना चाहिए और अपनी रणनीतियों को विशेष तरीकों से अनुकूलित करना चाहिए। इस स्थिति को एकाधिक विकलांगताएं या संबंधित स्थितियां कहा जाता है।

आइए सबसे अधिक आम तौर पर पाई जाने वाली संबंधित स्थितियों की जांच करें।

बौद्धिक अक्षमता (ID) और श्रवण हानि

जब श्रवण हानि बौद्धिक अक्षमता के साथ होती है, तो टीम में एक ऑडियोलॉजिस्ट, ID और HI दोनों में प्रशिक्षित एक विशेष शिक्षक, एक SLP, एक मनोवैज्ञानिक और माता-पिता शामिल होते हैं।

मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ गैर-मौखिक संज्ञानात्मक परीक्षण, कार्यात्मक व्यवहारिक अनुकूली स्केलिंग, और साउंड-फील्ड अवलोकन विधियों पर निर्भर करता है, क्योंकि बच्चा मानक श्रवण-परीक्षण निर्देशों का पालन करने में सक्षम नहीं हो सकता है। संचार के लिए सरलीकृत मूर्त भाषा संरचनाओं, दृश्य अनुसूचियों और

बुनियादी कार्यात्मक संकेतों का उपयोग किया जाता है। हस्तक्षेप प्राथमिकताएं श्रवण यंत्र पहनने के लिए व्यवहारिक दिनचर्या स्थापित करने और कार्यात्मक दैनिक जीवन के संकेत सिखाने पर केंद्रित होती हैं।

श्रवण यंत्र अत्यधिक टिकाऊ और छेड़छाड़-रोधी बैटरी दरवाजों वाले होने चाहिए, क्योंकि बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे अपने उपकरणों का स्वतंत्र रूप से प्रबंधन या सुरक्षा नहीं कर पा सकते हैं। टीम का मॉडल अंतःविषय है, जो नियमित प्रगति अपडेट के साथ भाषा चिकित्सा के मील के पत्थरों के साथ संज्ञानात्मक अपेक्षाओं को संरेखित करता है।

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) और श्रवण हानि

यह संयोजन अनूठी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। एएसडी वाले बच्चे में संवेदी अतिसंवेदनशीलता हो सकती है, जिससे श्रवण यंत्र पहनने को सहन करना मुश्किल हो जाता है। उन्हें मानक श्रवण संबंधी आकलन की सामाजिक मांगों के साथ भी कठिनाई हो सकती है।

टीम ऑडियोलॉजिस्ट, एसएलपी, और विशेष शिक्षक के मुख्य समूह में एक व्यवहार चिकित्सक (बिहेवियरल थेरेपिस्ट) और एक व्यावसायिक चिकित्सक (ओटी) को जोड़ती है। मूल्यांकन का ध्यान संवेदी प्रसंस्करण संवेदनशीलताओं, गैर-मौखिक कार्यात्मक संचार के इरादे, और श्रवण संबंधी स्पर्श प्रक्रियाओं के लिए बच्चे की सहनशीलता पर केंद्रित होता है।

संचार के लिए संवर्धक और वैकल्पिक संचार (एएसी) प्रणालियों, चित्र विनिमय सरणियों, और अत्यधिक संरचित दृश्य संकेत संकेतों का उपयोग किया जाता है। एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक हस्तक्षेप प्राथमिकता असंवेदनशील बनाना है बच्चे को धीरे-धीरे बिना किसी कष्ट के श्रवण उपकरण पहनने को सहन करने में मदद करना। ध्वनि अतिसंवेदनशीलता को ट्रिगर होने से रोकने के लिए श्रवण उपकरणों को शोर-प्रबंधन सुविधाओं के साथ प्रोग्राम किया जाता है। टीम का

मॉडल अंतःविषय है, जो संवेदी प्रसंस्करण कार्यक्रमों को लक्षित भाषण और संचार लक्ष्यों के साथ जोड़ता है।

सेरेब्रल पाल्सी (सीपी) और श्रवण हानि

सेरेब्रल पाल्सी मोटर नियंत्रण और शारीरिक गतिविधि को प्रभावित करती है। जब यह श्रवण हानि के साथ संयुक्त होती है, तो यह संचार तक पहुंच और मूल्यांकन में शारीरिक भागीदारी दोनों में चुनौतियां पैदा करती है।

टीम में ऑडियोलॉजिस्ट, एसएलपी और विशेष शिक्षक के साथ-साथ एक फिजियोथेरेपिस्ट (पीटी), एक ओटी, और एक सहायक प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ को भी शामिल किया जाता है। मूल्यांकन में प्रतिक्रिया की जाँच के लिए मोटर पहुँच को संबोधित करना आवश्यक है उदाहरण के लिए, जब कोई बच्चा इशारा नहीं कर सकता या बटन नहीं दबा सकता तो आई-गेज़ ट्रैकिंग सिस्टम का उपयोग करना। बैठने की व्यवस्था और मौखिक-मोटर खिलाने तथा भाषण संबंधी सीमाओं का भी मूल्यांकन किया जाता है।

संचार के लिए मोटर सीमाओं के लिए अनुकूलित AAC प्रणालियों, जैसे कि स्विच और आई-गेज़ चार्ट, का उपयोग किया जाता है, जिसे लक्षित ओरल-मोटर कार्य के साथ जोड़ा जाता है। सुनने के लिए उचित शारीरिक स्थिति बनाना एक प्राथमिक हस्तक्षेप प्राथमिकता है। सहायक उपकरणों को मजबूत ब्रैकेट का उपयोग करके व्हीलचेयर पर लगाया जाता है। टीम का मॉडल अंतःविषय है, जिसमें पीटी, ओटी और एसएलपी (SLP) शारीरिक स्थिरता को संचार पहुँच के साथ समन्वयित करते हैं।

दृष्टि बाधा और श्रवण बाधा (डेफब्लाइंडनेस)

सुनने और देखने दोनों की अक्षमता के संयोजन को बधिर-अंधता के रूप में जाना जाता है। यह सबसे जटिल विकलांगता प्रोफाइल में से एक है, क्योंकि जानकारी

प्राप्त करने के लिए बच्चे के दो प्राथमिक चैनल दृष्टि और श्रवण दोनों प्रभावित होते हैं।

टीम में एक ऑडियोलॉजिस्ट, एक नेत्र रोग विशेषज्ञ, एक लो विज़न स्पेशलिस्ट, एक बधिर-अंध विशेष शिक्षक, और एक ओरिएंटेशन और मोबिलिटी (ओ एंड एम) स्पेशलिस्ट शामिल हैं। मूल्यांकन दोहरे संवेदी कार्यात्मक इनपुट, शेष दृष्टि, स्पर्श संचार सीमाओं, और स्थानिक सुरक्षा मेट्रिक्स को मापता है।

संचार स्पर्श संकेत भाषा पर निर्भर करता है, जिसमें हाथ-पर-हाथ तरीके, ब्रेल उपकरण, संरचित स्पर्श प्रतीक, और टाडोमा एक ऐसी विधि जिसमें व्यक्ति वक्ता के चेहरे और गले पर अपना हाथ रखकर कंपन और मुंह की हलचल को महसूस करता है का उपयोग किया जाता है।

परिवार की भागीदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है: माता-पिता बच्चे के प्राथमिक स्पर्श संचारक और दुनिया को सुरक्षित रूप से जानने के लिए भौतिक कड़ी के रूप में काम करते हैं। टीम का मॉडल अंतःविषय है, जिसमें संवेदी, गति और भाषा विशेषज्ञों का पूर्ण एकीकरण व्यापक स्पर्श संबंधी देखभाल के लिए पारंपरिक व्यावसायिक सीमाओं को पार करता है।

16.7.3 सीखने की अक्षमता, बहु-अक्षमताएँ, और टीम अनुकूलन के सिद्धांत

सीखने की अक्षमता (एलडी) और श्रवण हानि

श्रवण हानि वाले बच्चे को सीखने की अक्षमता भी हो सकती है यह एक ऐसी स्थिति है जो बुद्धिमत्ता के स्तर से स्वतंत्र होकर, भाषा को पढ़ने, लिखने या संसाधित करने को प्रभावित करती है। इस संयोजन का कभी-कभी पता नहीं चल पाता है क्योंकि शैक्षणिक कठिनाइयों को गलत तरीके से पूरी तरह से श्रवण हानि के कारण माना जाता है।

टीम में एक ऑडियोलॉजिस्ट, एलडी (LD) में प्रशिक्षित एक विशेष शिक्षक, एक शैक्षणिक मनोवैज्ञानिक, एक नियमित शिक्षक और माता-पिता शामिल होते हैं। मूल्यांकन ध्वन्यात्मक प्रसंस्करण की असामान्यताओं, कार्यशील स्मृति की कमियों, श्रवण प्रसंस्करण की गति, और पढ़ने में होने वाली त्रुटियों के पैटर्न पर केंद्रित होता है।

संचार के लिए बहु-संवेदी ध्वन्यात्मक शिक्षण, स्पष्ट भाषा वैयाकरण प्रशिक्षण, और मुद्रित पाठ ट्रैकिंग सिस्टम का उपयोग किया जाता है। हस्तक्षेप में लक्षित श्रवण प्रसंस्करण अभ्यास और स्मृति रणनीति प्रशिक्षण शामिल हैं। पृष्ठभूमि शोर को फ़िल्टर करने के लिए व्यक्तिगत एफएम (FM) या डीएम (DM) सिस्टम का उपयोग किया जाता है। टीम का मॉडल परामर्शात्मक अंतःविषय है: मनोवैज्ञानिक और विशेष शिक्षक नियमित कक्षा शिक्षक को सीखने के समायोजनों पर मार्गदर्शन करते हैं।

बहु-विकलांगता और श्रवण हानि

जब श्रवण हानि एक साथ कई अन्य विकलांगताओं के साथ होती है, तो टीम अपनी सबसे बड़ी जटिलता तक पहुँच जाती है। इस प्रोफ़ाइल के लिए एक बाल श्रवण विशेषज्ञ, एक ईएनटी विशेषज्ञ, एक न्यूरोलॉजिस्ट, कई विशेष शिक्षकों, एक फिजियोथेरेपिस्ट, एक व्यावसायिक चिकित्सक, एक एसएलपी, और एक केस समन्वयक की आवश्यकता होती है।

यहाँ केस कोऑर्डिनेटर की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वे समग्र पुनर्वास योजना का प्रबंधन करते हैं, विभिन्न उपचारों के बीच हस्तक्षेप को रोकते हैं, परिवार की थकान को कम करते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी पेशेवर साझा लक्ष्यों की दिशा में काम कर रहे हैं। मूल्यांकन में व्यापक क्रॉस-सिस्टम घाटे

का मानचित्रण, चिकित्सा स्थिरता पर नज़र रखना, और तत्काल संवेदी-मोटर एक्सेस पॉइंट्स को प्राथमिकता देना शामिल है।

संचार में हाई-टेक और लो-टेक एएसी (वैकल्पिक और सहायक संचार), व्यक्तिगत सूक्ष्म-संकेतों, और बहु-संवेदी पर्यावरणीय इनपुट का एक गतिशील संयोजन उपयोग किया जाता है। हस्तक्षेप सबसे पहले तत्काल स्वास्थ्य और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतों को पूरा करता है, फिर बुनियादी संवेदी आराम स्थापित करता है, और अंत में बुनियादी संचार संकेतकों को स्थापित करता है। पारिवारिक भागीदारी जटिल चिकित्सा कार्यक्रमों का प्रबंधन करने, कई उपचारों में संतुलन बनाने, और टिकाऊ घरेलू देखभाल नेटवर्क बनाने पर केंद्रित होती है।

टीम मॉडल अंतःविषय है: एक ही प्राथमिक सेवा प्रदाता परिवार पर बोझ कम करने के लिए बहु-चिकित्सा योजना का समन्वय और वितरण करता है।

इस चरण में, आपको यह समझना चाहिए कि चाहे कोई भी स्थिति मौजूद हो, दो सिद्धांत स्थिर रहते हैं। पहला, टीम हमेशा व्यक्ति की विशिष्ट जरूरतों के इर्द-गिर्द बनाई जानी चाहिए न कि प्रशासनिक सुविधा के लिए। दूसरा, पुनर्वास प्रक्रिया में परिवार को हमेशा एक सक्रिय और सूचित भागीदार के रूप में समर्थन दिया जाना चाहिए।

16.7.4 अपनी प्रगति की जाँच करें

1. एक बहु-विषयक, एक अंतर-विषयक, और एक पार-विषयक टीम मॉडल के बीच अंतर समझाएँ। ऐसी एक स्थिति का उदाहरण दें जिसमें प्रत्येक मॉडल सबसे उपयुक्त हो।

2. हल्के सुनने की क्षमता में कमी की तुलना में गहरे सुनने की क्षमता में कमी के लिए एक बड़ी और अधिक विशेषज्ञ टीम की आवश्यकता क्यों होती है? गहरे सुनने की क्षमता में कमी वाली टीम में मौजूद कम से कम तीन अतिरिक्त टीम सदस्यों की पहचान करें जो आमतौर पर हल्की सुनने की क्षमता में कमी वाली टीम में मौजूद नहीं होते हैं।

3. श्रवण बाधित एक बच्चे में ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) का भी निदान होता है। वर्णन करें कि ऑडियोलॉजिकल मूल्यांकन और हस्तक्षेप के दौरान यह संयोजन दो विशिष्ट चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। टीम इन चुनौतियों का समाधान कैसे करती है?

4. बधिरता-अंधता (deafblindness) क्या है? इसमें शामिल विशेषज्ञ टीम के सदस्यों की पहचान करें और समझाएँ कि इस प्रोफ़ाइल के लिए ट्रांसडिसिप्लिनरी मॉडल को सबसे उपयुक्त क्यों माना जाता है।

5. एक एकाधिक विकलांगता टीम में एक केस कोऑर्डिनेटर की क्या भूमिका है? यह भूमिका परिवार के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

(जवाब सेक्शन 16.10 में दिए गए हैं)

16.8 सारांश

इस इकाई में बताया गया है कि श्रवण हानि वाले व्यक्तियों की पहचान, मूल्यांकन, हस्तक्षेप, शिक्षा और पुनर्वास के लिए एक सहयोगात्मक, बहु-विषयक टीम की आवश्यकता होती है, जिसकी संरचना व्यक्ति की आयु, श्रवण हानि की

गंभीरता और किसी भी संबंधित स्थितियों की उपस्थिति द्वारा निर्धारित की जाती है। किसी निश्चित मॉडल का पालन करने के बजाय, पुनर्वास टीम को प्रत्येक व्यक्ति की अनूठी जरूरतों के अनुसार तैयार किया जाता है और जैसे-जैसे उन जरूरतों में बदलाव आता है, यह समय के साथ बदलती भी रहती है।

आपने इस टीम के भीतर विभिन्न हितधारकों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिकाओं के बारे में जाना। श्रवण विशेषज्ञ (ऑडियोलॉजिस्ट) आमतौर पर स्क्रीनिंग और नैदानिक मूल्यांकन के माध्यम से श्रवण हानि की पहचान करने, श्रवण तकनीक की सिफारिश और उसे फिट करने, और परिवारों को परामर्श देने वाले पहले पेशेवर होते हैं। वाक्-भाषा चिकित्सक (स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट) उपयुक्त हस्तक्षेप दृष्टिकोणों के माध्यम से भाषण, भाषा, सुनने और संचार कौशल का मूल्यांकन और विकास करते हैं। विशेष शिक्षक मूल्यांकन के निष्कर्षों का उपयोग व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना बनाने, शिक्षण विधियों को अनुकूलित करने, और शिक्षार्थी के शैक्षणिक, संचार, सामाजिक और कार्यात्मक विकास में सहायता करने के लिए करते हैं। सांकेतिक भाषा शिक्षक सांकेतिक भाषा में व्यवस्थित निर्देश प्रदान करते हैं, जबकि शैक्षिक दुभाषिए समावेशी शैक्षिक परिवेश में कक्षा के संचार तक समान पहुंच सुनिश्चित करते हैं। बधिर मेंटर परिवारों को बधिर संस्कृति से परिचित कराकर, प्रभावी दृश्य संचार का प्रदर्शन करके, और सकारात्मक पहचान के विकास में सहायता करके अपने प्रत्यक्ष अनुभव का योगदान देते हैं। माता-पिता और देखभाल करने वाले बच्चे के प्राथमिक संचार भागीदार और पुनर्वास टीम के सक्रिय सदस्य बने रहते हैं, जो घर पर निरंतर समर्थन प्रदान करते हैं और शैक्षिक तथा चिकित्सीय निर्णय लेने में भाग लेते हैं। सबसे बढ़कर, श्रवण बाधित व्यक्ति ही केंद्रीय हितधारक है,

जिसकी प्राथमिकताओं, अधिकारों, लक्ष्यों और सक्रिय भागीदारी को योजना और सेवा वितरण के हर पहलू का मार्गदर्शन करना चाहिए।

इस इकाई में यह भी दर्शाया गया है कि जीवन भर पुनर्वास टीमें कैसे बदलती हैं। शैशवावस्था के दौरान, हस्तक्षेप परिवार-केंद्रित होता है, जिसमें माता-पिता व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजना (IFSP) के तहत प्राथमिक हस्तक्षेप प्रदाताओं के रूप में कार्य करते हैं। प्रीस्कूल और स्कूल के वर्षों में, टीम में विशेष शिक्षक, वाक्-भाषा विशेषज्ञ, कक्षा शिक्षक, मनोवैज्ञानिक और अन्य शैक्षिक पेशेवर शामिल होते हैं जो व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रमों (IEPs) के माध्यम से एक साथ काम करते हैं। किशोरावस्था के दौरान, व्यावसायिक सलाहकार, संक्रमण विशेषज्ञ, और करियर मार्गदर्शन पेशेवर अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि ध्यान स्वतंत्र जीवन, उच्च शिक्षा, और रोजगार की ओर स्थानांतरित हो जाता है। वयस्कता में, पुनर्वास कार्यस्थल पर सुविधाएं, व्यावसायिक पुनर्वास, आजीवन संचार सहायता, और सामुदायिक भागीदारी पर जोर देता है, जबकि परिवार के सदस्य एक अधिक सहायक और परामर्शात्मक भूमिका निभाते हैं।

आपने यह भी जांच किया कि श्रवण हानि की गंभीरता पुनर्वास टीम की संरचना को कैसे प्रभावित करती है। हल्की श्रवण हानि वाले व्यक्तियों को केवल सीमित पेशेवर सहायता की आवश्यकता हो सकती है, जबकि वे मुख्यधारा के शैक्षणिक परिवेश में सफलतापूर्वक एकीकृत रहते हैं। इसके विपरीत, गंभीर या गहरी श्रवण हानि वाले व्यक्तियों को अक्सर व्यापक, अंतःविषय हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है जिसमें कई विशेषज्ञ, उन्नत श्रवण प्रौद्योगिकियां, सांकेतिक भाषा का प्रशिक्षण, बधिर मेंटर, और गहन शैक्षणिक सहायता शामिल होती है।

इस इकाई ने आगे यह भी बताया कि बौद्धिक अक्षमता, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, सेरेब्रल पाल्सी, बधिर-अंधता, सीखने की अक्षमता, या एकाधिक विकलांगताओं सहित संबंधित स्थितियों की उपस्थिति के लिए अतिरिक्त पेशेवरों, संशोधित मूल्यांकन प्रक्रियाओं, विशेष हस्तक्षेप रणनीतियों और अनुकूलित संचार विधियों की आवश्यकता होती है। ये संयोजन पुनर्वास की जटिलता को बढ़ाते हैं और विभिन्न विषयों के पेशेवरों के बीच घनिष्ठ समन्वय की आवश्यकता होती है।

सभी परिस्थितियों में, इकाई ने कई मौलिक सिद्धांतों पर जोर दिया जो प्रभावी पुनर्वास का मार्गदर्शन करते हैं। सेवाएँ हमेशा व्यक्ति की विशिष्ट शक्तियों और ज़रूरतों के अनुसार व्यक्तिगत होनी चाहिए, परिवारों को पुनर्वास प्रक्रिया के दौरान सूचित और सक्रिय भागीदारों के रूप में माना जाना चाहिए, पेशेवरों को एक अंतःविषय ढांचे के भीतर सम्मानपूर्वक सहयोग करना चाहिए, और श्रवण बाधित व्यक्ति सभी योजना और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं का केंद्र बना रहना चाहिए। ये सिद्धांत पुनर्वास के लिए अधिकार-आधारित, परिवार-केंद्रित और व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, जो "हमारे बिना हमारे बारे में कुछ भी नहीं" के मार्गदर्शक दर्शन के अनुरूप है।

16.9 सामान्य / तकनीकी शब्दावली

ध्वनिक हाइलाइटिंग — एक चिकित्सीय तकनीक जिसमें कोई वक्ता विशिष्ट भाषण ध्वनियों पर ज़ोर देने और श्रवण ध्यान में सुधार करने के लिए स्वर, वॉल्यूम या गति में बदलाव करता है।

सहायक ऑडियोग्राम — एक ग्राफ़ जो श्रवण सहायता या कॉक्लियर इम्प्लांट जैसे ध्वनि-वर्धन उपकरणों का उपयोग करते समय किसी व्यक्ति की श्रवण सीमाओं को दर्शाता है।

परिष्कृत और वैकल्पिक संचार (एएसी) — उपकरणों, रणनीतियों और तकनीकों की एक श्रृंखला जो जटिल संचार आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के लिए बोली जाने वाली भाषा की पूरक या उसकी जगह लेती है।

श्रवण मस्तिष्क-तन्त्र प्रतिक्रिया (एबीआर) — एक वस्तुनिष्ठ इलेक्ट्रोफिजियोलॉजिकल परीक्षण जो श्रवण तंत्रिका और मस्तिष्क-तन्त्र की ध्वनि के प्रति प्रतिक्रिया को मापता है, और इसका उपयोग आमतौर पर शिशुओं और परीक्षण में कठिनाई वाले व्यक्तियों में श्रवण सीमा का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है।

ऑडिटरी स्टेडी-स्टेट रिस्पॉन्स (ASSR) — एक वस्तुनिष्ठ श्रवण परीक्षण जो निरंतर ध्वनि उत्तेजनाओं का उपयोग करके आवृत्ति-विशिष्ट श्रवण सीमाओं का अनुमान लगाता है, जो विशेष रूप से शिशुओं के श्रवण मूल्यांकन और श्रवण यंत्र फिटिंग के लिए उपयोगी है।

ऑडिटरी-वर्बल थेरेपी (AVT) — एक संरचित हस्तक्षेप पद्धति जो मुख्य रूप से सुनने के माध्यम से बोली जाने वाली भाषा को विकसित करती है, आमतौर पर उन बच्चों के लिए जो श्रवण यंत्र या कॉक्लियर इम्प्लांट का उपयोग करते हैं।

व्यवहार हस्तक्षेप योजना (BIP) एक व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) के भीतर एक संरचित योजना जो सीखने और भागीदारी को प्रभावित करने वाले

व्यवहारों को संबोधित करने के लिए सकारात्मक व्यवहार रणनीतियों का उपयोग करती है।

द्विभाषी-द्विसांस्कृतिक दृष्टिकोण एक शैक्षिक दृष्टिकोण जो अधिकांश बोली जाने वाली या लिखित भाषा में साक्षरता विकसित करते हुए सांकेतिक भाषा में प्रवीणता को बढ़ावा देता है और बधिर सांस्कृतिक पहचान को प्रोत्साहित करता है।

केस समन्वयक एक पेशेवर जो एकीकृत, परिवार-केंद्रित हस्तक्षेप सुनिश्चित करने के लिए कई विशेषज्ञों के बीच पुनर्वास सेवाओं का समन्वय करता है।

कोक्लियर इम्प्लांट एक सर्जरी द्वारा प्रत्यारोपित इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जो गंभीर से गहरे सुनने की क्षमता में कमी वाले व्यक्तियों को ध्वनि तक पहुंच प्रदान करने के लिए श्रवण तंत्रिका को सीधे उत्तेजित करता है।

कंडीशन्ड प्ले ऑडियोमेट्री (CPA) एक व्यवहारिक श्रवण मूल्यांकन जिसमें छोटे बच्चे सरल खेल गतिविधियों के माध्यम से ध्वनियों पर प्रतिक्रिया करते हैं।

क्यूड स्पीच एक दृश्य संचार प्रणाली जो हाथों के आकार और स्थिति को होंठों की गति के साथ जोड़ती है ताकि उन भाषण ध्वनियों को अलग किया जा सके जो होंठ-पठन के दौरान समान दिखती हैं।

डेफब्लाइंडनेस सुनने और देखने की क्षमता की एक संयुक्त कमी जो संचार, सूचना तक पहुंच, गतिशीलता और स्वतंत्र कार्यप्रणाली को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

असंवेदनशीलता एक क्रमिक व्यवहारिक तकनीक जिसका उपयोग व्यक्तियों को श्रवण यंत्रों, श्रवण संबंधी प्रक्रियाओं, या अन्य संवेदी अनुभवों को सहन करने में मदद करने के लिए किया जाता है।

परिवार-केंद्रित प्रारंभिक हस्तक्षेप (FCEI) एक हस्तक्षेप दृष्टिकोण जो परिवारों को एक छोटे बच्चे के संचार और विकासात्मक प्रगति के प्राथमिक सुविधारकों के रूप में सशक्त बनाता है।

एफएम/डीएम वायरलेस सिस्टम एक व्यक्तिगत सहायक श्रवण प्रणाली जो वक्ता की आवाज़ को सीधे श्रवण उपकरणों तक पहुँचाती है, जिससे शोर वाले वातावरण में भाषण समझने में सुधार होता है।

वयस्कों के लिए श्रवण हानि सूची (HHIA) एक मानकीकृत प्रश्नावली जो वयस्कों में श्रवण हानि के भावनात्मक और सामाजिक प्रभावों को मापती है।

गृह-आधारित हस्तक्षेप हस्तक्षेप को दैनिक पारिवारिक दिनचर्या में एकीकृत करने के लिए घर के वातावरण में प्रदान की जाने वाली चिकित्सीय और शैक्षिक सेवाएँ।

व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) एक लिखित शैक्षिक योजना जो किसी छात्र के वर्तमान प्रदर्शन, सीखने के लक्ष्यों, सुविधाओं और सहायता सेवाओं की रूपरेखा तैयार करती है।

व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजना (IFSP) तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए एक परिवार-केंद्रित योजना जो पारिवारिक प्राथमिकताओं, विकासात्मक लक्ष्यों और प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं की पहचान करती है।

अंतर-विषयक टीम मॉडल एक सहयोगात्मक टीम दृष्टिकोण जिसमें पेशेवर स्वतंत्र रूप से आकलन करते हैं लेकिन संयुक्त रूप से एकीकृत हस्तक्षेप रणनीतियों की योजना बनाते हैं।

भाषा की कमी एक विकासात्मक स्थिति जो प्रारंभिक बचपन के दौरान एक सुलभ प्राकृतिक भाषा तक अपर्याप्त पहुंच के परिणामस्वरूप होती है।

भाषाई पहुंच संचार की ऐसी व्यवस्था जो किसी व्यक्ति की पसंदीदा भाषा और संचार के तरीके के लिए पूरी तरह से सुलभ हो।

श्रवण थकान खराब श्रवण प्रणाली के माध्यम से भाषण को समझने के लिए निरंतर प्रयास के कारण होने वाला शारीरिक और मानसिक थकान।

बहु-अक्षमताएँ — एक ही व्यक्ति में दो या दो से अधिक अक्षमताओं की उपस्थिति, जिसके लिए समन्वित बहु-विषयक पुनर्वास की आवश्यकता होती है।

बहु-विषयक टीम मॉडल एक सेवा मॉडल जिसमें पेशेवर अपने-अपने विषयों के भीतर स्वतंत्र रूप से काम करते हैं, जबकि समग्र पुनर्वास लक्ष्यों का समन्वय करते हैं।

नॉन-मैनुअल फीचर्स (NMFs) चेहरे के हाव-भाव, सिर की हरकतें और शरीर की मुद्रा जो साइन लैंग्वेज में व्याकरण और अर्थ से जुड़ी जानकारी देती हैं।

नॉन-वर्बल कॉग्निटिव असेसमेंट मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के तरीके जो बोली जाने वाली या लिखित भाषा पर निर्भर हुए बिना बौद्धिक क्षमताओं को मापते हैं।

ओरिएंटेशन और मोबिलिटी (O&M) स्पेशलिस्ट एक प्रोफेशनल जो दृष्टिबाधित या बहरे-अंधे (deafblind) लोगों को सुरक्षित और स्वतंत्र रूप से चलने-फिरने में मदद करता है।

ओटोअकॉस्टिक एमिशन (OAE) स्वस्थ कॉक्लियर हेयर सेल्स से निकलने वाली आवाज़ें जिन्हें कॉक्लिया के काम करने की क्षमता को जांचने के लिए मापा जाता है, आमतौर पर नवजात शिशुओं की सुनने की क्षमता की जांच के दौरान।

ओटाइटिस मीडिया विद एफ्यूजन (OME) कान के बीच के हिस्से में बिना संक्रमण वाला तरल पदार्थ जमा होना, जिससे कुछ समय के लिए सुनने में दिक्कत (कंडक्टिव हियरिंग लॉस) हो सकती है।

प्रैग्मैटिक्स अलग-अलग बातचीत के हालात में भाषा के सही इस्तेमाल से जुड़े सामाजिक नियम।

रियल-ईयर मेज़रमेंट (REM) एक प्रक्रिया जो कान की नली के अंदर आवाज़ के स्तर को मापकर हियरिंग एड के काम करने की क्षमता की जांच करती है।

रेसिडुअल हियरिंग सुनने की क्षमता कम होने के बाद भी बची हुई सुनने की क्षमता जिसका इस्तेमाल किया जा सके।

सेल्फ-एडवोकेसी अपने अधिकारों, ज़रूरतों, पसंद और फैसलों को समझने, बताने और उनके लिए आवाज़ उठाने की क्षमता।

सेंसरीन्यूरल हियरिंग लॉस कॉक्लिया, कान के अंदरूनी हिस्सों या सुनने वाली नस (ऑडिटरी नर्व) को नुकसान पहुँचने से सुनने की क्षमता का कम होना।

सिग्नल-टू-नॉइज़ रेश्यो (SNR) बातचीत और बैकग्राउंड शोर की तीव्रता के बीच का अंतर; SNR जितना ज़्यादा होता है, बातचीत को समझना उतना ही आसान होता है।

स्पेशियल मैपिंग साइन लैंग्वेज में लोगों, चीज़ों, रिश्तों और व्याकरण के ढांचों को दिखाने के लिए भौतिक जगह का इस्तेमाल करना।

टैक्टाइल साइन लैंग्वेज छूकर महसूस की जाने वाली साइन लैंग्वेज, जिसका इस्तेमाल मुख्य रूप से बहरे-अंधे (deafblind) लोग करते हैं।

टडोमा मेथड बातचीत का एक तरीका जिसमें बहरा-अंधा (deafblind) व्यक्ति बोलने वाले के चेहरे और गले पर अपना हाथ रखकर बातचीत को महसूस करता है।

टोटल कम्युनिकेशन सीखने-सिखाने का एक तरीका जिसमें व्यक्ति की ज़रूरतों के हिसाब से बोली जाने वाली भाषा, साइन लैंग्वेज, लिप-रीडिंग, इशारे, लिखना और बातचीत के दूसरे तरीकों को मिलाया जाता है।

ट्रांसडिसिप्लिनरी टीम मॉडल एक मिलकर काम करने का मॉडल जिसमें अलग-अलग क्षेत्रों के प्रोफेशनल अपनी विशेषज्ञता साझा करते हैं, और एक मुख्य सर्विस प्रोवाइडर मदद की प्रक्रिया को कोऑर्डिनेट करता है।

यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (UDL) सीखने का एक ढांचा जो सीखने के अनुभवों को इस तरह से डिज़ाइन करता है कि वे जुड़ने, जानकारी पाने और अपनी बात कहने के कई तरीकों से सुलभ हों। यूनिवर्सल न्यूबॉर्न हियरिंग स्क्रीनिंग (UNHS) एक ऐसा प्रोग्राम जो जन्म के तुरंत बाद सभी नवजात शिशुओं की सुनने की क्षमता की जांच करता है, ताकि सुनने में कमी का जल्द पता चल सके और समय रहते ज़रूरी मदद दी जा सके।

विज़ुअल अटेंशन-गेटिंग (ध्यान खींचने के दृश्य तरीके) इशारों वाली बातचीत शुरू करने से पहले ध्यान खींचने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले दृश्य या स्पर्श-आधारित तरीके, जैसे हाथ हिलाना या धीरे से थपथपाना।

वोकेशनल काउंसलर (व्यावसायिक सलाहकार) एक पुनर्वास विशेषज्ञ जो दिव्यांग लोगों की करियर प्लानिंग, व्यावसायिक प्रशिक्षण और नौकरी पाने की प्रक्रिया में मदद करता है।

16.10 अपनी प्रगति की जाँच करने वाले प्रश्नों के उत्तर

16.3.4 अपनी प्रगति की जाँच करें

1. नवजात शिशुओं की श्रवण जांच के दौरान ऑडियोलॉजिस्ट किन दो प्रमुख परीक्षणों का उपयोग करते हैं? संक्षेप में बताएं कि प्रत्येक परीक्षण क्या मापता है।

   यूनिवर्सल न्यूबॉर्न हियरिंग स्क्रीनिंग में दो मुख्य टेस्ट किए जाते हैं: ट्रांजिएंट इवोक्ड ओटोअकॉस्टिक एमिशन (TEOAE) टेस्ट और ऑटोमेटेड ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पॉन्स (ABR) टेस्ट। TEOAE टेस्ट में,

आवाज़ के स्टिमुलस (उत्तेजना) के जवाब में स्वस्थ भीतरी कान से स्वाभाविक रूप से निकलने वाली आवाज़ों को मापा जाता है। अगर भीतरी कान में कोई खराबी हो, तो ये आवाज़ें या तो सुनाई नहीं देतीं या कम हो जाती हैं। ABR टेस्ट में आवाज़ के प्रति ऑडिटरी नर्व और ब्रेनस्टेम के इलेक्ट्रिकल रिस्पॉन्स को मापा जाता है। इससे यह पता चलता है कि आवाज़ के सिग्नल कान से दिमाग तक सही तरीके से पहुँच रहे हैं या नहीं। दोनों ही टेस्ट सुरक्षित और ऑब्जेक्टिव हैं, और इन्हें सोते हुए नवजात शिशुओं पर भी किया जा सकता है।

2. JCIH 1-3-6 समयरेखा की व्याख्या करें। श्रवण हानि वाले बच्चे के लिए शीघ्र पहचान क्यों महत्वपूर्ण है?

   JCIH 1-3-6 टाइमलाइन, नवजात शिशुओं में सुनने की क्षमता में कमी (hearing loss) के शुरुआती इलाज के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानी जाने वाली गाइडलाइन है। इसमें सलाह दी जाती है कि सभी नवजात शिशुओं की सुनने की क्षमता की जांच (स्क्रीनिंग) एक महीने की उम्र तक हो जानी चाहिए, अगर सुनने की क्षमता में कोई कमी पाई जाती है तो उसकी पुष्टि तीन महीने की उम्र तक हो जानी चाहिए, और बच्चे को छह महीने की उम्र तक 'अर्ली इंटरवेंशन प्रोग्राम' (शुरुआती इलाज या मदद के कार्यक्रम) में शामिल कर लेना चाहिए। शुरुआती पहचान इसलिए ज़रूरी है क्योंकि जीवन के शुरुआती छह महीने सुनने से जुड़े दिमाग के विकास के लिए बहुत अहम समय होते हैं। इस दौरान समय पर आवाज़ को बढ़ाने (amplification) और ज़रूरी मदद (intervention) मिलने से, सुनने की क्षमता में कमी का बोलने, भाषा और सोचने-समझने की क्षमता

(cognitive development) पर पड़ने वाला लंबे समय का असर काफी कम हो जाता है।

3. व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) क्या है? किसी भी तीन घटकों का वर्णन करें जिन्हें एक सुव्यवस्थित IEP में शामिल होना चाहिए।

'इंडिविजुअलाइज्ड एजुकेशन प्रोग्राम' (IEP) विकलांग छात्र के लिए तैयार किया गया एक व्यवस्थित योजना दस्तावेज़ है। इसमें छात्र के शैक्षिक प्रदर्शन के मौजूदा स्तर का वर्णन होता है, सीखने के मापने योग्य वार्षिक लक्ष्य तय किए जाते हैं, ज़रूरी शिक्षण संबंधी बदलावों और सहायता सेवाओं की पहचान की जाती है, और छात्र की प्रगति का मूल्यांकन करने के मानदंड तय किए जाते हैं। एक अच्छी तरह से व्यवस्थित IEP के तीन ज़रूरी हिस्से हैं: (a) छात्र के मौजूदा शैक्षिक प्रदर्शन के स्तर का स्पष्ट विवरण; (b) सीखने के विशिष्ट, मापने योग्य और समय-सीमा वाले लक्ष्य; और (c) छात्र को मिलने वाली सुविधाओं, सहायक तकनीक या सहायता सेवाओं का विवरण।

4. एक विशेष शिक्षक और एक स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट दोनों श्रवण हानि वाले बच्चे के साथ काम करते हैं। उनकी भूमिकाएँ कैसे भिन्न होती हैं? वे किन-किन तरीकों से सहयोग करते हैं?

स्पेशल एजुकेटर बच्चे के एकेडमिक और एजुकेशनल विकास पर ध्यान देते हैं। वे करिकुलम में बदलाव करते हैं, IEPs बनाते हैं और यह पक्का करते हैं कि बच्चे को क्लासरूम में सीखने का मौका मिले। स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट (SLP) बोलने, भाषा और बातचीत करने के कौशल के विकास पर ध्यान देते हैं। वे बोलने की आवाज़ में होने वाली गलतियों की जांच करते हैं, भाषा थेरेपी के लक्ष्य तय करते हैं और ऑडिटरी-वर्बल

थेरेपी देते हैं। ये दोनों प्रोफेशनल कई तरह से मिलकर काम करते हैं: SLP, एकेडमिक प्लानिंग के लिए भाषा से जुड़े विकास के डेटा को स्पेशल एजुकेटर के साथ शेयर करते हैं, और जब किसी स्टूडेंट को क्लासरूम में बातचीत करने में दिक्कत होती है और उसे खास थेरेपी की ज़रूरत होती है, तो स्पेशल एजुकेटर SLP से सलाह लेते हैं। दोनों प्रोफेशनल मिलकर माता-पिता को घर पर भाषा से जुड़ी रणनीतियों के बारे में भी गाइड करते हैं।

5. ऑडिटरी-वर्बल थेरेपी (AVT) क्या है? एक ऐसी स्थिति की पहचान करें जिसमें AVT एक उपयुक्त हस्तक्षेप विकल्प होगा।

   ऑडिटरी-वर्बल थेरेपी (AVT) एक व्यवस्थित तरीका है जो सुनने में अक्षम बच्चों को सुनकर बोलचाल की भाषा सीखने में मदद करता है। इसमें होंठों को पढ़कर समझने (लिप-रीडिंग) या सांकेतिक भाषा (साइन लैंग्वेज) का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। इसके बजाय, यह बच्चे को भाषा सीखने के मुख्य माध्यम के तौर पर अपनी बची-खुची सुनने की क्षमता का इस्तेमाल करना सिखाता है, जिसे हियरिंग एड या कॉक्लियर इम्प्लांट के ज़रिए बेहतर बनाया जाता है। AVT ऐसे बच्चे के लिए सही विकल्प हो सकता है जिसकी कम उम्र में ही कॉक्लियर इम्प्लांट की सर्जरी हुई हो, जिसके ऑडियोग्राम से पता चलता हो कि वह डिवाइस के ज़रिए बोलने की आवाज़ें ठीक से सुन पा रहा है, और जिसका परिवार बातचीत के मुख्य माध्यम के तौर पर बोलचाल की भाषा को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हो।

16.4.6 अपनी प्रगति की जाँच करें

1. भाषा वंचितता शब्द की व्याख्या करें। श्रवण बाधित बच्चे में भाषा वंचितता को रोकने में माता-पिता की क्या भूमिका है?

   'लैंग्वेज डेप्रिवेशन' (भाषा से वंचित रहने) का मतलब है विकास के दौरान होने वाला वह गंभीर नुकसान, जो तब होता है जब बच्चे को दिमाग के विकास के अहम शुरुआती सालों में पूरी तरह से समझ में आने वाली स्वाभाविक भाषा लगातार नहीं मिल पाती। सुनने में अक्षम बच्चे के साथ ऐसा तब हो सकता है जब उसके आस-पास के माहौल में न तो पूरी तरह से समझ में आने वाली 'साइन लैंग्वेज' (इशारों की भाषा) हो और न ही डिवाइस के ज़रिए बोली जाने वाली भाषा को सुनने का पर्याप्त साधन हो। माता-पिता बातचीत के चुने हुए तरीके जैसे बोली जाने वाली भाषा, साइन लैंग्वेज या दोनों का रोज़मर्रा के कामों (जैसे खाना खाते समय, खेलते समय और सोने के समय) में लगातार इस्तेमाल करके बच्चे को भाषा से वंचित रहने की स्थिति से बचा सकते हैं। माता-पिता को बच्चे के साथ बातचीत करने वाले मुख्य और सबसे ज़्यादा समय बिताने वाले व्यक्ति की भूमिका निभानी चाहिए और हर दिन घर में भाषा से भरपूर माहौल बनाना चाहिए।

2. एक बधिर मार्गदर्शक और एक सांकेतिक भाषा शिक्षक की भूमिका में क्या अंतर है? दोनों को महत्वपूर्ण हितधारक क्यों माना जाता है?

   'डेफ मेंटर' (बधिर मार्गदर्शक) एक प्रशिक्षित बधिर या कम सुनने वाले वयस्क होते हैं जो परिवारों को घर पर सहायता, भाषाई मॉडलिंग और सांस्कृतिक मार्गदर्शन देते हैं। उनकी भूमिका मुख्य रूप से साथियों की

तरह सहायता करने, अपने निजी अनुभवों को साझा करने और संस्कृति से परिचित कराने की होती है। वे औपचारिक भाषा शिक्षक नहीं होते हैं। 'साइन लैंग्वेज टीचर' (साइन भाषा शिक्षक) एक प्रशिक्षित शिक्षक होते हैं जो साइन भाषा के व्याकरण, शब्दावली और वाक्य-संरचना (सिंटैक्स) के बारे में व्यवस्थित और पाठ्यक्रम-आधारित शिक्षा देते हैं। उनकी भूमिका औपचारिक भाषा की शिक्षा देने की होती है। दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। डेफ मेंटर परिवार को स्वाभाविक और सहयोगी तरीके से बधिर संस्कृति और विज़ुअल कम्युनिकेशन (दृश्य संचार) के साथ सहज होने में मदद करते हैं। साइन लैंग्वेज टीचर व्यवस्थित शिक्षण के माध्यम से बच्चे और परिवार में साइन भाषा की औपचारिक भाषाई दक्षता विकसित करते हैं। वे मिलकर बच्चे के विकास के सांस्कृतिक और भाषाई, दोनों पहलुओं में सहायता करते हैं।

3. एक शैक्षणिक दुभाषिए की व्यावसायिक जिम्मेदारियों का वर्णन करें। कक्षा के माहौल में एक दुभाषिए को किन नैतिक सिद्धांतों का पालन करना चाहिए?

एक एजुकेशनल दुभाषिए/इंटरप्रेटर क्लासरूम में बोली जाने वाली बातों का साइन लैंग्वेज में अनुवाद करता है और बहरे छात्र के साइन-आधारित जवाबों को तुरंत टीचर तक पहुँचाता है। वे तकनीकी शब्दों को पहले से देखकर लेसन की तैयारी करते हैं। वे खुद को ऐसी जगह रखते हैं जहाँ से छात्र उन्हें साफ़-साफ़ देख सके। वे असेसमेंट के दौरान सवालों की मुश्किल या मतलब बदले बिना निर्देशों का अनुवाद करके मदद करते हैं। वे IEP टीमों को क्लासरूम की उन बातों के बारे में सलाह देते हैं जो अनुवाद की क्वालिटी पर असर डालती हैं। उनकी भूमिका से जुड़े मुख्य नैतिक सिद्धांत

ये हैं: निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ बने रहना; खुद पढ़ाना, समझाना या ट्यूशन न देना; छात्र की आज़ादी बनाए रखना; छात्र की जानकारी गोपनीय रखना; और बिना किसी भेदभाव या बात को आसान बनाए, टीचर की बात और छात्र के जवाबों को सही-सही बताना।

4. श्रवण बाधित व्यक्तियों के पुनर्वास के संदर्भ में "हमारे बिना हमारे बारे में कुछ नहीं" (Nothing About Us Without Us) सिद्धांत का क्या अर्थ है? आत्म-वकालत का एक व्यावहारिक उदाहरण दें।

   UN कन्वेंशन ऑन द राइट्स ऑफ़ पर्सन्स विद डिसेबिलिटीज (CRPD) में शामिल सिद्धांत "हमारे बारे में कुछ भी हमारे बिना नहीं" का मतलब है कि दिव्यांग लोगों पर असर डालने वाला कोई भी फ़ैसला उनकी सीधी और सार्थक भागीदारी के बिना नहीं लिया जाना चाहिए। रिहैबिलिटेशन (पुनर्वास) के मामले में, इसका मतलब है कि सुनने में अक्षम व्यक्ति को हर फ़ैसले में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए चाहे वह बातचीत का तरीका चुनना हो, सुनने की डिवाइस चुनना हो या IEP में लक्ष्य तय करना हो। खुद के लिए आवाज़ उठाने (सेल्फ़-एडवोकेसी) का एक व्यावहारिक उदाहरण वह छात्र है जो देखता है कि उसके क्लासरूम का FM सिस्टम स्टेटिक (शोर) पैदा कर रहा है, फिर वह अपने टीचर को बताता है और शांति से डिवाइस की जाँच करने और चैनल रीसेट करने का अनुरोध करता है। यह काम दिखाता है कि छात्र अपनी ज़रूरतों को समझता है और उन्हें पूरा करने के लिए स्वतंत्र रूप से कदम उठाता है।

5. भारत में श्रवण बाधित बच्चों के माता-पिता द्वारा सामना की जाने वाली दो चुनौतियों की पहचान करें। इन चुनौतियों से निपटने में मदद करने के लिए कौन सी सहायता प्रणालियाँ मौजूद हैं?

   भारत में सुनने की क्षमता में कमी वाले बच्चों के माता-पिता को मुख्य रूप से दो चुनौतियों का सामना करना पड़ता है: (a) भावनात्मक परेशानी बीमारी का पता चलने के बाद, कई माता-पिता दुख, सदमे, सच्चाई को न मान पाने और चिंता का अनुभव करते हैं, और उन्हें अक्सर प्रोफेशनल काउंसलिंग नहीं मिल पाती, खासकर ग्रामीण इलाकों में; और (b) आर्थिक बोझ सुनने की मशीन, बैटरी, मॉइस्चर किट और बार-बार क्लिनिक जाने से लगातार काफी खर्च होता है जिसे कई परिवार उठा नहीं पाते। भारत में उपलब्ध सपोर्ट सिस्टम में ADIP स्कीम (विकलांग व्यक्तियों को सहायक उपकरण खरीदने/लगवाने के लिए सहायता) शामिल है, जो सब्सिडी वाली सुनने की मशीन और कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जरी की सुविधा देती है; आयुष्मान भारत स्वास्थ्य योजना, जिसमें कुछ सर्जिकल खर्च कवर होते हैं; RPWD एक्ट 2016 के तहत कानूनी सुरक्षा, जो माता-पिता को सही स्कूल में एडमिशन और ज़रूरी सुविधाएं मांगने का अधिकार देती है; और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सुझाए गए माता-पिता के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम, जिन्हें बीमारी का पता चलने के समय से ही शुरू किया जाना चाहिए।

16.6.4 अपनी प्रगति की जाँच करें — 3

1. एक अंतःविषय टीम मॉडल क्या है? समझाएँ कि 0-3 वर्ष की आयु के श्रवण हानि वाले शिशुओं के लिए यह मॉडल सबसे उपयुक्त क्यों माना जाता है।

ट्रांसडिसिप्लिनरी टीम मॉडल एक ऐसा टीम स्ट्रक्चर है जिसमें अलग-अलग क्षेत्रों के प्रोफेशनल अपनी आम प्रोफेशनल सीमाओं से आगे बढ़कर काम करते हैं। वे एक-दूसरे को और सबसे ज़रूरी बात, घर पर इंटीग्रेटेड इंटरवेंशन (समन्वित सहायता) देने के लिए मुख्य देखभाल करने वाले (केयरगिवर) को ट्रेनिंग देते हैं। यह मॉडल 0-3 साल के बच्चों के लिए सबसे सही है क्योंकि बच्चा अपना ज़्यादातर समय घर पर बिताता है, न कि क्लिनिक में। प्रोफेशनल बच्चे को सिर्फ़ कुछ समय के लिए ही देख पाते हैं। जबकि माता-पिता पूरे दिन बच्चे के साथ रहते हैं। रोज़मर्रा के कामों जैसे खाना खिलाना, नहलाना और खेलने के दौरान लगातार भाषा से जुड़ी गतिविधियाँ और सुनने से जुड़ी एक्टिविटीज़ कराने के लिए माता-पिता को ट्रेनिंग देकर, यह ट्रांसडिसिप्लिनरी मॉडल बच्चे के शुरुआती विकास के अहम समय में उसे भाषा के संपर्क में ज़्यादा से ज़्यादा लाता है। माता-पिता मुख्य इंटरवेंशन कोऑर्डिनेटर बन जाते हैं, जिन्हें प्रोफेशनल टीम का मार्गदर्शन और सहयोग मिलता है।

2. टीम के उन चार सदस्यों की पहचान करें जो आमतौर पर श्रवण हानि वाले स्कूल-उम्र के बच्चे का समर्थन करने में शामिल होते हैं। प्रत्येक सदस्य की भूमिका का संक्षेप में वर्णन करें।

सुनने की क्षमता में कमी वाले स्कूल जाने की उम्र के बच्चे के साथ आमतौर पर ये चार टीम सदस्य जुड़े होते हैं: (a) ऑडियोलॉजिस्ट, जो सुनने की क्षमता (थ्रेशोल्ड) की निगरानी करता है, डिवाइस के परफॉर्मेंस की जांच करता है और

क्लासरूम में आवाज़ की गुणवत्ता (अकॉस्टिक्स) के बारे में सलाह देता है; (b) स्पेशल एजुकेटर, जो IEP (व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम) बनाता और लागू करता है, पाठ्यक्रम की सामग्री में बदलाव करता है और खास तौर पर पढ़ाने में मदद देता है; (c) रेगुलर क्लासरूम टीचर, जो आम क्लासरूम में ज़रूरी बदलाव लागू करता है और स्पेशल एजुकेशन टीम के साथ बातचीत बनाए रखता है; और (d) स्कूल साइकोलॉजिस्ट, जो सामाजिक-भावनात्मक विकास का आकलन करता है, सुनने से होने वाली थकान से जुड़ी समस्याओं को देखता है और साथियों के साथ बातचीत में आने वाली चुनौतियों के लिए काउंसलिंग में मदद करता है।

3. श्रवण हानि वाले बच्चे के शिशु अवस्था से किशोरावस्था में जाने पर पारिवारिक भागीदारी कैसे बदलती है? कम से कम तीन आयु समूहों के संदर्भ में समझाएँ।

उम्र के साथ-साथ पारिवारिक भागीदारी में महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं। शिशुओं (0-3 वर्ष) के लिए, भागीदारी सर्वोच्च प्राथमिकता होती है। माता-पिता प्राथमिक हस्तक्षेपकर्ता के रूप में कार्य करते हैं, पेशेवर मार्गदर्शन में दैनिक घरेलू दिनचर्या के दौरान भाषा संबंधी प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। प्रीस्कूल बच्चों (3-6 वर्ष) के लिए, भागीदारी उच्च स्तर पर बनी रहती है। माता-पिता घर पर शब्दावली लक्ष्यों को सुदृढ़ करते हैं और प्रीस्कूल आईईपी योजना बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। स्कूली बच्चों (6-18 वर्ष) के लिए, भागीदारी मध्यम से उच्च स्तर की होती है। माता-पिता गृहकार्य में सहायता करते हैं, उपकरणों के उपयोग की निगरानी करते हैं और वार्षिक आईईपी समीक्षाओं में भाग लेते हैं, लेकिन बच्चा अधिक जिम्मेदारी लेना शुरू कर देता है। किशोरों के लिए, माता-पिता के प्रत्यक्ष

प्रबंधन से हटकर युवा व्यक्ति की स्वतंत्र आत्म-वकालत का समर्थन करने की ओर बदलाव होता है। माता-पिता किशोर की ओर से निर्णय लेने से पीछे हट जाते हैं और इसके बजाय पृष्ठभूमि सहायता प्रदान करते हैं क्योंकि किशोर स्वायत्तता विकसित करता है।

4. व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजना (IFSP) क्या है? यह व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) से कैसे भिन्न है?

'इंडिविजुअलाइज्ड फ़ैमिली सर्विस प्लान' (IFSP) एक ऐसा प्लानिंग डॉक्यूमेंट है जिसका इस्तेमाल तीन साल से कम उम्र के बच्चों के लिए किया जाता है। इसमें परिवार की प्राथमिकताओं, सांस्कृतिक पसंद, आर्थिक सीमाओं और बातचीत के चुने हुए तरीकों की पहचान की जाती है। इसमें सिर्फ़ बच्चे को ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार को मदद या इंटरवेंशन के केंद्र में रखा जाता है। 'इंडिविजुअलाइज्ड एजुकेशन प्रोग्राम' (IEP) का इस्तेमाल तीन साल और उससे ज़्यादा उम्र के उन बच्चों के लिए किया जाता है जो किसी शिक्षण संस्थान में दाख़िल हैं। यह मुख्य रूप से छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन, सालाना एकेडमिक और बातचीत से जुड़े लक्ष्यों, क्लासरूम में ज़रूरी बदलावों और तय सपोर्ट सर्विस पर ध्यान देता है। मुख्य अंतर यह है कि IFSP परिवार और घर के माहौल पर केंद्रित होता है, जबकि IEP छात्र और पढ़ाई-लिखाई के माहौल पर केंद्रित होता है।

5. श्रवण हानि वाले किशोर की पुनर्वास प्राथमिकताएँ स्कूल-उम्र के बच्चे की प्राथमिकताओं से जिन दो तरीकों से भिन्न होती हैं, उनका वर्णन करें।

एक किशोर और स्कूल जाने वाले छोटे बच्चे की रिहैबिलिटेशन (पुनर्वास) प्राथमिकताओं में दो तरह से अंतर होता है: (a) ट्रांज़िशन प्लानिंग किशोरों के मामले में, टीम करियर और वोकेशनल शिक्षा, उच्च शिक्षा के रास्तों और वयस्क जीवन की तैयारी पर ध्यान देती है, जबकि स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए ध्यान एकेडमिक उपलब्धि और क्लासरूम में भागीदारी पर होता है; और (b) खुद की बात रखने (सेल्फ-एडवोकेसी) का विकास किशोरों को अपने हियरिंग डिवाइस को संभालने, शिक्षकों और एम्प्लॉयर्स को अपनी ज़रूरतें खुद बताने, और सामाजिक व प्रोफेशनल माहौल में काम करने के लिए सक्रिय रूप से प्रशिक्षित किया जाता है, जबकि स्कूल जाने वाले छोटे बच्चे इन कामों के लिए अभी भी माता-पिता और शिक्षकों के सहयोग पर ज़्यादा निर्भर रहते हैं।

16.7.4 अपनी प्रगति की जाँच करें — 4

1. एक बहु-विषयक, एक अंतर-विषयक, और एक पार-विषयक टीम मॉडल के बीच अंतर समझाएँ। ऐसी एक स्थिति का उदाहरण दें जिसमें प्रत्येक मॉडल सबसे उपयुक्त हो।

बहु-विषयक टीम मॉडल में, विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ अलग-अलग, समानांतर सेवाएं प्रदान करते हैं और आईईपी जैसे संरचित ढांचों के भीतर प्रगति की जानकारी साझा करते हैं, लेकिन वे अपने दृष्टिकोणों को सक्रिय रूप से एकीकृत नहीं करते हैं। यह मॉडल मध्यम श्रवण हानि वाले स्कूली बच्चे के लिए उपयुक्त है, जहां विभिन्न पेशेवर स्वतंत्र रूप से योगदान देते हैं। अंतःविषयक टीम मॉडल में, पेशेवर स्वतंत्र रूप से आकलन करते हैं, लेकिन एकीकृत हस्तक्षेप लक्ष्य बनाने के लिए नियमित रूप से मिलते हैं। यह मॉडल मध्यम श्रवण हानि वाले प्रीस्कूल बच्चे के लिए उपयुक्त है, जहां ऑडियोलॉजिस्ट, एसएलपी और विशेष शिक्षक को अपने भाषा और सीखने के लक्ष्यों को संरेखित करने की आवश्यकता होती है।

ट्रांसडिसिप्लिनरी टीम मॉडल में, पेशेवर सक्रिय रूप से अपनी सामान्य सीमाओं को पार करते हैं, एक एकीकृत योजना प्रदान करने के लिए एक-दूसरे और परिवार को प्रशिक्षित करते हैं। यह मॉडल गंभीर श्रवण हानि वाले शिशु या बधिर-अंधता वाले बच्चे के लिए सबसे उपयुक्त है, जहां जरूरतों की जटिलता के लिए पूर्ण पेशेवर एकीकरण की आवश्यकता होती है और परिवार को केंद्रीय सेवा समन्वयक के रूप में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

2. हल्के सुनने की क्षमता में कमी की तुलना में गहरे सुनने की क्षमता में कमी के लिए एक बड़ी और अधिक विशेषज्ञ टीम की आवश्यकता क्यों होती है? गहरे सुनने की क्षमता में कमी वाली टीम में मौजूद कम से कम तीन अतिरिक्त टीम सदस्यों की पहचान करें जो आमतौर पर हल्की सुनने की क्षमता में कमी वाली टीम में मौजूद नहीं होते हैं।

बहुत ज़्यादा सुनने की क्षमता कम होने (प्रोफ़ाउंड हियरिंग लॉस) के मामलों में एक बड़ी और ज़्यादा स्पेशलाइज़्ड टीम की ज़रूरत होती है, क्योंकि शक्तिशाली हियरिंग एड्स के बावजूद बच्चे की सुनने की क्षमता बहुत कम या न के बराबर होती है। मेडिकल, सर्जिकल, एजुकेशनल और कल्चरल सपोर्ट इन सभी के बीच एक साथ तालमेल बिठाना ज़रूरी होता है। प्रोफ़ाउंड हियरिंग लॉस वाली टीम में तीन ऐसे अतिरिक्त सदस्य होते हैं जो आमतौर पर कम सुनने की क्षमता (माइल्ड हियरिंग लॉस) वाली टीम में नहीं होते:

(a) ओटोलैरिंगोलॉजिस्ट या कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जन, जो सर्जरी की संभावना का आकलन करते हैं और कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जरी करते हैं;

(b) डेफ मेंटर (बधिर मार्गदर्शक), जो परिवार को बहरेपन के अपने निजी अनुभव बताते हैं, स्वाभाविक साइन लैंग्वेज का उदाहरण पेश करते हैं, और डेफ कल्चर व कम्युनिटी रिसोर्स से परिचित कराते हैं; और

(c) साइन लैंग्वेज इंस्ट्रक्टर, जो बच्चे, परिवार और स्कूल के स्टाफ़ को इंडियन साइन लैंग्वेज में व्यवस्थित प्रशिक्षण देते हैं।

3. श्रवण बाधित एक बच्चे में ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) का भी निदान होता है। वर्णन करें कि ऑडियोलॉजिकल मूल्यांकन और हस्तक्षेप के दौरान यह संयोजन दो विशिष्ट चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। टीम इन चुनौतियों का समाधान कैसे करती है?

एएसडी और श्रवण हानि के संयोजन से उत्पन्न होने वाली दो विशिष्ट चुनौतियाँ हैं: (क) संवेदी अतिसंवेदनशीलता - एएसडी से पीड़ित बच्चे को बढ़ी हुई संवेदी संवेदनशीलता के कारण श्रवण यंत्र पहनने की अनुभूति शारीरिक रूप से असहनीय लग सकती है, जिससे यंत्र का निरंतर उपयोग मुश्किल हो जाता है; और (ख) मूल्यांकन अनुपालन - मानक श्रवण परीक्षणों में बच्चे को निर्देशों का पालन करना और ध्वनियों पर एक संरचित तरीके से प्रतिक्रिया देना आवश्यक होता है, जो सीमित सामाजिक संचार और कठोर व्यवहारिक पैटर्न वाले एएसडी से पीड़ित बच्चे के लिए अत्यंत कठिन हो सकता है। टीम इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक व्यवहार चिकित्सक और एक व्यावसायिक चिकित्सक को शामिल करती है जो एक संरचित विसंवेदीकरण कार्यक्रम लागू करते हैं, जिससे बच्चे को धीरे-धीरे यंत्र को सहन करने में मदद मिलती है। ध्वनि अतिसंवेदनशीलता के जोखिम को कम करने के लिए श्रवण यंत्रों को शोर-प्रबंधन सुविधाओं के साथ प्रोग्राम किया जाता है। मूल्यांकन विधियों को बच्चे के संचार और व्यवहारिक प्रोफाइल के अनुरूप गैर-मौखिक, दृश्य रूप से संरचित प्रक्रियाओं का उपयोग करने के लिए अनुकूलित किया जाता है।

4. बधिरता-अंधता (deafblindness) क्या है? इसमें शामिल विशेषज्ञ टीम के सदस्यों की पहचान करें और समझाएँ कि इस प्रोफ़ाइल के लिए ट्रांसडिसिप्लिनरी मॉडल को सबसे उपयुक्त क्यों माना जाता है।

डेफब्लाइंडनेस (सुनने और देखने की अक्षमता) एक मिली-जुली सेंसरी अक्षमता है जिसमें किसी व्यक्ति को सुनने और देखने, दोनों में ही काफ़ी परेशानी होती है। चूँकि जानकारी पाने के दोनों मुख्य ज़रीये प्रभावित होते हैं, इसलिए बातचीत के सामान्य तरीके चाहे वे बोलकर हों, इशारों से हों या लिखकर बिना बड़े बदलावों के काफ़ी नहीं होते। इसमें शामिल स्पेशलिस्ट टीम के सदस्यों में ऑडियोलॉजिस्ट, ऑप्थल्मोलॉजिस्ट, लो विज़न स्पेशलिस्ट, डेफब्लाइंड स्पेशल एजुकेटर और ओरिएंटेशन और मोबिलिटी स्पेशलिस्ट शामिल होते हैं। ट्रांसडिसिप्लिनरी मॉडल सबसे सही है क्योंकि बच्चे की सेंसरी, मूवमेंट और बातचीत से जुड़ी ज़रूरतों की जटिलता और आपस में जुड़ाव को अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले प्रोफेशनल हल नहीं कर सकते। सभी स्पेशलिस्ट को अपनी सामान्य प्रोफेशनल सीमाओं से आगे बढ़कर सक्रिय रूप से काम करना चाहिए, रणनीतियाँ साझा करनी चाहिए और परिवार को मुख्य स्पर्श-आधारित कम्युनिकेटर और बच्चे के लिए उनके आस-पास के माहौल को सुरक्षित रूप से जानने-समझने में गाइड के तौर पर प्रशिक्षित करना चाहिए।

5. एक एकाधिक विकलांगता टीम में एक केस कोऑर्डिनेटर की क्या भूमिका है? यह भूमिका परिवार के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

केस कोऑर्डिनेटर एक खास प्रोफेशनल होता है जो कई तरह की विकलांगताओं वाले व्यक्ति के लिए पूरे रिहैबिलिटेशन प्लान को मैनेज और इंटीग्रेट करता है। उनकी भूमिका यह पक्का करना है कि फिजियोथेरेपिस्ट, OT, SLP और स्पेशल एजुकेटर जैसे कई स्पेशलिस्ट द्वारा दी जाने वाली सभी थेरेपी सर्विस बिना किसी

ओवरलैप या विरोधाभास के एक ही लक्ष्य की दिशा में काम करें। परिवार के लिए यह भूमिका बहुत ज़रूरी है क्योंकि कई तरह की विकलांगताओं वाले बच्चों के परिवारों को मुश्किल मेडिकल शेड्यूल मैनेज करने, कई थेरेपी अपॉइंटमेंट में शामिल होने और एक ही समय में कई होम प्रोग्राम लागू करने पड़ते हैं। केस कोऑर्डिनेटर के बिना, यह बोझ बहुत ज़्यादा और संभालना मुश्किल हो सकता है। केस कोऑर्डिनेटर संपर्क के एक ही ज़रिया के तौर पर काम करता है, कन्फ्यूजन कम करता है, प्रोफेशनल्स के बीच बातचीत को आसान बनाता है और परिवार को देखभाल का एक ऐसा रूटीन बनाए रखने में मदद करता है जिसे आसानी से संभाला जा सके और जो लगातार चलता रहे।

16.11 निबंध वाले सवाल

छोटे निबंध वाले सवाल (हर सवाल का जवाब लगभग 250–300 शब्दों में दें)

1. बच्चों में सुनने की समस्या की शुरुआती पहचान और इलाज में ऑडियोलॉजिस्ट की भूमिका के बारे में बताएं। अपने जवाब में JCIH 1-3-6 टाइमलाइन देखें।
2. इंडिविजुअलाइज़्ड एजुकेशन प्रोग्राम (IEP) क्या है? बताएं कि एक स्पेशल एजुकेटर सुनने की समस्या वाले बच्चे के एकेडमिक डेवलपमेंट में मदद करने के लिए IEP का इस्तेमाल कैसे करता है।
3. भाषा की कमी का कॉन्सेप्ट समझाएं। सुनने की समस्या वाले बच्चे में भाषा की कमी को रोकने के लिए माता-पिता घर पर क्या खास कदम उठा सकते हैं?
4. एक समावेशी स्कूल सेटिंग में एजुकेशनल इंटरप्रेटर की भूमिका बताएं। एक इंटरप्रेटर को कौन सी नैतिक ज़िम्मेदारियां निभानी चाहिए?

5. सुनने की समस्या वाले लोगों के रिहैबिलिटेशन के मामले में "हमारे बारे में कुछ भी हमारे बिना नहीं" सिद्धांत का क्या मतलब है? RPWD एक्ट 2016 भारत में इस सिद्धांत को कैसे सपोर्ट करता है?
6. 0-3 साल के सुनने की क्षमता में कमी वाले बच्चे के लिए टीम के सदस्यों और मदद की प्राथमिकताओं के बारे में बताएं। बताएं कि इस चरण में 'ट्रांसडिसिप्लिनरी मॉडल' (transdisciplinary model) को सबसे सही क्यों माना जाता है।
7. सुनने की क्षमता में कमी की गंभीरता, बातचीत के तरीके के चुनाव पर कैसे असर डालती है? कम सुनने की क्षमता और बहुत ज़्यादा सुनने की क्षमता में कमी के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बातचीत की रणनीतियों की तुलना करें।
8. जब सुनने की क्षमता में कमी के साथ 'ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर' (Autism Spectrum Disorder) भी हो, तो कौन सी अतिरिक्त चुनौतियाँ आती हैं? इन चुनौतियों से निपटने में 'बिहेवियरल थेरेपिस्ट' (Behavioral Therapist) और 'ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट' (Occupational Therapist) की भूमिका के बारे में बताएं।
9. 'इंडिविजुअलाइज्ड फैमिली सर्विस प्लान' (IFSP) के कॉन्सेप्ट को समझाएं। यह IEP से कैसे अलग है, और शुरुआती मदद के चरण में यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
10. बताएं कि इस यूनिट में बताए गए पाँच आयु समूहों में परिवार की भागीदारी कैसे बदलती है। इस बदलाव के पीछे कौन से कारण हैं?

लंबे निबंध के सवाल (हर सवाल का जवाब लगभग 500–600 शब्दों में दें)

1. गंभीर रूप से सुनने में दिक्कत वाले बच्चे के पूरे रिहैबिलिटेशन में कम से कम पांच प्रोफेशनल स्टेकहोल्डर्स की भूमिकाओं पर चर्चा करें। बताएं कि ये प्रोफेशनल्स कोऑर्डिनेटेड सपोर्ट देने के लिए एक-दूसरे के साथ कैसे काम करते हैं।
2. डेफ मेंटर और साइन लैंग्वेज टीचर की भूमिकाओं की तुलना करें और उनमें अंतर बताएं। किस तरह से उनके योगदान एक-दूसरे को पूरा करते हैं? संबंधित फ्रेमवर्क और भारतीय पॉलिसी के संदर्भ में चर्चा करें।
3. "सुनने में दिक्कत वाले व्यक्ति का रिहैबिलिटेशन सिर्फ प्रोफेशनल्स की ज़िम्मेदारी नहीं है।" माता-पिता, डेफ मेंटर और सुनने में दिक्कत वाले व्यक्ति की भूमिकाओं के संदर्भ में इस बात की गहराई से जांच करें।
4. फैमिली-सेंटर्ड अर्ली इंटरवेंशन (FCEI) मॉडल को समझाएं। एनालाइज़ करें कि बच्चे के जीवन के पहले तीन सालों के दौरान माता-पिता, ऑडियोलॉजिस्ट और स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट की भूमिकाएं इस मॉडल के सिद्धांतों के साथ कैसे मेल खाती हैं।
5. एजुकेशनल और रिहैबिलिटेशन सेटिंग्स में सुनने की समस्या वाले लोगों के लिए सेल्फ-एडवोकेसी के महत्व का मूल्यांकन करें। उनके सामने आने वाली चुनौतियों और भारत और इंटरनेशनल लेवल पर उनके लिए उपलब्ध कानूनी, इंस्टीट्यूशनल और प्रोफेशनल सपोर्ट पर चर्चा करें।
6. सुनने की अक्षमता वाले व्यक्ति के लिए रिहैबिलिटेशन टीम का गठन पाँच आयु समूहों शैशवावस्था, प्री-स्कूल, स्कूल की उम्र, किशोरावस्था और वयस्कता में कैसे बदलता है, इस पर विस्तार से चर्चा करें। हर चरण में

असेसमेंट पर ध्यान, बातचीत के तरीके, इंटरवेंशन की प्राथमिकताएँ और टीम मॉडल का ज़िक्र करें।

7. हल्के, मध्यम, गंभीर और बहुत गंभीर सुनने की अक्षमता के लिए ज़रूरी टीम के गठन की तुलना करें। अपने जवाब में, चर्चा करें कि गंभीरता के इन चार स्तरों पर सहायक तकनीक के चुनाव, परिवार की भागीदारी और टीम मॉडल कैसे अलग-अलग होते हैं।
8. "किसी जुड़ी हुई स्थिति की मौजूदगी सुनने की अक्षमता वाले व्यक्ति के रिहैबिलिटेशन के स्वरूप को मूल रूप से बदल देती है।" इस यूनिट में चर्चा की गई किन्हीं तीन जुड़ी हुई स्थितियों के संदर्भ में इस कथन की आलोचनात्मक जाँच करें।
9. सुनने की अक्षमता की गंभीरता के विभिन्न स्तरों और जुड़ी हुई स्थितियों में परिवार की भागीदारी की भूमिका पर चर्चा करें। विश्लेषण करें कि परिवार की भागीदारी का स्वरूप और तीव्रता कैसे बदलती है और भारत में परिवारों की मदद के लिए कौन-से प्रोफेशनल सपोर्ट सिस्टम मौजूद हैं।
10. सुनने की अक्षमता के रिहैबिलिटेशन के संदर्भ में तीन टीम मॉडल मल्टीडिसिप्लिनरी, इंटरडिसिप्लिनरी और ट्रांसडिसिप्लिनरी का मूल्यांकन करें। इस यूनिट के खास उदाहरणों का इस्तेमाल करते हुए, विश्लेषण करें कि कौन-सा मॉडल कब सबसे उपयुक्त होता है और कौन-से कारक मॉडल के चुनाव को तय करते हैं।

16.12 Bibliography / Reference List संदर्भ सूची

Ali Yavar Jung National Institute of Speech and Hearing Disabilities. (2021). *National manual on clinical classification*

and educational mapping of hearing impairment. Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India. अली यावर जंग नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग डिसेबिलिटीज (AYJNISHD)। (2021)। श्रवण बाधिता के नैदानिक वर्गीकरण और शैक्षणिक मैपिंग पर राष्ट्रीय नियमावली (मैनुअल)। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार।

All India Institute of Speech and Hearing. (2018). *Clinical manual for speech-language pathologists in audiological rehabilitation*. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India.ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग (AIISH)। (2018)। ऑडियोलॉजिकल पुनर्वास में स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट के लिए नैदानिक नियमावली (क्लीनिकल मैनुअल)। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।

Ministry of Law and Justice, Government of India. (2016). *The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016*. The Gazette of India (Extraordinary), Part II, Section 1. विधि एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार। (2016)। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 (The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016)। भारत का राजपत्र (असाधारण), भाग II, खंड 1।

Ministry of Human Resource Development, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*.

https://www.education.gov.in/nep-2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)। https://www.education.gov.in/nep-2020

Rehabilitation Council of India. (2017). *Norms and regulations for B.Ed. Special Education (Hearing Impairment)*. Government of India. भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI)। (2017)। बी.एड. विशेष शिक्षा (श्रवण बाधिता) के लिए मानदंड एवं विनियम। भारत सरकार।

*UNESCO. (1994). The Salamanca Statement and Framework for Action on Special Needs Education. World Conference on Special Needs Education: Access and Quality, Salamanca, Spain.*यूनेस्को *(UNESCO)*। *(1994)*। विशेष आवश्यकता शिक्षा पर सालामांकार घोषणापत्र और कार्रवाई ढांचा *(The Salamanca Statement and Framework for Action on Special Needs Education)*। विशेष आवश्यकता शिक्षा पर विश्व सम्मेलन*:* पहुंच और गुणवत्ता*,* सालामांकार*,* स्पेन।

World Health Organization. (2001). *International Classification of Functioning, Disability and Health (ICF)*. World Health Organization. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2001)। कार्यप्रणाली, दिव्यांगता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (ICF)। विश्व स्वास्थ्य संगठन।

World Health Organization. (2021). *World report on hearing*. WHO Press. https://www.who.int/publications/i/item/world-report-on-hearingविश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2021)। श्रवण पर विश्व रिपोर्ट (World Report on Hearing)। डब्ल्यूएचओ प्रेस। https://www.who.int/publications/i/item/world-report-on-hearing

Joint Committee on Infant Hearing. (2019). Year 2019 position statement: Principles and guidelines for early hearing detection and intervention programs. *The Journal of Early Hearing Detection and Intervention*, *4*(2), 1–44. https://doi.org/10.15125/B7X36K संयुक्त शिशु श्रवण समिति (JCIH)। (2019)। वर्ष 2019 स्थिति विवरण: प्रारंभिक श्रवण पहचान और हस्तक्षेप कार्यक्रमों के लिए सिद्धांत और दिशानिर्देश। द जर्नल ऑफ अर्ली हियरिंग डिटैक्शन एंड इंटरवेंशन, 4(2), 1–44। https://doi.org/10.15125/B7X36K

(Referenced for IEP and transition planning frameworks internationally adopted in Indian practice.) असमर्थता युक्त व्यक्ति शिक्षा अधिनियम (IDEA), 20 U.S.C. § 1400 (2004)। (आईईपी - IEP और संक्रमण योजना के उन ढांचों के लिए संदर्भित, जिन्हें भारतीय अभ्यास में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनाया गया है।)

यूनिट **17:**

मूल्यांकन से पहले, दौरान और बाद में टीम की भूमिका; ज़रूरतों को पहचानना और उन पर काम करना, और हस्तक्षेप व बदलाव की योजना बनाना। परिणाम मापने में टीम की भूमिका: समय-समय पर आकलन और मूल्यांकन; पहले से तय लक्ष्यों के आधार पर प्रदर्शन की समीक्षा।

इकाई की रूपरेखा

17.1 **प्रस्तावना**

17.2 **उद्देश्य**

17.3 **आकलन से पहले, दौरान और बाद में टीम की भूमिका**

17.3.1 **आकलन से पहले टीम की भूमिका**

17.3.2 **आकलन के दौरान टीम की भूमिका**

17.3.3 **आकलन के बाद टीम की भूमिका**

17.4 **आवश्यकताओं की पहचान, हस्तक्षेप की योजना, बदलावों का प्रबंधन और परिणामों का मापन**

17.4.1 आवश्यकताओं की पहचान एवं समाधान, और हस्तक्षेपों की योजना बनाना

17.4.2 संक्रमण योजना (ट्रांजिशन प्लानिंग) में टीम की भूमिक

17.4.3 परिणाम मापन, समय-समय पर आकलन और लक्ष्य समीक्षा में टीम की भूमिका

17.5 सारांश

17.6 शब्दावली / तकनीकी शब्दावली

17.7 प्रगति की जाँच प्रश्नों के उत्तर

17.8 निबंधात्मक प्रश्न

17.9 संदर्भ सूची

17.10 अतिरिक्त / उपयोगी अध्ययन सामग्री

17.1 प्रस्तावना

जब श्रवण बाधित कोई व्यक्ति किसी पुनर्वास या शैक्षिक प्रणाली में प्रवेश करता है, तो पेशेवरों की एक टीम उसकी ओर से मिलकर काम करना शुरू कर देती है। यह टीम केवल एक बार उस व्यक्ति का आकलन (मूल्यांकन) करके आगे नहीं बढ़ जाती। टीम का काम निरंतर चलता रहता है। यह औपचारिक आकलन शुरू होने से पहले ही प्रारंभ हो जाता है, आकलन की प्रक्रिया के दौरान सक्रिय रूप से जारी रहता है, और इसके काफी बाद तक हस्तक्षेप की योजना बनाने, उसे लागू करने और दीर्घकालिक निगरानी (लॉन्ग-टर्म मॉनिटरिंग) तक विस्तृत होता है।

आपने ध्यान दिया होगा कि विशेष स्कूलों या पुनर्वास केंद्रों में, पेशेवर किसी बच्चे के मूल्यांकन से पहले बैठकें करते हैं, प्रक्रिया के दौरान एक-दूसरे से परामर्श करते

हैं, और फिर नियमित अंतराल पर बच्चे की प्रगति की समीक्षा करते हैं। यह व्यवस्थित और निरंतर जुड़ाव आकस्मिक नहीं है। यह इस स्थापित समझ को दर्शाता है कि आकलन और हस्तक्षेप कोई अलग-थलग घटनाएँ नहीं हैं वे योजना, कार्रवाई और समीक्षा के एक निरंतर चक्र का हिस्सा हैं।

यह यूनिट तीन चरणों में टीम की भूमिका का परीक्षण करती है: आकलन से पहले, आकलन के दौरान और आकलन के बाद। इसके बाद यह इस बात की जांच करती है कि टीमें किस तरह व्यक्तिगत जरूरतों की पहचान करती हैं और उन्हें संबोधित करती हैं, हस्तक्षेपों की योजना बनाती हैं, जीवन के विभिन्न चरणों में होने वाले बदलावों को संभालती हैं, और पहले से निर्धारित लक्ष्यों के मुकाबले प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए परिणाम मापन का उपयोग करती हैं।

भारत में, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (RPWD एक्ट) 2016 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, दोनों ही दिव्यांग व्यक्तियों के लिए व्यवस्थित, व्यक्तिगत और समय-समय पर समीक्षा की जाने वाली सहायता को अनिवार्य बनाते हैं। भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI) ऐसे पेशेवर मानक तय करती है जिनके तहत पुनर्वास टीमों के लिए व्यवस्थित और साक्ष्य-आधारित (evidence-based) प्रक्रियाओं का पालन करना आवश्यक होता है। यह यूनिट आपको यह समझने में मदद करेगी कि ये प्रक्रियाएँ व्यावहारिक रूप से कैसे काम करती हैं।

पुनर्वास कोई ऐसी सीधी या एकदिशीय प्रक्रिया नहीं है जो केवल आकलन से शुरू होकर डिस्चार्ज (समापन) की ओर बढ़े। यह एक चक्रीय प्रक्रिया है। हस्तक्षेप के प्रत्येक दौर के बाद, टीम व्यक्ति का पुनः आकलन करती है, प्रगति की समीक्षा करती है, लक्ष्यों को समायोजित करती है और अगले चरण की योजना बनाती है।

यह चक्र व्यक्ति के पूरे जीवन भर दोहराया जाता है, क्योंकि समय के साथ उसकी आवश्यकताएं, वातावरण और क्षमताएं बदलती और विकसित होती रहती हैं।

यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि श्रवण बाधिता पुनर्वास में आकलन और हस्तक्षेप किसी एक पेशेवर के दायरे में सीमित नहीं होते। इसके लिए एक बहु-विषयक या अंतर-विषयक टीम के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक पेशेवर अपनी विशेषज्ञता का एक विशिष्ट क्षेत्र लेकर आता है:

- ऑडियोलॉजिस्ट (Audiologist): श्रवण क्षमता के कार्य और सहायक उपकरणों के प्रबंधन को समझता है।
- विशेष शिक्षक (Special Educator): अधिगम (learning) और पाठ्यक्रम तक पहुँच की प्रक्रियाओं को समझता है।
- स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट (Speech-Language Pathologist): भाषा और संचार के विकास को समझता है।
- स्कूल मनोवैज्ञानिक (School Psychologist): सामाजिक-भावनात्मक कामकाज और व्यवहार को समझता है।
- परिवार: व्यक्ति की दैनिक दिनचर्या और वास्तविक जीवन की स्थितियों को समझता है।

जब इन सभी दृष्टिकोणों को व्यवस्थित रूप से एक साथ लाया जाता है, तो बनने वाली योजना किसी भी एकल पेशेवर द्वारा स्वतंत्र रूप से तैयार की गई योजना की तुलना में कहीं अधिक व्यापक और प्रभावी होती है।

इस संदर्भ में, साझा निर्णय लेने की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। साझा निर्णय लेने का अर्थ है कि श्रवण बाधित व्यक्ति, उनका परिवार और पेशेवरों की टीम

सभी मिलकर आकलन के लक्ष्यों, हस्तक्षेप की प्राथमिकताओं और अपेक्षित परिणामों के निर्धारण में अपना योगदान देते हैं। व्यक्ति और उनके परिवार की सूचित एवं सक्रिय भागीदारी के बिना, केवल पेशेवरों द्वारा कोई भी निर्णय नहीं लिया जाता है। यह सिद्धांत दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UN CRPD) के सर्वथा अनुकूल है और RPWD अधिनियम 2016 के तहत भारतीय पुनर्वास नीतियों में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

17.2 उद्देश्य

इस यूनिट का अध्ययन करने के बाद, आप सक्षम होंगे:

1. श्रवण बाधित व्यक्ति के आकलन से पहले, उसके दौरान और बाद में टीम की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की व्याख्या करने में।
2. यह बताने में कि एक टीम विकासात्मक, शैक्षिक और कार्यात्मक क्षेत्रों में श्रवण बाधित व्यक्ति की आवश्यकताओं की पहचान और उन्हें प्राथमिकता कैसे देती है।
3. आकलन के निष्कर्षों के आधार पर हस्तक्षेप की योजना बनाने की प्रक्रिया पर चर्चा करने में।
4. संक्रमण योजना की अवधारणा को समझाने और जीवन के प्रमुख चरणों में बदलावों को सुगम बनाने में टीम की भूमिका की पहचान करने में।
5. 'परिणाम मापन' शब्द को परिभाषित करने और पुनर्वास में इसके महत्व को समझाने में।
6. एक पुनर्वास टीम के ढांचे के भीतर समय-समय पर होने वाले आकलन और मूल्यांकन की प्रक्रिया का वर्णन करने में।

7. इस बात का विश्लेषण करने में कि एक टीम पहले से निर्धारित लक्ष्यों के मुकाबले प्रदर्शन की समीक्षा कैसे करती है और हस्तक्षेप योजनाओं को संशोधित करने के लिए इस जानकारी का उपयोग कैसे करती है।

17.3 आकलन से पहले, दौरान और बाद में टीम की भूमिका

आकलन सभी पुनर्वास और शैक्षिक योजनाओं की नींव है। हालाँकि, आकलन की प्रक्रिया स्वयं में किसी पेशेवर द्वारा लिए जाने वाले किसी एकल टेस्ट (परीक्षण) से कहीं बढ़कर है। यह तीन अलग-अलग चरणों वाली एक व्यवस्थित प्रक्रिया है, और प्रत्येक चरण में टीम की विशिष्ट जिम्मेदारियां होती हैं।

आइए बारी-बारी से प्रत्येक चरण का परीक्षण करें।

17.3.1 आकलन से पहले टीम की भूमिका

निम्नलिखित स्थिति पर विचार करें: एक छह वर्षीय बच्चे को मूल्यांकन के लिए किसी विशेष स्कूल (विशेष विद्यालय) में भेजा जाता है। इससे पहले कि कोई भी पेशेवर औपचारिक रूप से बच्चे से मिले, कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने आवश्यक होते हैं। ये तैयारी के कदम आकलन से पहले की टीम की जिम्मेदारियां हैं।

पृष्ठभूमि की जानकारी एकत्र करना

आकलन से पहले टीम का पहला कार्य व्यक्ति के बारे में उपलब्ध सभी पृष्ठभूमि की जानकारी एकत्र करना है। इसमें पिछले श्रवण-वैज्ञानिक प्रतिवेदन, चिकित्सा रिकॉर्ड, विकासात्मक इतिहास, स्कूल के प्रदर्शन का डेटा और कोई भी पिछली हस्तक्षेप रिपोर्ट शामिल हैं।

- ऑडियोलॉजिस्ट पिछले श्रवण परीक्षण के परिणामों की समीक्षा करता है।
- विशेष शिक्षक पहले के किसी भी शैक्षिक आकलन की जांच करता है।
- एसएलपी (वाक एवं भाषा रोग विज्ञानी) पहले के वाक और भाषा रिकॉर्ड को देखता है।
- माता-पिता से प्रश्नावली और कम्यूनिकेशन लॉग भरने के लिए कहा जाता है, जिसमें घर पर बच्चे के दैनिक कामकाज का विवरण होता है।

यह कदम परीक्षणों के अनावश्यक दोहराव को रोकता है। यह टीम को मौजूदा जानकारी में उन कमियों की पहचान करने में भी मदद करता है जिन्हें वर्तमान आकलन के माध्यम से पूरा किया जाना आवश्यक है।

आकलन के लक्ष्य निर्धारित करना

पृष्ठभूमि की जानकारी की समीक्षा करने के बाद, टीम वर्तमान आकलन के विशिष्ट लक्ष्यों पर सहमति बनाने के लिए बैठक करती है। हर पेशेवर को हर क्षेत्र (डोमेन) का आकलन करने की आवश्यकता नहीं होती है। टीम यह तय करती है कि कौन से पेशेवर किन क्षेत्रों का आकलन करेंगे, किन उपकरणों (टूल्स) का उपयोग किया जाएगा और आकलन किस क्रम में किए जाएंगे। यह समन्वय व्यक्ति को अनावश्यक रूप से लंबी या बार-बार होने वाली मूल्यांकन प्रक्रिया से गुजरने से बचाता है।

श्रवण बाधित स्कूल जाने वाले बच्चे के लिए, टीम यह तय कर सकती है कि:

- ऑडियोलॉजिस्ट वर्तमान श्रवण देहली और उपकरण (हियरिंग एड/कॉक्लियर इंप्लांट) के प्रदर्शन का आकलन करेगा।
- एसएलपी वाक और भाषा के स्तर का आकलन करेगा।

- विशेष शिक्षक शैक्षणिक उपलब्धि का आकलन करेगा।
- स्कूल मनोवैज्ञानिक सामाजिक-भावनात्मक कामकाज का आकलन करेगा।

आकलन के वातावरण को तैयार करना

आकलन शुरू होने से पहले टीम भौतिक वातावरण भी तैयार करती है। ध्वनि-नियंत्रित कमरों के अंशांकन की जांच की जानी चाहिए। दृश्य संकेतों पर निर्भर रहने वाले बच्चे के लिए पर्याप्त रोशनी होनी चाहिए। बैठने की व्यवस्था सुलभ होनी चाहिए। छोटे बच्चों के लिए खेल की सामग्री तैयार की जानी चाहिए। प्रमस्तिष्क अंगघात (सेरेब्रल पाल्सी) जैसी संबद्ध स्थितियों वाले बच्चों के लिए, बैठने और सही स्थिति में रखने वाले उचित उपकरणों की व्यवस्था पहले से की जानी चाहिए।

परिवार की तैयारी

आकलन से पहले, टीम परिवार के साथ स्पष्ट रूप से संवाद करती है। माता-पिता को सूचित किया जाता है कि आकलन में क्या शामिल होगा, इसमें कितना समय लगेगा और उन्हें अपने साथ क्या लाना चाहिए। इससे माता-पिता की चिंता कम होती है और यह सुनिश्चित होता है कि बच्चा शांत और सहयोगी स्थिति में केंद्र पर पहुंचे। भारतीय संदर्भों में, जहाँ परिवारों को विशेष केंद्रों तक पहुँचने के लिए लंबी दूरियाँ तय करनी पड़ सकती हैं, तैयारी का यह कदम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

प्रेषण मार्गों को समझना

कोई भी आकलन शुरू करने से पहले, टीम के लिए यह समझना आवश्यक है कि व्यक्ति प्रेषण (referral) के चरण तक कैसे पहुँचा है। प्रेषण मार्ग वह रास्ता या प्रक्रिया है जिसके माध्यम से संदिग्ध या पुष्टि की गई श्रवण बाधिता वाला व्यक्ति आकलन टीम तक पहुँचता है। इस मार्ग को समझने से टीम को यह जानने में मदद मिलती है कि पहली बार चिंता/समस्या पहचाने जाने के बाद से कितना समय बीत चुका है, अब तक क्या कदम उठाए गए हैं, और जानकारी में क्या कमियाँ बाकी हैं।

भारत में, प्रेषण मार्ग व्यक्ति की आयु और उस परिवेश के आधार पर काफी भिन्न होते हैं जहाँ समस्या की पहचान की गई थी:

- नवजात शिशुओं के लिए: प्रेषण आमतौर पर उन प्रसूति अस्पतालों (maternity hospitals) से शुरू होते हैं जो सार्वभौमिक नवजात श्रवण जांच (Universal Newborn Hearing Screening - UNHS) आयोजित करते हैं।
- छोटे बच्चों के लिए: प्रेषण आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, बाल रोग विशेषज्ञों, या उन माता-पिता के माध्यम से आ सकते हैं जिन्होंने विकासात्मक देरी का अवलोकन किया है।
- स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए: प्रेषण अक्सर कक्षा अध्यापकों की ओर से आते हैं जो शैक्षणिक कठिनाइयों, ध्यान देने की समस्याओं या वाणी/भाषा की देरी पर ध्यान देते हैं।
- वयस्कों के लिए: प्रेषण ईएनटी (ENT) क्लीनिकों, कार्यस्थल के चिकित्सा अधिकारियों, या स्वयं व्यक्ति की ओर से हो सकते हैं।

मूल्यांकन शुरू होने से पहले टीम को प्रेषण संबंधी दस्तावेजों की समीक्षा ध्यानपूर्वक करनी चाहिए। यदि प्रेषण में अधूरी या पुरानी जानकारी शामिल है, तो टीम को आगे बढ़ने से पहले स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए संदर्भित करने वाले पेशेवर या परिवार से संपर्क करना चाहिए। गलत प्रेषण जानकारी के आधार पर कार्य करने से टीम गलत क्षेत्रों (domains) का आकलन कर सकती है या अनुपयुक्त आकलन उपकरणों का उपयोग कर सकती है।

जोखिम कारकों की पहचान करना

पूर्व-आकलन चरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह पहचानना है कि क्या व्यक्ति में श्रवण बाधिता या उससे जुड़ी विकासात्मक कठिनाइयों के लिए कोई ज्ञात जोखिम कारक मौजूद हैं।

श्रवण बाधिता के जोखिम कारकों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- वंशानुगत बहरेपन/श्रवण हानि (hereditary hearing loss) का पारिवारिक इतिहास
- समय से पहले जन्म
- जन्म के समय कम वजन
- नवजात पीलिया जिसके लिए रक्त चढ़ाने की आवश्यकता पड़ी हो
- ओटोटॉक्सिक दवाओं (कानों के लिए हानिकारक दवाएं) का प्रभाव/सेवन
- बार-बार होने वाले कान के संक्रमण का इतिहास

जब जोखिम कारकों की पहचान कर ली जाती है, तो टीम संभावित श्रवण हानि के प्रकार और स्तर का पूर्वाभास लगा सकती है, उपयुक्त आकलन उपकरणों की योजना बना सकती है, और मूल प्रेषण द्वारा दर्शाए गए निष्कर्षों के अलावा अतिरिक्त निष्कर्षों की संभावना के प्रति परिवार को सचेत कर सकती है।

उदाहरण के लिए, श्रवण जांच के लिए भेजे गए एक अपरिपक्व शिशु (premature infant) में दृष्टि बाधिता, सेरेब्रल पाल्सी, या संज्ञानात्मक देरी (cognitive delays) का जोखिम भी हो सकता है। ऐसी स्थिति में टीम ऑडियोलॉजिकल मूल्यांकन के साथ-साथ एक व्यापक विकासात्मक मूल्यांकन की सिफारिश कर सकती है।

17.3.2 आकलन के दौरान टीम की भूमिका

इस स्तर पर, आपको यह समझना चाहिए कि आकलन चरण के लिए स्वयं टीम के सदस्यों के बीच सावधानीपूर्वक समन्वय की आवश्यकता होती है। प्रत्येक पेशेवर अपना स्वयं का मूल्यांकन करता है, लेकिन पूरी प्रक्रिया के दौरान टीम एक जुड़ी हुई इकाई के रूप में कार्य करती है।

क्षेत्र-विशिष्ट (डोमेन-विशिष्ट) आकलन करना

टीम का प्रत्येक सदस्य मानकीकृत और कार्यात्मक उपकरणों का उपयोग करके अपने निर्दिष्ट क्षेत्र का आकलन करता है।

- ऑडियोलॉजिस्ट प्योर टोन ऑडियोमेट्री (PTA), वाक प्रत्यक्षण परीक्षण, और रियल-इयर मेजरमेंट्स करता है।
- एसएलपी ग्रहणशील और अभिव्यक्तिपूर्ण भाषा आकलन का संचालन करता है।
- विशेष शिक्षक शैक्षणिक उपलब्धि और कार्यात्मक साक्षरता का मूल्यांकन करता है।
- स्कूल मनोवैज्ञानिक श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए उपयुक्त गैर-शाब्दिक संज्ञानात्मक आकलन बैटरियों का उपयोग करता है, जैसे कि 'लाइटर इंटरनेशनल परफॉर्मेंस स्केल'।

यह महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक पेशेवर ऐसे उपकरणों का उपयोग करे जो व्यक्ति की आयु, भाषाई पृष्ठभूमि और श्रवण हानि की डिग्री के अनुकूल हों। सामान्य रूप से सुनने वाली आबादी के लिए विकसित किए गए मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग सावधानी के साथ किया जाना चाहिए, क्योंकि वे श्रवण बाधित व्यक्ति की क्षमताओं का कम आकलन कर सकते हैं।

कार्यात्मक व्यवहार का अवलोकन करना

मानकीकृत परीक्षणों के अतिरिक्त, टीम विभिन्न सेटिंग्स (वातावरणों) में व्यक्ति के कार्यात्मक व्यवहार का अवलोकन करती है। विशेष शिक्षक कक्षा जैसी गतिविधि में बच्चे का अवलोकन कर सकता है। एसएलपी खेल के दौरान संचार का अवलोकन कर सकता है। मनोवैज्ञानिक एक समूह कार्य के दौरान साथियों के साथ होने वाली अंतःक्रिया का अवलोकन कर सकता है। व्यवहार के ये अवलोकन ऐसी जानकारी प्रदान करते हैं जिसे अकेले मानकीकृत परीक्षण नहीं पकड़ सकते।

आकलन के दौरान अंतर-पेशेवर संचार

आकलन चरण के दौरान, जैसे-जैसे निष्कर्ष सामने आते हैं, टीम के सदस्य एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं। यदि ऑडियोलॉजिस्ट को पता चलता है कि बच्चे की हियरिंग एड (श्रवण यंत्र) बेहतर तरीके से काम नहीं कर रही है, तो वे तुरंत एसएलपी को सूचित करते हैं, क्योंकि यह वाक प्रत्यक्षण के परिणामों को प्रभावित करेगा। यदि मनोवैज्ञानिक परीक्षण के दौरान अत्यधिक चिंता के लक्षण देखता है, तो वे टीम के बाकी सदस्यों को सचेत करते हैं, जिन्हें अपने आकलन के दृष्टिकोण में बदलाव करने की आवश्यकता हो सकती है।

यह वास्तविक समय का संचार यह सुनिश्चित करता है कि आकलन की तस्वीर सटीक हो और किसी भी एक पेशेवर के निष्कर्षों की व्याख्या अलग-थलग रूप से न की जाए।

व्यक्ति और परिवार को शामिल करना

आकलन के दौरान, श्रवण बाधित व्यक्ति और उनका परिवार सक्रिय भागीदार होते हैं, न कि मूक दर्शक। बच्चे की प्रतिक्रियाएँ, प्राथमिकताएँ और आराम का स्तर आकलन की गति को तय करते हैं। कुछ मूल्यांकनों के दौरान माता-पिता उपस्थित रह सकते हैं, विशेष रूप से छोटे बच्चों के मामले में, ताकि वे बच्चे को ढांढस बंधा सकें और प्रक्रिया का अवलोकन कर सकें। आकलन के दौरान उनके अवलोकनों को मूल्यवान गुणात्मक डेटा के रूप में रिकॉर्ड किया जाता है।

सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त आकलन उपकरणों का चयन

आकलन के दौरान टीम की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक ऐसे उपकरणों का चयन करना है जो न केवल व्यक्ति की आयु और श्रवण हानि की डिग्री के लिए उपयुक्त हों, बल्कि उनकी भाषाई और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के भी अनुकूल हों। भारत एक भाषाई रूप से विविधतापूर्ण देश है। एक बच्चा जो घर पर तेलुगु बोलता है, हिंदी माध्यम के स्कूल में पढ़ता है, और जिसका आकलन अंग्रेजी में किया जा रहा है, वह एक ट्रिपल (तीहरे) भाषाई चुनौती का सामना करता है, जिसका श्रवण बाधिता से कोई लेना-देना नहीं है।

टीम को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जहां भी संभव हो, व्यक्ति की प्राथमिक भाषा (मातृभाषा) में आकलन उपकरण उपलब्ध हों। AYJNISHD (अली यावर

जंग नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पीच एंड हियरिंग डिसेबिलिटीज) और AIISH (ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग) ने इस उद्देश्य के लिए कई भारतीय भाषाओं में वाक और भाषा आकलन सामग्रियां विकसित की हैं।

जब भाषा के अनुकूल उपकरण उपलब्ध न हों, तो टीम को इस सीमा का स्पष्ट रूप से दस्तावेज़ीकरण करना चाहिए और परिणामों की व्याख्या सावधानी से करनी चाहिए। किसी व्यक्ति का आकलन कभी भी उस भाषा में नहीं किया जाना चाहिए जिसका उपयोग वह व्यावहारिक रूप से नहीं करता है, क्योंकि इससे गलत परिणाम निकलेंगे जो गलत निदान या अनावश्यक रूप से निम्न-स्तरीय हस्तक्षेप लक्ष्यों की ओर ले जा सकते हैं।

क्षमता-आधारित आकलन दृष्टिकोण अपनाना

पुनर्वास में आकलन ऐतिहासिक रूप से कमियों की पहचान करने पर केंद्रित रहा है यानी व्यक्ति क्या नहीं कर सकता है। आधुनिक सर्वोत्तम अभ्यास के लिए टीम को क्षमता-आधारित आकलन दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है कि कठिनाई वाले क्षेत्रों को दर्ज करने के साथ-साथ, टीम व्यवस्थित रूप से यह भी पहचानती और रिकॉर्ड करती है कि व्यक्ति क्या अच्छा कर लेता है।

अत्यधिक श्रवण हानि वाले बच्चे में उत्कृष्ट दृश्य स्मृति, मजबूत स्थानिक तर्क कौशल, और अत्यधिक विकसित दृश्य ध्यान हो सकता है। ये ताकतें आकस्मिक नहीं हैं ये ऐसी परिसंपत्तियां हैं जिन पर टीम हस्तक्षेप योजना बनाते समय आगे का निर्माण कर सकती है।

एक क्षमता-आधारित आकलन यह पूछता है: *यह व्यक्ति सीखने और पुनर्वास की प्रक्रिया में क्या योगदान देता है? उनकी आवश्यकताओं के क्षेत्रों को संबोधित करने के लिए उनकी मौजूदा क्षमताओं का लाभ कैसे उठाया जा सकता है?*

यह दृष्टिकोण ICF ढांचे के अनुरूप है, जो न केवल क्षतियों और सीमाओं पर विचार करता है, बल्कि व्यक्ति के उन व्यक्तिगत और पर्यावरणीय कारकों पर भी विचार करता है जो उनके कामकाज में सहायता करते हैं या बाधा डालते हैं। पर्यावरणीय सहायताओं का दस्तावेज़ीकरण करना जैसे कि एक सहायक परिवार, एक साधन संपन्न शिक्षक, या एक सुसज्जित स्कूल व्यक्ति की कमियों को दर्ज करने जितना ही महत्वपूर्ण है।

आकलन की थकान का प्रबंधन

आकलन, विशेष रूप से जब इसमें कई पेशेवर और कई उपकरण शामिल हों, व्यक्ति के लिए शारीरिक और संज्ञानात्मक रूप से थकाऊ हो सकता है। श्रवण बाधित बच्चे जो आकलन के दौरान ओष्ठ-पठन या सांकेतिक भाषा अनुवाद पर निर्भर होते हैं, वे सामान्य सुनने वाले साथियों की तुलना में काफी अधिक संज्ञानात्मक प्रयास खर्च करते हैं। यह प्रयास आकलन की थकान का कारण बन सकता है जो कि सीमित क्षमता के बजाय थकान के कारण प्रदर्शन की गुणवत्ता में आई गिरावट है।

टीम को पूरी आकलन प्रक्रिया के दौरान थकान के लक्षणों की निगरानी करनी चाहिए। इन लक्षणों में प्रतिक्रिया की सटीकता में कमी, ध्यान भटकना, भावनात्मक रूप से अलग-थलग होना या बेचैनी शामिल हैं। जब थकान देखी जाती है, तो टीम को ब्रेक (विराम) निर्धारित करने चाहिए, यदि आवश्यक हो तो आकलन गतिविधियों को कई सत्रों में पुनर्वितरित करना चाहिए, या सत्र में बाद

के बजाय अधिक मांग वाले (कठिन) कार्यों को पहले रखने के लिए आकलन के क्रम को संशोधित करना चाहिए।

आकलन की थकान का प्रबंधन करने में विफल रहने पर व्यक्ति की वास्तविक क्षमताओं का कम आकलन हो सकता है, जिससे अनुचित हस्तक्षेप योजना बन सकती है।

17.3.3 आकलन के बाद टीम की भूमिका

अब आप देख सकते हैं कि आकलन चरण विभिन्न पेशेवरों से बड़ी मात्रा में डेटा उत्पन्न करता है। आकलन के बाद टीम की भूमिका इस डेटा को सार्थक रूप से एकीकृत (इकट्ठा) करना, निष्कर्षों को परिवार के साथ साझा करना, और इन निष्कर्षों को एक व्यवस्थित योजना में बदलना है।

विभिन्न क्षेत्रों (डोमेन) के निष्कर्षों को एकीकृत करना

व्यक्तिगत आकलन पूरे होने के बाद, टीम एक एकीकृत केस कॉन्फ्रेंस (समीक्षा बैठक) के लिए मिलती है। इस बैठक में, प्रत्येक पेशेवर अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। इसके बाद टीम सभी क्षेत्रों के प्रतिमानों (पैर्टन्स), संबंधों और प्राथमिकताओं को देखती है। उदाहरण के लिए, एक बच्चे की संज्ञानात्मक क्षमता औसत हो सकती है लेकिन भाषा का विकास काफी पिछड़ा हो सकता है। यह पैटर्न टीम को बताता है कि भाषा में देरी का कारण बौद्धिक सीमाएं नहीं हैं बल्कि भाषा के अपर्याप्त अवसर मिलना है, जो कि संभवतः श्रवण हानि की देर से पहचान होने के कारण हुआ है। यह एकीकृत समझ किसी भी एकल पेशेवर की रिपोर्ट की तुलना में हस्तक्षेप योजना को अधिक सटीक रूप से आकार देती है।

परिवार के साथ परिणाम साझा करना

केस कॉन्फ्रेंस के बाद, टीम आकलन के निष्कर्षों को साझा करने के लिए परिवार के साथ बैठक करती है। यह बैठक संवेदनशीलता और स्पष्टता के साथ आयोजित की जानी चाहिए। तकनीकी शब्दों को सरल भाषा में समझाया जाना चाहिए। निष्कर्षों को क्षमता-आधारित तरीके से प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिसमें यह रेखांकित किया जाना चाहिए कि व्यक्ति क्या कर सकता है, और साथ ही किन क्षेत्रों में सहायता की आवश्यकता है। माता-पिता को प्रश्न पूछने और अपनी चिंताएँ व्यक्त करने के लिए समय दिया जाना चाहिए। भारतीय संदर्भों में, जहाँ परिवार क्लिनिकल (अस्पताल या केंद्र के) वातावरण से तनाव या असहजता महसूस कर सकते हैं, परिवार की पसंदीदा भाषा का उपयोग करना और एक सम्मानजनक, बिना जल्दबाजी वाला दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

हस्तक्षेप योजना (इन्टरवेन्शन प्लान) विकसित करना

आकलन के बाद टीम की अंतिम जिम्मेदारी एक व्यवस्थित हस्तक्षेप योजना विकसित करना है। बच्चों के लिए, यह एक 'व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम' (IEP) या एक 'व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजना' (IFSP) का रूप लेता है। वयस्कों के लिए, यह एक 'व्यक्तिगत पुनर्वास योजना' (IRP) का रूप लेता है। ये दस्तावेज़ आकलन के निष्कर्षों को समय-सीमा, जिम्मेदार पेशेवरों और समीक्षा तिथियों के साथ विशिष्ट, मापने योग्य लक्ष्यों में बदलते हैं।

कठिन निष्कर्षों को नैतिक रूप से साझा करना

आकलन के सभी निष्कर्ष सीधे या साझा करने में आसान नहीं होते हैं। कभी-कभी टीम को ऐसे निष्कर्षों के बारे में बताना पड़ता है जो अप्रत्याशित, तनावपूर्ण या जटिल होते हैं। उदाहरण के लिए, जिस परिवार को उम्मीद थी कि उनके बच्चे की श्रवण हानि हल्की है, उन्हें यह पता चल सकता है कि यह गंभीर है। जिस परिवार का मानना था कि उनके बच्चे को कोई अन्य कठिनाई नहीं है, उन्हें यह पता चल सकता है कि आकलन के दौरान बौद्धिक अक्षमता या ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर जैसी किसी सह-गामी स्थिति की पहचान की गई है।

टीम को ऐसे निष्कर्षों को देखभाल, सटीकता और संवेदनशीलता के साथ साझा करना चाहिए। कठिन निष्कर्षों के नैतिक संचार का मार्गदर्शन कई सिद्धांत करते हैं:

1. ईमानदारी और पूर्णता: निष्कर्षों को ईमानदारी से और पूरी तरह से साझा किया जाना चाहिए तनाव से बचने के लिए जानकारी को छिपाना या हल्का करके बताना परिवार के दीर्घकालिक हितों में नहीं है।
2. दोषमुक्त दृष्टिकोण: निष्कर्षों को बिना किसी दोषारोपण के बताया जाना चाहिए परिवार के किसी भी सदस्य को व्यक्ति की स्थिति के लिए खुद को जिम्मेदार महसूस नहीं करना चाहिए।
3. सरल एवं सुलभ भाषा: निष्कर्षों को सरल और सुलभ भाषा में संप्रेषित किया जाना चाहिए तकनीकी शब्दों (jargon) को स्पष्ट रूप से समझाया जाना चाहिए, और निर्णय लेने के लिए कहे जाने से पहले परिवार को जानकारी को समझने और स्वीकार करने (process करने) का समय दिया जाना चाहिए।

4. तत्काल भावनात्मक सहायता: टीम को तत्काल भावनात्मक सहायता प्रदान करनी चाहिए परिवार की भावनात्मक प्रतिक्रिया को स्वीकार करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो उचित परामर्श (काउंसलिंग) के लिए मार्गदर्शन देना चाहिए।

भारतीय सांस्कृतिक संदर्भों में, टीम को विस्तारित परिवार (संयुक्त परिवार) के सदस्यों की भूमिका, सामुदायिक अपेक्षाओं, और दिव्यांगता के बारे में उन सांस्कृतिक मान्यताओं के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए जो इस बात को प्रभावित कर सकती हैं कि निष्कर्षों को कैसे प्राप्त किया जाता है और निर्णय कैसे लिए जाते हैं। एक परिवार-केंद्रित दृष्टिकोण यह स्वीकार करता है कि निर्णय अक्सर सामूहिक रूप से लिए जाते हैं, न कि केवल माता-पिता द्वारा, और टीम के संचार को इस वास्तविकता को सम्मानपूर्वक समायोजित करना चाहिए।

समीक्षा समय-सारणी निर्धारित करना

आकलन के बाद के चरण के अंत में, परिवार के केंद्र (सेंटर) से जाने से पहले टीम को एक स्पष्ट समीक्षा समय-सारणी स्थापित करनी चाहिए। यह समय-सारणी यह निर्दिष्ट करती है कि:

- अगला आकलन या प्रगति समीक्षा कब होगी,
- कौन से पेशेवर इसमें शामिल होंगे, और
- इस दौरान परिवार को कौन सी जानकारी या डेटा एकत्र करना चाहिए।

एक स्पष्ट समीक्षा समय-सारणी होने से परिवारों के प्रारंभिक आकलन के बाद पुनर्वास टीम से संपर्क टूटने की आम समस्या से बचा जा सकता है, जहाँ वे केवल तभी वापस लौटते हैं जब कोई संकट या समस्या उत्पन्न होती है। यह इस संदेश

को भी सुदृढ़ करता है कि पुनर्वास एक सतत, दीर्घकालिक प्रक्रिया है न कि कोई एकल घटना।

प्रगति की जाँच करें 1

निर्देश: अनुभाग 1.3.1 से 1.3.3 के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए।

1. श्रवण बाधित व्यक्ति के औपचारिक आकलन से पहले टीम द्वारा पूरे किए जाने वाले किन्हीं तीन कार्यों की सूची बनाइए। समझाइए कि प्रत्येक कार्य क्यों महत्वपूर्ण है।

2. एकीकृत केस कॉन्फ्रेंस (Integrated Case Conference) क्या है? इसे आकलन के बाद के चरण में एक आवश्यक कदम क्यों माना जाता है?

3. एक टीम गंभीर श्रवण बाधिता वाले दस वर्षीय बच्चे का आकलन कर रही है। आकलन के दौरान, ऑडियोलॉजिस्ट को पता चलता है कि बच्चे की हियरिंग एड का इयरमोल्ड ब्लॉक (अवरुद्ध) है। टीम को इस निष्कर्ष पर कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए और क्यों?

4. समझाइए कि श्रवण बाधित व्यक्ति का आकलन करते समय सामान्य रूप से सुनने वाली आबादी के लिए विकसित किए गए मानकीकृत परीक्षणों (Standardized Tests) का उपयोग सावधानी के साथ क्यों किया जाना चाहिए।

5. आकलन से पहले (Pre-assessment) और आकलन के बाद (Post-assessment) के चरणों में परिवार की भूमिका का वर्णन कीजिए। दोनों चरणों में परिवार की भागीदारी क्यों महत्वपूर्ण है?

17.4 आवश्यकताओं की पहचान, हस्तक्षेप की योजना, बदलावों का प्रबंधन और परिणामों का मापन

आकलन (मूल्यांकन) की प्रक्रिया किसी व्यक्ति की ताकत और उसकी आवश्यकताओं वाले क्षेत्रों की एक विस्तृत तस्वीर पेश करती है। हालाँकि, केवल आकलन के निष्कर्ष ही श्रवण बाधित व्यक्ति की मदद नहीं कर सकते। महत्व इस बात का है कि टीम उन निष्कर्षों के साथ क्या करती है। यह अनुभाग इस बात की जांच करता है कि टीम किस प्रकार आवश्यकताओं की पहचान और उन्हें प्राथमिकता देती है, हस्तक्षेपों की योजना बनाती है और उन्हें लागू करती है, जीवन के विभिन्न चरणों में बदलावों का समर्थन करती है, और समय-समय पर मूल्यांकन तथा लक्ष्य समीक्षा के माध्यम से परिणामों को मापती है।

17.4.1 आवश्यकताओं की पहचान एवं समाधान, और हस्तक्षेपों की योजना बनाना

विभिन्न क्षेत्रों (डोमेन) में आवश्यकताओं की पहचान करना

आकलन के निष्कर्षों को एकीकृत करने के बाद, टीम की पहली जिम्मेदारी व्यक्ति की आवश्यकताओं की व्यवस्थित पहचान करना है। आवश्यकताएं केवल कमियों की सूची नहीं होती हैं। आवश्यकता तब उत्पन्न होती है जब इस बात में अंतर होता है कि एक व्यक्ति वर्तमान में क्या कर सकता है और अपने दैनिक वातावरण में प्रभावी ढंग से काम करने के लिए उसे किस चीज की आवश्यकता है।

आपने ध्यान दिया होगा कि एक ही स्तर की श्रवण हानि वाले दो बच्चों की आवश्यकताएं बिल्कुल अलग-अलग हो सकती हैं। एक बच्चे में भाषा कौशल मजबूत हो सकता है लेकिन सामाजिक आत्मविश्वास कमजोर हो सकता है। दूसरे बच्चे में पर्याप्त सामाजिक कौशल हो सकता है लेकिन साक्षरता (पढ़ने-लिखने) में काफी पिछड़ापन हो सकता है। इसलिए टीम को आवश्यकताओं का आकलन श्रेणी के आधार पर नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से करना चाहिए।

श्रवण बाधिता पुनर्वास में आवश्यकताओं को आमतौर पर कई क्षेत्रों (डोमेन) में व्यवस्थित किया जाता है:

- ऑडियोलॉजिकल आवश्यकताएं: इसमें उचित प्रवर्धन (सही हियरिंग एड/कॉक्लियर इंप्लांट), उपकरण का रखरखाव और श्रवण संबंधी निरंतर निगरानी शामिल है।
- संचार आवश्यकताएं: इसमें बोली जाने वाली भाषा, सांकेतिक भाषा (साइन लैंग्वेज) या संवर्धित संचार प्रणालियों का विकास शामिल है।
- शैक्षिक आवश्यकताएं: इसमें शैक्षणिक सहायता, पाठ्यक्रम में संशोधन और सुलभ शिक्षण सामग्री शामिल हैं।
- सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताएं: इसमें साथियों के साथ संबंध बनाने में सहायता, पहचान का विकास और परामर्श (काउंसलिंग) शामिल हैं।
- कार्यात्मक और दैनिक जीवन की आवश्यकताएं: इसमें स्वतंत्र रूप से उपकरण का प्रबंधन, स्व-वकालत कौशल (अपने अधिकारों के लिए बोलना) और सामुदायिक वातावरण में तालमेल बिठाना शामिल है।

टीम प्रत्येक क्षेत्र की जांच करती है और पहचान करती है कि व्यक्ति के वर्तमान प्रदर्शन और उसके वातावरण की मांगों के बीच कहाँ कमियाँ हैं। ये कमियाँ ही हस्तक्षेप के लक्ष्यों का आधार बनती हैं।

संदर्भ में आवश्यकताओं को समझना

यह समझना महत्वपूर्ण है कि कोई भी आवश्यकता अलग-थलग (अकेले में) अस्तित्व में नहीं होती। प्रत्येक आवश्यकता एक विशिष्ट संदर्भ के भीतर मौजूद होती है व्यक्ति का घरेलू वातावरण, स्कूल का परिवेश, सामुदायिक संसाधन, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और परिवार की क्षमता, ये सभी मिलकर यह तय करते हैं कि वास्तविक आवश्यकता क्या है और किस स्तर का हस्तक्षेप यथार्थवादी होगा।

दो ऐसे बच्चों पर विचार करें जिन्हें मध्यम श्रवण बाधिता है और जिनकी शब्दावली का विकास पिछड़ा हुआ है:

- पहला बच्चा एक शहरी क्षेत्र में रहता है, एक ऐसे स्कूल में जाता है जहाँ एक प्रशिक्षित विशेष शिक्षक उपलब्ध है, और उसके माता-पिता में से एक ने सांकेतिक भाषा का कोर्स पूरा किया है।
- दूसरा बच्चा एक ग्रामीण क्षेत्र में रहता है, एक ऐसे स्कूल में जाता है जहाँ श्रवण बाधिता के लिए कोई प्रशिक्षित सहायता उपलब्ध नहीं है, और उसके माता-पिता को कोई पेशेवर मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हुआ है।

दोनों बच्चों की ऑडियोलॉजिकल प्रोफ़ाइल (ऑडियोग्राम) समान है, लेकिन उनकी संदर्भगत आवश्यकताएँ एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं। पहले बच्चे की टीम मुख्य रूप से शैक्षणिक शब्दावली को समृद्ध करने पर ध्यान केंद्रित कर सकती है। वहीं दूसरे बच्चे की टीम को शैक्षणिक लक्ष्यों को सार्थक रूप से आगे बढ़ाने से

पहले, स्कूल में प्रशिक्षित सहायता की कमी को दूर करना होगा और परिवार को मार्गदर्शन प्रदान करने की आवश्यकता को प्राथमिकता देनी होगी।

आवश्यकता की यह संदर्भ-संवेदनशील (context-sensitive) समझ **ICF ढांचे** का मुख्य केंद्र बिंदु है। यह ढांचा पर्यावरणीय कारकों जिनमें सेवाओं की उपलब्धता, पारिवारिक सहायता और सामुदायिक दृष्टिकोण शामिल हैं को सीधे तौर पर व्यक्ति के कामकाज और पुनर्वास परिणामों के लिए प्रासंगिक मानता है।

आवश्यकताओं का व्यवस्थित दस्तावेज़ीकरण

एक बार जब सभी डोमेन (क्षेत्रों) में आवश्यकताओं की पहचान हो जाती है, तो टीम को उन्हें एक संरचित प्रारूप में प्रलेखित (document) करना चाहिए।

एक आवश्यकता सारांश एक लिखित रिकॉर्ड होता है, जिसमें निम्नलिखित जानकारी शामिल होती है:

1. पहचान की गई प्रत्येक आवश्यकता,
2. वह डोमेन (क्षेत्र) जिससे वह संबंधित है,
3. आकलन से प्राप्त वे साक्ष्य जो उसकी पहचान का समर्थन करते हैं, और
4. टीम और परिवार द्वारा संयुक्त रूप से तय किया गया प्राथमिकता का स्तर।

यह दस्तावेज़ आगे की हस्तक्षेप योजना की नींव बनता है।

आवश्यकताओं का व्यवस्थित दस्तावेज़ीकरण कई उद्देश्यों को पूरा करता है:

- यह सुनिश्चित करता है कि योजना बनाते समय कोई भी आवश्यकता छूट न जाए।

- यह भविष्य की समीक्षाओं के लिए एक संदर्भ बिंदु प्रदान करता है, जिससे टीम यह ट्रैक कर सकती है कि क्या पहले पहचानी गई आवश्यकताओं का समाधान हो गया है या वे समय के साथ बदल गई हैं।
- यह पेशेवरों के बीच बेहतर संचार का समर्थन करता है, विशेष रूप से तब जब कोई नया टीम सदस्य शामिल होता है या जब व्यक्ति किसी नए सेवा परिवेश में स्थानांतरित होता है।

आवश्यकताओं को प्राथमिकता देना

एक बार जब सभी क्षेत्रों में आवश्यकताओं की पहचान हो जाती है, तो टीम को उन्हें प्राथमिकता देनी होती है। सभी आवश्यकताओं पर एक साथ काम नहीं किया जा सकता है। प्राथमिकता तय करने के लिए तीन प्रश्न मार्गदर्शक बनते हैं:

1. किस आवश्यकता का व्यक्ति के दैनिक कामकाज पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है?
2. कौन सी ऐसी आवश्यकता है, जिसे यदि पूरा न किया गया, तो अन्य क्षेत्रों में प्रगति के रास्ते में बाधाएँ खड़ी हो जाएँगी?
3. परिवार अपनी परिस्थितियों और संसाधनों को देखते हुए किस आवश्यकता को सबसे जरूरी मानता है?

अत्यधिक श्रवण हानि वाले एक शिशु के लिए, सबसे पहली प्राथमिकता भाषा तक तत्काल पहुँच बनाना है चाहे वह प्रवर्धन और एवीटी (AVT - ऑडिटरी वर्बल थेरेपी) के माध्यम से हो या सांकेतिक भाषा के माध्यम से। इसके बिना, अन्य सभी विकासात्मक क्षेत्र प्रभावित होंगे। स्कूल छोड़ने की तैयारी कर रहे किसी किशोर के लिए, सबसे उच्च प्राथमिकता वाली आवश्यकता संक्रमण योजना और स्व-वकालत कौशल का विकास हो सकती है।

हस्तक्षेपों की योजना बनाना

आवश्यकताओं को प्राथमिकता देने के बाद, टीम एक व्यवस्थित हस्तक्षेप योजना विकसित करती है। योजना का प्रत्येक लक्ष्य SMART ढांचे के अनुरूप होना चाहिए यानी वह Specific (विशिष्ट), Measurable (मापने योग्य), Achievable (प्राप्त करने योग्य), Realistic (यथार्थवादी) और Time-bound (समयबद्ध) होना चाहिए। "संचार में सुधार करना" जैसे अस्पष्ट लक्ष्य उपयोगी नहीं होते हैं। एक अच्छी तरह से लिखा गया लक्ष्य यह स्पष्ट रूप से बताता है कि व्यक्ति वास्तव में क्या करेगा, किन परिस्थितियों में करेगा, सटीकता के किस स्तर तक करेगा और किस तारीख तक पूरा करेगा।

उदाहरण के लिए, मध्यम श्रवण बाधिता वाले सात साल के बच्चे के लिए एक SMART लक्ष्य इस प्रकार हो सकता है: *"शैक्षणिक सत्र के अंत तक, बच्चा विजुअल फोनिक्स संकेतों का उपयोग करके वर्णमाला के सभी छब्बीस अक्षरों की सही पहचान करेगा, और लगातार तीन सत्रों में नब्बे प्रतिशत सटीकता प्रदर्शित करेगा।"*

हस्तक्षेप योजना में यह भी निर्दिष्ट किया जाता है कि प्रत्येक लक्ष्य के लिए कौन सा पेशेवर जिम्मेदार है, किन रणनीतियों और सामग्रियों का उपयोग किया जाएगा, किन आवासों (सुविधाओं) की आवश्यकता है, और प्रगति की समीक्षा कब की जाएगी। जिम्मेदारियों का वितरण स्पष्ट रूप से किया जाता है ताकि कोई भी लक्ष्य बिना किसी जवाबदेह टीम सदस्य के न छूटे।

योजना बनाने में परिवार की भागीदारी

परिवार हस्तक्षेप योजना का केवल एक मूक प्राप्तकर्ता नहीं है। वे इसमें सक्रिय योगदानकर्ता हैं। योजना बैठक के दौरान, माता-पिता अपनी प्राथमिकताओं, सांस्कृतिक मूल्यों और व्यावहारिक सीमाओं को साझा करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले एक परिवार को, जिसके पास साप्ताहिक थेरेपी सत्रों तक पहुँचने के सीमित साधन हैं, ऐसी योजना की आवश्यकता हो सकती है जो घर की व्यवस्थित गतिविधियों पर अधिक निर्भर हो। ऐसा परिवार जहाँ माता-पिता दोनों काम करते हैं, उन्हें लचीली समीक्षा समय-सारणी की आवश्यकता हो सकती है। टीम योजना को किसी काल्पनिक क्लिनिकल मॉडल के बजाय परिवार के वास्तविक जीवन के संदर्भ के अनुसार अनुकूलित करती है।

अल्पकालिक और दीर्घकालिक लक्ष्यों में भेद

एक सुव्यवस्थित हस्तक्षेप योजना (intervention plan) में अल्पकालिक (short-term) और दीर्घकालिक (long-term) दोनों प्रकार के लक्ष्य शामिल होते हैं। ये दो प्रकार के लक्ष्य अलग-अलग लेकिन एक-दूसरे के पूरक उद्देश्यों को पूरा करते हैं।

- दीर्घकालिक लक्ष्य: यह उस व्यापक परिणाम का वर्णन करता है जिसे टीम किसी विस्तारित अवधि (आमतौर पर छह महीने से एक वर्ष) में व्यक्ति द्वारा प्राप्त करने की उम्मीद करती है। यह हस्तक्षेप की समग्र दिशा को दर्शाता है।
    - *उदाहरण:* गंभीर श्रवण बाधिता से ग्रस्त पांच साल के बच्चे के लिए एक दीर्घकालिक लक्ष्य हो सकता है*: "शैक्षणिक वर्ष के अंत तक*

बच्चा दो सौ शब्दों की कार्यात्मक बोली जाने वाली शब्दावली विकसित करेगा।"

- अल्पकालिक लक्ष्य*:* यह दीर्घकालिक लक्ष्य की ओर एक छोटे और विशिष्ट कदम का वर्णन करता है जिसे कम समय *(*आमतौर पर चार से छह सप्ताह*)* के भीतर प्राप्त किया जा सकता है। अल्पकालिक लक्ष्य दीर्घकालिक लक्ष्य को प्रबंधनीय *(*सुगम*)* चरणों में विभाजित करते हैं।
    - *उदाहरण:* उसी योजना के भीतर एक अल्पकालिक लक्ष्य हो सकता है*: "चार सप्ताह के अंत तक, बच्चा तीन सत्रों के दौरान अस्सी प्रतिशत सटीकता के साथ, बोले जाने वाले शब्दों का उपयोग करके घर की बीस सामान्य वस्तुओं को सही ढंग से नाम देकर बताएगा।"*

अल्पकालिक लक्ष्य व्यक्ति और परिवार में प्रेरणा बनाए रखने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। जब कोई दीर्घकालिक लक्ष्य दूर का प्रतीत होता है, तो अल्पकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने से प्रगति का प्रत्यक्ष साक्ष्य मिलता है और हस्तक्षेप प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्धता मजबूत होती है।

साक्ष्य-आधारित हस्तक्षेप रणनीतियों का चयन

हस्तक्षेप योजना के प्रत्येक लक्ष्य के लिए, टीम को ऐसी रणनीतियों का चयन करना होगा जो साक्ष्य द्वारा समर्थित हों। एक **साक्ष्य-आधारित रणनीति** वह दृष्टिकोण है जिसकी प्रभावशीलता व्यवस्थित शोध के माध्यम से सिद्ध की जा चुकी है।

साक्ष्य-आधारित रणनीतियों का उपयोग करने से व्यक्ति ऐसे हस्तक्षेपों से बचा रहता है जिनका कोई प्रमाणित लाभ नहीं है, और यह सुनिश्चित होता है कि पेशेवरों का समय और परिवार के संसाधन उन दृष्टिकोणों पर केंद्रित हों जो सार्थक परिणाम देने की सबसे अधिक संभावना रखते हैं।

श्रवण बाधिता पुनर्वास के क्षेत्र में, साक्ष्य-आधारित रणनीतियों के उदाहरणों में शामिल हैं:

- ऑडिटरी-वर्बल थेरेपी (AVT): कॉक्लियर इंप्लांट वाले बच्चों में बोली जाने वाली भाषा विकसित करने के लिए।
- विजुअल फोनिक्स: उन बच्चों में ध्वन्यात्मक जागरूकता (phonological awareness) का निर्माण करने के लिए जो दृश्य संचार पर निर्भर हैं।
- पीयर-मीडिएटेड सोशल स्किल्स ट्रेनिंग: समावेशी स्कूल परिवेश में सामाजिक भागीदारी में सुधार के लिए।
- संरचित पेरेंट कोचिंग प्रोग्राम: घर पर भाषा विकास का समर्थन करने के लिए परिवार की क्षमता निर्माण हेतु।

रणनीतियों का चयन करते समय टीम को व्यक्ति की सीखने की शैली, संचार प्राथमिकताओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर भी विचार करना चाहिए। एक साक्ष्य-आधारित रणनीति जो व्यक्ति की प्रोफ़ाइल या परिवार के संदर्भ के अनुकूल नहीं है, उसे निरंतर या प्रभावी ढंग से लागू किए जाने की संभावना कम होती है।

17.4.2 *संक्रमण योजना (ट्रांजिशन प्लानिंग) में टीम की भूमिका*

संक्रमण क्या है?

एक संक्रमण (संक्रमण काल/बदलाव) का तात्पर्य जीवन के एक चरण, शैक्षिक परिवेश, या सेवा प्रणाली से दूसरे में होने वाले एक सुनियोजित बदलाव से है। श्रवण बाधित व्यक्ति के लिए, ये बदलाव कई महत्वपूर्ण मोड़ों पर होते हैं: जैसे घर से प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं में जाना, प्रारंभिक हस्तक्षेप से प्री-स्कूल (आँगनवाड़ी/बालवाटिका) में जाना, प्री-स्कूल से प्राथमिक विद्यालय में जाना, प्राथमिक से माध्यमिक विद्यालय में जाना, स्कूल से उच्च शिक्षा या रोजगार में जाना, और सक्रिय पुनर्वास से दीर्घकालिक सामुदायिक भागीदारी में कदम रखना।

निम्नलिखित स्थिति पर विचार करें: एक बारह साल का बच्चा जिसने बधिरों के एक विशेष स्कूल में पढ़ाई की है, अब एक मुख्यधारा के (सामान्य) माध्यमिक विद्यालय में जाने की तैयारी कर रहा है। इस बदलाव में एक ही समय में वातावरण, शिक्षण पद्धतियों, सहपाठी समूह, संचार संबंधी मांगों और सहायता प्रणालियों में बदलाव शामिल होता है। बिना किसी सावधानीपूर्वक योजना के, इस बदलाव के कारण शैक्षणिक रूप से पिछड़ना, सामाजिक अलगाव (अकेलापन) और मानसिक तनाव जैसी स्थितियाँ पैदा हो सकती हैं।

श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए संक्रमण (बदलाव) विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण क्यों होते हैं

संक्रमण (बदलाव या एक परिवेश से दूसरे में जाना) सभी शिक्षार्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण होते हैं। हालाँकि, श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए ये विशिष्ट अतिरिक्त कठिनाइयाँ पैदा करते हैं। एक परिचित परिवेश में, व्यक्ति वहाँ के ध्वन्यात्मक वातावरण (acoustic environment) को समझ चुका होता है,

जाने-पहचाने शिक्षकों व सहपाठियों के साथ संचार की दिनचर्या स्थापित कर चुका होता है, और दैनिक गतिविधियों को संभालने में उसका आत्मविश्वास विकसित हो चुका होता है। लेकिन एक नया परिवेश इन सभी स्थापित सहायताओं को एक साथ समाप्त कर देता है।

एक नई कक्षा में, पृष्ठभूमि का शोर अधिक हो सकता है। शिक्षक की पढ़ाने या संवाद करने की शैली अपरिचित हो सकती है। सहपाठियों को यह न पता हो कि हियरिंग डिवाइस या सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले व्यक्ति के साथ कैसे बातचीत की जाए। सहायक प्रौद्योगिकी का ढांचा जैसे कि एफएम (FM) सिस्टम, साउंड-फील्ड एम्प्लीफिकेशन, या कैप्शनिंग सेवाएं अभी तक उपलब्ध या स्थापित न हुआ हो।

इनमें से प्रत्येक कारक स्वतंत्र रूप से व्यक्ति के सीखने की प्रक्रिया में बाधा डाल सकता है। यदि इन्हें समय रहते सक्रिय रूप से प्रबंधित न किया जाए, तो ये मिलकर कार्यात्मक गिरावट की एक बड़ी स्थिति पैदा कर सकते हैं, जो हफ्तों या महीनों तक बनी रह सकती है।

इसी कारण से, टीम को प्रत्येक संक्रमण को एक नियमित प्रशासनिक प्रक्रिया मानने के बजाय **उच्च-प्राथमिकता वाली योजनाबद्ध घटना** के रूप में देखना चाहिए।

संक्रमण तत्परता का आकलन

संक्रमण होने से पहले, टीम एक संक्रमण तत्परता आकलन आयोजित करती है। यह एक संरचित मूल्यांकन है जो यह जांचता है कि नए परिवेश में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए क्या व्यक्ति के पास आवश्यक कौशल, आत्मविश्वास और सहायता उपलब्ध है।

संक्रमण तत्परता आकलन कई क्षेत्रों की जांच करता है:

- शैक्षणिक तत्परता: क्या व्यक्ति के पास नए परिवेश के पाठ्यक्रम तक पहुँच बनाने के लिए आवश्यक भाषा और साक्षरता कौशल हैं?
- संचार तत्परता: क्या व्यक्ति अपरिचित वयस्कों और साथियों के सामने अपनी आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकता है?
- स्व-वकालत तत्परता: क्या व्यक्ति पूरी तरह से किसी अभिभावक या सहायक व्यक्ति पर निर्भर रहे बिना, अपनी आवश्यक सुविधाओं की पहचान कर सकता है और उनके लिए अनुरोध कर सकता है?
- भावनात्मक तत्परता: क्या व्यक्ति मानसिक रूप से इस बदलाव के लिए तैयार है, या वह संक्रमण को लेकर चिंता, विरोध या भय के लक्षण दिखा रहा है?

संक्रमण तत्परता के आकलन से प्राप्त परिणाम टीम की पूर्व-तैयारी गतिविधियों का मार्गदर्शन करते हैं। यदि तत्परता में कोई कमी पाई जाती है, तो व्यक्ति के नए परिवेश में जाने और कठिनाइयों का सामना करने से पहले ही टीम उन्हें समय रहते दूर करती है।

संक्रमण से पहले टीम की भूमिका

संक्रमण की योजना (बदलाव की तैयारी) वास्तविक बदलाव होने से काफी पहले शुरू हो जानी चाहिए। स्कूल में होने वाले बदलाव के लिए, योजना कम से कम एक वर्ष पहले शुरू हो जानी चाहिए। संक्रमण से पहले टीम की जिम्मेदारियों में नए वातावरण के लिए व्यक्ति की तत्परता का आकलन करना, उन सहायताओं

की पहचान करना जो नए परिवेश को प्रदान करनी होंगी, और आने वाले बदलावों के लिए व्यक्ति और उसके परिवार को तैयार करना शामिल है।

- ऑडियोलॉजिस्ट यह आकलन करता है कि क्या व्यक्ति के वर्तमान उपकरण और सहायक तकनीक नए ध्वन्यात्मक वातावरण के लिए पर्याप्त हैं।
- विशेष शिक्षक एक विस्तृत संक्रमण रिपोर्ट तैयार करता है जिसमें छात्र के शैक्षणिक स्तर, सीखने की शैलियों, संचार आवश्यकताओं और सफल रणनीतियों का विवरण होता है।
- स्कूल मनोवैज्ञानिक सामाजिक तत्परता का आकलन करता है और किसी भी ऐसी भावनात्मक चिंता की पहचान करता है जो सामंजस्य बिठाने को प्रभावित कर सकती है।
- व्यावसायिक सलाहकार, किशोरों के मामले में, करियर संबंधी रुचियों की पहचान करने में मदद करता है और उपलब्ध रास्तों का खाका तैयार करता है।

संक्रमण के दौरान और बाद में टीम की भूमिका

बदलाव के दौरान, टीम उस नई संस्था या स्कूल की सहायता करती है जहाँ व्यक्ति जा रहा है। इसमें नए स्कूल का दौरा करना ताकि वहाँ के शिक्षकों को संक्षिप्त जानकारी दी जा सके, सहायक तकनीकों का प्रदर्शन करना, कक्षा में किए जाने वाले संशोधनों की सिफारिश करना, और नए सहपाठियों तथा कर्मचारियों को छात्र की संचार आवश्यकताओं से अवगत कराना शामिल हो सकता है।

बदलाव के बाद, टीम सामंजस्य की बारीकी से निगरानी करती है। पहले सत्र के दौरान नियमित रूप से की जाने वाली जांच से समस्याओं की जल्दी पहचान करने में मदद मिलती है। यदि कोई कठिनाई चाहे वह शैक्षणिक हो, सामाजिक

हो या भावनात्मक उत्पन्न होती है, तो टीम तुरंत सहायता योजना में बदलाव करती है। कोई संक्रमण केवल इसलिए पूरा नहीं मान लिया जाता कि व्यक्ति शारीरिक रूप से एक नए परिवेश में चला गया है। यह केवल तभी पूर्ण माना जाता है जब वह व्यक्ति उस नए वातावरण में प्रभावी ढंग से और आत्मविश्वास के साथ काम करने लगे।

एक संक्रमण सहायता योजना विकसित करना

मानक हस्तक्षेप योजना के अलावा, टीम प्रत्येक प्रमुख जीवन संक्रमण (बदलाव) के लिए एक अलग **संक्रमण सहायता योजना** विकसित करती है। यह दस्तावेज़ संक्रमण से पहले आवश्यक तैयारियों, नए परिवेश में पहले ही दिन से मौजूद होने वाली सहायताओं, संक्रमण के बाद की अवधि के लिए निगरानी समय-सारणी (monitoring schedule), और उन मानदंडों (criteria) को निर्दिष्ट करता है जो सफल समायोजन (adjustment) का संकेत देंगे।

विशेष स्कूल से मुख्यधारा (सामान्य) माध्यमिक स्कूल में जाने वाले छात्र के लिए एक संक्रमण सहायता योजना में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

- यह पुष्टि करना कि प्राप्तकर्ता स्कूल ने छात्र की मुख्य कक्षा में एफएम (FM) सिस्टम स्थापित कर लिया है;
- पहले सत्र (term) के दौरान विशेष शिक्षक द्वारा तीन अनुवर्ती दौरों (follow-up visits) का कार्यक्रम;
- छात्र के लिए तैयार किया गया एक संचार कार्ड जिसे वे नए शिक्षकों को दिखा सकते हैं, जिसमें उनकी श्रवण आवश्यकताओं का विवरण हो; तथा

- पहले सप्ताह, पहले महीने और पहले सत्र के अंत में माता-पिता से संपर्क (check-in call) करना।

संक्रमण के भावनात्मक आयाम का समर्थन

संक्रमण केवल प्रशासनिक या व्यावहारिक चुनौतियाँ नहीं हैं ये भावनात्मक अनुभव भी हैं। प्रारंभिक हस्तक्षेप कार्यक्रम के परिचित और सहायक वातावरण से निकलकर प्री-स्कूल के बड़े और अधिक शोर-शराबे वाले माहौल में जाने वाला छोटा बच्चा अलगाव की चिंता, भ्रम, और संवाद के आत्मविश्वास में अस्थायी कमी का अनुभव कर सकता है।

इसी प्रकार, एक विशेष स्कूल से जहाँ बहरापन सामान्य बात थी मुख्यधारा के स्कूल में जाने वाला किशोर जहाँ वह अकेला बधिर छात्र हो सकता है अपनी पहचान को लेकर बड़ी चुनौती और सामाजिक अलगाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता का सामना कर सकता है।

स्कूल मनोवैज्ञानिक व्यक्ति को संक्रमण के लिए भावनात्मक रूप से तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस तैयारी में शामिल हो सकते हैं:

- नए परिवेश में क्या अपेक्षाएं रखी जाएं, इस पर संरचित बातचीत करना;
- कठिन सामाजिक परिदृश्यों (social scenarios) का रोल-प्ले (अभिनय) करना;
- संचार में आने वाले व्यवधानों से निपटने के लिए रणनीतियाँ (coping strategies) विकसित करना; तथा
- व्यक्ति को उन वरिष्ठ साथियों (peer mentors) से जोड़ना जिन्होंने इस प्रकार के बदलावों को सफलतापूर्वक पार कर लिया है।

भावनात्मक तैयारी कोई अतिरिक्त सुविधा (luxury) नहीं है यह प्रभावी संक्रमण योजना का एक **अनिवार्य घटक** है।

वयस्कता में संक्रमण

स्कूल से वयस्क जीवन में होने वाला बदलाव विशेष रूप से जटिल होता है। इसमें एक साथ कई क्षेत्रों में बदलाव शामिल होते हैं: जैसे शिक्षा, रोजगार, स्वतंत्र जीवन यापन, सामाजिक संबंध और स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन। इस बदलाव के लिए बनी टीम में आमतौर पर एक व्यावसायिक पुनर्वास सलाहकार, एक ऑडियोलॉजिस्ट, एक विशेष शिक्षक और स्वयं वह युवा वयस्क शामिल होता है, जो निर्णय लेने में बराबर का भागीदार होता है।

यह टीम व्यक्ति को उपयुक्त उच्च शिक्षा संस्थानों या व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की पहचान करने, दिव्यांगता से संबंधित सुविधाओं के लिए आवेदन करने, RPWD अधिनियम 2016 के तहत अपने कानूनी अधिकारों को समझने, और वयस्क वातावरण में स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए आवश्यक स्व-वकालत कौशल विकसित करने में मदद करती है।

17.4.3 *परिणाम मापन, समय-समय पर आकलन और लक्ष्य समीक्षा में टीम की भूमिका*

परिणाम मापन क्या हैं?

एक परिणाम मापन एक मानकीकृत उपकरण या व्यवस्थित पद्धति है जिसका उपयोग यह मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है कि क्या किसी हस्तक्षेप ने व्यक्ति के कामकाज, संचार या जीवन की गुणवत्ता में इच्छित बदलाव पैदा किया है। परिणाम मापन एक बुनियादी सवाल का जवाब देते हैं: क्या हस्तक्षेप ने काम किया है?

परिणाम मापन के बिना, एक पुनर्वास टीम यह नहीं जान सकती कि उसके प्रयास व्यक्ति के लिए वास्तविक लाभ पैदा कर रहे हैं या नहीं। एक टीम जो केवल सेवाएं प्रदान करती है और उनके प्रभाव को नहीं मापती, वह अपने पूर्ण पेशेवर मानक पर काम नहीं कर रही है।

श्रवण बाधिता पुनर्वास में परिणाम मापन तीन स्तरों पर काम करते हैं:

- क्षति-स्तर के मापन: ये सीधे तौर पर श्रवण कार्य में होने वाले बदलावों का आकलन करते हैं उदाहरण के लिए, कॉक्लियर इंप्लांट सक्रिय होने के बाद वाक प्रत्यक्षण स्कोर में बदलाव।
- गतिविधि-स्तर के मापन: ये इस बात का आकलन करते हैं कि व्यक्ति क्या कर सकता है उदाहरण के लिए, क्या एक बच्चा अब बिना किसी दृश्य सहायता के कक्षा के निर्देशों का पालन कर सकता है।
- भागीदारी-स्तर के मापन: ये वास्तविक दुनिया में जुड़ाव के बदलावों का आकलन करते हैं उदाहरण के लिए, क्या एक वयस्क अब कार्यस्थल की बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) का 'इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ फंक्शनिंग, डिसेबिलिटी एंड हेल्थ' (ICF) ढांचा इन तीनों स्तरों पर परिणामों को मापने के लिए एक व्यवस्थित आधार प्रदान करता है। भारत में टीमों को राष्ट्रीय पुनर्वास नीति के अनुरूप ICF-आधारित परिणाम ढांचों का उपयोग करने के लिए तेजी से प्रोत्साहित किया जा रहा है।

सामान्यतः उपयोग किए जाने वाले परिणाम मापन उपकरण

टीम व्यक्ति की आयु, संचार प्रोफ़ाइल और मूल्यांकन किए जा रहे क्षेत्र (डोमेन) के आधार पर परिणाम मापन उपकरणों का चयन करती है। आप भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय श्रवण बाधिता पुनर्वास अभ्यास में उपयोग किए जाने वाले निम्नलिखित में से कुछ उपकरणों से परिचित हो सकते हैं:

छोटे बच्चों के लिए

- **IT-MAIS (Infant-Toddler Meaningful Auditory Integration Scale/शिशु और छोटे बच्चों के लिए सार्थक श्रवण एकीकरण पैमाना)** और **PEACH (Parents' Evaluation of Aural/oral performance of Children/माता-पिता द्वारा बच्चों के सुनने और बोलने के प्रदर्शन का मूल्यांकन):** यह माता-पिता द्वारा दी जाने वाली रिपोर्ट पर आधारित उपकरण हैं, जो यह मापते हैं कि बच्चा रोजमर्रा की सुनने की स्थितियों में अपने हियरिंग डिवाइस का उपयोग कैसे करता है।
- **ELF (Early Listening Function/शुरुआती सुनने की क्षमता) स्केल:** यह विभिन्न दूरियों और वातावरणों में सुनने के प्रदर्शन का आकलन करता है।

स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए (For School-Age Children)

- **MAIS (Meaningful Auditory Integration Scale/सार्थक श्रवण एकीकरण पैमाना):** दैनिक जीवन में ऑडिटरी एकीकरण (सुनकर समझने की क्षमता) को मापता है।
- **CPQ (Classroom Participation Questionnaire):** यह सुनकर कक्षा के निर्देशों और शिक्षण गतिविधियों में भाग लेने की छात्र की क्षमता का मूल्यांकन करता है।

- **AYJNISHD द्वारा विकसित शिक्षक अवलोकन चेकलिस्ट (Teacher observation checklists):** भारतीय स्कूल परिवेश में शैक्षणिक और संचार प्रगति की निगरानी के लिए संरचित उपकरण प्रदान करती हैं।

वयस्कों के लिए (For Adults)

- **HHIA (Hearing Handicap Inventory for Adults/वयस्कों के लिए श्रवण दोष सूची)** और **COSI (Client Oriented Scale of Improvement/ग्राहक-केंद्रित सुधार पैमाना):** ये व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं।
- **COSI का विशेष महत्व:** यह विशेष रूप से मूल्यवान है क्योंकि यह व्यक्तिगत होता है वयस्क हस्तक्षेप की शुरुआत में ही अपने स्वयं के विशिष्ट श्रवण लक्ष्यों की पहचान करता है, और नियमित अंतरालों पर प्रत्येक लक्ष्य की दिशा में प्रगति को मापा जाता है। यह COSI को एक ही समय में परिणाम उपकरण और लक्ष्य-निर्धारण ढांचा दोनों बनाता है।

सभी आयु समूहों के लिए

श्रवण बाधित व्यक्ति द्वारा स्वयं भरी जाने वाली **स्व-रिपोर्ट स्केल (self-report scales)** को परिणाम मापन के आवश्यक घटकों के रूप में तेजी से मान्यता दी जा रही है। ये स्केल अपनी प्रगति और कामकाज के बारे में व्यक्ति की अपनी धारणा को कैप्चर करती हैं एक ऐसा दृष्टिकोण जो केवल पेशेवरों का अवलोकन अकेले प्रदान नहीं कर सकता।

समय-समय पर आकलन और मूल्यांकन

परिणाम मापन कोई एकल घटना नहीं है। यह एक निरंतर, निर्धारित प्रक्रिया है। टीम हस्तक्षेप की पूरी अवधि के दौरान योजनाबद्ध अंतरालों पर समय-समय पर आकलन करती है। श्रवण बाधित छोटे बच्चे के लिए, समय-समय पर आकलन हर तीन से छह महीने में किया जा सकता है। स्कूल जाने वाले बच्चे के लिए, आमतौर पर वार्षिक समीक्षा न्यूनतम मानक होती है, जिसमें वर्ष के मध्य में अंतरिम जांच की जाती है। वयस्कों के लिए, समीक्षा की आवृत्ति उनके पुनर्वास लक्ष्यों की प्रकृति द्वारा निर्धारित की जाती है।

समय-समय पर किए जाने वाले आकलन में औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह के उपकरणों का उपयोग किया जाता है। औपचारिक उपकरणों में मानकीकृत ऑडियोलॉजिकल और भाषा आकलन शामिल हैं। अनौपचारिक उपकरणों में शिक्षक अवलोकन चेकलिस्ट, माता-पिता की रिपोर्ट प्रश्नावली, व्यक्ति द्वारा पूरी की जाने वाली स्व-रिपोर्ट स्केल और प्राकृतिक वातावरण में व्यवहार संबंधी अवलोकन शामिल हैं। ये उपकरण मिलकर सभी क्षेत्रों में प्रगति की एक व्यापक तस्वीर प्रदान करते हैं।

इस स्तर पर, आपको यह समझना चाहिए कि समय-समय पर किया जाने वाला आकलन दो उद्देश्यों को पूरा करता है। पहला, यह मापता है कि व्यक्ति अपने लक्ष्यों की ओर प्रगति कर रहा है या नहीं। दूसरा, यह उन नई आवश्यकताओं की पहचान करता है जो पिछले आकलन के बाद से उभरी हो सकती हैं क्योंकि किसी व्यक्ति की आवश्यकताएं स्थिर नहीं रहती हैं। जैसे-जैसे व्यक्ति बढ़ता है, उसका वातावरण बदलता है, वह नए कौशल सीखता है और नई चुनौतियों का सामना करता है, वैसे-वैसे उसकी आवश्यकताएं भी बदलती हैं।

रणनीतिक रूप से आवधिक आकलनों का समय निर्धारित करना

आवधिक आकलनों (periodic assessments) का समय रणनीतिक रूप से नियोजित किया जाना चाहिए, न कि मनमाने ढंग से। समीक्षाओं का समय ऐसे बिंदुओं पर निर्धारित किया जाना चाहिए जो व्यक्ति के विकासात्मक या शैक्षणिक कैलेंडर में सार्थक हों।

- **स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए:** वर्ष के मध्य और वर्ष के अंत की समीक्षाएं शैक्षणिक चक्र के साथ मेल खाती हैं और टीम को अगली अवधि (term) शुरू होने से पहले हस्तक्षेप योजना को समायोजित करने की अनुमति देती हैं।
- **कॉक्लियर इंप्लांट प्राप्त करने वाले बच्चों के लिए:** जिस बच्चे को हाल ही में कॉक्लियर इंप्लांट मिला है, उसके लिए अधिक लगातार समीक्षाएं पहले छह महीनों के लिए मासिक प्रारंभिक पोस्ट-एक्टिवेशन अवधि के दौरान होने वाले श्रवण प्रसंस्करण (auditory processing) में तीव्र परिवर्तनों की निगरानी करने के लिए आवश्यक हैं।

जब भी व्यक्ति के जीवन या कामकाज में कोई महत्वपूर्ण बदलाव होता है, तो टीम को **अनियोजित अंतरिम समीक्षाओं** (unplanned interim reviews) का समय भी निर्धारित करना चाहिए। महत्वपूर्ण बदलाव जो अंतरिम समीक्षा की मांग करते हैं, उनमें शामिल हैं:

- डिवाइस के प्रदर्शन में अचानक गिरावट,
- स्कूल या घरेलू वातावरण में बदलाव,
- किसी नई संबद्ध स्थिति का निदान,

- पारिवारिक विघटन जैसे जीवन के बड़े तनाव कारक, या
- पहले से प्राप्त कौशलों में महत्वपूर्ण गिरावट।

जब कोई तत्काल परिवर्तन हुआ हो, तो अगली निर्धारित समीक्षा की प्रतीक्षा करना स्वीकार्य व्यावसायिक अभ्यास नहीं है।

निर्णयों को संचालित करने के लिए डेटा का उपयोग करना

आधुनिक पुनर्वास अभ्यास का एक बुनियादी सिद्धांत **डेटा-संचालित निर्णय लेना (data-driven decision-making)** है। इसका मतलब यह है कि लक्ष्यों, रणनीतियों और योजनाओं के बारे में टीम जो भी निर्णय लेती है, वह उद्देश्यपूर्ण साक्ष्य (objective evidence) पर आधारित होना चाहिए न कि अंतर्ज्ञान (intuition), परंपरा या प्रशासनिक सुविधा पर।

डेटा-संचालित निर्णय लेने के लिए टीम को निम्नलिखित कार्य करने की आवश्यकता होती है:

1. लगातार परिणाम डेटा एकत्र करना,
2. इसे सटीक रूप से रिकॉर्ड करना,
3. प्रत्येक समीक्षा बैठक से पहले इसका विश्लेषण करना, तथा
4. इसे सभी योजना निर्णयों के प्राथमिक आधार के रूप में उपयोग करना।

- जब डेटा यह दिखाता है कि कोई रणनीति काम कर रही है, तो टीम इसे जारी रखती है और आगे बढ़ाती है।
- जब डेटा यह दिखाता है कि कोई रणनीति प्रगति उत्पन्न नहीं कर रही है, तो टीम उसे बदल देती है तुरंत, पूरे वार्षिक समीक्षा चक्र की प्रतीक्षा किए बिना।

अभ्यास में, डेटा संग्रह के लिए हमेशा औपचारिक मानकीकृत परीक्षणों की आवश्यकता नहीं होती है। संरचित अवलोकन रिकॉर्ड, थेरेपी सत्र लॉग, डिवाइस प्रदर्शन डेटा, शिक्षक रेटिंग स्केल, और माता-पिता की दैनिक डायरी ये सभी **वैध डेटा स्रोत** बनाते हैं। मुख्य आवश्यकता यह है कि डेटा संग्रह व्यवस्थित (systematic) हो जिसका अर्थ है कि यह अनौपचारिक और कभी-कभार होने के बजाय योजनाबद्ध, सुसंगत और समय के साथ तुलना करने योग्य हो।

पहले से निर्धारित लक्ष्यों के मुकाबले प्रदर्शन की समीक्षा करना

समय-समय पर किए जाने वाले आकलन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य हस्तक्षेप योजना में निर्धारित लक्ष्यों के मुकाबले प्रदर्शन की व्यवस्थित समीक्षा करना है। यह समीक्षा एक औपचारिक लक्ष्य समीक्षा बैठक में की जाती है, जिसमें टीम के सभी संबंधित सदस्य और परिवार शामिल होते हैं।

इस बैठक में, टीम हस्तक्षेप योजना के प्रत्येक लक्ष्य की जांच करती है और तीन सवाल पूछती है:

1. **क्या लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है?** यदि हाँ, तो टीम प्रगति को स्वीकार करती है, इसे प्रलेखित करती है, और अगले स्तर का एक नया लक्ष्य निर्धारित करती है।
2. **क्या लक्ष्य आंशिक रूप से प्राप्त हुआ है?** यदि हाँ, तो टीम जांच करती है कि पूर्ण प्राप्ति क्यों नहीं हुई। क्या लक्ष्य अवास्तविक था? क्या रणनीति अप्रभावी थी? क्या अनियमित उपस्थिति या उपकरण की खराबी जैसी बाहरी बाधाएं थीं? इसके बाद लक्ष्य को संशोधित किया जाता है या रणनीति बदली जाती है।

3. **क्या लक्ष्य की दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई है?** यदि कोई प्रगति नहीं हुई है, तो टीम एक विस्तृत समस्या विश्लेषण करती है। लक्ष्य को छोटे कदमों में तोड़ने की आवश्यकता हो सकती है। किसी दूसरे पेशेवर को नेतृत्व करने की आवश्यकता हो सकती है। अतिरिक्त सहायता या एक अलग संचार दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है।

यह व्यवस्थित समीक्षा प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि हस्तक्षेप योजना एक जीवंत और उत्तरदायी दस्तावेज़ बनी रहे न कि एक ऐसी निश्चित योजना जो इस बात की परवाह किए बिना चलती रहे कि वह काम कर रही है या नहीं।

दस्तावेज़ीकरण और रिपोर्टिंग

सभी परिणाम डेटा, समय-समय पर किए गए आकलन के परिणाम और लक्ष्य समीक्षा के निर्णयों को सावधानीपूर्वक प्रलेखित किया जाना चाहिए। यह दस्तावेज़ीकरण कई उद्देश्यों को पूरा करता है। यह व्यक्ति की प्रगति का एक दीर्घकालिक रिकॉर्ड प्रदान करता है। यह टीम के सदस्यों के बीच संचार का समर्थन करता है, विशेष रूप से तब जब पेशेवर भूमिकाएं बदलती हैं। यह फंडिंग आवेदनों, स्कूल प्लेसमेंट के निर्णयों और RPWD अधिनियम 2016 के तहत कानूनी वकालत के लिए साक्ष्य प्रदान करता है। यह संस्थागत और राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान (रिसर्च) और कार्यक्रम मूल्यांकन का आधार भी बनता है।

भारतीय पुनर्वास संदर्भों में, AYJNISHD (अली यावर जंग नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पीच एंड हियरिंग डिसेबिलिटीज) और AIISH (ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग) जैसे संस्थानों ने व्यवस्थित रिपोर्टिंग प्रारूप विकसित

किए हैं जिनका उपयोग टीमें आकलन, हस्तक्षेप और परिणाम डेटा के सुसंगत दस्तावेज़ीकरण के लिए कर सकती हैं।

प्रगति की जाँच करें — 2

निर्देश: अनुभाग 1.4 के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए।

1) हस्तक्षेप लक्ष्य योजना के संदर्भ में SMART ढांचे का क्या अर्थ है? श्रवण बाधित बच्चे के लिए SMART लक्ष्य का एक उदाहरण लिखिए।

2) श्रवण बाधिता पुनर्वास में प्रयुक्त 'संक्रमण' शब्द को समझाइए। ऐसे किन्हीं दो संक्रमण बिंदुओं की पहचान कीजिए जिनका सामना एक श्रवण बाधित व्यक्ति को करना पड़ सकता है, और प्रत्येक बिंदु पर टीम की भूमिका का वर्णन कीजिए।

3) परिणाम मापन क्या है? एक क्षति-स्तर के परिणाम मापन और एक भागीदारी-स्तर के परिणाम मापन के बीच अंतर को उदाहरण सहित समझाइए।

4) पहले से निर्धारित लक्ष्यों के मुकाबले प्रदर्शन की समीक्षा करते समय एक टीम कौन से तीन सवाल पूछती है? यदि समीक्षा अवधि के बाद किसी लक्ष्य में कोई प्रगति नहीं दिखती है, तो टीम को क्या कार्रवाई करनी चाहिए?

5) भारतीय पुनर्वास संदर्भ में, एक श्रवण बाधित व्यक्ति के लिए आकलन, हस्तक्षेप और परिणाम डेटा का दस्तावेज़ीकरण क्यों महत्वपूर्ण है? कम से कम दो विशिष्ट कारण दीजिए।

17.5 सारांश

इस यूनिट में श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए आकलन (मूल्यांकन), हस्तक्षेप, संक्रमण योजना और परिणाम मापन के पूरे चक्र में पुनर्वास टीम की भूमिका का परीक्षण किया गया।

- **आकलन चरण में:** टीम की जिम्मेदारियां औपचारिक मूल्यांकन शुरू होने से पहले ही पृष्ठभूमि की जानकारी एकत्र करने, आकलन के लक्ष्य निर्धारित करने, वातावरण तैयार करने और परिवार के साथ संवाद करने के माध्यम से शुरू हो जाती हैं। आकलन के दौरान, प्रत्येक पेशेवर उपयुक्त मानकीकृत और कार्यात्मक उपकरणों का उपयोग करके क्षेत्र-विशिष्ट मूल्यांकन करता है, विभिन्न वातावरणों में व्यवहार का अवलोकन करता है, वास्तविक समय में निष्कर्षों को साझा करता है, और व्यक्ति तथा परिवार को सक्रिय भागीदार के रूप में शामिल करता है। आकलन के बाद, टीम एक केस कॉन्फ्रेंस में निष्कर्षों को एकीकृत करती है, परिणामों को परिवार के साथ स्पष्ट और संवेदनशील भाषा में साझा करती है, और एक व्यवस्थित हस्तक्षेप योजना विकसित करती है।
- **हस्तक्षेप योजना चरण में:** टीम ऑडियोलॉजिकल, संचार, शैक्षिक, सामाजिक-भावनात्मक और कार्यात्मक क्षेत्रों में आवश्यकताओं की पहचान करती है, दैनिक कामकाज पर उनके प्रभाव के अनुसार उन्हें प्राथमिकता देती है, और उन्हें स्पष्ट जिम्मेदारियों और समय-सीमा वाले SMART लक्ष्यों में बदलती है।
- **संक्रमण योजना:** जीवन के प्रमुख चरणों प्रारंभिक हस्तक्षेप से स्कूल में, स्कूल के विभिन्न स्तरों के बीच, और स्कूल से वयस्क जीवन में टीम की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है, जिसके लिए शुरुआती तैयारी, नए संस्थानों

को जानकारी देना और बदलाव के बाद निगरानी की आवश्यकता होती है।

- **परिणाम मापन:** परिणाम मापन में टीम की भूमिका में ICF ढांचे के भीतर क्षति-स्तर, गतिविधि-स्तर और भागीदारी-स्तर के मापन का व्यवस्थित उपयोग शामिल है, जिसे योजनाबद्ध अंतरालों पर समय-समय पर किए जाने वाले आकलनों के माध्यम से संचालित किया जाता है।

लक्ष्य समीक्षा बैठकें टीम को यह जांचने की अनुमति देती हैं कि प्रत्येक लक्ष्य प्राप्त किया गया है, आंशिक रूप से प्राप्त किया गया है, या अधूरा रह गया है, और तदनुसार योजनाओं में संशोधन करने में मदद करती हैं। सभी निष्कर्षों, निर्णयों और परिणामों का सावधानीपूर्वक किया गया दस्तावेज़ीकरण देखभाल की निरंतरता सुनिश्चित करता है, कानूनी वकालत का समर्थन करता है, और भारतीय पुनर्वास संस्थानों में कार्यक्रमों के सुधार को गति देता है।

17.6 शब्दावली / तकनीकी शब्दावली

- **गतिविधि-स्तर का परिणाम मापन:** एक ऐसा मापन जो व्यावहारिक कार्यों में व्यक्ति द्वारा की जाने वाली गतिविधियों में बदलावों का मूल्यांकन करता है, जैसे कक्षा के निर्देशों का पालन करना या स्वतंत्र रूप से हियरिंग एड का प्रबंधन करना।
- **ऑडियोलॉजिकल आवश्यकताएं:** श्रवण बाधित व्यक्ति की सुनने से संबंधित आवश्यकताएं, जिनमें उचित प्रवर्धन (हियरिंग एड/कॉक्लियर इंप्लांट), उपकरण का रखरखाव और श्रवण देहली की समय-समय पर निगरानी शामिल है।

- **केस कॉन्फ्रेंस:** आकलन के बाद टीम के सभी संबंधित सदस्यों की आयोजित एक व्यवस्थित बैठक, जिसका उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों के निष्कर्षों को एकीकृत करना और एक समन्वित हस्तक्षेप योजना विकसित करना है।
- **क्षेत्र / डोमेन:** पुनर्वास टीम द्वारा आकलित और संबोधित किया जाने वाला कामकाज का एक विशिष्ट क्षेत्र, जैसे संचार, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक विकास, या दैनिक जीवन के कौशल।
- **कार्यात्मक आकलन:** वास्तविक जीवन के वातावरण और दैनिक गतिविधियों में व्यक्ति के प्रदर्शन का मूल्यांकन, जो केवल मानकीकृत परीक्षणों की सीमा से परे होता है।
- **लक्ष्य समीक्षा बैठक:** प्रत्येक हस्तक्षेप लक्ष्य की दिशा में प्रगति की जांच करने, सफलता या कठिनाई के कारणों की पहचान करने और आवश्यकतानुसार योजना को संशोधित करने के लिए समय-समय पर आयोजित की जाने वाली एक औपचारिक टीम बैठक।
- **ICF ढांचा:** विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) का 'इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ फंक्शनिंग, डिसेबिलिटी एंड हेल्थ', जो क्षति, गतिविधि और भागीदारी के स्तरों पर आकलन और परिणाम मापन को व्यवस्थित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक ढांचा है।
- **क्षति-स्तर का परिणाम मापन:** एक ऐसा मापन जो सीधे शरीर की प्रणाली की संरचना या कार्य में होने वाले बदलावों का मूल्यांकन करता है, जैसे ऑडियोमेट्रिक थ्रेसहोल्ड या वाक प्रत्यक्षण स्कोर (speech perception scores) में बदलाव।

- **व्यक्तिगत पुनर्वास योजना - आईआरपी(IRP):** दिव्यांग वयस्कों के लिए उपयोग किया जाने वाला एक व्यवस्थित नियोजन दस्तावेज़ जो पुनर्वास लक्ष्यों, जिम्मेदार पेशेवरों, रणनीतियों और समीक्षा की समय-सीमा को निर्दिष्ट करता है।
- **व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम - आईईपी (IEP):** एक व्यवस्थित दस्तावेज़ जो स्कूल जाने वाले छात्र के वर्तमान प्रदर्शन स्तर, वार्षिक लक्ष्य, आवश्यक सुविधाओं और सहायता सेवाओं को निर्दिष्ट करता है।
- **व्यक्तिगत पारिवारिक सेवा योजना - आईएफएसपी (IFSP):** तीन वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए एक नियोजन दस्तावेज़ जो पारिवारिक लक्ष्यों, प्राथमिकताओं, सांस्कृतिक प्राथमिकताओं और प्रारंभिक हस्तक्षेप रणनीतियों की पहचान करता है।
- **एकीकृत केस कॉन्फ्रेंस:** एक बैठक जिसमें सभी पेशेवर अपने व्यक्तिगत आकलन के निष्कर्षों को एक साथ प्रस्तुत करते हैं, विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिमानों (patterns) की पहचान करते हैं, और एक एकीकृत हस्तक्षेप योजना पर सहमत होते हैं।
- **हस्तक्षेप योजना:** एक व्यवस्थित दस्तावेज़ जो आकलन के निष्कर्षों को निर्दिष्ट जिम्मेदारियों, रणनीतियों और समीक्षा तिथियों के साथ विशिष्ट, मापने योग्य, समयबद्ध (SMART) लक्ष्यों में बदलता है।
- **परिणाम मापन:** एक मानकीकृत उपकरण या व्यवस्थित पद्धति जिसका उपयोग यह मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है कि क्या किसी हस्तक्षेप ने व्यक्ति के कामकाज, संचार या जीवन की गुणवत्ता में इच्छित बदलाव पैदा किया है।

- **भागीदारी-स्तर का परिणाम मापन:** एक ऐसा मापन जो व्यक्ति के वास्तविक दुनिया में जुड़ाव और सामाजिक भूमिकाओं में बदलाव का मूल्यांकन करता है, जैसे कार्यस्थल की बैठकों या सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी।
- **समय-समय पर आकलन:** हस्तक्षेप की पूरी अवधि के दौरान योजनाबद्ध अंतरालों पर आयोजित व्यक्ति की प्रगति का एक निर्धारित, दोहराया गया मूल्यांकन।
- **पूर्व-आकलन / आकलन से पहले का चरण:** औपचारिक आकलन शुरू होने से पहले की तैयारी का चरण, जिसमें पृष्ठभूमि की जानकारी एकत्र करना, लक्ष्य निर्धारण, वातावरण की तैयारी और परिवार के साथ संचार शामिल है।
- **स्मार्ट लक्ष्य:** एक ऐसा हस्तक्षेप लक्ष्य जो विशिष्ट, मापने योग्य, प्राप्त करने योग्य, यथार्थवादी और समयबद्ध होता है, जिसका उपयोग पुनर्वास योजना में स्पष्टता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।
- **संक्रमण / बदलाव:** जीवन के एक चरण, शैक्षिक परिवेश या सेवा प्रणाली से दूसरे में होने वाला एक सुनियोजित बदलाव, जिसके लिए पुनर्वास टीम से सावधानीपूर्वक तैयारी, समन्वय और अनुवर्ती सहायता की आवश्यकता होती है।
- **संक्रमण योजना:** वह व्यवस्थित प्रक्रिया जिसके द्वारा पुनर्वास टीम किसी व्यक्ति और उसके परिवार को जीवन के किसी बड़े बदलाव के लिए तैयार करती है, नए वातावरण में आवश्यक सहायताओं की पहचान करती है, और बदलाव के बाद सामंजस्य की निगरानी करती है।

- **व्यावसायिक पुनर्वास सलाहकार:** एक ऐसा पेशेवर जो दिव्यांग किशोरों और वयस्कों को करियर के लक्ष्यों की पहचान करने, प्रशिक्षण और रोजगार के अवसरों तक पहुँचने, और कार्यस्थल में मिलने वाली सुविधाओं का लाभ उठाने में मदद करता है।

17.7 प्रगति की जाँच प्रश्नों के उत्तर

'प्रगति की जाँच करें — 1' के उत्तर (अनुभाग 1.3)

उत्तर 1)

औपचारिक आकलन से पहले टीम द्वारा पूरे किए जाने वाले तीन कार्य निम्नलिखित हैं:

- **पृष्ठभूमि की जानकारी एकत्र करना:** टीम ऑडियोलॉजिकल रिपोर्ट, मेडिकल इतिहास, विकासात्मक डेटा और स्कूल रिपोर्ट सहित सभी मौजूदा रिकॉर्ड की समीक्षा करती है। यह परीक्षणों के अनावश्यक दोहराव को रोकता है और यह पहचानने में मदद करता है कि वर्तमान आकलन को कौन सी नई जानकारी प्रदान करनी चाहिए।
- **आकलन के लक्ष्य निर्धारित करना:** टीम यह सहमति बनाने के लिए बैठक करती है कि किन क्षेत्रों (डोमेन) का आकलन करने की आवश्यकता है, कौन से पेशेवर किस क्षेत्र का आकलन करेंगे, और किन उपकरणों का उपयोग किया जाएगा। यह सुनिश्चित करता है कि आकलन खंडित होने के बजाय लक्षित, कुशल और समन्वित हो।
- **आकलन के वातावरण को तैयार करना:** टीम यह सुनिश्चित करती है कि परीक्षण कक्ष ठीक से अंशांकित हों, रोशनी पर्याप्त हो, और बैठने या सही

स्थिति में रखने वाले किसी भी विशेष उपकरण की व्यवस्था हो। एक अच्छी तरह से तैयार वातावरण यह सुनिश्चित करता है कि मूल्यांकन के दौरान व्यक्ति अपनी वास्तविक क्षमता के अनुसार प्रदर्शन कर सके।

उत्तर 2)

एक एकीकृत केस कॉन्फ्रेंस एक व्यवस्थित बैठक है जो सभी व्यक्तिगत डोमेन आकलनों के पूरा होने के बाद आयोजित की जाती है। प्रत्येक पेशेवर पूरी टीम के सामने अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। इसके बाद टीम मिलकर निष्कर्षों की जांच करती है, और विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे प्रतिमानों और संबंधों की तलाश करती है जिन्हें किसी एक पेशेवर की रिपोर्ट अकेले उजागर नहीं कर सकती।

उदाहरण के लिए, एक बच्चा औसत संज्ञानात्मक क्षमता दिखा सकता है लेकिन भाषा के विकास में काफी पिछड़ा हो सकता है यह एक ऐसा पैटर्न है जो बौद्धिक सीमा के बजाय भाषा के अपर्याप्त अवसर मिलने की ओर इशारा करता है। यह एकीकृत समझ आवश्यक है क्योंकि यह सुनिश्चित करती है कि हस्तक्षेप योजना किसी एकल आकलन के अलग-थलग डेटा के बजाय एक सटीक और संपूर्ण-व्यक्तिगत तस्वीर पर आधारित हो। इस एकीकरण चरण के बिना, विभिन्न पेशेवर परस्पर विरोधी हस्तक्षेपों की योजना बना सकते हैं जो एक-दूसरे का समर्थन नहीं करते हैं।

उत्तर 3) जब ऑडियोलॉजिस्ट को आकलन के दौरान पता चलता है कि बच्चे की हियरिंग एड का इयरमोल्ड ब्लॉक है, तो उन्हें तुरंत टीम के बाकी सदस्यों को सूचित करना चाहिए। वाक प्रत्यक्षण या भाषा आकलन को आगे बढ़ाने से पहले हियरिंग एड की सर्विस की जानी चाहिए या इयरमोल्ड को साफ किया जाना चाहिए।

यदि एसएलपी (SLP) या विशेष शिक्षक ब्लॉक हुए इयरमोल्ड के बारे में जाने बिना अपना आकलन जारी रखते हैं, तो बच्चा अपनी वास्तविक क्षमताओं के कारण नहीं बल्कि उपकरण की खराबी के कारण खराब प्रदर्शन करेगा। यह गलत परिणाम देगा और इसके कारण गलत व निम्न-स्तरीय हस्तक्षेप लक्ष्य तय हो जाएंगे। यह स्थिति यह दर्शाती है कि पूरी मूल्यांकन प्रक्रिया की सटीकता और वैधता को बनाए रखने के लिए आकलन के दौरान टीम के सदस्यों के बीच वास्तविक समय में संचार क्यों आवश्यक है।

उत्तर 4) सामान्य रूप से सुनने वाली आबादी के लिए विकसित किए गए मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग सावधानी के साथ किया जाना चाहिए क्योंकि वे 'नॉर्म्ड' (normed) होते हैं यानी, उनके स्कोरिंग मानक सामान्य श्रवण क्षमता वाले व्यक्तियों से एकत्र किए गए डेटा पर आधारित होते हैं।

श्रवण बाधित व्यक्ति ऐसे परीक्षण में अपनी सीमित क्षमता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए खराब प्रदर्शन कर सकता है क्योंकि परीक्षण ऑडिटरी प्रोसेसिंग, बोली जाने वाली भाषा की समझ, या शब्दावली पर निर्भर करता है जिसे व्यक्ति को अपनी श्रवण स्थिति के कारण विकसित करने का कम अवसर मिला है। बिना किसी संशोधन या सावधानी के इन परीक्षणों का उपयोग करने से टीम व्यक्ति की वास्तविक संज्ञानात्मक या शैक्षणिक क्षमताओं का कम आकलन कर सकती है, जिसके परिणामस्वरूप अनुचित स्कूल प्लेसमेंट के निर्णय या अनावश्यक रूप से कम हस्तक्षेप लक्ष्य तय हो सकते हैं। टीमों को जहाँ भी उपलब्ध हो, विशेष रूप से बधिर या सुनने में कठिन आबादी के लिए नॉर्म्ड परीक्षणों का उपयोग करना चाहिए, या पूरक के रूप में गैर-शाब्दिक आकलन उपकरणों का उपयोग करना चाहिए।

उत्तर 5) आकलन से पहले के चरण के दौरान, परिवार इनटेक प्रश्नावली, विकासात्मक इतिहास और कम्यूनिकेशन लॉग के माध्यम से व्यापक पृष्ठभूमि की जानकारी प्रदान करके एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माता-पिता बच्चे के दैनिक कार्यात्मक व्यवहारों की रिपोर्ट करते हैं जिन्हें पेशेवर क्लिनिकल माहौल में नहीं देख सकते हैं। उनका इनपुट टीम को बच्चे के वास्तविक जीवन के संचार प्रतिमानों को समझने और आकलन के लिए सबसे जरूरी क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है।

आकलन के बाद के चरण के दौरान, परिवार परिणाम-साझाकरण बैठक में भाग लेता है, जहाँ उन्हें सरल भाषा में निष्कर्ष प्राप्त होते हैं, वे प्रश्न पूछते हैं, और हस्तक्षेप योजना में अपनी प्राथमिकताओं का योगदान देते हैं। दोनों चरणों में परिवार की भागीदारी महत्वपूर्ण है क्योंकि योजना को व्यक्ति के घर और दैनिक जीवन में ले जाने के लिए परिवार की समझ, प्रतिबद्धता और सक्रिय भागीदारी के बिना पुनर्वास प्रभावी नहीं हो सकता है।

'प्रगति की जाँच करें 2' के उत्तर (अनुभाग 1.4)

उत्तर 1) SMART ढांचा स्पष्ट और जवाबदेह हस्तक्षेप लक्ष्यों को लिखने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक मानक है। प्रत्येक लक्ष्य होना चाहिए:

- **विशिष्ट (Specific):** यह स्पष्ट रूप से बताए कि व्यक्ति वास्तव में क्या करेगा;
- **मापने योग्य (Measurable):** यह निर्दिष्ट करे कि प्रगति को कैसे मापा जाएगा;

- **प्राप्त करने योग्य (Achievable):** यह व्यक्ति के वर्तमान स्तर को देखते हुए यथार्थवादी हो;
- **प्रासंगिक/यथार्थवादी (Realistic):** यह व्यक्ति की दैनिक आवश्यकताओं के लिए अर्थपूर्ण और प्रासंगिक हो; तथा
- **समयबद्ध (Time-bound):** समीक्षा के लिए इसकी एक स्पष्ट समय-सीमा हो।

श्रवण बाधित बच्चे के लिए SMART लक्ष्य का उदाहरण: "तीन महीने के अंत तक, बच्चा अपनी हियरिंग एड का उपयोग करके, लगातार दो थेरेपी सत्रों में अस्सी प्रतिशत सटीकता के साथ, अपने आसपास के वातावरण की दस सामान्य ध्वनियों की सही पहचान करेगा।"

उत्तर 2.) श्रवण बाधिता पुनर्वास में **संक्रमण** का अर्थ जीवन के एक चरण, शैक्षिक परिवेश या सेवा प्रणाली से दूसरे में होने वाले एक सुनियोजित बदलाव से है। दो सामान्य संक्रमण बिंदु निम्नलिखित हैं:

(क) विशेष स्कूल से मुख्यधारा (सामान्य) स्कूल में जाना: इसमें टीम की भूमिका छात्र की शैक्षणिक और सामाजिक तत्परता का आकलन करने, एक विस्तृत संक्रमण रिपोर्ट तैयार करने, प्राप्तकर्ता स्कूल के शिक्षकों को छात्र की संचार आवश्यकताओं के बारे में ब्रीफ (सूचित) करने, कक्षा में संशोधनों की सिफारिश करने, और नए वातावरण में पहले सत्र के दौरान छात्र के सामंजस्य की निगरानी करने में होती है।

(ख) स्कूल से वयस्क जीवन में जाना: इसमें टीम की भूमिका उपयुक्त उच्च शिक्षा या व्यावसायिक प्रशिक्षण विकल्पों की पहचान करने, दिव्यांगता से संबंधित

सुविधाओं के लिए आवेदन करने, युवा वयस्क के स्व-वकालत कौशल को विकसित करने, और यह सुनिश्चित करने में होती है कि वे RPWD अधिनियम 2016 के तहत अपने कानूनी अधिकारों को समझें।

दोनों ही मामलों में, योजना बनाने की शुरुआत वास्तविक बदलाव होने से काफी पहले हो जानी चाहिए।

उत्तर 3.) एक **परिणाम मापन** एक मानकीकृत उपकरण या पद्धति है जिसका उपयोग यह मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है कि क्या किसी हस्तक्षेप ने व्यक्ति के कामकाज या जीवन की गुणवत्ता में इच्छित सुधार किया है।

- **क्षति-स्तर का परिणाम मापन:** यह सीधे शरीर के कार्य या संरचना में होने वाले बदलावों का मूल्यांकन करता है। *उदाहरण के लिए,* कॉक्लियर इंप्लांट सक्रिय होने से पहले और बाद में बच्चे के वाक प्रत्यक्षण स्कोर को मापना क्षति के स्तर पर बदलाव का आकलन करता है यह दिखाता है कि क्या उपकरण ने ध्वनियों का पता लगाने और उनमें अंतर करने की बच्चे की क्षमता में सुधार किया है।
- **भागीदारी-स्तर का परिणाम मापन:** यह वास्तविक दुनिया में जुड़ाव और सामाजिक भूमिकाओं में बदलाव का मूल्यांकन करता है। *उदाहरण के लिए,* स्व-रिपोर्ट प्रश्नावली का उपयोग करके यह आकलन करना कि क्या श्रवण बाधित कोई वयस्क अब पारिवारिक बातचीत या कार्यस्थल की चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम है, भागीदारी के स्तर पर बदलाव को मापता है यह दिखाता है कि क्या हस्तक्षेप ने सार्थक जीवन स्थितियों में व्यक्ति की वास्तविक व्यस्तता में सुधार किया है।

उत्तर 4.) पहले से निर्धारित लक्ष्यों के मुकाबले प्रदर्शन की समीक्षा करते समय टीम तीन सवाल पूछती है:

1. **क्या लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है?** यदि हाँ, तो टीम प्रगति को प्रलेखित करती है और कठिनाई के अगले स्तर पर एक नया लक्ष्य निर्धारित करती है।
2. **क्या लक्ष्य आंशिक रूप से प्राप्त हुआ है?** यदि हाँ, तो टीम जांच करती है कि पूर्ण प्राप्ति क्यों नहीं हुई क्या लक्ष्य बहुत अधिक महत्वाकांक्षी था, रणनीति अप्रभावी थी, या खराब उपस्थिति अथवा उपकरण की खराबी जैसी बाहरी बाधाओं ने हस्तक्षेप किया। इसके बाद लक्ष्य को संशोधित किया जाता है या रणनीति बदली जाती है।
3. **क्या कोई भी प्रगति नहीं हुई है?** यदि कोई प्रगति नहीं हुई है, तो टीम एक विस्तृत समस्या विश्लेषण करती है।

कोई प्रगति न होने पर कार्रवाई: लक्ष्य को छोटे-छोटे चरणों में तोड़ने की आवश्यकता हो सकती है, किसी भिन्न पेशेवर को हस्तक्षेप का नेतृत्व करने की आवश्यकता हो सकती है, एक अलग संचार दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है, या अतिरिक्त पारिवारिक सहायता की आवश्यकता हो सकती है। इसके बाद टीम तदनुसार योजना को संशोधित करती है और बदलावों के प्रति प्रतिक्रिया की निगरानी के लिए समीक्षा का समय-अंतराल छोटा (कम) तय करती है।

उत्तर 5.) भारतीय पुनर्वास संदर्भ में, आकलन, हस्तक्षेप और परिणाम डेटा का दस्तावेज़ीकरण कम से कम दो विशिष्ट कारणों से महत्वपूर्ण है:

- **1. देखभाल की निरंतरता सुनिश्चित करना:** जब कोई पेशेवर टीम छोड़ता है, उसका तबादला होता है, या वह उपलब्ध नहीं होता है, तो व्यापक रिकॉर्ड नए आने वाले पेशेवर को पुनर्वास प्रक्रिया में बिना किसी बाधा के व्यक्ति के इतिहास, वर्तमान लक्ष्यों और प्रगति को समझने में मदद करते हैं। यह विशेष रूप से सरकारी संस्थानों में महत्वपूर्ण है जहाँ कर्मचारियों का फेरबदल अक्सर होता रहता है।
- **2. कानूनी वकालत और अधिकारों के लिए साक्ष्य प्रदान करना:** RPWD अधिनियम 2016 के तहत, दिव्यांग व्यक्तियों को शैक्षणिक सुविधाओं, दिव्यांगता प्रमाण पत्र, ADIP जैसी योजनाओं के तहत सहायक उपकरण, और प्रवेश व रोजगार में सकारात्मक कार्रवाई (आरक्षण/सुविधाएं) प्राप्त करने का कानूनी अधिकार है। सटीक और सुव्यवस्थित रिकॉर्ड परिवारों और व्यक्तियों को इन अधिकारों का दावा करने में सहायता करते हैं और सेवाओं से इनकार या विवाद की स्थिति में साक्ष्य प्रदान करते हैं।

17.8 निबंधात्मक प्रश्न (Essay-Type Questions)

लघु निबंध प्रश्न *(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250–300 शब्दों में दें)*

1. पूर्व-आकलन चरण के दौरान टीम की जिम्मेदारियों का वर्णन कीजिए। सटीक मूल्यांकन परिणामों के लिए औपचारिक आकलन से पहले गहन तैयारी क्यों महत्वपूर्ण है?

2. एकीकृत केस कॉन्फ्रेंस क्या है? इसके उद्देश्य को समझाइए और वर्णन कीजिए कि इस बैठक के दौरान आमतौर पर क्या होता है।

3. पुनर्वास योजना में लक्ष्य लेखन के लिए SMART ढांचे की व्याख्या कीजिए। पेशेवर अभ्यास में अस्पष्ट लक्ष्यों को अपर्याप्त क्यों माना जाता है?

4. श्रवण बाधित छात्र के लिए विशेष स्कूल से मुख्यधारा के (सामान्य) स्कूल में संक्रमण (बदलाव) को सुगम बनाने में टीम की भूमिका का वर्णन कीजिए। संक्रमण से पहले, दौरान और बाद में टीम को क्या कदम उठाने चाहिए?

5. ICF ढांचा क्या है? समझाइए कि श्रवण बाधिता पुनर्वास में क्षति, गतिविधि और भागीदारी के स्तरों पर परिणाम मापन को व्यवस्थित करने के लिए इसका उपयोग कैसे किया जाता है।

दीर्घ निबंध प्रश्न *(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500–600 शब्दों में दें)*

1. गंभीर श्रवण बाधिता से ग्रस्त स्कूल जाने वाले बच्चे के लिए आकलन के तीनों चरणों पहले, दौरान और बाद में में टीम की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर चर्चा कीजिए। इसमें विशिष्ट टीम सदस्यों, उपयोग किए जाने वाले उपकरणों और प्रत्येक चरण में पारिवारिक भागीदारी के महत्व का संदर्भ शामिल करें।

2. समझाइए कि एक पुनर्वास टीम श्रवण बाधित व्यक्ति की आवश्यकताओं की पहचान, प्राथमिकता और समाधान कैसे करती है। SMART ढांचे और पारिवारिक भागीदारी के संदर्भ में, इन आवश्यकताओं को एक व्यवस्थित हस्तक्षेप योजना में बदलने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

3. "संक्रमण योजना पुनर्वास टीम की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक है।" श्रवण बाधित व्यक्ति के जीवन में कम से कम दो प्रमुख संक्रमण बिंदुओं के संदर्भ में इस कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। चर्चा कीजिए कि जब

बदलावों की पर्याप्त योजना नहीं बनाई जाती है तो क्या समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

4. श्रवण बाधिता पुनर्वास में समय-समय पर किए जाने वाले आकलन और लक्ष्य समीक्षा की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए। समझाइए कि जब कोई लक्ष्य प्राप्त कर लिया जाता है, आंशिक रूप से प्राप्त होता है, या कोई प्रगति नहीं दिखाता है, तो टीम क्या कदम उठाती है, और दीर्घकालिक पुनर्वास परिणामों को समर्थन देने में दस्तावेज़ीकरण की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

5. श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए पुनर्वास अभ्यास में परिणाम मापन के महत्व का मूल्यांकन कीजिए। ICF ढांचे के भीतर परिणाम मापन के तीन स्तरों पर चर्चा कीजिए, समझाइए कि समय-समय पर किया जाने वाला आकलन साक्ष्य-आधारित अभ्यास को कैसे समर्थन देता है, और भारतीय पुनर्वास संदर्भ में व्यवस्थित परिणाम मापन को लागू करने में टीमों को आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए।

17.9 Bibliography / Reference List संदर्भ सूची

1. Ali Yavar Jung National Institute of Speech and Hearing Disabilities. (2021). *National manual on clinical classification and educational mapping of hearing impairment*. Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India. अली यावर जंग नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग डिसेबिलिटीज (AYJNISHD)। (2021)। श्रवण बाधिता के

नैदानिक वर्गीकरण और शैक्षणिक मैपिंग पर राष्ट्रीय नियमावली (मैनुअल)। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार।

2. All India Institute of Speech and Hearing. (2018). *Clinical manual for speech-language pathologists in audiological rehabilitation*. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India.ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग (AIISH)। (2018)। ऑडियोलॉजिकल पुनर्वास में स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट के लिए नैदानिक नियमावली (क्लीनिकल मैनुअल)। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।
3. Ministry of Law and Justice, Government of India. (2016). *The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016*. The Gazette of India (Extraordinary), Part II, Section 1. विधि एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार। (2016)। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 (The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016)। भारत का राजपत्र (असाधारण), भाग II, खंड 1।
4. Ministry of Human Resource Development, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. https://www.education.gov.in/nep-2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)। https://www.education.gov.in/nep-2020

5. Rehabilitation Council of India. (2017). *Norms and regulations for B.Ed. Special Education (Hearing Impairment)*. Government of India. भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI)। (2017)। बी.एड. विशेष शिक्षा (श्रवण बाधिता) के लिए मानदंड एवं विनियम। भारत सरकार।
6. UNESCO. (1994). *The Salamanca Statement and Framework for Action on Special Needs Education*. World Conference on Special Needs Education: Access and Quality, Salamanca, Spain.यूनेस्को (UNESCO)। (1994)। विशेष आवश्यकता शिक्षा पर सालामांकार घोषणापत्र और कार्रवाई ढांचा (The Salamanca Statement and Framework for Action on Special Needs Education)। विशेष आवश्यकता शिक्षा पर विश्व सम्मेलन: पहुंच और गुणवत्ता, सालामांकार, स्पेन।
7. World Health Organization. (2001). *International Classification of Functioning, Disability and Health (ICF)*. World Health Organization. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2001)। कार्यप्रणाली, दिव्यांगता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (ICF)। विश्व स्वास्थ्य संगठन।
8. World Health Organization. (2021). *World report on hearing*. WHO Press. https://www.who.int/publications/i/item/world-report-on-hearingविश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2021)। श्रवण पर विश्व

रिपोर्ट (World Report on Hearing)। डब्ल्यूएचओ प्रेस। https://www.who.int/publications/i/item/world-report-on-hearing

9. Joint Committee on Infant Hearing. (2019). Year 2019 position statement: Principles and guidelines for early hearing detection and intervention programs. *The Journal of Early Hearing Detection and Intervention*, *4*(2), 1–44. https://doi.org/10.15125/B7X36K संयुक्त शिशु श्रवण समिति (JCIH)। (2019)। वर्ष 2019 स्थिति विवरण: प्रारंभिक श्रवण पहचान और हस्तक्षेप कार्यक्रमों के लिए सिद्धांत और दिशानिर्देश। द जर्नल ऑफ अर्ली हियरिंग डिटैक्शन एंड इंटरवेंशन, 4(2), 1–44। https://doi.org/10.15125/B7X36K
10. Individuals with Disabilities Education Act, 20 U.S.C. § 1400 (2004). *(Referenced for IEP and transition planning frameworks internationally adopted in Indian practice.)* असमर्थता युक्त व्यक्ति शिक्षा अधिनियम (IDEA), 20 U.S.C. § 1400 (2004)। (आईईपी - IEP और संक्रमण योजना के उन ढांचों के लिए संदर्भित, जिन्हें भारतीय अभ्यास में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनाया गया है।)

17.10 Supplementary / Useful Reading Material अतिरिक्त / उपयोगी अध्ययन सामग्री

1. Ali Yavar Jung National Institute of Speech and Hearing Disabilities (AYJNISHD). *Clinical and educational resource manuals for hearing impairment rehabilitation*. Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India. Available at: www.ayjnishd.gov.in अली यावर जंग नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग डिसेबिलिटीज (AYJNISHD)। श्रवण बाधिता पुनर्वास के लिए नैदानिक और शैक्षणिक संसाधन नियमावली। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार। उपलब्ध: www.ayjnishd.gov.in
2. All India Institute of Speech and Hearing (AIISH). *Training and clinical manuals for audiological and speech-language rehabilitation*. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India. Available at: www.aiishmysore.in ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग (AIISH)। ऑडियोलॉजिकल और वाक-भाषा (स्पीच-लैंग्वेज) पुनर्वास के लिए प्रशिक्षण और नैदानिक नियमावली। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार। उपलब्ध: www.aiishmysore.in
3. Rehabilitation Council of India (RCI). *Professional standards, norms, and course regulations for special education and rehabilitation*. Government of India. Available at: www.rehabcouncil.nic.in भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI)। विशेष शिक्षा और पुनर्वास के लिए व्यावसायिक मानक, मानदंड

और पाठ्यक्रम विनियम। भारत सरकार। उपलब्ध: www.rehabcouncil.nic.in

4. Indian Sign Language Research and Training Centre (ISLRTC). *Policy documents and instructional materials for sign language education*. Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India. Available at: www.islrtc.nic.in भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (ISLRTC)। सांकेतिक भाषा शिक्षा के लिए नीतिगत दस्तावेज और निर्देशात्मक सामग्री। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार। उपलब्ध: www.islrtc.nic.in
5. World Health Organization. (2001). *International Classification of Functioning, Disability and Health (ICF)*. WHO Press. Available at: www.who.int/classifications/icf विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2001)। कार्यप्रणाली, दिव्यांगता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (ICF)। डब्ल्यूएचओ प्रेस। उपलब्ध: www.who.int/classifications/icf
6. World Health Organization. (2021). *World report on hearing*. WHO Press. Available at: www.who.int/publications/i/item/world-report-on-hearing विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2021)। श्रवण पर विश्व रिपोर्ट

(World Report on Hearing)। डब्ल्यूएचओ प्रेस। उपलब्ध: www.who.int/publications/i/item/world-report-on-hearing

7. UNESCO. (2009). *Policy guidelines on inclusion in education*. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. Available at: www.unesco.org यूनेस्को (UNESCO)। (2009)। शिक्षा में समावेशन पर नीतिगत दिशानिर्देश। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन। उपलब्ध: www.unesco.org
8. Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India. (2022). *Scheme of Assistance to Disabled Persons for Purchase/Fitting of Aids and Appliances (ADIP)*. Department of Empowerment of Persons with Disabilities. Available at: www.disabilityaffairs.gov.in सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार। (2022)। दिव्यांग व्यक्तियों को सहायक उपकरण खरीदने/फिट करने के लिए सहायता की योजना (ADIP)। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग। उपलब्ध: www.disabilityaffairs.gov.in
9. National Institute for Empowerment of Persons with Multiple Disabilities (NIEPMD). *Resource materials for multi-disability and transition planning*. Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India.

Available at: www.niepmd.tn.nic.in राष्ट्रीय बहु-दिव्यांगता सशक्तिकरण संस्थान (NIEPMD)। बहु-दिव्यांगता और संक्रमण योजना के लिए संसाधन सामग्री। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार। उपलब्ध: www.niepmd.tn.nic.in

10. Joint Committee on Infant Hearing. (2019). *Year 2019 position statement: Principles and guidelines for early hearing detection and intervention programs*. Available at: www.jcih.org संयुक्त शिशु श्रवण समिति (Joint Committee on Infant Hearing) (2019)। वर्ष 2019 स्थिति विवरण: प्रारंभिक श्रवण पहचान और हस्तक्षेप कार्यक्रमों के लिए सिद्धांत और दिशानिर्देश। उपलब्ध